पालि-ग्रन्थमाला-२

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

सुत्तनिपातपालि

(रोमन-संस्कृतच्छाया-हिन्दी-आङ्गलानुवादसहिता)



पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः

Scanned with CamScanner

पालि–ग्रन्थमाला–2

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

सुत्तनिपातपालि

(रोमन–संस्कृतच्छाया–हिन्दी–आङ्गलानुवादसहिता)

संकल्पना मार्गदर्शनं च

प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी, कुलपतिः

संस्कृतच्छायाकर्त्री

डॉ. श्रीमती राका जैन

पालि–अध्ययन–केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित–विश्वविद्यालयः)

(केन्द्रीय–मानव–संसाधन–विकास–मन्त्रालयाधीनम्)

लखनऊ–परिसरः, विशालखण्डः–4, गोमतीनगरम्, लखनऊ (उ.प्र.)

Scanned with CamScanner

पालि–ग्रन्थमाला–2

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये **सुत्तनिपातपालि**
(रोमन–संस्कृतच्छाया–हिन्दी–आङ्गलानुवादसहिता)

प्रकाशक : प्रो0 सुरेन्द्र झा
© प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय)
लखनऊ परिसर, विशाल खण्ड–4, गोमती नगर,
लखनऊ–226010 (उ. प्र.)
दूरभाष : 0522–2393748; फैक्स : 0522–2302993
E-mail : rsksllucknow@yahoo.com

सम्पादक : प्रो. विजय कुमार जैन
डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी

सहयोग : डॉ. शुक्ला मुखर्जी, परियोजना अधिकारी
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के अधीन)
56–57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली– 110058
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

मूल्य : **रु. 500/–**

प्रथम संस्करण– 2012

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, 211, निशातगंज, पांचवी गली, लखनऊ–226007
मो. 94150 61690
email : shivamarts.lko@gmail.com

Scanned with CamScanner

Pāli-Granthamālā-2

Suttapitake Khuddakanikāye

SUTTANIPĀTA-PĀLI

(With Roman, Sanskritacchāyā, Hindi & English Translation)

Vision & Guidance

Prof. Radhavallabh Tripathi
Vice-Chancellor

Sanskritacchāyākārtri

Dr. Smt. Raka Jain



Pāli Study Center

Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)

Scanned with CamScanner

Pāli-Granthamālā-2

Suttapitake Khuddakanikāye **SUTTANIPĀTA-PĀLI**
(With Roman, Sanskritacchāyā, Hindi & English Translation)

Publisher : Prof. Surendra Jha
© Principal
Rashtriya Sanskrit Sansthan,
Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
Lucknow Campus,Gomti Nagar, Lucknow- 226010 (U.P.)
E-mail : rsklucknow@yahoo.com

Editor Prof. Vijay Kumar Jain
Dr. Gurucharan Singh Negi

Assistance : Dr. Shukla Mukharjee
Project Officer
Rashtriya Sanskrit Sansthan, Deemed University
(Under M/O Human Resource Development, Govt. of India)
56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058

Price : Rs. 500/-

First Edition : 2012

Printer : Shivam Arts, 211, Nishat Ganj, Vth Lane, Lucknow- 226007
Mob. : 9415061690
email : shivamarts.lko@gmail.com

Scanned with CamScanner

आमुख

मंगलमूर्तिः सततं वितरतु भद्रं परम्पराऽस्माकम्।
पालि–प्राकृत–संस्कृत–भाषासंगमसरस्वतीव।।
मैत्री–मुदिता–करुणोपेक्षाः श्लिष्टाः विभान्तु नित्यं ताः।
चतुष्टयीयं पाली घटयतु सुसंस्कृतं विश्वम्।।

त्रिपिटक में पालि–भाषा में भगवान् बुद्ध के 2550 वर्ष पहले दिए गए उपदेश सर्वाधिक प्रामाणिक रूप से संरक्षित है। पालि वही मागधी भाषा है, जिसे बुद्ध वचनों की संवाहिका होने के कारण थाईलैंड, श्रीलंका, वर्मा, कम्बोडिया आदि दक्षिण एशियाई देशों में पवित्र भाषा का दर्जा दिया जाता है, पालि भाषा का संरक्षण–संवर्धन भी इन एशियाई देशों ने किया। कई शताब्दियों तक हम इस ज्ञान से अपरिचित रहे। योरोप के विद्वानों ने जब पालि टेक्स्ट सोसायटी के माध्यम से इसे उजाकर किया तब भारत ने पुनः अपनी पुरानी धरोहर को संरक्षित करने का उपक्रम किया, इस क्रम में हमने पालि के ग्रन्थों के प्रकाशन का निश्चय किया है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना के तहत हमने पालि एवं प्राकृत का प्रोजेक्ट स्वीकार किया। उसी क्रम में लखनऊ में पालि अध्ययन केन्द्र की स्थापना हुई। जिसकी फलश्रुति ये ग्रन्थ हैं। प्राकृत की संस्कृतच्छाया की परम्परा तो सैकड़ों वर्षों से थी। पालि के मात्र धम्मपद एवं मिलिन्दपञ्हो के कुछ अंश की छाया मिलती है। संस्कृतच्छाया युक्त इस संस्करण से भारतीय प्रबुद्ध वर्ग के विचार का यह क्षेत्र बन सकेगा। जो अभी तक बहुत कम थी। हम तो इन प्राचीन भाषाओं की सेवा करना माता की सेवा के समान मानते हैं। पालि के थेरगाथा एवं थेरीगाथा से मैं स्वयं बहुत प्रभावित हूँ।

हम पाते हैं कि संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषाओं में लोक जीवन का निरूपण करने वाली कविताएँ रची गईं। लक्ष्मीधर, शरण आदि कवियों की परंपरा लगभग डेढ़ हजार वर्षों तक सक्रिय रही है। इन कवियों ने खेत–खलिहान, पामर (खेत में काम करने वाली दिहाड़ी के मजदूर), गाँव–गिराँव के जीवन और मध्यवर्गीय भारतीय परिवार तथा निम्न वर्गीय समाज के जीवन के यथार्थ का दिग्दर्शन कराने वाली मार्मिक रचनाएँ संस्कृत में प्रस्तुत की हैं। गाँव–गिराँव और खेती–खलिहानी तथा किसानों के जीवन का यथार्थ प्रामाणिक चित्रण संस्कृत की लोकधर्मी परंपरा की कविता में मिलता है। पालि में इस प्रकार की रचनाएँ बहुत कम हैं। थेरीगाथा और थेरगाथा का उल्लेख अवश्य किया जा सकता है, जो खुद्दकनिकाय के अंतर्गत हैं। थेरीगाथा में थेरियाँ अपनी अनुभूतियाँ प्रस्तुत करती हैं। ये गाथाएँ स्त्रियों के आत्मालाप और स्वीकारोक्तियाँ हैं। परिवार और मध्यमवर्गीय समाज के संकीर्ण अभिशापग्रस्त जीवन के त्रास से मुक्त होकर अनंत से जुड़ने का अनुभव थेरीगाथा की स्त्रियों ने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। विधवा, संतानहीन होने के कारण मिलने वाली प्रतारणाएँ, स्त्री होने के कारण मिलने वाले तरह–तरह के लांछन– इन सब के दुःख की गठरी बटोर कर थेरियाँ बुद्ध के संघ में

Scanned with CamScanner

सम्मिलित हुईं, और अपनी गाथाओं में उन्होंने पिछले जीवन की त्रासदी और वर्तमान में उसरो मुक्ति के अनुभव को जो गहन अभिव्यक्ति दी है, वह विश्वसाहित्य में स्त्रीविमर्श की दृष्टि से दुर्लभ है। मुत्ता, इसिदासी, चन्दा, उदकहारी, विमला पुराणभणिका, मेत्तिका, पटाचारा, अड्ढकासिआ, कुंडलकेसी, किसा गोतमी आदि स्त्रियों की गाथाएँ यहाँ भारतीय नारी के जीवन की महागाथा प्रस्तुत करती हैं। परित्यक्ता होना, वेश्या बनने के लिये विवश किया जाना, प्रेमी की हत्या कर के भागना, और परिवार व समाज से तिरस्कार– इन सब के बीच का वजूद यहाँ कायम है और इसकी मुक्ति की खोज भी। मुत्ताथेरी कहती है–

सुमुत्ता साधुमुत्ताम्हि, तीहि खुज्जेहि मुत्तिया।
उदुक्खलेन मुसलेन, पतिना खुज्जकेन च।
मुत्ताम्हि जातिमरणा, भवनेत्तिसमूहता'ति।। – थेरीगाथा पृ. 2

स्त्री मुक्ति की ऐसी गाथा संस्कृत या प्राकृत की मुक्तक कविता में इस रूप में कहीं नहीं मिलती। थेरीगाथा इस दृष्टि से भारतीय साहित्य में अनन्य है। यहाँ दुर्बल और गतयौवना मेत्तिका लाठी के सहारे किसी तरह चलती थी, वह पर्वत की चट्टान पर बैठ कर मुक्ति का राग अलापती दिखती है, तो विमलापुराणभणिका वेश्या बन कर, सजधज कर द्वार पर खड़ी कामुक प्रेमियों की प्रतीक्षा में कई–कई घड़ियाँ बिताती रही, वह पेड़ की छाँह में बैठ कर चिन्तन करती दिखती है, विधवा और निस्संतान चंदा, जो भीख माँग कर किसी तरह गुजर बसर करती थी, उदकहारी जो पानी में स्नान करते ब्राह्मणों पर व्यंग्य करती है, पाटलिपुत्र की इसिदासी जो उज्जयिनी के अत्यंत सम्पन्न परिवार में जन्मी, विवाह के पश्चात् ससुराल में सब की सेवा करती रहती है, फिर भी अकारण लांछित की जाती है, पति के त्रास से अतिशय खिन्न हो कर वह पितृगृह में लौट आती है, पिता उसकी वेदना समझ कर दूसरा विवाह कर देते हैं, पर दूसरे विवाह होने पर भी वही नारकीय जीवन। पटचारा, जो पिता के द्वारा निश्चित संबंध में बँधना नहीं चाहती, वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है, विवाह के पश्चात् प्रेमी भी उसे छोड़ देता है, उसके दोनों बेटों की जीवनलीला अत्यंत दारुण स्थितियों में निःशेष हो जाती है। अड्ढकासिआ एक श्रेष्ठी की बेटी है, पर बलात् अपहरण के पश्चात् वेश्या होने पर विवश की जाती है। कुडलकेसी का मन एक चोर पर आ जाता है, उसकी जिद पर पिता उसका विवाह चोर से ही कर देते हैं। विवाह के पश्चात् पहाड़ पर मंदिर में पूजा करने के लिये जब वर–वधू जाते हैं, तो वह चोर उससे सारे आभूषण उतार कर सौंपने के लिये कहता है। इस विश्वासघात से आहत कुंडलकेसी उसकी हत्या कर डालती है, फिर भटकाव का अंत संघ में पहुँच कर होता है। किसा गोतमी अत्यंत दरिद्र परिवार में जन्मी, ससुराल में उसकी गरीबी के कारण उसका उपहास किया जाता है। उसका बेटा मर जाता है, किसा गोतमी पागल हो कर भटकती फिरती है। इन सब स्त्रियों को मिले लांछन, प्रतारणाएँ और वेदनाएँ थेरीगाथा में हैं और उनसे निष्कृति की कथा भी।

थेरगाथा के थेर भी कहीं–कहीं अपनी कथा कहते हैं। वे पूर्व जीवन के प्रपंचों और विसंगतियों की चर्चा करते हैं। सुनीत थेर कहता है कि मैं नीच कुल में उत्पन्न हुआ, दरिद्र था,

Scanned with CamScanner

खाने को नहीं मिलता था, लोग मुझ से घृणा करते थे, मैं अपमानित और तिरस्कृत जीवन बिता रहा था, मेरा मन गिरा हुआ था। फिर मैंने भिक्षु संघ के साथ आते भगवान् बुद्ध के दर्शन किये, मेरे क्लेश दूर हुए।

नीचे कुलम्मि जातो'हं, दरिद्दो अप्प भोजनो।
हीनं कम्मं मम आसि, अहोसिं पुप्फछड्डको।।
जिगुच्छितो मनुस्सान, परिभूतो च वम्मितो।
नीचं मनं करित्वान वंदिस्सं बहुकं जनं।।
अथा'द्दासासिं संबुद्धं, भिक्खुसंघपुरक्खतं।
परिसन्तं महावीरं मगधानं पुरुत्तमं।। 623–626

थेरीगाथा तथा थेरगाथा दोनों एक अर्थ में भारतीय दलित समाज की कराह की मार्मिक अभिव्यक्तियाँ भी हैं, पर इसके साथ ये आध्यात्मिक साधना और मुमुक्षुत्व की महागाथाएँ भी हैं।

ईसा पूर्व तथा ईसा पश्चात् की हमारे साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास की कतिपय शताब्दियों में वैदिक, बौद्ध तथा जैन परंपराओं के बीच वाद, विवाद और संवाद की, साहित्यिक आदान–प्रदान की जीवन्त प्रक्रिया घटित हो रही थी। इस संवाद की प्रक्रिया का साक्ष्य संस्कृत साहित्य शास्त्र के आचार्यों ने दिया है। आनंदवर्धन ने तो दो कवियों के बीच संवाद की अवधारणा का सटीक विवेचन किया है। पालि की गाथाएँ और प्राकृत के मुक्तक जन समाज में लोकप्रिय थे। इस आधार पर राजशेखर ने रचना की गुणवत्ता का एक मानक यह भी स्वीकार किया कि वह जन–जन का कंठहार बने।

पालि, संस्कृतच्छाया हिन्दी अर्थ युक्त खुद्दकनिकाय के खुद्दकपाठ, उदान, इतिवुत्तक, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, सुत्तनिपात एवं संयुत्तनिकाय का सगाथवग्ग प्रथम चरण में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है सभी के लिए उपयोगी होगा। डॉ. श्रीमती राका जैन को साधुवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने स्वतंत्र रूप से कार्य किया तथा विशेषज्ञों– पद्मश्री प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, प्रो. संघसेन सिंह, प्रो. एस. पी. नारंग, प्रो. उमाशंकर व्यास, प्रो. धर्मचंद जैन, प्रो. ब्रह्मदेवनारायण शर्मा (अब स्मृति शेष), प्रो. ब्रजमोहन पाण्डेय नलिन, प्रो. रामसागर मिश्र, प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने कार्यशालाओं के माध्यम से इसे संशोधित किया है उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ वर्तमान प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र झा तथा बौद्धदर्शन विभाग के प्राध्यापकों का श्रम भी उल्लेखनीय है परियोजना अधिकारी एवं मंत्रालय का सहयोग भी भुलाया नहीं जा सकता। उल्लेखनीय है।

भवतु सब्ब मंगलं।

30, मार्च, 2012

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
कुलपति

Scanned with CamScanner

प्रकाशकीय

प्रसन्नता का विषय है कि पालि अध्ययन केन्द्र के अध्येताओं– डॉ. मोहन मिश्र, डॉ. नीलिमा चौहान, श्री जयवन्त खण्डारे, डॉ. राहुल अमृतराज, डॉ. वेदव्यास पाण्डेय, श्री प्रदीप कुमार द्विवेदी एवं स्वतंत्र रूप से कार्य कर रही डॉ0 श्रीमती राका जैन द्वारा की गई संस्कृतच्छाया युक्त पालि त्रिपिटक के 9 ग्रन्थ प्रथम चरण में पाँच भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। खुद्दकनिकाय के आठ ग्रन्थ– खुद्दकपाठ, उदान, इतिवुत्तक, थेरगाथा, थेरीगाथा, विमानवत्थु, पेतवत्थु तथा सुत्तनिपात एवं संयुत्तनिकाय का सगाथवग्ग बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इन ग्रन्थों में भारतीय लोक जीवन की अच्छी झाँकी मिलती है। संस्कृत, पालि, व्याकरण एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी इनका विशेष महत्त्व है। इस कार्य को उत्तम बनाने के लिए कई बार कार्यशालाएँ की गईं जिनमें देश के मूर्धन्य एवं वयोवृद्ध विद्वान् सम्मिलित हुए। उक्त कार्यशाला के अवसर पर पद्मश्री प्रो. रामशंकर त्रिपाठी जी ने कहा था कि "भारतीय दर्शन परम्परा के विकास में बौद्धों का पूर्वपक्ष के रूप में बहुत बड़ा योगदान रहा है। बीच में बौद्धों का पक्ष कमजोर होने से दर्शन की परम्परा का लेखन रुक गया, क्योंकि पूर्वपक्ष में बौद्धों का अन्य वाङ्मय तो भारतीय दार्शनिकों के समक्ष था, पालि साहित्य नहीं था।"

'पालि' भाषा में निबद्ध त्रिपिटक भगवान् बुद्ध की वाणी है। इसका पूरे विश्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है। संस्कृतच्छाया युक्त ये ग्रन्थ भारतीय मनीषियों के लिए विशेष उपयोगी होंगे। इस कार्य की सफलता में हमारे सम्माननीय कुलपति जी की कृपा एवं दूरदर्शिता रही है। मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कार्यशाला में पधारने वाले विद्वज्जनों, सम्पादकों, केन्द्र के अध्येताओं एवं सहयोगी प्राध्यापकों को साधुवाद देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि पालि अध्ययन केन्द्र इसी तरह सफलतापूर्वक कार्य करता रहे तथा यह ग्रन्थमाला अनवरत चलती रहे। इस प्रकाशन से हमारे परिसर का भी गौरव बढ़ा है।

लखनऊ
30 मार्च, 2012

प्रो. सुरेन्द्र झा
प्राचार्य

Scanned with CamScanner

सम्पादकीय

पालि त्रिपिटक भगवान बुद्ध की वाणी को संरक्षित करने वाला सर्वाधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है। पालि त्रिपिटक की प्रामाणिकता उनकी सङ्गीतियों के माध्यम से होती है। भगवान् बुद्ध के समय ही भिक्षु बुद्धवचनों को कंठस्थ कर लिया करते थे। सुत्तधर, विनयधर, जैसे शब्द स्पष्ट करते हैं कि बुद्धवचन मौखिक परम्परा पर आधारित थे। भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के तीन माह पश्चात अर्हत् भिक्षुओं ने प्रथम संगीति का आयोजन किया एवं धम्म एवं विनय का संगायन किया गया। तदन्तर 100 वर्ष बाद द्वितीय संगीति में जब संघभेद हो गया तो स्थविर भिक्षुओं ने **मागधी** में तथा महासांघिकों ने संस्कृत में बुद्धवचनों का सङ्गायन किया। दूसरी संगीति के 135 वर्ष बाद अशोक के समय तीसरी संगीति हुई उसमें त्रिपिटक का संगायन हुआ। सम्राट अशोक ने बुद्धवचनों के प्रचार व प्रसार के लिए सम्पूर्ण एशिया के भिक्षुओं को तथा अपने पुत्र एवं पुत्री को श्रीलंका भेजा। श्रीलंका में भी बुद्धवचन कई वर्ष तक मौखिक परम्परा में सुरक्षित रहे। पुनः वहाँ चौथी एवं पाँचवी संगीति हुई तथा बुद्धवचनों को पत्थरों में उत्कीर्ण कराया। छट्ठसंगायन जो 1956 ई. में बर्मा में हुआ उसी के आधार पर नवनालन्दा महाविहार से पालि त्रिपिटक देवनागरी में प्रकाशित हुआ, जो आज अनुपलब्ध है। इगतपुरी विपश्यना शोध संस्थान ने सम्पूर्ण त्रिपिटक को अट्ठकथा टीका सहित प्रकाशित किया था, जो आज मात्र इण्टरनेट पर ही उपलब्ध है।

हमारे माननीय कुलपति जी की भावना थी कि त्रिपिटक का संस्थान का संस्करण विशेष एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानक का होना चाहिए साथ ही संस्कृत संस्थान द्वारा प्रकाशित होने के कारण संस्कृतच्छाया रहे तो और भी अच्छा होगा, क्योंकि मूलानुगामी संस्कृतच्छाया से अर्थबोध करने में सहायता प्राप्त होती है। आज त्रिपिटक का अनुवाद अंग्रेजी, स्यामी, सिंहली, बर्मी में हुआ है किन्तु हिन्दी में आधा अधूरा है। संस्कृतच्छाया से पालि–प्राकृत–संस्कृत का अन्तःसम्बन्ध प्रकट हो जाता है, क्योंकि अनुवाद दूसरी भाषाओं से किया जाता है उनकी छाया नहीं हो सकती। छाया उन्हीं भाषाओं की होती है जिनका भाषावैज्ञानिक एवं व्याकरण की दृष्टि से अन्तःसम्बन्ध हो। पालि साहित्य का विशाल भण्डार है। इसमें से 'धम्मपद' एवं मिलिन्दपञ्हों के कुछ अंश की संस्कृतच्छाया पहले से उपलब्ध हैं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन जी एवं भिक्षु धर्मरक्षित के धम्मपद अनुवाद संस्कृत छाया के साथ प्रकाशित हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रो. संघसेन सिंह का भी 'धम्मपद' की संस्कृतच्छाया प्रकाशित है।

हमारे सम्माननीय कुलपति जी ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना को स्वीकार करते हुए उदीयमान नवयुवकों को यह दायित्व दिया, जिसे इन्होंने उत्साहपूर्वक निभाया है। यह सब हमारे दूरदर्शी कुलपति जी की दृढ़ इच्छा, भगीरथ प्रयास एवं उनके कुशल नेतृत्व का परिणाम है कि हम इस दिशा में आगे बढ़ सके। इस योजना में देश के वयोवृद्ध विद्वानों ने मनोयोग से सहायता पहुँचाई। कार्यशालाओं के माध्यम से इस छाया को कई–कई बार परिष्कृत किया गया।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य था कि अर्थ न बदलें तथा छाया मूलानुगामी हो, अनुवाद मात्र नहीं और व्याकरण के नियमों का भी पालन हो। पालि परम्परा एवं अट्ठकथा के अर्थ को भी ध्यान दिया गया। इसी तरह शीर्षक एवं 'नाम' में भी मूल को सुरक्षित रखते हुए छाया की गई है। संस्कृतच्छाया में बौद्धसंस्कृत में प्राप्त पालि शब्दावली का भी सहयोग लिया गया है।

पालि से संस्कृतच्छाया करने में जहाँ व्याकरण एवं भाषाविज्ञान से सहयोग लेने में सुगमता हुई वहीं कुछ व्यवहारिक कठिनाइयां भी आयीं। अतः उच्चस्तरीय वार्ता के आधार पर समाधान खोजे गए। यथा– पालि परम्परा में 'पञ्चम वर्ण' के स्थान पर अनुस्वार का विधान है। संस्कृत में 'पंचम वर्ण' मात्र नहीं है, कई अन्य व्यवस्थाएं भी हैं, जिन्हें यथासंभव पालन किया गया है। संस्कृत में यति का प्रयोग होता है, पालि गाथाओं में भी है, अतः यति के लिए कॉमा को विराम मानकर आगे के स्वर व्यंजन का ध्यान न देकर पंचम वर्ण कर दिया गया है। कुछ पालि के शब्द वैदिक संस्कृत से साम्यता रखते हैं। प्रो. जानकी प्रसाद द्विवेदी जी ऐसे शब्दों को परम्परा के आधार पर उसी रूप में रखने के पक्षधर थे लेकिन जहाँ तक लौकिक संस्कृत बन पाई है, वहाँ बनाने का प्रयास किया गया है। बहुत से पालि के शब्द कातन्त्र व्याकरण से सिद्ध होते हैं, अतः उसका भी सहारा लिया गया है। प्रो. रामसागर जी मिश्र ने इसमें अथक सहायता पहुँचाई है। प्रचलित शब्दों को छोड़कर पालि नाम एवं शीर्षक को यथावत् स्वीकार करके उनकी संस्कृतच्छाया करने का अनावश्यक प्रयास नहीं किया गया है। कुछ अन्य शब्दों तथा 'देशी' शब्दों में भी येन केन प्रकारेण अर्थ बोध कराने की दृष्टि से कहीं मूल शब्द कहीं संस्कृत में भाव प्रकट करने का प्रयास किया गया है।

आशा है "**पालि ग्रन्थमाला**" उपयोगी सिद्ध होगी तथा मंत्रालय, संस्थान तथा सभी विद्वत्जनों का सहयोग इसी तरह मिलता रहेगा।

पालि अध्ययन केन्द्र की स्थापना से लेकर आज तक सम्पूर्ण परिसर की ओर से अपार स्नेह मिलता रहा है। तत्कालीन कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. सर्वनारायण झा के कार्यकाल में महामहिम राज्यपाल (उ0प्र0) श्री बी.एल. जोशी, कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी तथा मानव संसाधन विकास मन्त्रालय में संयुक्त सचिव (भाषा) डॉ. अनीता भटनागर जैन ने इसकी नींव मजबूत रखी थी, जिसके कारण यह फलित हो रही है। इसमें प्राचार्य प्रो. सुरेन्द्र झा का भी पूरा सहयोग रहता है। संस्थान मुख्यालय में परियोजना अधिकारी डॉ0 शुक्ला मुखर्जी इसमें पूरे मनोयोग एवं सूक्ष्म चिंतन पूर्वक सहायता पहुँचाती हैं। हम उपर्युक्त महानुभावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए परिसर के प्राध्यापकगण– प्रो. सुरेन्द्र पाठक, प्रो. लोकमान्य मिश्र, प्रो0 रामलखन पाण्डेय, डॉ. लक्ष्मीनिवास पाण्डेय, डॉ. गजेन्द्र शर्मा, डॉ. धनीन्द्र कुमार झा, डॉ. भारतभूषण त्रिपाठी, डॉ. ब्रजभूषण ओझा, डॉ. पवन कुमार, डॉ. श्यामदेव मिश्र, डॉ. गज़ाला अंसारी, डॉ. अमित कुमार शुक्ल, डॉ. कविता विसारिया एवं विभागीय सहयोगी डॉ. अवधेश कुमार चौबे के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। श्रीमती राका जैन के प्रति आभारी हैं कि उन्होंने स्वतंत्र रूप से यह कार्य किया। इन्होंने बहुत श्रम किया है। उस श्रम का यह प्रकाशन रूपी सुखद फल है।

लखनऊ
31 मार्च, 2012

विजयकुमार जैन
गुरुचरण सिंह नेगी

Scanned with CamScanner

ग्रन्थ के सन्दर्भ में

पालि साहित्य में त्रिपिटक, त्रिपिटक में सुत्तपिटक और सुत्तपिटक के पञ्चम ग्रन्थ खुद्दकनिकाय में संकलित 14 ग्रन्थों में सुत्तनिपात का धम्मपद की तरह महत्त्व है। सुत्तनिपात में तत्कालीन उत्तरभारत की सामाजिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि अवस्थाओं के सम्बन्ध में प्रचुर सामग्री है। जन्मना वर्णव्यवस्था का खंडन, शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन, अनेक मतवादों का विस्तार, तापस जीवन की महत्ता, प्राचीन ब्राह्मणों के कर्तव्य, देव–यज्ञवाद का प्रत्यक्ष अनुभव पूर्ण सजीव चित्रण, समाज में व्याप्त मिथ्या–विश्वासों का वर्जन, आत्मा–परमात्मा की निस्सारता आदि विषयों का पर्याप्त प्ररूपण हुआ है। गृहस्थ और भिक्षु के क्या कर्तव्य हैं ? एक सद्गृहस्थ को कैसे जीवन–यापन करना चाहिए। दुःशील भिक्षु को संघ से बहिष्कृत करके शुद्ध भिक्षुओं के साथ ध्यान–भावना में जुटना चाहिए, किसी को हेयदृष्टि से नहीं देखना चाहिए, सबको समान समझना चाहिए, दृष्टियों के फेर में पड़कर वाद–विवाद में नहीं पड़ना चाहिए, सांसारिक आसक्तियों को त्याग अकिंचन हो परमसुख निर्वाण की प्राप्ति के लिए तत्पर रहना चाहिए– आदि सुत्तनिपात के वर्णित–विषय हैं। आज भी रतन, मंगल, मेत्तसुत्त का भिक्षु प्रतिदिन पाठ करते हैं।

सुत्तनिपात में 1– संवादशैली– हेमवतसुत्त, वासेट्ठसुत्तादि 2– आख्यानशैली–पब्बज्जासुत्त, पधानसुत्त आदि, 3– परिप्रश्नात्मक शैली–द्वयतानुपस्सनासुत्त, 4– उपदेशात्मक, शैली–मेत्तसुत्त, मुनिसुत्त, 5– नाटकीय शैली–सेलसुत्त, कसिभारद्वाजसुत्त, धनियसुत्त, 6– आवृत्यात्मक शैली– खग्गविसाणसुत्त, सम्मापरिब्बाजनीयसुत्त, की प्रधानता है। छन्दों में 86 प्रतिशत अनुष्टुभ और त्रिष्टुभ छन्द और 14 प्रतिशत अन्य छन्दों का प्रयोग है। मुख्य रस निर्वेद प्रधान शान्तरस है। प्रकृतिचित्रण की दृष्टि से पर्वत, वन, नदी, ऋतु आदि का उल्लेख मात्र है। सुत्तनिपात की भाषा अलंकारप्रधान है। उपमा की प्रधानता है और मात्र उपमा ही नहीं मालोपमा का उदाहरण खग्गविसाणसुत्त में देखने को मिलता है। सुत्तनिपात की सूक्तियों में अमृत रस भरा पड़ा है। वेद की एक प्रार्थना में राष्ट्र की विभूति का चित्र खींचा गया है। यजुर्वेद के **"निकामे–निकामे नः पर्यजन्यो वर्षतु"** की तरह सुत्तनिपात के धनियसुत्त में अभिव्यक्त किया गया है– **"अथ चे पत्थयसि पवस्स देव"** अर्थात् हे देव, यदि आप चाहें तो बरसो। ग्वाले के लिए यह धनमेघ है और तथागत बुद्ध के लिए धर्ममेघ। सांसारिक सुख और ध्यानसुख को आमने–सामने रखकर सुन्दर अभिव्यक्ति है।

सुत्तनिपात की प्राचीनता– ज्ञातव्य है कि यूनेस्को ने सुत्तनिपात की गुणवत्ता को देखकर इसे पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया था। डॉ. वापट का कथन है कि सुत्तनिपात

Scanned with CamScanner

पालि–त्रिपिटक का प्रथम गाथा–संग्रह है। धम्मपद, खुद्दकपाठ, इतिवुत्तक, थेरगाथा, थेरीगाथा आदि बाद के ग्रन्थ हैं। सुत्तनिपात के अनेक सुत्त अन्य पालि ग्रन्थों में पाए जाते हैं– यथा– 1– खग्गविसाणसुत्त– अपदान में, 2– मेत्तसुत्त– खुद्दकपाठ में, 3– रतनसुत्त– खुद्दकपाठ में, 4. मंगलसुत्त– खुद्दकपाठ में, 5– सुन्दरिकभारद्वाजसुत्त– संयुत्तनिकाय में, 6– आलवकसुत्त– संयुत्तनिकाय में 7– कसिभारद्वाजसुत्त– संयुत्तनिकाय में, 8– सुभासितसुत्त– संयुत्तनिकाय में, 9– कोकालिकसुत्त– संयुत्तनिकाय में, 10– सेलसुत्त– मज्झिमनिकाय में 11– वासेट्ठसुत्त– मज्झिमनिकाय में। सुत्तनिपात की अनेक गाथाएँ एवं सुत्त महायान संस्कृत साहित्य के महावस्तु, ललितविस्तर आदि ग्रन्थों में भी पाए जाते हैं। पहली ईस्वी में लिखित मिलिन्दपञ्हो में सुत्तनिपात का नाम और इसकी गाथाएँ भी उद्धृत हैं। इस तरह सुत्तनिपात की प्राचीनता स्वयंसिद्ध है।

भदन्त जगदीश काश्यप एवं राहुल सांकृत्यायन ने सुत्तनिपात को एक मौलिक एवं आदर्श ग्रन्थ माना है। महाराजा अशोक ने सात ऐसे मुख्य सुत्तों को अपने भाब्रू शिलालेख पर खुदवाएं थे, जिन्हें सभी को पढ़ने तथा आचरण करने की प्रेरणा दी थी जिनमें चार सुत्तनिपात के हैं– शिलालेख में आगत सुत्त– 1– विनय समुकसे– सुत्तनिपात के सुत्त 1– तुवटकसुत्त 4/14, 2– मुनिगाथा– मुनिसुत्त 1/12, 2 मानेयसूते– नालकसुत्त 3/11, 4– उपतिसपसिन– सारिपुत्तसुत्त 5/16 – (अशोक के अभिलेख पृ 115)।

पाश्चात्य विद्वान् फॉसबल ने सुत्तनिपात की प्राचीनता की पुष्टि करने के लिए कहा कि इसकी भाषा वैदिक=छन्दस भाषा से मिलती–जुलती है। समूहतासे (1/14), पच्चयासे (1/15), चरामसे, भवामसे (1/2/15), आतुमानं (4/3/3) सुवाना (1/11/9), अवीवदाता (4/3/5) पावा (4/3/3) कुपटिच्चस्सन्ति (4/3/5) और वदाना आदि जैसे शब्दों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। सुत्तनिपात की पालि वैदिक भाषा के अतिनिकट है। जिन प्रयोगों को बाद में संस्कृत ने छोड़ दिया सुत्तनिपात में ज्यों के त्यों मिलते हैं। वैदिक कृदन्त और छन्दविधान में समानता है।

सुत्तनिपात के अट्ठकवग्ग और पारायणवग्ग भगवान् के समय में ही प्रसिद्ध हो चुके थे। अट्ठकवग्ग तथागत को बड़ा प्रिय था। आयुष्मान् सोणकुटिकण्ण ने सम्पूर्ण अट्ठकवग्ग का पाठ भगवान् बुद्ध के समक्ष किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि अट्ठकवग्ग और पारायणवग्ग का स्वतन्त्र अस्तित्त्व था। यही कारण है कि अट्ठकवग्ग की व्याख्या चूलनिद्देस के रूप में प्रस्तुत हुई और पारायण और खग्गविसाणसुत्त की व्याख्या महानिद्देस के रूप में। सुत्तनिपात के अट्ठकवग्ग परायणवग्ग में उस मार्ग का वर्णन है, जिससे संसार पार किया जाता है– **मग्गो सो पारं गमनाय तस्मा पारायणं इति** –पारायणसुत्त। कसिभारद्वाज, बाबरि जैसे वैदिक परम्परा के सच्चे साधकों ने भी तथागत बुद्ध को पहचान लिया और उन्हें अपने हृदय में कितना ऊंचा स्थान दिया– यह प्रकृत ग्रन्थ में दर्शनीय है।।

Scanned with CamScanner

कृतज्ञता– सर्वप्रथम उस मूलानुगामिनी परम्परा को नमन करती हूँ जिसने सुत्तनिपात जैसी अमूल्य निधि जन–जन तक जनभाषा में पहुँचाया। संस्कृतच्छाया करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि मूल पालि शब्द जिनकी संस्कृत नहीं है, को उसी रूप में तिरछे अक्षरों (इटेलिक लेटर) में रखा जिससे संस्कृत पढ़ने में अवरोध न हो, साथ ही संज्ञावाचक शब्दों को भी संस्कृतच्छाया में इलेटिक लेटर में रखा गया। अर्थ बोध की सुगमता के लिए यत्र–तत्र बुद्धघोष कृत सुत्तनिपात की अट्ठकथा की पंक्तियों को मूल पालि में लिखा जिससे अट्ठकथा के आधार पर मूल अंश का पाठक सही परम्परागत अर्थ समझ सकें। इसके आंग्लानुवाद में पाश्चात्य विद्वान वी. फासबॉल एवं हिन्दी अनुवाद में धर्मरक्षित का पूरा मार्गनिर्देशन एवं सहारा लिया उन दोनों महाविभूतियों को सादर स्मरण।

इस त्रिपिटक प्रकाशन की योजना में प्रेरणास्रोत सम्माननीय कुलपति प्रो. राधावल्लभ जी त्रिपाठी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ उनके उत्साहवर्धन से स्वतन्त्र रूप से कार्य करने में अभिरुचि हुई।

लखनऊ परिसर के प्राचार्य प्रो. सुरेन्द्र झा जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, उनके सद्भाव से यह ज्ञानयज्ञ पूर्ण हो रहा है। प्रो. विजयकुमार जैन अध्यक्ष–बौद्धदर्शन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ उनके मनसा–वाचा–कर्मणा अथक श्रम–सद्भाव से यह कार्य पूर्ण हो जाएगा– ऐसा विश्वास है– इसी क्रम में पद्मश्री प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, वाराणसी, प्रो. उमाशंकर व्यास, नालन्दा, प्रो. धर्मचन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र, प्रो. संघसेनसिंह, दिल्ली, प्रो. रामसागर मिश्र एवं प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी, डॉ. बृजभूषण ओझा लखनऊ के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने संस्कृतच्च्छाया में आयी कठिनाइयों को दूर किया। परियोजना अधिकारी डॉ. शुक्ला मुखर्जी के प्रति विनम्र शब्दांजलि अर्पित करती हूँ। संस्कृत व्याकरण की शोधच्छात्रा कु. सरस्वती आर्या ने अपना समय देकर बहुत सहयोग किया। अंग्रेजी अनुवाद में डॉ. कविता विसारिया का विशेष योगदान रहा उसे भुलाया नहीं जा सकता। स्थानीय व्याकरण विभाग एवं परिसर के सम्मानित प्राध्यापकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, अपने दोनों बच्चों– बेटा मैत्रेय जैन एवं बेटी मैत्री जैन ने आंग्लानुवाद में यत्र–तत्र सहायता की, वे इस परम्परा से जुड़े, उन्हें साधुवाद। अपने दोनों कुलों के पारिवारिकजनों के प्रति सद्भाव व्यक्त करती हूँ। टंकणकर्ता श्री विकास जैन ने हमारी कलम बनकर इस कार्य को घर पर पूर्ण करने में जो योगदान दिया उसे भुलाया नहीं जा सकता। जो कुछ त्रुटियाँ हुई हों उनके प्रति क्षमाप्रार्थिनी हूँ।

"यदत्र सौष्ठवं किञ्चित् तद्गुरोरेव मे नहि।
यदत्रासौष्ठवं किञ्चित् तन्ममैव गुरोर्नहि।।"

साभार,

दिनांक : 30.3.12

डॉ. श्रीमती राका जैन

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका

1. उरगवग्गो

1 उरगसुत्तं 1

2. धनियसुत्तं 6

3 खग्गविसाणसुत्तं 12

4. कसिभारद्वाजसुत्तं 25

5. चुन्दसुत्तं 32

6. पराभवसुत्तं 35

7. वसलसुत्तं 43

8. मेत्तसुत्तं 54

9. हेमवतसुत्तं 57

10. आळवकसुत्तं 66

11. विजयसुत्तं 73

12. मुनिसुत्तं 77

2. चूलवग्गो

1. रतनसुत्तं 83

2. आमगन्धसुत्तं 89

3. हिरिसुत्तं 94

4. मङ्गलसुत्तं 95

5. सूचिलोमसुत्तं 99

6. धम्मचरियसुत्तं 102

7. ब्राह्मणधम्मिकसुत्तं 105

8 नावासुत्तं 117

9. किंसीलसुत्तं 119

10. उट्ठानसुत्तं 121

11. राहुलसुत्तं 123

12. वङ्गीससुत्तं 125

13 सम्मापरिब्बाजनीयसुत्तं 131

14. धम्मिकसुत्तं 137

3. महावग्गो

1. पब्बज्जासुत्तं 147

2. पधानसुत्तं 152

3. सुभासितसुत्तं 159

4. सुन्दरिकभारद्वाजसुत्तं 162

5. माघसुत्तं 174

6. सभियसुत्तं 184

7. सेलसुत्तं 204

8. सल्लसुत्तं 224

9. वासेट्ठसुत्तं 230

10. कोकालिकसुत्तं 250

11. नाळकसुत्तं 263

12. द्वयतानुपस्सनासुत्तं 276

Scanned with CamScanner

4. अट्ठकवग्गो

1. कामसुत्तं 301
2. गुहट्ठकसुत्तं 302
3. दुट्ठट्ठकसुत्तं 305
4. सुद्धट्ठकसुत्तं 307
5. परमट्ठकसुत्तं 310
6. जरासुत्तं 313
7. तिस्समेत्तेय्यसुत्तं 316
8. पसूरसुत्तं 319
9. मागन्डियसुत्तं 322
10. पुराभेदसुत्तं 327
11. कलहविवादसुत्तं 331
12. चूळबियूहसुत्तं 336
13. महाबियूहसुत्तं 341
14. तुवटकसुत्तं 347
15. अत्तदण्डसुत्तं 353
16. सारिपुत्तसुत्तं 359

5. पारायणवग्गो

1. वत्थुगाथा 367
2. अजितमाणवपुच्छा 382
3. तिस्समेत्तेय्यमाणवपुच्छा 385
4. पुण्णमाणवपृच्छा 386
5. मेत्तगूमाणवपुच्छा 388
6. धोतकमाणवपुच्छा 392
7. उपसीवमाणवपुच्छा 395
8. नन्दमाणवपुच्छा 398
9. हेमकमाणवपुच्छा 401
10. तोदेय्यमाणवपुच्छा 402
11. कप्पमाणवपुच्छा 404
12. जतुकण्णिमाणवपुच्छा 405
13. भद्राबुधमाणवपुच्छा 407
14. उदयमाणवपुच्छा 408
15. पोसालमाणवपुच्छा 410
16. मोघराजमाणवपुच्छा 412
17. पिंगियमाणवपुच्छा 413
18. पारायणसुत्तं 415

परिशिष्ट

गाथानुक्रमणिका 431—445

Scanned with CamScanner

देवनागरी एवं रोमन वर्णमाला-संकेत

अ a	आ ā	इ i	ई ī	उ u ऊ ū
ए e	ऐ ai	ओ o	औ au	

अ के साथ व्यञ्जन

क ka	ख kha	ग ga	घ gha	ङ ṅa
च ca	छ cha	ज ja	झ jha	ञ ña
ट ṭa	ठ ṭha	ड ḍa	ढ ḍha	ण ṇa
त ta	थ tha	द da	ध dha	न na
प pa	फ pha	ब ba	भ bha	म ma
य ya	र ra	ल la	व va	
स sa	ह ha	ळ ḷa	निग्गृहीत अं	aṅ

Scanned with CamScanner

ग्रन्थ के संदर्भ में

पालि साहित्य में त्रिपिटक, त्रिपिटक में सुत्तपिटक और सुत्तपिटक के पञ्चम खुद्दकनिकाय के 14 ग्रन्थों में सुत्तनिपातपालि का धम्मपद की तरह महत्त्व है। सुत्तनिपातपालि में तत्कालीन उत्तरभारत की सामाजिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक आदि अवस्थाओं के सम्बन्ध में प्रचुर सामग्री है। सुत्तनिपातपालि की सूक्तियों में अमृत रस भरा पड़ा है।

सुत्तनिपातपालि की अनेक गाथाएँ एवं सुत्त महायान संस्कृत साहित्य के महावस्तु, ललितविस्तर आदि ग्रन्थों में भी पाए जाते हैं। पहली ईस्वी में लिखित मिलिन्दपञ्हो में सुत्तनिपात का नाम और इसकी गाथाएँ भी उद्धृत हैं। इस तरह सुत्तनिपात की प्राचीनता स्वयंसिद्ध है।

भदन्त जगदीश काश्यप एवं राहुल सांकृत्यायन ने सुत्तनिपात को एक मौलिक एवं आदर्श ग्रन्थ माना है। महाराज अशोक ने सात ऐसे मुख्य सुत्तों को अपने भाब्रू शिलालेख पर खुदवाएँ थे, जिन्हें सभी को पढ़ने तथा आचरण करने की प्रेरणा दी थी, जिनमें चार सुत्तनिपात के हैं।

सुत्तनिपातपालि के अट्ठकवग्ग और पारायणवग्ग भगवान् के समय में ही प्रसिद्ध हो चुके थे। अट्ठकवग्ग तथागत को बड़ा प्रिय था। आयुष्मान् सोणकुटिकण्ण ने सम्पूर्ण अट्ठकवग्ग का पाठ भगवान् बुद्ध के समक्ष किया था। ऐसा प्रतीत होता है कि अट्ठकवग्ग और पारायणवग्ग का स्वतन्त्र अस्तित्त्व था।

इस ग्रन्थ में मूल पालि, रोमन, संस्कृतच्छाया, हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद दिया गया है।

ISBN : 978-81-924536-1-3
Price : 500.00

॥नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

सुत्तनिपातपालि (Suttanipātapāli)

1. उरगवग्गो (Uragavaggo)

(1.1) उरगसुत्तं (Uragasuttaṃ)

पालि- यो उप्पतितं विनेति कोधं, विसटं सप्पविसं व ओसधेहि ।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/1॥

रोमन- Yo uppatitaṃ vineti kodhaṃ, visaṭaṃ sappavisaṃ va osadhehi;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥1॥

संस्कृतच्छाया-

य उत्पतितं विनयति क्रोधम्, विसृतं सर्पविषमिवौषधीभि: ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥1॥

हिन्दी- जैसे शरीर में व्याप्त, सर्प के विष को औषधि द्वारा शान्त कर दिया जाता है, उसी प्रकार जो भिक्षु उत्पन्न हुए क्रोध को शान्त कर देता है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥1॥

अंग्रेजी-

He who restrains his temper when it has arisen, as they by medicines restrain the poison of the snake spreading in the body, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.1.

यो रागमुदच्छिदा असेसं, भिसपुप्फं व सरोरुहं विगय्ह।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं, पुराणं॥1/1/2॥

Yo rāgamudacchidā asesaṃ, bhisapupphaṃ va saroruhaṃ vigayha;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ, purāṇaṃ.॥2॥

यो रागमुदच्छिनदशेषम्, बिसपुष्पमिव सरोरुहं विगाह्य ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥2॥

जिस प्रकार सरोवर में प्रवेश कर जो कमल के पुष्प को तोड़ देता है, उसी प्रकार जिस भिक्षु ने सम्पूर्ण राग को नष्ट कर दिया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥2॥

He who has left passion entirely, as they left the lotus-flower growing in a lake, after diving into the water, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.2.

यो तण्हमुदच्छिदा असेसं, सरितं सीघसरं विसोसयित्वा।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/3॥

Yo taṇhamudacchidā asesaṃ, saritaṃ sīghasaraṃ visosayitvā;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥3॥

य: तृष्णामुदच्छिनदशेषम्, सरितां शीघ्रसरां विशोष्य।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥3॥

जिस प्रकार तेज प्रवाह नदी को सुखा देता है, उसी प्रकार जिस भिक्षु ने सम्पूर्ण तृष्णा को उखाड़ फेंका है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥3॥

He who has cut off craving entirely, the flowing, the quickly running, after drying it up, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.3.

यो मानमुदब्बधी असेसं, नळसेतुं व सुदुब्बलं महौघो।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/4॥

Yo mānamudabbadhī asesaṃ, naḷasetuṃ va sudubbalaṃ mahogho;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥4॥

यो मानमुदधादशेषम्, नलसेतुमिव सुदुर्बलं महौघ:।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥4॥

जिस प्रकार बहुत ही कमजोर नरकट के पुल को बड़ी बाढ़ बहा ले जाती है, उसी प्रकार जिस भिक्षु ने सम्पूर्ण अभिमान को उखाड़ फेंका है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥4॥

He who has destroyed arrogance entirely, as the flood destroys a very frail bridge of reeds, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.4.

यो नाज्झगमा भवेसु सारं, विचिनं पुप्फमिव उदुम्बरेसु।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/5॥

Yo nājjhagamā bhavesu sāraṃ, vicinaṃ pupphamiva udumbaresu;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥5॥

यो नाध्यगमत् भवेषु सारम्, विचितं पुष्पमिव उदुम्बरेषु ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥5॥

जिस प्रकार गूलर के वृक्ष में पुष्प खोजने पर भी न प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार जिस भिक्षु ने संसार में किसी प्रकार के सार (तत्त्व) को नहीं पाया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥5॥

He who has not found any essence in the existences, like one that looks for flowers on fig-trees, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.5.

यस्सन्तरतो न सन्ति कोपा, इतिभवाभवतं च वीतिवत्तो।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/6॥

Yassantarato na santi kopā, itibhavābhavataṃ ca vītivatto;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥6॥

यस्यान्तरतो न सन्ति कोपा:, इति भवाभवतश्च वीतवृत्त: ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥6॥

जिस भिक्षु के भीतर क्रोध नहीं है और जो भव अभव से रहित हो गया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥6॥

He in whose heart there are no feelings of anger, who has thus overcome reiterated existence, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.6.

यस्स वितक्का विधूपिता, अज्झत्तं सुविकप्पिता असेसा।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/7॥

Yassa vitakkā vidhūpitā, ajjhattaṃ suvikappitā asesā;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥7॥

यस्य वितर्का: विधूपिता:, अध्यात्मं सुविकल्पिता अशेषा: ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥7॥

जिस भिक्षु के वितर्क नष्ट हो गये हैं, जिसका चित्त पूर्ण रूप से संयत हो गया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥7॥

He whose doubts are scattered, cut off entirely inwardly, that Bhikkbu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.7.

यो नाच्चसारी न पच्चसारी, सब्बं अच्चगमा इमं पपञ्चं।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/8॥

Yo nāccasārī na paccasārī, sabbaṃ accagamā imaṃ papañcaṃ;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥8॥

यो नाग्रसारी न पश्चसारी, सर्वम् अत्यगमदिदं प्रपञ्चम् ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥8॥

जो भिक्षु न अति शीघ्रगामी है और न अति मन्दगामी, जिसने सारे सांसारिक प्रपंचों को पार कर लिया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥8॥

He who did not go too fast forward, nor was left behind, who overcame all this world of delusion, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.8.

यो नाच्चसारी न पच्चसारी, सब्बं वितथमिदं ति ञत्वा लोके।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/9॥

Yo nāccasārī na paccasārī, sabbaṃ vitathamidaṃ ti ñatvā loke;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥9॥

यो नाग्रसारी न पश्चसारी, सर्वं वितथमिदमिति ज्ञात्वा लोके ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥9॥

जो भिक्षु न अति शीघ्रगामी है और न अति मन्दगामी, जिसने "संसार में सब कुछ निस्सार है" – ऐसा जान लिया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥9॥

He who did not go too fast forward, nor was left behind, having seen that all this in the world is false, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.9.

यो नाच्चसारी न पच्चसारी, सब्बं वितथमिदं ति वीतलोभो।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/10॥

Yo nāccasārī na paccasārī, sabbaṃ vitathamidaṃ ti vītalobho;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥10॥

यो नाग्रसारी न पश्चसारी, सर्वं वितथमिदमिति वीतलोभः ।
स भिक्षुः जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥10॥

जो भिक्षु न अति शीघ्रगामी है और न अति मन्दगामी, जो "सब कुछ निस्सार है"–ऐसा जानकर लोभ-रहित हो गया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥10॥

He who did not go too fast forward, nor was left behind, being free from covetousness, seeing that all this is false, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.10.

यो नाच्चसारी न पच्चसारी, सब्बं वितथमिदं ति वीतरागो।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/11॥

Yo nāccasārī na paccasārī, sabbaṃ vitathamidaṃ ti vītarāgo;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥11॥

यो नाग्रसारी न पश्चसारी, सर्वं वितथमिदमिति वीतरागः ।
स भिक्षुः जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥11॥

जो भिक्षु न अति शीघ्रगामी है और न अति मन्दगामी, जो "सब कुछ निस्सार है"–ऐसा जानकर राग-रहित हो गया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥11॥

He who did not go too fast forward, nor was left behind, being free from passion, seeing that all this is false, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.12.

यो नाच्चसारी न पच्चसारी, सब्बं वितथमिदं ति वीतदोसो।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/12॥

Yo nāccasārī na paccasārī, sabbaṃ vitathamidaṃ ti vītadoso;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥12॥

यो नातिसारी न पश्चसारी, सर्वं वितथमिदमिति वीतदोषः ।
स भिक्षुः जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥12॥

जो भिक्षु न अति शीघ्रगामी है और न अति मन्दगामी, जो "सब कुछ निस्सार है"–ऐसा जानकर दोषरहित हो गया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥12॥

He who did not go too fast forward, nor was left behind, being free from hatred, seeing that all this is false, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.12.

यो नाच्चसारी न पच्चसारी, सब्बं वितथमिदं ति वीतमोहो।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिवत्तचं पुराणं॥1/1/13॥

Yo nāccasārī na paccasārī, sabbaṃ vitathamidaṃ ti vītamoho;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥13॥

यो नातिसारी न पश्चसारी, सर्वं वितथमिदमिति वीतमोह: ।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥13॥

जो भिक्षु न अति शीघ्रगामी है और न अति मन्दगामी, जो "सब कुछ निस्सार है"–ऐसा जानकर मोह-रहित हो गया है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥13॥

He who did not go too fast forward, nor was left behind, being free from folly, seeing that all this is false, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.13.

यस्सानुसया न सन्ति केचि, मूला च अकुसला समूहतासे।*
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/14॥

Yassānusayā na santi keci, mūlā ca akusalā samūhatāse;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥14॥

यस्यानुशया: न सन्ति केचित्, मूलं ह्यकुशलं समूलं हतञ्च।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥14॥

जिस भिक्षु में किसी भी तरह की आसक्तियाँ नहीं हैं, जिसने अकुशल (पाप=बुराइयाँ) के मूल (जड़) को सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर दिये हैं, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥14॥

He to whom there are no affections whatsoever, whose sins are extirpated from the root, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.14.

*वैदिक = छान्दस भाषा से मिलता-जुलता प्रयोग है ।

यस्स दरथजा न सन्ति केचि, ओरं आगमनाय पच्चयासे*।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/15॥

Yassa darathajā na santi keci, oraṃ āgamanāya paccayāse;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥15॥

यस्य *दरथजा:* (बीजा:) न सन्ति केचित्, अवारमागमनाय प्रत्ययास्ते।
स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥15॥

जिस भिक्षु में पुन: संसार में उत्पन्न होने के लिए किसी प्रकार का कोई क्लेश (आसक्ति) नहीं है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥15॥

He to whom there are no sins whatsoever originating in fear, which are the causes of coming back to this shore, that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.15.

* यह भी वैदिक भाषा से मिलता-जुलता प्रयोग है ।

यस्स वनथजा न सन्ति केचि, विनिबन्धाय भवाय हेतुकप्पा।
सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/16॥

Yassa vanathajā na santi keci, vinibandhāya bhavāya hetukappā;
So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥16॥

यस्य *वनथजा:* न सन्ति केचित्, विनिबन्धाय भवाय हेतुकल्पा: ।

स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥16॥

जिस भिक्षु में पुन: संसार-बन्धन में डालने के लिए किसी प्रकार की तृष्णा नहीं हैं, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥16॥

He to whom there are no sins what soever originating in desire, which are the causes of binding men to existence, that Bhiklthu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.16.

यो नीवरणे पहाय पञ्च, अनिघो तिण्णकथंकथो विसल्लो।

सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिव त्तचं पुराणं॥1/1/17॥

Yo nīvaraṇe pahāya pañca, anigho tiṇṇakathaṃkatho visallo;

So bhikkhu jahāti orapāraṃ, urago jiṇṇamiva ttacaṃ purāṇaṃ.॥17॥

यो नीवरणानि प्रहाय पञ्च*, अनघ: तीर्णकथंकथो• विशल्य: ।

स भिक्षु: जहाति अवारपारम्, उरगो जीर्णमिव त्वचं पुराणम्॥17॥

जिस भिक्षु ने पाँच नीवरणों को त्याग दिया है, जो निष्पाप है, सन्देहरहित है और जिसने सांसारिक आसक्ति रूपी काँटे को उखाड़ फेंका है, वह सर्प की केंचुली छोड़ने की भाँति इस लोक और परलोक को छोड़ देता है॥17॥

He who, having left the five obstacles, is free from suffering, has overcome-doubt, and is without pain that Bhikkhu leaves this and the further shore, as a snake quits its old worn out skin.17.

* कथंकथाय तिण्णता इति तिण्णकथंकथो=विचिकित्साविरहितो।

• रागशल्य, दोषशल्य, मोहशल्य, मानशल्य, दृष्टिशल्य– 5 शल्य हैं ।

उरगसुत्तं निट्ठितं

(Uragasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1,2) धनियसुत्तं (Dhaniyasuttaṃ)

''पक्कोदनो दुद्धखीरोहमस्मि, (इति धनियो गोपो) अनुतीरे महिया समानवासो।

छन्ना कुटि आहितो गिनि, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव''॥1/2/1॥

"Pakkodano duddhakhīrohamasmi, (iti dhaniyo gopo) Anutīre mahiyā samānavāso;

Channā kuṭi āhito gini, atha ce patthayasī pavassa deva".॥1॥

"पक्वौदनो दुग्धक्षीरोऽहमस्मि, (इति धनियो गोप:) अनुतीरे मह्या: समानवास:।

छन्ना कुटी आहितोऽग्नि:, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव ! "॥1॥

धनियगोप– भात पक चुका है, हमने दूध दुह लिया है, अपने परिजनों के साथ मही नदी के किनारे निवास करता हूँ, कुटी अच्छी तरह छायी हुई है, आग जल रही है, हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥1॥

I have boiled my rice, I have milked my cows, —so said the Dhaniya gopa— ' I am living together with my fellows near the banks of the Mahi river, my house is covered, the fire is burned: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.1.

"अक्कोधनो विगतखिलोहमस्मि, (इति भगवा) अनुतीरे महियेकरत्तिवासो।
विवटा कुटि निब्बुतो गिनि, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव॥" 1/2/2॥

"Akkodhano vigatakhilohamasmi, (iti bhagavā) Anutīre mahiyekarattivāso;
Vivaṭā kuṭi nibbuto gini, atha ce patthayasī pavassa deva".॥2॥

"अक्रोधनो विगतकीलोऽहमस्मि, (इति भगवान्) अनुतीरे मह्या एकरात्रिवास: ।
विवृता कुटी निवृतोऽग्नि:, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव ! "॥2॥

भगवान्– मैं क्रोध-रहित हूँ, मेरे चित्त के कील निकल गये हैं, मही नदी के किनारे एक रात के लिए निवास कर रहा हूँ, मेरी कुटी खुली हुई है, (राग आदि) आग शान्त हो गई है, हे देव! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥2॥

'I am free from anger, free from stubbornness,'—so said Bhagavāṇ,—' I am abiding for one night near the banks of the Mahi river, my house is uncovered, the fire of passions is extinguished: therefore, if thou like, rain, O Deva!' .2.

"अन्धकमकसा न विज्जरे, (इति धनियो गोपो) कच्छे रूळ्हतिणे चरन्ति गावो।
वुट्ठिं पि सहेय्युमागतं, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/3॥

"Andhakamakasā na vijjare, (iti dhaniyo gopo) Kacche rūḷhatiṇe caranti gāvo;
Vuṭṭhiṃ pi saheyyumāgataṃ, atha ce patthayasī pavassa deva".॥3॥

"अन्धकमशका: न विद्यन्ते, (इति धनियो गोप:) कच्छे रूढतृणानि चरन्ति गाव: ।
वृष्टिमपि सहेरन् आगतामथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव!"॥3॥

धनियगोप– डाँस, मच्छरादि यहाँ नहीं है, कछार में उगी हुई घासों को गायें चरती हैं, आई वर्षा को भी सह लेगीं। हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥3॥

'Gad-flies are not to be found with me,'—so said the Dhaniya gopa,—' in meadows abounding with grass the cows are roaming, and they can endure rain when it comes: therefore, if thou like, rain, O Deva!' .3.

"बद्धा हि भिसी सुसङ्खता, (इति भगवा) तिण्णो पारगतो विनेय्य ओघं।
अत्थो भिसिया न विज्जति, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/4॥

"Baddhā hi bhisī susaṅkhatā, (iti bhagavā) Tiṇṇo pāragato vineyya oghaṃ;
Attho bhisiyā na vijjati, atha ce patthayasī pavassa deva".॥4॥

"बद्धा हि वृषी सुसंस्कृता, (इति भगवान्) तीर्ण: पारंगतो विनीय ओघम् ।
अर्थो वृष्या न विद्यते, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव !"॥4॥

भगवान्– मैंने एक अच्छा बेड़ा बना लिया है, सांसारिक बाढ़ को तैरकर पार कर लिया है, अब बेड़े की आवश्यकता नहीं है। हे देव! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥4॥

'By me, it is made a well-constructed raft,'—so said Bhagavāṇ,—' I have passed over to Nibbana, I have reached the further bank, having overcome the torrent of passions; there is no further use for a raft: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.4.

"गोपी मम अस्सवा अलोला, (इति धनियो गोपो) दीघरत्तं संवासिया मनापा।
तस्सा न सुणामि किञ्चि पापं, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/5॥

"Gopī mama assavā alolā, (iti dhaniyo gopo) Dīgharattaṃ saṃvāsiyā manāpā;
Tassā na suṇāmi kiñci pāpaṃ, atha ce patthayasī pavassa deva".॥5॥

"गोपी ममाश्रवालोला*, (इति धनियो गोपः) दीर्घरात्रं संवास्यात् मनापा ।
तस्याः न शृणोमि किञ्चित्पापमथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव !"॥5॥

धनियगोप– मेरी ग्वालिन आज्ञाकारिणी और चंचलता रहित है, वह दीर्घकाल से प्रेम से मिलजुल कर रहती है, मैं उसके किसी भी प्रकार के पाप को नहीं सुनता हूँ । हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥5॥

'My wife is obedient, not wanton,'—so said the Dhaniya gopa,—' for a long time she has been living together with me. she is winning, and I hear nothing wicked of her: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.5.

*लोल पञ्चविध है–आहारलोल, अलंकारलोल, परपुरुषलोल, धनलोल, पादलोल ।

"चित्तं मम अस्सवं विमुत्तं, (इति भगवा) दीघरत्तं परिभावितं सुदन्तं।
पापं पन मे न विज्जति, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/6॥

"Cittaṃ mama assavaṃ vimuttaṃ, (iti bhagavā) Dīgharattaṃ paribhāvitaṃ sudantaṃ;
Pāpaṃ pana me na vijjati, atha ce patthayasī pavassa deva".॥6॥

"चित्तं ममाश्रवं विमुक्तम्, (इति भगवान्) दीर्घरात्रं परिभावितं सुदान्तम् ।
पापं पुनर्मे न विद्यतेऽथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव !"॥6॥

भगवान्– मेरा चित्त वशीभूत और विमुक्त है। दीर्घकाल से वह सुशिक्षित और दमन-कृत (दान्त) है, मेरे भीतर पाप नहीं है। हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥6॥

'My mind is obedient, delivered from all worldliness,'—so said Bhagavāṇ,—' it has for a long time been highly cultivated and well-subdued, there is no longer anything wicked in me: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.6.

अत्तवेतनभतोहमस्मि , (इति धनियो गोपो) पुत्ता च मे समानिया अरोगा।
तेसं न सुणामि किञ्चि पापं, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव॥1/2/7॥

Attavetanabhatohamasmi , (iti dhaniyo gopo) Puttā ca me samāniyā arogā;
Tesaṃ na suṇāmi kiñci pāpaṃ, atha ce patthayasī pavassa deva.॥7॥

आत्मवेतनभृतकोऽहमस्मि, (इति धनियो गोपः) पुत्राश्च मे समान्या अरोगाः।
तेषां न शृणोमि किञ्चित् पापमथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव !॥7॥

धनियगोप– मैं स्वयं कमाकर खाता हूँ, मेरे पुत्र भी अनुकूल और नीरोग हैं, मैं उनके किसी पाप को नहीं सुनता हूँ। हे देव, यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥7॥

'I support myself by my own earnings,'—so said the Dhaniya gopa,—' and my children are about me, healthy; I hear nothing wicked of them: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.7.

"नाहं भतकोस्मि कस्सचि, (इति भगवा) निब्बिट्ठेन चरामि सब्बलोके।
अत्थो भतिया न विज्जति, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/8॥

"Nāhaṃ bhatakosmi kassaci, (iti bhagavā) Nibbiṭṭhena carāmi sabbaloke;
Attho bhatiyā na vijjati, atha ce patthayasī pavassa deva".॥8॥

"नाहं भृतकोऽस्मि कस्यचित्, (इति भगवान्) निर्विष्टेन चरामि सर्वलोके।
अर्थो भृत्या न विद्यतेऽथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव!"॥8॥

भगवान्– मैं किसी का नौकर नहीं हूँ, मुझे नौकरी की आवश्यकता नहीं है, अर्थात् मैं किसी के आधीन न रहकर सर्वत्र विचरण करता हूँ । हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥8॥

'I am no one's servant,'—so said Bhagavāṇ,— 'with what I have gained I wander about in all the world, there is no need for me to serve: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.8.

"अत्थि वसा अत्थि धेनुपा, (इति धनियो गोपो) गोधरणियो पवेणियो पि अत्थि।
उसभो पि गवम्पतीध अत्थि, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/9॥

"Atthi vasā atthi dhenupā, (iti dhaniyo gopo) Godharaṇiyo paveṇiyopi atthi;
Usabho pi gavampatīdha atthi, atha ce patthayasī pavassa deva".॥9॥

"सन्ति वशाः सन्ति धेनुपाः, (इति धनियो गोपः) गोधरिण्यः* प्रवेण्यः सन्ति।
वृषभोऽपि गवाम्पति इह अस्ति, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव!"॥9॥

धनियगोप– मेरे पास बछड़े हैं, दुधारू गायें हैं, गाभिन और तरुण गायें भी हैं, गायों का पति साँड़ भी है। हे देव! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥9॥

'I have cows, I have calves,'—so said the Dhaniya gopa,—' I have cows in calf and heifers, and I have also a bull as lord over the cows: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.9.

*गर्भिणी

"नत्थि वसा नत्थि धेनुपा, (इति भगवा) गोधरणियो पवेणियोपि नत्थि।
उसभो पि गवम्पतीध नत्थि, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/10॥

"Natthi vasā natthi dhenupā, (iti bhagavā) Godharaṇiyo paveṇiyopi natthi;
Usabho pi gavampatīdha natthi, atha ce patthayasī pavassa deva".॥10॥

"न सन्ति वशाः न सन्ति धेनुपाः, (इति भगवान्) गोधरिण्यः प्रवेण्योऽपि न सन्ति ।
वृषभोऽपि गवाम्पतिः इह नास्ति, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव !"॥10॥

भगवान्– मेरे पास न बछड़े हैं, न दुधारू गायें हैं, गाभिन और तरुण गायें भी नहीं हैं, यहाँ गायों का पति साँड़ भी नहीं है । हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥10॥

'I have no cows, I have no calves,'—so said Bhagavāṇ,—' I have no cows in calf and no heifers, and I have no bull as a lord over the cows: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.10.

"खीला निखाता असम्पवेधी, (इति धनियो गोपो) दामा मुञ्जमया नवा सुसण्ठाना।
न हि सक्खिन्ति धेनुपा पि छेत्तुं अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥11॥

"Khilā nikhātā asampavedhī, (iti dhaniyo gopo) Dāmā muñjamayā navā susaṇṭhānā;
Na hi sakkhinti dhenupāpi chettuṃ, atha ce patthayasī pavassa deva".॥11॥

"कीला: निखाता असम्प्रवेधी, (इति धनियो गोप:) दामा मुञ्जमया नवा सुसंस्थाना।
नहि शक्ष्यन्ति धेनुपा* अपि छेत्तुम्, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव!"॥11॥

धनियगोप– अचल खूँटे गड़े हैं । मूँज की नई बनाई गई रस्सियाँ हैं, उन्हें तरुण बछड़े भी नहीं तोड़ सकते हैं। हे देव ! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥11॥

'The stakes are driven in, and cannot be shaken,'—so said the Dhaniya gopa,—' the ropes are made of muñga grass, new and well-made, the cows can not be able to break them: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.11.

*तरुणवत्सा:

"उसभोरिव छेत्वा बन्धनानि, (इति भगवा) नागो पूतिलतं व दालयित्वा ।
नाहं पुनुपेस्सं गब्भसेय्यं, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव"॥1/2/12॥

"Usabhoriva chetva bandhanāni, (iti bhagavā) Nāgo pūtilataṃ va dālayitvā;
Nāhaṃ punupessaṃ gabbhaseyyaṃ, atha ce patthayasī pavassa deva".॥12॥

"वृषभ इव छित्वा बन्धनानि, (इति भगवान्) नाग: पूतिलतामिव दालयित्वा ।
नाहं पुनरुपैषिष्यामि गर्भशय्याम्, अथ चेत् प्रार्थयसे प्रवर्ष देव!"॥12॥

भगवान्–साँड़ के समान बन्धनों को तोड़कर, हाथी के समान पूति-लता (गुरुचि की लता) को नष्ट कर, मैं फिर जन्म (गर्भशयन/गर्भाशय को) नहीं ग्रहण करूँगा। हे देव! यदि तुम चाहते हो तो बरसो॥12॥

'Having, like a bull, rent the bonds; having, like an elephant, broken through the galukkhi creeper, I shall not again enter into a womb: therefore, if thou like, rain, O Deva!'.12.

निन्नं च थलं च पूरयन्तो, महामेघो पवस्सि तावदेव।
सुत्वा देवस्स वस्सतो, इममत्थं धनियो अभासथ॥1/2/13॥

Ninnañca thalaṃ ca pūrayanto, mahāmegho pavassi tāvadeva;
Sutvā devassa vassato, imamatthaṃ dhaniyo abhāsatha.॥13॥

निम्नं च स्थलञ्च पूरयन्, महामेघ: प्रावर्षीत् तावदेव।
श्रुत्वा देवस्य वर्षत:, इममर्थं धनियोऽभाषत॥13॥

उसी समय नीची-ऊँची भूमि को भरती हुई जोरों की वर्षा हुई, बरसते हुए मेघ (वर्षा) को सुनकर धनिय ने यह बात कही॥13॥

Then at once a shower poured down, filling both sea and land. Hearing the sky raining, Dhaniya gopa spoke thus:.13.

"लाभा वत नो अनप्पका, ये मयं भगवन्तं अद्दसाम।
सरणं तं उपेम चक्खुम, सत्था नो होहि तुवं महामुनि॥1/2/14॥

"Lābhā vata no anappakā, ye mayaṃ bhagavantaṃ addasāma;
Saraṇaṃ taṃ upema cakkhuma, satthā no hohi tuvaṃ mahāmuni.॥14॥

"लाभा: बत ! नोऽनल्पका:, ये वयं भगवन्तमद्राक्षम्।
शरणं त्वामोपेयं चक्षुष्मन्तम्, शास्ता नो भव त्वं महामुने! ॥14॥

"अहो ! हमें बहुत ही लाभ हुआ, जो कि हम भगवान् का दर्शन कर रहे हैं। हम चक्षुष्मान् की शरण जाते हैं। हे महामुनि ! आप हमारे शास्ता (गुरु) हों॥14॥

'No small gain indeed has accrued to us since we have seen Bhagavāṇ; we take refuge in thee, O thou who art endowed with the eye of wisdom; be thou our Shāstā, O great Muni!'.14.

"गोपी च अहं च अस्सवा, ब्रह्मचरियं सुगते चरामसे*।
जातिमरणस्स पारगू, दुक्खस्सन्तकरा भवामसे"॥1/2/15॥

"Gopī ca ahaṃ ca assavā, brahmacariyaṃ sugate carāmase;
Jātimaraṇassa pāragū, dukkhassantakarā bhavāmase".॥15॥

"गोपी चाहञ्चाश्रवा, ब्रह्मचर्यं सुगते चरावहे ।
जातिमरणयो: पारगौ, दु:खस्यन्तकरौ भवावहे"॥15॥

मैं अपनी और आज्ञाकारिणी ग्वालिन बुद्ध-धर्म का पालन करेंगे और जन्म तथा मृत्यु को पार कर दु:ख का अन्त करने वाले हो जायेंगे॥15॥

'Both my wife and myself are obedient; if we lead a holy life before Sugata, we shall conquer birth and death, and put an end to pain.'.15.

*छान्दस् = वैदिक भाषा के निकट प्रयोग है ।

"नन्दति पुत्तेहि पुत्तिमा, (इति मारो पापिमा) गोमा गोहि तथेव नन्दति।
उपधी हि नरस्स नन्दना, न हि सो नन्दति यो निरूपधि"॥1/2/16॥

"Nandati puttehi puttimā, (iti māro pāpimā) Gomā gohi tatheva nandati;
Upadhī hi narassa nandanā, na hi so nandati yo nirūpadhi".॥16॥

"नन्दति पुत्रै: पुत्रवान्, (इति मार: पापी) गोमान् गोभि: तथैव नन्दति।
उपधि: हि नरस्य नन्दना, नहि स नन्दति यो निरुपधि:"॥16॥

मार– जैसे पुत्रों वाला पुत्रों से आनन्दित होता है, वैसे ही गायों वाला गायों से आनन्दित होता है । विषय-भोग ही मनुष्य के आनन्द के कारण हैं, जो विषय-भोग से रहित है, वह कभी आनन्दित नहीं होता है॥16॥

'He who has sons has pleasure in sons,'—so said the wicked Mara,—' he who has cows has delight likewise in cows; for upadhi substance is the delight of man, but he who has no upadhi has no delight.'.16.

"सोचति पुत्तेहि पुत्तिमा, (इति भगवा) गोपियो गोहि तथेव सोचति।
उपधी हि नरस्स सोचना, न हि सो सोचति यो निरूपधी''ति॥1/2/17॥

"Socati puttehi puttimā, (iti bhagavā) Gopiyo gohi tatheva socati;
Upadhī hi narassa socanā, na hi so socati yo nirūpadhī"ti.॥17॥

"शोचति पुत्रै: पुत्रवान्, (इति भगवान्) गोमान् गोभि: तथैव शोचति ।
उपधि: हि नरस्य शोचना, नहि स शोचति य: निरुपधि:" इति॥17॥

भगवान्– जैसे पुत्रों वाला पुत्रों से कष्ट पाता है, वैसे ही गौवों वाला गौवों से कष्ट पाता है। विषय-भोग ही मनुष्य के कष्ट के कारण हैं, जो विषय-भोग से रहित है, वह कभी कष्ट नहीं पाता है॥17॥

'He who has sons has care with his sons,'— so said Bhagavāṇ,—' he who has cows has likewise care with his cows; for upadhi is the cause of people's cares, but he who has no upadhi has no care.'.17.

धनियसुत्तं निष्ठितं
(Dhaniyasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1/3) खग्गविसाणसुत्तं (Khaggavisāṇasuttaṃ)

सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं, अविहेठयं अञ्ञतरं पि तेसं।
न पुत्तमिच्छेय्य कुतो सहायं, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/1॥

Sabbesu bhūtesu nidhāya daṇḍaṃ, aviheṭhayaṃ aññataraṃ pi tesaṃ;
Na puttamiccheyya kuto sahāyaṃ, eko care khaggavisāṇakappo.॥1॥

सर्वेषु भूतेषु निधाय दण्डम्, अविहेठ्यम् अन्यतरमपि तेषु।
न पुत्रमिच्छेत् कुत: सहायम्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥1॥

सभी प्राणियों के प्रति दण्ड त्याग कर, उनमें से किसी एक को भी न सताये। पुत्र की कामना न करें, फिर साथी की कहाँ बात? गैंडे के सींग(खड्गविषाण) की भाँति अकेले विचरण करना चाहिए॥1॥

Having laid aside the rod against all beings and not hurting any of them, let no one wish for a son, much less for a companion, let him roam alone like a rhinoceros.1.

संसग्गजातस्स भवन्ति स्नेहा, स्नेहन्वयं दुक्खमिदं पहोति।
आदीनवं स्नेहजं पेक्खमानो, एको चरो खग्गविसाणकप्पो॥1/3/2॥

Saṃsaggajātassa bhavanti snehā, snehanvayaṃ dukkhamidaṃ pahoti;
Ādīnavaṃ snehajaṃ pekkhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥2॥

संसर्गजातस्य भवन्ति स्नेहा:, स्नेहान्वयं दु:खमिदं प्रभवति।
आदीनवं स्नेहजं प्रेक्षमाण:, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥2॥

संसर्ग में रहने वाले को स्नेह उत्पन्न होता है, स्नेह के कारण यह दु:ख उत्पन्न होता है, इसलिए स्नेह से उत्पन्न होने वाले दुष्परिणाम को देखते हुए गैंडे के सींग की भाँति अकेले विचरण करना चाहिए॥2॥

In him who has affection with others affections arise, and then the pain which following affection, considering the misery that originates in affection let one roam alone like a rhinoceros.2.

मित्ते सुहज्जे अनुकम्पमानो, हापेति अत्थं पटिबद्धचित्तो।
एतं भयं सन्थवे पेक्खमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/3॥

Mitte suhajje anukampamāno, hāpeti atthaṃ paṭibaddhacitto;
Etaṃ bhayaṃ santhave pekkhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥3॥

मित्रे सुहृदि अनुकम्पमानः, हापयत्यर्थं प्रतिबद्धचित्तः।
एतद् भयं संस्तवे प्रेक्षमाणः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥3॥

आसक्त चित्त वाला व्यक्ति मित्रों और भाई–बन्धुओं पर अनुकम्पा करता हुआ अपने अर्थ (हित) को नष्ट कर देता है, मेलजोल में इस भय को देखते हुए गैंडे के सींग की भाँति अकेले विचरण करना चाहिए॥3॥

He who has compassion on his friends and confidential companions loses his own advantage, having a fettered mind; seeing this danger in friendship let one roam alone like a rhinoceros.3.

वंसो विसालो' व यथा विसत्तो, पुत्तेसु दारेसु च या अपेक्खा।
वंसक्कळीरो' व असज्जमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/4॥

Vaṃso visālo va yathā visatto, puttesu dāresu ca yā apekkhā;
Vaṃsakkaḷīro va sajjamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥4॥

वंशो विशाल इव यथा विसक्तः, पुत्रेषु दारेषु च या अपेक्षा।
वंशकरीर इव असजन्*, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥4॥

स्त्री-पुत्र के प्रति जो आसक्ति है, वह फैले हुए बांस के पेड़ के समान है, बांस के कोंपल को किसी से न लगता हुआ देखकर गैंडे की भाँति अकेले विचरण करना चाहिए॥4॥

Just as a large bamboo tree with its branches entangled in each other, such is the care one has with children and wife; like the shoot of a bamboo not clinging to anything let one roam alone like a rhinoceros.4.

* अलग्गमानः

मिगो अरञ्ञम्हि यथा अबद्धो, येनिच्छकं गच्छति गोचराय।
विञ्ञू नरो सेरितं पेक्खमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/5॥

Migo arañña mhi yathā abaddho, yenicchakaṃ gacchati gocarāya;
Viññū naro seritaṃ pekkhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥5॥

मृगोऽरण्ये यथा अबद्धः, येनेच्छितं गच्छति गोचराय।
विज्ञो नरो स्वैरितं प्रेक्षमाणः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥5॥

जंगल में न बँधा हुआ मृग (सिंह आदि पशु) चरने के लिए जहाँ चाहे चला जाता है, बुद्धिमान् (विज्ञ) व्यक्ति स्वतंत्रता को देखते हुए गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥5॥

As a wild animal unbound in the forest goes feeding at pleasure, so let the wise man, considering only his own will, roam alone like a rhinoceros.5.

आमन्तना होति सहायमज्झे, वासे ठाने गमने चारिकाय।
अनभिज्झितं सेरितं पेक्खमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/6॥

Āmantanā hoti sahāyamajjhe, vāse ṭhāne gamane cārikāya;
Anabhijjhitaṃ seritaṃ pekkhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥6॥

आमन्त्रणा भवति सहायमध्ये, वासे स्थाने गमने चारिकायै।
अनभीप्सितं स्वैरितं प्रेक्षमाणः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥6॥

कहीं निवास करने पर, रुकने पर, चलने और यात्रा करने पर मित्रों के साथ परामर्श करना होता है, किसी से परामर्श करने की आवश्यकता न होने की स्वतंत्रता को देखते हुए गैंडे की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥6॥

There is a constant calling in the midst of company, both when sitting, standing, walking, and going away; but let one, looking only for freedom from desire and for following his own will, roam alone like a rhinoceros.6.

खिड्डा रती होति सहायमज्झे, पुत्तेसु च विपुलं होति पेमं।
पियविप्पयोगं विजिगुच्छमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/7॥

Khiḍḍā ratī hoti sahāyamajjhe, puttesu ca vipulaṃ hoti pemaṃ;
Piyavippayogaṃ vijigucchamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥7॥

क्रीडा रतिः भवति सहायमध्ये, पुत्रेषु च विपुलं भवति प्रेम।
प्रियाविप्रयोगं विजुगुप्समानः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥7॥

मित्रों के बीच क्रीड़ा और रति होती है, पुत्रो के प्रति अधिक प्रेम होता है, प्रियों के वियोग के प्रति घृणा करते हुए गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥7॥

There is sport and amusement in the midst of company, and for children there is great affection; although disliking separation from his dear friends, let one roam alone like a rhinoceros.7.

चातुद्दिसो अप्पटिघो च होति, सन्तुस्समानो इतरीतरेन।
परिस्सयानं सहिता अछम्भी, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/8॥

Cātuddiso appaṭigho ca hoti, santussamāno itarītarena;
Parissayānaṃ sahitā achambhī, eko care khaggavisāṇakappo.॥8॥

चातुर्दिक् अप्रतिघश्च भवति, सन्तुष्यन् इतरेतरेण।
परिश्रयाणाम् सहिता अस्तम्भी, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥8॥

जो मिले उसी से सन्तुष्ट रहने वाला चारों दिशाओं में निर्भय होता है, सारे विघ्न-बाधाओं (श्रम, कष्ट) को सहने वाला और निर्भय होकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥8॥

He who is at home in all the four regions and is not hostile to any one, being content with this or that, overcoming all dangers fearlessly, let him roam alone like a rhinoceros.8.

दुस्सङ्गहा पब्बजिता'पि एके, अथो गहट्ठा घरमावसन्ता।
अप्पोस्सुको परपुत्तेसु हुत्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/9॥

Dussaṅgahā pabbajitā pi eke, atho gahaṭṭhā gharamāvasantā;
Appossukko paraputtesu hutvā, eko care khaggavisāṇakappo.॥9॥

दुस्सङ्गहाः प्रव्रजिता अपि एकः, अथ गृहस्थाः गृहमावसन्तः।
अल्पोत्सुकः परपुत्रेषु भूत्वा, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥9॥

कोई-कोई प्रव्रजित मिलजुल कर नहीं रह सकते हैं, ऐसे ही घर में रहने वाले गृहस्थ भी दूसरों के पुत्रों के प्रति अनासक्त होकर गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥9॥

Discontented are some pabbagitas (ascetics) also some householders dwelling in houses; let one, caring little about other people's children, roam alone like a rhinoceros.9.

ओरोपयित्वा गिहिब्यञ्जनानि, सञ्छिन्नपत्तो यथा कोविळारो।
छेत्वान वीरो गिहिबन्धनानि, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/10॥

Oropayitvā gihibyañjanāni, sañchinnapatto yathā koviḷāro;
Chetvāna vīro gihibandhanāni, eko care khaggavisāṇakappo.॥10॥

अवरोप्य गृहव्यञ्जनानि, संछिन्नपत्रो यथा कोविदार:।
छित्वा वीरो गृहबन्धनानि, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥10॥

गृहस्थ वेशभूषा को उतार कर, जैसे कोविलार का वृक्ष पत्रहीन हो जाय वैसे ही वीर पुरुष को गृहस्थ जीवन के बन्धनों को तोड़ कर गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥10॥

Removing the marks of a householder like a Kovilāra tree whose leaves are fallen, let one, after cutting off heroically the ties of a gihin, roam alone like a rhinoceros.10.

सचे लभेथ निपकं सहायं, सद्धिं चरं साधुविहारि धीरं।
अभिभुय्य सब्बानि परिस्सयानि, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/11॥

Sace labhetha nipakaṃ sahāyaṃ, saddhiṃ caraṃ sādhuvihāri dhīraṃ;
Abhibhuyya sabbāni parissayāni, eko care khaggavisāṇakappo.॥11॥

सचेल्लभेत् निपकं सहायम्, सार्धं चरन्तं साधुविहारधीरम्।
अभिभूय सर्वान् परिश्रयान्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥11॥

यदि साथ विचरण करने वाला अनुकूल पण्डित मित्र मिल जाए, तो सभी विघ्नों को दूर कर उसके साथ स्मृतिमान् और प्रसन्न होकर गैंडे के सींग की भाँति अकेले विचरण करना चाहिए॥11॥

If one acquires a clever companion, an associate righteous and wise, let him, overcoming all dangers, with him glad and thoughtful roam alone like a rhinoceros.11.

नो चे लभेथ निपकं सहायं, सद्धिं चरं साधुविहारिधीरं।
राजा'व रट्ठं विजितं पहाय, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/12॥

No ce labhetha nipakaṃ sahāyaṃ, saddhiṃ caraṃ sādhuvihāridhīraṃ;
Rājāva raṭṭhaṃ vijitaṃ pahāya, eko care khaggavisāṇakappo.॥12॥

नो चेल्लभेत निपकं सहायम्, सार्धं चरन्तं साधुविहारधीरम्।
राजेव राष्ट्रं विजितमपहाय, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥12॥

यदि साथ विचरण करने वाला अनुकूल पण्डित मित्र न मिले तो राजा की भाँति पराजित राष्ट्र को छोड़ कर गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥12॥

If one does not acquire a clever companion, an associate righteous and wise, then as a king abandoning his conquered kingdom, let him roam alone like a rhinoceros.12.

अद्धा पसंसाम सहायसम्पदं, सेट्ठा समा सेवितब्बा सहाया।
एते अलद्धा अनवज्जभोजी, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/13॥

Addhā pasaṃsāma sahāyasampadaṃ, seṭṭhā samā sevitabbā sahāyā;
Ete aladdhā anavajjabhojī, eko care khaggavisāṇakappo.॥13॥

अद्धा प्रशंसाम: सहायसम्पदम्, श्रेष्ठा: समा: सेवितव्या: सहाया:।
एतानलब्ध्य अनवद्यभोजी, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥13॥

हम निश्चित रूप से बहुत से मित्रों के होने की प्रशंसा करते हैं, किन्तु अपने से श्रेष्ठ और समान मित्रों का ही साथ करना चाहिए, इन्हें न पाकर निर्दोष आजीविका वाला होकर गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥13॥

Surely we ought to praise the good luck of having companions, the best and such as are our equals ought to be sought for; not having acquired such friends let one, enjoying only allowable things, roam alone like a rhinoceros.13.

दिस्वा सुवण्णस्स पभस्सरानि, कम्मारपुत्तेन सुनिट्ठितानि।
सङ्घट्टमानानि दुवे भुजस्मिं, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/14॥

Disvā suvaṇṇassa pabhassarāni, kammāraputtena suniṭṭhitāni;
Saṅghaṭṭamānāni duve bhujasmiṃ, eko care khaggavisāṇakappo.॥14॥

दृष्ट्वा सुवर्णस्य प्रभास्वराणि, कर्मारपुत्रेण सुनिष्ठितानि।
संघट्टमानानि द्वयोर्भुजयो:, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥14॥

स्वर्णकार द्वारा सुनिर्मित सोने की चमकीले आभूषणों को दोनों हाथों में टकराते हुए देखकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥14॥

Seeing bright golden bracelets, well-wrought by the goldsmith, striking against each other when there are two on one arm, let one roam alone like a rhinoceros.14.

एवं दुतियेन सहा ममस्स, वाचाभिलापो अभिसज्जना वा।
एतं भयं आयतिं पेक्खमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/15॥

Evaṃ dutiyena sahā mamassa, vācābhilāpo abhisajjanā vā;
Etaṃ bhayaṃ āyatiṃ pekkhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥15॥

एवं द्वितीयेन सह मम स्यात्, वाचाऽभिलापोऽभिसञ्जना वा।
एतद् भयम् आयतिं प्रेक्षमाण:, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥15॥

इस प्रकार दूसरे के साथ मेरे रहने से बातचीत या आसक्ति हो जाती है, भविष्य में इस भय को देखते हुए गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥15॥

Thus if I join myself with another I shall swear or scold; considering this danger in future, let one roam alone like a rhinoceros.15.

कामा हि चित्रा मधुरा मनोरमा, विरूपरूपेन मथेन्ति चित्तं।
आदीनवं कामगुणेसु दिस्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/16॥

Kāmā hi citrā madhurā manoramā, virūparūpena mathenti cittaṃ;
Ādīnavaṃ kāmaguṇesu disvā, eko care khaggavisāṇakappo.॥16॥

कामा: हि चित्रा: मधुरा: मनोरमा:, विरूपरूपेण मथ्नन्ति चित्तम्।
आदीनवं कामगुणेषु दृष्ट्वा, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥16॥

सांसारिक काम-भोग विचित्र, मधुर और मनोरम हैं। वे विविध प्रकार से चित्त को विचलित करते हैं, काम भोगों के दुष्परिणाम को देखकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥16॥

The sensual pleasures indeed, which are various, sweet, and charming, under their different shapes agitate the mind; seeing the misery in sensual pleasures, let one roam alone like a rhinoceros.16.

ईती च गण्डो च उपद्दवो च, रोगो च सल्लं च भयं च मेतं।
एतं भयं कामगुणेसु दिस्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/17॥

Ītī ca gaṇḍo ca upaddavo ca, rogo ca sallaṃ ca bhayaṃ ca metaṃ;
Etaṃ bhayaṃ kāmaguṇesu disvā, eko care khaggavisāṇakappo.
ईतिश्च गण्डश्च उपद्रवश्च, रोगश्च शल्यश्च भयश्च एतत्।
एतद् भयं कामगुणेषु दृष्ट्वा, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥17॥

यह विपत्ति है, फोड़ा है, उपद्रव है, रोग है, काँटा है और भय है–कामभोग में इस भय को देखकर गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥17॥

These problems are to me calamities, boils, misfortunes, diseases, acute pains and dangers; seeing this danger in sensual pleasures, let one roam alone like a rhinoceros.17.

सीतं च उण्हं च खुदं पिपासं, वातातपे डंससरीसपे च।
सब्बानि पेतानि अभिसम्भवित्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/18॥

Sītaṃ ca uṇhaṃ ca khudaṃ pipāsaṃ, vātātape ḍaṃsasarīsape ca;
Sabbānipetāni abhisambhavitvā, eko care khaggavisāṇakappo.॥18॥

शीतञ्च उष्णञ्च क्षुधां पिपासाम्, वातातपे दंश-सरीसृपे च ।
सर्वाण्यप्येतानि अभिसंभूय, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥

ठंडक और गर्मी, भूख और प्यास, हवा, धूप, डँस और साँप-इन सबको सह कर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥18॥

Both cold and heat, hunger and thirst, wind and a burning sun and gad-flies and snakes—having overcome all these things, let one roam alone like a rhinoceros'.18.

नागो व यूथानि विवज्जयित्वा, सञ्जातखन्धो पदुमी उळारो।
यथाभिरन्तं विहरं अरञ्ञे, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/19॥

Nāgo va yūthāni vivajjayitvā, sañjātakhandho padumī uḷāro;
Yathābhirantaṃ viharaṃ araññe, eko care khaggavisāṇakappo.॥19॥

नाग इव यूथानि विवर्ज्य, संजातस्कन्ध: पद्मी उदार:।
यथाभिरन्तं विहरन् अरण्ये, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥19॥

जिस प्रकार पद्म कुल का विशाल गजराज अपने दल (यूथ, समूह) को त्यागकर इच्छानुरूप जंगल में विहार करता है वैसे ही, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥19॥

As the elephant, the strong, the spotted, the large, after leaving the herd walks at pleasure in the forest, even so let one roam alone like a rhinoceros.19.

अट्ठानतं सङ्गणिकारतस्स, यं फस्सये सामयिकं विमुत्तिं।
आदिच्चबन्धुस्स वचो निसम्म, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/20॥

Aṭṭhānataṃ saṅgaṇikāratassa, yaṃ phassaye sāmayikaṃ vimuttiṃ;
Ādiccabandhussa vaco nisamma, eko care khaggavisāṇakappo.॥20॥

अस्थानं तत् संगणिकारतस्य, यद् स्पृशेत् सामयिकं विमुक्तिम्।
आदित्यबन्धोः वचो निशम्य, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥

भगवान् बुद्ध की इस बात को सुन कर कि 'झुण्ड में रहने वाले के लिए सामयिक विमुक्ति को पाना भी असम्भव है', गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥20॥

For him who delights in meeting with others, that is inconvenient which tends to temporary deliverance; reflecting on the words of Buddha, let one roam alone like a rhinoceros.20.

दिट्ठीविसूकानि उपातिवत्तो, पत्तो नियामं पटिलद्धमग्गो।
उप्पन्नञाणोम्हि अनञ्ञनेय्यो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/21॥

Diṭṭhīvisūkāni upātivatto, patto niyāmaṃ paṭiladdhamaggo;
Uppannañāṇomhi anaññaneyyo, eko care khaggavisāṇakappo.॥21॥

दृष्टिविसूचकानि उपातिवृत्तः, प्राप्तः नियामं प्रतिलब्धमार्गः।
उत्पन्नज्ञानोऽस्मि अनन्यनेयः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥21॥

मैंने मिथ्यादृष्टियों को पार कर लिया है, मैंने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, मार्ग प्राप्त हो गया है, मुझे ज्ञान उत्पन्न हो गया है, मुझे किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता नहीं है, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥21॥

The harshness of the philosophical views I have overcome, I have acquired self-command, I have attained to the way, I am in possession of knowledge and not to be led by others; so speaking, let one roam alone like a rhinoceros.21.

निल्लोलुपो निक्कुहो निप्पिपासो, निम्मक्खो निद्धन्तकसावमोहो।
निरासयो सब्बलोके भवित्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/22॥

Nillolupo nikkuho nippipāso, nimmakkho niddhantakasāvamoho;
Nirāsayo sabbaloke bhavitvā, eko care khaggavisāṇakappo.॥22॥

निर्लोलुपो निष्कुहो निर्पिपासः, निर्म्रक्षः निर्हतकषायमोहः।
निराश्रयः सर्वलोके हि भूत्वा, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥22॥

लोभ, ढोंग, तृष्णा, कपट, चित्त-मल और मोह से रहित होकर, किसी प्रकार की इच्छा न करते हुए, संसार की सारी आसक्तियों को त्याग कर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥22॥

Without shrewdness, without deceit, without craving, without detraction, having got rid of passions and folly, being free from desire in all the world, let one roam alone like a rhinoceros.22.

पापं सहायं परिवज्जयेथ, अनत्थदस्सिं विसमे निविट्ठं।
सयं न सेवे पसुतं पमत्तं, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/23॥

Pāpaṃ sahāyaṃ parivajjayetha, anatthadassiṃ visame niviṭṭhaṃ;
Sayaṃ na seve pasutaṃ pamattaṃ, eko care khaggavisāṇakappo.॥23॥

पापं सहायं परिवर्जयेत्, अनर्थदर्शिनं विषमे निविष्टम्।
स्वयं न सेवेत प्रसुप्तं प्रमत्तम्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥23॥

अनर्थ चाहने वाले, बुरे कार्यों में संलग्न, बुरे मित्रों का साथ छोड़ दे, आलसी और प्रमादी का स्वयं साथ न करे, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥23॥

Let one avoid a wicked companion who teaches what is useless and has gone into what is wrong, let him not cultivate the society of one who is devoted and lost in sensual pleasures, let one roam alone like a rhinoceros.23.

बहुस्सुतं धम्मधरं भजेथ, मित्तं उळारं पटिभानवन्तं।
अञ्ञाय अत्थानि विनेय्य कङ्खं, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/24॥

Bahussutaṃ dhammadharaṃ bhajetha, mittaṃ uḷāraṃ paṭibhānavantaṃ;
Aññāya atthāni vineyya kaṅkhaṃ, eko care khaggavisāṇakappo.॥24॥

बहुश्रुतं धर्मधरं भजेत्, मित्रमुदारं प्रतिभानवन्तम्।
आज्ञाय अर्थान् विनीय कांक्षाम्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥24॥

बहुश्रुत, धर्मधर, उदार और प्रतिभावान् मित्र का साथ करना चाहिए, अर्थ को जानकर जिज्ञासाओं (आकांक्षाओं) का समाधान कर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥24॥

Let one cultivate the society of a friend who is learned and keeps the Dhamma, who is magnanimous and wise; knowing the meaning of things and subduing his doubts, let one roam alone like a rhinoceros.24.

खिड्डं रतिं कामसुखं च लोके, अनलङ्करित्वा अनपेक्खमानो।
विभूसनट्ठाना विरतो सच्चवादी, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/25॥

Khiḍḍaṃ ratiṃ kāmasukhaṃ ca loke, analaṅkaritvā anapekkhamāno;
Vibhūsanaṭṭhānā virato saccavādī, eko care khaggavisāṇakappo.॥25॥

क्रीडां रतिं कामसुखं च लोके, अनलंकृत्यानप्रेक्षमाण:।
विभूषणस्थानात् विरत: सत्यवादी, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥25॥

क्रीड़ा, रति और सांसारिक काम-वस्तुओं को न चाहते हुए, उनके प्रति आसक्ति-रहित हो, श्रृंगार की वस्तुओं से विरत होकर, सत्यवादी बनकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥25॥

Not adorning himself, not looking out for sport, amusement, and the delight of pleasure in the world, on the contrary being loath of a life of dressing, speaking the truth, let one roam alone like a rhinoceros.25.

पुत्तं च दारं पितरं च मातरं, धनानि धञ्ञानि च बन्धवानि ।
हित्वान कामानि यथोधिकानि, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/26॥

Puttaṃ ca dāraṃ pitaraṃ ca mātaraṃ, dhanāni dhaññāni ca bandhavāni
Hitvāna kāmāni yathodhikāni, eko care khaggavisāṇakappo.॥26॥

पुत्रञ्च दारान् पितरञ्च मातरम्, धनानि धान्यानि च बान्धवान् ।
हित्वा कामान् यथाधिकान्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥26॥

पुत्र, स्त्री, पिता, माता, धन, धान्य और भाई-बन्धुओं के साथ सारे काम-भोगों को त्याग कर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥26॥

Having left son and wife, father and mother, wealth, and corn, and relatives, the different objects of desire, let one roam alone like a rhinoceros.26.

सङ्गो एसो परित्तमेत्थ सोख्यं, अप्पस्सादो दुक्खमेत्थ भिय्यो।
गळो एसो इति ञत्वा मुतीमा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/27॥

Saṅgo eso parittamettha sokhyaṃ, appassādo dukkhamettha bhiyyo;
Gaḷo eso iti ñatvā mutīmā, eko care khaggavisāṇakappo.॥27॥

सङ्ग एष परीत्तमत्र सौख्यमल्पास्वाद: दु:खमत्र भूय:।
गण्ड एष इति ज्ञात्वा मतिमान्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥27॥

यह बन्धन है, इसमें बहुत थोड़ा सुख है, इसमें कम स्वाद और दु:ख अधिक है, बुद्धिमान् पुरुष 'यह फोड़ा है'- ऐसा जानकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥27॥

'This is a tie, in this there is little happiness, little enjoyment, but more of pain, this is a fish-hook,' so having understood, let a thoughtful man roam alone like a rhinoceros.27.

सन्दालयित्वान संयोजनानि, जालं व भेत्वा सलिलम्बुचारी।
अग्गी व दड्ढं अनिवत्तमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/28॥

Sandālayitvāna saṃyojanāni, jālaṃ va bhetvā salilambucārī;
Aggī va daḍḍhaṃ anivattamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥28 1।

सन्दालयित्वा* संयोजनानि, जालमिव भित्वा सलिलाम्बुचारी।
अग्निरिव दग्धमनिवर्तमाण:, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥28॥

जिस प्रकार मछली जाल को छेद कर निकल जाय, वैसे ही बन्धनों को नष्ट कर जलती हुई न रुकने वाली आग की भाँति सभी बन्धनों को काटकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥28॥

Having torn the ties, having broken the net as a fish in the water, being like a fire not returning to the burnt place, let one roam alone like a rhinoceros.28.

*कातन्त्र व्याकरण के अनुसार सन्दायित्वा बनेगा। *पाणिनि व्याकरण के अनुसार सन्दाल्य बनता है ।

ओक्खित्तचक्खू न च पादलोलो, गुत्तिन्द्रियो रक्खितमानसानो।
अनवस्सुतो अपरिडय्हमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/29॥

Okkhittacakkhū na ca pādalolo, guttindriyo rakkhitamānasāno;
Anavassuto apariḍayhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥29॥

अवक्षिप्तचक्षुः न च पादलोलः, गुप्तेन्द्रियो रक्षितमानसः।
अनवश्रितोऽपरिदह्यमानः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥29॥

आँखों को नीचे झुकाये, तेजी से न चलनेवाला (लड़खड़ाकर न चलनेवाला) इन्द्रियों में संयमी, मन को वश में कर, तृष्णा और काम-वासना से न संतप्त होकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥29॥

With downcast eyes, and not prying', with his senses guarded, with his mind protected free from passion, not burning with lust, let one roam alone like a rhinoceros.29.

ओहारयित्वा गिहिब्यञ्जनानि, सञ्छन्नपत्तो यथा पारिछत्तो।
कासायवत्थो अभिनिक्खमित्वा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/30॥

Ohārayitvā gihibyañjanāni, sañchannapatto yathā pārichatto;
Kāsāyavattho abhinikkhamitvā, eko care khaggavisāṇakappo.॥30॥

अपहार्य गृहव्यञ्जनानि, संछिन्नपत्रो यथा पारिछत्रः।
काषायवस्त्रोऽभिनिष्क्रम्य*, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥30॥

पत्र-हीन पारिछत्र वृक्ष की भाँति गृहस्थ-वेषभूषा को त्यागकर काषायवस्त्रधारी हो (भिक्षु बनकर), गृह त्यागकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥30॥

Removing the characteristics of a householder, like a Parikhatta tree whose leaves are cut off, clothed in a yellow robe after wandering away from his house, let one roam alone like a rhinoceros.30.

* अभिनिष्क्रमित्वा-कातन्त्र व्याकरण के अनुसार बनेगा।

रसेसु गेधं अकरं अलोलो, अनञ्ञपोसी सपदानचारी।
कुले कुले अप्पटिबद्धचित्तो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/31॥

Rasesu gedhaṃ akaraṃ alolo, anaññaposī sapadānacārī;
Kule kule appaṭibaddhacitto, eko care khaggavisāṇakappo.॥31॥

रसेषु गृधामकुर्वन् अलोलः, अनन्यपोषी सपदानचारी*।
कुले कुले अप्रतिबद्धचित्तः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥31॥

रस-तृष्णा में लोभ न करने वाला, चंचलता रहित, दूसरे का पोषण न करने वाला, प्रत्येक घर में भिक्षाटन करने वाला, किसी भी कुल में आसक्ति न रखने वाला होकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥31॥

Not being greedy of sweet things, not being unsteady, not supporting others, going begging from house to house, having a mind which is not fettered to any household, let one roam alone like a rhinoceros.31.

* सपद+अनचारी = अनुसरण करने वाला ।

पहाय पञ्चावरणानि चेतसो, उपक्किलेसे ब्यपनुज्ज सब्बे।
अनिस्सितो छेत्वा सिनेहदोसं, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/32॥

Pahāya pañcāvaraṇāni cetaso, upakkilese byapanujja sabbe;
Anissito chetvā sinehadosaṃ, eko care khaggavisāṇakappo.॥32॥

प्रहाय पञ्चावरणानि चेतसः, उपक्लेशान् व्यपनुद्य सर्वान्।
अनिःश्रितः छित्वा स्नेहदोषम्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥32॥

चित्त के पाँच नीवरणों का प्रहाण कर, सारे चित्तमलों को दूर कर, अनासक्ति-रहित होकर, स्नेह को छोड़कर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥32॥

Having left the five obstacles of the mind, having dispelled all sin, being independent, having cut off the sin of desire, let one roam alone like a rhinoceros.32.

विपिट्ठिकत्वान सुखं दुखं च, पुब्बेव च सोमनस्सदोमनस्सं।
लद्धानुपेक्खं समथं विसुद्धं, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/33॥

Vipiṭṭhikatvāna sukhaṃ dukhaṃ ca, pubbeva ca somanassadomanassaṃ;
Laddhānupekkhaṃ samathaṃ visuddhaṃ, eko care khaggavisāṇakappo.॥33॥

विपृष्ठीकृत्य सुखं दुःखं च, पूर्वमेव च सौमनस्य-दौर्मनस्यम् ।
लब्धानुपेक्षं शमथं विशुद्धम्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥33॥

सुख और दुःख को त्याग कर, पहले ही सौमनस्य और दौर्मनस्य (सुख-दुःख के भाव) को दूर कर, विशुद्ध उपेक्षा वाले शमथ (समाधि) को प्राप्त कर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥33॥

Having thrown behind himself bodily pleasure and pain, and previously mental joy and distress, having acquired equanimity, tranquility, purity, let one roam alone like a rhinoceros.33.

आरद्धवीरियो परमत्थपत्तिया, अलीनचित्तो अकुसीतवुत्ति।
दळ्हनिक्कमो थामबलूपपन्नो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/34॥

Āraddhavīriyo paramatthapattiyā, alīnacitto akusītavutti;
Daḷhanikkamo thāmabalūpapanno, eko care khaggavisāṇakappo.॥34॥

आरब्धवीर्यः परमार्थप्राप्तये, अलीनचित्तोऽकुसीदवृत्तिः।
दृढनिक्रमः स्थामबलोपपन्नः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥34॥

परमार्थ की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील होकर, जागरूक होकर, आलस्य को त्यागकर, दृढ़संकल्प, स्थाम (शक्ति=स्थैर्य) और बल से युक्त होकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥34॥

Strenuous for obtaining the supreme good with a mind free from attachment, not living in idleness, being firm, endowed with bodily and mental strength, let one roam alone like a rhinoceros.34.

पटिसल्लानं झानमरिञ्चमानो, धम्मेसु निच्चं अनुधम्मचारी।
आदीनवं सम्मसिता भवेसु, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/35॥

Paṭisallānaṃ jhānamariñcamāno, dhammesu niccaṃ anudhammacārī;
Ādīnavaṃ sammasitā bhavesu, eko care khaggavisāṇakappo.॥35॥

प्रतिसंलायनं ध्यानमरिञ्चमाणः, धर्मेषु नित्यमनुधर्मचारी।
आदीनवं सम्मृष्टा भवेसु, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥35॥

समाधिस्थ होकर, ध्यान में तल्लीन रहे, नित्य धर्म के अनुसार आचरण करते हुए, संसार के दुष्परिणामों का मनन करते हुए, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥35॥

Not abandoning seclusion and meditation, always wandering in accordance with the Dhammas', seeing misery in the existences, let one roam alone like a rhinoceros.35.

तण्हक्खयं पत्थयमप्पमत्तो, अनेळमूगो सुतवा सतीमा।
सङ्खातधम्मो नियतो पधानवा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/36॥

Taṇhakkhayaṃ patthayamappamatto, aneḷamūgo sutavā satīmā;
Saṅkhātadhammo niyato padhānavā, eko care khaggavisāṇakappo.॥36॥

तृष्णाक्षयं प्रार्थयन् अप्रमत्तः, अनेडमूकः श्रुतवान् स्मृतिमान्।
संख्यातधर्मः नियतः प्रधानवान्, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥36॥

तृष्णा-क्षय को चाहते हुए, अप्रमादी होकर, निपुण श्रुतिमान् और स्मृतिमान् बनकर, धर्म को जानकर, तप में संलग्न होकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥36॥

Wishing for the destruction of desire, being careful, no fool, learned, strenuous, considerate, restrained, energetic, let one roam alone like a rhinoceros.36.

सीहो व सद्देसु असन्तसन्तो, वातो व जालम्हि असज्जमानो।
पदुमं व तोयेन अलिप्पमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/37॥

Sīho va saddesu asantasanto, vāto va jālamhi asajjamāno;
Padumaṃ va toyena alippamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥37॥

सिंह इव शब्दैः असन्त्रसन्तः, वात इव जालेऽसजन् ।
पद्मिव तोयेन अलिसमानः, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥37॥

शब्दों से न डरने वाले सिंह के समान, वायु के जाल में न फँसने के समान और कमल के जल से न लिप्त होने के समान बनकर, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥37॥

Like a lion not trembling at noises, like the wind not caught in a net, like a lotus not stained by water, let one roam alone like a rhinoceros.37.

सीहो यथा दाठावली पसय्ह, राजा मिगानं अभिभुय्य चारी।
सेवेथ पन्तानि सेनासनानि, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/38॥

Sīho yathā dāṭhabalī pasayha, rājā migānaṃ abhibhuyya cārī;
Sevetha pantāni senāsanāni, eko care khaggavisāṇakappo.॥38॥

सिंहो यथा दाठावली प्रसह्य, राजा मृगाणामभिभूय चारी।
सेवेत प्रान्तानि शयनासनानि, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्पः॥38॥

जैसे दाठावली मृगराज सिंह सभी पशुओं का दमन करके रहता है, वैसे ही भिक्षु एकान्त वाले शयनासन का सेवन करते हैं, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥38॥

As a lion strong by his teeth, after overcoming all animals, wanders victorious as the king of the animals, and haunts distant dwelling-places', even so let one roam alone like a rhinoceros.38.

मेत्तं उपेक्खं करुणं विमुत्तिं, आसेवमानो मुदितं च काले।
सब्बेन लोकेन अविरुज्झमानो, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/39॥

Mettaṃ upekkhaṃ karuṇaṃ vimuttiṃ, āsevamāno muditaṃ ca kāle;
Sabbena lokena avirujjhamāno, eko care khaggavisāṇakappo.॥39॥

मैत्रीमुपेक्षां करुणां विमुक्तिम्, आसेवमानो मुदितां च काले।
सर्वेण लोकेनाऽविरुध्यमाण:, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥39॥

समयानुसार मैत्री, उपेक्षा, करुणा, विमुक्ति और मुदिता का अभ्यास करते हुए, सारे संसार में विरोध-भाव न रखते हुए गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥39॥

Cultivating in due time kindness, equanimity, compassion, deliverance and rejoicing with others, unobstructed by the whole world, let one roam alone like a rhinoceros.39.

रागं च दोसं च पहाय मोहं, सन्दालयित्वान संयोजनानि।
असन्तसं जीवितसङ्खयम्हि, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/40॥

Rāgaṃ ca dosaṃ ca pahāya mohaṃ, sandālayitvāna saṃyojanāni;
Asantasaṃ jīvitasaṅkhayamhi, eko care khaggavisāṇakappo.॥40॥

रागञ्च दोषञ्च प्रहाय मोहम्, संदालयित्वा* संयोजनानि।
असन्त्रसन्त: जीवितसंक्षयेन, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥40॥

राग, द्वेष तथा मोह का प्रहाण कर, बन्धनों को नष्ट कर, मृत्यु से भी न डरते हुए, गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥40॥

Having abandoned both passion and hatred and folly, having rent the ties, not trembling in the loss of life, let one roam alone like a rhinoceros.40.

* पाणिनि व्याकरण के अनुसार संदाल्य बनेगा।

भजन्ति सेवन्ति च कारणत्था, निक्कारणा दुल्लभा अज्ज मित्ता।
अत्तट्ठपञ्ञा असुची मनुस्सा, एको चरे खग्गविसाणकप्पो॥1/3/41॥

Bhajanti sevanti ca kāraṇatthā, nikkāraṇā dullabhā ajja mittā;
Attaṭṭhapaññā asucī manussā, eko care khaggavisāṇakappo.॥41॥

भजन्ति सेवन्ते च कारणार्थात्, निष्कारणाणि दुर्लभाणि अद्य मित्राणि।
आत्मस्थप्रज्ञा अशुचय: मनुष्या:, एकश्चरेत् खड्गविषाणकल्प:॥41॥

लोग मतलब के लिए ही साथ करते हैं, आजकल नि:स्वार्थी मित्र दुर्लभ हैं, अधिकांश मनुष्य स्वार्थी और बुरे स्वभाव वाले हैं, अत: गैंडे के सींग की भाँति अकेला विचरण करना चाहिए॥41॥

They cultivate the society of others and serve them for the sake of advantage; friends without a motive are now difficult to get, men know their own profit and are impure; therefore let one roam alone like a rhinoceros.41.

खग्गविसाणसुत्तं निट्ठितं
(Khaggavisāṇasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(1, 4) कसिभारद्वाजसुत्तं (Kasibhāradvājasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा मगधेसु विहरति दक्खिणागिरिस्मिं एकनाळायं ब्राह्मणगामे। तेन खो पन समयेन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स पञ्चमत्तानि नङ्गलसतानि पयुत्तानि होन्ति वप्पकाले। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स कम्मन्तो तेनुपसङ्कमि। तेन खो पन समयेन कसिभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स परिवेसना वत्तति। अथ खो भगवा येन परिवेसना तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा एकमन्तं अट्ठासि। अद्दसा खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं पिण्डाय ठितं। दिस्वान भगवन्तं एतदवोच – ''अहं खो, समण, कसामि च वपामि च; कसित्वा च वपित्वा च भुञ्जामि। त्वं पि, समण, कसस्सु च वपस्सु च; कसित्वा च वपित्वा च भुञ्जस्सू''ति।

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā magadhesu viharati dakkhiṇāgirismiṃ ekanāḷāyaṃ brāhmaṇagāme. Tena kho pana samayena kasibhāradvājassa brāhmaṇassa pañcamattāni naṅgalasatāni payuttāni honti vappakāle. Atha kho bhagavā pubbaṇhasamayaṃ nivāsetvā pattacīvaramādāya yena kasibhāradvājassa brāhmaṇassa kammanto tenupasaṅkami. Tena kho pana samayena kasibhāradvājassa brāhmaṇassa parivesanā vattati. Atha kho bhagavā yena parivesanā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā ekamantaṃ aṭṭhāsi. Addasā kho kasibhāradvājo brāhmaṇo bhagavantaṃ piṇḍāya ṭhitaṃ. Disvāna bhagavantaṃ etadavoca – "ahaṃ kho, samaṇa, kasāmi ca vapāmi ca; kasitvā ca vapitvā ca bhuñjāmi. Tvaṃ pi, samaṇa, kasassu ca vapassu ca; kasitvā ca vapitvā ca bhuñjassū"ti.

एवं मया श्रुतम्। एकस्मिन् समये भगवान् *मगधेषु* विहरति दक्षिणगिरौ एकनालायां ब्राह्मणग्रामे। तस्मिन् खलु पुन: समये *कसिभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य पञ्चमात्राणि लाङ्गलशतानि प्रयुक्तानि भवन्ति वप्रकाले। अथ खलु भगवान् पूर्वाह्णसमयं निवस्य पात्रचीवरमादाय, यत्र *कसिभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य कर्मान्त: तत्रोपसमक्रमीत्। तस्मिन् खलु पुन: समये *कसिभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य परिवेशनं वर्तते । अथ खलु भगवान् यत्र परिवेशनं तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य एकान्तमस्थात्। अद्राक्षीत् खलु *कसिभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवन्तं पिण्डाय स्थितम्। दृष्ट्वा भगवन्तम् एतदवोचत्– "अहं खलु श्रमण ! कर्षामि च वपामि च; कृष्ट्वा च उप्त्वा च भुञ्जे। त्वमपि, श्रमण! कर्ष च वप च; कृष्ट्वा च उप्त्वा च भुङ्क्ष्व" इति ।

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् मगध के दक्षिणगिरि में एकनाला नामक ब्राह्मणों के ग्राम में विहार कर रहे थे । उस समय कसिभारद्वाज ब्राह्मण के पाँच सौ हल बोने के समय जोताई के कार्य में लगे हुए थे । तब भगवान् पूर्वाह्न समय में चीवर धारण कर, पात्र और चीवर लेकर जहाँ कसिभारद्वाज ब्राह्मण का कार्यस्थान था, वहाँ गए, उस समय कसिभारद्वाज ब्राह्मण के यहाँ भोजन परोसना हो रहा था, वहाँ जाकर एक ओर खड़े हो गए, कसिभारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान् को भिक्षा के लिए खड़ा देखा । देखकर भगवान् से यह कहा– "हे श्रमण ! मैं जोतता और बोता हूँ, जोत और बोकर खाता हूँ । हे श्रमण ! तुम भी जोतो और बोओ, जोत और बोकर खाओ।"

So it was heard by me: At one time Bhagavat dwelt in Magadha at Dakkhingiri in the Brahmaṇa village Ekanala. And at that time the Brahmaṇa Kasibharadvaja's five hund red ploughs were tied to the yokes in the sowing season. Then Bhagavān, in the morning, having put on his raiment and taken his bowl and robes, went to the place where the Brahmaṇa Kasibharadvaja's work was going on. At that time the Brahmaṇa Kasibharadvajas distribution of food took place. Then Bhagavān went to the place where the distrib ution of food took place, and having gone there, he stood apart. The Brahmaṇa Kasibharadvaja saw Bhagavāna standing there to get alms, and having seen him he said this to Bhagavāna:

अहं पि खो, ब्राह्मण! कसामि च वपामि च; कसित्वा च वपित्वा च भुञ्जामी''ति।

"Ahaṃ pi kho, brāhmaṇa, kasāmi ca vapāmi ca; kasitvā ca vapitvā ca bhuñjāmī"ti.

"अहमपि खलु, ब्राह्मण ! कर्षामि च वपामि च; कृष्ट्वा च उप्त्वा च भुञ्जे" इति ।

"ब्राह्मण ! मैं जोतता और बोता हूँ। जोत और बोकर खाता हूँ।"

'I, O Sramaṇa, both plough and sow, and having ploughed and sown, I eat; thou also, O Sramaṇa, should plough and sow, and having ploughed and sown, thou should steat.'

''न खो पन मयं पस्साम भोतो गोतमस्स युगं वा नङ्गलं वा फालं वा पाचनं वा बलिबद्दे वा। अथ च पन भवं गोतमो एवमाह – 'अहं पि खो, ब्राह्मण, कसामि च वपामि च; कसित्वा च वपित्वा च भुञ्जामी''ति।

"Na kho pana mayaṃ passāma bhoto gotamassa yugaṃ vā naṅgalaṃ vā phālaṃ vā pācanaṃ vā balibadde vā. Atha ca pana bhavaṃ gotamo evamāha – 'ahaṃ pi kho, brāhmaṇa, kasāmi ca vapāmi ca; kasitvā ca vapitvā ca bhuñjāmī'"ti.

"न खलु पुन: वयं पश्याम:, भवतो *गौतमस्य* युगं वा लाङ्गलं वा फालं वा प्राजनं वा बलीवर्दौ वा, अथ च पुन: भवान् *गौतम* एवमाह- 'अहमपि खलु, ब्राह्मण ! कर्षामि च वपामि च; कृष्ट्वा च उप्त्वा च भुञ्जे" इति ।

"हम लोग आप गौतम के जुआठ, हल, फार, छेकुनी अथवा बैलों को नहीं देखते हैं फिर भी आप गौतम ऐसा कह रहे हैं–"हे ब्राह्मण ! मैं भी जोतता और बोता हूँ। जोत और बोकर खाता हूँ।"

'I also, O Brahmaṇa, both plough and sow, and having ploughed and sown, I eat,' so said Bhagavān. 'Yet we do not see the yoke, or the plough, or the ploughshare, or the goad, or the oxen of the venerable Gotama.' And then the venerable Gotama spoke in this way: 'I also, O Brahmaṇa, both plough and sow, and having ploughed and sown, I eat,' so said Bhagavān.

अथ खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं गाथाय अज्झभासि –

Atha kho kasibhāradvājo brāhmaṇo bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

अथ खलु *कसिभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवन्तं गाथयामध्यभाषिष्ट –

तब कृषिभारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान् से गाथा के माध्यम से कहा –

Then the Brahmaṇa Kasibharadvaga addressed Bhagavān in stanza:

"कस्सको पटिजानासि, न च पस्साम ते कसिं।
कसिं नो पुच्छितो ब्रूहि, यथा जानेमु तं कसिं"॥1/4/1॥

"Kassako paṭijānāsi, na ca passāma te kasiṃ;
Kasiṃ no pucchito brūhi, yathā jānemu te kasiṃ".॥1॥

"कर्षक: प्रतिजानासि, न च पश्यामि ते कृषिम् ।
कृषिं नो पृष्टो ब्रूहि यथा जानीयाम तां कृषिम्"॥1॥

आप अपने को कृषक बतलाते हैं, किन्तु आपकी कृषि को हम नहीं देख रहे हैं। हम पूछने वालों को अपनी कृषि बतलाइये, जिससे कि हम लोग अपनी कृषि को जानें॥1॥

'Thou professest to be a ploughman, and yet we do not see your ploughing; asked about you ploughing, tell us of it, that we may know thy ploughing.'.1.

"सद्धा बीजं तपो वुट्ठि, पञ्ञा मे युगनङ्गलं।
हिरी ईसा मनो योत्तं, सति मे फालपाचनं॥1/4/2॥

"Saddhā bījaṃ tapo vuṭṭhi, paññā me yuganaṅgalaṃ;
Hirī īsā mano yottaṃ, sati me phālapācanaṃ.॥2॥

"श्रद्धा बीजं तपो वृष्टि: प्रज्ञा मे युगलाङ्गलम् ।
ह्रीरीषा मनो योक्त्रम्, स्मृति: मे फाल-प्राजनम्॥2॥

श्रद्धा मेरा बीज है, तप वृष्टि है, प्रज्ञा मेरी जुआठ और हल है । लज्जा हरीष (हल का दण्ड) है, मन नधना है, स्मृति मेरा फाल और छेकुनी है॥2॥

Bhagavān answered: 'Faith is the seed, penance the rain, understanding my yoke and plough, mod esty the pole of the plough, mind the tie, thoughtfulness my ploughshare and goad.2.

"कायगुत्तो वचीगुत्तो, आहारे उदरे यतो।
सच्चं करोमि निद्दानं, सोरच्चं मे पमोचनं॥1/4/3॥

"Kāyagutto vacīgutto, āhāre udare yato;
Saccaṃ karomi niddānaṃ, soraccaṃ me pamocanaṃ.॥3॥

"कायगुप्तो वचोगुप्त:, आहारे उदरे यत: ।
सत्यं करोमि निर्दानम्, सौरत्यं मे प्रमोचनम्॥3॥

शरीर से संयत हूँ । वचन से संयत हूँ । भोजन और पेट के प्रति संयत हूँ । मैं सत्य की निराई करता हूँ। अर्हत्व की प्राप्ति ही मेरा फसल काटना है॥3॥

'I am guarded in respect of the body, I am guarded in respect of speech, temperate in food; I make truth to cut away weeds, tenderness is my deliverance.3.

"विरियं मे धुरधोरय्हं, योगक्खेमाधिवाहनं।
गच्छति अनिवत्तन्तं, यत्थ गन्त्वा न सोचति॥1/4/4॥

"Vīriyaṃ me dhuradhorayhaṃ, yogakkhemādhivāhanaṃ;
Gacchati anivattantaṃ, yattha gantvā na socati.॥4॥

"वीर्यं मे धुरधौरवह्यम्, योगक्षेमाधिवाहनम् ।
गच्छति अनिवर्तमाणम्, यत्र गत्वा न शोचति॥4॥

मेरा वीर्य बैल है और योग-क्षेम गाड़ी है । यह बिना रुके चलती है और वहाँ चली जा रही है जहाँ आकर शोक नहीं करना होता॥4॥

'Exertion is my beast of burden; carrying me to Nibbana he goes without turning back to the place where having gone one does not grieve.4.

"एवमेसा कसी कट्ठा, सा होति अमतप्फला।
एतं कसिं कसित्वान, सब्बदुक्खा पमुच्चती''ति॥1/4/5॥

"Evamesā kasī kaṭṭhā, sā hoti amatapphalā;
Etaṃ kasiṃ kasitvāna, sabbadukkhā pamuccatī"ti.॥5॥

"एवमेषा कृषि: कृष्टा, सा भवति अमृतफला ।
एतां कृषिं कृष्ट्वा, सर्वदु:खात् प्रमुच्यते" इति॥5॥

इस प्रकार की यह की गई कृषि अमृत फलदायी होती है, इस कृषि को करके मनुष्य सारे दु:खों से मुक्त हो जाता है॥5॥

'So this ploughing is ploughed, it bears the fruit of immortality; having ploughed this ploughing one is free from all pain'.5.

अथ खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो महतिया कंसपातिया पायसं वड्ढेत्वा भगवतो उपनामेसि भुञ्जतु भवं गोतमो पायसं। कस्सको भवं; यं हि भवं गोतमो अमतप्फलं कसिं कसती''ति।

Atha kho kasibhāradvājo brāhmaṇo mahatiyā kaṃsapātiyā pāyasaṃ vaḍḍhetvā bhagavato upanāmesi – "bhuñjatu bhavaṃ gotamo pāyasaṃ. Kassako bhavaṃ; yaṃ hi bhavaṃ gotamo amatapphalaṃ kasiṃ kasatī"ti.

अथ खलु *कसिभारद्वाजो* ब्राह्मणो महति कांस्यपात्रे पायसं वर्धयित्वा भगवन्तमुपानैषीत्–"भुङ्क्ताम् भवान् *गौतम* ! कृषको भवान् ! यो हि भवान् *गौतम* ! अमृतफलां कृषिं कर्षति" इति।

"तब कसिभारद्वाज ब्राह्मण एक बड़े काँसे के पात्र में खीर परस कर भगवान् के पास ले गया–"आप गौतम ! खीर खायें, आप कृषक हैं, जो कि आप गौतम अमृत-फलदायी कृषि करते हैं ।"

Then the Brahmaṇa Kasibharadvag, having poured rice-milk into a golden bowl, offered it to Bhagavān, saying, 'Let the venerable Bhagavān eat of the rice-milk; the venerable is a ploughman, for the venerable Gotama ploughs a ploughing that bears the fruit of immortality.'

"गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं, सम्पस्सतं ब्राह्मण नेस धम्मो।
गाथाभिगीतं पनुदन्ति बुद्धा, धम्मे सती ब्राह्मण वुत्तिरेसा॥1/4/6॥

"Gāthābhigītaṃ me abhojaneyyaṃ, sampassataṃ brāhmaṇa nesa dhammo;
Gāthābhigītaṃ panudanti buddhā, dhamme satī brāhmaṇa vuttiresā.॥6॥

"गाथाभिगीतं मया अभोजनीयम्, सम्पश्यतां ब्राह्मण ! नैष धर्म: ।
गाथाभिगीतं प्रणुदन्ति बुद्धा:, धर्मे सति ब्राह्मण ! वृत्तिरेषा॥6॥

धर्मोपदेश करने से प्राप्त भोजन मेरे द्वारा अभोज्य है । ब्राह्मण ! भली प्रकार अच्छे स्वभाव वाले का यह नियम (धर्म) नहीं है । बुद्ध धर्मोपदेश से प्राप्त भोजन को त्याग देते हैं । ब्राह्मण ! धर्म के विद्यमान रहते यह रीति है॥6॥

Bhagavān said: 'What is acquired by reciting stanzas is not to be eaten by me; this is, O Brahmaṇa, not the Dhamma of those that see rightly; Buddha rejects what is acquired by reciting stanzas, this is the conduct of Buddhas as Long as the Dhamma exists.6.

"अञ्ञेन च केवलिनं महेसिं, खीणासवं कुक्कुच्चवूपसन्तं।
अन्नेन पानेन उपट्ठहस्सु, खेत्तं हि तं पुञ्ञपेक्खस्स होती''ति॥1/4/7॥

"Aññena ca kevalinaṃ mahesiṃ, khīṇāsavaṃ kukkuccavūpasantaṃ;
Annena pānena upaṭṭhahassu, khettaṃ hi taṃ puññapekkhassa hotī"ti.॥7॥

"अन्येन च केवलिनं महर्षिम्, क्षीणास्रवं कौकृत्योपशान्तम्।
अन्नेन पानेन उपतिष्ठ, क्षेत्रं हि तत् पुण्यापेक्षाय भवति" इति॥7॥

विशुद्धज्ञानी, क्षीणास्रव और चंचलता-रहित महर्षि के लिए दूसरे अन्न और पेय को लाओ । पुण्य चाहने वाले के लिए यह (उत्तम) क्षेत्र है॥7॥

'One who is an accomplished great Isi, whose passions are destroyed and whose misbehavior has ceased, thou should serve with other food and drink, for this is the field for one who looks for good works'.7.

''अथ कस्स चाहं, भो गोतम ! इमं पायसं दम्मी''ति ।

"Atha kassa cāhaṃ, bho gotama, imaṃ pāyasaṃ dammī"ti?
"अथ कस्मै चाहम्, भो *गौतम* ! इमं पायसं ददामि" इति ।
"तब गौतम ! मैं इस खीर को किसे दूँ !"
'To whom then, O Gotama, shall I give this rice- milk?' so said Kasibharadvaja.

''न ख्वाहं तं, ब्राह्मण, पस्सामि सदेवके[1] लोके समारके[2] सब्रह्मके[3] सस्समण-ब्राह्मणिया[4] पजाय[5] सदेवमनुस्साय[6], यस्स सो पायसो भुत्तो सम्मा परिणामं गच्छेय्य, अञ्ञत्र तथागतस्स वा तथागतसावकस्स वा। तेन हि त्वं, ब्राह्मण, तं पायसं अप्पहरिते वा छड्डेहि अप्पाणके वा उदके ओपिलापेही''ति। अथ खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो तं पायसं अप्पाणके उदके ओपिलापेसि। अथ खो सो पायसो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति चिटिचिटायति[7] सन्धूपायति सम्पधूपायति। सेय्यथापि नाम फालो दिवसं सन्तत्तो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति चिटिचिटायति सन्धूपायति सम्पधूपायति; एवमेव सो पायसो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति चिटिचिटायति सन्धूपायति सम्पधूपायति। अथ खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो संविग्गो लोमहट्ठजातो[8] येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवतो पादेसु सिरसा निपतित्वा भगवन्तं एतदवोच – ''अभिक्कन्तं, भो गोतम, अभिक्कन्तं , भो गोतम! सेय्यथापि, भो गोतम, निक्कुज्जितं[9] वा उक्कुज्जेय्य[10], पटिच्छन्नं[11] वा विवरेय्य[12], मूळ्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य, चक्खुमन्तो रूपानि दक्खन्तीति; एवमेवं भोता गोतमेन अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो। एसाहं भवन्तं गोतमं

सरणं गच्छामि धम्मञ्च भिक्खुसङ्घञ्च, लभेय्याहं भोतो गोतमस्स सन्तिके पब्बज्जं, लभेय्यं उपसम्पदं''ति। अलत्थ खो कसिभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवतो सन्तिके पब्बज्जं, अलत्थ उपसम्पदं। अचिरूपसम्पन्नो खो पनायस्मा भारद्वाजो एको वूपकट्ठो अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो विहरन्तो नचिरस्सेव– यस्सत्थाय कुलपुत्ता ति दुविधा– जातिकुलपुत्रा आचारकुलपुत्रा च, अयं पन उभयथा पि कुलपुत्रो । सम्मदेव अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति, तदनुत्तरं– ब्रह्मचरियपरियोसानं दिट्ठेव धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहासि। ''खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थताया''ति अब्भञ्ञासि। अञ्ञतरो च पनायस्मा भारद्वाजो अरहतं अहोसीति।

"Na khvāhaṃ taṃ, brāhmaṇa, passāmi sadevake loke samārake sabrahmake sassamaṇabrāhmaṇiyā pajāya sadevamanussāya, yassa so pāyaso bhutto sammā pariṇāmaṃ gaccheyya, aññatra tathāgatassa vā tathāgatasāvakassa vā. Tena hi tvaṃ, brāhmaṇa, taṃ pāyasaṃ appaharite vā chaḍḍehi appāṇake vā udake opilāpehī"ti. Atha kho kasibhāradvājo brāhmaṇo taṃ pāyasaṃ appāṇake udake opilāpesi. Atha kho so pāyaso udake pakkhitto cicciṭāyati ciṭiciṭāyati sandhūpāyati sampadhūpāyati. Seyyathāpi nāma phālo divasaṃ santatto udake pakkhitto cicciṭāyati ciṭiciṭāyati sandhūpāyati sampadhūpāyati; evameva so pāyaso udake pakkhitto cicciṭāyati ciṭiciṭāyati sandhūpāyati sampadhūpāyati. Atha kho kasibhāradvājo brāhmaṇo saṃviggo lomahaṭṭhajāto yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavato pādesu sirasā nipatitvā bhagavantaṃ etadavoca – "abhikkantaṃ, bho gotama, abhikkantaṃ , bho gotama! Seyyathāpi, bho gotama, nikkujjitaṃ vā ukkujjeyya, paṭicchannaṃ vā vivareyya, mūḷhassa vā maggaṃ ācikkheyya, andhakāre vā telapajjotaṃ dhāreyya, cakkhumanto rūpāni dakkhantīti; evamevaṃ bhotā gotamena anekapariyāyena dhammo pakāsito. Esāhaṃ bhavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammañca bhikkhusaṅghañca, labheyyāhaṃ bhoto gotamassa santike pabbajjaṃ, labheyyaṃ upasampadaṃ"ti. Alattha kho kasibhāradvājo brāhmaṇo bhagavato santike pabbajjaṃ, alattha upasampadaṃ. Acirūpasampanno kho panāyasmā bhāradvājo eko vūpakaṭṭho appamatto ātāpī pahitatto viharanto nacirasseva – yassatthāya kulaputtā sammadeva agārasmā anagāriyaṃ pabbajanti, tadanuttaraṃ – brahmacariyapariyosānaṃ diṭṭheva dhamme sayaṃ abhiññā sacchikatvā upasampajja vihāsi. "Khīṇā jāti, vusitaṃ brahmacariyaṃ, kataṃ karaṇīyaṃ, nāparaṃ itthattāyā"ti abbhaññāsi. Aññataro ca panāyasmā bhāradvājo arahataṃ ahosīti.

"न खल्वहं तम्, ब्राह्मण! पश्यामि, सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सश्रमण-ब्राह्मण्यां प्रजायां सदेवमानुषिकायाम्, यस्मै पायसो भुक्त: सम्यक् परिणामं गच्छेत्, अन्यत्र तथागतं वा तथागतश्रावकं वा। तस्मात् हि त्वम्, ब्राह्मण ! तं पायसम् अल्पहरिते वा छर्दय, अप्राणिके वा उदके अवप्लावय" इति । अथ खलु *कसिभारद्वाजो* ब्राह्मणो तं पायसम् अप्राणिके उदके अवाप्लावयत। अथ खलु स पायस उदके प्रक्षिप्त: चिच्चिटायति चिटिचिटायति संधूपायते सम्प्रधूपायते । तद्यथापि नाम फालो दिवसं सन्तप्त: उदके प्रक्षिप्त: चिच्चिटायति चिटिचिटायते सन्धूपायति सम्प्रधूपायते, एवमेव स पायस: उदके प्रक्षिप्त: चिच्चिटायति चिटिचिटायति सन्धूपायते सम्प्रधूपायते । अथ खलु *कसिभारद्वाजो* ब्राह्मणो संविग्नो लोमहर्षजातो यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्, उपसंक्रम्य भगवत: पादेषु शिरसा निपत्य भगवन्तम् एतदवोचत्- "अभिकान्तम्, भो गौतम ! अभिकान्तम्, भो *गौतम*!

तथापि भो *गौतम* ! निकुब्जितम् वा उदुब्जेत् वा प्रतिच्छन्नम् वा विवरेत्, मूढाय वा मार्गम् आचिक्षेत्, अन्धकारे वा तैलप्रद्योतं धारयेत्, चक्षुष्मन्तः रूपाणि पश्येयुः" इति, एवमेवं भवता *गौतमेन* अनेकपर्यायैः धर्मः प्रकाशितः। एषोऽहं भवन्तं गौतमं शरणं गच्छामि धर्मं च भिक्षुसंघञ्च, लभेयाहं भवतः *गौतमस्य* अन्तिके प्रव्रज्याम् लभेयम् उपसम्पदामति।

अलभत खलु *कसिभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवतोऽन्तिके प्रव्रज्याम्, अलभत उपसम्पदाम् । अचिरमुपसम्पन्नः खलु पुनरायुष्मान् भारद्वाजः एको व्यपकृष्टोऽप्रमत्तः, आतापी प्रहितात्मा विहरन् न चिरस्येव-यस्यार्थाय कुलपुत्राः। सम्यक् एव आगारात् अनागारिकं प्रव्रजन्ति। तदनुत्तरम्-ब्रह्मचर्यपर्यवसानं दृष्टे एव धर्मे स्वयमेव अभिज्ञया साक्षात्कृत्य उपसम्पद्य व्यहार्षीत्। क्षीणा जातिः, उषितं ब्रह्मचर्यम्, कृतं करणीयम्, नापरम् इत्थंभावाय" इति अभ्यज्ञासीत् । अन्यतरश्च खलु पुन आयुष्मान् भारद्वाजोऽर्हत् अभूदिति ।

"ब्राह्मण ! मैं देवताओं सहित इस सारे लोक में तथागत और तथागत के श्रावक के अतिरिक्त अन्य किसी श्रमण-ब्राह्मण, ब्रह्म, देवता और देव-मनुष्यों वाली प्रजा में किसी को भी ऐसा नहीं देखता, जो इस खीर को खाकर भली प्रकार हजम कर ले । ब्राह्मण ! इस खीर को अल्पहरित (हरी घास रहित) भूमि पर फेक दो अथवा जीव-रहित जल में डुबो दो । तब, कसिभारद्वाज ब्राह्मण ने उस खीर को जीव-रहित जल में डुबा दिया। तब वह खीर जल में फेंकने पर चिच्टि, चिटचिट करने लगी, ऊपर भाप छोड़ने लगी । जैसे कि दिन भर का तपाया फाल जल में डालने पर चिच्टि, चिटचिट करता है, ऊपर भाप छोड़ने लगता है, ऐसे ही वह खीर जल में फेंकने पर चिच्टि, चिटचिट करने लगी और ऊपर भाप छोड़ने लगी। तब कसिभारद्वाज ब्राह्मण संविग्न और रोमांचित हो जहाँ भगवान् थे वहाँ गया, जाकर भगवान् के पैरों पर नतमस्तक हो भगवान् से यह कहा– "हे गौतम। आश्चर्य है। हे गौतम ! आश्चर्य है ! जैसे कि हे गौतम । उल्टे हुए (बर्तन) को सीधा कर दे, ढँके हुए को उघाड़ दे, रास्ता भूले हुए को (मोह से भ्रमित व्यक्ति को) रास्ता (सन्मार्ग) बतला दे अथवा अन्धकार में तेल के प्रदीप को धारण करे जिससे आँख वाले लोग चीजों को देख सकें, ऐसे ही आप गौतम द्वारा अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया गया । मैं आप गौतम की शरण में जाता हूँ! धर्म और भिक्षु संघ की भी । मुझे आप गौतम के पास प्रव्रज्या मिले, उपसम्पदा मिले।" ब्राह्मण । मैं देवताओं सहित इस सारे लोग में तथागत और तथागत के श्रावक के अतिरिक्त अन्य किसी श्रमण-ब्राह्मण, ब्रह्मा, देवता और देव-मनुष्यों वाली प्रजा में किसी को भी ऐसा नहीं देखता जो इस खीर को खाकर भली प्रकार हजम कर लें। तो तुम ब्राह्मण । इस खीर को हरी घास रहित भूमि पर फेंक दो अथवा जीव-रहित जल में डुबो दो ।" कसिभारद्वाज ब्राह्मण ने गौतम के पास प्रव्रज्या पाई, उपसम्पन्न होने के थोड़े ही दिनो के भीतर आयुष्मान् भारद्वाज एकान्त में संयमी, अप्रमादी, उद्योगी तथा लवलीन हो विहार करते शीघ्र ही जिस अर्थ के लिए कुलपुत्र (कुलपुत्र दो प्रकार के होते हैं– जाति कुलपुत्र और आचारकुलपुत्र, ये दो प्रकार के कुलपुत्र हैं।) भली प्रकार घर बार छोड़कर प्रव्रजित होते हैं, उस अनुत्तर ब्रह्मचर्य के अन्तिम फल को इसी जीवन में स्वयं ज्ञान से साक्षात् कर, प्राप्त कर विहार करने लगे । उन्होंने जान लिया–"जन्म क्षीण हो गया, ब्रह्मचर्य पूर्ण कर लिया गया, करने योग्य कर लिया गया, यहाँ कुछ करने को शेष नहीं रहा।" आयुष्मान् भारद्वाज अर्हत् हुए ।

'I do not see, O Brahmaṇa, in the world of men and gods and Maras and Brahmans, amongst beings comprising gods and men, and Sramaṇas and Brahmaṇas, any by whom this rice-

milk when eaten can be properly digested with the exception of Tathagata, or a disciple of Tathagata. Therefore, O Brahmaṇa, thou shalt throw this rice-milk in a place where there is little grass, or cast it into water with no worms,' so said Bhagavān. Then the Brahmaṇa Kasibharadvaja threw the rice-milk into some water with no worms. Then the rice-milk thrown into the water splashed, hissed, smoked in volumes; for as a ploughshare that has got hot during the day when thrown into the water splashes, hisses, and smokes in volumes, even so the rice-milk when thrown into the water splashed, hissed, and smoked in volumes. Then the Brahmaṇa Kasibharadvaja alarmed and terrified went up to Bhagavān, and after having approached and fallen with his head at Bhagavān's feet, he said this to Bhagavān: 'It is excellent, O venerable Gotama! It is excellent, O venerable Gotama! As one raises what has been overthrown, or reveals what has been hidden, or tells the way to him who has gone astray, or holds out an oil lamp in the dark that those who have eyes may see the objects, even so by the venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illustrated. I take refuge in the venerable Gotama and in the Dhamma and in the Assembly of Bhikkhus; I wish to receive the pabbagg, I wish to receive the upasampada the robe and the orders from the venerable Gotama,' so said Kasibharadvga. Then the Brahmaṇa Kasibharadvaja received the pabbagga from Bhagavān, and he received also the upasampada; and the venerable Bharadvaga having lately received the upasampada, leading a solitary, retired, strenuous, ardent, energetic life, lived after having in a short time in this existence by his own understanding ascertained and possessed himself of that highest perfection of a religious life for the sake of which men of good family rightly wander away from their houses to a houseless state. 'Birth had been destroyed, a religious life had been led, what was to be done had been done, there was nothing else to be done for this existence,' so he perceived, and the venerable Bharadvaga became one of the arahats.

1 सदेवकवचनेन – पञ्चकामावचरदेवग्गहणम् ।

2 समारकवचनेन – छट्ठकामावचरदेवग्गहणम् ।

3 सब्रह्मवचनेन – रूपाक्चरब्रह्मगहणम् अरूपावचरं च ।

4 सस्समणब्राह्मणीवचनेन – सासनपच्चत्थिक-पच्चामित्त समणब्राह्मणग्गहणं समिपयापवाहितपाप-समण-ब्राह्मणग्गहणं च।

5 यजावचनेन – सत्तलोकग्गहणं ।

6 सदेवमनुस्सवचनेन-सम्मुतिदेव अवसेरनमनुस्सग्गहणं ।

7 एवं सद्दं करोति ।

8 लोमहट्ठजातो ।

9 निकुज्जितं –अधोमुखट्ठपितिं, हेट्ठा मुखजातं वा ।

10 उक्कुज्जेय्या – उपरिमुखं करेय्य ।

11 पटिच्छिन्नं ति तिणपणादिच्छादितं ।

12 विवरेय्य ति उग्घाटेय्य ।

कसिभारद्वाजसुत्तं निट्ठितं

(Kasibhāradvājasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1, 5) चुन्दसुत्तं (Cundasuttaṃ)

"पुच्छामि मुनिं पहूतपञ्ञं, (इति चुन्दो कम्मारपुत्तो) बुद्धं धम्मस्सामिं वीततण्हं।
द्विपदुत्तमं सारथीनं पवरं*, कति लोके समणा तदिङ्घ ब्रूहि"॥1/5/1॥

"Pucchāmi muniṃ pahūtapaññaṃ, (iti cundo kammāraputto)
Buddhaṃ dhammassāmiṃ vītataṇhaṃ;
Dvipaduttamaṃ sārathīnaṃ pavaraṃ, kati loke samaṇā tadiṅgha brūhi".॥1॥

"पृच्छामि मुनिं प्रभूतप्रज्ञम्, (इति चुन्दः कर्मारपुत्रः) बुद्धं धर्मस्वामिनं वीततृष्णम्।
द्विपदोत्तमं सारथीनां प्रवरम्, कति लोके श्रमणाः तदत्र ब्रूहि"॥1॥

चुन्दकर्मारपुत्र–महाप्रज्ञावान् मुनि, धर्मस्वामी, तृष्णा रहित, मनुष्यों में उत्तम और सारथियों में श्रेष्ठ मैं आपसे पूछता हूँ–"संसार में कितने प्रकार के श्रमण हैं ? कृपया इसे बतलायें॥1॥

'I ask the Muni of great understanding,'—so said Cunda, the smith,—' Buddha, the lord of the Dhamma, who is free from craving, the best of bipeds, the most excellent of charioteers, how many kinds of Sramaṇas are there in the world; pray tell me that?'.1.

*पवरं = अनुत्तरम्

"चतुरो समणा न पञ्चमत्थि, (चुन्दाति भगवा) ते ते आविकरोमि सक्खिपुट्ठो*।
मग्गजिनो मग्गदेसको च, मग्गे जीवति यो च मग्गदूसी॥1/5/2॥

"Caturo samaṇā na pañcamatthi, (cundāti bhagavā) Te te āvikaromi sakkhiputṭho;
Maggajino maggadesako ca, magge jīvati yo ca maggadūsī".॥2॥

"चत्वारः श्रमणाः न पञ्चमोऽस्ति, (चुन्दः इति भगवान्) तान् ते आविष्करोमि साक्षात् पृष्टः
मार्गजिनः मार्गदेशकश्च, मार्गे जीवति यश्च मार्गदूषी॥2॥

भगवान्–चार प्रकार के श्रमण हैं, पाँचवाँ नहीं है । जो तुम मेरे समक्ष पूछ रहे हो मैं उन्हें बतलाता हूँ– 1. मार्गजिन, 2. मार्गदेशक, 3 मार्गजीवी और 4.मार्गदूषी॥2॥

'There are four kinds of Sramaṇas, there is not a fifth, O Cunda,'—so said Bhagavān,—'these I will reveal to thee, being asked in person; they are Maggaginas and Maggadesakas, Maggagivins and Maggadusins.'.2.

* सक्खिपुट्ठो = सम्मुखा पुच्छितो ।

"कं मग्गजिनं वदन्ति बुद्धा, (इति चुन्दो कम्मारपुत्तो)
मग्गक्खायी कथं अतुल्यो होति।
मग्गे जीवति मे ब्रूहि पुट्ठो, अथ मे आविकरोहि मग्गदूसिं"॥1/5/3॥

"Kaṃ maggajinaṃ vadanti buddhā, (iti cundo kammāraputto)
Maggakkhāyī kathaṃ atulyo hoti;
Magge jīvati me brūhi puṭṭho, atha me āvikarohi maggadūsiṃ".॥3॥

"कं मार्गजिनं वदन्ति बुद्धाः, (इति चुन्दः कर्मारपुत्रः)
मार्गाख्यायी कथमतुल्यो भवति।
मार्गे जीवति मां ब्रूहि पृष्टः, अथ माम् आविष्कुरु मार्गदूषिम्"॥3॥

चुन्दकर्मारपुत्र–बुद्ध किसे मार्गजीवी कहते हैं ? अतुलनीय मार्गदेशक कैसे होता है ? मेरे पूछने पर मार्गजीवी और मार्गदूषी को भी बतलायें, प्रकट करें॥3॥

'Whom do the Buddhas call a Maggagivin?'—so said Cunda, the smith,—' How is a Maggadeshaka unequalled? Being asked, describe to me a Maggagivin, and unfold to me a Maggadusin.'3.

"यो तिण्णकथंकथो विसल्लो, निब्बानाभिरतोऽनानुगिद्धो।
लोकस्स सदेवकस्स नेता, तादिं मग्गजिनं वदन्ति बुद्धा॥1/5/4॥

"Yo tiṇṇakathaṃkatho visallo, nibbānābhirato anānugiddho;
Lokassa sadevakassa netā, tādiṃ maggajinaṃ vadanti buddhā.॥4॥

"यः तीर्णकथंकथो* विशल्यः, निर्वाणाभिरतोऽनानुगृद्धः ।
लोकस्य सदेवकस्य नेता, *तादृशं* मार्गजिनः वदन्ति बुद्धाः॥4॥

भगवान्– शंकाओं के स्थान को न कहने, सांसारिक काँटों (शल्य) से मुक्त, निर्वाण में लीन, आसक्तिरहित, देवताओं सहित लोक का जो नेता है, उसे बुद्ध मार्गजिन कहते हैं॥4॥

Bhagavān said: 'He who has overcome doubt, is without pain, delights in Nibbana, is free from greed, a leader of the world of men and gods, such a one the Buddhas call a maggajina.4.

* तिण्णकथंकथो-सर्वधर्मेषु अज्ञानस्य तिण्णता (तिण्णकथंकथो) -तिनके जैसी समस्याओं को कहने वाला।

"परमं परमं ति योध ञत्वा, अक्खाति विभजते इधेव धम्मं।
तं कङ्खछिदं मुनिं अनेजं, दुतियं भिक्खुनमाहु मग्गदेसिं॥1/5/5॥

"Paramaṃ paramaṃ ti yodha ñatvā, akkhāti vibhajate idheva dhammaṃ;
Taṃ kaṅkhachidaṃ muniṃ anejaṃ, dutiyaṃ bhikkhunamāhu maggadesiṃ.।5।

"परमं परममिति य इह ज्ञात्वा, आख्याति विभजति इहेव धर्मम्।
तं कांक्षाच्छिदं मुनिमनेजसम्, द्वितीयं भिक्षुमाहुः मार्गदेशिनम्॥5॥

जो परमार्थ को यहाँ जानकर यही धर्म को बतलाता है उसकी व्याख्या करता है, वह सन्देहरहित, तृष्णामुक्त मुनि द्वितीय भिक्षु मार्गदेशी कहलाता है॥5॥

'He who in this world having known the best as the best, expounds and explains here the Dhamma, him, the doubt-cutting Muni, without desire, the second Bhikkhu they call a maggadesin.5.

"यो धम्मपदे सुदेसिते, मग्गे जीवति सञ्ञतो सतीमा।
अनवज्जपदानि सेवमानो, ततियं भिक्खुनमाहु मग्गजीविं॥1/5/6॥

"Yo dhammapade sudesite, magge jīvati saññato satīmā;
Anavajjapadāni sevamāno, tatiyaṃ bhikkhunamāhu maggajīviṃ.॥6॥

"यो धर्मपदे सुदेशिते, मार्गे जीवति संयतः स्मृतिमान् ।
अनवद्यपदानि सेवमानः, तृतीयं भिक्षुमाहुः मार्गजीविनम्॥6॥

जो सुदेशित धर्मपद के अनुसार संयमित और स्मृतिमान् हो मार्ग में जीता है, निर्दोष धर्मों का पालन करने वाला वह तृतीय भिक्षु मार्गजीवी कहलाता है॥6॥

'He who lives in the way that has so well been taught in the Dhammapada, and is restrained, attentive, cultivating blameless words, him the third Bhikkhu they call a maggajivin.6.

"छदनं कत्वान सुब्बतानं, पक्खन्दी कुलदूसको पगब्भो।
मायावी असञ्ञतो पलापो, पतिरूपेन चरं स मग्गदूसी॥1/5/7॥

"Chadanaṃ katvāna subbatānaṃ, pakkhandī kuladūsako pagabbho;
Māyāvī asaññato palāpo, patirūpena caraṃ sa maggadūsī.॥7॥

"छदनं कृत्वा सुव्रतानाम्, पाखण्डी कुलदूषक: प्रगल्भ: ।
मायावी असंयत: प्रलाप:, प्रतिरूपेण चरन् स मार्गदूषी॥7॥

जो अच्छे व्रतधारियों का वेष धारण कर लूला-लंगड़ा, कुल-दूषक, अहंकारी, मायावी, असंयमी और बकवादी हो भिक्षुओं के वेष में विचरण करता है, वह मार्गदूषी है॥7॥

'He who although counterfeiting the virtuous is forward, disgraces families, is impudent, deceitful, unrestrained, a babbler, walking in disguise, such a one is a maggadusin.7.

"एते च पटिविज्झि यो गहट्ठो, सुतवा अरियसावको सपञ्ञो।
सब्बे नेतादिसा ति ञत्वा, इति दिस्वा न हापेति तस्स सद्धा।
कथं हि दुट्ठेन असम्पदुट्ठं, सुद्धं असुद्धेन समं करेय्या"ति॥1/5/8॥

"Ete ca paṭivijjhi yo gahaṭṭho, sutavā ariyasāvako sapañño;
Sabbe netādisā ti ñatvā, iti disvā na hāpeti tassa saddhā;
Kathaṃ hi duṭṭhena asampaduṭṭhaṃ, suddhaṃ asuddhena samaṃ kareyyā"ti.॥8॥

"एतान् प्रत्यविध्यत् यो गृहस्थ:, श्रुतवान्, आर्यश्रावक: सप्रज्ञ: ।
सर्वे नैतादृशा इति ज्ञात्वेति दृष्ट्वा न जहाति तस्य श्रद्धाम् ।
कथं हि दुष्टेन असम्प्रदुष्टम्, शुद्धमशुद्धेन समं कुर्यात्" इति ॥8॥

जिस प्रज्ञावान, श्रुतवान, आर्यश्रावक गृहस्थ इन्हें जान लिया है, "सब ऐसे नहीं होते" जानकर देखकर अपनी श्रद्धा को कम नहीं करता। भला कैसे दुष्ट की समता अदुष्ट से और शुद्ध की अशुद्ध से की जा सकती है?॥8॥

'He who has penetrated these four Sramaṇas, who is a householder, possessed of knowledge, a pupil of the venerable ones, wise, having known that they all are such,—having seen so, his faith is not lost; for how could he make the undepraved equal to the depraved and the pure equal to the impure?'.11.

चुन्दसुत्तं निट्ठितं
(Cundasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(1, 6) पराभवसुत्तं (Parābhavasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अञ्ञतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अज्झभासि –

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Atha kho aññatarā devatā abhikkantāya rattiyā abhikkantavaṇṇā kevalakappaṃ jetavanaṃ obhāsetvā yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ abhivādetvā ekamantaṃ aṭṭhāsi. Ekamantaṃ ṭhitā kho sā devatā bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi–

एवं मया श्रुतम् । एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवने* अनाथपिण्डिकस्यारामे। अथ खलु अन्यतरा देवता अभिक्रान्तायां रात्र्याम् अभिकान्तवर्णा केवलकल्पं *जेतवन*मवभास्य यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवन्तम् अभिवाद्य एकान्तमस्थात्। एकान्तं स्थिता खलु सा देवता भगवन्तं गाथया अध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। उस समय एक देवता रात्रि बिताने पर अपनी दीप्ति से समस्त जेतवन को आलोकित कर जहाँ भगवान् थे, वहाँ आये । आकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर खड़े हो गए । एक ओर खड़े हो उन देवता ने भगवान् से गाथा के द्वारा बोले–

So it was heard by me: once Bhagavān dwelt at Sāvatthi, in Jetavana, in the park of Anathapindika. Then when the night had come, a certain deity of a beautiful appearance, having illuminated the whole Jetavana, went up to Bhagavān, and having approached and saluted him, he stood apart, and standing apart that deity addressed Bhagavān in stanzas:

"पराभवन्तं* पुरिसं, मयं पुच्छाम गोतम ।
भगवन्तं पुट्ठुमागम्म, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/1॥

"Parābhavantaṃ purisaṃ, mayaṃ pucchāma gotama;
Bhagavantaṃ puṭṭhumāgamma, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥1॥

"पराभवन्तं पुरुषम्, वयं पृच्छाम: *गौतम* ! ।
भगवन्तं प्रष्टुमागत्य, किं पराभवतो मुखम्"॥1॥

"हम आप गौतम से अवनति की ओर जाने वाले पुरुष के विषय में पूछते हैं, यही पूछने के लिए हम भगवान् के पास आये है– "अवनति का मूल कारण क्या है?"॥1॥

'We ask thee, Gotama, about a man that suffers loss; having come to ask, Bhagavān, tell us what is the cause of loss to the losing man.' 1.

*पराभवन्तं ति परिहायन्त विनस्सन्तं । पुरिसस्स पराभवकारणं पुच्छति ।

"सुविजानो भवं होति, सुविजानो पराभवो।
धम्मकामो भवं होति, धम्मदेस्सी पराभवो"॥1/6/2॥

"Suvijāno bhavaṃ hoti, suvijāno parābhavo;
Dhammakāmo bhavaṃ hoti, dhammadessī parābhavo".॥2॥

"सुविज्ञो भवं भवति, सुविज्ञ: पराभव: ।
धर्मकामो भवं भवति, धर्मद्वेषी पराभव:"॥2॥

भगवान्– उन्नतिगामी पुरुष आसानी से आ जा सकता है, ऐसे ही अवनतिगामी पुरुष भी आसानी से आ जा सकता है । धर्म-कामी उन्नति करता है और धर्मद्वेषी अवनति॥2॥

Bhagavān: 'The winner is easily known, easily known is also the loser: he who loves Dhamma is the winner, he who hates Dhamma is the loser.'.2

"इति हेतं विजानाम, पठमो सो पराभवो।
दुतियं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/3॥

"Iti hetaṃ vijānāma, paṭhamo so parābhavo;
Dutiyaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥3॥

"इति ह्येतत् विजानीमः, प्रथमः स पराभवः ।
द्वितीयं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥3॥

देवता– इस प्रकार अवनति के प्रथम कारण को हमने जान लिया। भगवान् अवनति के दूसरे कारण को बतलायें॥3॥

Deity: 'We know this to be so, this is the first loser; tell us the second, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.'3.

"असन्तस्स पिया होन्ति, सन्ते न कुरुते पियं।
असतं धम्मं रोचेति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/4॥

"Asantassa piyā honti, sante na kurute piyaṃ;
Asataṃ dhammaṃ roceti, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥4॥

"असन्ता अस्मै प्रियाः भवन्ति, सन्ते न कुरुते प्रियम् ।
असतां धर्मं रोचते, तत् पराभवतो मुखम्"॥4॥

भगवान्–जिसे दुर्जन प्रिय होते हैं, वह सज्जनों से प्रेम नहीं करता, असत्पुरुषों के धर्म को पसन्द करता है, वह उसकी अवनति का कारण है॥4॥

Bhagavān: 'Wicked men are dear to him, he does not do anything that is dear to the good, he approves of the Dhamma of the wicked,—that is the cause of loss to the losing man.'.4.

"इति हेतं विजानाम, दुतियो सो पराभवो।
ततियं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/5॥

"Iti hetaṃ vijānāma, dutiyo so parābhavo;
Tatiyaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥5॥

"इति ह्येतत् विजानीमः, द्वितीयः स पराभवः।
तृतीयं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥5॥

देवता–इस प्रकार अवनति के दूसरे कारण को हमने जान लिया। भगवान् ! अवनति के तीसरे कारण को बतलायें॥5॥

Deity: 'We know this to be so, this is the second loser; tell us the third, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.'5.

"निद्दासीली सभासीली, अनुट्ठाता च यो नरो।
अलसो कोधपञ्ञाणो, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/6॥

"Niddāsīlī sabhāsīlī, anuṭṭhātā ca yo naro;
Alaso kodhapaññāṇo, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥6॥

"निद्राशील: सभाशील:, अनुत्थाता च यो नर: ।

अलस: क्रोधप्रज्ञान:, तत् पराभवतो मुखम्"॥6॥

भगवान्– जो व्यक्ति निद्रालु, भीड़-भाड़ में मस्त रहने वाला परिश्रम न करने वाला, आलसी और क्रोधी है, वह उसकी अवनति का कारण है॥6॥

Bhagavān: 'The man who is dozy, fond of society and without energy, lazy, given to anger,— that is the cause of loss to the losing man.'.6.

"इति हेतं विजानाम, ततियो सो पराभवो।

चतुत्थं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/7॥

"Iti hetaṃ vijānāma, tatiyo so parābhavo;

Catutthaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥7॥

"इति ह्येतत् विजानीम:, तृतीय: स पराभव: ।

चतुर्थं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥7॥

देवता– इस प्रकार अवनति के तीसरे कारण को हमने जान लिया । भगवान् ! अवनति के चौथे कारण को बतलायें॥7॥

Deity: 'We know this to be so, this is the third loser; tell us the fourth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.'.7.

"यो मातरं पितरं वा, जिण्णकं गतयोब्बनं।

पहु सन्तो न भरति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/8॥

"Yo mātaraṃ pitaraṃ vā, jiṇṇakaṃ gatayobbanaṃ;

Pahu santo na bharati, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥8॥

"यो मातरं वा पितरं वा, जीर्णकं गतयौवनम् ।

प्रभु: सन् न भरति, तत् पराभवतो मुखम्"॥8॥

भगवान्– जो समर्थ होने पर भी बूढ़े-पुरनिया माता या पिता का पोषण नहीं करता । वह उसकी अवनति का कारण है॥8॥

Bhagavān: 'He who being rich does not support mother or father who are old or past their youth,— that is the cause of loss to the losing man.'.8.

"इति हेतं विजानाम, चतुत्थो सो पराभवो।

पञ्चमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/9॥

"Iti hetaṃ vijānāma, catuttho so parābhavo;

Pañcamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥9॥

"इति ह्येतत् विजानीम:, चतुर्थ: स पराभव: ।

पञ्चमं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥9॥

देवता–इसप्रकार अवनति के चौथे कारण को जान लिया। भगवान्! अवनति के पाँचवे कारण को बतलायें॥9॥

Deity: 'We know this to be so, this is the fourth loser; tell us the fIfth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.'9.

"यो ब्राह्मणं समणं वा, अञ्ञं वापि वनिब्बकं*।
मुसावादेन वञ्चेति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/10॥

"Yo brāhmaṇaṃ samaṇaṃ vā, aññaṃ vāpi vanibbakaṃ;
Musāvādena vañceti, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥10॥

"यो ब्राह्मणं वा श्रमणं वा, अन्यं वाऽपि वनीयकम् ।
मृषावादेन वञ्चयते, तत् पराभवतो मुखम्"॥10॥

भगवान्–जो ब्राह्मण, श्रमण दूसरे याचक को झूठ बोलकर धोखा देता है, उसकी अवनति का कारण है॥10॥

Bhagavān: 'He who by falsehood deceives either a Brahmaṇa or a Sramaṇa or any other mendicant,—that is the cause of loss to the losing man.' 10.

*वनीयकम्–याचकम्

"इति हेतं विजानाम, पञ्चमो सो पराभवो।
छट्ठमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/11॥

"Iti hetaṃ vijānāma, pañcamo so parābhavo;
Chaṭṭhamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥11॥

"इति ह्येतत् विजानीमः, पञ्चमः स पराभवः ।
षष्ठं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥11॥

देवता–इसप्रकार अवनति के पाँचवे कारण को हमने जान लिया। भगवान्! अब छठें कारण को बतलायें॥11॥

Deity: 'We know this to be so, this is the fifth loser; tell us the sixth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 11.

"पहूतवित्तो* पुरिसो, सहिरञ्ञो सभोजनो*।
एको भुञ्जति सादूनि, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/12॥

"Pahūtavitto puriso, sahiraññho sabhojano;
Eko bhuñjati sādūni, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥12॥

"प्रभूतवित्तः पुरुषः, सहिरण्यः सभोजनः ।
एको भुङ्क्ते स्वादूनि, तत् पराभवतो मुखम्"॥12॥

भगवान्– बहुत धनवान् पुरुष, जो सोना और भोजन से सम्पन्न है, जब वह अकेला ही स्वादिष्ट भोजन करता है, तो वह उसकी अवनति का कारण है॥12॥

Bhagavān: 'The man who is possessed of much property, who has gold and food, and still enjoys alone his sweet things,—that is the cause of loss to the losing man. 12.

*पहूतवित्तो – पहूतजातरूपरजतमणिरतनो * सभोजनो 'अनेकसूपव्यञ्जन भोजनसम्पन्नो ।

"इति हेतं विजानाम, छट्ठमो सो पराभवो।
सत्तमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/13॥

"Iti hetaṃ vijānāma, chaṭṭhamo so parābhavo;
Sattamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥13॥

"इति ह्येतत् विजानीम:, षष्ठ: स पराभव: ।
सप्तमं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥13॥

इसप्रकार अवनति के छठें कारण को हमने जान लिया। भगवन्! अवनति के सातवें कारण को बतलायें॥13॥

Deity: 'We know this to be so, this is the sixth loser; tell us the seventh, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 13.

"जातित्थद्धो धनत्थद्धो, गोत्तत्थद्धो च यो नरो।
सञ्ञातिं अतिमञ्ञेति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/14॥

"Jātitthaddho dhanatthaddho, gottatthaddho ca yo naro;
Saññātiṃ atimaññeti, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥14॥

"जातिस्तब्धो धनस्तब्ध:, गोत्रस्तब्धश्च यो नर: ।
स्वज्ञातिम् अतिमन्यते, तत् पराभवतो मुखम्"॥14॥

भगवान्– जो नर जाति, धन और गोत्र का घमण्ड करता है, अपने भाई-बन्धुओं का भी जाति के कारण अनादर करता है, वह उसकी अवनति का कारण है॥14॥

Bhagavān: 'The man who proud of his birth, of his wealth, and of his family, undervalues his relatives, —that is the cause of loss to the losing man.' 14.

"इति हेतं विजानाम, सत्तमो सो पराभवो।
अट्ठमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/15॥

"Iti hetaṃ vijānāma, sattamo so parābhavo;
Aṭṭhamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥15॥

"इति ह्येतत् विजानीम:, सप्तम: स पराभव: ।
अष्टमं भगवन् ! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥15॥

देवता– इसप्रकार अवनति का सातवाँ कारण जान लिया। भगवन्! इसके आठवें कारण को बतलायें॥15॥

Deity: 'We know this to be so, this is the seventh loser; tell us the eighth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 15.

"इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो, अक्खधुत्तो च यो नरो।
लद्धं लद्धं विनासेति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/16॥

"Itthidhutto surādhutto, akkhadhutto ca yo naro;
Laddhaṃ laddhaṃ vināseti, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥16॥

"स्त्रीधूत: सुराधूत:, अक्षधूतश्च यो नर: ।
लब्धं लब्धं विनाशयति, तत् पराभवतो मुखम्"॥16॥

भगवान्– जो व्यक्ति स्त्रियों के पीछे पड़ा रहता है, शराबी और जुआड़ी है, कमाये हुए धन को नष्ट कर देता है, वह उसकी अवनति का कारण है॥16॥

Bhagavān: 'The man who given to women, to strong drink, and to dice, wastes whatever he has gained, —that is the cause of loss to the losing man.' 16.

"इति हेतं विजानाम, अट्ठमो सो पराभवो।
नवमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/17॥

"Iti hetaṃ vijānāma, aṭṭhamo so parābhavo;
Navamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥17॥

"इति ह्येतत् विजानीमः, अष्टमः स पराभवः ।
नवमं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥17॥

देवता– इस प्रकार अवनति के आठवे कारण को हमने जान लिया । भगवन् ! अवनति के नौवे कारण को बतलायें॥17॥

Deity: 'We know this to be so, this is the eighth loser; tell us the ninth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 17.

"सेहि दारेहि असन्तुट्ठो वेसियासु पदुस्सति ।
दिस्सति परदारेसु, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/18॥

"Sehi dārehi asantuṭṭho, vesiyāsu padussati;
Dussati paradāresu, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥18॥

"स्वैः दारैरसन्तुष्टः, वेश्यासु प्रदृश्यते ।
दृश्यते परदारेषु, तत् पराभवतो मुखम्"॥18॥

भगवान्– जो अपनी पत्नी से असन्तुष्ट रहता है, वेश्याओं और पराई स्त्रियों के साथ दिखाई देता है, वह उसकी अवनति का कारण है॥18॥

Bhagavān: 'He who, not satisfied with his own wife, is seen with harlots and the wives of others,—that is the cause of loss to the losing man.' 18.

"इति हेतं विजानाम, नवमो सो पराभवो।
दसमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/19॥

"Iti hetaṃ vijānāma, navamo so parābhavo;
Dasamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥19॥

"इति ह्येतत् विजानीमः, नवमः स पराभवः।
दशमं भगवन् ! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥19॥

देवता–इस प्रकार अवनति के नवे कारण को जान लिया। भगवन् ! इसके दसवें कारण को बतलायें॥19॥

Deity: 'We know this to be so, this is the ninth loser; tell us the tenth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 19.

"अतीतयोब्बनो पोसो, आनेति तिम्बरुत्थनिं।*
तस्सा इस्सा न सुपति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/20॥

"Atītayobbano poso, āneti timbarutthaniṃ;
Tassā issā na supati, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥20॥

"अतीतयौवन: पुरुष:, आनयति तुम्बरुदस्तनीम् ।
तस्या: इर्ष्याया: न स्वपिति, तत् पराभवतो मुखम्"॥20॥

भगवान्– वृद्ध व्यक्ति जब नवयुवती को लाता है, तो उसकी ईर्ष्या के कारण वह नहीं सो सकता है, वह उसकी अवनति का कारण है॥20॥

Bhagavān: 'The man who past his youth, brings home a woman with breasts like the timbaru fruit, and for jealousy of her cannot sleep,—that is the cause of loss to the losing man.' 20.

•तिम्बरुत्थनिं – तिम्बरुफलसदिसत्थनिं तरुणदारिकाम् ।

"इति हेतं विजानाम, दसमो सो पराभवो।
एकादसमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/21॥

"Iti hetaṃ vijānāma, dasamo so parābhavo;
Ekādasamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥21॥

"इति ह्येतत् विजानीम:, दशम: स पराभव: ।
एकादशं भगवन् ! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥21॥

देवता– इस प्रकार अवनति के दसवें कारण को हमने जान लिया। भगवन् ! अवनति के ग्यारहवें कारण को बतलायें॥21॥

'We know this to be so, this is the tenth loser; tell us the eleventh, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 21.

"इत्थिसोण्डिं विकिरणिं, पुरिसं वापि तादिसं।
इस्सरियस्मिं ठपेति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/22॥

"Itthiṃ soṇḍiṃ vikiraṇiṃ, purisaṃ vāpi tādisaṃ;
Issariyasmiṃ ṭhapeti, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥22॥

"स्त्रीशौण्डीं विकीरणीम्, पुरुषं वाऽपि तादृशम् ।
ईश्वरत्वे स्थापयति, तत् पराभवतो मुखम्"॥22॥

भगवान्– जब किसी मदमत्त (नशे में चूर) या सम्पत्ति को नष्ट करने वाली स्त्री या पुरुष को ईश्वर के रूप में (सम्पत्ति का अधिपति, मालिक) बना दिया जाय, वह उसकी अवनति का कारण है॥22॥

Bhagavān: 'He who places in supremacy a woman given to drink and squandering, or a man of the same kind,—that is the cause of loss to the losing man.' 22.

"इति हेतं विजानाम, एकादसमो सो पराभवो।
द्वादसमं भगवा ब्रूहि, किं पराभवतो मुखं"॥1/6/23॥

"Iti hetaṃ vijānāma, ekādasamo so parābhavo;
Dvādasamaṃ bhagavā brūhi, kiṃ parābhavato mukhaṃ".॥23॥

"इति ह्येतत् विजानीम:, एकादश: स पराभव: ।

द्वादशं भगवन्! ब्रूहि, किं पराभवतो मुखम्"॥23॥

देवता–इसप्रकार अवनति के ग्यारहवें कारण को जान लिया। भगवन्! इसके बारहवें कारण को बतलायें॥23॥

Deity: 'We know this to be so, this is the eleventh loser; tell us the twelfth, O Bhagavān, what is the cause of loss to the losing man.' 23.

"अप्पभोगो महातण्हो, खत्तिये जायते कुले।

सो च रज्जं पत्थयति, तं पराभवतो मुखं"॥1/6/24॥

"Appabhogo mahātaṇho, khattiye jāyate kule;

So ca rajjaṃ patthayati, taṃ parābhavato mukhaṃ".॥24॥

"अल्पभोगो महातृष्णा, क्षत्रिये जायते कुले ।

स च राज्यं प्रार्थयति, तत् पराभवतो मुखम्"॥24॥

भगवान्– क्षत्रिय कुल में उत्पन्न अल्प सम्पत्ति वाला और महालालची पुरुष जब राज्य की कामना करता है तो वह उसकी अवनति का कारण है॥24॥

Bhagavān: 'He who has little property, but great craving, is born in a Khattiya family and wishes for the kingdom in this world,—that is the cause of loss to the losing man.'.24.

"एते पराभवे लोके, पण्डितो समवेक्खिय।

अरियो दस्सनसम्पन्नो, स लोकं भजते सिवं" ति॥1/6/25॥

"Ete parābhave loke, paṇḍito samavekkhiya;

Ariyo dassanasampanno, sa lokaṃ bhajate sivaṃ" ti.॥25॥

"एतान् पराभवान् लोके, पण्डित: समवेक्ष्य।

आर्य: दर्शनसम्पन्न:, स लोकं भजते शिवम्" इति॥25॥

संसार में इतने अवनति के कारणों को बुद्धिमान् आर्य व्यक्ति जानकर दर्शन मुक्त हो स्वर्ग-लोक को प्राप्त कर लेता है ।

Having taken into consideration these losses in the world, the wise, venerable man, who is end owed with insight, cultivates the happy world of the gods. 25.

परामवसुत्तं निट्ठितं

(Parābhavasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1, 7) वसलसुत्तं (Vasalasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय सावत्थिं पिण्डाय पाविसि। तेन खो पन समयेन अग्गिकभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स निवेसने अग्गि पज्जलितो होति आहुति पग्गहिता। अथ खो भगवा सावत्थियं सपदानं सपदानं ति अनुचरं । अथवा

उपदान सहितं मिति सपदानम् । अथवा सपरि अयनं गमनमिति सपयनम् । अथवा सपादं गमनमिति सपदानमिति पिण्डाय चरमानो येन अग्गिकभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स निवेसनं तेनुपसङ्कमि। अद्दसा खो अग्गिकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं दूरतो व आगच्छन्तं। दिस्वान भगवन्तं एतदवोच – ''तत्रेव अत्रेव, मुण्डक; तत्रेव, समणक; तत्रेव, वसलक तिट्ठाही''ति। एवं वुत्ते, भगवा अग्गिकभारद्वाजं ब्राह्मणं एतदवोच – ''जानासि पन त्वं, ब्राह्मण, वसलं वा वसलकरणे वा धम्मे''ति? ''न ख्वाहं, भो गोतम, जानामि वसलं वा वसलकरणे वा धम्मे; साधु मे भवं गोतमो तथा धम्मं देसेतु, यथाहं जानेय्यं वसलं वा वसलकरणे वा धम्मे''ति। ''तेन हि, ब्राह्मण, सुणाहि, साधुकं मनसि करोहि; भासिस्सामी''ति। ''एवं, भो''ति खो अग्गिकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवतो पच्चस्सोसि। भगवा एतदवोच–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Atha kho bhagavā pubbaṇhasamayaṃ nivāsetvā pattacīvaramādāya sāvatthiṃ piṇḍāya pāvisi. Tena kho pana samayena aggikabhāradvājassa brāhmaṇassa nivesane aggi pajjalito hoti āhuti paggahitā. Atha kho bhagavā sāvatthiyaṃ sapadānaṃ piṇḍāya caramāno yena aggikabhāradvājassa brāhmaṇassa nivesanaṃ tenupasaṅkami. Addasā kho aggikabhāradvājo brāhmaṇo bhagavantaṃ dūrato va āgacchantaṃ. Disvāna bhagavantaṃ etadavoca – "tatreva, muṇḍaka; tatreva, samaṇaka; tatreva, vasalaka tiṭṭhāhī"ti. Evaṃ vutte, bhagavā aggikabhāradvājaṃ brāhmaṇaṃ etadavoca – "jānāsi pana tvaṃ, brāhmaṇa, vasalaṃ vā vasalakaraṇe vā dhamme"ti? "Na khvāhaṃ, bho gotama, jānāmi vasalaṃ vā vasalakaraṇe vā dhamme; sādhu me bhavaṃ gotamo tathā dhammaṃ desetu, yathāhaṃ jāneyyaṃ vasalaṃ vā vasalakaraṇe vā dhamme"ti. "Tena hi, brāhmaṇa, suṇāhi, sādhukaṃ manasi karohi; bhāsissāmī"ti. "Evaṃ, bho"ti kho aggikabhāradvājo brāhmaṇo bhagavato paccassosi. Bhagavā etadavoca –

एवं मया श्रुतम् । एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवने अनाथपिण्डिकस्याऽरामे*। अथ खलु भगवान् पूर्वाह्णसमयं निवस्य पात्रचीवरमादाय *सावत्थ्यां* पिण्डाय प्राविशत् । तत्र खलु पुनः समये *अग्गिकभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य निवेशने अग्निः प्रज्वलितोऽस्ति, आहुतिः प्रगृहीता । अथ खलु भगवान् *सावत्थ्यां* सपदानं पिण्डाय चरन्, यत्र *अग्गिकभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य निवेशनं तत्रोपसमक्रमीत्। अद्राक्षीत् खलु *अग्गिकभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवन्तं दूरत एव आगच्छन्तम् । दृष्ट्वा भगवन्तमेतदवोचत्– "तत्र एव अत्र एव, "मुण्डक ! तत्र एव श्रमणक! तत्र एव वृषलक! तिष्ठ" इति । एवमुक्ते भगवान् *अग्गिकभारद्वाजं* ब्राह्मणम् एतदवोचत् – "जानासि पुनः त्वम्, ब्राह्मण ! वृषलं वा वृषलकरणान् वा धर्मान्" इति ? "न खल्वहम्, भो गौतम! जानामि वृषलं वा वृषलकरणान् वा धर्मान्; साधु मे भवान् *गौतम !* तथा धर्मं देशयतु, यथाहं जानीयां वृषलं वा वृषलकरणान् वा धर्मान्" इति ।" तस्माद्धि, ब्राह्मण! शृणु, साधुकं मनसि कुरु, भाषिष्ये" इति । "एवं भो!" इति खलु *अग्गिकभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवन्तं प्रत्यशृणोत्। भगवान् एतदवोचत् –

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। तब, भगवान् ! पूर्वाह्न काल में चीवर पहन कर पात्र और चीवर लेकर श्रावस्ती में भिक्षाटन के लिए प्रविष्ट

हुए। उस समय अग्गिकभारद्वाज ब्राह्मण के घर में अग्नि प्रज्वलित हो रही थी, जिसमें आहुति की सामग्री डाली गई थी तब भगवान् श्रावस्ती में घर-घर भिक्षाटन करते हुए जहाँ अग्गिकभारद्वाज ब्राह्मण का घर था वहाँ गए, अग्निक भारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान् को दूर से ही आते हुए देखा । देखकर भगवान् से ऐसा कहा– "वही मुण्डक ! वही वृषलक ! ठहरो । "ऐसा कहने पर भगवान् ने अग्गिकभारद्वाज ब्राह्मण से कहा– "ब्राह्मण! क्या तू वृषल (नीच) या वृषल बनाने वाली बातों (धर्म) को जानते हो?" "हे गौतम! मैं वृषल या वृषल बनाने वाली बातों (धर्म) को नहीं मानता हूँ । अच्छा हो कि आप गौतम! मुझे वैसा धर्मोपदेश दें, जिससे मैं वृषल या वृषल बनाने वाली बातों को जान लूँ।" "तो ब्राह्मण! सुनो, भली प्रकार मन में करो, कहूँगा । "बहुत अच्छा!" कहकर अग्गिकभारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान् को उत्तर दिया । भगवान् ने कहा–

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Savatthi, in Jetavana, in the park of Anathapindika. Then Bhagavān having put on his raiment in the morning, and having taken his bowl and hisrobes, entered Savatthi for alms. Now at that time in the house of the Brahmaṇa Aggikabharadvaja the fire was blazing, the offering brought forth. Then Bhagavān going for alms from house to house in Savatthti went to the house of the Brahmaṇa Aggikabharadvaja. The Brahmaṇa Aggikabharadvaja saw Bhagavān coming at a distance, arid seeing him he said this: 'Stay there, O Shavel ing; stay there, O Sramaṇaka stay there, O Vasalaka!' This having been said, Bhagavān replied to the Brahmaṇa Aggikabharadvaja: 'Dost thou know, O Brahmaṇa, an outcast, or the things that make an outcast?' 'No, O venerable Gotama, I do not know an outcast, or the things that make an outcast; let the venerable Gotama teach me this so well that I may know an outcast, or the things that make an outcast.' 'Listen then, O Brahmaṇa, attend carefully, I will tell you.' 'Even so, O venerable one,' so the Brahmaṇa Aggikabharadvja replied to Bhagavān.
Then Bhagavān said this:

"कोधनो उपनाही च, पापमक्खी च यो नरो।
विपन्नदिट्ठि* मायावी, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/1॥

"Kodhano upanāhī ca, pāpamakkhī ca yo naro;
Vipannadiṭṭhi māyāvī, taṃ jaññā vasalo iti.॥1॥

"क्रोधी च उपनाही च, पापम्रक्षश्च यो नर: ।
विपन्नदृष्टि: मायावी, तं जानीत वृषल इति"॥1॥

जो नर क्रोधी, बंधे वैर वाला, बहुत ईर्ष्यालु, मिथ्यादृष्टि वाला और मायावी है, उसे वृषल (नीच) जाने॥1॥

'The man who is angry and bears hatred, who is wicked and hypocritical, who has clasped wrong views, who is deceitful, let one know him as an outcast.1.

*विपन्नदिट्ठीति विनट्ठसम्मादिट्ठि विपन्नाय वा विरूपं गतायदसवत्थुकाय मिच्छादिट्ठिया समन्नागतो ।

"एकजं वा द्विजं वा पि, योध पाणं विहिंसति।
यस्स पाणे दया नत्थि, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/2॥

"Ekajaṃ vā dvijaṃ vā pi, yodha pāṇaṃ vihiṃsati;
Yassa pāṇe dayā natthi, taṃ jaññā vasalo iti.॥2॥

"एकजं वा द्विजं* वाऽपि, य इह प्राणं विहिनस्ति।
यस्य प्राणेषु दया नास्ति, तं जानीत वृषल इति"॥2॥

जो योनिज या अण्डज किसी भी प्राणी की हिंसा करता, जिसे प्राणियों के प्रति दया नहीं, उसे वृषल जाने॥2॥

'Whosoever in this world harms living beings, whether once or twice born, and in whom there is no compassion for living beings, let one know him as an outcast.2.

* एकजो ति ठपेत्वा अण्डजं अवसेसयोनिजो । सो हि एकदा एव जायति । द्विजो ति अण्डजो ।
सो हि मातुकुच्छितो अण्डकोसले चाति द्विक्खत्तुं जायति। तं एकजं वा द्विजं वा पि ।

"यो हन्ति परिरुन्धति, गामानि निगमानि च।
निग्गाहको* समञ्ञातो, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/3॥

"Yo hanti parirundhati, gāmāni nigamāni ca;
Niggāhako samaññāto, taṃ jaññā vasalo iti.॥3॥

"यो हन्ति परिरुणद्धि, ग्रामान् निगमान् च ।
निग्राहक: समज्ञात:, तं जानीत वृषल इति॥3॥

जो ग्रामों और कस्बों को नष्ट करता और घेरता है, जो अत्याचारी के रूप में प्रसिद्ध है, उसे वृषल जाने॥3॥

'Whosoever destroys or lays siege to villages and towns, and is known as an enemy, let one know him as an outcast.3.

* गम निगम नगर घातको ति लोके विदितो ।

"गामे वा यदि वारञ्ञे, यं परेसं ममायितं।
थेय्या अदिन्नमादेति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/4॥

"Gāme vā yadi vāraññe, yaṃ paresaṃ mamāyitaṃ;
Theyyā adinnamādeti, taṃ jaññā vasalo iti.॥4॥

"ग्रामे वा यदि वारण्ये, यत् परेषां ममायितम् ।
स्तेयेन अदत्तमाददाति, तं जानीत वृषल इति॥4॥

ग्राम या अरण्य में जो दूसरों की अपनी सम्पत्ति है, उसे चोरी से ले जाता है, उसे वृषल जाने॥4॥

'Be it in the village or in the forest, whosoever appropriates by theft what is the property of others and what has not been given, let one know him as an outcast.4.

"यो हवे इणमादाय, चुज्जमानो पलायति।
न हि ते इणमत्थी ति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/5॥

"Yo have iṇamādāya, cujjamāno palāyati;
Na hi te iṇamatthī ti, taṃ jaññā vasalo iti.॥5॥

"यो ह वै ऋणमादाय, चोद्यमान: पलायते ।
न हि ते ऋणमस्तीति, तं जानीत वृषल इति॥5॥

जो ऋण लेकर माँगने पर "तेरा ऋण नहीं है" कहकर भागता है, उसे वृषल जाने॥5॥

'Whosoever, having really contracted a debt, runs away when called upon to pay, saying, "There is no debt that I owe thee," let one know him as an outcast.5.

"यो वे किञ्चिक्खकम्यता, पन्थस्मिं वजन्तं जनं।
हन्त्वा किञ्चिक्खमादेति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/6॥

"Yo ve kiñcikkhakamyatā, panthasmiṃ vajantaṃ janaṃ;
Hantvā kiñcikkhamādeti, taṃ jaññā vasalo iti.॥6॥

"यो वै किञ्चित्कं काम्यतया, पथि व्रजन्तं जनम् ।
हत्वा किञ्चित्कमाददाति, तं जानीत वृषल इति॥6॥

जो किसी चीज की इच्छा से मार्ग में चलते हुए व्यक्ति को मारकर कुछ ले लेता है, उसे वृषल जाने॥6॥

'Whosoever for love of a trifle having killed a man going along the road, takes the trifle, let one know him as an outcast.6.

"अत्तहेतु परहेतु, धनहेतु च यो नरो।
सक्खिपुट्ठो मुसा ब्रूति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/7॥

"Attahetu parahetu, dhanahetu ca yo naro;
Sakkhipuṭṭho musā brūti, taṃ jaññā vasalo iti.॥7॥

"आत्महेतु: परहेतु:, धनहेतुश्च यो नर: ।
साक्षिपृष्टो मृषां ब्रूते, तं जानीत वृषल इति॥7॥

जो नर अपने या दूसरे के धन के लिए झूठी गवाही देता है, उसे वृषल जाने॥7॥

'The man who for his own sake or for that of others or for the sake of wealth speaks falsely when asked as a witness, let one know him as an outcast.7.

"यो ञातीनं सखीनं वा, दारेसु पटिदिस्सति।
साहसा सम्पियेन वा, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/8॥

"Yo ñātīnaṃ sakhīnaṃ vā, dāresu paṭidissati;
Sāhasā sampiyena vā, taṃ jaññā vasalo iti.॥8॥

"यो ज्ञातीनां सखानां वा, दारेषु प्रतिदृश्यते ।
साहसात् सम्प्रियेन वा, तं जानीत वृषल इति॥8॥

जो जबरदस्ती या प्रेम से भाई-बन्धुओं या मित्रों की स्त्रियों के साथ दिखाई देता है, उसे वृषल जाने॥8॥

'Whosoever is seen with the wives of relatives or of friends either by force or with their consent, let one know him as an outcast.8.

"यो मातरं पितरं वा, जिण्णकं गतयोब्बनं।
पहुसन्तो* न भरति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/9॥

"Yo mātaraṃ pitaraṃ vā, jiṇṇakaṃ gatayobbanaṃ;
Pahusanto na bharati, taṃ jaññā vasalo iti.॥9॥

"यो मातरं वा पितरं वा, जीर्णकं गतयौवनम् ।
प्रभुसन्नपि न भरति, तं जानीत वृषल इति॥9॥

जो समर्थ होते हुए भी अपने बूढ़े-शिथिल माता या पिता का भरण-पोषण नहीं करता है, उसे वृषल जाने॥9॥

'Whosoever being rich does not support mother or father when old and past their youth, let one know him as an outcast.9.

* अत्थसम्पन्नो ति पहुसन्तो ।

"यो मातरं पितरं वा, भातरं भगिनिं सस्सुं।
हन्ति रोसेति वाचाय, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/10॥

"Yo mātaraṃ pitaraṃ vā, bhātaraṃ bhaginiṃ sasuṃ;
Hanti roseti vācāya, taṃ jaññā vasalo iti.॥10॥

"यो मातरं वा पितरं वा, भ्रातरं भगिनीं श्वश्रूम् ।
हन्ति रोषयति वाचा, तं जानीत वृषल इति॥10॥

जो माता-पिता, भाई, बहिन या सासु को मारता या कड़े वचन से क्रोध करता है, उसे वृषल जाने॥10॥

'Whosoever strikes or by words annoys mother or father, brother, sister, or mother-in-law, let one know him as an outcast.10.

"यो अत्थं पुच्छितो सन्तो, अनत्थमनुसासति।
पटिच्छन्नेन मन्तेति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/11॥

"Yo atthaṃ pucchito santo, anatthamanusāsati;
Paṭicchannena manteti, taṃ jaññā vasalo iti.॥11॥

"योऽर्थं पृष्टः सन्, अनर्थमनुशास्ति वै ।
प्रतिच्छन्नेन मन्त्रयते, तं जानीत वृषल इति॥11॥

जो भलाई की बात पूछने पर बुराई का रास्ता दिखलाता है, बात को घुमा-फिरा कर बोलता है, उसे वृषल जाने॥11॥

'Whosoever, being asked about what is good, teaches what is bad and advises another, while concealing something from him, let one know him as an outcast.11.

"यो कत्वा पापकं कम्मं, मा मं जञ्ञाति इच्छति ।
यो पटिच्छन्नकम्मन्तो, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/12॥

"Yo katvā pāpakaṃ kammaṃ, mā maṃ jaññāti icchati;
Yo paṭicchannakammanto, taṃ jaññā vasalo iti.॥12॥

"यः कृत्वा पापकं कर्म, मा मां जानीत इच्छति ।
यः प्रतिच्छन्नकर्मान्तः, तं जानीत वृषल इति॥12॥

जो पाप-कर्म करके लोग मुझे न जाने- ऐसा चाहता है, जो छिपे कर्म करने वाला है, उसे वृषल जाने॥12॥

'Whosoever, having committed a bad deed, hopes saying, Let no one know me as having done it, who is a dissembler, let one know him as an outcast. 12.

"यो वे परकुलं गन्त्वा, भुत्वान सुचिभोजनं।
आगतं नप्पटिपूजेति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/13॥

"Yo ve parakulaṃ gantvā, bhutvāna sucibhojanaṃ;
Āgataṃ nappaṭipūjeti, taṃ jaññā vasalo iti.॥13॥

"यो वै परकुलं गत्वा, भुङक्त्वा शुचिभोजनम् ।
आगतं न प्रतिपूजयति, तं जानीत वृषल इति॥13॥

जो दूसरे के घर जाकर भोजन करता है और उसके जाने पर आदर सत्कार नहीं करता, उसे वृषल जाने॥13॥

'Whosoever, having gone to another's house and partaken of his good food, does not in return honour him when he comes, let one know him as an outcast. 13.

"यो ब्राह्मणं समणं वा, अञ्ञं वापि वनिब्बकं।
मुसावादेन वञ्चेति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/14॥

"Yo brāhmaṇaṃ samaṇaṃ vā, aññaṃ vāpi vanibbakaṃ;
Musāvādena vañceti, taṃ jaññā vasalo iti.॥14॥

"यो ब्राह्मणं वा श्रमणं वा, अन्यं वा अपि वनीयकम् ।
मृषावादेन वञ्चयते, तं जानीत वृषल इति॥14॥

जो ब्राह्मण, श्रमण अथवा अन्य किसी भी भिखारी को झूठे बोल कर धोखा देता है, उसे वृषल जाने॥14॥

'Whosoever by falsehood deceives either a Brahmaṇa or a Sramaṇa or any other mendicant, let one know him as an outcast. 14.

"यो ब्राह्मणं समणं वा, भत्तकाले उपट्ठिते।
रोसेति वाचा न च देति, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/15॥

"Yo brāhmaṇaṃ samaṇaṃ vā, bhattakāle upaṭṭhite;
Roseti vācā na ca deti, taṃ jaññā vasalo iti.॥15॥

"यो ब्राह्मणं श्रमणं वा, भक्तकाले उपस्थिते ।
रोषयति वाचा न च ददाति, तं जानीत वृषल इति॥15॥

जो भोजनकाल में आए हुए ब्राह्मण या श्रमण से क्रोध से बोलता है, उसे कुछ नहीं देता है, उसे वृषल जाने॥15॥

'Whosoever by words irritates either a Brahmana or a Sramaṇa when meal-time has come and does not give him anything, let one know him as an outcast. 15.

"असतं योध पब्रूति, मोहेन पलिगुण्ठितो।
किञ्चिक्खं निजिगीसानो*, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/16॥

"Asataṃ yodha pabrūti, mohena paliguṇṭhito;
Kiñcikkhaṃ nijigīsāno, taṃ jaññā vasalo iti.॥16॥

"असतं य इह प्रब्रूते, मोहेन परिगुण्ठित: ।
किञ्चित्कं निजिगीषमाण:, तं जानीत वृषल इति॥16॥

जो मोह से मोहितकर किसी चीज को चाहता हुआ यहाँ झूठ बोलता है, उसे वृषल जाने॥16॥

'Whosoever enveloped in ignorance in this world predicts what is not to take place, coveting a trifle, let one know him as an outcast. 16.

* मग्गमानो

"यो चत्तानं समुक्कंसे, परे च मवजानाति ।
निहीनो सेन* मानेन, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/17॥

"Yo cattānaṃ samukkaṃse, pare ca mavajānāti;
Nihīno sena mānena, taṃ jaññā vasalo iti.॥17॥

"यश्चात्मानं समुत्कर्षयेत् परांश्चावजानाति ।
निहीन: स्वेन मानेन, तं जानीत वृषल इति॥17॥

जो अपनी बड़ाई करता, दूसरे की निन्दा करता और अपने अभिमान से गिर गया है, उसे वृषल जाने॥17॥

'Whosoever exalts himself and disdain others, being mean by his pride, let one know him as an outcast.17.

* स्वकीयेन (अत्तनो मानेन)

"रोसको कदरियो च, पापिच्छो मच्छरी सठो।
अहिरिको अनोत्तप्पी, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/18॥

"Rosako kadariyo ca, pāpiccho maccharī saṭho;
Ahiriko anottappī, taṃ jaññā vasalo iti.॥18॥

"रोषक: कदर्यश्च, पापेच्छु: मत्सरी शठ: ।
अह्रीकोऽनवत्राप्यी, तं जानीत वृषल इति॥18॥

जो क्रोधी, कंजूस, बुरी इच्छा वाला, ईष्यालु, शठ, निर्लज्ज और अ-संकोची है, उसे वृषल जाने॥18॥

'Whosoever is a provoker and is avaricious, has sinful desires, is envious, wicked, shameless and fearless of sinning, let one know him as an outcast. 18.

"यो बुद्धं परिभासति, अथ वा तस्स सावकं।
परिब्बाजं गहट्ठं वा, तं जञ्ञा वसलो इति॥1/7/19॥

"Yo buddhaṃ paribhāsati, atha vā tassa sāvakaṃ;
Paribbājaṃ gahaṭṭhaṃ vā, taṃ jaññā vasalo iti.॥19॥

"यो बुद्धं परिभाषते*, अथ वा तस्य श्रावकम्. ।
परिव्राजं गृहस्थं वा, तं जानीत वृषल इति॥19॥

जो बुद्ध और उनके प्रव्रजित अथवा गृहस्थ शिष्यों को गाली देता है, उसे वृषल जाने॥19॥

'Whosoever reviles Buddha or his disciple, be he a wandering mendicant or a householder, let one know him as an outcast. 19.

* अपवदति

"यो वे अनरहं सन्तो, अरहं पटिजानाति ।
चोरो सब्रह्मके लोके, एसो खो वसलाधमो।
"एते खो वसला वुत्ता, मया ये ते पकासिता॥1/7/20॥

"Yo ve anarahaṃ santo, arahaṃ paṭijānāti;
Coro sabrahmake loke, eso kho vasalādhamo.
"Ete kho vasalā vuttā, mayā yete pakāsitā;॥20॥

"यो वै अनर्हं सन् अर्हं प्रतिजानाति ।

चौरः सब्रह्मके लोके, एष खलु वृषलाधमः।

"एते खलु वृषला उक्ता, मया ये ते प्रकाशिताः॥20॥

जो अर्हत् न होते हुए भी अपने को अर्हत् बतलाता है, वह ब्रह्म-सहित सारे लोक में चोर है और वह अधम वृषल है। मैंने इतने वृषलों को तुम्हें बतलाया॥20॥

'Whosoever without being a saint arahat pretends to be a saint, and is a thief in all the worlds including that of Brahman, he is indeed the lowest outcast; all these who have been described by me to you are indeed called outcasts. 20.

न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो।

कम्मुना वसलो होति, कम्मुना होति ब्राह्मणो॥1/7/21॥

Na jaccā vasalo hoti, na jaccā hoti brāhmaṇo;

Kammunā vasalo hoti, kammunā hoti brāhmaṇo.॥21॥

न जात्या वृषलो भवति, न जात्या भवति ब्राह्मणः ।

कर्मणा वृषलो भवति, कर्मणा भवति ब्राह्मणः॥21॥

कोई जाति से वृषल नहीं होता और न जाति से ब्राह्मण होता है । कर्म से कोई वृषल होता है और कर्म से ही ब्राह्मण होता है॥21॥

'Not by birth does one become an outcast, not by birth does one become a Brahmaṇa; by deeds one becomes an outcast, by deeds one becomes a Brahmaṇa. 21.

"तदमिना पि जानाथ, यथामेदं निदस्सनं।

चण्डालपुत्तो सोपाको, मातङ्गो इति विस्सुतो॥1/7/22॥

"Tadaminā pi jānātha, yathāmedaṃ nidassanaṃ;

Caṇḍālaputto sopāko, mātaṅgo iti vissuto.॥22॥

"तमनेनापि जानीथ, यथा ममेदं निदर्शनम् ।

चाण्डालपुत्रः श्वपाकः, मातङ्ग इति विश्रुतः॥22॥

इस उदाहरण से भी जानो कि चण्डाल-पुत्र सोपाक जो मातंग नाम से प्रसिद्ध था॥22॥

'Know you this in the way that this example of mine shows: There was a Candala of the Sopaka caste, well known as Mataṅga. 22.

"सो यसं परमं पत्तो, मातङ्गो यं सुदुल्लभं।

आगच्छुं तस्सुपट्ठानं, खत्तिया ब्राह्मणा बहू॥1/7/23॥

"So yasaṃ paramaṃ patto, mātaṅgo yaṃ sudullabhaṃ;

Āgacchuṃ tassupaṭṭhānaṃ, khattiyā brāhmaṇā bahū.॥23॥

"स यशः परमं प्राप्तः, मातङ्गो यत् सुदुर्लभम् ।

आगच्छन् तस्योपस्थानम्, क्षत्रियाः ब्राह्मणाः बहु॥23॥

उस मातंग ने जिस महान् यश को प्राप्त किया, वह दूसरों के लिए बहुत ही दुर्लभ था । उसकी सेवा में बहुत से क्षत्रिय ब्राह्मण आते थे॥23॥

'This Mataṅga reached the highest fame, such as was very difficult to obtain and many Khattiyas and Brahmaṇas went to serve him. 23.

"देवयानं अभिरुय्ह, विरजं सो महापथं।
कामरागं विराजेत्वा, ब्रह्मलोकूपगो अहु।
न नं जाति निवारेसि, ब्रह्मलोकूपपत्तिया॥1/7/24॥

"Devayānaṃ abhiruyha, virajaṃ so mahāpathaṃ;
Kāmarāgaṃ virājetvā, brahmalokūpago ahu;
Na naṃ jāti nivāresi, brahmalokūpapattiyā.॥24॥

"देवयानमभिरुह्य, विरजं स महापन्थानम् ।
कामरागं विरज्य, ब्रह्मलोकोपग: अभूत् ।
न तं जाति: न्यवारयत् ब्रह्मलोकोपपत्तये हि॥24॥

वह काम राग को त्याग कर दिव्य रथ में सवार हो, शुद्ध महापथ से ब्रह्मलोक चला गया। उसके ब्रह्मलोक में उत्पन्न होने से उसे जाति नहीं रोक सकी॥24॥

'He having mounted the vehicle of the gods and entered the high road that is free from dust, having left sensual desires, went to the Brahmaloka. 24.

"अज्झायककुले जाता, ब्राह्मणा मन्तबन्धवा।
ते च पापेसु कम्मेसु, अभिण्हमुपदिस्सरे॥1/7/25॥

"Ajjhāyakakule jātā, brāhmaṇā mantabandhavā;
Te ca pāpesu kammesu, abhiṇhamupadissare.॥25॥

"अध्यायककुले जाता:, ब्राह्मणा: मन्त्रबान्धवा:।
ते च पापेषु कर्मसु, अभीक्ष्णमुपदृश्यन्ते॥25॥

जो वेदपाठियों के घर में उत्पन्न वेद-मंत्रों के जानकार ब्राह्मण हैं वे भी नित्य पाप-कर्मों में संलग्न दिखाई देते हैं॥25॥

'His birth did not prevent him from being re-born in the Brahma world; on the other hand there are Brahmaṇas, born in the family of preceptors, friends of the hymns of the Vedas.25.

"दिट्ठेव धम्मे गारय्हा, सम्पराये च दुग्गति।
न ने जाति निवारेति, दुग्गत्या गरहाय वा॥1/7/26॥

"Diṭṭheva dhamme gārayhā, samparāye ca duggati;
Na ne jāti nivāreti, duggatyā garahāya vā.॥26॥

"दृष्टे एव धर्मे गार्ह्या, सम्पराये च दुर्गतिम् ।
न तान् जाति: निवारयति, दुर्गत्या गर्हया वा॥26॥

इस जन्म में ही उनकी निन्दा होती है और परलोक में दुर्गति को प्राप्त होते हैं। उन्हें दुर्गति और निन्दा से जाति नहीं बचा पाती॥26॥

'But they are continually caught in sinful deeds, and are to be blamed in this world, while in the coming hell awaits them; birth does not save them from hell nor from blame. 26.

"न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो।
कम्मुना वसलो होति, कम्मुना होति ब्राह्मणो''ति॥1/7/27॥

"Na jaccā vasalo hoti, na jaccā hoti brāhmaṇo;
Kammunā vasalo hoti, kammunā hoti brāhmaṇo"ti.॥27॥

"न जात्या वृषलो भवति, न जात्या भवति ब्राह्मण: ।
कर्मणा वृषलो भवति, कर्मणा भवति ब्राह्मण" इति॥27॥

जाति से कोई न वृषल होता है और न जाति से कोई ब्राह्मण होता है । कर्म से ही कोई वृषल होता है और कर्म से ही ब्राह्मण होता है॥27॥

'Therefore not by birth does one become an outcast, not by birth does one become a Brahmaṇa, by deeds one becomes an outcast, by deeds one becomes a Brahmaṇa.'27.

एवं वुत्ते, अग्गिकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं एतदवोच – ''अभिक्कन्तं, भो 'गोतम', अभिक्कन्तं, भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम, निक्कुज्जितं वा उक्कुज्जेय्य, पटिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूल्हस्स वा मग्गं अचिक्खेय्य अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति, एवमेव भोता गोतमेन अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो । एसाहं भवन्तं गोतमं सरणं गच्छामि, धम्मं च भिक्खुसङ्घं च। उपासकं मं भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतं" ति।

Evaṃ vutte, aggikabhāradvājo brāhmaṇo bhagavantaṃ etadavoca – "abhikkantaṃ, bho gotam abhikkantaṃ, bho gotama, Seyyathāpi, bho gotama, nikkujjitaṃ vā ukkujjeyya, paṭicchannaṃ vā vivareyya, mūḷhassa vā maggaṃ ācikkheyya, andhakāre vā telapajjotaṃ dhāreyya, evamevaṃ bhotā gotamena anekapariyāyena dhammo pakāsito. Esāhaṃ bhavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammañca bhikkhusaṅghañca. upāsakaṃ maṃ bhavaṃ gotamo dhāretu ajjatagge pāṇupetaṃ saraṇaṃ gataṃ"ti.

एवमुक्ते, *अग्गिकभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवन्तमेतदवोचत् – "अभिकान्तम्, भो *गौतम*! अभिकान्तम् भो *गौतम* ! तद्यथापि भो *गौतम* ! निकुब्जितं वा उत्कुब्जेत्, प्रतिच्छन्नं वा विवरेत्, मूढस्य वा मार्गमाख्येत् अन्धकारे वा तैलप्रद्योतं धारयेत् चक्षुष्मान् रूपाणि दर्शयेत् इति, एवमेव भवता *गौतमेन* अनेकपर्यायेन धर्म: प्रकाशित: । एष अहं भवन्तं *गौतमं* शरणं गच्छामि, धर्मं च भिक्षुसंघं च । उपासकं मां भवान् *गौतम:* धारयतु अद्यतोऽग्रे प्राणोपेतं शरणं गतम्" इति ।

ऐसा कहने पर अग्गिक भारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान् से ऐसा कहा– "आश्चर्य है हे गौतम! जैसे कि हे गौतम ! उल्टे हुए बर्तन को सीधा कर दे, ढँके हुए को उघाड़ दे, रास्ते भूले हुए को रास्ता बतला दे अथवा अन्धकार में तेल के प्रदीप को धारण करे जिससे आँख वाले लोग चीजों को देख सकें, ऐसे ही आप गौतम

द्वारा अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया गया । यह मैं आप गौतम की शरण में जाता हूँ, धर्म और भिक्षुसंघ की भी । मुझे आप गौतम आज से जीवन-पर्यन्त शरणागत उपासक धारण करें ।"

This having been said, the Brāhmaṇa Aggikabharadvaja answered Bhagavāns as following: 'Excellent, O venerable Gotama! Excellent, O venerable Gotama! As one, O venerable Gotama, raises what has been overthrown, or reveals what has been hidden, or tells the way to him who has gone astray, or holds out an oil lamp in the dark that those who have eyes may see the objects, even so by the venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illustrated; I take refuge in the venerable Gotama and in the Dhamma and in the Assembly of Bhikkhus. Let the venerable Gotama accept me as an upasaka who henceforth for all my life have taken refuge.'

वसलसुत्तं निट्ठितं

(Vasalasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1, 8) मेत्तसुत्तं (Mettasuttaṃ)

करणीयमत्थकुसलेन, यन्तं सन्तं पदं अभिसमेच्च।

सक्को उजू च सुहुजू च, सूवचो चस्स मुदु अनतिमानी॥1/8/1॥

Karaṇīyamatthakusalena, yanta santaṃ padaṃ abhisamecca;

Sakko ujū ca suhujū ca, sūvaco cassa mudu anatimānī.॥1॥

करणीयमर्थकुशलेन, यं तं सन्तं पदमभिसमेत्य ।

शक्य ऋजुश्च सुऋजुश्च, सुवचश्च स्यान्मृदु: अनतिमानी॥1॥

शान्ति-पद की प्राप्ति चाहने वाले, कल्याण-साधन में निपुण मनुष्य को चाहिए कि वह ऋजु बने। उनकी बात सुन्दर, मृदु और विनीत हो॥1॥

Whatever is to be done by one who is skilful in seeking what is good, having attained that peaceful state of Nibbana :—Let him be able and upright and conscientious and of soft speech, gentle, not proud, .1.

सन्तुस्सको च सुभरो च, अप्पकिच्चो च सल्लहुकवुत्ति।

सन्तिन्द्रियो च निपको च, अप्पगब्भो कुलेस्वननुगिद्धो॥1/8/2॥

Santussako ca subharo ca, appakicco ca sallahukavutti;

Santindriyo ca nipako ca, appagabbho kulesvananugiddho.॥2॥

सन्तुष्टकश्च सुभरश्च, अल्पकृत्यश्च सल्लघुकवृत्ति:।

सन्तेन्द्रियश्च निपकश्च, अप्रगल्भ: कुलेष्वननुगृद्ध:॥2॥

वह सन्तोषी हो, सहज ही-पोष्य हो और सादा जीवन बिताने वाला हो । उसकी इन्द्रियाँ शान्त हों। वह चतुर हो, अप्रगल्भ हो और कुलों में अनासक्त हो॥2॥

And satisfied and easily supported and having few cares, unburdened and with his senses calmed and wise, not arrogant, without showing greediness when going his round in families.2.

न च खुद्दं समाचरे किञ्चि, येन विञ्ञू परे उपवदेय्युं।
सुखिनो वा खेमिनो होन्तु, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता॥1/8/3॥

Na ca khuddaṃ samācare kiñci, yena viññū pare upavadeyyuṃ;
Sukhino va khemino hontu, sabbe sattā bhavantu sukhitattā.॥3॥

न च क्षुद्रं समाचरेत्, किञ्चित्, यस्मात् विज्ञा: परे उपवदेयु:।
सुखिनो वा क्षेमिनो भवन्तु, सर्वे सत्त्वा: भवन्तु सुखिनस्ते॥3॥

ऐसा कोई छोटा से भी छोटा कार्य न करे जिसके लिए दूसरे विज्ञ लोग उसे दोष दें । मैत्री करें, सब प्राणी सुखी हों, क्षेमी हो और सुखितात्मा हो॥3॥

And let him not do anything mean for which others who are wise might reprove him; may all beings be happy and secure, may they be happy minded.3.

ये केचि पाणभूतत्थि, तसा वा थावरा अनवसेसा।
दीघा वा ये व महन्ता, मज्झिमा रस्सका अणुकथूला॥1/8/4॥
व अदिट्ठा, ये व दूरे वसन्ति अविदूरे।
भूता व सम्भवेसी व, सब्बे सत्ता भवन्तु सुखितत्ता॥1/8/5॥

Ye keci pāṇabhūtatthi, tasā vā thāvarā vanavasesā;
Dīghā vā ye va mahantā, majjhimā rassakā aṇukathūlā.॥4॥
Diṭṭhā vā ye va adiṭṭhā, ye va dūre vasanti avidūre;
Bhūtā va sambhavesī va, sabbe sattā bhavantu sukhitattā.॥5॥

ये केचित् प्राणभूता: सन्ति, त्रसा: वा स्थावरा अनवशेषा:।
दीर्घा: वा ये वा महन्त:, मध्यमा: ह्रस्वका अणुका: स्थूला:॥4॥
दृष्टा: वा ये एव अदृष्टा:, ये च दूरे वसन्ति अविदूरे।
भूता: वा सम्भवेषिणो वा, सर्वे सत्त्वा: भवन्तु सुखिन: ते॥5॥

जंगम या स्थावर, दीर्घ या महान, मध्यम या स्व, अणु या स्थूल, दृष्ट या अदृष्ट, दूरस्थ या निकटस्थ, उत्पन्न या उत्पन्न होने वाले जितने भी प्राणी हैं, वे सभी सुखपूर्वक रहें॥4-5॥

Whatever living beings there are, either feeble or strong, all either long or great, middle-sized, short, small or large, Either seen or which are not seen, and which live far or near, either born or seeking birth, may all creatures be happy-minded.4-5.

न परो परं निकुब्बेथ, नातिमञ्ञेथ कत्थचि न कञ्चि ।
ब्यारोसना पटिघसञ्ञा, नाञ्ञमञ्ञस्स दुक्खमिच्छेय्य॥1/8/6॥

Na paro paraṃ nikubbetha, nātimaññetha katthaci na kañci;
Byārosanā paṭighasaññā, nāññamaññassa dukkhamiccheyya.॥6॥

न पर: परं निष्कुर्यात्, नातिमन्येथा: कुत्रचित् न कञ्चित् ।
व्यारोषणात् प्रतिघसंज्ञाया:, नान्यान्याय दु:खमिच्छेत्॥6॥

एक दूसरे की वंचना न करे । कभी किसी का अपमान न करें । वैमनस्य या विरोध से एक दूसरे के दु:ख की इच्छा न करें॥6॥

Let no one deceive another, let him not despise another in any place, let him not out of anger or resentment wish harm to another.6.

माता यथा नियं पुत्तमायुसा एकपुत्तमनुरक्खे।
एवं पि सब्बभूतेसु, मानसं भावये अपरिमाणं॥1/8/7॥

Mātā yathā niyaṃ puttamāyusā ekaputtamanurakkhe;
Evaṃ pi sabbabhūtesu, mānasaṃ bhāvaye aparimāṇaṃ.॥7॥

माता यथा निजं पुत्रम्, आयुषा एकपुत्रमनुरक्षेत् ।
एवमपि सर्वभूतेषु, मानसं भावयेत् अपरिमाणम्॥7॥

माता जिस प्रकार जान की परवाह न कर अपने इकलौते पुत्र की रक्षा करती है, उस प्रकार प्राणिमात्र के प्रति असीम प्रेम-भाव बढ़ावे॥7॥

As a mother at the risk of her life watches over her own child, her only child, so also let every one cultivate a boundless friendly mind towards all beings.7.

मेत्तं च सब्बलोकस्मि, मानसं भावये अपरिमाणं।
उद्धं अधो च तिरियं च, असम्बाधं अवेरमसपत्तं॥1/8/8॥

Mettaṃ ca sabbalokasmi, mānasaṃ bhāvaye aparimāṇaṃ;
Uddhaṃ adho ca tiriyaṃ ca, asambādhaṃ averamasapattaṃ.॥8॥

मैत्रञ्च सर्वलोके, मानसं भावयेदपरिमाणम् ।
ऊर्ध्वमधश्च तिर्यक् च, असम्बाधम् अवैरमसपत्नम् ॥8॥

बिना बाधा, वैर और शत्रुता से रहित होकर, नीचे और तिरछे सारे संसार के प्रति असीम प्रेम बढ़ावे॥8॥

And let him cultivate goodwill towards all the world, a boundless friendly mind, above and below and across, unobstructed, without hatred, without enmity.8.

तिट्ठं चरं निसिन्नो व सयानो यावतास्स वितमिद्धो ।
एतं सतिं अधिट्ठेय्य, ब्रह्ममेतं विहारमिधमाहु॥1/8/9॥

Tiṭṭhaṃ caraṃ nisinno va, sayāno yāvatāssa vitamiddho;
Etaṃ satiṃ adhiṭṭheyya, brahmametaṃ vihāramidhamāhu.॥9॥

तिष्ठन् चरन् निषण्णो वा, शयानो यावत् स्यात् वीतमिद्ध:।
एतां स्मृतिमधितिष्ठेत्, ब्रह्ममेतं विहारमिह आहु:॥9॥

खड़े रहते, चलते, बैठते या सोते, जब तक जागृत रहे, तब तक इस प्रकार की स्मृति बनाये रहे। इसी को ब्रह्मविहार कहते हैं॥9॥

Standing, walking or sitting or lying, as long as he be awake, let him devote himself to this mind; this way of living they say is the best in this world.9.

दिट्ठिं च अनुपग्गम्म, सीलवा दस्सनेन सम्पन्नो।
कामेसु विनय्य गेधं, न हि जातुग्गब्भसेय्य पुनरेती ति॥1/8/10॥

Diṭṭhiṃ ca anupaggamma, sīlavā dassanena sampanno;
Kāmesu vinaya gedhaṃ, na hi jātuggabbhaseyya punaretī ti.॥10॥

दृष्टिञ्चानुपगम्य शीलवान्, दर्शनेन सम्पन्न:।
कामेषु विनीय गृद्धम्, न हि जातु गर्भशय्यां पुनरेतीति॥10॥

ऐसा व्यक्ति किसी मिथ्यादृष्टि में न पड़, शीलवान् हो, विशुद्ध दर्शन से युक्त हो काम-तृष्णा का नाश कर पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है॥10॥

He who, not having embraced philosophical views, is virtuous, endowed with perfect vision, after subduing greediness for sensual pleasures, will never again go to a mother's womb.10.

मेत्तसुत्तं निट्ठितं
(Mettasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1, 9) हेमवतसुत्तं (Hemavatasuttaṃ)

"अज्जपन्नरसो* उपोसथो, (इति सातागिरो यक्खो) दिब्बा रत्ति उपट्ठिता।
अनोमनामं* सत्थारं*, हन्द पस्साम गोतमं''॥1/9/1॥

"Ajjapannaraso uposatho, (iti sātāgiro yakkho) Dibbā ratti upaṭṭhitā;
Anomanāmaṃ satthāraṃ, handa passāma gotamaṃ".॥1॥

"अद्य पञ्चदश उपोसथ:, (इति सातागिरो यक्षो) दिव्या रात्रि उपस्थिता।
अनोमनामं शास्तारम्, हन्त पश्याम *गौतमम्*" ॥1॥

सातागिर– यक्ष–आज पूर्णिमा का उपोसथ है । दिव्य रात्रि उपस्थित है । श्रेष्ठ नाम वाले (अनोमनाम) शास्ता गौतम का हम दर्शन करें॥1॥

'To-day is the fifteenth, fast day; a lovely night has come,'—so said the Yakkha Satagira,—' let us go and see the renowned Gotama.' 1.

*रतिन्दिवो पक्खगणनतोपन्नारसो, उपवसितब्बतो उपोसथो। *अनोमेहि अलामकेहि सब्बाकारपरिपूरेहि गुणेहि नाम अस्सा ति अनोमनामी।
*सत्था भगवा सत्थवाहो यथा सत्थवाहो सते कन्तारं तारेती।

"कच्चि मनो सुपणिहितो, (इति हेमवतो यक्खो) सब्बभूतेसु तादिनो।
कच्चि इट्ठे अनिट्ठे च, सङ्कप्पस्स वसीकता''॥1/9/2॥

"Kacci mano supaṇihito, (iti hemavato yakkho) Sabbabhūtesu tādino;
Kacci iṭṭhe aniṭṭhe ca, saṅkappassa vasīkatā".॥2॥

"कच्चिन्मनो सुप्रणिहितम्, (इति हेमवतो यक्ष:) सर्वभूतेषु *तादिन:**।
कच्चिदिष्टेऽनिष्टे च, संकल्पोऽस्य वशीकृत:"॥2॥

हेमवत यक्ष– क्या उनका मन एकाग्र है ? क्या सभी प्राणियों के प्रति वे स्थिरात्मा हैं ? क्या प्रिय और अप्रिय विषयों में उनके संकल्प वश में हैं ?॥2॥

'Is the mind of such a one well adjusted towards all beings ? '—so said the Yakkha Hemavata,—' are his thoughts restrained as to things wished for or not wished for?' .2.

*तादिः= स्थिरात्मा

"मनो चस्स सुपणिहितो, (इति सातागिरो यक्खो) सब्बभूतेसु तादिनो।
अथो इट्ठे अनिट्ठे च, सङ्कप्पस्स वसीकता''॥1/9/3॥

"Mano cassa supaṇihito, (iti sātāgiro yakkho) Sabbabhūtesu tādino;
Atho iṭṭhe aniṭṭhe ca, saṅkappassa vasīkatā".॥3॥

"मनश्चास्य सुप्रणिहितम्, (इति सातागिरो यक्षः) सर्वभूतेषु *तादिनः*।
अथ इष्टेऽनिष्टे च, संकल्पोऽस्य वशीकृतः"॥3॥

सातागिर यक्ष– उनका मन एकाग्र है । वे सभी प्राणियों के प्रति स्थिरात्मा हैं और उन्होंने प्रिय तथा अप्रिय विषयों में अपने संकल्प को वश में कर लिया है?॥3॥

'His mind is well disposed towards all beings. the mind of such a one,'—so said the Yakkha Satagira,—' and his thoughts are restrained as to things wished for or not wished for.'.3.

"कच्चि अदिन्नं नादियति, (इति हेमवतो यक्खो) कच्चि पाणेसु सञ्ञतो।
कच्चि आरा पमादम्हा, कच्चि झानं न रिञ्चति''॥1/9/4॥

"Kacci adinnaṃ nādiyati, (iti hemavato yakkho) Kacci pāṇesu saññato;
Kacci ārā pamādamhā, kacci jhānaṃ na riñcati".॥4॥

"कच्चिददत्तं नादीयते, (इति हेमवतो यक्षः) कच्चित् प्राणेषु संयतः।
कच्चिदारात् प्रमादात्, कच्चित् ध्यानं न रिणक्ति"॥4॥

हेमवत यक्ष– क्या वे चोरी नहीं करते ? क्या प्राणियों के प्रति संयमी हैं ? क्या वे प्रमाद से दूर रहते हैं? क्या वे ध्यान से रिक्त नहीं रहते ?॥4॥

Does he not take what has not been given to him ?'—so said the Yakkha Hemavata,—'is he self-controlled in his behaviour to living beings? is he far from a state of carelessness? does he not abandon meditation?' .4.

''न सो अदिन्नं आदियति, (इति सातागिरो यक्खो) अथो पाणेसु सञ्ञतो।
अथो आरा पमादम्हा, बुद्धो झानं न रिञ्चति''॥1/9/5॥

"Na so adinnaṃ ādiyati, (iti sātāgiro yakkho) Atho pāṇesu saññato;
Atho ārā pamādamhā, buddho jhānaṃ na riñcati".॥5॥

"न स अदत्तमाददाति, (इति सातागिरो यक्षः) अथ प्राणेषु संयतः।
अथ आरात् प्रमादात्, बुद्धो ध्यानं न रिणक्ति"॥5॥

सातागिर यक्ष– वे चोरी नहीं करते? वे प्राणियों के प्रति संयमी हैं? वे प्रमाद से दूर रहते हैं? बुद्ध ध्यान से रिक्त नहीं रहते?॥5॥

'He does not take what has not been given to him,'—so said the Yakkha Satagira,—' and he is self-cntrolled in his behaviour to living beings, and he is far from a state of carelessness; Buddha does not abandon meditation.' .5.

"कच्चि मुसा न भणति, (इति हेमवतो यक्खो) कच्चि न खीणब्यप्पथो*।
कच्चि वेभूतियं नाह, कच्चि सम्फं न भासति''॥1/9/6॥

"Kacci musā na bhaṇati, (iti hemavato yakkho) Kacci na khīṇabyappatho;
Kacci vebhūtiyaṃ nāha, kacci samphaṃ na bhāsati".॥6॥

"कच्चित् मृषां न भणति, (इति हेमवतो यक्षः) कच्चिन्न क्षीणवाक्पथः।
कच्चित् वैभूतिकं नाह, कच्चित् सम्भिन्नं* न भाषते"॥6॥

हेमवत यक्ष– क्या वे झूठ नहीं बोलते ! क्या वे कटु-वचन नहीं बोलते? क्या वे चुगली नहीं करते ? क्या वे अपवाद (अप्रशंसा) तो नहीं करते ?॥6॥

'Does he not speak falsely ? '—so said the Yakkha Hemavata,—' is he not harsh-spoken? does he not utter slander? does he not talk non sense?' .6.

* वाचाय पथो व्ययपथो खीणो व्यप्पथो अस्सा ति खीणव्यपथो। तं नकारेन पटिसेधेत्वा पुच्छति "न खीण व्यप्पथा ति, न फरुसवाचो ति।
* सम्भग्नम्

"मुसा च सो न भणति, (इति सातागिरो यक्खो) अथो न खीणब्यप्पथो।
अथो वेभूतियं नाह, मन्ता अत्थं च भासति''॥1/9/7॥

"Musā ca so na bhaṇati, (iti sātāgiro yakkho) Atho na khīṇabyappatho;
Atho vebhūtiyaṃ nāha, mantā atthaṃ ca bhāsati".॥7॥

"मृषा च स न भणति, (इति सातागिरो यक्षः) अथ न क्षीणवाक्पथः ।
अथ वैभूतिकं नाह, मन्ता अर्थं च भाषते"॥7॥

सातागिर यक्ष– वे झूठ नहीं बोलते ! वे कटु-वचन नहीं बोलते? वे चुगली नहीं करते ? वे कम बोलते हैं और जो बोलते हैं वह सार्थक ही॥7॥

'He does not speak falsely,'—so said the Yakkha Satagira,—' he is not harsh-spoken, he does not utter slander, with judgement he utters what is good sense.' 7.

"कच्चि न रज्जति कामेसु, (इति हेमवतो यक्खो) कच्चि चित्तं अनाविलं।
कच्चि मोहं अतिक्कन्तो, कच्चि धम्मेसु चक्खुमा''॥1/9/8॥

"Kacci na rajjati kāmesu, (iti hemavato yakkho) Kacci cittaṃ anāvilaṃ;
Kacci mohaṃ atikkanto, kacci dhammesu cakkhumā".॥8॥

"कच्चित् न रज्यति कामेषु, (इति हेमवतो यक्षः) कच्चित् चित्तमनाविलम् ।
कच्चित् मोहमतिक्रान्तः, कच्चित् धर्मेषु चक्षुष्मान् ?"॥8॥

हेमवत यक्ष– क्या वे काम-भोगों में आसक्त नहीं होते ? क्या उनका चित्त निर्मल है ? क्या उन्होंने मोह त्याग दिया है ? क्या वे धर्म में चक्षुष्मान् हैं?॥8॥

'Is he not given to sensual pleasures ?'—so said the Yakkha Hemavata,—' is his mind undisterbed? has he overcome foolishness? does he see clearly in all things dhammas?'.8.

"न सो रज्जति कामेसु, (इति सातागिरो यक्खो) अथो चित्तं अनाविलं।
सब्बमोहं अतिक्कन्तो, बुद्धो धम्मेसु चक्खुमा"॥1/9/9॥

"Na so rajjati kāmesu, (iti sātāgiro yakkho) Atho cittaṃ anāvilaṃ;
Sabbamohaṃ atikkanto, buddho dhammesu cakkhumā".॥9॥

"न स रज्यति कामेषु, (इति सातागिरो यक्षः) अथ चित्तम् अनाविलम्।
सर्वमोहमतिक्रान्तः, बुद्धो धर्मेषु चक्षुष्मान्"॥9॥

सातागिर यक्ष– वे काम-भोगों में आसक्त नहीं होते ? उनका चित्त निर्मल (मलरहित) है ? सम्पूर्ण मोह को उन्होंने त्याग दिया है ? बुद्ध धर्मों में चक्षुष्मान् हैं ?॥9॥

'He is not given to sensual pleasures,'—so said the Yakkha Satagira,—' and his mind is undisturbed; he has overcome all folly; Buddha sees clearly in all things.' .9.

"कच्चि विज्जाय सम्पन्नो, (इति हेमवतो यक्खो), कच्चि संसुद्धचारणो।
कच्चिस्स आसवा खीणा, कच्चि नत्थि पुनब्भवो"॥1/9/10॥

"Kacci vijjāya sampanno, (iti hemavato yakkho) Kacci saṃsuddhacāraṇo;
Kaccissa āsavā khīṇā, kacci natthi punabbhavo".॥10॥

"कच्चित् विद्यया सम्पन्नः, (इति हेमवतो यक्षः) कच्चित् संशुद्धाचरणः।
कच्चिदस्यास्रवाः क्षीणाः, कच्चिन्नास्ति पुनर्भवः"॥10॥

हेमवत यक्ष– क्या वे विद्या से युक्त हैं ? क्या वे शुद्ध आचरण वाले हैं? क्या उनके आस्रव (चित्त मल) क्षीण हो गए हैं ? क्या उनका पुनर्जन्म नहीं होगा?॥10॥

'Is he endowed with knowledge ?'—so said the Yakkha Hemavata,—' is his conduct pure? have his passions been destroyed? is there no new birth for him?' .10.

"विज्जाय चेव सम्पन्नो, (इति सातागिरो यक्खो) अथ संसुद्धचारणो।
सब्बस्स आसवा खीणा, नत्थि तस्स पुनब्भवो"॥1/9/11॥

"Vijjāya ceva sampanno, (iti sātāgiro yakkho) Atho saṃsuddhacāraṇo;
Sabbassa āsavā khīṇā, natthi tassa punabbhavo" .11.

"विद्यया चेव सम्पन्नः, (इति सातागिरो यक्षः) अथ संशुद्धाचरणः।
सर्वस्याऽस्रवाः क्षीणाः, नास्ति तस्य पुनर्भवः"॥11॥

सातागिर यक्ष– वे विद्या से युक्त हैं । वे शुद्ध आचरण वाले हैं । उनके सारे आस्रव क्षीण हो गए हैं । उनका पुनर्जन्म नहीं होगा॥11॥

'He is endowed with knowledge,'—so said the Yakkha Satagira,—' and his conduct is pure; all his passions have been destroyed; there is no new birth for him. 11.

"सम्पन्नं मुनिनो चित्तं, कम्मुना व्यप्पथेन च।
विज्जाचरणसम्पन्नं, धम्मतो नं पसंसति"॥1/9/12॥

"Sampannaṃ munino cittaṃ, kammunā byappathena ca;
Vijjācaraṇasampannaṃ, dhammato naṃ pasaṃsati".॥12॥

"सम्पन्नं मुने: चित्तम्, कर्मणा व्यापृतेन च।
विद्याचरणसम्पन्नम्, धर्मत: तं प्रशंसति"॥12॥

हेमवत यक्ष– मुनि का चित्त कर्म एवं सत्यवचन से सम्पन्न है, अत: हम विद्याचरण सम्पन्न उन गौतम की धर्मपूर्वक प्रशंसा करें॥12॥

'The mind of the Muni is accomplished in deed and word; Gotama, who is accomplished by his knowledge and conduct, let us praise religiously. 12.

"सम्पन्नं मुनिनो चित्तं, कम्मुना व्यप्पथेन च।
विद्याचरणसम्पन्नं, धर्मतो अनुमोदसि"॥1/9/13॥

"Sampannaṃ munino cittaṃ, kammunā byappathena ca;
Vijjācaraṇasampannaṃ, dhammato anumodasi".॥13॥

"सम्पन्नं मुने: चित्तम्, कर्मणा व्यापृतेन च।
विद्याचरणसम्पन्नम्, धर्मतोऽनुमोदसे"॥13॥

सातागिर यक्ष– मुनि का चित्त कर्म एवं सत्यवचन से सम्पन्न है, अत: उन विद्याचरण सम्पन्न गौतम के दर्शन का धर्मपूर्वक अनुमोदन कर रहे हो॥13॥

'The mind of the Muni is accomplished in deed and word; Gotama, who is accomplished by his knowledge and conduct, let us rejoice religiously. 13.

"सम्पन्नं मुनिनो चित्तं, कम्मुना ब्यप्पथेन च।
विज्जाचरणसम्पन्नं, हन्द पस्साम गोतमं"॥1/9/14॥

"Sampannaṃ munino cittaṃ, kammunā byappathena ca;
Vijjācaraṇasampannaṃ, handa passāma gotamaṃ.॥14॥

"सम्पन्नं मुने: चित्तम्, कर्मणा व्यापृतेन च।
विद्याचरणसम्पन्नम्, हन्त! पश्याम *गौतमम्*" ॥14॥

हेमवत यक्ष– मुनि का चित्त कर्म और वचन से सुसम्पन्न है । विद्या और आचरण से युक्त हम गौतम का दर्शन करें॥14॥

'The mind of the Muni is accomplished in deed and word; Gotama, who is accomplished by his knowledge and conduct, let us go and see. 14.

"एणिजङ्घं किसं वीरं, अप्पाहारं अलोलुपं।
मुनिं वनस्मिं झायन्तं, एहि पस्साम गोतमं"॥1/9/15॥

"Eṇijaṅghaṃ kisaṃ vīraṃ, appāhāraṃ alolupaṃ;
Muniṃ vansimiṃ Jhāyantaṃ, ehi passāma gotamaṃ."॥15॥

"एणजङ्घं कृशं वीरम् अल्पाहारम् अलोलुपम् ।
मुनिं वने हि ध्यायन्तम्, एहि पश्याम *गौतमम्*"॥15॥

मृग के समान जंघे वाले, कृश, धीर, अल्पाहारी, चंचलता से रहित, वन में ध्यान करते हुए मुनि गौतम का आओ, हम दर्शन करें॥15॥

'Come, let us go and see Gotama, who has legs like an antelope who is thin, who is wise, living on little food, not covetous, the Muni who is meditating in the forest. .15.

"सीहं वेकचरं नागं, कामेसु अनपेक्खिनं।
उपसङ्कम्म पुच्छाम, मच्चुपासप्पमोचनं॥1/9/16॥

"Sīhaṃ vekacaraṃ nāgaṃ, kāmesu anapekkhinaṃ;
Upasaṅkamma pucchāma, maccupāsappamocanaṃ.॥16॥

"सिंहमिवैकचरं नागम्, कामेषु अनपेक्षिणम् ।
उपसंक्रम्य पृच्छाम, मृत्युपाशप्रमोचनम्॥16॥

जंगल में अकेले विचरण करने वाले सिंह और हस्तिराज की भाँति काम-भोगों की कामना न करने वाले, गौतम के पास जाकर मृत्यु-पाश से मुक्ति के उपाय को पूछते है॥16॥

'Having gone to him who is like a lion, a lonely wandering elephant, and who does not look for sens ual pleasures, let us ask about the means of deliverance from the snares of death.16.

"अक्खातारं पवत्तारं, सब्बधम्मान पारगुं।
बुद्धं वेरभयातीतं, मयं पुच्छाम गोतमं"॥1/9/17॥

"Akkhātāraṃ pavattāraṃ, sabbadhammāna pāraguṃ;
Buddhaṃ verabhayātītaṃ, mayaṃ pucchāma gotamaṃ".॥17॥

"आख्यातारं प्रवक्तारम्, सर्वधर्माणां पारगम् ।
बुद्धं वैरभयातीतम्, वयं पृच्छाम *गौतमम्"*॥17॥

धर्म को बतलाने वाले, उसका प्रवर्तन करने वाले, सब धर्मों में पारंगत, वैर और भय से रहित गौतम से हम पूछते हैं॥17॥

'Let us ask Gotama, the preacher, the expounder, who has penetrated all things, Buddha who has overcome hatred and fear.' .17.

"किस्मिं लोको समुप्पन्नो, (इति हेमवतो यक्खो) किस्मिं कुब्बति सन्थवं ।
किस्स लोको उपादानं, किस्मिं लोको विहञ्ञति"॥1/9/18॥

"Kismiṃ loko samuppanno, (iti hemavato yakkho) Kismiṃ kubbati santhavaṃ;
Kissa loko upādāya, kismiṃ loko vihaññati".॥18॥

"कस्मिन् लोकः समुत्पन्नः, (इति हेमवतो यक्षः) कस्मिन् करोति संस्तवम्।
कस्य लोक उपादानम्, कस्मिन् लोको विहन्यते"॥18॥

हेमवत यक्ष– लोक किस पर आधारित होकर उत्पन्न हुआ है ? वह किसके प्रति मेलजोल करता है? लोक किसका उपादान है ? लोक किससे पीड़ित होता है ?॥18॥

'In what has the world originated ? '—so said the Yakkha Hemavata,—' with what is the world intimate? by what is the world afflicted, after having grasped at what?'.18.

"छसु लोको समुप्पन्नो, (हेमवतेति भगवा) छसु कुब्बति सन्थवं।
छन्नमेव उपादाय, छसु लोको विहञ्ञति"॥1/9/19॥

"Chasu loko samuppanno, (hemavatāti bhagavā) Chasu kubbati santhavaṃ;
Channameva upādāya, chasu loko vihaññati".॥19॥

"षट्सु लोको समुत्पन्नः, (हेमवत इति भगवान्) षट्सु करोति संस्तवम्।
षट् एव उपादाय, षड्षु लोको विहन्यते"॥19॥

भगवान्– छः कारणों से लोक उत्पन्न हुआ है । छः से यह मेलजोल करता है। छः ही इसके उपादान हैं। छः में ही लोक पीड़ित होता है ॥19॥

'In six the world has originated, O Hemavata,'—so said Bhagavān,—' with six it is intimate, by six the world is afflicted, after having grasped at six.'. 19.

"कतमं तं उपादानं, (इति हेमवतो यक्खो) यत्थ लोको विहञ्ञति।
निय्यानं पुच्छितो ब्रूहि, कथं दुक्खा पमुच्चति"॥1/9/20॥

"Katamaṃ taṃ upādānaṃ, (iti hemavato yakkho) yattha loko vihaññati;
Niyyānaṃ pucchito brūhi, kathaṃ dukkhā pamuccati".॥20॥

"कतमं तदुपादानम्, (इति हेमवतः) यत्र लोको विहन्यते ।
निर्याणं पृच्छन्तं ब्रूहि, कथं दुःखात् प्रमुच्यते"॥20॥

हेमवत यक्ष– वह कौन-सा उपादान है जहाँ लोक पीड़ित है? हमारे प्रश्न का उत्तर दें कि छुटकारा क्या है ? दुःख से मुक्ति कैसे हो सकती है?॥20॥

Hemavata said: 'What is the grasping by which the world is affected? Asked about salvation, tell me how one is released from pain?' .20.

"पञ्च कामगुणा लोके, (इति भगवा) मनो छट्ठा पवेदिता।
एत्थ छन्दं विराजेत्वा, एवं दुक्खा पमुच्चति॥1/9/21॥

"Pañca kāmaguṇā loke, (iti bhagavā) manochaṭṭhā paveditā;
Ettha chandaṃ virājetvā, evaṃ dukkhā pamuccati.॥21॥

"पञ्च कामगुणाः लोके, (इति भगवान्) मनः षष्ठं प्रवेदितम्।
अत्र छन्दः विरज्य, एवं दुःखात् प्रमुच्यते॥21॥

भगवान्– लोक के पाँच काम-भोगों और छठाँ मन जो कहलाता है–इनमें आसक्ति (इच्छा) को छोड़कर दुःख से मुक्ति हो सकती है॥21॥

Bhagavān said: 'Five pleasures of sense are said to be in the world, with the pleasure of the mind as the sixth; having divested oneself of desire for these, one is thus released from pain.21.

"एतं लोकस्स निय्यानं, अक्खातं वो यथातथं।
एतं वो अहमक्खामि, एवं दुक्खा पमुच्चति"॥1/9/22॥

"Etaṃ lokassa niyyānaṃ, akkhātaṃ vo yathātathaṃ;
Etaṃ vo ahamakkhāmi, evaṃ dukkhā pamuccati".॥22॥

"एतत् लोकस्य निर्याणम्, आख्यातं वो यथातथम् ।
एतत् वोऽहमाख्यामि, एवं दुःखात् प्रमुच्यते"॥22॥

यही लोक का निस्तार है । मैंने तुम्हें इसे यथार्थ रूप में अविपरीत बतला दिया । मैं तुम्हें यही बतलाता हूँ, ऐसे ही दु:खमुक्ति मिलती है॥22॥

'This salvation of the world has been told to you truly, this I tell you: thus one is released from pain.'.22.

"को सूध तरति ओघं, (इति हेमवतो) कोध तरति अण्णवं।
अप्पतिट्ठे अनालम्बे, को गम्भीरे न सीदति"॥1/9/23॥

"Ko sūdha tarati oghaṃ, (eti Hemavato) kodha tarati aṇṇavaṃ;
Appatiṭṭhe anālambe, ko gambhīre na sīdati".॥23॥

"क इह तरति ओघम्, (इति हेमवत:), क इह तरति अर्णवम्।
अप्रतिष्ठे अनालम्बने, को गम्भीरे न सीदति"॥23॥

हेमवत यक्ष– यहाँ लोक रूपी बाढ़ को कौन पार करता है ? कौन भव-सागर को पार करता है? बिना सहारा और अवलम्बन के गहरे समुद्र में कौन नहीं डूबता?॥23॥

Hemavata said: 'Who in this world crosses the stream of existence? who in this world crosses the sea? who does not sink into the deep, where there is no footing and no support?' .23.

"सब्बदा सीलसम्पन्नो, पञ्ञवा सुसमाहितो।
अज्झत्त-चिन्ती सतिमा, ओघं तरति दुत्तरं॥1/9/24॥

"Sabbadā sīlasampanno, paññavā susamāhito;
Ajjhattacintī satimā, oghaṃ tarati duttaraṃ.॥24॥

"सर्वदा शीलसम्पन्न:, प्रज्ञावान् सुसमाहित: ।
अध्यात्मचिन्ती स्मृतिमान्, ओघं तरति दुस्तरम् ।1 24॥

भगवान्– सदा शील से युक्त, प्रज्ञावान, एकाग्रचित्त, आध्यात्म-चिन्तन में लीन, स्मृतिमान् दुस्तर बाढ़ को पार कर जाता है॥24॥

Bhagavān said: 'He who is always endowed with virtue, possessed of understanding, well comp osed, reflecting within himself, and thoughtful, crosses the stream that is difficult to cross.24.

"विरतो कामसञ्ञाय, सब्बसंयोजनातिगो।
नन्दीभवपरिक्खीणो, सो गम्भीरे न सीदति"॥1/9/25॥

"Virato kāmasaññāya, sabbasaṃyojanātigo;
Nandībhavaparikkhīṇo, so gambhīre na sīdati".॥25॥

"विरत: कामसंज्ञाया:, सर्वसंयोजनातिग:।
नन्दीभवपरिक्षीण:, स गम्भीरे न सीदति"॥25॥

जो काम-क्रोध के विचार से विरत है, सारे सांसारिक बन्धनों को पार कर लिया है जिससे भव-तृष्णा क्षीण हो गई, वह गहरे समुद्र में भी नहीं डूबता॥25॥

He who is disgusted with sensual pleasures, who has overcome all bonds and destroyed joy, such a one does not sink into the deep.' .25.

"गब्भीरपञ्ञं निपुणत्थदस्सिं (इति हेमवत:), अकिञ्चनं कामभवे असत्तं।
तं पस्सथ सब्बधि विप्पमुत्तं, दिब्बे पथे कममानं महेसिं॥1/9/26॥

"Gabbhīrapaññaṃ nipuṇatthadassiṃ (eti Hemavato), akiñcanaṃ kāmabhave asattaṃ;
Taṃ passatha sabbadhi vippamuttaṃ,dibbe pathe kamamānaṃ mahesiṃ.॥26॥

"गम्भीरप्रज्ञं निपुणार्थदर्शिनम् (इति हेमवत:), अकिंचनं कामभवेऽसक्तम् ।
तं पश्यथ सर्वथा विप्रमुक्तम्, दिव्ये पथि क्रममाणं महर्षिम्॥26॥

हेमवत यक्ष– गम्भीर प्रज्ञा से युक्त, निर्वाण-दर्शी, अकिंचन, काम-भव में अनासक्त, सभी प्रकार की वासनाओं से मुक्त, दिव्य-पथ पर चलने वाले इस महर्षि को देखो॥26॥

Hemavata said: `He who is endowed with a profound understanding, seeing what is subtile, poss essing nothing, not clinging to sensual pleasures, behold him who is in every respect liberated, the great isi, walking in the divine path. .26.

"अनोमनामं निपुणत्थदस्सिं, पञ्ञाददं कामालये असत्तं।
तं पस्सथ सब्बविदुं सुमेधं, अरिये पथे कममानं महेसिं॥1/9/27॥

"Anomanāmaṃ nipuṇatthadassiṃ, paññādadaṃ kāmālaye asattaṃ;
Taṃ passatha sabbaviduṃ sumedhaṃ,
ariye pathe kamamānaṃ mahesiṃ.॥27॥

"अनोमनाम निपुणार्थदर्शिनम्, प्रज्ञादायकं कामालयेऽसक्तम् ।
तं पश्यथ सर्वविदं सुमेधम्, आर्ये पथि क्रममाणं महर्षिम्॥27॥

श्रेष्ठ नाम वाले, निपुणार्थदर्शी, प्रज्ञा देने वाले, काम-भोगों में अनासक्त, सर्वज्ञ, प्रज्ञावान, आर्यपथ पर चलने वाले इस महर्षि को देखो॥27॥

`He who has got a great name, sees what is subtile, imparts understanding, and does not cling to the abode of sensual pleasures, behold him, the all- knowing, the wise, the great saint, walking in the noble path. 27.

"सुदिट्ठं वत नो अज्ज, सुप्पभातं सुहट्ठितं।
यं अद्दसाम सम्बुद्धं, ओघतिण्णमनासवं॥1/9/28॥

"Sudiṭṭhaṃ vata no ajja, suppabhātaṃ suhuṭṭhitaṃ;
Yaṃ addasāma sambuddhaṃ, oghatiṇṇamanāsavaṃ.॥28॥

"सुदृष्टं वत न: अद्य, सुप्रभातं हि सूत्थितम्।
यम् अपश्याम *सम्बुद्धम्*, ओघतीर्णमनास्रवम्॥28॥

हमने बड़ा अच्छा देखा, आज सुप्रभात का उदय हुआ है । जो कि हम संसार-सागर को पार किए आस्रव-रहित सम्यक् सम्बुद्ध का दर्शन कर रहे हैं॥28॥

`A good sight indeed has met us today, a good daybreak, a beautiful rising, we have seen the perfectly enlightened, who has crossed the stream, and is free from passion.28.

"इमे दससता यक्खा, इद्धिमन्तो यसस्सिनो।
सब्बे तं सरणं यन्ति, त्वं नो सत्था अनुत्तरो॥1/9/29॥

"Ime dasasatā yakkhā, iddhimanto yasassino;
Sabbe taṃ saraṇaṃ yanti, tvaṃ no satthā anuttaro.॥29॥

"'इमे दशशता: यक्षा:, ऋद्धिमन्त: यशस्विन:।
सर्वे त्वां शरणं यान्ति, त्वं न: शास्ताऽनुत्तर:॥29॥

ये एक हजार ऋद्धिमान् यशस्वी यक्ष आपकी शरण जाते हैं, आप हमारे श्रेष्ठ शास्ता (गुरु) हैं॥29॥

'These ten hundred Yakkhas, possessed of supernatural power and of fame, they all take refuge in thee, thou art our incomparable shasta. 29.

"ते मयं विचरिस्साम, गामा गामं नगा नगं।
नमस्समाना सम्बुद्धं, धम्मस्स च सुधम्मतं" ति॥1/9/30॥

"Te mayaṃ vicarissāma, gāmā gāmaṃ nagā nagaṃ;
Namassamānā sambuddhaṃ, dhammassa ca sudhammataṃ"ti.॥30॥

"ते वयं विचरिष्याम:, ग्रामात् ग्रामं नगात् नगम् ।
नमन्तो हि *सम्बुद्धम्,* धर्मस्य च सुधर्मताम्" इति॥30॥

हम लोग गाँव से गाँव और पहाड़ पर सम्बुद्ध और उनके सुदेशित धर्म को नमस्कार करते हुए विचरण करेंगे॥30॥

'We will roam about from village to village, from mountain to mountain, worshipping the perfectly enlightened and the perfection of the Dhamma.' 30.

हेमवतसुत्तं निट्ठितं
(Hemavatasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1, 10) आळवकसुत्तं (Āḷavakasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा आळवियं विहरति आळवकस्स यक्खस्स भवने। अथ खो आळवको यक्खो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं एतदवोच – ''निक्खम, समणा''ति। ''साधावुसो''ति भगवा निक्खमि। ''पविस, समणा''ति। ''साधावुसो''ति भगवा पाविसि। दुतियं पि खो...पे.... ततियं पि खो आळवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच – ''निक्खम, समणा''ति। ''साधावुसो''ति भगवा निक्खमि। ''पविस, समणा''ति। ''साधावुसो''ति भगवा पाविसि। चतुत्थं पि खो आळवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच – ''निक्खम, समणा''ति। ''न ख्वाहं तं , आवुसो, निक्खमिस्सामि। यं ते करणीयं, तं करोही''ति। ''पञ्हं तं, समण, पुच्छिस्सामि। सचे मे न ब्याकरिस्ससि, चित्तं वा ते खिपिस्सामि, हदयं वा ते फालेस्सामि, पादेसु वा गहेत्वा पारगङ्गाय खिपिस्सामी''ति। ''न

ख्वाहं तं, आवुसो, पस्सामि सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय यो मे चित्तं वा खिपेय्य हदयं वा फालेय्य पादेसु वा गहेत्वा पारगङ्गाय खिपेय्य। अपि च त्वं, आवुसो, पुच्छ यदाकङ्खसी''ति। अथ खो आळवको यक्खो भगवन्तं गाथाय अज्झभासि–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā āḷaviyaṃ viharati āḷavakassa yakkhassa bhavane. Atha kho āḷavako yakkho yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ etadavoca – "nikkhama, samaṇā"ti. "Sādhāvuso"ti bhagavā nikkhami. "Pavisa, samaṇā"ti. "Sādhāvuso"ti bhagavā pāvisi. Dutiyaṃ pi kho…pe… tatiyaṃ pi kho āḷavako yakkho bhagavantaṃ etadavoca – "nikkhama, samaṇā"ti. "Sādhāvuso"ti bhagavā nikkhami. "Pavisa, samaṇā"ti. "Sādhāvuso"ti bhagavā pāvisi. Catutthaṃ pi kho āḷavako yakkho bhagavantaṃ etadavoca – "nikkhama, samaṇā"ti. "Na khvāhaṃ taṃ , āvuso, nikkhamissāmi. Yaṃ te karaṇīyaṃ, taṃ karohī"ti. "Pañhaṃ taṃ, samaṇa, pucchissāmi. Sace me na byākarissasi, cittaṃ vā te khipissāmi, hadayaṃ vā te phālessāmi, pādesu vā gahetvā pāragaṅgāya khipissāmī"ti. "Na khvāhaṃ taṃ, āvuso, passāmi sadevake loke samārake sabrahmake sassamaṇabrāhmaṇiyā pajāya sadevamanussāya yo me cittaṃ vā khipeyya hadayaṃ vā phāleyya pādesu vā gahetvā pāragaṅgāya khipeyya. Api ca tvaṃ, āvuso, puccha yadākaṅkhasī"ti. Atha kho āḷavako yakkho bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् *आळव्यां* विहरति *आळवकस्य* यक्षस्य भवने। अथ खलु *आळवको* यक्षो यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवन्तम् एतदवोचत्– "निष्क्रम, श्रमण!" इति । "साधु, *आवुस* !" इति भगवान् निरक्रमीत् । "प्रविश, श्रमण!" इति। "साधु, *आवुस* !" इति भगवान् प्राविशत्। द्वितीयमपि खलु.....*पे0*....तृतीयमपि खलु आळवको यक्षः भगवन्तमेतदवोचत्– "निष्क्रम, श्रमण !" इति। "साधु, *आवुस* !" इति भगवान् निरक्रमीत् । "प्रविश, श्रमण!" इति। "साधु, *आवुस* !" इति भगवान् प्राविशत्। चतुर्थमपि आळवको यक्षो भगवन्तमेतदवोचत्– "निष्क्रम, श्रमण!" इति। "न खल्वहं तम्, *आवुस* ! निष्क्रमिष्यामि। यत् ते करणीयं तत् कुरु" इति । "प्रश्नं त्वाम्, श्रमण! प्रक्ष्यामि! सचेत् मां न व्याकरिष्यसि चित्तं वा ते क्षेप्स्यामि, हृदयं वा ते फालयिष्यामि, पादौ वा गृहीत्वा पारेगङ्गं क्षेप्स्यामि" इति। "न खल्वहं तं, *आवुस* ! पश्यामि सदेवके लोके समारके सब्रह्मणे सश्रमण-ब्राह्मण्यां प्रजायां सदेवमनुष्यायां यो मे चित्तं वा क्षिपेत्, हृदयं वा फालेत् पादौ वा गृहीत्वा पारेगङ्गं क्षिपेत्, अपि च त्वम्, *आवुस* ! पृच्छ यदा आकांक्षसि" इति। अथ खलु आळवको यक्षो भगवन्तं गाथयाध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् आलवी में आलवक यक्ष के भवन में विहार करते थे। तब आलवक यक्ष जहाँ भगवान थे, वहाँ गया । जाकर भगवान् से कहा– "श्रमण। निकल जाओ ।" "बहुत अच्छा आयुष्मन् !" कहकर भगवान् निकल गए । "श्रमण । प्रवेश करो ।" "बहुत अच्छा आयुष्मन्!" कहकर भगवान् भीतर गए । दूसरी बार भी आलवक यक्ष ने भगवान् से यह कहा – "श्रमण । निकल जाओ।" "बहुत अच्छा आयुष्मन् !" कहकर भगवान् निकल गए । "श्रमण । भीतर आओ ।" "बहुत अच्छा आयुष्मन्!" कहकर भगवान् भीतर गए । तीसरी बार भी आलवक यक्ष ने भगवान् से यह कहा –"श्रमण । निकल आओ ।" "बहुत अच्छा आयुष्मन् !" कहकर भगवान् निकल गए । "श्रमण । भीतर आओ ।" "बहुत अच्छा आयुष्मन् !"

कहकर भगवान् भीतर गए । चौथी बार भी आलवक यक्ष ने भगवान् से यह कहा– "श्रमण । निकल आओ ।" "आयुष्मन् !" मैं नहीं निकलूँगा । जो तुझे करना हो करो । "श्रमण ! मैं तुमसे प्रश्न पूछँगा, यदि तुम मेरे प्रश्न का उत्तर न दे सकोगे तो तेरे चित्त को विक्षिप्त कर दूँगा या तेरे हृदय को फाड़ डालूँगा अथवा पैरों से पकड़कर गंगा के उस पार फेंक दूँगा ।" "आयुष्मन् ! मैं देवता, मार और ब्रह्मा सहित श्रमण और ब्राह्मणों वाली प्रजा तथा देव-मनुष्यों वाले लोक में ऐसे किसी को नहीं देखता जो मेरे चित्त को विक्षिप्त कर दे या हृदय को फाड़ डाले अथवा पैरों से पकड़ कर गंगा के उस पार फेंक दे । फिर भी तुम आवुस ! जो कुछ चाहते हो पूछो ।" तब आलवक यक्ष ने भगवान् से गाथा में कहा –

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Ālava, in the realm of the Yakkha Ālavaka. Then the Yakkha Ālavaka went to the place where Bhagavān dwelt, and having gone there he said this to Bhagavān: 'Come out, O Sramaṇa.' 'Yes, O friend!' so saying Bhagavān came out. 'Enter, O Sramaṇa.' 'Yes, O friend I' so saying Bhagavān entered. A second time the Yakkha Ālavaka said this to Bhagavān: 'Come out, O Sramaṇa!' 'Yes, O friend!' so saying Bhagavān came out. 'Enter, O Sramaṇa!' 'Yes, O friend!' so saying Bhagavān entered. A third time the Yakkha Ālavaka said this to Bhagavān: 'Come out, O Sramaṇa!' 'Yes, O friend!' so saying Bhagavān came out. 'Enter, O Sramaṇa!' 'Yes, O friend!' so saying Bhagavān entered. A fourth time the Yakkha Ālavaka said this to Bhagavān: 'Come out, O Sramaṇa!' I shall not come out to thee, O friend, do what thou pleasest.' 'I shall ask thee a question, O Sramaṇa, if thou canst not answer it, I will either scatter thy thoughts or cleave thy heart, or take thee by thy feet and throw thee over to the other shore of the Gañga.' 'I do not see, O friend, any one in this world nor in the world of gods. Maras, Brahmans, amongst the beings comprising gods, men, Sramaṇas, and Brahm anas, who can either scatter my thoughts or cleave my heart, or take me by the feet and throw me over to the other shore of the Gañga; however, O friend, ask what thou pleasest.' Then the Yakkha Alavaka addressed Bhagavān in stanzas:

* आवुस ! को रीजडेविड्स ने मित्र के लिए सम्बोधित किया है।

"किंसूध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं, किंसु सुचिण्णं सुखमावहति।
किंसु हवे सादुतरं रसानं, कथं जीविं जीवितमाहु सेट्ठं"॥1/10/1॥

"Kiṃ sūdha vittaṃ purisassa seṭṭhaṃ, kiṃ su suciṇṇaṃ sukhamāvahāti;
Kiṃsu have sādutaraṃ rasānaṃ, kathaṃ jīviṃ jīvitamāhu seṭṭhaṃ". ॥1॥

"किंस्विदिह वित्तं पुरुषस्य श्रेष्ठम्, किंस्वित् सुचीर्णं सुखमावहति।
किस्वित् ह वै स्वादुतरं रसानाम्, कथं जीविनं जीवितमाहु: श्रेष्ठम्"॥1॥

"इस संसार में पुरुष का कौन-सा धन श्रेष्ठ है ? किसकी शुचिता (सुचरित) सुखदायक होती है ? रसों में कौन स्वादिष्टतर होता है ? कैसा जीवन श्रेष्ठ जीवन कहलाता है?॥1॥

'What in this world is the best property for a man? what, being well done, conveys happiness? what is indeed the sweetest of sweet things? how lived do they call life the best?'.1.

"सद्धीध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं, धम्मो सुचिण्णो* सुखमावहति।
सच्चं हवे सादुतरं रसानं, पञ्ञाजीविं जीवितमाहु सेट्ठं"॥1/10/2॥

"Saddhīdha vittaṃ purisassa seṭṭhaṃ, dhammo suciṇṇo sukhamāvahāti;
Saccaṃ have sādutaraṃ rasānaṃ, paññājīviṃ jīvitamāhu seṭṭhaṃ". ॥2॥

"श्रद्धा इह वित्तं पुरुषस्य श्रेष्ठम्, धर्मः सुचीर्णः सुखमावहति ।
सत्यं ह वै स्वादुतरं रसानाम्, प्रज्ञाजीविनं जीवितमाहु श्रेष्ठम्"॥2॥

भगवान्– इस संसार में पुरुष का श्रद्धा-धन ही श्रेष्ठ है। भली प्रकार अभ्यास किया गया धर्म सुखदायक होता है । सत्य सभी रसों में स्वादिष्टतर है । प्रज्ञाजीवी का जीवन श्रेष्ठ कहलाता है॥2॥

Bhagavān said: 'Faith is in this world the best property for a man; Dhamma, well observed, conveys happiness; truth indeed is the sweetest of things; and that life they call the best which is lived with understanding.' 2.

*सुकतो सुचरितो इति सुचिण्णो ।

"कथं सु तरति ओघं, कथं सु तरति अण्णवं।
कथं सु दुक्खमच्चेति, कथं सु परिसुज्झति"॥1/10/3॥

"Kathaṃ su tarati oghaṃ, kathaṃ su tarati aṇṇavaṃ;
Kathaṃ su dukkhamacceti, kathaṃ su parisujjhati".॥3॥

"कथं सु तरति ओघम्, कथं सु तरति अर्णवम् ।
कथं सु दुःखम् अत्येति, कथं सु परिशुध्यति"॥3॥

आलवक यक्ष– मनुष्य कैसे सांसारिक बाढ़ को पार कर जाता है? और कैसे भव-सागर को लाँघ जाता है ? कैसे दुःख को समाप्त कर देता है ? और कैसे परिशुद्ध होता है ?॥3॥

Ālavaka said: 'How does one cross the stream of existence? how does one cross the sea? how does one conquer pain? how is one purified?' 3.

"सद्धाय तरति ओघं, अप्पमादेन अण्णवं।
वीरियेन दुक्खमच्चेति, पञ्ञाय परिसुज्झति"॥1/10/4॥

"Saddhāya tarati oghaṃ, appamādena aṇṇavaṃ;
Vīriyena dukkhamacceti, paññāya parisujjhati".॥4॥

"श्रद्धया तरति ओघम्, अप्रमादेन अर्णवम् ।
वीर्येन दुःखमत्येति, प्रज्ञया परिशुध्यति"॥4॥

भगवान्– मनुष्य श्रद्धा से सांसारिक बाढ़ को पार कर जाता है । भव-सागर को अप्रमाद से लाँघ जाता है। पराक्रम से दुःख को समाप्त कर देता है और प्रज्ञा से परिशुद्ध हो जाता है॥4॥

Bhagavān said: 'By faith one crosses the stream, by zeal the sea, by exertion one conquers pain, by understanding one is purified.' 4.

"कथं सु लभते पञ्ञं, कथं सु विन्दते धनं।
कथं सु कित्तिं पप्पोति, कथं मित्तानि गन्थति।
अस्मा लोका परं लोकं, कथं पेच्च न सोचति"॥1/10/5॥

"Kathaṃ su labhate paññaṃ, kathaṃ su vindate dhanaṃ;
Kathaṃ su kittiṃ pappoti, kathaṃ mittāni ganthati;
Asmā lokā paraṃ lokaṃ, kathaṃ pecca na socati".॥5॥

"कथं सु लभते प्रज्ञाम्, कथं सु विन्दते धनम् ।
कथं सु कीर्तिं प्राप्नोति, कथं मित्राणि ग्रन्थति।
अस्माल्लोकात् परं लोकम्, कथं प्रेत्य न शोचति"॥5॥

आलवक यक्ष– मनुष्य कैसे प्रज्ञा प्राप्त करता है? कैसे धन पाता है? कैसे यश प्राप्त करता है? कैसे मित्रों को मिला कर रखता है? कैसे इस लोक से परलोक में जाने पर, मर कर शोक नहीं करता है?॥5॥

Ālavaka said: 'How does one obtain understanding? how does one acquire wealth? how does one obtain fame? how does one bind friends to himself? how does one not grieve passing away from this world to the other?' .5.

"सद्दहानो अरहतं, धम्मं निब्बानपतिया।
सुस्सूसं लभते पञ्ञं, अप्पमत्तो विचक्खणो"॥1/10/6॥

"Saddahāno arahataṃ, dhammaṃ nibbānapattiyā;
Sussūsaṃ labhate paññaṃ, appamatto vicakkhaṇo".॥6॥

"श्रद्दधान: अर्हन्तम्, धर्मं निर्वाणप्राप्तये।
शुश्रूषमाण: लभते प्रज्ञाम्, अप्रमत्तो विचक्षण:"॥6॥

भगवान्– निर्वाण की प्राप्ति के लिए अर्हतों के धर्म में श्रद्धा रखने वाला अप्रमादी और चतुर व्यक्ति श्रद्धापूर्वक धर्म सुनने से प्रज्ञा प्राप्त करता है॥6॥

Bhagavān said: 'He who believes in the Dhamma of the venerable ones as to the acquisition of Nibbana, will obtain understanding from his desire to hear, being zealous and discerning. 6.

"पतिरूपकारी धुरवा, उट्ठाता विन्दते धनं।
सच्चेन कित्तिं पप्पोति, ददं मित्तानि गन्थति॥1/10/7॥

"Patirūpakārī dhuravā, uṭṭhātā vindate dhanaṃ;
Saccena kittiṃ pappoti, dadaṃ mittāni ganthati.॥7॥

"प्रतिरूपकारी धुरवान्, उत्थाता विन्दते धनम् ।
सत्येन कीर्तिं प्राप्नोति, ददन् मित्राणि ग्रन्थति॥7॥

उचित कार्य को करने वाला, उद्योगी और परिश्रमी व्यक्ति धन पाता है । सत्य से यश प्राप्त करता है और देता हुआ व्यक्ति (देने वाला) मित्रों को मिला कर रखता है॥7॥

'He who does what is proper, who takes the yoke upon him and exerts himself, will acquire wealth, by truth he will obtain fame, and being charitable he will bind friends to himself. 7.

"यस्सेते चतुरो धम्मा, सद्धस्स घरमेसिनो।
सच्चं धम्मो धिति चागो, स वे पेच्च न सोचति॥1/10/8॥

"Yassete caturo dhammā, saddhassa gharamesino;
Saccaṃ dhammo dhiti cāgo, sa ve pecca na socati.॥8॥

"यस्येते चत्वारो धर्मा:, श्रद्धस्य गृहमेषिण: ।
सत्यं धर्म: धृति: त्याग:, स वै प्रेत्य न शोचति॥8॥

जिस श्रद्धालु गृहस्थ में सत्य, धर्म, धृति (धैर्य) और त्याग– ये चार बातें होती हैं, वह इस लोक से परलोक में जाकर, मर कर शोक नहीं करता॥8॥

'He who is faithful and leads the life of a householder, and possesses the following four Dhammas or virtues, truth, justice as dhamma, firmness, and liberality,—such a one indeed does not grieve when passing away. 8.

"इङ्घ अञ्ञेपि पुच्छस्सु, पुथू समणब्राह्मणे।
यदि सच्चा दमा चागा, खन्त्या भिय्योध विज्जति"॥1/10/9॥

"Iṅgha aññepi pucchassu, puthū samaṇabrāhmaṇe;
Yadi saccā damā cāgā, khantyā bhiyyodha vijjati".॥9॥

"इङ्घ* अन्यानपि पृच्छ, पृथून् श्रमणब्राह्मणान्।
यदि सत्यात् दमात् त्यागात्, क्षान्त्याः भूय इह विद्यते"॥9॥

जरा तुम अन्य श्रमण–ब्राह्मणों के पास जाकर पूछो कि सत्य, इन्द्रिय-दमन, त्याग और क्षान्ति (क्षमा) से बढ़कर कुछ और भी है ?॥9॥

'Pray, ask also other Sramaṇas and Brahmaṇas far and wide, whether there is found in this world anything greater than truth, self-restraint, liberality and forbearance.' 9.

* पालिनिपात, रीजडेविड्स ने इङ्घ को अङ्ग लिखा है।

"कथं नु दानि पुच्छेय्यं, पुथू समणब्राह्मणो।
योहं अज्ज पजानामि, यो अत्थो सम्परायिको॥1/10/10॥

"Kathaṃ nu dāni puccheyyaṃ, puthū samaṇabrāhmaṇe;
Yohaṃ ajja pajānāmi, yo attho samparāyiko.॥10॥

"कथं नु इदानीं पृच्छेयम्, पृथून् श्रमणब्राह्मणान्।
योऽहम् अद्य प्रजानामि, योऽर्थः साम्परायिकः॥10॥

आवलक यक्ष– अब मैं कैसे श्रमण-ब्राह्मणों से पूछूँ? आज मैं स्वयं पारलौकिक अर्थ की बात को जानता हूँ॥10॥

Alavaka: 'Why should I now ask Sramaṇas and Brahmaṇas far and wide? I now know what is my future good. 10.

"अत्थाय वत मे बुद्धो, वासायाळविमागमा।
योहं अज्ज पजानामि, यत्थ दिन्नं महप्फलं॥1/10/11॥

"Atthāya vata me buddho, vāsāyāḷavimāgamā;
Yohaṃ ajja pajānāmi, yattha dinnaṃ mahapphalaṃ.॥11॥

"अर्थाय वत मे बुद्धः, वासायालविमागमत्।
योऽहम् अद्य प्रजानामि, यत्र दत्तं महाफलम्॥11॥

अहो! मेरी भलाई के लिए बुद्ध आलवी में मेरे निवास–स्थान पर आए। आज मैं यह जानता हूँ कि जहाँ देने से महाफल होता है॥11॥

'For my good Buddha came to live at Alavi; now I know where a gift will bear great fruit.11.

"सो अहं विचरिस्सामि, गामा गामं पुरा पुरं।
नमस्समानो सम्बुद्धं, धम्मस्स च सुधम्मतं ति ॥1/10/12॥

"So ahaṃ vicarissāmi, gāmā gāmaṃ purā puraṃ;
Namassamāno sambuddhaṃ, dhammassa ca sudhammataṃ"ti.॥12॥

"सोऽहं विचरिष्यामि, ग्रामात् ग्रामं पुरात् पुरम्।
प्रणमन् *सम्बुद्धम्*, धर्मस्य च सुधर्मताम्" इति"॥12॥

अब मैं गाँव और नगर से नगर में सम्यक् सम्बुद्ध और उनके धर्म की सुधर्मता को नमस्कार करते हुए विचरण करूँगा॥12॥

'I will roam about from village to village, from town to town, worshipping the perfectly enlightened as Sambuddha and the perfection of the Dhamma.' 12.

एवं वुत्ते आळवको यक्खो भगवन्तं एतदवोच- "अभिक्कन्तं भो गोतम, अभिक्कन्तं भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम, निक्कुज्जितं वा उक्कुज्जेय्य, पटिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूल्हस्स वा मग्गा आचिक्खेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति एवमेव भोता गोतमेन अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो । एसाहं भवन्ता गोतमं सरणं गच्छामि, धम्मं च भिक्खुसङ्घं च । उपासकं मं भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतं'ति ।

"Evaṃ vutte Aḷavako yakkho bhagavantam etadavoca-"abhikkantaṃ, bho gotama, abhikkantaṃ, bho gotama, Seyyathāpi, bho gotama, nikkujjitaṃ vā ukkujjeyya, paṭicchannaṃ vā vivareyya, mūḷhassa vā maggaṃ ācikkheyya, andhakāre vā telapajjotaṃ dhāreyya, cakkhumanto rūpāni dakkhantīti; evamevaṃ bhotā gotamena anekapariyāyena dhammo pakāsito. Esāhaṃ bhavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammaṃ ca bhikkhusaṅghaṃ ca. upāsakaṃ maṃ bhaboṃ gotamo gotamo dhāretu ajjatagge pāṇpetaṃ saraṇaṃ gataṃ'ti.

एवम् उक्ते *आळवको* यक्षो भगवन्तम् एतदवोचत्– "अभिकान्तम्, भो *गौतम* ! अभिकान्तं भो *गौतम* ! तद्यथापि भो *गौतम* ! निकुब्जितं वा उत्कुब्जेत्, प्रतिच्छन्नं वा विवरेत्, मूढस्य वा मार्गमाख्येत्, अन्धकारे वा तैलप्रद्योतं धारयेत् चक्षुष्मान् रूपाणि दर्शयेत् इति, एवमेव भगवता *गौतमेन* अनेकपर्यायेन धर्मः प्रकाशितः। एषोऽहं भवन्तं *गौतमं* शरणं गच्छामि, धर्मञ्च भिक्षुसंघञ्च। उपासकं मां भवान् *गौतमः* धारयेत् अद्यतोऽग्रे प्राणोपेतं शरणं गच्छामि" इति ।

ऐसा कहने पर आलवक यक्ष ने भगवान् से यह कहा– "आश्चर्य है हे गौतम ! आश्चर्य है हे गौतम ! जैसे कि हे गौतम ! उल्टे हुए (बर्तन) को सीधा कर दे, ढँके हुए को उघाड़ दे, रास्ता भूले हुए को रास्ता बतला दे अथवा अन्धकार में तेल के प्रदीप को धारण करे, जिससे आँख वाले लोग चीजों को देख सकें, ऐसे ही आप गौतम द्वारा अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया गया । यह मैं आप गौतम की शरण में जाता हूँ, धर्म और भिक्षुसंघ की भी । मुझे आप गौतम आज से जीवन-पर्यन्त शरणागत उपासक धारण करें।

This having been said, Ālvaka Yakkha answered Bhagavāns as following: 'Excellent, O venerable Gotama! Excellent, O venerable Gotama! As one, O venerable Gotama, raises what has been overthrown, or reveals what has been hidden, or tells the way to him who has gone astray,

or holds out an oil lamp in the dark that those who have eyes may see the objects, even so by the venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illustrated; I take refuge in the venerable Gotama and in the Dhamma and in the Assembly of Bhikkhus. Let the venerable Gotama accept me as an upasaka who henceforth for all my life have taken refuge.'

आळवकसुत्तं निट्ठितं

(Āḷavakasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(1,11) विजयसुत्तं (Vijayasuttaṃ)

चरं वा यदि वा तिट्ठं, निसिन्नो उद वा सयं।

समिञ्जेति पसारेति, एसा कायस्स इञ्जना॥1/11/1॥

Caraṃ vā yadi vā tiṭṭhaṃ, nisinno uda vā sayaṃ;

Samiñjeti pasāreti, esā kāyassa iñjanā.॥1॥

चरन्* वा यदि वा तिष्ठन्*, निसीदन् उत वा शयमानम् ।

संकुचति प्रसारयति, एतत् कायस्य ऋञ्जनम्॥1॥

चलते या खड़े होते, बैठे या सोते जो सिकोड़ता या फैलाता है, यह काया (शरीर) की गति है॥1॥

If either walking or standing, sitting or lying, any one contracts or stretches this is the motion of the body.1.

*चरामि *तिष्ठामि

अट्ठिनहारुसंयुत्तो, तचमंसावलेपनो।

छविया कायो पटिच्छन्नो, यथाभूतं न दिस्सति॥1/11/2॥

Aṭṭhinahārusaṃyutto, tacamaṃsāvalepano;

Chaviyā kāyo paṭicchanno, yathābhūtaṃ na dissati.॥2॥

अस्थिस्नायुसंयुक्तः, त्वक्मांसावलेपनः।

छव्या कायः प्रतिच्छन्नः, यथाभूतं न दृश्यते॥2॥

हड्डी और नस से युक्त, चमड़े तथा मांस से लिम्पित, पतली चमड़ी (सुन्दर चर्म) से ढँके इस शरीर का यथार्थ स्वरूप नहीं दिखाई देता है॥2॥

The body which is put together with bones and sinews, plastered with membrane and flesh and covered with skin, is not seen as it really is .2.

अन्तपूरो उदरपूरो, यकनपेळस्स वत्थिनो।

हदयस्स पप्फासस्स, वक्कस्स पिहकस्स च॥1/11/3॥

सिङ्घाणिकाय खेळस्स, सेदस्स च मेदस्स च।

लोहितस्स लसिकाय, पित्तस्स च वसाय च॥1/11/4॥

Antapūro udarapūro, yakanapeḷassa vatthino;

Hadayassa papphāsassa, vakkassa pihakassa ca.॥3॥

Siṅghāṇikāya kheḷassa, sedassa ca medassa ca;
Lohitassa lasikāya, pittassa ca vasāya ca.॥4॥

अन्त:पूर उदरपूर:, यकृतपिण्डस्य वस्तिन:।
हृदयस्य फुफ्फुसस्य , वृक्कस्य प्लीहस:॥3॥
सिंघाणकस्य खेटस्य, स्वेदस्य च मेदस्य च
लोहितस्य लसिकाया:, पित्तस्य च वसायाश्च॥4॥

यह शरीर भीतर भरा हुआ है, पेट भरा हुआ है, यकृत, वस्ति (नाभि का अधोभाग), हृदय, फुफ्फुस, वृक्क, प्लीहा (तिल्ली), पोंटा, थूक, पसीना, चर्बी, लहू, लसिका, पित्त और चर्बी (वसा) इसमें भरे हैं॥3-4॥

It is filled with the intestines, the stomach, the lump of the liver, the abdomen, the heart, the lungs, the kidneys, the spleen. With mucus, saliva, perspiration, lymph, blood, the fluid that lubricates the joints, bile and fat. .3-4.

अथस्स नवहि सोतेहि, असुची सवति सब्बदा।
अक्खिम्हा अक्खिगूथको, कण्णम्हा कण्णगूथको॥1/11/5॥

Athassa navahi sotehi, asucī savati sabbadā;
Akkhimhā akkhigūthako, kaṇṇamhā kaṇṇagūthako.॥5॥

अथास्य नवभ्य: स्रोतेभ्य:, अशुचि: स्रवति सर्वदा।
अक्ष्णि: अक्षिगूथक:, कर्णात् कर्णगूथक:॥5॥

और फिर नव छेदों से सदा गन्दगी बहती रहती है, आँख से कीचड़, कान से कान का मल॥5॥

Then in nine streams impurity flows always from it; from the eye the eye-excrement, from the ear the ear-excrement, .5.

सिङ्घाणिका च नासतो, मुखेन वमति कदा।
पित्तं सेम्हं च वमति, कायम्हा सेदजल्लिका॥1/11/6॥

Siṅghāṇikā ca nāsato, mukhena vamatekadā;
Pittaṃ semhaṃ ca vamati, kāyamhā sedajallikā.॥6॥

सिंघाणञ्च नासात:, मुखतो वमति कदा ।
पित्तं श्लेष्मञ्च वमति, कायात् स्वेद-झल्लिका॥6॥

नाक से पोंटा, कभी-कभी मुख से वमन होता है, पित्त और कफ का वमन करता है, शरीर से पसीना और मल निकलते हैं॥6॥

Mucus from the nose, through the mouth it ejects at one time bile and it ejects phlegm, and from all the body come sweat and dirt. .6.

अथस्स सुसिरं सीसं, मत्थलुङ्गस्स पूरितं।
सुभतो॰ नं मञ्ञति, बालो अविज्जाय पुरक्खतो॥1/11/7॥

Athassa susiraṃ sīsaṃ, matthaluṅgassa pūritaṃ;
Subhato naṃ maññati, bālo avijjāya purakkhato.॥7॥

अथास्य सुशिरस्कं शीर्षम्, मस्तुलुङ्गेन पूरितम्।
शुभत एनं मन्यते बाल:, अविद्यया पुरस्कृत:॥7॥

इसका खाली सिर गुदा से भरा हुआ है, अविद्या के कारण मूर्ख उसमें सौंदर्य देखता है॥7॥

Then its hollow head is filled with the brain. A fool led by ignorance thinks it a fine thing.7.

*सुभं सुचिं इट्ठं

यदा च सो मतो सेति, उद्धुमातो विनीलको।
अपविद्धो सुसानस्मिं, अनपेक्खा होन्ति ञातयो॥1/11/8॥

Yadā ca so mato seti, uddhumāto vinīlako;
Apaviddho susānasmiṃ, anapekkhā honti ñātayo.॥8॥

यदा च स मृत: शेते, उद्ध्मात: विनीलक:।
अपविद्ध: श्मशाने, अनपेक्षा: भवन्ति ज्ञातय:॥8॥

जब वह मर कर सो जाता है, तब फूल जाता है, नीला पड़ जाता है, श्मशान में फेंक दिया जाता है और भाई-बन्धु उससे अपेक्षा-रहित हो जाते हैं॥8॥

And when it lies dead, swollen and livid, discarded in the cemetery, relatives do not care. 8.

खादन्ति नं सुवाना च, सिङ्गाला वका किमी।
काका गिज्झा च खादन्ति, ये चञ्ञे सन्ति पाणिनो॥1/11/9॥

Khādanti naṃ suvānā ca, siṅgālā vakā kimī;
Kākā gijjhā ca khādanti, ye caññe santi pāṇino.॥9॥

खादन्ति एनं श्वानश्च, शृगाला: वृका: कृमय:।
काका: गृद्धाश्च खादन्ति, ये चान्ये सन्ति प्राणिन:॥9॥

उसे कुत्ते, गीदड़, बगुले, कीड़े, कौवे, गृघ्र और अन्य पशु भी खाते हैं॥9॥

Dogs eat it and jackals, wolves and worms; crows and vultures eat it, and what other living creatures there are. 9.

सुत्वान बुद्धवचनं, भिक्खु पञ्ञाणवा इध।
सो खो नं परिजानाति, यथाभूतञ्हि पस्सति॥1/11/10॥

Sutvāna buddhavacanaṃ, bhikkhu paññāṇavā idha;
So kho naṃ parijānāti, yathābhūtañhi passati.॥10॥

श्रुत्वा बुद्धवचनम्, भिक्षु: प्रज्ञावान् इह ।
स खलु एनं परिजानाति, यथाभूतं हि पश्यति॥10॥

यहाँ प्रज्ञावान् भिक्षु बुद्ध-वचन को सुनकर, शरीर के स्वभाव को अच्छी तरह समझ लेता है और उसके यथार्थ स्वरूप को देखता है॥10॥

The Bhikkhu possessed of understanding in this world, having listened to Buddha's words, he certainly knows it thoroughly, for he sees it as it really is. 10.

यथा इदं तथा एतं, यथा एतं तथा इदं।

अज्झत्तं च बहिद्धा च, काये छन्दं विराजये॥1/11/11॥

Yathā idaṃ tathā etaṃ, yathā etaṃ tathā idaṃ;
Ajjhattaṃ ca bahiddhā ca, kāye chandaṃ virājaye.॥11॥

यथा इदं तथा एतत्, यथा एतत् तथा इदम्।

अध्यात्मञ्च बहिर्धा च, काये छन्द: विराजयेत्॥11॥

यह शरीर जैसा है वह भी वैसा है । जैसा यह है वैसा ही वह भी है। इसलिए अपने या दूसरे के शरीर के प्रति राग (इच्छा) को त्याग देना चाहिए॥11॥

As this living body is so is that, as this is so that will be; let one put away desire for the body, both as to its interior and as to its exterior. 11.

छन्दरागविरत्तो सो, भिक्खु पञ्ञाणवा इध।

अज्झगा अमतं सन्तिं, निब्बानं पदमच्चुतं॥1/11/12॥

Chandarāgaviratto so, bhikkhu paññāṇavā idha;
Ajjhagā amataṃ santiṃ, nibbānaṃ padamaccutaṃ.॥12॥

छन्दरागविरक्त: स:, भिक्षु: प्रज्ञानवान् इह ।

अध्यगमत् अमृतं सन्तिम्, निर्वाणं पदमच्युतम्॥12॥

जो प्रज्ञावान् भिक्षु छन्द और रागरहित हैं, वह अमृत, शान्ति, अच्युत-पद निर्वाण को प्राप्त कर लेता है॥12॥

Such a Bhikkhu who has turned away from desire and attachment, and is possessed of understanding in this world, has already gone to the immortal peace, the unchangeable state of Nibbana.12.

द्विपादकोयं असुचि, दुग्गन्धो परिहीरति ।

नानाकुणपपरिपूरो, विस्सवन्तो ततो ततो॥1/11/13॥

Dvipādakoyaṃ asuci, duggandho parihārati;
Nānākuṇapaparipūro, vissavanto tato tato.॥13॥

द्विपादकोऽयम् अशुचि:, दुर्गन्धं परिहरति।

नानाकुणपपरिपूर:, विस्रवन्त इत: तत:॥13॥

अपवित्र, नाना गन्दगियों से परिपूर्ण यह प्राणी दो पैरों वाला दुर्गन्ध को ढोता है और इधर-उधर उन गन्दगियों को चुवाता फिरता है॥13॥

This body with two feet is cherished alt hough impure, ill-smelling, filled with various kinds of stench, and trickling here and there. 13.

एतादिसेन कायेन, यो मञ्ञे उण्णमेतवे ।

परं वा अवजानेय्य, किमञ्ञत्र अदस्सना ति॥1/11/14॥

Etādisena kāyena, yo maññe uṇṇametave;
Paraṃ vā avajāneyya, kimaññatra adassanā ti.॥14॥

एतादृशा कायेन, यो मन्ये उन्नमयितुम् ।
परं वा अवजानीयात्, किमन्यत्र अदर्शनादिति॥14॥

इसप्रकार के शरीर से जो घमण्ड करता है अथवा दूसरे का अनादर करता है तो यह किस कारण हो सकता है?॥1॥

He who with such a body thinks to fromote himself or despises others—what else is this but blindness?14.

विजयसुत्तं निट्ठितं।
(Vijayasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(1, 12) मुनिसुत्तं (Munisuttaṃ)

सन्थवातो भयं जातं, निकेता जायते रजो।
अनिकेतमसन्थवं, एतं वे मुनिदस्सनं॥1/12/1॥

Santhavāto bhayaṃ jātaṃ, niketā jāyate rajo;
Aniketamasanthavaṃ, etaṃ ve munidassanaṃ.॥1॥

संस्तवतो भयं जातम्, निकेतात् जायते रज:।
अनिकेतमसंस्तवम्, एतत् वै मुनिदर्शनम्॥1॥

मेल-जोल से भय उत्पन्न होता है और घर-गृहस्थी से रज (राग, द्वेष और मोह) उत्पन्न होता है, इसलिए मेलजोल न करना और घर-गृहस्थी में न रहना उत्तम है–ऐसा बुद्ध मुनि ने देखा है॥1॥

From Introduction arises fear, from house- life arises defilement; the houseless state, freedom from acquaintanceship—this is indeed the view of a Muni. 1.

यो जातमुच्छिज्ज न रोपयेय्य, जायन्तमस्स नानुप्पवेच्छे।
तमाहु एकं मुनिनं चरन्तं, अद्दक्खि सो सन्तिपदं महेसि॥1/12/2॥

Yo jātamucchijja na ropayeyya, jāyantamassa nānuppavecche;
Tamāhu ekaṃ muninaṃ carantaṃ, addakkhi so santipadaṃ mahesi.॥2॥

यो जातमुच्छिद्य न रोपयेत्, जनन्तमस्य नान्वपेक्षते।
तमाहु एकं मुनिं चरन्तम्, अद्राक्षीत् स सन्तिपदं महर्षि:॥2॥

जो उत्पन्न हुए पाप को काटकर फिर न लगाये और उसके उत्पन्न होने पर बढ़ने न दे, उसे एकान्तचारी मुनि कहते हैं, इस महर्षि ने शान्ति-पद (निर्वाण) को देख लिया है॥2॥

Whosoever, after having uprooted his sin that has arisen, would not replant it and would not allow it to grow up again, him the solitarily wandering they call a Muni; such a great saint has seen the state of peace. 2.

सङ्खाय वत्थूनि पमाय बीजं, सिनेहमस्स नानुप्पवेच्छे।
स वे मुनी जातिखयन्तदस्सी, तक्कं पहाय न उपेति सङ्खं॥1/12/3॥

Saṅkhāya vatthūni pamāya bījaṃ, sinehamassa nānuppavecche;
Sa ve munī jātikhayantadassī, takkaṃ pahāya na upeti saṅkhaṃ.॥3॥

संख्याय वस्तूनि प्रमाय बीजम्, स्नेहमस्य नान्वपेक्षते।
स वै मुनिः जातिक्षयान्तदर्शी, तर्कमपहाय न उपैति संख्यम्॥3॥

वस्तुस्थिति को भलीप्रकार जानकर, संसार में उत्पन्न बीज (तृष्णा) को नष्ट कर, उसके स्नेह को नहीं बढ़ाता है, जो तर्क को त्याग कर अलौकिक हो गया है, जन्म के क्षय (निर्वाण) का दर्शी वही मुनि कहलाता है॥3॥

Having considered the causes of sin, and having discerned the seed, let him not allow any desire for it to arise again; such a Muni who sees the end of birth and Nibbāna , after leaving reasoning behind, does not enter the number of living beings. 3.

अञ्ञाय सब्बानि निवेसनानि, अनिकामयं अञ्ञतरं पि तेसं।
स वे मुनी वीतगेधो अगिद्धो, नायूहती पारगतो हि होति॥1/12/4॥

Aññāya sabbāni nivesanāni, anikāmayaṃ aññataraṃ pi tesaṃ;
Sa ve munī vītagedho agiddho, nāyūhatī pāragato hi hoti.॥4॥

आज्ञाय सर्वाणि निवेशनानि, अनिकामयन् अन्यतरमपि तेषाम्।
स वै मुनिः वीतगृध्रोऽगृद्धः, न ऊहते पारंगतो हि भवति॥4॥

सभी काम-लोक आदि को जानकर, उनमें से किसी में भी रहने की कामना न करता हुआ राग-रहित, आसक्ति-रहित, वही मुनि है, वह पुण्य-पाप का संचय नहीं करता है, वह तो पारंगत हो जाता है॥4॥

He who has penetrated all the resting-places of the mind and does not wish for any of them,—such a Muni indeed, free from covetousness and free from greediness, strives no longer, for he has reached the other shore. 4.

सब्बाभिभुं सब्बविदुं सुमेधं, सब्बेसु धम्मेसु अनूपलित्तं।
सब्बञ्जहं तण्हक्खये विमुत्तं, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/5॥

Sabbābhibhuṃ sabbaviduṃ sumedhaṃ, sabbesu dhammesu anūpalittaṃ;
Sabbañjahaṃ taṇhakkhaye vimuttaṃ, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥5॥

सर्वाभिभुवं सर्वविदं सुमेधम्, सर्वेषु धर्मेषु अनुपलिप्तम् ।
सर्वजहं तृष्णाक्षये विमुक्तम्, तं वापि धीराः मुनिः वेदयन्ति॥5॥

जिसने सबको जीत लिया है, सब कुछ जान लिया है, जो प्रज्ञावान् है, जो सभी धर्मों (अवस्थाओं) में लिप्त होने वाला नहीं है, जो सर्वत्यागी है, तृष्णा के क्षय से विमुक्त हो गया है उसे भी धैर्यवान् मुनि कहते है॥5॥

The man who has won everything, who knows everything, who is possessed of a good understanding, undefiled in all things, abandoning everything, liberated in the destruction of desire, him the wise style a Muni. 5.

पञ्ञाबलं सीलवतूपपन्नं, समाहितं झानरतं सतीमं।
सङ्गा पमुत्तं अखिलं अनासवं, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/6॥

Paññābalaṃ sīlavatūpapannaṃ, samāhitaṃ jhānarataṃ satīmaṃ;
Saṅgā pamuttaṃ akhilaṃ anāsavaṃ, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥6॥

प्रज्ञाबलं शीलव्रतोपपन्नम्, समाहितं ध्यानरतं स्मृतिमन्तम्।
सङ्गात् प्रमुक्तमखिलमनास्रवम्, तं वापि धीरा: मुनि: वेदयन्ति॥6॥

प्रज्ञा और शील-व्रत से युक्त, एकाग्रचित्त, ध्यान में लीन, स्मृतिमान्, बन्धन से मुक्त और सम्पूर्ण रूप से जो आस्रव रहित है, उसे भी धैर्यवान् लोग मुनि कहते हैं॥6॥

The man who has the strength of understanding, is endowed with virtue and holy works, is composed, delights in meditation, is thoughtful, free from ties, free from harshness and free from passion, him the wise style a Muni. 6.

एकं चरन्तं मुनिमप्पमत्तं, निन्दापसंसासु अवेधमानं।
सीहंव सद्देसु असन्तसन्तं, वातंव जालम्हि असज्जमानं।
पद्मंव तोयेन अलिप्पमानं, नेतारमञ्ञेसमनञ्ञनेय्यं।
तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/7॥

Ekaṃ carantaṃ munimappamattaṃ, nindāpasaṃsāsu avedhamānaṃ;
Sīhaṃva saddesu asantasantaṃ, vātaṃva jālamhi asajjamānaṃ;
Padmaṃva toyena alippamānaṃ, netāramaññesamanaññaneyyaṃ;
Taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥7॥

एकं चरन्तं मुनिमप्रमत्तम्, निन्दा-प्रशंसयो: अवेधमानम्।
सिंहमिव शब्देषु असन्त्रसन्तम्, वातमिव जालेऽसजन्त: ।
पद्ममिव तोयेनालिप्यमानम्, नेतारमन्येषामनन्यनेयम्।
तं वापि धीरा: मुनि: वेदयन्ति॥7॥

अकेले विचरण करने वाले अप्रमादी, निन्दा और प्रशंसा से विचलित न होने वाले, सिंहवत् किसी भी प्रकार के शब्दों से न डरने वाले, जाल में हवा के न फँसने के समान, कमल के जल से न लिप्त होने की भाँति, दूसरों को मार्ग दिखाने वाले और दूसरों का अनुयायी न बनने वाले को भी ज्ञानी लोग मुनि कहते हैं॥7॥

The Muni that wanders solitarily, the zealous, that is not shaken by blame and praise, like a lion not trembling at noises, like the wind not caught in a net, like a lotus not soiled by water, leading others, not led by others, him the wise style a Muni. 7.

यो ओगहणे थम्भोरिवाभिजायति, यस्मिं परे वाचापरियन्तं वदन्ति।
तं वीतरागं सुसमाहितिन्द्रियं, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/8॥

Yo ogahaṇe thambhorivābhijāyati, yasmiṃ pare vācāpariyantaṃ vadanti;
Taṃ vītarāgaṃ susamāhitindriyaṃ, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥8॥

योऽवगाहने स्तम्भ इवाभिजायते, यस्मिन् परे वाचमपर्यन्तं वदन्ति।
तं वीतरागं सुसमाहितेन्द्रियम्, तं वापि धीरा: मुनि: वेदयन्ति॥8॥

जो स्नान करने के घाट पर खम्भे की भाँति स्थिर रहता है, उसके ऊपर दूसरों की बातों का असर नहीं पड़ता, उस वीतराग और संयत इन्द्रिय वाले को भी धैर्यवान् मुनि कहते हैं॥8॥।

Whosoever becomes firm as the post in a bathing-place, in whom others acknowledge propriety of speech, who is free from passion and endowed with well-composed senses, such a one the wise style a Muni. 8.

यो वे ठितत्तो तसरं व उज्जु, जिगुच्छति कम्मेहि पापकेहि।
वीमंसमानो विसमं समं च, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/9॥

Yo ve ṭhitatto tasaraṃ va ujju, jigucchati kammehi pāpakehi;
Vīmaṃsamāno visamaṃ samaṃ ca, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥9॥

यो वै स्थेष्ठ: त्रसररिव ऋजु:, जुगुप्सते कर्मभ्य: पापकेभ्य:।
विमर्शमाण: विषमं समञ्च, तं वापि धीरा: मुनि: वेदयन्ति॥9॥

जो ढरकी (तसर-सूत लपेटने का औजार) की भाँति ऋजु और स्थिर चित्त वाला है, जो पाप-कर्मो से घृणा करता है और जो अच्छे-बुरे कर्मों का ध्यान रखता है, उसे भी धैर्यवान् मुनि कहते हैं॥9॥

Whosoever is firm, like a straight shuttle and is hopeless with evil actions, reflecting on what is just and unjust, him the wise style a Muni. 9.

यो सञ्ञतत्तो न करोति पापं, दहरो च मज्झो च मुनि यतत्तो।
अरोसनेय्यो न सो रोसेति कञ्चि, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/10॥

Yo saññatatto na karoti pāpaṃ, daharo majjhimo ca muni yatatto;
Arosaneyyo na so roseti kañci, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥10॥

य: संयतितो न करोति पापम्, दहरश्च मध्यश्च मुनि: यतित:।
अरोषणीयो न स रोषयति कञ्चित्, तं वापि धीरा: मुनि: वेदयन्ति॥10॥

जो संयमी है, पाप नहीं करता, मुनि बचपन और मध्य आयु में संयमी रहता है, जो दूसरे किसी द्वारा क्रोधित नहीं किया जा सकता और जो दूसरों को क्रोधित भी नहीं करता है, उसे भी ज्ञानी लोग मुनि कहते हैं॥10॥

Whosoever is self-restrained and does not do evil, is a young or middle-aged Muni, self-subdued, one that should not be excite he does not excite any, him the wise style a Muni.10.

यदग्गतो मज्झतो सेसतो वा, पिण्डं लभेथ परदत्तूपजीवी।
नालं थुतुं नो पि निपच्चवादी, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/11॥

Yadaggato majjhato sesato vā, piṇḍaṃ labhetha paradattūpajīvī;
Nālaṃ thutuṃ no pi nipaccavādī, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥11॥

यदग्रतो मध्यत: शेषतो वा, पिण्डं लभेत् परदत्तोपजीवी।
न अलं स्तोतुं नापि निपत्यवादी, तं वापि धीरा: मुनि: वेदयन्ति॥11॥

जो अग्रभाग, मध्यभाग या अवशेष भाग से भिक्षा लेता है, जिसकी जीविका दूसरों के दिये पर निर्भर है, जो दायक की प्रशंसा और निन्दा नहीं करता, उसे भी धैर्यवान् मुनि कहते हैं॥11॥

Whosoever, living upon what is given by others, receives a lump of rice from the top, from the middle or from the rest of the vessel, and does not praise the giver nor speak harsh words, him the wise style a Muni. 11.

मुनिं चरन्तं विरतं मेथुनस्मा, यो योब्बने नोपनिबज्झते क्वचि।
मदप्पमादा विरतं विप्पमुत्तं, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/12॥

Muniṃ carantaṃ virataṃ methunasmā, yo yobbane nopanibajjhate kvaci;
Madappamādā viratañ vippamuttaṃ, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥12॥

मुनिं चरन्तं विरतं मैथुनात्, यो यौवने नोपनिबध्यते क्वचित्।
मदप्रमादात् विरतं विप्रमुक्तम्, तं वापि धीराः मुनिः वेदयन्ति॥12॥

जो मुनि मैथुन से विरत होकर अकेले विचरण करता है, जो यौवन में भी कहीं आसक्त नहीं होता, जो मद के प्रमाद से विरत तथा मुक्त है, उसे भी ज्ञानी लोग मुनि कहते हैं॥12॥

The Muni that wanders about abstaining from sexual pleasure, who in his youth is not fettered in any case, is abstaining from the insanity of pride, liberated, him the wise style a Muni. 12.

अञ्ञाय लोकं परमत्थदस्सिं, ओघं समुद्दं अतितरिय तादिं।
तं छिन्नगन्थं असितं अनासवं, तं वा पि धीरा मुनि वेदयन्ति॥1/12/13॥

Aññāya lokaṃ paramatthadassiṃ, oghaṃ samuddaṃ atitariya tādiṃ;
Taṃ chinnagaṇthaṃ asitaṃ anāsavaṃ, taṃ vā pi dhīrā muni vedayanti.॥13॥

आज्ञाय लोकं परमार्थदर्शिनम्, ओघं समुद्रमतितीर्य *तादिम्*।
तं छिन्नग्रन्थमसितमनास्रवम्, तं वापि धीराः मुनिः वेदयन्ति॥13॥

जिसने अपने ज्ञान से लोक को जान लिया है, जो परमार्थदर्शी है, जो सांसारिक बाढ़ और भव-सागर को पार कर स्थिर हो गया है, उस बन्धनहीन, अनासक्त और अनास्रव को धैर्यवान् मुनि कहते हैं॥13॥

The man who, having penetrated the world, sees the highest truth, such a one, after crossing the stream and sea of existence, who has cut off all ties, is independent, free from passion, him indeed the wise style a Muni. 13.

असमा उभो दूरविहारवुत्तिनो, गिही दारपोसी अममो च सुब्बतो।
परपाणरोधाय गिही असञ्ञतो, निच्चं मुनी रक्खति पाणिने यतो॥1/12/14 ॥

Asamā ubho dūravihāravuttino, gihī dāraposī amamo ca subbato;
Parapāṇarodhāya gihī asaññato, niccaṃ munī rakkhati pāṇine yato.॥14॥

असमौ उभौ दूरविहारवृत्तिकौ, गृही दारपोषी अममश्च सुव्रतः।
परप्राणरोधाय गृही असंयतः, नित्यं मुनिः रक्षति प्राणिनः यतः॥14॥

स्त्री के पालन-पोषण में लीन गृहस्थ और व्रतधारी भिक्षु में कोई ममता नहीं, दोनों ममता रहित और एक दूसरे से बहुत दूर रहने के स्वभाव वाले है, क्योंकि गृहस्थ असंयमी और दूसरों की हिंसा में रत होता है, जबकि मुनि नित्य संयम की रक्षा करता है॥14॥

Two whose mode of life and occupation are quite different, are not equal: a householder maint aining a wife, and an unselfish virtuous man. A householder is intent upon the destruction of other living creatures, being unrestrained; but a Muni always protects living creatures, being restrained.14.

सिखी यथा नीलगीवो विहङ्गमो, हंसस्स नोपेति जवं कुदाचनं।
एवं गिही नानुकरोति भिक्खुनो, मुनिनो विवित्तस्स वनम्हि झायतो ति॥1/12/15॥

Sikhī yathā nīlagīvo vihaṅgamo, haṃsassa nopeti javaṃ kudācanaṃ;
Evaṃ gihī nānukaroti bhikkhuno, munino vivittassa vanamhi jhāyato ti.॥15॥

शिखी यथा नीलग्रीवो विहङ्गम:, हंसस्य नोपैति जवं कदाचनम्।
एवं गृही नानुकरोति भिक्षुम्, मुनिं विविक्तं वने ध्यायन्तमिति॥15॥

जैसे आकाशचारी नीले गर्दन वाला मोर कभी भी उड़ान में हंस की बराबरी नहीं कर सकता, वैसे ही गृहस्थ उस भिक्षु की बराबरी नहीं कर सकता, जो मुनि एकान्त वन में रहकर ध्यानलीन रहता है॥15॥

As the crested bird with the blue neck peacock never attains the swiftness of the swan, even so a householder does not equal a Bhikkhu, a secluded Muni meditating in the forest.15.

मुनिसुत्तं निट्ठितं।
(Munisuttaṃ niṭṭhitaṃ)

तस्सुद्दानं- **उरगो धनियो चेव, विसाणं च तथा कसि ।**
चुन्दो पराभवो चेव, वसलो मेत्तभावना॥
सातागिरो आळवको, विजयो च तथा मुनि ।
द्वादसेतानि सुत्तानि, उरगवग्गो ति वुच्चती ति॥

Tassuddānaṃ- Urago dhaniyo ceva, visāṇañca tathā kasi;
Cundo parābhavo ceva, vasalo mettabhāvanā.
Sātāgiro āḷavako, vijayo ca tathā muni;
Dvādasetāni suttāni, uragavaggoti vuccatīti.

तस्योद्दानम्- *उरगो धनिय:* चैव, *विसाणं* च तथा *कसि:* ।
चुन्द: पराभव: चैव, *वसलो मेत्तभावना*॥
सातागिर आळवक:, *विजयश्च* तथा *मुनि:* ।
द्वादशैतानि सुत्तानि, *उरगवर्ग* इति उच्यते इति॥

उद्दान=सुत्त-समुदाय– उरग, धनिय, खड्गविषाण, कसिभारद्वाज, चुन्द, पराभव, वसल, मैत्रीभावना, हैमवत (सातागिर) आळवक, विजय और मुनि- ये द्वादश सुत्त वर्णित हैं । इन 12 सुत्तो का समूह उरगवग्ग नाम से प्रसिद्ध है।

Group of Suttas-Uraga, Dhaniya, Khaggavisāṇ, Ksibhāradvāga, Cunda, Parābhava, Vasal, Metta, Hemvata (Sātāgir), Ālavak, Vijaya and Muni- these twelve suttas are described. The group of these twelve suttas is famous with the name of Uragavagga.

उरगवग्गो निट्ठितो
(Uragavaggo niṭṭhito)
***

2. चूळवग्गो (Cūḷavaggo)

(2.1) रतनसुत्तं (Ratanasuttaṃ)

यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे।
सब्बेव भूता सुमना भवन्तु, अथोपि सक्कच्च सुणन्तु भासितं॥2/1/1॥

Yānīdha bhūtāni samāgatāni, bhummāni vā yāni va antalikkhe;
Sabbeva bhūtā sumanā bhavantu, athopi sakkacca suṇantu bhāsitaṃ.॥1॥

यानीह भूतानि समागतानि, भूम्यां वा यानि च अन्तरिक्षे ।
सर्वे एव भूता: सुमना भवन्तु, अथापि सत्कृत्य शृण्वन्तु भाषितम्॥1॥

इस पृथ्वी पर या आकाश में जितने भी प्राणी उपस्थित हैं, वे सभी प्रसन्न हों और हमारे इस कथन को आदरपूर्वक सुनें॥1॥

'Whatever spirits have come together here, either belonging to the earth or living in the air, let all spirits be happy and then listen attentively to what is said.1.

तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे, मेत्तं करोथ मानुसिया पजाय।
दिवा च रत्तो च हरन्ति ये बलिं, तस्मा हि ने रक्खथ अप्पमत्ता॥2/1/2॥

Tasmā hi bhūtā nisāmetha sabbe, mettaṃ karotha mānusiyā pajāya;
Divā ca ratto ca haranti ye baliṃ, tasmā hi ne rakkhatha appamattā.॥2॥

तस्माद्धि भूता: निशामयेयु: सर्वे, मैत्रीं कुरुत मानुष्यां प्रजायाम् ।
दिवा च रात्रौ च हरन्ति ये बलिम्, तस्माद्धि तान् रक्षेत् अप्रमत्त:॥2॥

इसलिए सभी प्राणी सुनें । मनुष्य मात्र के प्रति मैत्री करें, वे दिन-रात बलि को दूर करते हैं, इसलिए अप्रमत्त होकर उनकी रक्षा करें॥2॥

Therefore, O spirits, do you all pay attention, show kindness to the human race who both day and night bring their offerings; therefore protect them strenuously.2.

यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं* वा, सग्गेसु वा यं रतनं पणीतं।
न नो समं अत्थि तथागतेन, इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/3॥

Yaṃ kiñci vittaṃ idha vā huraṃ vā, saggesu vā yaṃ ratanaṃ paṇītaṃ;
Na no samaṃ atthi tathāgatena, idampi buddhe ratanaṃ paṇītaṃ;
Etena saccena suvatthi hotu.॥3॥

यत् किञ्चित् वित्तमिह वापरं वा, स्वर्गेषु वा यत् रत्नं प्रणीतम्।
न नो सममस्ति तथागतेन, इदमपि बुद्धे रत्नं प्रणीतम्।
एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥3॥

इस लोक या परलोक में जो भी धन है अथवा स्वर्गों में जो उत्तम रत्न हैं, उनमें से कोई भी बुद्ध के समान (श्रेष्ठ) नहीं है; यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है– इस सत्य वचन से कल्याण हो॥3॥

Whatever wealth there be here or in the other world, or whatever excellent jewel in the heavens, it is certainly not equal to Tathagata. This excellent jewel is found in Buddha, by this truth may there be salvation.3.

* हुरं-अवसेसलोकं, अपर लोक

खयं विरागं अमतं पणीतं, यदज्झगा सक्यमुनी समाहितो।
न तेन धम्मेन समत्थि किञ्चि, इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/4॥

Khayaṃ virāgaṃ amataṃ paṇītaṃ, yadajjhagā sakyamunī samāhito;
Na tena dhammena samatthi kiñci, idampi dhamme ratanaṃ paṇītaṃ;
Etena saccena suvatthi hotu.॥4॥

क्षयं विरागममृतं प्रणीतम्, अध्यगमत् शाक्यमुनिः समाहितः।
न तेन धर्मेण सममस्ति किञ्चित्, इदमपि धर्मे रत्नं प्रणीतम्।
एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥4॥

जिस उत्तम अमृत, विराग पद और सभी दोषों के नाशक निर्वाण को एकाग्र होकर शाक्य मुनि ने प्राप्त किया, उस धर्म के समान दूसरा कुछ श्रेष्ठ नहीं है। यह भी धर्म में उत्तम रत्न है–इस सत्यवचन से कल्याण हो॥4॥

The destruction of passion, the freedom from passion, the excellent immortality which Sakyamuni attained being composed,— there is nothing equal to that Dhamma. This excellent jewel is found in the Dhamma, by this truth may there be salvaion.4.

यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं, समाधिमानन्तरिकञ्ञमाहु।
समाधिना तेन समो न विज्जति, इदम्पि धम्मे रतनं पणीतं।
एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/5॥

Yaṃ buddhaseṭṭho parivaṇṇayī suciṃ, samādhimānantarikaññamāhu;
Samādhinā tena samo na vijjati, idampi dhamme ratanaṃ paṇītaṃ;
Etena saccena suvatthi hotu.॥5॥

यं बुद्धश्रेष्ठः पर्यवर्णयत् शुचिम्, समाधिमानन्तरिकं यमाहुः ।
समाधिना तेन समो न विद्यते, इदमपि धर्मे रत्नं प्रणीतम्।
एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥5॥

परम श्रेष्ठ भगवान् बुद्ध ने जिस पवित्र समाधि को तत्काल फलदायी बतलाया, उस समाधि के समान दूसरा कुछ श्रेष्ठ नहीं है । यह भी धर्म में उत्तम रत्न है–इस सत्यवचन से कल्याण हो॥5॥

The purity which the best of Buddhas praised, the meditation which they call uninterrupted, there is no meditation like this. This excellent jewel is found in the Dhamma, by this truth may there be salvation.5.

ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था, चत्तारि एतानि युगानि होन्ति।
ते दक्खिणेय्या सुगतस्स सावका, एतेसु दिन्नानि महप्फलानि।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/6॥

Ye puggalā aṭṭha sataṃ pasatthā, cattāri etāni yugāni honti;
Te dakkhiṇeyyā sugatassa sāvakā, etesu dinnāni mahapphalāni;

Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥6॥

ये पुद्गला अष्ट सद्भि: प्रशस्ता:, चत्वार एते युग्मा: भवन्ति ।

ते दाक्षिणेया: सुगतस्य श्रावका:, एभ्य: दत्तानि महाफलानि।

इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥6॥

जो सज्जनों द्वारा प्रशंसित आठ प्रकार के व्यक्ति हैं, इनके चार जोड़े होते हैं, वे बुद्ध के शिष्य दक्षिणा के योग्य हैं, इन्हें दान देने से महाफल होता है। यह भी संघ में उत्तम रत्न है–इस सत्यवचन से कल्याण हो॥6॥

The eight persons that are praised by the righteous, and make these four pairs, they are worthy of offerings, being Sugata's disciples; what is given to these will bear great fruit. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.6.

ये सुप्पयुत्ता मनसा दळ्हेन, निक्कामिनो गोतमसासनम्हि।

ते पत्तिपत्ता अमतं विगय्ह, लद्धा मुधा निब्बुतिं भुञ्जमाना।

इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/7॥

Ye suppayuttā manasā daḷhena, nikkāmino gotamasāsanamhi;
Te pattipattā amataṃ vigayha, laddhā mudhā nibbutiṃ bhuñjamānā
Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥7॥

ये सुप्रयुक्ता: मनसा दृढेन, निष्कामिनो *गौतम*शासने हि ।

ते प्राप्तिप्राप्ता अमृतं विगाह्य, लब्ध्वा मुधा निवृत्तिं भुञ्जमाना: ।

इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥7॥

जो गौतम बुद्ध के शासन में तृष्णा-रहित ही दृढ़ मन से संलग्न हैं, वे प्राप्तव्य को प्राप्तकर अमृत में श्रेष्ठत्व को पाकर विमुक्ति-रस का आस्वादन करते हैं । यह भी संघ में उत्तम रत्न है–इस सत्यवचन से कल्याण हो॥7॥

Those who have applied themselves studiously with a firm mind and free from desire to the comm andments of Gotama, have obtained the highest gain, having merged into immortality, and enjoying happiness after getting it for nothing. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.7.

यथिन्दखीलो पथविस्सितो सिया, चतुब्भि वातेहि असम्पकम्पियो।

तथूपमं सप्पुरिसं वदामि, यो अरियसच्चानि अवेच्च पस्सति।

इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/8॥

Yathindakhīlo pathavissito siyā, catubbhi vātehi asampakampiyo;
Tathūpamaṃ sappurisaṃ vadāmi, yo ariyasaccāni avecca passati;
Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥8॥

यथेन्द्रकील: पृथ्वीश्रित: स्यात् , चतुर्भि: वातै: असम्प्रकम्प्य: ।

तथोपमं सत्पुरुषं वदामि, योऽऽर्यसत्यानि अवेत्य पश्यति।

इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥8॥

जैसे भूमि में गाढी हुई इन्द्रकील चारों ओर की हवा से भी काँपती नहीं है, वैसे ही मैं सत्पुरुष से कहता हूँ, जो आर्यसत्यों का भली प्रकार ज्ञानपूर्वक दर्शन करता है । यह भी संघ में उत्तम रत्न है– इस सत्यवचन से कल्याण हो॥8॥

As a post in the front of a city gate is firm in the earth and cannot be shaken by the four winds, like that I declare the righteous man to be who, having penetrated the noble truths, sees them clearly. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.8.

ये अरियसच्चानि विभावयन्ति, गम्भीरपञ्ञेन सुदेसितानि।
किञ्चापि ते होन्ति भुसं पमत्ता, न ते भवं अट्ठममादियन्ति।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/9॥

Ye ariyasaccāni vibhāvayanti, gambhīrapaññena sudesitāni;
Kiñcāpi te honti bhusaṃ pamattā, na te bhavaṃ aṭṭhamamādiyanti;
Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥9॥

ये आर्यसत्यानि विभावयन्ति, गम्भीरप्रज्ञेन सुदेशितानि।
किञ्चापि ते भवन्ति भृशं प्रमत्ताः, न ते भवमष्टमम् आददति ।
इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥9॥

जो गम्भीर प्रज्ञा वाले बुद्ध द्वारा उपदिष्ट आर्यसत्यों का मनन करते हैं वे भले ही एकदम प्रमाद में पड़े हुए हों, आठवाँ जन्म ग्रहण नहीं करते। यह भी संघ में उत्तम रत्न है–इस सत्यवचन से कल्याण हो॥9॥

Those who understand the noble truths well taught by the profoundly though they be greatly distracted, will not have to take the eighth birth. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.9.

सहावस्स दस्सनसम्पदाय, तयस्सु धम्मा जहिता भवन्ति।
सक्कायदिट्ठि विचिकिच्छितं च, सीलब्बतं वापि यदत्थि किञ्चि॥2/1/10॥

Sahāvassa dassanasampadāya, tayassu dhammā jahitā bhavanti;
Sakkāyadiṭṭhi vicikicchitaṃ ca, sīlabbataṃ vāpi yadatthi kiñci.॥10॥

सार्धमस्य दर्शनसम्पदया, त्रयोऽस्य धर्माः त्यक्ताः भवन्ति।
सत्कायदृष्टिं विचिकित्सितञ्च, शीलव्रतं वापि यदस्ति किञ्चित्॥10॥

दर्शन सम्पद् के द्वारा उनके तीन बन्धन छूट जाते हैं–सत्कायदृष्टि, विचिकित्सा, शीलव्रत परामर्श अथवा अन्य जो कुछ भी बन्धन हों॥10॥

On his attaining the bliss of the right view three things or dhammas are left behind by him: conceit and doubt and whatever he has got of virtue and holy works. 10.

चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो, छच्चाभिठानानि अभब्बो कातुं ।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/11॥

Catūhapāyehi ca vippamutto, chaccābhiṭhānāni bhabba kātuṃ;
Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥11॥

चतुर्भ्योऽपायेभ्यः च विप्रमुक्तः, षट् चाभिस्थानानि अभव्यः कर्तुम् ।
इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥11॥

वह चार अपायों से मुक्त हो जाता है । छः घोर पाप-कर्मों का कभी आचरण नहीं करता यह भी संघ में उत्तम रत्न है–इस सत्य वचन से कल्याण हो॥11॥

He is released also from the four hells and he is incapable of committing the six deadly sins. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.11.

किञ्चापि सो कम्म करोति पापकं, कायेन वाचा उद चेतसा वा।
अभब्ब सो तस्स पटिच्छदाय, अभब्बता दिट्ठपदस्स वुत्ता।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/12॥

Kiñcāpi so kamma karoti pāpakaṃ, kāyena vācā uda cetasā vā;
Abhabba so tassa paṭicchadāya, abhabbatā diṭṭhapadassa vuttā;
Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥13॥

किञ्चिदपि स कर्म करोति पापकम्, कायेन वाचा उत चेतसा वा।
अभव्यः स तस्य प्रतिच्छादनाय, अभव्यता दृष्टपदस्य उक्ता।
इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥12॥

जो शरीर, वचन, मन से पाप-कर्म करता है, किन्तु वह उसे कभी छिपा नहीं सकता, क्योंकि निर्वाणदर्शी को छिपाने के लिए असमर्थ कहा गया है। यह भी संघ में उत्तम रत्न है–इस सत्यवचन से कल्याण हो॥12॥

Even if he commits a sinful act by his body, or in word or in thought, he is incapable of concealing it. for to conceal is said to be impossible for one that has seen the state of Nibbana. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.12.

वनप्पगुम्बे यथ फुस्सितग्गे, गिम्हानमासे पठमस्मिं गिम्हे।
तथूपमं धम्मवरं अदेसयि, निब्बानगामिं परमं हिताय।
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/13॥

Vanappagumbe yatha phussitagge, gimhānamāse paṭhamasmiṃ gimhe;
Tathūpamaṃ dhammavaraṃ adesayi, nibbānagāmiṃ paramaṃ hitāya;
Idampi buddhe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥13॥

वनप्रगुल्मे यथा स्फुरिताग्रे, ग्रीष्मर्तुमासे प्रथमे हि ग्रीष्मे।
तथोपमं धर्मवरम् अदिक्षत्, निर्वाणगामिनं परमं हिताय।
इदमपि बुद्धे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥13॥

जैसे वसन्त ऋतु के प्रारम्भ में वन और झाडियाँ पुष्पित हो उठती हैं, वैसे ही श्रेष्ठ धर्म का उपदेश भगवान् बुद्ध ने दिया, जो निर्वाण की ओर ले जाने वाला तथा परम हितकारी है । यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है–इस सत्य वचन से कल्याण हो॥13॥

As in a clump of trees with their tops in bloom in the first heat of the hot month, so Buddha taught the excellent Dhamma leading to Nibbana to the greatest benefit for all. This excellent jewel is found in Buddha, by this truth may there be salvaion.13.

वरो वरञ्ञू वरदो वराहरो, अनुत्तरो धम्मवरं अदेसयि।
इदम्पि बुद्धे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/14॥

Varo varaññū varado varāharo, anuttaro dhammavaraṃ adesayi;
Idampi buddhe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥14॥

वरो वरज्ञो वरदो वराहरोऽनुत्तरो धर्मवरम् अदिक्षत्।
इदमपि बुद्धे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥14॥

श्रेष्ठ निर्वाण के दाता, श्रेष्ठ धर्म के ज्ञाता, श्रेष्ठ मार्ग के निर्देशक, श्रेष्ठ लोकोत्तर बुद्ध ने उत्तम धर्म का उपदेश दिया है। यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है–इस सत्य वचन से कल्याण हो॥14॥

The excellent one who knows what is excellent, who gives what is excellent, and who brings what is excellent, the incomparable one taught the excellent Dhamma. This excellent jewel is found in Buddha, by this truth may there be salvation.14.

खीणं पुराणं नव नत्थि सम्भवं, विरत्तचित्ता आयतिके भवस्मिं।
ते खीणबीजा अविरूळ्हिछन्दा, निब्बन्ति धीरा यथायं पदीपो।
इदम्पि सङ्घे रतनं पणीतं, एतेन सच्चेन सुवत्थि होतु॥2/1/15॥

Khīṇaṃ purāṇaṃ nava natthi sambhavaṃ, virattacittāyatike bhavasmiṃ;
Te khīṇabījā avirūḷhichandā, nibbanti dhīrā yathāyaṃ padīpo;
Idampi saṅghe ratanaṃ paṇītaṃ, etena saccena suvatthi hotu.॥15॥

क्षीणं पुराणं नवं नास्ति सम्भवम्, विरक्तचित्तायतिके भवे तु ।
ते क्षीणबीजा अविरूढछन्दांसि, निर्वान्ति धीराः यथायं प्रदीपः।
इदमपि संघे रत्नं प्रणीतम्, एतेन सत्येन स्वस्ति भवतु॥15॥

सारा पुराना कर्म क्षीण हो गया, नया उत्पन्न नहीं होता, उनका चित्त परभव से विरक्त हो गया है, वे क्षीण-बीज हो गए हैं, उनकी तृष्णा समाप्त हो गई है, वे प्रदीप के समान निर्वाण को प्राप्त हो जाते हैं। यह भी बुद्ध में उत्तम रत्न है–इस सत्य वचन से कल्याण हो॥15॥

The old is destroyed, the new has not arisen, those whose minds are disgusted with a future existence, the wise who have destroyed their seeds of existence, and whose desires do not increase, go out like this lamp. This excellent jewel is found in the sangha, by this truth may there be salvation.15.

यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं, बुद्धं नमस्साम सुवत्थि होतु॥2/1/16॥

Yānīdha bhūtāni samāgatāni, bhummāni vā yāni va antalikkhe;
Tathāgataṃ devamanussapūjitaṃ, buddhaṃ namassāma suvatthi hotu.॥16॥

यानीह भूतानि समागतानि, भूम्यां वा यानि च अन्तरिक्षे ।
तथागतं देवमनुष्यपूजितम्, बुद्धं नमाम स्वस्ति भवतु॥16॥

इस समय इस पृथ्वी पर या आकाश में जितने भी प्राणी उपस्थित हैं, तथागत उन सभी देव और मनुष्यों से पूजित हैं, हम बुद्ध को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो॥16॥

Whatever spirits have come together here, either belonging to the earth or living in the air, let us worship the perfect Tathagata Buddha, revered by gods and men; may there be salvation.16.

यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं, धम्मं नमस्साम सुवत्थि होतु॥2/1/17॥

Yānīdha bhūtāni samāgatāni, bhummāni vā yāni va antalikkhe;
Tathāgataṃ devamanussapūjitaṃ, dhammaṃ namassāma suvatthi hotu.॥17॥

यानीह भूतानि समागतानि, भूम्यां वा यानि च अन्तरिक्षे ।
तथागतं देवमनुष्यपूजितम्, धर्मं नमाम स्वस्ति भवतु॥17॥

इस समय इस पृथ्वी पर या आकाश में जितने भी प्राणी उपस्थित हैं, तथागत उन सभी देव और मनुष्यों से पूजित हैं, हम धर्म को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो॥17॥

Whatever spirits have come together here, either belonging to the earth or living in the air, let us worship the perfect Tathagata Dhamma, revered by gods and men; may there be salvation.17.

यानीध भूतानि समागतानि, भुम्मानि वा यानि व अन्तलिक्खे।
तथागतं देवमनुस्सपूजितं, सङ्घं नमस्साम सुवत्थि होतूति॥2/1/18॥

Yānīdha bhūtāni samāgatāni, bhummāni vā yāni va antalikkhe;
Tathāgataṃ devamanussapūjitaṃ, saṅghaṃ namassāma suvatthi hotūti.॥18॥

यानीह भूतानि समागतानि, भूम्यां वा यानि च अन्तरिक्षे ।
तथागतं देवमनुष्यपूजितम्, संघं नमाम स्वस्ति भवतु॥18॥

इस समय इस पृथ्वी पर या आकाश में जितने भी प्राणी उपस्थित हैं, तथागत उन सभी देव और मनुष्यों से पूजित हैं, हम संघ को नमस्कार करते हैं, कल्याण हो॥18॥

Whatever spirits have come together here, either belonging to the earth or living in the air, let us worship the perfect Tathagata Sañgha, revered by gods and men; may there be salvation.18.

रतनसुत्तं निट्ठितं
(Ratanasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 2) आमगन्धसुत्तं (Āmagandhasuttaṃ)

"सामाकचिङ्गूलकचीनकानि* च, पतप्फलं* मूलफलं* गविप्फलं*।
धम्मेन लद्धं सतमस्नमाना, न कामकामा अलिकं भणन्ति॥2/2/1॥

"Sāmākaciṅgūlakacīnakāni ca, pattapphalaṃ mūlaphalaṃ gavipphalaṃ;
Dhammena laddhaṃ satamasnamānā, na kāmakāmā alikaṃ bhaṇanti.॥1॥

श्यामाक-चिंङ्गूलक-चीनकानि च, पत्रफलं मूलफलं गव्यफलम्।
धर्मेण लब्धं सताम् अस्नमाना, न कामकामा अलीकं भणन्ति॥1॥

तिष्य ब्राह्मण– धर्म-पूर्वक प्राप्त साँवा, टाँगुन (चिंगुलक), चीना (चीनक=चेना), साग-सब्जी, कन्द-मूल तथा लता-फल को खाने वाले सत्पुरुष अपनी इच्छाओं के लिए असत्य नहीं बोलते॥1॥

'Those who eat samaka, Cingulaka and Cinaka, pattaphala, mulaphala, and gaviphala (different sorts of grass, leaves, roots, etc.)., justly obtained of the just, do not speak falsehood, no rare they desirous of sensual pleasures.1.

*चीनकानीति अटविपब्बतपादेसु आरोपितजाता चीनमुग्गा। *पतप्फलं-हरितपण्णं ।
*मूलफलं-कन्दमूलं । *गविप्फलं रुक्खवल्लिफलं ।

"यदस्नमानो* सुकतं सुनिट्ठितं, परेहि दिन्नं पयतं पणीतं।
सालीनमन्नं परिभुञ्जमानो, सो भुञ्जसी कस्सप आमगन्धं॥2/2/2॥

"Yadasnamāno sukataṃ suniṭṭhitaṃ, parehi dinnaṃ payataṃ paṇītaṃ;
Sālīnamannaṃ paribhuñjamāno, so bhuñjasī kassapa āmagandhaṃ.॥2॥

"यदस्नमान: सुकृतं सुनिष्ठितम्, परै: दत्तं प्रयतं प्रणीतम्।
शालीनामन्नं परिभुञ्जमाण:, स भुङ्क्ते *कस्सप* ! *आमगन्धम्* ॥2॥

हे कस्सप ! जो दूसरों द्वारा अच्छी तरह से पकाये उत्तम धान के भात को खाता है, वह आमगन्ध का सेवन करता है॥2॥

'He who eats what has been well prepared, well dressed, what is pure and excellent, given by others, he who enjoys food made of rice, eats, O Kassapa, Āmagandha what defiles one.2.

* यदस्नमानो ति दकारो दसन्धिकरो, अस्नमानो आहारयमानो ।

"न आमगन्धो मम कप्पतीति, इच्चेव त्वं भाससि ब्रह्मबन्धु।
सालीनमन्नं परिभुञ्जमानो, सकुन्तमंसेहि सुसङ्खतेहि।
पुच्छामि तं कस्सप एतमत्थं, कथं पकारो तव आमगन्धो"॥2/2/3॥

"Na āmagandho mama kappatīti, icceva tvaṃ bhāsasi brahmabandhu;
Sālīnamannaṃ paribhuñjamāno, sakuntamaṃsehi susaṅkhatehi;
Pucchāmi taṃ kassapa etamatthaṃ, kathaṃ pakāro tava āmagandho".॥3॥

"न *आमगन्धो* मह्यं कल्पते इति, इत्येव त्वं भाषसे *ब्रह्मबन्धो* !
शालीनामन्नं परिभुञ्जमानः, शकुन्तमांसैः सुसंस्कृतैः।
पृच्छामि त्वां *कस्सप* ! एतदर्थम्, कथं प्रकारः तव *आमगन्धः*"॥3॥

हे ब्रह्मबन्धु! आप कह रहे हैं कि मुझे आमगन्ध विहित नहीं, जब कि आप पक्षियों के मांस के साथ अच्छी तरह बनाये धान के भात को खा रहे हैं। हे कस्सप! मैं आपसे पूछता हूँ कि आपका आमगन्ध कैसा है?॥3॥

'The charge of Amagandha does not apply to me,' so thou sayest, 'O Brāhman enjoying food made of rice together with the well-prepared flesh of birds. I ask thee, O Kassapa, the meaning of this, of what description is then thy Āmagandha?' .3.

"पाणातिपातो वधछेदबन्धनं, थेय्यं मुसावादो निकतिवञ्चनानि च।
अज्झेनकुत्तं परदारसेवना, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/4॥

"Pāṇātipāto vadhachedabandhanaṃ, theyyaṃ musāvādo nikativañcanāni ca;
Ajjhenakuttaṃ paradārasevanā, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥4॥

"प्राणातिपातो वधच्छेदबन्धनम्, स्तेयं मृषावादो निकृतिः वञ्चनानि च।
अध्ययनकृत्तं (कृत्रिम) परदारसेवनम्, एष *आमगन्धो** नहि मांसभोजनम्॥4॥

जीवहिंसा, बध, बन्धन, चोरी, असत्य भाषण, धोखेबाजी, ठगी, निरर्थक ग्रन्थों का कृत्रिम अध्ययन तथा पराई स्त्री का सेवन–यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥4॥

'Destroying living beings, killing, cutting, binding, stealing, speaking falsehood, fraud and deception, worthless reading', sexual pleasure with another's wife;—this is Āmagandha, but not the eating of flesh.4.

* आमगन्धः (बौद्धसंस्कृत) = अकुशल अपवित्र धर्म ।

"ये इध कामेसु असञ्ञता जना, रसेसु गिद्धा असुचिभावमस्सिता ।
नत्थिकदिट्ठी विसमा दुरन्नया, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/5॥

"Ye idha kāmesu asaññatā janā, rasesu giddhā asucibhāvamassitā
Natthikadiṭṭhī visamā durannayā, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥5॥

"ये इह कामेष्वसंयताः जनाः, रसेसु गृद्धा अशुचिभावमाश्रिताः ।
नास्तिकदृष्टयः विषमाः दुर्नयाः, एष *आमगन्धो* नहि मांसभोजनम्॥5॥

जो लोग यहाँ कामभोगों में संयम नहीं करते, स्वादिष्ट रसों में लिप्त रहते हैं, नाना प्रकार के पाप-कर्मों में लगे रहते हैं, विषम और टेढ़ी नास्तिक-दृष्टि वाले हैं–यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥5॥

'Those persons who in this world are unrestrained in enjoying sensual pleasures, greedy of sweet things, associated with what is impure, sceptics, unjust, difficult to following ;—this is Āmagandha, but not the eating of flesh.5.

"ये लूखसा* दारुणा पिट्ठिमंसिका*, मित्तद्दुनो निक्करुणातिमानिनो।
अदानसीला न च देन्ति कस्सचि, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/6॥

"Ye lūkhasā dāruṇā piṭṭhimaṃsikā, mittadduno nikkaruṇātimānino;
Adānasīlā na ca denti kassaci, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥6॥

"ये रुक्षा: दारुणा: पृष्ठिमांसिका:, मित्रद्रोहिण: निष्करुणातिमानिन: ।
अदानशीला: न च ददति कस्मैचित्, एष *आमगन्धो* नहि मांसभोजनम्॥6॥

जो कठोर, दारुण, चुगलखोर, मित्रद्रोही, निर्दयी, अतिमानी और दान न देने के स्वभाव वाला है, किसी को कुछ नहीं देता है—यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥6॥

'Those who are rough, harsh, backbiting. treacherous, merciless, arrogant, and who being illiberal do not give anything to any one; —this is Amagandha, but not the eating of flesh.6.

• लूखसा-नीरसा अत्तकिलमथानुपुत्ता ति । • पिट्ठिमंसिका ति पुरतो भणित्वा परम्मुखे अवण्णभासिनो ति ।

"कोधो मदो थम्भो पच्चुपट्ठापना*, माया उसूया भस्ससमुस्सयो च।
मानातिमानो च असब्भि सन्थवो, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/7॥

"Kodho mado thambho paccupaṭṭhāpanā, māyā usūyā bhassasamussayo ca;
Mānātimāno ca asabbhi santhavo, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥7॥

"क्रोधो मद: स्तम्भ: प्रत्युपस्थापनम्, माया असूया भाष्यसमुच्छ्रयश्च।
मानातिमानश्च असद्भि: संस्तव:, एष *आमगन्धो* नहि मांसभोजनम्॥7॥

क्रोध, मद, जड़ता, प्रतिकूल रूप में किसी वस्तु को उपस्थापन करना, माया, ईर्ष्या, आत्म-प्रशंसा, बहुत अभिमानी होना और बुरों का साथ करना–यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥7॥

'Anger, intoxication, obstinacy, bigotry, deceit, envy, grandiloquence pride and conceit, intimacy with the unjust ;—this is Amagandha, but not the eating of flesh.7.

* पच्चुपट्ठाना ति पच्चनीकट्ठापना, धम्मेन नयेन वुत्तस्स पटिविरुज्झित्वा ठानं ।

"ये पापसीला इणघातसूचका, वोहारकूटा इध पाटिरूपिका ।
नराधमा येध करोन्ति किब्बिसं, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/8॥

"Ye pāpasīlā iṇaghātasūcakā, vohārakūṭā idha pāṭirūpikā;
Narādhamā yedha karonti kibbisaṃ, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥8॥

"ये पापशीला: ऋणघातसूचका:, व्यवहारकूटा इह प्रातिरूपका: ।
नराधमा: ये इह कुर्वन्ति किल्विषम्, एष *आमगन्धो* न हि मांसभोजनम्॥8॥

जो पापी, ऋण न चुकाने वाले, ठगबाजी करने वाले, ढोंगी, नराधम यहाँ पाप कर्म करते हैं–यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥8॥

'Those who in this world are wicked, and such as do not pay their debts, are slanderers, false in their dealings, counterfeiters, those who in this world being the lowest of men commit sin;— this is Āmagandha, but not the eating of flesh.8.

"ये इध पाणेसु असञ्ञता जना, परेसमादाय विहेसमुय्युता।
दुस्सीललुद्धा फरुसा अनादरा, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/9॥

"Ye idha pāṇesu asaññatā janā, paresamādāya vihesamuyyutā;
Dussīlaluddā pharusā anādarā, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥9॥

"ये इह प्राणेष्वसंयता: जना:, परेषामादाय विद्वेषमुद्यता:।
दुश्शीललुब्धा: परुषा अनादरा:, एष *आमगन्धो* न हि मांसभोजनम्॥9॥

जो लोग यहाँ जीवों के प्रति असंयमी हैं, दूसरों की वस्तु लेकर उन्हें परेशान करने पर तुले हुए हैं और दुराचारी, लोभी, कठोर तथा आदरहीन हैं–यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥9॥

'Those persons who in this world are unrestrained in their behaviour towards living creatures, who are bent upon injuring after taking others' goods, wicked, cruel, harsh, disrespectful ;—this is Āmagandha, but not the eating of flesh.9.

"एतेसु गिद्धा विरुद्धातिपातिनो, निच्चुय्युता पेच्च तमं वजन्ति ये।
पतन्ति सत्ता निरयं अवंसिरा*, एसामगन्धो न हि मंसभोजनं॥2/2/10॥

"Etesu giddhā viruddhātipātino, niccuyyutā pecca tamaṃ vajanti ye;
Patanti sattā nirayaṃ avaṃsirā, esāmagandho na hi maṃsabhojanaṃ.॥10॥

"एतेषु गृद्धा: विरुद्धातिपातिन:, नित्यमुद्यता: प्रेत्य तमो व्रजन्ति ये।
पतन्ति सत्त्वा: नरकेऽवंशिरा:, एष *आमगन्धो* न हि मांसभोजनम्॥10॥

जो लोग इसमें लोभ-करके विरोध-भाव और जीव हिंसा में लगे हुए हैं, वे मर कर अन्धकार में जाते हैं वे प्राणी ऊपर पैर तथा नीचे सिर करके नरक में पड़ते हैं–यह आमगन्ध है न कि मांस का भोजन करना॥10॥

'Those living being who are greedy of these living beings, who are hostile, offending; always bent upon evil and therefore, when dead, go to darkness and fall with their heads downwards into hell; —this is Āmagandha, but not the eating of flesh.10.

* वैदिक प्रयोग

"न मच्छमंसानमनासकत्तं, न नग्गियं न मुण्डियं जटाजल्लं।
खराजिनानि नाग्गिहुत्तस्सुपसेवना, ये वापि लोके अमरा बहू तपा।
मन्ताहुती यञ्ञमुतूपसेवना, सोधेन्ति मच्चं अवितिण्णकङ्खं॥2/2/11॥

"Na macchamaṃsānamanāsakattaṃ, na naggiyaṃ na muṇḍiyaṃ jaṭājallaṃ;
Kharājināni nāggihuttassupasevanā, ye vāpi loke amarā bahū tapā;
Mantāhutī yaññamutūpasevanā, sodhenti maccaṃ avitiṇṇakaṅkhaṃ.॥11॥

"नहि मस्त्यमांसानाम् अनाशकत्वम्, न नग्न्यम्, न मुण्ड्यं जटाजाल्यम् ।
खराजिनानि वा न अग्निहुतस्योपसेवनम्, ये वाऽपि लोकेऽमरा: बहु तपा:।
मन्त्राहुति: यज्ञर्तूपसेवना:, शोधयन्ति मर्त्यम् अवतीर्णकांक्षाम्॥11॥

न मछली खाने के त्याग से, न नंगा रहने से, न उपवास करने से, न सिर मुड़ाने से, न जटा धारण करने से, न राख पोतने से, न कड़े मृग-चर्म को पहनने से, न अग्नि-हवन करने से, न अमरत्व की आकांक्षा से, अनेक प्रकार के तपों के न करने से, न मंत्रपाठ न हवन करने से, न यज्ञ करने से और न ऋतुओं का उपसेवन करने से ही संशययुक्त मनुष्य को शुद्ध (शंकारहित) किया जा सकता है॥11॥

'Neither the flesh of fish, nor fasting, nor nakedness, nor tonsure, nor matted hair, nor dirt, nor rough skins, nor the worshipping of the fire, nor the many immortal penances in the world, nor hymns, nor oblations, nor sacrifice, nor observance of the seasons, purify a mortal who has not conquered his doubt'.11.

"यो तेसु गुत्तो विदितिन्द्रियो चरे, धम्मे ठितो अज्जवमद्दवे रतो।
सङ्गातिगो सब्बदुक्खप्पहीनो, न लिप्पति दिट्ठसुतेसु धीरो"॥2/2/12॥

"Yo tesu gutto viditindriyo care, dhamme ṭhito ajjavamaddave rato;
Saṅgātigo sabbadukkhappahīno, na lippati diṭṭhasutesu dhīro".॥12॥

"यः तेषु गुप्तो विदितेन्द्रियः चरेत्, धर्मे स्थित आर्जवे मार्दवे रतः ।
सङ्गातिगः सर्वदुःखप्रहीणः, न लिप्यते दृष्टश्रुतेषु धीरः"॥12॥

जो सभी स्रोतों अर्थात् इन्द्रियों में संयम करता है, इन्द्रियों को भली प्रकार जानकर विचरण करता है, धर्म में स्थित है, ऋजुता और मृदुता में रत है, सांसारिक आसक्तियों को पार कर लिया है, जिसके सारे दुःखों का प्रहाण हो गया है, वह धीर व्यक्ति देखी-सुनी बातों में लिप्त नहीं होता॥12॥

'The wise man wanders about with his organs of sense guarded and his senses conquered, standing firm in the Dhamma, delighting in what is right and mild; having overcome all ties and left behind all pain, he does not cling to what is seen and heard.'.12.

इच्चेतमत्थं भगवा पुनप्पुनं, अक्खासि नं वेदयि मन्तपारगू।
चित्राहि गाथाहि मुनी पकासयि, निरामगन्धो असितो दुरन्नयो॥2/2/13॥

Iccetamatthaṃ bhagavā punappunaṃ, akkhāsi naṃ vedayi mantapāragū;
Citrāhi gāthāhi munī pakāsayi, nirāmagandho asito durannayo.॥13॥

इत्येतमर्थं भगवान् पुनर्पुनः, अख्यात् तम् अवेदयत् मन्त्रपारगः ।
चित्राभिः गाथाभिः मुनिः प्राकाशयत्, निरामगन्धोऽश्रितो दुरान्वयः॥13॥

इस बात को भगवान् ने बार-बार कहा और वेद-पारंगत ब्राह्मण ने इसे समझ लिया । तृष्णा रहित, अनासक्त और अनुसरण करने में दुष्कर मुनि ने सुन्दर गाथाओं में निरामगन्ध को प्रगट किया॥13॥

Thus the Bhagavān Kassapa preached this subject again and again and the Brahmaṇa who was accomplished in the hymns of the Vedas understood it; the Muni who is free from defilement, independent and difficult to follow, made it clear in various stanzas.13.

सुत्वान बुद्धस्स सुभासितं पदं, निरामगन्धं सब्बदुक्खप्पनूदनं।
नीचमनो वन्दि तथागतस्स, तत्थेव पब्बज्जमरोचयित्थाति॥2/2/14॥

Sutvāna buddhassa subhāsitaṃ padaṃ, nirāmagandhaṃ sabbadukkhappanūdanaṃ;
Nīcamano vandi tathāgatassa, tattheva pabbajjamarocayitthāti.॥14॥

श्रुत्वा बुद्धस्य सुभाषितं पदम्, निरामगन्धं सर्वदुःखापनोदनम्।
नम्रमनोऽवन्दत तथागतम्, तत्रैव प्रव्रज्यामरोचिष्ट इति॥14॥

सारे दु:खों को दूर करने वाले भगवान् बुद्ध के निरामगन्ध के सुभाषित पदों को सुनकर विनम्र-भाव से उसने तथागत की वन्दना की और वहीं प्रव्रजित होने की याचना की॥14॥

Having heard the Buddha's well-spoken words, which are free from defilement and send away all pain, he worshipped the Tathagata's feet in humility, and took orders at once.14.

आमगन्धसुत्तं निट्ठितं

(Āmagandhasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(2, 3) हिरिसुत्तं (Hirisuttaṃ)

हिरिं *तरन्तं विजिगुच्छमानं, सखहमस्मि इति भासमानं।

सय्हानि कम्मानि अनादियन्तं, नेसो ममन्ति इति नं विजञ्ञा॥2/3/1॥

Hiriṃ tarantaṃ vijigucchamānaṃ, tavāhamasmi iti bhāsamānaṃ;

Sayhāni kammāni anādiyantaṃ, neso mamanti iti naṃ vijaññā.॥1॥

ह्रीं तरन्तं विजुगुप्समानम्, सखाऽहमस्मि इति भासमानम् ।

सह्यानि कर्माणि अनाददन्तम्, न एष मम इति तं विजानीयात्॥1॥

निर्लज्ज व्यवहार करने वाला, (भीतर ही भीतर) घृणा का भाव रखने वाला, सामर्थ्य की बात भी न करने वाला जो अपने को मित्र बतलाता है, उसके विषय में समझना चाहिए कि 'यह मेरा मित्र नहीं है'॥1॥

He who transgresses and despises modesty, who says, 'I am a friend,' but does not undertake any work that can be done, know about him: 'he is not my friend.'1.

* हिरिं तरन्तं ति हिरिं अतिक्कमन्तं अहिरिकं निल्लज्जं ।

अनन्वयं पियं वाचं, यो मित्तेसु पकुब्बति।

अकरोन्तं भासमानं, परिजानन्ति पण्डिता॥2/3/2॥

Ananvayaṃ piyaṃ vācaṃ, yo mittesu pakubbati;

Akarontaṃ bhāsamānaṃ, parijānanti paṇḍitā.॥2॥

अनन्वयां प्रियां वाचाम्, यो मित्रेषु प्रकरोति।

अकुर्वन्तं भासमानम्, परिजानन्ति पण्डिता:॥2॥

जो मीठी-मीठी बातें मित्रों में करता है, बिना कार्य किए ही करता है, बुद्धिमान् उसकी निन्दा करते हैं॥2॥

Whosoever uses pleasing words to friends without effect , him the wise know as one that talks, but does not do anything.2.

न सो मित्तो यो सदा अप्पमत्तो, भेदासङ्की रन्धमेवानुपस्सी।

यस्मिञ्च सेति उरसीव पुत्तो, स वे मित्तो यो परेहि अभेज्जो॥2/3/3॥

Na so mitto yo sadā appamatto, bhedāsaṅkī randhamevānupassī;

Yasmiñca seti urasīva putto, sa ve mitto yo parehi abhejjo.॥3॥

न स (जन:) मित्रं य: सदा अप्रमत्त:, भेदाशङ्की रंध्रमेवानुपश्यति।

यस्मिन् च शेते उरसीव पुत्र:, स (जन:) वै मित्रं य: परै अभेद्य:॥3॥

जो सदा मित्रता दिखाने की चेष्टा करते हुए फूट डालने के चक्कर में रहता है तथा छिद्रान्वेषण करता है, वह मित्र नहीं है । जो माता की गोद में सोये पुत्र की भाँति विश्वास और प्रेम प्रदान करता है, जो दूसरों के द्वारा फोड़ा नहीं जा सकता, वही मित्र है॥3॥

He is not a friend who always eagerly suspects a breach and looks out for faults; but he with whom. he dwells as a son at the breast of his mother, he is indeed a friend that cannot be severed by others.3.

पामुज्जकरणं ठानं, पसंसावहनं सुखं।
फलानिसंसो भावेति, वहन्तो पोरिसं धुरं॥2/3/4॥

Pāmujjakaraṇaṃ ṭhānaṃ, pasaṃsāvahanaṃ sukhaṃ;
Phalānisaṃso bhāveti, vahanto porisaṃ dhuraṃ.॥4॥

प्रामोद्यकरणं स्थानम्, प्रशंसावहनं सुखम् ।
फलानुशंसो भावयति, वहन्तं पौरुषं धुरम्॥4॥

जो मनुष्य के कर्तव्य का निर्वाह करता हुआ, प्रसन्नता और प्रशंसा के सुख की कामना करता है तथा फल की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है॥4॥

He who hopes for fruit, cultivates the energy that produces joy and the pleasure that brings praise, while carrying the human yoke.4.

पविवेकरसं पित्वा, रसं उपसमस्स च।
निद्दरो होति निप्पापो, धम्मपीतिरसं पिबं ति॥2/3/5॥

Pavivekarasaṃ pitvā, rasaṃ upasamassa ca;
Niddaro hoti nippāpo, dhammapītirasaṃ pivaṃ ti.॥5॥

प्रविवेकरसं पीत्वा, रसम् उपशमस्य च।
निर्दरो भवति निष्पाप:, धर्मप्रीतिरसं पिबन्निति॥5॥

एकान्त चिन्तन के रस तथा उपशम (शान्ति) के रस को पीकर (पुरुष) निडर होता है और धर्म का प्रेमरस पान कर निष्पाप होता है॥5॥

Having tasted the sweetness of seclusion and tranquillity one becomes free from fear and free from sin, drinking in the sweetness of the Dhamma'.5.

हिरिसुत्तं निट्ठितं
(Hirisuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 4) मङ्गल-सुत्तं (Maṅgalasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो अञ्ञतरा देवता अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णा केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि। एकमन्तं ठिता खो सा देवता भगवन्तं गाथाय अज्झभासि —

Evaṃ me sutaṃ– ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Atha kho aññatarā devatā abhikkantāya rattiyā abhikkantavaṇṇā

kevalakappaṃ jetavanaṃ obhāsetvā yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ abhivādetvā ekamantaṃ aṭṭhāsi. Ekamantaṃ ṭhitā kho sā devatā bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi–

एवं मया श्रुतम्– एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवनेऽनाथपिण्डिकस्याऽऽ*रामे। अथ खलु अन्यतरा देवता अभिक्रान्तायां रात्र्याम् अभिकान्तवर्णा केवलकल्पं *जेतवनम्* अवभास्य यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसङ्क्रम्य भगवन्तम् अभिवाद्य एकान्तमस्थात्। एकान्तं स्थिता खलु सा देवता भगवन्तं गाथयाऽध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। तब एक देवता रात्रि बीतने पर अपनी दीप्ति से समस्त जेतवन को आलोकित कर जहाँ भगवान् थे, वहाँ आए। आकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर खड़े हो गए । एक ओर खड़े हो देवता ने गाथा में भगवान् से कहा –

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Savatthi, in Jetavana, in the park of Anathapindika. Then, when the night had come near, a deity of beautiful appearance, having illuminated the whole Jetavana, approached Bhagavān, and having approached and saluted him, he stood apart, and standing apart that deity addressed Bhagavān in stanzas:

"बहू देवा मनुस्सा च, मङ्गलानि अचिन्तयुं।
आकङ्खमाना सोत्थानं, ब्रूहि मङ्गलमुत्तमं"॥2/4/1॥

"Bahū devā manussā ca, maṅgalāni acintayuṃ;
Ākaṅkhamānā sotthānaṃ, brūhi maṅgalamuttamaṃ".॥1॥

"बहव: देवा: मनुष्याश्च, मङ्गलानि अचिन्तयन् ।
आकाङ्क्षमाणा: स्वस्त्ययनम्, ब्रूहि मङ्गलमुत्तमम्"॥1॥

कल्याण की आकांक्षा रखते हुए बहुत से देवताओं और मनुष्यों ने मंगल के विषय में विचार किया है । आप बतावें कि उत्तम मंगल क्या है ?॥1॥

'Many gods and men have devised blessings, for happiness, tell thou me the highest blessing.'.1.

"असेवना च बालानं, पण्डितानं च सेवना।
पूजा च पूजनेय्यानं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/2॥

"Asevanā ca bālānaṃ, paṇḍitānaṃ ca sevanā;
Pūjā ca pūjaneyyānaṃ, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥2॥

"असेवना च बालानाम्, पण्डितानां च सेवना ।
पूजा च पूजनीयानाम्, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥2॥

भगवान् बुद्ध– मूर्खों की संगति न करना, बुद्धिमानों की संगति करना और पूज्यों की पूजा करना–यह उत्तम मंगल है॥2॥

Not cultivating the society of fools, but cultivating the society of wise men, worshipping those that are to be worshipped, this is the highest blessing.2.

"पतिरूपदेसवासो च, पुब्बे च कतपुञ्ञता।
अत्तसम्मापणिधि च, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/3॥

"Patirūpadesavāso ca, pubbe ca katapuññatā;
Attasammāpaṇidhi ca, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥3॥

"प्रतिरूपदेशवासश्च, पूर्वस्मिन् च कृतपुण्यता।
आत्मसम्यक्प्रणिधिश्च, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥3॥

अनुकूल स्थानों में निवास करना, पूर्व जन्म के संचित पुण्य का होना और अपने को सन्मार्ग पर लगाना–यह उत्तम मंगल है॥3॥

'To live in a suitable country, to have done good deeds in a former existence, and a thorough study of one's self, this is the highest blessing.3.

"बाहुसच्चं च सिप्पं च, विनयो च सुसिक्खितो।
सुभासिता च या वाचा, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/4॥

"Bāhusaccaṃ ca sippaṃ ca, vinayo ca susikkhito;
Subhāsitā ca yā vācā, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥4॥

"बाहुश्रुत्यञ्च शिल्पञ्च, विनयश्च सुशिक्षितः ।
सुभाषिता च या वाचा, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥4॥

बहुश्रुत होना, शिल्प सीखना, शिष्ट होना, सुशिक्षित होना और सुभाषण करना–यह उत्तम मंगल है॥4॥

'Great learning and skill, well-learnt discipline and well-spoken words, this is the highest blessing.4.

"मातापितु उपट्ठानं, पुत्तदारस्स सङ्गहो।
अनाकुला च कम्मन्ता, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/5॥

"Mātāpitu upaṭṭhānaṃ, puttadārassa saṅgaho;
Anākulā ca kammantā, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥5॥

"मातापित्रोरुपस्थानम्, पुत्रदाराणां संग्रहः ।
अनाकुलाश्च कर्मान्ताः, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥5॥

माता-पिता की सेवा करना, पुत्र-स्त्री का पालन-पोषण करना और गड़बड़ (जो अनुकूल नहीं है उनका) का काम न करना–यह उत्तम मंगल है॥5॥

'Waiting on mother and father, protecting child and wife and a quiet calling, this is the highest blessing.5.

"दानं व धम्मचरिया च, ञातकानं व सङ्गहो।
अनवज्जानि कम्मानि, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/6॥

"Dānaṃ ca dhammacariyā ca, ñātakānaṃ ca saṅgaho;
Anavajjāni kammāni, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥6॥

"दानञ्च धर्मचर्या च, ज्ञातृकानाञ्च संग्रहः ।
अनवद्यानि कर्माणि, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥6॥

दान, धर्माचरण, बन्धु-बान्धवों का आदर-सत्कार और निर्दोष कार्य करना–यह उत्तम मंगल है॥6॥

'Giving alms, living religiously, protecting relatives, blameless deeds, this is the highest blessing.6.

"आरती विरती पापा, मज्जपाना च संयमो।
अप्पमादो च धम्मेसु, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/7॥

"Āratī viratī pāpā, majjapānā ca saṃyamo;
Appamādo ca dhammesu, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥7॥

"आरतिः विरतिः पापात्, मद्यपानाच्च संयमः।
अप्रमादश्च धर्मेषु, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥7॥

पापों को त्यागना, मद्यपान न करना और धार्मिक कार्यों में तत्पर रहना– यह उत्तम मंगल है॥7॥

'Ceasing and abstaining from sin, refraining from intoxicating drink, perseverance in the Dhammas, this is the highest blessing.7.

"गारवो च निवातो च, सन्तुट्ठि च कतञ्ञुता।
कालेन धम्मस्सवनं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/8॥

"Gāravo ca nivāto ca, santuṭṭhi ca kataññutā;
Kālena dhammassavanaṃ, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥8॥

"गौरवश्च निवातश्च, सन्तुष्टिश्च कृतज्ञता।
कालेन धर्मश्रवणम्, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥8॥

गौरव करना, नम्र होना, सन्तुष्ट रहना, कृतज्ञ होना और उचित समय पर धर्म-श्रवण करना–यह उत्तम मंगल है॥8॥

'Reverence and humility, contentment and gratitude, the hearing of the Dhamma at due seasons, this is the highest blessing.8.

"खन्ती च सोवचस्सता, समणानं च दस्सनं।
कालेन धम्मसाकच्छा, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/9॥

"Khantī ca sovacassatā, samaṇānaṃ ca dassanaṃ;
Kālena dhammasākacchā, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥9॥

"क्षान्तिश्च सुवचस्यता च, श्रमणानाञ्च दर्शनम् ।
कालेन धर्मसंकथ्यम्, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥9॥

क्षमाशील होना, सुवचन बोलना, श्रमणों का दर्शन करना और उचित समय पर धार्मिक चर्चा करना–यह उत्तम मंगल है॥9॥

'Patience and pleasant speech, seeing Sramaṇas, religious conversation at due seasons, this is the highest blessing.9.

"तपो च ब्रह्मचरियं च, अरियसच्चान दस्सनं।
निब्बानसच्छिकिरिया च, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/10॥

"Tapo ca brahmacariyaṃ ca, ariyasaccāna dassanaṃ;
Nibbānasacchikiriyā ca, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥10॥

"तपश्च ब्रह्मचर्यञ्च, आर्यसत्यानां दर्शनम्।
निर्वाणसाक्षात् क्रिया च, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥10॥

तप, ब्रह्मचर्य का पालन, आर्यसत्यों का दर्शन और निर्वाण का साक्षात्कार–यह उत्तम मंगल है॥10॥

'Penance and chastity, discernment of the noble truths, and the realisation of Nibbana, this is the highest blessing.10.

"फुट्ठस्स लोकधम्मेहि, चित्तं यस्स न कम्पति।
असोकं विरजं खेमं, एतं मङ्गलमुत्तमं॥2/4/11॥

"Phuṭṭhassa lokadhammehi, cittaṃ yassa na kampati;
Asokaṃ virajaṃ khemaṃ, etaṃ maṅgalamuttamaṃ.॥11॥

"स्पृष्टस्य लोकधर्मैः, चित्तं यस्य न कम्पते।
अशोकं विरजं क्षेमम्, एतन्मङ्गलमुत्तमम्॥11॥

जिसका चित्त लोकधर्म से विचलित नहीं होता, वह निःशंक, निर्मल तथा निर्भय रहता है– यह उत्तम मंगल है॥11॥

'He whose mind is not shaken when he is touched by the things of the world, but remains free from sorrow, free from defilement and secure, this is the highest blessing. 11.

"एतादिसानि कत्वान, सब्बत्थमपराजिता।
सब्बत्थ सोत्थिं गच्छन्ति, तं तेसं मङ्गलमुत्तमं"ति॥2/4/12॥

"Etādisāni katvāna, sabbatthamaparājitā;
Sabbattha sotthiṃ gacchanti, taṃ tesaṃ maṅgalamuttamaṃ"ti.॥12॥

"एतादृशानि कृत्वा, सर्वत्र अपराजिताः।
सर्वत्र स्वस्तिं गच्छन्ति, तत्तेषां मङ्गलमुत्तम्" इति॥12॥

इस प्रकार के कार्य करके सर्वत्र अपराजित हो लोग कल्याण को प्राप्त करते हैं–उनके लिए (देवताओं तथा मनुष्यों के लिए), यह उत्तम मंगल है॥12॥

'Those who, having done such things, are undefeated in every respect, walk in safety every where, there is the highest blessing.' 12.

मङ्गलसुत्तं निट्ठितं
(Maṅgalasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 5) सूचिलोमसुत्तं (Sūcilomasuttaṃ)

एवं मे सुतं– एकं समयं भगवा गयायं विहरति टङ्कितमञ्चे* सूचिलोमस्स यक्खस्स भवने। तेन खो पन समयेन खरो च यक्खो सूचिलोमो च यक्खो भगवतो अविदूरे अतिक्कमन्ति। अथ खो खरो यक्खो सूचिलोमं यक्खं एतदवोच– ''एसो समणो''ति। ''नेसो समणो, समणको एसो। यावाहं जानामि यदि वा सो समणो, यदि वा सो समणको''ति । अथ खो सूचिलोमो यक्खो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा

भगवतो कायं उपनामेसि। अथ खो भगवा कायं अपनामेसि। अथ खो सूचिलोमो यक्खो भगवन्तं एतदवोच– ''भायसि मं, समणा''ति? ''न ख्वाहं तं, आवुसो, भायामि; अपि च ते सप्फस्सो पापको''ति। ''पञ्हं तं, समण, पुच्छिस्सामि। सचे मे न ब्याकरिस्ससि, चित्तं वा ते खिपिस्सामि, हदयं वा ते फालेस्सामि, पादेसु वा गहेत्वा पारगङ्गाय खिपिस्सामी''ति। ''न ख्वाहं तं, आवुसो, पस्सामि सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय यो मे चित्तं वा खिपेय्य हदयं वा फालेय्य पादेसु वा गहेत्वा पारगङ्गाय खिपेय्य। अपि च त्वं, आवुसो, पुच्छ यदाकङ्खसी''ति। अथ खो सूचिलोमो यक्खो भगवन्तं गाथाय अज्झभासि—

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā gayāyaṃ viharati ṭaṅkitamañce sūcilomassa yakkhassa bhavane. Tena kho pana samayena kharo ca yakkho sūcilomo ca yakkho bhagavato avidūre atikkamanti. Atha kho kharo yakkho sūcilomaṃ yakkhaṃ etadavoca – "eso samaṇo"ti. "Neso samaṇo, samaṇako eso. Yāvāhaṃ jānāmi yadi vā so samaṇo, yadi vā so samaṇako"ti. Atha kho sūcilomo yakkho yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavato kāyaṃ upanāmesi. Atha kho bhagavā kāyaṃ apanāmesi. Atha kho sūcilomo yakkho bhagavantaṃ etadavoca – "bhāyasi maṃ, samaṇā"ti? "Na khvāhaṃ taṃ, āvuso, bhāyāmi; api ca te sapphasso pāpako"ti. "Pañhaṃ taṃ, samaṇa, pucchissāmi. Sace me na byākarissasi, cittaṃ vā te khipissāmi, hadayaṃ vā te phālessāmi, pādesu vā gahetvā pāragaṅgāya khipissāmī"ti. "Na khvāhaṃ taṃ, āvuso, passāmi sadevake loke samārake sabrahmake sassamaṇabrāhmaṇiyā pajāya sadevamanussāya yo me cittaṃ vā khipeyya hadayaṃ vā phāleyya pādesu vā gahetvā pāragaṅgāya khipeyya. Api ca tvaṃ, āvuso, puccha yadākaṅkhasī"ti. Atha kho sūcilomo yakkho bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम्। एकस्मिन् समये भगवान् *गयायां* विहरति टङ्कितमञ्चे* *सूचिलोम*स्य यक्षस्य भवने। तस्मिन् खलु पुन: समये *खर*श्च यक्ष: *सूचिलो*मश्च यक्षो भगवतोऽविदूरम् अतिक्रमन्ति स्म। अथ खलु खरो यक्षो *सूचिलो*मं यक्षम् एतदवोचत् – ''एष श्रमण!" इति। ''नैष श्रमण:, श्रमणक एष:। यावदहं जानामि यदि वा "स श्रमण:, यदि वा स श्रमणक:'' इति । अथ खलु *सूचिलोमो* यक्षो यत्र भगवान् तत्र उपसमक्रमीत्; उपसङ्क्रम्य भगवत: कायम् उपानामयत् । अथ खलु भगवान् कायम् अपानामयत् । अथ खलु सूचिलोम: यक्षो भगवन्तम् एतदवोचत् – ''विभेषि मत्, श्रमण!''इति? ''न खल्वहं त्वत्, *आवुस* ! विभेमि अपि च ते संस्पर्श: पापक:'' इति। ''प्रश्नं त्वां श्रमण! प्रक्ष्यामि। सचेत् मे न व्याकरिष्यसि, चित्तं वा ते विक्षेप्स्यामि, हृदयं वा ते फालिष्यामि, पादेषु वा गृहीत्वा *पारगङ्गं* क्षेप्स्यामि'' इति। ''न खल्वहं तम्, *आवुस* ! पश्यामि सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सश्रमणब्राह्मणायां प्रजायां सदेवमनुष्येषु यो मे चित्तं वा क्षिपेत् हृदयं वा फालेत् पादान् वा गृहीत्वा *पारगङ्गं* क्षिपेत्। अपि च त्वम्, *आवुस* ! पृच्छ यदाकांक्षसि'' इति । अथ खलु *सूचिलोमो* यक्षो भगवन्तं गाथयाध्यभाषिष्ट—

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् गया में टंकित मंच पर सूचिलोम यक्ष के भवन में विहार कर रहे थे । उस समय खर यक्ष और सूचिलोम यक्ष भगवान् के निकट से ही गुजर रहे थे । तब खर यक्ष ने सूचिलोम यक्ष से यह कहा– "यह श्रमण है ।" "यह श्रमण नहीं, श्रमणक (छोटा श्रमण) है । जरा मैं पता लगाऊँ कि यह श्रमण है या श्रमणक । " तब सूचिलोम यक्ष जहाँ भगवान् थे वहाँ गया । जाकर भगवान् के पास अपने शरीर को ले गया । तब भगवान् ने अपने शरीर को हटा दिया । तब सूचिलोम यक्ष ने भगवान्

से यह कहा– "श्रमण ! तुम मुझसे डर रहे हो ?" "आयुष्मन् ! मैं तुमसे डर रहा हूँ, बल्कि तुम्हारा स्पर्श बुरा है । " "श्रमण ! मैं तुमसे प्रश्न पूछूँगा, यदि तुम मेरा उत्तर न दे पाओगे तो मैं तुम्हारे चित्त को विक्षिप्त कर दूँगा या तुम्हारे हृदय को फाड़ डालूँगा अथवा पैरों को पकड़ कर गंगा के उस पार फेंक दूँगा ।" "आयुष्मन्! मैं देव, मार, ब्रह्मा और श्रमण-ब्राह्मण सहित लोक में देव-मनुष्य सहित प्रज्ञा में किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखता जो कि मेरे चित्त को विक्षिप्त कर दे या मेरे हृदय को फाड़ डाले अथवा पैरों को पकड़ कर गंगा के उस पार फेंक दे, फिर भी आयुष्मन् ! तुम जो चाहो पूछो ।" तब सूचिलोम यक्ष ने भगवान् से गाथा में कहा–

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Gaya seated on a stone seat the place of the Yakkha Suciloma. At that time the Yakkha Khara and the Yakkha Suciloma passed by, not far from Bhagavān. And then the Yakkha Khara said this to the Yakkha Skiloma: 'Is this man a Sramaṇa ?' Suciloma answered: 'He is no Sramaṇa, he is a Sramanaka; however I will ascertain whether he is a Sramaṇa or a Sramanaka.' Then the Yakkha Suciloma went up to Bhagavān, and having gone up to him, he brushed against Bhagavān's body. Then Bhagavān took away his body. Then the Yakkha Suciloma said this to Bhagavān: 'O Sramaṇa, art thou afraid of me?' Bhagavān answered: 'No, friend, I am not afraid of thee, but thy touching me is sinful.' Suciloma said: 'I will ask thee a' question, O Sramaṇa; if thou can not answer it I will either scatter thy thoughts or cleave thy heart, or take thee by the feet and throw thee over to the other shore of the Gañga.' Bhagavān answered: 'I do not see, O friend, neither in this world together with the world, Maras, Brahmans, nor amongst the generat ion of Sramaṇa and Brahmaṇas, gods and men, the one who can either scatter my thoughts or cleave my heart, or take me by the feet and throw me over to the other shore of the Ganga. However ask, O friend, what thou pleasest.' Then the Yakkha Suciloma addressed Bhagavān in a stanza:

*गया के पास प्रत्येक पत्थर के चार खम्भों पर पत्थर फैलाकर बनायी गई पत्थर की मचान=मंच-(अट्ठकथा)

रागो च दोसो च कुतोनिदाना, अरती रती लोमहंसो कुतोजा।
कुतो समुट्ठाय मनोवितक्का, कुमारका धङ्कमिवोस्सजन्ति॥2/5/1॥

"Rāgo ca doso ca kutonidānā, aratī ratī lomahaṃso kutojā;
Kuto samuṭṭhāya manovitakkā, kumārakā dhaṅkamivossajanti".॥1॥

"रागश्च दोषश्च कुतोनिदानौ, अरति: रति: रोमहर्ष: कुत्रजा:।
कुत: समुत्थाय मनोवितर्का:, कुमारका: ध्वाङ्क्षमिवोत्सजन्ति"॥1॥

"राग और द्वेष कहाँ से उत्पन्न होते हैं ? पुण्य-कर्मों में मन का न लगना और पाप-कर्मों में मन का लगना तथा भय (लोमहर्षण) कहाँ से उत्पन्न होते हैं ? मन के बुरे वितर्क कहाँ से उत्पन्न होकर बच्चों के कौवा उड़ाने की भाँति परेशान करते हैं?"॥1॥

'What origin have passion and hatred, disgust, delight, and horror? where from do they arise? whence arising do doubts vex the mind, as boys vex a crow?' 1.

"रागो च दोसो च इतोनिदाना, अरती रती लोमहंसो इतोजा"।
इतो समुट्ठाय मनोवितक्का, कुमारका धङ्कमिवोस्सजन्ति॥2/5/2॥

"Rāgo ca doso ca itonidānā, aratī ratī lomahaṃso itojā;
Ito samuṭṭhāya manovitakkā, kumārakā dhaṅkamivossajanti.॥2॥

"रागश्च दोषश्च इतो निदानौ, अरति: रति: रोमहर्ष: इतोज: ।
इत: समुत्थाय मनोवितर्का:, कुमारका: ध्वाङ्क्षमिवोत्सजन्ति॥2॥

"राग और द्वेष यहीं (अपने भीतर) उत्पन्न होते हैं और पुण्य-कर्मों में मन का न लगना तथा पाप-कर्मों में मन का लगना एवं भय यहीं से उत्पन्न होते हैं । मन के बुरे वितर्क भी यहीं से उत्पन्न होकर बच्चों के कौवा उड़ाने की भाँति परेशान करते हैं?"॥2॥

Buddha said: 'Passion and hatred have their origin from this body, disgust, delight, and horror arise from this body; arising from this body doubts vex the mind, as children vex a crow.2.

* अस्मादस्थानात् उत्पन्नः जनितः।

"स्नेहजा अत्तसम्भूता, निग्रोधस्सेव खन्धजा।
पुथू विसत्ता कामेसु, मालुवाव विततावने॥2/5/3॥

"Snehajā attasambhūtā, nigrodhasseva khandhajā;
Puthū visattā kāmesu, māluvāva vitatāvane.॥3॥

"स्नेहजा आत्मसम्भूताः, न्यग्रोधस्येव स्कन्धजाः।
पृथवः विसक्ताः कामेषु, मालुका इव वितता वने॥3॥

जैसे बरगद के पेड़ से बरोहें निकलती हैं उसी प्रकार स्नेह (राग) और आत्म-दृष्टि से वे उत्पन्न होते हैं। जंगल में फैली मालुवा लता की भाँति वे विभिन्न प्रकार से काम-भोगों से आसक्त रहते हैं॥3॥

'They originate in desire, they arise in self, like the shoots of the banyan tree; far and wide they are connected with sensual pleasures, like the maluva creeper spread in the wood. 3.

"ये नं पजानन्ति यतोनिदानं, ते नं विनोदेन्ति सुणोहि यक्ख।
ते दुत्तरं ओघमिमं तरन्ति, अतिण्णपुब्बं अपुनब्भवाया''ति॥2/5/4॥

"Ye naṃ pajānanti yatonidānaṃ, te naṃ vinodenti suṇohi yakkha;
Te duttaraṃ oghamimaṃ taranti, atiṇṇapubbaṃ apunabbhavāyā"ti.॥4॥

"ये तं प्रजानन्ति यतोनिदानम्, ते तं विनुदन्ति शृणु यक्ष !
ते दुस्तरम् ओघमिमं तरन्ति, अतीर्णपूर्वम् अपुनर्भवाय" इति॥4॥

हे यक्ष ! सुनो, जो लोग इसके उत्पत्ति-स्थान को जानते हैं, वे उसका अन्त कर देते हैं। वे पहले कभी न पार किए दुस्तर बाढ़ को पार कर जाते हैं । उनका पुनर्जन्म नहीं होता॥4॥

'Those who know whence it arises, drive it away. Listen, O Yakkha! They cross over this stream that is difficult to cross and has not been crossed before, with a view to not being born again.' 4.

सूचिलोमसुत्तं निट्ठितं
(Sūcilomasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2,6) धम्मचरिय-सुत्तं* (Dhammacariyasuttaṃ)

धम्मचरियं ब्रह्मचरियं, एतदाहु वसुत्तमं।
पब्बजितो पि चे होति, अगारा अनगारियं॥2/6/1॥
सो चे मुखरजातिको, विहेसाभिरतो मगो।
जीवितं तस्स पापियो, रजं वड्ढेति अत्तनो॥2/6/2॥

Dhammacariyaṃ brahmacariyaṃ, etadāhu vasuttamaṃ;
Pabbajito pi ce hoti, agārā anagāriyaṃ.॥1॥

So ce mukharajātiko, vihesābhirato mago;
Jīvitaṃ tassa pāpiyo, rajaṃ vaḍḍheti attano.॥2॥

धर्मचर्यं ब्रह्मचर्यम्, एतदाहु: वसूत्तमम्।
प्रव्रजितोऽपि चेत् भवति, अगारादनागार्यम्॥1॥
स चेत् मुखरजातिक:, विहेठाभिरतो मृग:।
जीवितं तस्य पापकम्, रज: वर्धयत्यात्मन:॥2॥

धर्म का आचरण और ब्रह्मचर्य का पालन– इन्हें उत्तम धन कहा गया है । यदि कोई घर बार छोड़कर बिना घर का हो प्रव्रजित भी होता है, किन्तु वह कटुभाषी और जानवर की तरह दूसरों को सताने वाला होता है तो उसका जीवन बुरा है वह अपने मल को बढ़ाता है॥1-2॥

A just life, a religious life, this they call the best gem, if any one has gone forth from house-life to a houseless life. If he be harsh-spoken, and like a beast delighting in injuring others, then the life of such a one is very wicked, and he increases his own pollution. 1.

* धम्मचरियसुत्त=कपिलसुतं वा।

कलहाभिरतो भिक्खु, मोहधम्मेन आवुतो।
अक्खातं पि न जानाति, धम्मं बुद्धेन देसितं॥2/6/3॥

Kalahābhirato bhikkhu, mohadhammena āvuto;
Akkhātaṃ pi na jānāti, dhammaṃ buddhena desitaṃ.॥3॥

कलहाभिरतो भिक्षु:, मोहधर्मेण आवृत:।
आख्यातमपि न जानाति, धर्मं बुद्धेन देशितम्॥3॥

जो भिक्षु झगड़ालू है और मोह से अच्छादित है, वह बुद्ध के उपदिष्ट धर्म को नहीं जानता है॥3॥

A Bhikkhu who delights in quarrelling and is shrouded in folly, does not understand the Dhamma that is preached and taught by Buddha. 2.

विहेसं भावितत्तानं, अविज्जाय पुरक्खतो।
संकिलेसं न जानाति, मग्गं निरयगामिनं॥2/6/4॥

Vihesaṃ bhāvitattānaṃ, avijjāya purakkhato;
Saṃkilesaṃ na jānāti, maggaṃ nirayagāminaṃ.॥4॥

व्यहेठयत भावितत्त्वान्, अविद्यया पुरस्कृत:।
संक्लेशं न जानाति, मार्गं निरयगामिनम्॥4॥

जो अविद्या के वशीभूत हो संयमी लोगों को सताता है, वह यह नहीं जानता कि यह पाप नरक को ले जाने वाला मार्ग है॥4॥

Injuring his own cultivated mind, and led by ignorance, he does not understand that sin is the way leading to hell. 4.

विनिपातं समापन्नो, गब्भा गब्भं तमा तमं।
स वे तादिसको भिक्खु, पेच्च दुक्खं निगच्छति॥2/6/5॥

Vinipātaṃ samāpanno, gabbhā gabbhaṃ tamā tamaṃ;
Sa ve tādisako bhikkhu, pecca dukkhaṃ nigacchati.॥5॥

विनिपातं समापन्न:, गर्भात् गर्भं तमस: तम:।

स वै तादृशको भिक्षु:, प्रेत्य दु:खं निगच्छति* ॥5॥

ऐसा भिक्षु मरने के बाद नरक में पड़ता है और वह एक जन्म से दूसरे जन्म को और अन्धकार से अन्धकार को प्राप्त हो परलोक में दु:ख भोगता है॥5॥

Having gone to calamity, from womb to womb, from darkness to darkness, such a Bhikkhu verily, after passing away, goes to pain. 5.

*निरतां गच्छति इति निगच्छति ।

गूथकूपो यथा अस्स, सम्पुण्णो गणवस्सिको।

यो च एवरूपो अस्स, दुब्बिसोधो हि साङ्गणो॥2/6/6॥

Gūthakūpo yathā assa, sampuṇṇo gaṇavassiko;

Yo ca evarūpo assa, dubbisodho hi sāṅgaṇo.॥6॥

गूथकूपो यथा स्यात्, सम्पूर्णो गणवार्षिक:।

यश्च एवंरूप: स्यात्, दुर्विशोधो हि साङ्गण:* ॥6॥

जो पापी ऐसा होता है कि वह उसी प्रकार शुद्ध नहीं किया जा सकता जैसे कि अनेक वर्षों का भरा गूथ-कूप (=संडास) हो॥6॥

As when there is a pit of excrement that has become full during a number of years,—he who should be such a one full of sin is difficult to purify.6.

* अङ्गण=क्लेश, मलादि। अङ्गणस्स विपाकं यस्य साङ्गणो ।

यं एवरूपं जानाथ, भिक्खवो गेहनिस्सितं।

पापिच्छं पापसङ्कप्पं, पापआचारगोचरं॥2/6/7॥

Yaṃ evarūpaṃ jānātha, bhikkhavo gehanissitaṃ;

Pāpicchaṃ pāpasaṅkappaṃ, pāpaācāragocaraṃ.॥7॥

यमेवरूपं जानीथ, भिक्षव: ! गेहनि:श्रितम्।

पापेच्छुं पापसङ्कल्पम्, पापाचारगोचरम्॥7॥

भिक्षुओं ! जिसे ऐसा जान लो कि यह काम-भोगों में आसक्त है, बुरे विचारों वाला है, बुरे संकल्प वाला है, बुरे आचरण और बुरे की संगति करने वाला है॥7॥

Whom you know to be such a one, O Bhikkhus, a man dependent on a house, having sinful desires, sinful thoughts, and being with sinful deeds and objects, .7.

सब्बे समग्गा हुत्वान, अभिनिब्बज्जियाथ नं।

कारण्डवं निद्धमथ, कसम्बुं अपकस्सथ॥2/6/8॥

Sabbe samaggā hutvāna, abhinibbajjiyātha naṃ;

Kāraṇḍavaṃ niddhamatha, kasambuṃ apakassatha.॥8॥

सर्वे समग्रा: भूत्वा, अभिनिव्राजयताथ तम्।

कारण्डमिव निधमत, कषायाम्बुमपकर्षथ॥8॥

सब एकत्र हो उसे संघ से निष्कासित कर दो, कचरे की तरह दूर कर दो और कूड़े की तरह हटा दो॥8॥

To him do avoid, being all in concord; blow him away as sweepings, put him away as rubbish.8.

ततो पलापे वाहेथ, अस्समणे समणमानिने।
निद्धमित्वान पापिच्छे, पापआचारगोचरे॥2/6/9॥

Tato palāpe vāhetha, assamaṇe samaṇamānine;
Niddhamitvāna pāpicche, pāpaācāragocare.॥9॥

ततः प्रलापान् बाहयत, अश्रमणान् श्रमणमानिनः।
निर्धमाय पापेच्छून्, पापाचारगोचरान्॥9॥

तत्पश्चात् तुच्छ भिक्षुओं को निकाल दो जो कि श्रमण न होते हुए भी श्रमण होने का दम्भ भरते हैं, बुरों का निष्कासन करके जो कि बुरे आचरण और संगति वाले हैं॥9॥

Then remove as chaff those that are no Sraman as, think themselves, blowing away those that have sinful desires and those with sinful deeds and objects.9.

सुद्धा सुद्धेहि संवासं, कप्पयव्हो पतिस्सता।
ततो समग्गा निपका, दुक्खस्सन्तं करिस्सथा ति॥2/6/10॥

Suddhā suddhehi saṃvāsaṃ, kappayavho patissatā;
Tato samaggā nipakā, dukkhassantaṃ karissathā ti.॥10॥

शुद्धाः शुद्धैः संवासम्, कल्पयेत प्रतिश्रिताः।
ततः समग्राः निपकाः*, (यूयं) दुःखस्यान्तं करिष्यथेति॥10॥

सतर्क होकर शुद्ध शुद्धों की संगति करे । तब, मिलजुल कर बुद्धिमान् भिक्षुओं तुम सब दुःख का अन्त कर सकोगे॥10॥

Be pure and live together with the pure, being thoughtful; then agreeing and wise you will put an end to pain.10.

* निपकः=निपठः = बहुत अध्ययन करने वाला भिक्षु ।

धम्मचरियसुत्तं निट्ठितं
(Dhammacariyasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 7) ब्राह्मणधम्मिकसुत्तं (Brāhmaṇadhammikasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो सम्बहुला कोसलका ब्राह्मणमहासाला* जिण्णा वुड्ढा महल्लका अद्धगता वयोअनुप्पत्ता येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदिंसु। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। एकमन्तं निसिन्ना खो ते ब्राह्मणमहासाला भगवन्तं एतदवोचुं – ''सन्दिस्सन्ति नु खो, भो गोतम, एतरहि ब्राह्मणा पोराणानं ब्राह्मणानं ब्राह्मणधम्मे''ति? ''न खो, ब्राह्मणा, सन्दिस्सन्ति एतरहि ब्राह्मणा पोराणानं ब्राह्मणानं ब्राह्मणधम्मे''ति। ''साधु नो भवं गोतमो पोराणानं ब्राह्मणानं ब्राह्मणधम्मं भासतु, सचे भोतो गोतमस्स अगरू''ति। ''तेन हि, ब्राह्मणा, सुणाथ, साधुकं मनसि करोथ, भासिस्सामी''ति। ''एवं, भो''ति खो ते ब्राह्मणमहासाला भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच —

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Atha kho sambahulā kosalakā brāhmaṇamahāsālā jiṇṇā vuḍḍhā mahallakā addhagatā vayoanuppattā yena bhagavā tenupasaṅkamiṃsu; upasaṅkamitvā bhagavatā saddhiṃ sammodiṃsu. Sammodanīyaṃ kathaṃ sāraṇīyaṃ vītisāretvā ekamantaṃ nisīdiṃsu. Ekamantaṃ nisinnā kho te brāhmaṇamahāsālā bhagavantaṃ etadavocuṃ – "sandissanti nu kho, bho gotama, etarahi brāhmaṇā porāṇānaṃ brāhmaṇānaṃ brāhmaṇadhamme"ti? "Na kho, brāhmaṇā, sandissanti etarahi brāhmaṇā porāṇānaṃ brāhmaṇānaṃ brāhmaṇadhamme"ti. "Sādhu no bhavaṃ gotamo porāṇānaṃ brāhmaṇānaṃ brāhmaṇadhammaṃ bhāsatu, sace bhoto gotamassa agarū"ti. "Tena hi, brāhmaṇā, suṇātha, sādhukaṃ manasi karotha, bhāsissāmī"ti. "Evaṃ, bho"ti kho te brāhmaṇamahāsālā bhagavato paccassosuṃ. Bhagavā etadavoca –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवने अनाथपिण्डिकस्य*ऽऽरामे। अथ खलु संबहुला: *कौशलका:* ब्राह्मण-महासारा: जीर्णा: वृद्धा: महल्लका अध्वगता: वयोऽनुप्राप्ता: यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्, उपसङ्क्रम्य भगवता सार्धम् सममोदिषत, सम्मोदनीयां कथां सारणीयां व्यतिसार्य एकान्तं न्यसीदन्। एकान्तं निषण्णा: खलु ते ब्राह्मणमहासारा: भगवन्तम् एतदवोचन् – ''संदृश्यन्ते नु खलु, भो *गौतम* ! एतर्हि ब्राह्मणा: पौराणानां ब्राह्मणधर्मे'' इति? ''न खलु, ब्राह्मणा! संदृश्यन्ते एतर्हि ब्राह्मणा: पौराणानां ब्राह्मणधर्मे'' इति। ''साधु, नो भवान् *गौतम* ! पौराणानां ब्राह्मणानां ब्राह्मणधर्मं भाषतु, सचेत् भवत: *गौतमस्य* अगुरु:'' इति। ''तस्मात् हि, ब्राह्मण:! शृणुत, साधुकं मनसि कुरुत, भाषिष्ये" इति। ''एवम्, भो!'' इति खलु ते ब्राह्मणसारा: भगवन्तं प्रत्यश्रौषु: । भगवान् एतदवोचत् —

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के *जेतवन* आराम में विहार कर रहे थे। तब *कोसल*-जनपद निवासी बहुत से जीर्ण, वृद्ध, बूढ़े, पुरनिया, अवस्था प्राप्त महाधनी ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गए। जाकर भगवान् के साथ कुशल-मंगल की बातें कीं। कुशल-मंगल की बात समाप्त कर एक ओर बैठ गए । एक ओर बैठे हुए उन धनी ब्राह्मणों ने भगवान् से यह कहा–"हे गौतम! क्या इस समय ब्राह्मणों के ब्राह्मण-धर्म में दिखाई देते हैं ?" "ब्राह्मणों ! इस समय ब्राह्मण पुराने ब्राह्मणों के ब्राह्मण-धर्म में दिखाई देते हैं ।" "अच्छा हो कि आप गौतम हमें पुराने ब्राह्मणों ने ब्राह्मण-धर्म को कहें यदि आप गौतम को भारी न हो ।" "तो ब्राह्मणों ! सुनो । भली प्रकार मन में करो, कहूँगा ।" "बहुत अच्छा" कहकर उन धनी ब्राह्मणों ने भगवान को उत्तर दिया । भगवान् ने यह कहा–

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Savatthi, in Jetavana, in the park of Anathapindika. Then many wealthy Brahmaṇas of Kosala, decrepit, elderly, old, advanced in age, or arrived at extreme old age, went to Bhagavān, and having gone to him they talked pleasantly with him, and after having had some pleasant and remarkable talk with him, they sat down apart. Sitting down apart these wealthy Bramanas said this to Bhagavān: 'O venerable Gotama, are the Brahmaṇas now-a-days seening aged in the Brahmanical customs dhamma of the ancient Brahmanas?' Bhagavān answered: 'The Brahmaṇas now-a-days, O Brahmaṇas, are not seen in the Brahmanical customs of the ancient Brahmaṇas.' The Brahmanas said: 'Let the venerable Gotama tell us the Brahmanical customs of the ancient Brahm anas, if it is not inconvenient to the venerable Gotama.' Bhagavān answered: 'Then listen, O Brahmaṇas, pay great attention, I will speak.' 'Yes,' so saying the wealthy Brahmaṇas listened to Bhagavān. Bhagavān said this:

"इसयो पुब्बका आसुं, सञ्ञतत्ता तपस्सिनो।
पञ्च कामगुणे हित्वा, अत्तदत्थमचारिसुं॥2/7/1॥

"Isayo pubbakā āsuṃ, saññatattā tapassino;
Pañca kāmaguṇe hitvā, attadatthamacārisuṃ.॥1॥

"ऋषय: पूर्वका अभूवन्, संयतिता: ते तपस्विन:।
पञ्च कामगुणान् हित्वा, आत्मार्थमचारिषु:॥1॥

"पहले के ऋषि संयमी और अनुतापी थे । पाँच प्रकार के काम-भोगों को त्यागकर आत्म-हित के कार्यों में ही लगे रहे॥1॥

The old sages were self-restrained, penitent; having abandoned the objects of the five senses, they studied their own welfare. 1.

"न पसू ब्राह्मणानासुं, न हिरञ्ञं न धानियं।
सज्झायधनधञ्ञासुं, ब्रह्मं निधिमपालयुं॥2/7/2॥

"Na pasū brāhmaṇānāsuṃ, na hiraññaṃ na dhāniyaṃ;
Sajjhāyadhanadhaññāsuṃ, brahmaṃ nidhimapālayuṃ.॥2॥

"न पशव: ब्राह्मणानामभूवन्, न हिरण्यं न धान्यम्।
स्वाध्याय-धन-धान्यानि अभूवन्, ब्रह्मनिधिमपालयन्॥2॥

"ब्राह्मणों के पास न पशु होते थे, न हिरण्य तथा धान्य । स्वाध्याय करना ही उनका धन-धान्य था । उन्होंने श्रेष्ठ निधि ब्रह्म विहार की रक्षा की॥2॥

There were no cattle for the Brahmaṇas, nor gold, nor corn, but the riches and corn of meditation were for them, and they kept watch over the best treasure.2.

"यं तेसं पकतं आसि, द्वारभत्तं उपट्ठितं।
सद्धापकतमेसानं, दातवे तदमञ्ञिसुं॥2/7/3॥

"Yaṃ tesaṃ pakataṃ āsi, dvārabhattaṃ upaṭṭhitaṃ;
Saddhāpakatamesānaṃ, dātave tadamaññisuṃ.॥3॥

"यतेभ्य: प्रकृतमभूत्, द्वारभक्तमुपस्थितम्।
श्रद्धाप्रकृतमेभ्य:, दातव्यं तम् अमन्यन्॥3॥

उनके लिए जो भोजन श्रद्धा से तैयार कर द्वार पर रखा जाता था, खोजने पर उसे उनको देने योग्य समझते थे॥3॥

What was prepared for them and placed as food at the door, they thought was to be given to those that seek for what has been prepared by faith. 3.

"नानारत्तेहि वत्थेहि, सयनेहावसथेहि च।
फीता जनपदा रट्ठा, ते नमस्सिंसु ब्राह्मणे॥2/7/4॥

"Nānārattehi vatthehi, sayanehāvasathehi ca;
Phītā janapadā raṭṭhā, te namassiṃsu brāhmaṇe.॥4॥

"नानारक्तै: हि वस्त्रै:, शयनैरावसथैश्च।
स्फीता: जनपदा: राष्ट्रा:, तेऽनंसिषु: ब्राह्मणान्॥4॥

समृद्ध जनपदों तथा राष्ट्रों के लोग नाना रंगों के वस्त्रों, शयनों और निवास स्थानों से उन ब्राह्मणों को नमस्कार करते थे ॥4॥

With garments variously coloured, with beds and abodes, prosperous people from the provinces and the whole country worshipped those Brahamanas. 4.

"अवज्झा ब्राह्मणा आसुं, अजेय्या धम्मरक्खिता।
न ने कोचि निवारेसि, कुलद्वारेसु सब्बसो॥2/7/5॥

"Avajjhā brāhmaṇā āsuṃ, ajeyyā dhammarakkhitā;
Na ne koci nivāresi, kuladvāresu sabbaso.॥5॥

"अवध्या: ब्राह्मणा आसन्, अजेया: धर्मरक्षिता:।
न तान् कोऽपि न्यवारयन्, कुलद्वारेषु सर्वश:॥5॥

ब्राह्मण अवध्य, अजेय और धर्म से रक्षित थे । घर के द्वारों पर जाने पर कोई भी कभी उन्हें नहीं रोकता था॥5॥

Inviolable were the Brahmaṇas, invincible, protected by the Dhamma, no one opposed them while standing at the doors of the houses anywhere. 5.

"अट्ठचत्तालीसं वस्सानि, (कोमार) ब्रह्मचरियं चरिंसु ते।
विज्जाचरणपरियेट्ठिं, अचरुं ब्राह्मणा पुरे॥2/7/6॥

"Aṭṭhacattālīsaṃ vassāni, (komāra) brahmacariyaṃ cariṃsu te;
Vijjācaraṇapariyeṭṭhiṃ, acaruṃ brāhmaṇā pure.॥6॥

"अष्टचत्वारिंशत् वर्षाणि, (कौमार:) ब्रह्मचर्यमचारिषु: ते।
विद्याचरणपर्येष्टिमचरन् ब्राह्मणा: पुरा॥6॥

पहले के ब्राह्मण अड़तालीस वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन करते थे और विद्या तथा आचरण की खोज में विचरण किया करते थे॥6॥

For forty-eight years they practised juvenile chastity, the Brahmaṇas formerly went in search of knowledge and exemplary conduct.6.

"न ब्राह्मणा अञ्ञमगमुं, नपि भरियं किणिंसु ते।
सम्पियेनेव संवासं, सङ्गन्त्वा समरोचयुं॥2/7/7॥

"Na brāhmaṇā aññamagamuṃ, napi bhariyaṃ kiṇiṃsu te;
Sampiyeneva saṃvāsaṃ, saṅgantvā samarocayuṃ.॥7॥

"न ब्राह्मणा अन्यमगमन्, नापि भार्यामक्रैषु: ते।
सम्प्रियेनैव संवासम्, संगत्य समरोचेरन्॥7॥

ब्राह्मण पर-स्त्रियों के पास नहीं जाते थे और न वे स्त्रियों को खरीदते थे । वे परस्पर प्रेम करने वाली से सहवास करना पसन्द करें॥7॥

The Brahmaṇas did not marry a woman belonging to another caste, nor did they buy a wife; they chose living together in mutual love after having come together.7.

"अञ्ञत्र तम्हा समया, उतुवेरमणिं पति।
अन्तरा मेथुनं धम्मं, नास्सु गच्छन्ति ब्राह्मणा॥2/7/8॥

"Aññatra tamhā samayā, utuveramaṇiṃ pati;
Antarā methunaṃ dhammaṃ, nāssu gacchanti brāhmaṇā.॥8॥

"अन्यत्र तस्मात् समयात्, ऋतुवैरमणिं प्रति।

अन्तरा मैथुनं धर्मम्, न स्म गच्छन्ति ब्राह्मणाः॥8॥

ब्राह्मण ऋतु समय (मासिक धर्म) को छोड़कर एवं बीच के निषिद्ध समय में मैथुन धर्म नहीं करते थे॥8॥

Excepting from the time about the cessation of the menstruation else the Brahmaṇas did not indulge in sexual happinss.8.

"ब्रह्मचरियं च सीलं च, अज्जवं मद्दवं तपं।

सोरच्चं अविहिंसं च, खन्तिं चापि अवण्णयुं॥2/7/9॥

"Brahmacariyaṃ ca sīlaṃ ca, ajjavaṃ maddavaṃ tapaṃ;

Soraccaṃ avihiṃsaṃ ca, khantiṃ cāpi avaṇṇayuṃ.॥9॥

"ब्रह्मचर्यञ्च शीलञ्च, आर्जवं मार्दवं तपः।

सौरत्यमविहिंसाञ्च, क्षान्तिञ्चापि अवर्णयन्॥9॥

वे ब्रह्मचर्य, शील, ऋजुता, मृदुता, तप, सज्जनता, अहिंसा और क्षमा के प्रशंसक थे॥9॥

They praised chastity and virtue, rectitude, mildness, penance, tenderness, compassion and patience.9.

"यो नेसं परमो आसि, ब्रह्मा दळ्हपरक्कमो।

स वापि मेथुनं धम्मं, सुपिनन्तेपि नागमा॥2/7/10॥

"Yo nesaṃ paramo āsi, brahmā daḷhaparakkamo;

Sa vāpi methunaṃ dhammaṃ, supinantepi nāgamā.॥10॥

"यः तेषां परमोऽऽसीत्, ब्राह्मणः दृढ़पराक्रमः।

स वापि मैथुनं धर्मम्, स्वप्नान्तेऽपि नागमत्॥10॥

उनमें जो श्रेष्ठ और दृढ़ पराक्रमी ब्राह्मण था, उसने स्वप्न में भी कभी मैथुन धर्म नहीं किया॥10॥

He who was the best of them, a strong Brahmaṇa, did not even in sleep indulge in sexual happiness. 10.

"तस्स वत्तमनुसिक्खन्ता, इधेके विञ्ञुजातिका।

ब्रह्मचरियं च सीलं च, खन्तिं चापि अवण्णयुं॥2/7/11॥

"Tassa vattamanusikkhantā, idheke viññujātikā;

Brahmacariyaṃ ca sīlaṃ ca, khantiṃ cāpi avaṇṇayuṃ.॥11॥

"तस्य वृत्तमनुशिक्षन्तः, इहेके विज्ञजातिकाः।

ब्रह्मचर्यञ्च शीलञ्च, क्षान्तिञ्चापि अवर्णयन्॥11॥

उसके आचरण का अनुकरण करते हुए यहाँ कुछ विज्ञ लोगों ने ब्रह्मचर्य, शील और क्षमा की प्रशंसा की॥11॥

Imitating his practices some wise men in this world praised chastity, virtue, and patience.11.

"तण्डुलं सयनं वत्थं, सप्पितेलं च याचिय।

धम्मेन समोधानेत्वा, ततो यञ्ञमकप्पयुं।

"उपट्ठितस्मिं यञ्ञस्मिं, नास्सु गावो हनिंसु ते॥2/7/12॥

"Taṇḍulaṃ sayanaṃ vatthaṃ, sappitelaṃ ca yāciya;
Dhammena samodhānetvā, tato yaññamakappayuṃ.
"Upaṭṭhitasmiṃ yaññasmiṃ, nāssu gāvo haniṃsu te;॥12॥

"तण्डुलं शयनं वस्त्रम्, सर्पितैलञ्च याचित्वा।
धर्मेण समवधाय, ततो यज्ञमकल्पयन्।
"उपस्थिते यज्ञे, न स्म गा: घ्नन्ति ते॥12॥

तब उन्होंने धार्मिक रीति से चावल, शयन, वस्त्र, घी और तेल की याचना कर, उन्हें एकत्र कर यज्ञ का संविधान किया । उन्होंने उस उपस्थित यज्ञ में गायों की हत्या नहीं की॥12॥

Having asked for rice, beds, garments, butter, and oil, and gathered them justly, they made sacrifices out of them and when the sacrifice came on. they did not kill cows.12.

यथा माता पिता भाता, अञ्ञे वापि च ञातका।
गावो नो परमा मित्ता, यासु जायन्ति ओसधा॥2/7/13॥

Yathā mātā pitā bhātā, aññe vāpi ca ñātakā;
Gāvo no paramā mittā, yāsu jāyanti osadhā.॥13॥

यथा माता पिता भ्राता, अन्ये वापि च ज्ञातका:।
गावो न: परमं मित्रम्, याभ्य: जायन्ते औषधय:॥13॥

जैसे माता, पिता, भाई या अन्य भाई-बन्धु हैं, वैसे ही गौवें हमारी परम मित्र हैं जिनसे कि औषधियाँ उत्पन्न होती हैं॥13॥

Like unto a mother, a father, a brother, and other relatives the cows are our best friends, in which medicines are produced.13.

"अन्नदा बलदा चेता, वण्णदा सुखदा तथा ।
एतमत्थवसं ञत्वा, नास्सु गावो हनिंसु ते॥2/7/14॥

"Annadā baladā cetā, vaṇṇadā sukhadā tathā;
Etamatthavasaṃ ñatvā, nāssu gāvo haniṃsu te.॥14॥

"अन्नदा: बलदा: चैते, वर्णदा: सुखदा: तथा ।
एतमर्थवशं ज्ञात्वा, न स्म गा: घ्नन्ति ते॥14॥

ये अन्न, बल, वर्ण (रूप) तथा सुख देने वाली है, इस बात को जानकर उन्होंने गायों की हत्या नहीं की॥14॥

They give food, and they give strength, they give a good complexion and happiness: knowing the real state of this, they did not kill cows.14.

"सुखुमाला महाकाया, वण्णवन्तो यसस्सिनो।
ब्राह्मणा सेहि धम्मेहि, किच्चाकिच्चेसु उस्सुका।
याव लोके अवत्तिंसु, सुखमेधित्थयं पजा॥2/7/15॥

"Sukhumālā mahākāyā, vaṇṇavanto yasassino;
Brāhmaṇā sehi dhammehi, kiccākiccesu ussukā;
Yāva loke avattiṃsu, sukhamedhitthayaṃ pajā.॥15॥

"सुकुमाराः महाकायाः, वर्णवन्तो यशस्विनः।
ब्राह्मणाः स्वैः धर्मैः, कृत्याकृत्येषूत्सुकाः।
यावल्लोकेऽवर्तिषत, सुखमैधत इयं प्रजा॥15॥

कोमल, विशालकाय, सुन्दर तथा यशस्वी ब्राह्मण इन धर्मों से युक्त होकर अपने करणीय कार्यों में जब तक लगे रहे तब तक यह प्रजा सुखी रही॥15॥

They were graceful, large, handsome, renowned, Brahmaṇas by nature, zealous for their several works; as long as they lived in the world, this race prospered.15.

"तेसं आसि विपल्लासो, दिस्वान अणुतो अणुं।
राजिनो च वियाकारं, नारियो समलङ्कता॥2/7/16॥
"रथे चाजञ्ञसंयुते, सुकते चित्तसिब्बने।
निवेसने* निवेसे च, विभत्ते भागसो मिते*॥2/7/17॥

"Tesaṃ āsi vipallāso, disvāna aṇuto aṇuṃ;
Rājino ca viyākāraṃ, nāriyo samalaṅkatā.॥16॥
"Rathe cājañña saṃyutte, sukate cittasibbane;
Nivesane nivese ca, vibhatte bhāgaso mite.॥17॥

"तेषामभूत् विपर्यासः, दृष्टवाऽणुतोऽणुम्।
राजानश्च इवाकारम्, नार्यः समलंकृताः॥16॥
"रथे चाजानेयसंयुक्ते, सुकृते चित्रसीवने।
निवेशने निवेशे च, विभक्ते भागशो मिते॥17॥

धीरे-धीरे राजाओं की सम्पत्ति, सजी-धजी स्त्रियों, अच्छे-अच्छे घोड़े जुते सुन्दर बेल-बूटेदार रथों और बराबर अनेक भागों में बँटे निवासों को देखकर उनमें परिवर्तन आया॥16-17॥

But there was a change in them: after gradually seeing the king's prosperity and adorned women, well-made chariots drawn by noble horses, carpets in variegated colours, palaces and houses. divided into compartments and measured out, .16-17.

• घरवत्थूनि * परिमिते

"गोमण्डलपरिब्यूळ्हं, नारीवरगणायुतं।
उळारं* मानुसं भोगं, अभिज्झायिंसु ब्राह्मणा॥2/7/18॥

"Gomaṇḍalaparibyūḷhaṃ, nārīvaragaṇāyutaṃ;
Uḷāraṃ mānusaṃ bhogaṃ, abhijjhāyiṃsu brāhmaṇā.॥18॥

"गोमण्डलपरिव्यूढम्, नारीवरगणायुतम्।
उदारं* मानुषं भोगम्, अभ्यध्यासिषुः ब्राह्मणाः॥18॥

उन ब्राह्मणों ने गौ-मण्डली से घिरे और सुन्दर नारियों से युक्त, विपुल मानुषी सम्पत्ति का लोभ किया॥18॥

The great human wealth, attended with a number of cows, and combined with a group of beautiful women, the Brahmaṇas became covetous.18.

* उळारं ति विपुलं । बौद्धमिश्र संस्कृत में औदार है।

"ते तत्थ मन्ते गन्थेत्वा, ओक्काकं तदुपागमुं।
पहूतधनधञ्ञोसि, यजस्सु बहु ते वित्तं, यजस्सु बहु ते धनं॥2/7/19॥

"Te tattha mante ganthetvā, okkākaṃ tadupāgamuṃ;
Pahūtadhanadhaññosi, yajassu bahu te vittaṃ; Yajassu bahu te dhanaṃ.॥19॥

"ते तत्र मन्त्रान् ग्रन्थित्वा, *ओक्काकं* तदोपागमन्।
प्रभूतधनधान्योऽसि, यजस्व बहु ते वित्तम्, यजस्व बहु ते धनम्॥19॥

तब वे मन्त्र रच कर इक्ष्वाकु के पास गए और कहा कि तू बहुत धन्य-धान्य वाला है, यज्ञ कर। तेरे पास बहुत सम्पत्ति तथा धन है, यज्ञ कर॥19॥

They then, in this matter, having composed hymns, went to Okkaka, and said: 'Thou hast much wealth and corn, sacrifice, for great is thy property, sacrifice, for great is thy wealth.'.19.

*ओक्काकराजानमुपसंक्रम्म

"ततो च राजा सञ्ञत्तो, ब्राह्मणेहि रथेसभो।
अस्समेधं पुरिसमेधं, सम्मापासं ˙वाजपेय्यं निरग्गळं˚।
एते यागे यजित्वान, ब्राह्मणानमदा धनं॥2/7/20॥

"Tato ca rājā saññatto, brāhmaṇehi rathesabho;
Assamedhaṃ purisamedhaṃ, sammāpāsaṃ vājapeyyaṃ niraggaḷaṃ;
Ete yāge yajitvāna, brāhmaṇānamadā dhanaṃ.॥20॥

"ततश्च राजा संज्ञप्त:, ब्राह्मणै: रथर्षभ:।
अश्वमेधं पुरुषमेधम्, सम्यक्पाशं वाजपेयं निरर्गलम्।
एतान् यागान् इष्ट्वा, ब्राह्मणेभ्योऽदाद् धनम्॥20॥

तथा रथपति राजा ने ब्राह्मणों द्वारा समझाये जाने पर अश्वमेघ, पुरुषमेघ, सम्मापास (यात्रा-यज्ञ), वाजपेय, निरर्गल (सर्वमेघ) – इन यज्ञों को करके ब्राह्मणों को धन दिया।

And then the king, the lord of chariots, instructed by the Brahmaṇas, brought about as vamedha, purisamedha, sammapasa, and vajapeyya without any hinderance, and having offered these sacrifices he gave the Brahmaṇas wealth: .20.

˙ यात्रायज्ञम् • सुरा पीने का आयोजन ˚ सर्वमेध ।

"गावो सयनं च वत्थं च, नारियो समलङ्कता।
रथे चाजञ्ञसंयुत्ते, सुकते चित्तसिब्बने॥2/7/21॥
"निवेसनानि रम्मानि, सुविभत्तानि भागसो।
नानाधञ्ञस्स पूरेत्वा, ब्राह्मणानमदा धनं॥2/7/22॥

"Gāvo sayanaṃ ca vatthaṃ ca, nāriyo samalaṅkatā;
Rathe cājaññasaṃyutte, sukate cittasibbane.॥21॥
"Nivesanāni rammāni, suvibhattāni bhāgaso;
Nānādhaññassa pūretvā, brāhmaṇānamadā dhanaṃ.॥22॥

"गाव: शयनञ्च वस्त्रञ्च, नार्य: समलंकृता:।
रथे चाजाने संयुक्ते, सुकृते चित्रसीवने॥21॥

"निवेशनानि रम्यानि, सुविभक्तानि भागश:।

नानाधान्यानि पूरयित्वा, ब्राह्मणेभ्योऽदाद् धनम्॥22॥

गौवें, शय्या, वस्त्र, सजी-धजी स्त्रियाँ, उत्तम घोड़े जुते सुसज्जित बेलबूटेदार रथ और धन-धान्य से भर कर, भली प्रकार बराबर-बराबर कोठरियों में विभक्त सुन्दर भवनों को धन के रूप में ब्राह्मणों को दिया॥21-22॥

Cows, beds, garments, and adorned women, and well-made chariots, drawn by noble horses, carpets in variegated colours, Beautiful palaces, well divided into compartments; and having filled these with different sorts of corn, he gave this wealth to the Brahmaṇas. 21-22.

"ते च तत्थ धनं लद्धा, सन्निधिं समरोचयुं।

तेसं इच्छावतिण्णानं, भिय्यो तण्हा पवड्ढथ।

ते तत्थ मन्ते गन्थेत्वा, ओक्काकं पुनमुपागमुं॥2/7/23॥

"Te ca tattha dhanaṃ laddhā, sannidhiṃ samarocayuṃ;
Tesaṃ icchāvatiṇṇānaṃ, bhiyyo taṇhā pavaḍḍhatha;
Te tattha mante ganthetvā, okkākaṃ punamupāgamuṃ.॥23॥

"ते च तत्र धनं लब्ध्वा, सन्निधिं समरोचयन् ।

तेषामिच्छावतीर्णानाम्, भूय: तृष्णा प्रावर्धत् ।

ते तत्र मन्त्रान् ग्रन्थित्वा, *ओक्काकं* तदोपागमन्॥23॥

उन्होंने वहाँ धन पाकर संचय करना पसन्द किया । इस प्रकार इच्छा के वशीभूत उन ब्राह्मणों की तृष्णा बहुत बढ़ गयी । वे मन्त्रों की रचना कर पुन: इक्ष्वाकु के पास गए॥23॥

And having thus received wealth wished for a store, and the craving of those who had given way to their wishes increased still more; they then, in this matter, having composed hymns, went again to Okkaka and said: .23.

"यथा आपो च पथवी च, हिरञ्ञं धनधानियं।

एवं गावो मनुस्सानं, परिक्खारो सो हि पाणिनं।

यजस्सु बहु ते वित्तं, यजस्सु बहु ते धनं॥2/7/24॥

"Yathā āpo ca pathavī ca, hiraññaṃ dhanadhāniyaṃ;
Evaṃ gāvo manussānaṃ, parikkhāro so hi pāṇinaṃ;
Yajassu bahu te vittaṃ, yajassu bahu te dhanaṃ.॥24॥

"यथा आपश्च पृथ्वी च, हिरण्यं धनधान्यम्।

एवं गावो मनुष्येभ्य:, परिष्कार: स हि प्राणिनाम्।

यजस्व बहु ते वित्तम्, यजस्व बहु ते धनम्॥24॥

जिस प्रकार जल, पृथ्वी, हिरण्य और धन-धान्य हैं, उसी प्रकार मनुष्यों के लिए गायें हैं । वे प्राणियों के उपभोग की वस्तु हैं, तेरे पास बहुत सम्पत्ति है, यज्ञ कर। तेरे पास बहुत धन है, यज्ञ कर॥24॥

'As water, earth, gold, wealth, and corn, even so are there cows for men, for this is a requisite for living beings; sacrifice, for great is thy property, sacrifice, for great is thy wealth.' 24.

"ततो च राजा सञ्ञत्तो, ब्राह्मणेहि रथेसभो।

नेका सतसहस्सियो, गावो यञ्ञे अघातयि॥2/7/25॥

"Tato ca rājā saññatto, brāhmaṇehi rathesabho;
Nekā satasahassiyo, gāvo yaññe aghātayi.॥25॥

"ततश्च राजा संज्ञप्तः, ब्राह्मणैः रथर्षभः।
नैकशतसहस्राः, गावो यज्ञेऽघातयत्॥25॥

तब उन ब्राह्मणों द्वारा समझाये जाने पर रथपति राजा ने यज्ञ में लाखों गौवों का वध किया॥25॥

And then the king, the lord of chariots, instructed by the Brahmaṇas, caused many hundred thousand cows to be slain in offerings. 25.

"न पादा न विसाणेन, नास्सु हिंसन्ति केनचि।
गावो एळकसमाना, सोरता कुम्भदूहना।
ता विसाणे गहेत्वान, राजा सत्थेन घातयि॥2/7/26॥

"Na pādā na visāṇena, nāssu hiṃsanti kenaci;
Gāvo eḷakasamānā, soratā kumbhadūhanā;
Tā visāṇe gahetvāna, rājā satthena ghātayi.॥26॥

"न पादैः न विषाणैः, नासौ हन्ति केनचित्।
गाव एड़कसमानाः, सूरताः कुम्भदोहनाः।
ताः विषाणैः गृहीत्वा, राजा शस्त्रेण अघातयत्॥26॥

जो गायें न पैर से, न सींग से और न किसी तरह हिंसा करती हैं, जो भेड़ के समान सीधी हैं और घड़े भर दूध देने वाली हैं, उन्हें सींगों से पकड़ कर राजा ने शस्त्र से मारा॥26॥

Not with their feet, nor with their horns do the cows hurt any one in any way, being like goats tender and yielding vessels of milk—still seizing them by the horns the king caused them to be slain with a weapon. 26.

"ततो देवा पितरो च, इन्दो असुररक्खसा।
अधम्मो इति पक्कन्दुं, यं सत्थं निपती गवे॥2/7/27॥

"Tato devā pitaro ca, indo asurarakkhasā;
Adhammo iti pakkanduṃ, yaṃ satthaṃ nipatī gave.॥27॥

ततः देवाः पितरश्च, इन्द्रासुरराक्षसाः।
अधर्म इति प्राक्रन्दिषुः, यं शस्त्रं न्यपतत् गोषु॥27॥

जब गौवों पर शस्त्र-घात हुआ तब देवता, पितर, इन्द्र, असुर तथा राक्षस चिल्ला उठे– "यह अधर्म है!॥27॥

Then the gods, the forefathers, Indras, the Asuras and the Rakkhasas cried out: 'This is injustice,' because of the weapon falling on the cows.27.

"तयो रोगा पुरे आसुं, इच्छा अनसनं जरा।
पसूनं च समारम्भा, अट्ठानवुतिमागमुं॥2/7/28॥

"Tayo rogā pure āsuṃ, icchā anasanaṃ jarā;
Pasūnaṃ ca samārambhā, aṭṭhānavutimāgamuṃ.॥28॥

त्रयः रोगाः पुरा अभूवन्, इच्छा-अनशनं जरा।
पशूनाञ्च समारम्भात्, अष्टनवतिमागमन्॥28॥

पहले केवल तीन रोग थे– इच्छा, भूख और बुढ़ापा। पशुओं की हत्या से अट्ठानबे रोग हो गए॥28॥

There were formerly three diseases: desire, hunger and oldhood, but from the slaying of cattle there came ninety-eight.28.

"एसो अधम्मो* दण्डानं, ओक्कन्तो पुराणो अहु।
अदूसिकायो हञ्ञन्ति, धम्मा धंसन्ति याजका॥2/7/29॥

"Eso adhammo daṇḍānaṃ, okkanto purāṇo ahu;
Adūsikāyo haññanti, dhammā dhaṃsanti yājakā.॥29॥

एष अधर्मो दण्डानाम्, अवक्रान्त: पुराणोऽभूत्।
अद्वेषिका: घ्नन्ति, धर्मात् ध्वंसन्ते याजका:॥29॥

यह हिंसा रूपी अधर्म पुराने समय से चला आ रहा है । पुरोहित निर्दोष गायों की हत्या करते हैं और धर्म से भ्रष्ट होते हैं॥29॥

This injustice of using violence that has come down to us, was old; innocent cows are slain, the sacrificing priests have fallen off from the Dhamma.29.

*पसुसमारम्भसंखातो कायदण्डादीनं तिण्णं दण्डानं अञ्ञतरदण्डभूतो धम्मतो अपेतत्ता अधम्मो।

"एवमेसो अणुधम्मो, पोराणो विञ्ञुगरहितो।
यत्थ एदिसकं पस्सति, याजकं गरहती जनो॥2/7/30॥

"Evameso aṇudhammo, porāṇo viññugarahito;
Yattha edisakaṃ passati, yājakaṃ garahatī jano.॥30॥

"एवमेषोऽणुधर्म:, पुराणो विज्ञगर्हित:।
यत्र एतादृशं पश्यति, याजकं गर्हते जन:॥30॥

इस प्रकार यह नीच कर्म पुराना है और जानकारी द्वारा निन्दित है । लोग जहाँ भी इस प्रकार के पुरोहित को देखते हैं, उसकी निन्दा करते हैं॥30॥

So this old and mean Dhamma is blamed by the wise; where people see such a one, they blame the sacrificing priest.30.

"एवं धम्मे वियापन्ने, विभिन्ना सुद्दवेस्सिका।
पुथू विभिन्ना खत्तिया, पतिं भरियावमञ्ञथ॥2/7/31॥

"Evaṃ dhamme viyāpanne, vibhinnā suddavessikā;
Puthū vibhinnā khattiyā, patiṃ bhariyāvamaññatha.॥31॥

"एवं धर्मे व्यापन्ने, विभिन्ना: शूद्रवैश्यका: ।
पृथव: विभिन्ना: क्षत्रिया:, पतिं भार्या अवामंस्त॥31॥

इस प्रकार धर्म से च्युत होने पर शूद्रों और वेश्यों में फूट हो गई । क्षत्रिय भी विभिन्न भागों में बँट गए । स्त्री पति का अनादर करने लगी॥31॥

So Dhamma being lost, the Suddas and the Vessikas disagreed, the Khattiyas disagreed in manifold ways, the wife despised her husband.31.

"खत्तिया ब्रह्मबन्धू च, ये चञ्ञे गोत्तरक्खिता।
जातिवादं निरंकत्वा, कामानं वसमन्वगुं''ति॥2/7/32॥

"Khattiyā brahmabandhū ca, ye caññe gottarakkhitā;
Jātivādaṃ niraṃkatvā, kāmānaṃ vasamanvaguṃ"ti.॥32॥

"क्षत्रिया: ब्रह्मबान्धवश्च, ये चाऽन्ये गोत्ररक्षिता:।
जातिवादं निराकृत्य, कामानां वशमन्वगमन्" इति॥32॥

क्षत्रिय, ब्राह्मण और दूसरे गोत्र से रक्षित जातिवाद को तोड़ कर विषयों (काम-भोगों) के वशीभूत हो गए॥32॥

The Khattiyas and the Brahmanas and those others who had been protected by their castes, after doing away with their disputes on descent, fell into the power of sensual pleasures.32.

एवं वुत्ते, ते ब्राह्मणमहासाला भगवन्तं एतदवोचुं – ''अभिक्कन्तं, भो गोतम, अभिक्कन्तं, भो गोतम सेय्यथापि भो गोतम, निक्कुजितं वा उक्कुज्जेय्य, पटिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूल्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति एवमेव भोता गोतमेन अनेक परियायेन धम्मो पकासितो । एते मयं भवन्तं गोतमं सरणं गच्छाम, धम्मं च भिक्खुसंघं च । उपासके नो भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेते सरणं गते''ति।

Evaṃ vutte, te brāhmaṇamahāsālā bhagavantaṃ etadavocuṃ "abhikkantaṃ, bho gotama "abhikkantaṃ, bho gotama abhikkantaṃ, bho gotama, Seyyathāpi, bho gotama, nikkujjitaṃ vā ukkujjeyya, paṭicchannaṃ vā vivareyya, mūḷhassa vā maggaṃ ācikkheyya, andhakāre vā telapajjotaṃ dhāreyya, evamevaṃ bhotā gotamena anekapariyāyena dhammo pakāsito. Esāhaṃ bhavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammañca bhikkhusaṅghañca. upāsake no bhavaṃ gotamo dhāretu ajjatagge pāṇupete saraṇaṃ gate"ti.

एवमुक्ते, ते ब्राह्मणमहाशाला: भगवन्तमेतदवोचन् – "अभिकान्तम्, भो *गौतम* ! अभिकान्तम् भो *गौतम* ! तद्यथापि भो *गौतम* ! निकुब्जितं वा उत्कुब्जेत् वा प्रतिच्छन्नं वा विवरेत् (उद्घाटयेत्) मूढाय मार्गं वा आचिक्षेत् अन्धकारे वा तैल-प्रद्योतं धारयेत् चक्षुष्मन्त: रूपाणि पश्येयु: इति, एवमेव भवता *गौतमेन* अनेकपर्यायै: धर्म: प्रकाशित:। एते वयं भवन्तं *गौतमं* शरणं गच्छाम:, धर्मञ्च भिक्षुसंघञ्च । उपासकान् नो भवान् *गौतम* ! धारयतु अद्यतोऽग्रे प्राणपर्यन्तं शरणं गतान्" इति"।

ऐसा कहने पर उन महाधनी ब्राह्मणों ने भगवान् से यह कहा "आश्चर्य है हे गौतम! आश्चर्य है हे गौतम! जैसे कि हे गौतम। उल्टे हुए बर्तन को सीधा कर दे, ढँके हुए को उघाड़ दे, रास्ता भूले हुए को रास्ता बतला दे, अथवा अन्धकार में तेल के प्रदीप को धारण करे, जिससे कि आँख वाले लोग चीजों को देख सकें, ऐसे ही आप गौतम द्वारा अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया गया। ये हम लोग आप गौतम की शरण जाते है; धर्म और भिक्षु-संघ की भी। हमें आप गौतम! आज से जीवन-पर्यन्त शरणागत उपासक धारण करें।"

This having been said, those wealthy Brahmaṇas said to Bhagavān as followsing: 'It is excellent, O venerable Gotama! It is excellent, O venerable Gotama! As one raises what has been overthrown, or reveals what has been hidden, or tells the way to him who has gone astray, or holds out an oil lamp in the dark that those who have eyes may see the objects, even so by the venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illustrated; we take refuge in the venera ble Gotarna, in the Dhamma, and in the sangha of Bhikkhus; may the venerable Gotama receive us as followers upasaka, who from this day for life have taken refuge in him.

ब्राह्मणधम्मिकसुत्तं निट्ठितं
(Brāhmaṇadhammikasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 8) नावासुत्तं (Nāvāsuttaṃ)

यस्मा हि धम्मं पुरिसो विजञ्ञा, इन्दंव नं देवता पूजयेय्य।
सो पूजितो तस्मि पसन्नचित्तो, बहुस्सुतो पातुकरोति धम्मं॥2/8/1॥

Yasmā hi dhammaṃ puriso vijaññā, indaṃva naṃ devatā pūjayeyya;
So pūjito tasmi pasannacitto, bahussuto pātukaroti dhammaṃ.॥1॥

यस्माद्धि धर्मं पुरुषः विजानीत, इन्द्रमिव तं देवता पूजयेत्।
स पूजितः तस्मिन् प्रसन्नचित्तः, बहुश्रुतः प्रादुर्करोति धर्मम्॥1॥

जिससे मनुष्य धर्म को जाने, उसकी उसी प्रकार पूजा करे जिस प्रकार इन्द्र की देवता पूजा करते हैं। वह बहुश्रुत पूजित होने पर उस पर प्रसन्न-चित्त हो धर्म प्रकट करता है॥1॥

A man should worship him from whom he learns the Dhamma, as the gods worship Indra; the learned man being worshipped and pleased with him, makes the highest Dhamma manifest. 1.

तदट्ठिकत्वान निसम्म धीरो, धम्मानुधम्मं पटिपज्जमानो।
विञ्ञू विभावी निपुणो च होति, यो तादिसं भजति अप्पमत्तो॥2/8/2॥

Tadaṭṭhikatvāna nisamma dhīro, dhammānudhammaṃ paṭipajjamāno;
Viññū vibhāvī nipuṇo ca hoti, yo tādisaṃ bhajati appamatto.॥2॥

तमर्थीकृत्य निशम्य धीरः, धर्मानुधर्मं प्रतिपद्यमानः।
विज्ञो विभावी निपुणश्च भवति, यः तादृशं भजत्यप्रमत्तः॥2॥

जो बुद्धिमान व्यक्ति उस प्रकार के गुरु की सतर्कता के साथ संगति करता है, मन लगाकर उसकी बातों को सुनता है और धर्म के अनुसार आचरण करता है तो समझदार और निपुण हो जाता है॥2॥

Having heard and considered that Dhamma, the wise man practising the Dhamma that is in accordance with the highest Dhamma, becomes learned, expert, and skilful, strenuously associating with such a learned teacher. 2.

खुद्दं च बालं उपसेवमानो, अनागतत्थं च उसूयकं च।
इधेव धम्मं अविभावयित्वा, अवितिण्णकङ्खो मरणं उपेति॥2/8/3॥

Khuddaṃ ca bālaṃ upasevamāno, anāgatatthaṃ ca usūyakaṃ ca;
Idheva dhammaṃ avibhāvayitvā, avitiṇṇakaṅkho maraṇaṃ upeti.॥3॥

क्षुद्रञ्च बालमुपसेवमानोऽनागतार्थञ्च असूयकञ्च।
इहैव धर्मम् अविभाव्य, अवितीर्णकांक्षः मरणमुपैति॥3॥

जो क्षुद्र, मूर्ख, अर्थ को न समझने वाले और ईर्ष्यालु गुरु की संगति करता है, वह यहीं धर्म को बिना समझे ही, शंकाओं को बिना दूर किए ही, मृत्यु को प्राप्त हो जाता है॥3॥

He who serves a low teacher, a fool who has not understood the meaning, and who is envious, goes to death, not having overcome doubt, and not having understood the Dhamma. 3.

यथा नरो आपगमोतरित्वा, महोदकं सलिलं सीघसोतं।
सो वुय्हमानो अनुसोतगामी, किं सो परे सक्खति तारयेतुं॥2/8/4॥

Yathā naro āpagamotaritvā, mahodakaṃ salilaṃ sīghasotaṃ;

So vuyhamāno anusotagāmī, kiṃ so pare sakkhati tārayetuṃ.॥4॥

यथा नरोऽऽपगामवतीर्य, महोदकां सलिलां शीघ्रस्रोतसाम्।
स उह्यमानोऽनुस्रोतोगामी, किं स परान् शक्नोति तारयितुम्॥4॥

जो मनुष्य तेज बहने वाली विशाल नदी में उतरकर धारा के साथ बह रहा है, वह दूसरों को बहा ले जाता हुआ किस प्रकार तार सकता है ?॥4॥

As a man, after descending into a river, a turgid water with a rapid current, is borne along following the current,—how will he be able to put others across?.4.

तथेव धम्मं अविभावयित्वा, बहुस्सुतानं अनिसामयत्थं।
सयं अजानं अवितिण्णकङ्खो, किं सो परे सक्खति निज्झपेतुं॥2/8/5॥

Tatheva dhammaṃ avibhāvayitvā, bahussutānaṃ anisāmayatthaṃ;
Sayaṃ ajānaṃ avitiṇṇakaṅkho, kiṃ so pare sakkhati nijjhapetuṃ.॥5॥

तथैव धर्ममविभाव्य, बहुश्रुतेभ्य: अनिशामितार्थम् ।
स्वयमजाननवितीर्णकाक्ष:, किं स परान् शक्नोति निदिध्यासितुम्॥5॥

उसी प्रकार जिसने धर्म को नहीं समझा है और बहुश्रुतों से अर्थ को नहीं सुना है । बिना स्वयं समझे और शंकाओं को दूर किए वह दूसरों को क्या बता सकता है॥5॥

Even so how will a man, not having understood the Dhamma, and not attending to the explanation of the learned and not knowing it himself, not having overcome doubt, be able to make others understand it? .5.

यथापि नावं दळ्हमारुहित्वा, फियेन रित्तेन समङ्गिभूतो।
सो तारये तत्थ बहूपि अञ्ञे, तत्रूपयञ्ञू कुसलो मुतीमा॥2/8/6॥
एवं पि यो वेदगु भावितत्तो, बहुस्सुतो होति अवेधधम्मो*।
सो खो परे निज्झपये पजानं, सोतावधानूपनिसूपपन्ने* ॥2/8/7॥

Yathāpi nāvaṃ daḷhamāruhitvā, phiyena rittena samaṅgibhūto;
So tāraye tattha bahūpi aññe, tatrūpayaññū kusalo mutīmā.॥6॥
Evaṃ pi yo vedagu bhāvitatto, bahussuto hoti avedhadhammo;
So kho pare nijjhapaye pajānaṃ, sotāvadhānūpanisūpapanne.॥7॥

यथापि नावं दृढामारुह्य, *फियेन** रित्तेन* समाङ्गीभूत:।
स तारयेत् तत्र बहूनपि अन्यान्, तत्रोपायज्ञ: कुशलो मतिमान्॥6॥
एवमपि यो वेदगो भावितात्मा, बहुश्रुत: भवति अवेध्यधर्म:।
स खलु परान् निध्यापयेत् प्रजासु, श्रोतावधानोपनिषदुपपन्नान्॥7॥

जिस प्रकार पतवार और डाँडों से युक्त मजबूत नाँव पर चढ़कर चतुर, बुद्धिमान् नाविक उससे अन्य लोगों को भी पार कराता है, उसी प्रकार ज्ञानी, संयमी बहुश्रुत सांसारिक बातों से अविचलित रहता है। सुनने के लिए इच्छुक योग्य लोगों को धर्म सिखाना चाहिए॥6-7॥

As one, having gone on board a strong ship, provided with oars and rudder, carries across in it many others, knowing the way to do it, and being expert and thoughtful, So also he who is

accomplished, of a cultivated mind, learned, intrepid, makes others endowed with attention and assiduity understand it, knowing it himself. 6-7.

* फियेनाति दब्बिपदरेन = डॉड (नौकाङ्ग), स्फीतेन • रितेन ति वेळुदण्डेन = बांस का दण्ड़

* अवेधधम्मो ति अट्ठहि लोकधम्मेहि अकम्पः ।

· सोतमोदहनेन च मग्गफलानं उपनिस्सयेन न उपपन्ने ।

तस्मा हवे सप्पुरिसं भजेथ, मेधाविनञ्चेव बहुस्सुतं च।
अञ्ञाय अत्थं पटिपज्जमानो, विञ्ञातधम्मो स सुखं लभेथाति॥2/8/8॥

Tasmā have sappurisaṃ bhajetha, medhāvinañceva bahussutaṃ ca;
Aññāya atthaṃ paṭipajjamāno, viññātadhammo sa sukhaṃ labhethāti.

तस्मात् ह वै सत्पुरुषं भजेत्, मेधाविनञ्चैव बहुश्रुतञ्च।
आज्ञाय अर्थं प्रतिपद्यमानः, विज्ञातधर्मः स सुखं लभेत इति॥8॥

इसलिए बुद्धिमान्, बहुश्रुत सत्पुरुष की संगति करनी चाहिए, जो अर्थ को समझकर धर्म के अनुसार चलता है। ऐसा वह धर्म को जानकर सुख को प्राप्त करता है॥8॥

Therefore indeed one should cultivate the society of a good man, who is intelligent and learned; he who leads a regular life, having understood what is good and penetrated the Dhamma, will obtain happiness.8.

नावासुत्तं निट्ठितं
(Nāvāsuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 9) किंसीलसुत्तं (Kiṃsīlasuttaṃ)

"किंसीलो किं समाचारो, कानि कम्मानि ब्रूहयं।
नरो सम्मा निविट्ठस्स, उत्तमत्थं च पापुणे॥2/9/1॥

"Kiṃsīlo kiṃsamācāro, kāni kammāni brūhayaṃ;
Naro sammā niviṭṭhassa, uttamatthaṃ ca pāpuṇe".॥1॥

"किंशीलः किं समाचारः, कानि कर्माणि बृंहन् ।
नरः सम्यक् निविष्टः स्यात्, उत्तमार्थञ्च प्राप्नुयात्॥1॥

सारिपुत्त– "किस शील, किस आचरण और किन शुभ कर्मों को बढ़ाने में भली प्रकार लगा हुआ व्यक्ति उत्तमार्थ (अर्हत्व) को प्राप्त करता है" ?॥1॥

By what quality, by what conduct and performing what works, will a man be perfectly established in the commandments and obtain the highest good? .1.

"वुड्ढापचायी* अनुसूयको सिया, कालञ्ञू चस्स गरूनं दस्सनाय।
धम्मिं कथं एरयितं खणञ्ञू, सुणेय्य सक्कच्च सुभासितानि॥2/9/2॥

"Vuḍḍhāpacāyī anusūyako siyā, kālaññū cassa garūnaṃ dassanāya;
Dhammiṃ kathaṃ erayitaṃ khaṇaññū, suṇeyya sakkacca subhāsitāni.॥2॥

"वृद्धापचायी अनसूयकः स्यात्, कालज्ञः च स्यात् गुरूणां दर्शनाय।
धार्मीं कथाम् ईरयतां क्षणज्ञः, शृणुयात् सत्कृत्य सुभाषितानि॥2॥

भगवान्– "वह बड़ों की सेवा कर, ईर्ष्यालु न होकर उचित समय पर गुरुओं का दर्शन करे, धर्म-कथा सुनने का उचित क्षण जाने और कहे गए, उपदेशों को आदर के साथ सुने॥2॥

Let him honour old people, not be envious, let him know the right time for seeing his teacher, and knowing the right moment let him assiduously listen to his religious discourses pronounced and to his well-spoken words. 2.

*चत्तारो बुड्ढो–पञ्ञावुड्ढो, गुणवुड्ढो, जातिवुड्ढो, वयोवुड्ढो ति।

"कालेन गच्छे गरूनं सकासं, थम्भं निरंकत्वा निवातवुत्ति।

अत्थं धम्मं संयमं ब्रह्मचरियं, अनुस्सरे चेव समाचरे च॥2/9/3॥

"Kālena gacche garūnaṃ sakāsaṃ, thambhaṃ niraṃkatvā nivātavutti;
Atthaṃ dhammaṃ saṃyamaṃ brahmacariyaṃ, anussare ceva samācare ca .3.

"कालेन गच्छेत् गुरूणां सकाशम्, स्तम्भं निराकृत्य निर्वातवृत्तिः।
अर्थं धर्मं संयमं ब्रह्मचर्यम्, अनुस्मरेत् चैव समाचरेच्च॥3॥

जड़ता को छोड़कर विनीतभाव से उचित समय पर गुरुजनों के पास जाए और अर्थ, धर्म, संयम तथा ब्रह्मचर्य का स्मरणकर उनका आचरण करे॥3॥

Let him in due time go to the presence of his teacher, let him be humble after casting away obs tinacy, let him remember and practise what is good. the Dhamma, self-restraint and chastity.3.

"धम्मारामो धम्मरतो, धम्मे ठितो धम्मविनिच्छयञ्ञू।

नेवाचरे धम्मसन्दोसवादं, तच्छेहि नीयेथ सुभासितेहि॥2/9/4॥

"Dhammārāmo dhammarato, dhamme ṭhito dhammavinicchayaññū;
Nevācare dhammasandosavādaṃ, tacchehi nīyetha subhāsitehi.॥4॥

"धर्मारामो धर्मरतः, धर्मे स्थितः धर्मविनिश्चयज्ञः।
नैवाचरेत् धर्मसन्दोषवादम्, तथ्यैः हि नयताम् सुभाषितैः॥4॥

वह धर्म में रमते हुए, धर्म में रत हो, धर्म में स्थित हो, धार्मिक विनिश्चय को जानते हुए, धर्म को दूषित करने वाली चर्चा में न लगे । वास्तविक सदुपदेशों से ही समय व्यतीत करे॥4॥

Let his pleasure-garden be the Dhamma, let him delight in the Dhamma, let him standfast in the Dhamma, let him know how to enquire into the Dhamma, let him not raise any dispute that pollutes the Dhamma, and let him spend his time in well-spoken truths'.4.

"हस्सं जप्पं परिदेवं पदोसं, मायाकतं कुहनं गिद्धि मानं।

सारम्भं कक्कसं कसावं च मुच्छं, हित्वा चरे वीतमदो ठितत्तो॥2/9/5॥

"Hassaṃ jappaṃ paridevaṃ padosaṃ, māyākataṃ kuhanaṃ giddhi mānaṃ;
Sārambhaṃ kakkasaṃ kasāvaṃ ca mucchaṃ, hitvā care vītamado ṭhitatto.॥5॥

"हास्यं जल्पं परिदेवं प्रदोषम्, मायाकृतं कुहनं गृद्धमानम्।
सारम्भं कर्कशं कषायं मूर्च्छां च, हित्वा चरेत् वीतमदः स्थितत्त्वात्॥5॥

वह अट्टहास, गप्प, विलाप, द्वेष, माया, ढोंग, लोलुपता, लड़ाई झगड़े की बातें, कर्कशता (कटु-वचन), राग और मोह का त्याग, मद-रहित, संयमी होकर विचरण करे ॥5॥

Having abandoned ridiculous talk, lamentation, corruption, deceit, hypocrisy, greediness and haughtiness, clamour and harshness, depravity and foolishness, let him live free from infatuation, with a steady mind.5.

"विञ्ञातसारानि सुभासितानि, सुतं च विञ्ञातसमाधिसारं।

न तस्स पञ्ञा च सुतं च वड्ढति, यो साहसो होति नरो पमत्तो॥2/9/6॥

"Viññātasārāni subhāsitāni, sutaṃ ca viññātasamādhisāraṃ;
Na tassa paññā ca sutaṃ ca vaḍḍhati, yo sāhaso hoti naro pamatto.॥6॥

"विज्ञातसाराणि सुभाषितानि, श्रुतञ्च विज्ञातसमाधिसारम्।
न तस्य प्रज्ञा न श्रुतञ्च वर्धते, यः साहसो* भवति नरः प्रमत्तः॥6॥

सुभाषित ज्ञान के सार हैं । समाधि विद्या और ज्ञान का सार है । जो मनुष्य रागी और प्रमादी होता है, उसकी प्रज्ञा (ज्ञान) और श्रुत नहीं बढ़ते हैं॥6॥

The words, the essence of which is understood, are well spoken, and what is heard, if understood, contains the essence of meditation; but the understanding and learning of the man who is hasty and careless, does not increase.6.

* साहस का तात्पर्य राग में लिप्त होना । —अट्ठकथा

"धम्मे च ये अरियपवेदिते रता, अनुत्तरा ते वचसा मनसा कम्मुना च।
ते सन्तिसोरच्चसमाधिसण्ठिता, सुतस्स पञ्ञाय च सारमज्झगू''ति॥2/9/7॥

"Dhamme ca ye ariyapavedite ratā, Anuttarā te vacasā manasā kammunā ca;
Te santisoraccasamādhisaṇṭhitā, Sutassa paññāya ca sāramajjhagū"ti.॥7॥

"धर्मे च ये आर्यप्रवेदिते रताः, अनुत्तराः ते वचसा मनसा कर्मणा च।
ते शान्ति-सौरत्य-समाधि-संस्थिताः, श्रुतस्य प्रज्ञायाश्च सारमध्यगाः" इति॥7॥

जो आर्यों (बुद्धों) के देशित धर्म में रत है, वे मन, वचन तथा शरीर से उत्तम हैं । उन्होंने शान्ति, शिष्टता तथा समाधि में संलग्न होकर श्रुत और प्रज्ञा के सार को प्राप्त कर लिया है॥7॥

Those who delight in the Dhamma, proclaimed by the venerable ones, are unsurpassed in speech, mind and work, they are established in peace, tenderness and meditation, and have gone to the essence of learning and understanding.7.

किंसीलसुत्तं निट्ठितं
(Kiṃsīlasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 10) उट्ठानसुत्तं (Uṭṭhānasuttaṃ)

उट्ठहथ निसीदथ, को अत्थो सुपितेन वो।
आतुरानञ्हि का निद्दा, सल्लविद्धान* रुप्पतं॥2/10/1॥

Uṭṭhahatha nisīdatha, ko attho supitena vo;
Āturānañhi kā niddā, sallaviddhāna ruppataṃ.॥1॥

उत्तिष्ठत निसीदत, कोऽर्थः शयनेन वः।
आतुराणां हि का निद्रा, शल्यविद्धानामालुप्यताम्*॥1॥

उठो, बैठो, सोने से तुम्हें क्या लाभ ? काँटा चुभे पीडित रोगियों को नींद कैसी?॥1॥

Rise, sit up, what is the use of your sleeping; to those who are sick, pierced by the arrow of pain, and suffering, what sleep is there? .1.

* अयसल्ल-अट्ठिसल्ल-दन्तसल्ल-विसाणसल्ल-कट्ठसल्ल-पंचविधं सल्लम् ।
* लुप् का समानार्थ अर्थ लिया जो पीड़ित हो, विनष्ट हो ।

उट्ठहथ निसीदथ, दळ्हं सिक्खथ सन्तिया।
मा वो पमत्ते विञ्ञाय, मच्चुराजा अमोहयित्थ वसानुगे॥2/10/2॥

Uṭṭhahatha nisīdatha, daḷhaṃ sikkhatha santiyā;
Mā vo pamatte viññāya, maccurājā amohayittha vasānuge.॥2॥

उत्तिष्ठत निसीदत, दृढं शिक्षध्वे शान्तये।
मा व: प्रमत्तान् विज्ञाय, मृत्युराजा अमोहयत् वशानुगान्॥2॥

उठो, बैठो, दृढ़ता के साथ शान्ति (निर्वाण) के लिए अभ्यास करो। तुम्हें प्रमत्त जानकर मृत्युराज मोहित करके अपने वश में न कर ले॥2॥

Rise, sit up, learn steadfastly for the sake of peace, let not the king of death, knowing you to be indolent (pamatta), leads you into his power.2.

याय देवा मनुस्सा च, सिता तिट्ठन्ति अत्थिका।
तरथेतं विसत्तिकं, खणो वो मा उपच्चगा।
खणातीता हि सोचन्ति, निरयम्हि समप्पिता॥2/10/3॥

Yāya devā manussā ca, sitā tiṭṭhanti atthikā;
Tarathetaṃ visattikaṃ, khaṇo vo mā upaccagā;
Khaṇātītā hi socanti, nirayamhi samappitā.॥3॥

यस्यां देवा: मनुष्याश्च, श्रिता: तिष्ठन्ति अर्थिका:।
तरेत् एतां विसक्तिकम्, क्षण: व: मा उपात्यगमत् ।
क्षणातीता: हि शोचन्ति, निरये हि समर्पिता:॥3॥

जिस तृष्णा में बँधकर देवता और मनुष्य सदा चक्कर काटा करते हैं, उसे पार कर जाओ, तुम्हारा क्षण न बीत जाय । क्षण बीते हुये लोग नरक में पड़कर शोक करते हैं॥3॥

Conquer this desire which gods and menstand wishing for and are dependent upon, let not the right moment pass by you; for those who have let the right moment pass, will grieve when they have been consigned to hell. 3.

पमादो रजो पमादो, पमादानुपतितो रजो।
अप्पमादेन विज्जाय, अब्बहे सल्लमत्तनोति॥2/10/4॥

Pamādo rajo pamādo, pamādānupatito rajo;
Appamādena vijjāya, abbahe sallamattanoti.॥4॥

प्रमादो रज: प्रमाद:, प्रमादानुपतितं रज:।
अप्रमादेन विद्यया, अपवहेत् शल्यमात्मन इति॥4॥

प्रमाद रज है । प्रमाद के कारण ही रज उत्पन्न होता है । अप्रमाद और विद्या से अपने दु:ख रूपी काँटे को निकाल फेंके॥4॥

Indolence pramada is defilement, continued indolence is defilement; by earnestness appamada and knowledge let one pull out his arrow of passion.4.

उट्ठानसुत्तं निट्ठितं
(Uṭṭhānasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 11) राहुलसुत्तं (Rāhulasuttaṃ)

"कच्चि अभिण्हसंवासा, नावजानासि पण्डितं।
उक्काधारो मनुस्सानं, कच्चि अपचितो तया॥2/11/1॥

"Kacci abhiṇhasaṃvāsā, nāvajānāsi paṇḍitaṃ;
Ukkādhāro manussānaṃ, kacci apacito tayā". ॥1॥

"कच्चित् अभीक्ष्णसंवासात्, नावजानासि पण्डितम्।
उल्काधारी मनुष्याणाम्, कच्चित् अपचित: त्वया"॥1॥

भगवान्– क्या सदा साथ रहने के कारण पण्डित सारिपुत्त का अनादर तो नहीं करते ? क्या मनुष्यों में उल्का (मशाल) धारण करने वाले सारिपुत्त तेरे द्वारा पूजित हैं ?॥1॥

Bhagavān said: 'Do you not despise the wise man, from living with him constantly? Is he who holds up a torch to mankind honoured by thee?' 1.

"नाहं अभिण्हसंवासा, अवजानामि पण्डितं।
उक्काधारो मनुस्सानं, निच्चं अपचितो मया॥2/11/2॥

"Nāhaṃ abhiṇhasaṃvāsā, avajānāmi paṇḍitaṃ;
Ukkādhāro manussānaṃ, niccaṃ apacito mayā". ॥2॥

"नाहम् अभीक्ष्णसंवासात्, अवजानामि पण्डितम्।
उल्काधारी मनुष्याणाम्, नित्यम् अपचितो मया"॥2॥

राहुल– सदा साथ रहने के कारण पण्डित का अनादर तो नहीं करता ? मनुष्यों में उल्का धारण करने वाले मेरे द्वारा पूजित हैं ?॥2॥

Rahula: 'I do not despise the wise man, from living with him constantly; he who holds up a torch to mankind is always honoured by me.' 2.

वत्थुगाथा

पञ्च कामगुणे हित्वा, पियरूपे मनोरमे।
सद्धाय घरा निक्खम्म, दुक्खस्सन्तकरो भव॥2/11/3॥

"Pañca kāmaguṇe hitvā, piyarūpe manorame;
Saddhāya gharā nikkhamma, dukkhassantakaro bhava.॥3॥

पञ्चकामगुणान् हित्वा, प्रियरूपान् मनोरमान्।
श्रद्धया गृहात् निष्क्रम्य, दु:खस्यान्तकरो भव॥3॥

पाँच प्रकार के प्रिय और मनोरम काम-भोगों को त्यागकर श्रद्धापूर्वक घर से निकलकर दु:ख का अन्त करने वाला बनो॥3॥

'Having abandoned the objects of the five senses, the beautiful, the charming, and gone out from thy house with faith, do thou put an end to pain.3.

"मित्ते भजस्सु कल्याणे, पन्तं च सयनासनं।
विवित्तं अप्पनिग्घोसं, मत्तञ्ञू होहि भोजने॥2/11/4॥

"Mitte bhajassu kalyāṇe, pantaṃ ca sayanāsanaṃ;

Vivittaṃ appanigghosaṃ, mattaññū hohi bhojane.॥4॥

"मित्राणि भजस्व कल्याणाणि, प्रान्तञ्च शयनासनम्।

विविक्तमल्पनिर्घोषम्, मात्रज्ञ: भव भोजने॥4॥

उत्तम मित्रों का साथ करो। एकान्त और शब्द-रहित ग्राम से दूर शान्त स्थान में शयनासन लगाओ तथा भोजन में मात्रा जानने वाला बनो॥4॥

'Cultivate the society of virtuous friends and a distant dwelling-place, secluded and quiet; be moderate in food.4.

"चीवरे पिण्डपाते च, पच्चये सयनासने।

एतेसु तण्हमाकासि, मा लोकं पुनरागमि॥2/11/5॥

"Cīvare piṇḍapāte ca, paccaye sayanāsane;

Etesu taṇhaṃ mākāsi, mā lokaṃ punarāgami.॥5॥

"चीवरे पिण्डपाते च, प्रत्यये शयनासने।

एतेषु तृष्णामाऽकार्षी:, मा लोकं पुनरागम:॥5॥

चीवर, पिण्डपात (भोजन), प्रत्यय (औषधि) तथा शयनासन– इनमें तृष्णा मत करो। इस लोक में फिर मत आओ॥5॥

'Robes, alms in bowl, requisites for the sick, a dwelling-place,—do not thirst after these things, that thou mayest not go back to the world again.5.

"संवुतो पातिमोक्खस्मिं, इन्द्रियेसु च पञ्चसु।

सति कायगतात्यत्थु, निब्बिदाबहुलो भव॥2/11/6॥

"Saṃvuto pātimokkhasmiṃ, indriyesu ca pañcasu;

Sati kāyagatātyatthu, nibbidābahulo bhava.॥6॥

"संवृत्त: प्रातिमोक्षे, इन्द्रियेषु च पञ्चसु।

स्मृति: कायगता तेऽस्तु, निर्वेदबहुलो भव॥6॥

प्रातिमोक्ष के नियमों में संयम करो, पाँचों इन्द्रियों में भी कायगता-स्मृति तुझमें बनी रहे। वैराग्य बढ़ाने वाला बनो॥6॥

'Be subdued according to the precepts, and as to the five senses, be attentive as regards thy body, and be full of disgust with the world.6.

"निमित्तं परिवज्जेहि, सुभं रागूपसञ्हितं।

असुभाय चित्तं भावेहि, एकग्गं सुसमाहितं॥2/11/7॥

"Nimittaṃ parivajjehi, subhaṃ rāgūpasañhitaṃ;

Asubhāya cittaṃ bhāvehi, ekaggaṃ susamāhitaṃ.॥7॥

"निमित्तं परिवर्जय, शुभं रागोपसंहितम्।

अशुभाय चित्तं भावय, एकाग्रं सुसमाहितम्॥7॥

राग से युक्त सौन्दर्य के निमित्तों को त्यागो। एकाग्र और समाधिस्थ होकर अशुभ की भावना में चित्त को लगाओ॥7॥

'Avoid signs, what is pleasant and is accompanied with passion, turn thy mind undisturbed and well composed to what is not pleasant.7.

"अनिमित्तं च भावेहि, मानानुसयमुज्जह।
ततो मानाभिसमया, उपसन्तो चरिस्सती''ति॥2/11/8॥

"Animittaṃ ca bhāvehi, mānānusayamujjaha;
Tato mānābhisamayā, upasanto carissatī"ti.॥8॥

"अनिमित्तञ्च भावय, मानानुशयमुज्जहाहि।
ततो मानाभिसमयादुपसन्त: चरिष्यसि" इति॥8॥

निर्वाण की भावना करो । अभिमान के अनुशय (चित्त मल) को निकाल दो । तब अभिमान का अन्त कर उपशान्त होकर विचरण करोगे॥8॥

'Cherish what is signiess, leave the inclinations for pride; then by sacrificing thy pride thou shalt wander calm.' 8.

इत्थं सुदं भगवा आयस्मन्तं राहुलं इमाहि गाथाहि अभिण्हं ओवदतीति।

Itthaṃ sudaṃ bhagavā āyasmantaṃ rāhulaṃ imāhi gāthāhi abhiṇhaṃ ovadatīti.

इत्थं स्वित् भगवान् आयुष्मन्तं *राहुलम्* आभि: गाथाभि: अभीक्ष्णम् अववदति(स्म)इति।

इस प्रकार भगवान् आयुष्मान् राहुल को इन गाथाओं से नित्य उपदेश देते थे ।

Bhagavān repeatedly admonished the venerable Rahula with these stanzas.

राहुलसुत्तं निट्ठितं
(Rāhulasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 12) वङ्गीससुत्तं* (vaṅgīssuttaṃ)

एवं मे सुतं– एकं समयं भगवा आळवियं विहरति अग्गाळवे चेतिये। तेन खो पन समयेन आयस्मतो वङ्गीसस्स उपज्झायो निग्रोधकप्पो नाम थेरो अग्गाळवे चेतिये अचिरपरिनिब्बुतो होति। अथ खो आयस्मतो वङ्गीसस्स रहोगतस्स पटिसल्लीनस्स एवं चेतसो परिवितक्को उदपादि– ''परिनिब्बुतो नु खो मे उपज्झायो उदाहु नो परिनिब्बुतो''ति? अथ खो आयस्मा वङ्गीसो सायन्हसमयं पटिसल्लाना वुट्ठितो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो आयस्मा वङ्गीसो भगवन्तं एतदवोच– ''इध मय्हं, भन्ते, रहोगतस्स पटिसल्लीनस्स एवं चेतसो परिवितक्को उदपादि– 'परिनिब्बुतो नु खो मे उपज्झायो, उदाहु नो परिनब्बुतो''ति। अथ खो आयस्मा वङ्गीसो उट्ठायासना एकंसं चीवरं कत्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा भगवन्तं गाथाय अज्झभासि —

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā āḷaviyaṃ viharati aggāḷave cetiye. Tena kho pana samayena āyasmato vaṅgīsassa upajjhāyo nigrodhakappo nāma thero aggāḷave cetiye

aciraparinibbuto hoti. Atha kho āyasmato vaṅgīsassa rahogatassa paṭisallīnassa evaṃ cetaso parivitakko udapādi – "parinibbuto nu kho me upajjhāyo udāhu no parinibbuto"ti? Atha kho āyasmā vaṅgīso sāyanhasamayaṃ paṭisallānā vuṭṭhito yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ abhivādetvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinno kho āyasmā vaṅgīso bhagavantaṃ etadavoca – "idha mayhaṃ, bhante, rahogatassa paṭisallīnassa evaṃ cetaso parivitakko udapādi – 'parinibbuto nu kho me upajjhāyo, udāhu no parinabbuto'"ti. Atha kho āyasmā vaṅgīso uṭṭhāyāsanā ekaṃsaṃ cīvaraṃ katvā yena bhagavā tenañjaliṃ paṇāmetvā bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् *आलव्यां* विहरति *अग्गालवे* (अग्गालवे) चैत्ये। तस्मिन् खलु पुन: समये आयुष्मत: *वङ्गीसस्य* उपाध्याय: *न्यग्रोधकल्प:* नाम *थेर अग्गालवे* चैत्ये अचिरं परिनिवृत्तोऽभवत् । अथ खलु आयुष्मत: *वङ्गीसस्य* रहोगतस्य प्रतिसंलीनस्य एवं चेतस: परिवितर्क उदपादि– ''परिनिवृत्तो नु खलु मम उपाध्याय उताहो न परिनिवृत्त:''इति ? अथ खलु आयुष्मान् *वङ्गीस:* सायंसमयं प्रतिसंलायनात् उत्थित: यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवन्तम् अभिवाद्य एकान्तं न्यसदत् । एकान्तं निषण्ण: खलु आयुष्मान् *वङ्गीस:* भगवन्तम् एतदवोचत्– ''इह मह्यम्, *भन्ते*! रहोगतस्य प्रतिसंलीनस्य एवं चेतस: परिवितर्क उदपादि– 'परिनिवृत्तो नु खलु मे उपाध्याय उताहो न परिनिवृत्त:'' इति । अथ खलु आयुष्मान् *वङ्गीस* उत्थायासनात् एकांशं चीवरं कृत्वा यत्र भगवान् तत्राञ्जलिं प्रणम्य भगवन्तं गाथयाध्यभाषिष्ट—

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् आलवी में अग्गालव चैत्य में विहार कर रहे थे । उस समय आयुष्मान वंगीस के उपाध्याय (गुरु) न्यग्रोधकल्प नामक स्थविर का कुछ ही दिन पूर्व अग्गालव चैत्य में परिनिर्वाण हो गया था । तब आयुष्मान् वंगीस को एकान्त में ध्यानावस्थित होने पर यह चित्त में वितर्क उत्पन्न हुआ– "क्या मेरे उपाध्याय का परिनिर्वाण हो गया अथवा नहीं ?" आयुष्मान् वंगीस सायं काल ध्यान से उठ कर जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये । जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गये । एक ओर बैठे हुए आयुष्मान् वंगीस ने भगवान् से यह कहा– "भन्ते ! मुझे यहाँ एकान्त में ध्यानावस्थित होने पर ऐसा चित्त-वितर्क उत्पन्न हुआ– क्या मेरे उपाध्याय का परिनिर्वाण हो गया अथवा नहीं ?" आयुष्मान् वंगीस ने आसन से उठकर चीवर को एक कंधे पर करके जिधर भगवान् थे उधर दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करके भगवान् से गाथाओं में कहा–

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Alavi, in the temple of Aggalava. At that time the teacher of the venerable Vaṅgisa, the Thera, by name Nigrodhakappa, had attained bliss not long before akiraparinibbuta. Then this reflection occurred to the venerable Vaṅgisa, while retired and medit ating: Whether my teacher be blessed parinibbuta or whether he be not blessed. Then the venerable Vaṅgisa, at the evening time, coming forth from his retirement went to Bhagavān, and having gone to him he sat down apart after saluting him, and sitt ing down apart the venerable Vaṅgisa said this to Bhagavān: 'Lord, while retired and meditating, this reflect ion occurred to me here: Whether my teacher be blessed or whether he be not blessed.' Then the venerable Vaṅgisa, rising from his seat, throwing his robe over one shoulder and bending his joined hands towards Bhagavān, addressed him in stanzas:

* निग्रोधकप्पसुत्तं-अट्ठकथा

"पुच्छामि सत्थारमनोमपञ्ञं*, दिट्ठेव धम्मे यो विचिकिच्छानं छेत्ता।

अग्गाळवे कालमकासि भिक्खु, ञातो यसस्सी अभिनिब्बुतत्तो॥2/12/1॥

"Pucchāma satthāramanomapaññaṃ, diṭṭheva dhamme yo vicikicchānaṃ chettā;
Aggāḷave kālamakāsi bhikkhu, ñāto yasassī abhinibbutatto.॥1॥

"पृच्छामि शास्तारम *नोमप्रज्ञम्*, दृष्टे एव धर्मे यो विचिकित्सानां छेत्ता।
अग्गालवे कालमकार्षीत् भिक्षु:, ज्ञातो यशस्वी अभिनिवृतो हि ॥1॥

वंगीस – इसी जन्म में जो महाप्रज्ञावान् शास्ता शंकाओं को दूर करने वाले हैं, उनसे मैं उस प्रसिद्ध, यशस्वी, शान्तचित्त भिक्षु के सम्बन्ध में पूछता हूँ जिनका देहान्त अग्गालव में हो गया॥1॥

'We ask the Shasta of excellent understanding: he who in this world had cut off doubt, died at Aggalava, a Bhikkhu, well known, famous, and of a calm mind.1.

* न ओमपञ्ञं, महापञ्ञं ति अनोमप्रज्ञा।

"न्यग्रोधकप्पो इति तस्स नामं, तया कतं भगवा ब्राह्मणस्स।
सो तं नमस्सं अचरि मुत्यपेक्खो, आरद्धवीरियो दळ्हधम्मदस्सी॥2/12/2॥

"Nigrodhakappo iti tassa nāmaṃ, tayā kataṃ bhagavā brāhmaṇassa;
So taṃ namassaṃ acari mutyapekkho, āraddhavīriyo daḷhadhammadassī.॥2॥

"न्यग्रोधकल्प इति तस्य नाम, त्वया कृतं भगवन्! ब्राह्मणस्य।
स त्वां नमन् अचरत् मुक्त्यापेक्ष:, आरब्धवीर्यो दृढधर्मदर्शी॥2॥

हे भगवान् ! आपने ही उस ब्राह्मण का नाम न्यग्रोधकल्प रखा था । उन उद्योगी, दृढ़-धर्मदर्शी ने मुक्ति की कामना से आपको नमस्कार करते हुए विचरण किया॥2॥

'The name "Nigrodhakappa" was given to that Brāhmana by thee, O Bhagavān; he wandered about worshipping thee, having liberation in view, strong. O thou who see Nibbana.2.

"तं सावकं सक्य मयम्पि सब्बे, अञ्ञातुमिच्छाम समन्तचक्खु।
समवट्ठिता नो सवनाय सोता, तुवं नो सत्था त्वमनुत्तरोसि॥2/12/3॥

"Taṃ sāvakaṃ sakya mayampi sabbe, aññātumicchāma samantacakkhu;
Samavaṭṭhitā no savanāya sotā, tuvaṃ no satthā tvamanuttarosi.॥3॥

"तं श्रावकं शाक्य ! वयमपि सर्वे, आज्ञातुमिच्छाम: *समन्तचक्षो* ।
समवस्थितानि न: श्रवणाय श्रोतांसि, त्वं न: शास्ता त्वमनुत्तरोऽसि॥3॥

हे समन्तचक्षु ! शाक्य !! उस श्रावक के सम्बन्ध में हम सब जानना चाहते हैं । हमारे कान सुनने को तैयार हैं । आप हमारे शास्ता हैं, आप सर्वोत्तम हैं॥3॥

'O Sakka, thou all-seeing, we all wish to learn something about this disciple; our ears are ready to hear, you are our Shāstā, thou art incomarable.3.

"छिन्देव नो विचिकिच्छं ब्रूहि मेतं, परिनिब्बुतं वेदय भूरिपञ्ञ।
मज्झेव नो भास समन्तचक्खु, सक्कोव देवान सहस्सनेत्तो॥2/12/4॥

"Chindeva no vicikicchaṃ brūhi metaṃ, parinibbutaṃ vedaya bhūripaññā;
Majjheva no bhāsa samantacakkhu, sakkova devāna sahassanetto.॥4॥

"छिन्द एव नो विचिकित्सां ब्रूहि मामेतम्, परिनिवृत्तं वेदेहि भूरिप्रज्ञ!।
मध्ये एव नो भाषस्व *समन्तचक्षो* ! शक्ररिव देवानां सहस्रनेत्र:॥4॥

हे महाप्रज्ञ ! हमारी शंका दूर करें । यह बतलायें कि वे परिनिर्वाण को प्राप्त हो गये। हे समन्तचक्षु ! जिस प्रकार सहस्रनेत्र इन्द्र देवताओं के बीच बोलता है, उसी प्रकार आप हम लोगों के बीच बोलें॥4॥

'Cut off our doubt, tell me of him, inform us of the blessed, O thou of great understanding; speak in the midst of us, O thou all-seeing, as the thousand-eyed Sakka speaks in the midst of the gods.4.

"ये केचि गन्था इध मोहमग्गा, अञ्ञाणपक्खा विचिकिच्छठाना।
तथागतं पत्वा न ते भवन्ति, चक्खुञ्हि एतं परमं नरानं॥2/12/5॥

"Ye keci ganthā idha mohamaggā, aññāṇapakkhā vicikicchaṭhānā;
Tathāgataṃ patvā na te bhavanti, cakkhuñhi etaṃ paramaṃ narānaṃ.5

"ये केचिद् ग्रन्था इह मोहमार्गा:, अज्ञानपक्षा: विचिकित्सास्थाना: ।
तथागतं प्राप्य न ता: भवन्ति, चक्षु: हि एतत् परमं नराणाम्॥5॥

यहाँ मोह की ओर ले जाने वाली अज्ञान सम्बन्धी, शंका उत्पादक जो कुछ ग्रन्थियाँ हैं, तथागत के पास पहुँचने पर वे सब नष्ट हो जाती हैं । तथागत ही मनुष्यों के उत्तम चक्षु हैं॥5॥

'Whatever ties there are in this world constituting the way to foolishness, combined with ignorance, forming the seat of doubt, they do not exist before Tathagata, for he is the best eye of men.5.

"नो चे हि जातु पुरिसो किलेसे, वातो यथा अब्भधनं विहाने।
तमोवस्स निवुतो सब्बलोको, न जोतिमन्तोपि नरा तपेय्युं॥2/12/6॥

"No ce hi jātu puriso kilese, vāto yathā abbhadhanaṃ vihāne;
Tamovassa nivuto sabbaloko, na jotimantopi narā tapeyyuṃ.॥6॥

"न चेत् हि जातु पुरुष: क्लेशे, वातो यथा अभ्रघनं विहन्यात्।
तमसा एव स्यात् निवृत: सर्वलोक:, न ज्योतिष्मन्तोऽपि नरा: तपेयु:॥6॥

जैसे हवा आकाश से बादलों को दूर कर देती है, वैसे ही यदि आपके समान मनुष्य लोगों की वासनाओं को दूर नहीं करेंगे तो संसार तम से आच्छादित रहेगा और प्रकाशवान् पुरुष भी चमक नहीं पायेंगे॥6॥

'If a man does not for ever dispel the sin as the wind a mass of clouds, all the world will be enveloped in. darkness not even illustrious men will shine.6.

"धीरा च पज्जोतकरा भवन्ति, तं तं अहं वीर तथेव मञ्ञे।
विपस्सिनं जानमुपागमुम्हा, परिसासु नो आविकरोहि कप्पं॥2/12/7॥

"Dhīrā ca pajjotakarā bhavanti, taṃ taṃ ahaṃ vīra tatheva maññe;
Vipassinaṃ jānamupāgamumhā, parisāsu no āvikarohi kappaṃ.॥7॥

"धीराश्च प्रद्योतकरा: भवन्ति, तं त्वामहं *वीर* ! तथैव मन्ये।
विपश्यिनं जाननुपागमाम, परिषत्सु न आविष्कुरु कल्पम्॥7॥

धीर प्रकाश देने वाले होते हैं । हे धीर ! मैं आपको भी वैसा ही समझता हूँ । हम लोग भगवान् को सर्वदर्शी समझकर आये हैं । इस परिषद् में हम लोगों को न्यग्रोधकल्प के विषय में बतलायें॥7॥

'Wise men are light-bringers, therefore, O wise man, I consider thee as such a one; we have come to him who beholds meditation, reveal Kappa to us in the assembly.7.

"खिप्पं गिरं एरय वग्गु वग्गुं, हंसोव पग्गय्ह सणिकं निकूज।
बिन्दुस्सरेन सुविकप्पितेन, सब्बेव ते उज्जुगता सुणोम॥2/12/8॥

"Khippaṃ giraṃ eraya vaggu vagguṃ, haṃsova paggayha saṇikaṃ nikūja;
Bindussarena suvikappitena, sabbeva te ujjugatā suṇoma.॥8॥

"क्षिप्रं गिरमेरय वल्गु वल्गुम्, हंस इव प्रगृह्य शनकै: निकूज।
बिन्दुस्वरेण सुविकल्पितेन, सर्वे एव ते ऋजुगता: शृणुयाम॥8॥

जिस प्रकार हंस जल्दी-जल्दी मधुर वाणी बोलता है, वैसे ही आप शीघ्र स्पष्ट रूप से मधुर-मधुर वाणी बोलें । हम सब उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे॥8॥

'Uplift quickly, O thou beautiful one, thy beautiful voice, like the swans drawing up their necks, sing softly with a rich and well-modulated voice; we will all listen to thee attentively.8.

"पहीनजातिमरणं असेसं, निग्गय्ह धोनं वदेस्सामि धम्मं।
न कामकारो हि पुथुज्जनानं, सङ्खेय्यकारो च तथागतानं॥2/12/9॥

"Pahīnajātimaraṇaṃ asesaṃ, niggayha dhonaṃ vadessāmi dhammaṃ;
Na kāmakāro hi puthujjanānaṃ, saṅkheyyakāro ca tathāgatānaṃ.॥9॥

"प्रहीणजातिमरणमशेषम्, निगृह्य धौतं वादयिष्यामि धर्मम्।
न कामकारो हि पृथक्जनानाम्*, संख्येयकार:* च *तथागतानाम्*॥9॥

आपने सम्पूर्ण जन्म-मृत्यु का नाश किया है । मैं सुपरिशुद्ध आपसे उपदेश के लिए सानुरोध निवेदन करूँगा । पृथक् जनों की इच्छाएँ पूरी नहीं होती । तथागत जानकारी के साथ कर्म करते हैं॥9॥

'Having earnestly called upon him who has completely left birth and death behind and shaken off sin, I will make him proclaim the Dhamma, for ordinary people cannot do what they want, but the Tathagatas act with a purpose. 9.

* जिन्होंने मार्ग और फल अभी तक प्राप्त नहीं किया है । * संख्यावाला, प्रज्ञावाला, पण्डितजन ।

"सम्पन्नवेय्याकरणं तवेदं, समुज्जुपञ्ञस्स समुग्गहीतं।
अयमञ्जली पच्छिमो सुप्पणामितो, मा मोहयी जानमनोमपञ्ञ॥2/12/10॥

"Sampannaveyyākaraṇaṃ tavedaṃ, samujjupaññassa samuggahītaṃ;
Ayamañjalī pacchimo suppaṇāmito, mā mohayī jānamanomapaññā.॥10॥

"सम्पन्नव्याकरणं तवेदम्, समृजुप्रज्ञस्य समुद्गृहीतम्।
अयमञ्जलि: पश्चिम: सुप्रणामित:, मा मोहय जानन् *अनोमप्रज्ञ* ! ॥10॥

हे ऋजुप्रज्ञ ! आपके इस सम्पूर्ण कथन को हमने अच्छी तरह ग्रहण किया है । मेरा अन्तिम प्रणाम है। हे अनोमप्रज्ञ ! हमें भ्रम में न रखें॥10॥

'This full explanation by thee, the completely wise, is accepted, this last clasping of the hands is well bent, O thou of high wisdom, knowing Kappa's transmigration, do not delude us. 10.

"परोवरं अरियधम्मं विदित्वा, मा मोहयी जानमनोमवीर।
वारिं यथा घम्मनि घम्मतत्तो, वाचाभिकङ्खामि सुतं पवस्स॥2/12/11॥

"Parovaraṃ ariyadhammaṃ viditvā, mā mohayī jānamanomavīra;
Vāriṃ yathā ghammani ghammatatto, vācābhikaṅkhāmi sutaṃ pavassa.॥11॥

"परावरम् आर्यधर्मं विदित्वा, मा मोहय जानन् *अनोमवीर* ! ।
वारिं यथा घर्मे घर्मतप्त:, वाचामभिकांक्षामि श्रुतं प्रवर्ष॥11॥

महाप्रज्ञ ! आरम्भ से अन्त तक आर्य-धर्म को जानकर आप हमको भ्रम में न रखें । जिस प्रकार गर्मी के मौसम में गर्मी से पीडित मनुष्य पानी के लिए लालायित हो, उसी प्रकार मैं आपके वचन की आकांक्षा करता हूँ । आप वाणी की वर्षा करें॥11॥

'Having perfectly' comprehended the Dhamma of the venerable ones, do not delude us, O thou of unsurpassed strength, knowing everything; as one in the hot season pained by the heat water, so I long for thy words; send a shower of learning.11.

"यदत्थिकं ब्रह्मचरियं अचरी, कप्पायनो कच्चिस्स तं अमोघं।
निब्बायि सो आदु सउपादिसेसो, यथा विमुत्तो अहु तं सुणोम"॥2/12/12॥

"Yadatthikaṃ brahmacariyaṃ acarī, kappāyano kaccissa taṃ amoghaṃ;
Nibbāyi so ādu saupādiseso, yathā vimutto ahu taṃ suṇoma".॥12॥

"यदर्थिकं ब्रह्मचर्यमचरत्, *कप्पायन:* कश्चित् स्यात् तममोघम्।
निरवात् स उताहो सोऽनुपादिशेष:, यथा विमुक्तोऽभूत् तं शृणुयाम॥12॥

कप्पायन (न्यग्रोधकल्प) ने जिस उद्देश्य के लिए ब्रह्मचर्य का पालन किया, क्या वह सफल हुआ ? क्या वे अनुपादिशेष निर्वाण को प्राप्त हुए ? वे जिस तरह विमुक्त हुये, उसे बतलायें, हम उसे सुनना चाहते हैं॥12॥

'The rich religious life which Kappayana led, has not that been in vain to him, has he been completely extinguished, or is he still with some elements of existence left behind? How he was liberated, that we want to hear.' 12.

"अच्छेच्छि तण्हं इध नामरूपे, (इति भगवा) कण्हस्स* सोतं दीघरत्तानुसयितं।
अतारि जातिं मरणं असेसं", इच्चब्रवी भगवा पञ्चसेट्ठो॥2/12/13॥

"Acchecchi taṇhaṃ idha nāmarūpe, (iti bhagavā) Kaṇhassa sotaṃ dīgharattānusayitaṃ;
Atāri jātiṃ maraṇaṃ asesaṃ," Iccabravī bhagavā pañcaseṭṭho.॥13॥

"अच्छिनत् तृष्णामिह नामरूपे, (इति भगवान्) कृष्णस्य स्रोतसं दीर्घराञ्यनुशयिताम्।
अतारीत् जातिमरणमशेषम्, एतदवोचत् भगवान् पञ्चश्रेष्ठ:॥13॥

वह नाम-रूप की तृष्णारूपी दीर्घकाल से बहने वाली मार की सरिता को नाश कर सारे जन्म-मृत्यु से पार हो गया-पञ्चश्रेष्ठ भगवान् ने यह कहा॥13॥

'He cut off the craving for name and form in this world,'—so said Bhagavān,— 'Kanha's (Mara's) stream, adhered to for a long time, he crossed completely birth and death,' so said Bhagavān, the best of the five Brahmanas.13.

* कण्हनामकस्स मारस्स · प्रथम शिष्य पंचवर्गियों में श्रेष्ठ अथवा श्रद्धा आदि पाँच इन्द्रियों या शील आदि स्कन्धों से श्रेष्ठ होने के कारण पञ्चश्रेष्ठ हैं–यह संगीतिकारों का वक्तव्य है । –अट्ठकथा

"एस सुत्वा पसीदामि, वचो ते इसिसत्तम।
अमोघं किर मे पुट्ठं, न मं वञ्चेसि ब्राह्मणो॥2/12/14॥

"Esa sutvā pasīdāmi, vaco te isisattama;
Amoghaṃ kira me puṭṭhaṃ, na maṃ vañcesi brāhmaṇo.॥14॥

"एतं श्रुत्वा प्रसीदामि, वच: ते ऋषिसत्तम!।
अमोघं किल मे पृष्टम्, न मामववञ्चत ब्राह्मण:॥14॥

वंगीस– हे सातवें ऋषि ! आपकी बात को सुनकर मैं प्रसन्न हूँ । मेरा प्रश्न निरर्थक नहीं हुआ । आप ब्राह्मण ने मुझे धोखा नहीं दिया॥14॥

Vañgisa: 'Having heard thy word, O thou the best of the sants, I am pleased; not in vain have I asked, the Brahmaṇa did not deceive me.14.

"यथावादी तथाकारी, अहु बुद्धस्स सावको।
अच्छिदा मच्चुनो जालं, ततं मायाविनो दळ्हं॥2/12/15॥

"Yathāvādī tathākārī, ahu buddhassa sāvako;
Acchidā maccuno jālaṃ, tataṃ māyāvino daḷhaṃ.॥15॥

"यथावादी तथाकारी, अभूत् बुद्धस्य श्रावकः।
अच्छिनत् मृत्योः जालम्, ततं (विस्तृतं) मायाविनं दृढम्॥15॥

बुद्ध के शिष्य (श्रावक) यथावादी तथाकारी थे। उन्होंने मार के विस्तृत, मायावी, दृढ़ जाल को काट डाला॥15॥

'As he talked so he acted, he was a true disciple of Buddha, he cut as under the outspread strong net of deceitful death.15.

"अद्दसा भगवा आदिं, उपादानस्स कप्पियो।
अच्चगा वत कप्पायनो, मच्चुधेय्यं सुदुत्तरं'' ति॥2/12/16॥

"Addasā bhagavā ādiṃ, upādānassa kappiyo;
Accagā vata kappāyano, maccudheyyaṃ suduttaraṃ"ti.॥16॥

"अद्राक्षीत् भगवान् आदिम्, उपादानस्य *कप्पियः*।
अत्यगमत् वत *कप्पायनः*, मृत्युध्येयं सुदुस्तरम्" इति"॥16॥

भगवान् कप्पिय ने तृष्णा के हेतु को जान लिया था । अहो ! कप्पायन ने अति दुस्तर मृत्यु के राज्य को पार कर लिया॥16॥

'Kappiya Kappayana saw, O Bhagavān, the beginning of attachment, Kappayana verily crossed the realm of death, which is very difficult to cross.' 16.

वङ्गीससुत्तं निट्ठितं
(Vangis-Suttaṃ niṭṭhitaṃ)

(2, 13) सम्मापरिब्बाजनीयसुत्तं* (Sammāparibbājanīyasuttaṃ)

"पुच्छामि मुनिं पहूतपञ्ञं, तिण्णं पारङ्गतं परिनिब्बुतं ठितत्तं।
निक्खम्म घरा पनुज्ज कामे, कथं (भिक्खु) सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य"॥2/13/1॥

"Pucchāmi muniṃ pahūtapaññaṃ, Tiṇṇaṃ pāraṅgataṃ parinibbutaṃ ṭhitattaṃ;
Nikkhamma gharā panujja kāme, kathaṃ bhikkhu Sammā so loke paribbajeyya".॥1॥

"पृच्छामि मुनिं प्रभूतप्रज्ञम्, तीर्णं पारङ्गतम् परिनिवृतं स्थितत्त्वम्।
निष्क्रम्य गृहात् प्रणुद्य कामान्, कथं (भिक्षुः) सम्यक् स लोके परिव्रजेत्"॥1॥

हे प्रभूतप्रज्ञ ! संसार-सागर को पार कर मुक्त, स्थितत्व मुनि से हम पूछते हैं कि काम-भोगों का त्याग कर घर से निकल कर, भिक्षु सम्यक् प्रकार से लोक में कैसे विचरण करेगा ?॥1॥

'We will ask the Muni of great understanding, who has crossed, gone to the other shore, is blessed parinibbuta, and of a firm mind: How does a Bhikkhu wander rightly in the world, after having gone out from his house and driven away desire?' .1.

* महासमयसुत-अपरनाम —अट्ठकथा

"यस्स मङ्गला समूहता, (इति भगवा) उप्पाता सुपिना च लक्खणा च।
सो मङ्गलदोसविप्पहीनो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/2॥

"Yassa maṅgalā samūhatā, (iti bhagavā) Uppātā supinā ca lakkhaṇā ca;
So maṅgaladosavippahīno, Sammā so loke paribbajeyya.॥2॥

"यस्य मङ्गला: समूहता:, (इति भगवान्) उत्पाता: स्वप्नानि च लक्षणानि च।
स मङ्गलदोषविप्रहीण:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥2॥

भगवान्– जिसके मांगलिक कर्मों, (उल्कापात आदि) उत्पादों, स्वप्न की बातों और लक्षण (शास्त्र= सामुद्रिक विद्या) का विश्वास नष्ट हो गया है, जो मंगल दोष (शकुन-अपशकुन) से मुक्त है, वही लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥2॥

'He whose ideas of omens, meteors, dreams and signs are destroyed,'—so said Bhagavān,—' such a Bhikkhu who has abandoned the sinful omens, wanders rightly in the world. 2.

"रागं विनयेथ मानुसेसु, दिब्बेसु कामेसु चापि भिक्खु।
अतिक्कम्म भवं समेच्च धम्मं, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/3॥

"Rāgaṃ vinayetha mānusesu, dibbesu kāmesu cāpi bhikkhu;
Atikkamma bhavaṃ samecca dhammaṃ, sammā so loke paribbajeyya.॥3॥

"रागं विनयेत् मानुषेषु, दिव्येषु कामेषु चापि भिक्षु:।
अतिक्रम्य भवं समेत्य धर्मम्, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥3॥

जो भिक्षु मनुष्य-लोक के कामों तथा दिव्य कामों के प्रति राग त्यागकर धर्म को अच्छी तरह जानकर भव को पार करता है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥3॥

'Let the Bhikkhu subdue his passion for human and divine pleasures, then after conquering existence and understanding the Dhamma, such a one will roam rightly in the world. 3.

"विपिट्ठिकत्वान पेसुणानि, कोधं कदरियं जहेय्य भिक्खु।
अनुरोधविरोधविप्पहीनो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/4॥

"Vipiṭṭhikatvāna pesuṇāni, kodhaṃ kadariyaṃ jaheyya bhikkhu;
Anurodhavirodhavippahīno, sammā so loke paribbajeyya.॥4॥

"विपृष्ठीकृत्य पैशुनानि, क्रोधं कदर्यं जह्यात् भिक्षु:।
अनुरोध-विरोध-विप्रहीण:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥4॥

जो भिक्षु चुगली तथा क्रोध को त्यागकर, कंजूसी छोड़कर, कृपा और विरोध से रहित है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥4॥

'Let the Bhikkhu, after casting behind him slander and anger, abandon avarice and be free from compliance and opposition, then such a one will roam rightly in the world.4.

"हित्वान पियं च अप्पियं च, अनुपादाय अनिस्सितो कुहिञ्चि।

संयोजनियेहि विप्पमुत्तो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/5॥

"Hitvāna piyaṃ ca appiyaṃ ca, anupādāya anissito kuhiñci;
Saṃyojaniyehi vippamutto, sammā so loke paribbajeyya.॥5॥

"हित्वा प्रियञ्चाप्रियञ्च, अनुपादाय अनि:श्रित: कुहचित्।
संयोजनीयेभ्य: विप्रमुक्त:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥5॥

जो भिक्षु प्रिय-अप्रिय को छोड़कर, कहीं भी अनुराग या तृष्णा न करके, बन्धनों से मुक्त होगा, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥5॥

'He who having left behind both what is agreeable and what is disagreeable, not seizing upon anything, is independent in every respect and liberated from bonds, such a one will roam rightly in the world. 5.

"न सो उपधीसु सारमेति, आदानेसु विनेय्य छन्दरागं।
सो अनिस्सितो अनञ्ञनेय्यो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/6॥

"Na so upadhīsu sārameti, ādānesu vineyya chandarāgaṃ;
So anissito anaññaneyyo, sammā so loke paribbajeyya.॥6॥

"न स उपधिषु सारमेति, आदानेषु विनीय छन्दरागम्।
सोऽनि:श्रितोऽनन्यनेय:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥6॥

जो भिक्षु सांसारिक आसक्तियों में सार देखता, परिग्रह के प्रति छन्द-राग त्याग देता है और तृष्णा-रहित होकर दूसरों का अनुसरण नहीं करता है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥6॥

'He does not see any essence in the upadhis. having subdued his wish and passion for attachments, he is independent and not to be led by others, such a one will roam rightly in the world. 6.

"वचसा मनसा च कम्मुना च, अविरुद्धो सम्मा विदित्वा धम्मं।
निब्बानपदाभिपत्थयानो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/7॥

"Vacasā manasā ca kammunā ca, aviruddho sammā viditvā dhammaṃ;
Nibbānapadābhipatthayāno, sammā so loke paribbajeyya.॥7॥

"वचसा मनसा च कर्मणा च, अविरुद्ध: सम्यक् विदित्वा धर्मम्।
निर्वाणपदमभिप्रार्थयमाण:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥7॥

जो भिक्षु वचन, मन तथा कर्म से विरोध न कर, अच्छी तरह धर्म को जान निर्वाण-पद की प्राप्ति की कामना करता है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥7॥

'He who is not opposed to any one in word, thought or deed, who, after having understood the Dhamma perfectly, longs for the state of Nibbana, such a one will roam rightly in the world. 7.

"यो वन्दति मन्ति नुण्णमेय्य, अक्कुट्ठोपि न सन्धियेथ भिक्खु।
लद्धा परभोजनं न मज्जे, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/8॥

"Yo vandati manti nuṇṇameyya, akkuṭṭhopi na sandhiyetha bhikkhu;
Laddhā parabhojanaṃ na majje, sammā so loke paribbajeyya.॥8॥

यो वन्दति मामिति नोन्नमेत्, आक्रुष्टोऽपि न सन्दहेत् भिक्षु:।

लब्ध्वा परभोजनं न माद्येत्, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥8॥

'दूसरे मेरी वन्दना करते हैं'– यह सोचकर जो भिक्षु गर्व नहीं करता, आक्रोश करने पर भी वैमनस्य नहीं करता, दूसरों का भी भोजन प्राप्त कर प्रमत्त नहीं होता, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥8॥

'He who thinking "he salutes me" is not elated, the Bhikkhu who, although abused, does not reflect upon it, and having received food from others does not get intoxicated with pride, such a one will roam rightly in the world. 8.

"लोभं च भवं च विप्पहाय, विरतो छेदनबन्धना च भिक्खु।
सो तिण्णकथंकथो विसल्लो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/9॥

"Lobhaṃ ca bhavaṃ ca vippahāya, virato chedanabandhanā ca bhikkhu;
So tiṇṇakathaṃkatho visallo, sammā so loke paribbajeyya.॥9॥

"लोभञ्च भवञ्च विप्रहाय, विरत: छेदनबन्धनाच्च भिक्षु: ।
स तीर्णकथंकथो विशल्य:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥9॥

जो भिक्षु लोभ और तृष्णा को त्यागकर, वध-बन्धन से रहित होकर, संशय से परे होकर, निष्काम होता है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥9॥

'The Bhikkhu who, after leaving behind covetousness and existence, is disgusted with cutting and binding others, he who has overcome doubt, and is without pain, such a one will roam rightly in the world.9.

"सारुप्पं अत्तनो विदित्वा, नो च भिक्खु हिंसेय्य कञ्चि लोके।
यथा तथियं विदित्वा धम्मं, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/10॥

"Sāruppaṃ attano viditvā, no ca bhikkhu hiṃseyya kañci loke;
Yathā tathiyaṃ viditvā dhammaṃ, sammā so loke paribbajeyya.॥10॥

"सारूप्यमात्मन: विदित्वा, न च भिक्षु: हिंस्यात् कञ्चित् लोके ।
यथातथं विदित्वा धर्मम्, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥10॥

जो भिक्षु अपनी अनुरूपता को जानकर, संसार में किसी की हिंसा न करे और यथार्थ रूप से धर्म को जान ले, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥10॥

'And knowing what becomes him, the Bhikkhu will not harm any one in the world, understanding the Dhamma thoroughly, such a one will roam rightly in the world.10.

"यस्सानुसया न सन्ति केचि, मूला च अकुसला समूहतासे।
सो निरासो अनासिसानो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/11॥

"Yassānusayā na santi keci, mūlā ca akusalā samūhatāse;
So nirāso anāsisāno, sammā so loke paribbajeyya.॥11॥

"यस्यानुशया: न सन्ति केचित्, मूलं ह्यकुशलं समूलं हतञ्च।
स निराशोऽनासक्त:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥11॥

जिस भिक्षु में किसी भी प्रकार की आसक्ति नहीं है, पाप की जड़ें (अकुशल मूल) सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो गई हैं, और जो तृष्णा तथा आसक्ति से रहित है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥11॥

'He to whom there are no affections whatsoever, whose sins are extirpated from the root, he free from desire and not longing for anything, such a one will roam rightly in the world.11.

"आसवखीणो पहीनमानो, सब्बं रागपथं उपातिवत्तो।
दन्तो परिनिब्बुतो ठितत्तो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/12॥

"Āsavakhīṇo pahīnamāno, sabbaṃ rāgapathaṃ upātivatto;
Danto parinibbuto ṭhitatto, sammā so loke paribbajeyya.॥12॥

"आस्रवक्षीण: प्रहीणमाण:, सर्वं रागपन्थानम् उपात्तवृत्त:।
दान्त: परिनिवृत्त: स्थितो हि, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥12॥

जो भिक्षु आस्रव-क्षीण, अभिमान-रहित, सम्पूर्ण रागपथ को पार कर गया है, जो दान्त, उपशान्त और स्थिर है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥12॥

'He whose passions have been destroyed, who is free from pride, who has overcome all the path of passion, is subdued, perfectly happy parinibbuta, and of a firm mind, such a one will wander rightly in the world.12.

"सद्धो सुतवा नियामदस्सी, वग्गगतेसु न वग्गसारि धीरो।
लोभं दोसं विनेय्य पटिघं, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य"॥2/13/13॥

"Saddho sutavā niyāmadassī, vaggagatesu na vaggasāri dhīro;
Lobhaṃ dosaṃ vineyya paṭighaṃ, sammā so loke paribbajeyya.॥13॥

"श्रद्ध: श्रुतिमान् नियामदर्शी, वर्गगतेषु न वर्गसारी धीर:।
लोभं द्वेषं विनीय प्रतिघम्, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥13॥

जो भिक्षु श्रद्धालु, श्रुतिमान, निर्वाणपथदर्शी, दलबन्दियों में किसी का पक्ष न लेने वाला है और जिस धीर ने लोभ, द्वेष तथा प्रतिहिंसा की भावना को त्याग दिया है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥13॥

'The believer, possessed of knowledge, seeing the way leading to Nibbana, who is no partisan among the partisans of the sixty-two philosophical views, wise after subduing covetousness, hatred, such a one will roam rightly in the world.13.

"त्संसुद्धजिनो विवट्टच्छदो, धम्मेसु वसी पारगू अनेजो*।
सङ्खारनिरोधञाणकुसलो , सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य"॥2/13/14॥

"Saṃsuddhajino vivaṭṭacchado, dhammesu vasī pāragū anejo;
Saṅkhāranirodhañāṇakusalo , sammā so loke paribbajeyya".॥14॥

"संशुद्धजिनो विवृतच्छद:, धर्मेषु वशी पारगोऽनेज:।
संस्कारनिरोधज्ञानकुशल: , सम्यक् स लोके परिव्रजेत्"॥14॥

जो भिक्षु सुविशुद्ध, आत्मजयी, खुले छत वाला (अविद्या रूपी छत से मुक्त), धर्मों में वशी, पारंगत, तृष्णा-रहित और संस्कारों के नाश में कुशल है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥14॥

'He who is pure and victorious, who has removed the veil of the world, who is subdued in the Dhammas, has gone to the other shore, is without desire, and skilled in the knowledge of the cessation of the samkharas, such a one will roam rightly in the world.14.

*अनेजो ति आगततण्हाचलनो ।

"अतीतेसु अनागतेसु चापि, कप्पातीतो अतिच्चसुद्धिपञ्ञो।
सब्बायतनेहि विप्पमुत्तो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य॥2/13/15॥

"Atītesu anāgatesu cāpi, kappātīto aticcasuddhipañño;
Sabbāyatanehi vippamutto, sammā so loke paribbajeyya.॥15॥

"अतीतेष्वनागतेषु चापि, कल्पातीत: अतीत्य-शुद्धप्रज्ञ:।
सर्वायतनेभ्य: विप्रमुक्त:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्॥15॥

जो भिक्षु भूत और भविष्य की बातों से परे है, जो अत्यन्त विशुद्ध प्रज्ञा वाला है, सारे आयतनों (बारह आयतनों) से मुक्त है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥15॥

'He who has overcome time in the past and in the future, is of an exceedingly pure understanding, liberated from all the dwelling-places of the mind, such a one will wander rightly in the world.15.

"अञ्ञाय पदं समेच्च धम्मं, विवटं दिस्वान पहानमासवानं।
सब्बुपधीनं परिक्खयानो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्य''॥2/13/16॥

"Aññāya padaṃ samecca dhammaṃ, vivaṭaṃ disvāna pahānamāsavānaṃ;
Sabbupadhīnaṃ parikkhayāno, sammā so loke paribbajeyya".॥16॥

"आज्ञाय पदं समेत्य धर्मम्, विवृतं दृष्ट्वा प्रहाणमास्रवाणाम् ।
सर्वोपधीनां परिक्षयाण:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्"॥16॥

जो भिक्षु उच्च पद को जान, धर्मों को समझ, आस्रवों के प्रहाण से निर्वाण को साफ-साफ देख, सभी आसक्तियों को नष्ट कर देता है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥16॥

'Knowing the step of the four truths, understanding the Dhamma, seeing clearly the abandonment of the passions from the destruction of all the elements of existence upadhi, such a one will roam rightly in the world.' 16.

"अद्धा हि भगवा तथेव एतं, यो सो एवंविहारी दन्तो भिक्खु।
सब्बसंयोजनयोगवीतिवत्तो, सम्मा सो लोके परिब्बजेय्या''ति॥2/13/17॥

"Addhā hi bhagavā tatheva etaṃ, yo so evaṃvihārī danto bhikkhu;
Sabbasaṃyojanayogavītivatto, sammā so loke paribbajeyyā"ti.॥17॥

"अद्धा हि भगवान् तथैव एतत्, य: स एवंविहारी दान्तो भिक्षु:।
सर्वसंयोजनयोगवीतवृत्त:, सम्यक् स लोके परिव्रजेत्" इति॥17॥

निश्चय ही भगवान् ! यह वैसी ही बात है । जो इस प्रकार से विहार करने वाला दान्त, सारे बन्धनों से रहित भिक्षु है, वही इस लोक में भली प्रकार विचरण करेगा॥17॥

'Certainly, O Bhagavān, it is so: whichever Bhikkhu lives in this way, subdued and having overcome all bonds, such a one will roam rightly in the world.' 17.

सम्मापरिब्बाजनीयसुत्तं निट्ठितं।
(Sammāparibbājanīyasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(2, 14) धम्मिकसुत्तं (Dhammikasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो धम्मिको उपासको पञ्चहि उपासकसतेहि सद्धिं येन भगवा तेनुपसङ्कमि;

उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो धम्मिको उपासको भगवन्तं गाथाहि अज्झभासि–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Atha kho dhammiko upāsako pañcahi upāsakasatehi saddhiṃ yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ abhivādetvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinno kho dhammiko upāsako bhagavantaṃ gāthāhi ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम्। एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवनेऽनाथपिण्डकस्य* आरामे। अथ खलु *धम्मिक* उपासक: पञ्चभि उपासकशतै: सार्धं यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसङ्क्रम्य भगवन्तमभिवाद्य एकान्तं न्यसीदत्। एकान्तं निषण्ण: खलु धार्मिक उपासक: भगवन्तं गाथाभिरध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। तब धार्मिक उपासक पाँच सौ उपासकों के साथ जहाँ भगवन् थे, वहाँ गया । जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठे हुए धार्मिक उपासक ने भगवान् से गाथाओं में कहा–

So it was heard by me: once Bhagavān dwelt at Savatthi, in Jetavana, in the park of Anathapindika. Then the follower upasaka Dhammika, together with five hundred followers, went to Bhagavān, and having gone to Bhagavān and saluted him, he sat down apart; sitting down apart the follower Dhammika addressed Bhagavān in stanzas:

"पुच्छामि तं गोतम भूरिपञ्ञ, कथंकरो सावको साधु होति।
यो वा अगारा अनगारमेति, अगारिनो वा पनुपासकासे॥2/14/1॥

"Pucchāmi taṃ gotama bhūripaññā, kathaṃkaro sāvako sādhu hoti;
Yo vā agārā anagārameti, agārino vā panupāsakāse.॥1॥

"पृच्छामि त्वां *गौतम भूरिप्रज्ञ*!, कथंकर: श्रावक: साधु: भवति।
यो वा आगारात् अनागार्यमेति, आगारिणो वा पुनरुपासका इति॥1॥

धम्मिक उपासक– हे महाप्रज्ञावान् गौतम ! मैं आप से पूछता हूँ कि कैसा करने वाला श्रावक अच्छा होता है? घर से निकल कर बेघर होने वाला अथवा घर में रहने वाला उपासक ?॥1॥

'I ask thee, O Gotama of great understanding. How is a Srāvaka disciple to act to be a good one? is It the one who goes from his house to the wilderness, or the followers with a house?.1.

"तुवञ्हि लोकस्स सदेवकस्स, गतिं पजानासि परायणं च।
न चत्थि तुल्यो निपुणत्थदस्सी, तुवञ्हि बुद्धं पवरं वदन्ति॥2/14/2॥

"Tuvañhi lokassa sadevakassa, gatiṃ pajānāsi parāyaṇaṃ ca;
Na catthi tulyo nipuṇatthadassī, tuvañhi buddhaṃ pavaraṃ vadanti.॥2॥

"त्वं हि लोकस्य सदेवकस्य, गतिं प्रजानासि परायणञ्च।
न चास्ति तुल्यो निपुणार्थदर्शी, त्वां हि बुद्धं प्रवरं वदन्ति॥2॥

आप देवों सहित लोक की गति और विमुक्ति को जानते हैं । आपके समान कोई दूसरा निपुण अर्थदर्शी नहीं है, लोग आपको ही श्रेष्ठ बुद्ध कहते हैं॥2॥

'For thou knowest the doings of this world and that of the gods, and the final end; there is nobody like thee seeing the subtle meaning of things; they call thee the excellent Buddha.2.

"सब्बं तुवं ञाणमवेच्च धम्मं, पकासेसि सत्ते अनुकम्पमानो।
विवट्टच्छदोसि समन्तचक्खु, विरोचसि विमलो सब्बलोके॥2/14/3॥

"Sabbaṃ tuvaṃ ñāṇamavecca dhammaṃ, pakāsesi satte anukampamāno;
Vivaṭṭacchadosi samantacakkhu, virocasi vimalo sabbaloke.॥3॥

"सर्वं त्वं ज्ञानमवेत्य धर्मम्, प्रकाशसे सत्त्वेऽनुकम्पमानः।
विवृतच्छदोऽसि *समन्तचक्षो* ! विरोचसे विमलः सर्वलोके॥3॥

आपने धर्म के सम्पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करके प्राणियों पर अनुकम्पा करके उसे प्रकाशित किया । आप खुले छत वाले ज्ञानी और समन्तचक्षु हैं । सारे संसार में निर्मल रूप से सुशोभित हैं॥3॥

'Knowing all knowledge thou hast revealed the Dhamma, having compassion on creatures; thou hast removed the veil of the world, thou art allseeing, thou shinest spotless in all the world.3.

"आगञ्छि ते सन्तिके नागराजा, एरावणो नाम जिनोति सुत्वा।
सोपि तया मन्तयित्वाज्झगमा, साधूति सुत्वान पतीतरूपो*॥2/14/4॥

"Āgañchi te santike nāgarājā, erāvaṇo nāma jinoti sutvā;
Sopi tayā mantayitvājjhagamā, sādhūti sutvāna patītarūpo.॥4॥

"आगमत् ते सान्तिकं नागराजः, *ऐरावणो* नाम *जिन* इति श्रुत्वा।
सोऽपि त्वया मन्त्रयित्वा अध्यगमत्, साधुरिति श्रुत्वा प्रतीतरूपः॥4॥

ऐरावण नागराज भी 'आप जिन हैं', ऐसा सुनकर आपके पास आया, वह भी आपके साथ मंत्रणा कर, धर्म सुनकर प्रसन्न होकर बहुत अच्छा कहकर चला गया॥4॥

'The king of elephants, Eravana by name, hearing that thou wert Jina the Conqueror, came to thy presence, and having conversed with thee he went away delighted, after listening, "Very good!" .4.

* पतीतरुपो-तुट्ठरूपो ।

"राजापि तं वेस्सवणो कुवेरो, उपेति धम्मं परिपुच्छमानो।
तस्सापि त्वं पुच्छितो ब्रूसि धीर, सो चापि सुत्वान पतीतरूपो॥2/14/5॥

"Rājāpi taṃ vessavaṇo kuvero, upeti dhammaṃ paripucchamāno;
Tassāpi tvaṃ pucchito brūsi dhīra, so cāpi sutvāna patītarūpo.॥5॥

"राजापि त्वां *वेस्सवणः* कुबेरः, उपैति धर्म परिपृच्छमाणः।
तस्मै अपि त्वं पृष्टः ब्रवीषि धीर! स चापि श्रुत्वा प्रतीतरूपः॥5॥

राजा वैश्रवण कुबेर भी धर्म पूछने के लिए आप के पास आया था। हे धीर ! उसके प्रश्न का भी उत्तर आपने दिया और वह भी आपकी बात सुनकर प्रसन्न होकर चला गया॥5॥

'Also king Vessavana Kuvera came to ask thee about the Dhamma; him, too, thou, O wise man, answeredst when asked, and he also after listening was delighted.5.

"ये केचिमे तित्थिया वादसीला, आजीवका वा यदि वा निगण्ठा।
पञ्ञाय तं नातितरन्ति सब्बे, ठितो वजन्तं विय सीघगामिं॥2/14/6॥

"Ye kecime titthiyā vādasīlā, ājīvakā vā yadi vā nigaṇṭhā;
Paññāya taṃ nātitaranti sabbe, ṭhito vajantaṃ viya sīghagāmiṃ.॥6॥

"ये केचिदिमे तैर्थिका: वादशीला:, आजीवका: वा यदि वा निर्ग्रन्था: ।

प्रज्ञया त्वां नातितरन्ति सर्वे, स्थितो व्रजन्तमिव शीघ्रगामिनम्॥6॥

यहाँ जो कोई वाद-विवाद करने वाले तैर्थिक हैं, आजीवक या निगण्ठ (निर्ग्रन्थ), वे सभी आपकी प्रज्ञा के समक्ष तुच्छ हैं जैसे शीघ्र चलने वाले के समक्ष खड़ा रहने वाला॥6॥

'All these disputations Titthiyas and Ajivikas and Niganthas do not any of them overcome thee in understanding, as a man standing does not overcome the one that is walking quickly.6.

"ये केचिमे ब्राह्मणा वादसीला, वुद्धा चापि ब्राह्मणा सन्ति केचि।

सब्बे तयि अत्थबद्धा भवन्ति, ये चापि अञ्ञे वादिनो मञ्ञमाना॥2/14/7॥

"Ye kecime brāhmaṇā vādasīlā, vuddhā cāpi brāhmaṇā santi keci;

Sabbe tayi atthabaddhā bhavanti, ye cāpi aññe vādino maññamānā.॥7॥

"ये केचिदिमे ब्राह्मणा: वादशीला:, वृद्धाश्चापि ब्राह्मणा: सन्ति केचित्।

सर्वे त्वयि अर्थबद्धा: भवन्ति, ये चापि अन्ये वादिनो मन्यमाना:॥7॥

जितने भी वाद-विवाद करने वाले ब्राह्मण हैं, जिनमें कुछ वृद्ध ब्राह्मण भी हैं अथवा दूसरे कोई भी, जो अपने को वाद-विवाद में दक्ष मानते हैं, वे सभी अर्थ की बात पूछने के लिए आपके ही पास आते हैं॥7॥

'All these disputations Brahmaṇas, and there are even some old Brahmaṇas, all are bound by thy opinion, and others also that are considered discussion.7.

"अयञ्हि धम्मो निपुणो सुखो च, योयं तया भगवा सुप्पवुत्तो।

तमेव सब्बेपि सुस्सूसमाना, तं नो वद पुच्छितो बुद्धसेट्ठ॥2/14/8॥

"Ayañhi dhammo nipuṇo sukho ca, yoyaṃ tayā bhagavā suppavutto;

Tameva sabbepi sussūsamānā, taṃ no vada pucchito buddhaseṭṭha.॥8॥

"अयं हि धर्मो निपुण: सुखश्च, योऽयं त्वया भगवन् ! सुप्रवृत्त:।

तमेव सर्वेऽपि सुश्रूषमाण:, त्वं नो वद पृष्ट: *बुद्धश्रेष्ठ* !॥8॥

हे भगवान् ! आप द्वारा उपदिष्ट जो यह धर्म है, वह उत्तम और सुखद है । हम सब उसी को सुनने के इच्छुक हैं । हे बुद्धश्रेष्ठ ! पूछने पर हम उसे कहें॥8॥

'This subtle and pleasant Dhamma that has been well proclaimed by thee, O Bhagavān, and which we all long to hear, do thou, O thou best of Buddhas, speak to us when asked.8.

"सब्बेपि मे भिक्खवो सन्निसिन्ना, उपासका चापि तथेव सोतुं।

सुणन्तु धम्मं विमलेनानुबुद्धं, सुभासितं वासवस्सेव देवा''॥2/14/9॥

"Sabbepi me bhikkhavo sannisinnā, upāsakā cāpi tatheva sotuṃ;

Suṇantu dhammaṃ vimalenānubuddhaṃ, subhāsitaṃ vāsavasseva devā".॥9॥

"सर्वेऽपि मे भिक्षव: सन्निषण्णा:, उपासका: चापि तथैव श्रोतुम्।

शृण्वन्तु धर्मं विमलेनानुबुद्धम्, सुभाषितं वासवस्येव देवा:"॥9॥

यहाँ सभी भिक्षु और उपासक सुनने के लिए बैठे हैं । निर्मल बुद्ध के अवगत धर्म को वैसे ही सुनें जैसे कि इन्द्र के सदुपदेश को देवता सुनते हैं॥9॥

'Let all these Bhikkhus and also Upasakas that have sat down to listen, hear the Dhamma learnt Anubuddha by the stainless Buddha, as the gods hear the well-spoken words of Vāsavās (Indras).'9.

सुणाथ मे भिक्खवो सावयामि वो, धम्मं धुतं तं च चराथ सब्बे।
इरियापथं पब्बजितानुलोमिकं, सेवेथ नं अत्थदसो मुतीमा॥2/14/10॥

Suṇātha me bhikkhavo sāvayāmi vo, dhammaṃ dhutaṃ taṃ ca carātha sabbe;
Iriyāpathaṃ pabbajitānulomikaṃ, sevetha naṃ atthadaso mutīmā.॥10॥

शृणुत मे भिक्षव:! श्रावयामि व:, धर्मं धुतं तञ्च चरत सर्वे।
ईर्यापन्थानं प्रव्रजितानुलोमिकम्, सेवध्वमेतमर्थदर्शी मतिमान्॥10॥

भगवान्– भिक्षुओ ! मेरी बात सुनो । मैं तुम्हें सुना रहा हूँ । तुम लोग धर्म और धुत (धुतांग) सबको धारण करो। तुम्हारी चाल-ढाल (ईर्यापथ) प्रव्रजित के अनुकूल हो और जो अर्थदर्शी तथा बुद्धिमान् भिक्षु हैं उनका साथ करो॥10॥

'Listen to me, O Bhikkhus, I will teach you the Dhamma that destroys sin, do you keep it, all of you; let him who looks for what is salutary, the thoughtful, cultivate the mode of life suitable for Pabbajitas.10.

"नो वे विकाले विचरेय्य भिक्खु, गामे च पिण्डाय चरेय्य काले।
अकालचारिञ्हि सजन्ति सङ्गा, तस्मा विकाले न चरन्ति बुद्धा॥2/14/11॥

"No ve vikāle vicareyya bhikkhu, gāme ca piṇḍāya careyya kāle;
Akālacāriñhi sajanti saṅgā, tasmā vikāle na caranti buddhā.॥11॥

"न वै विकाले विचरेत् भिक्षु:, ग्रामञ्च पिण्डाय चरेत् काले।
अकालचारिणं हि सजन्ति सङ्गा:, तस्मात् विकाले न चरन्ति *बुद्धा:*॥11॥

भिक्षु को असमय में घूमना नहीं चाहिए । समय पर गाँव में भिक्षाटन करे । असमय में घूमने वालों को आसक्तियाँ लग जाती हैं इसीलिए असमय में बुद्ध लोग नहीं घूमते हैं॥11॥

'Let not the Bhikkhu walk about at a wrong time, let him go to the village for alms at the right time; for ties ensnare the one that goes at a wrong time, therefore Buddhas do not go at a wrong time.11.

"रूपा च सद्दा च रसा च गन्धा, फस्सा च ये सम्मदयन्ति सत्ते।
एतेसु धम्मेसु विनेय्य छन्दं, कालेन सो पविसे पातरासं॥2/14/12॥

"Rūpā ca saddā ca rasā ca gandhā, phassā ca ye sammadayanti satte;
Etesu dhammesu vineyya chandaṃ, kālena so pavise pātarāsaṃ.॥12॥

"रूपाणि च शब्दाश्च रसाश्च गन्धा:, स्पर्शाश्च ये संमर्दयन्ते सत्त्वान्।
एतेषु धर्मेषु विनीय छन्द:, कालेन स प्राविशेत् प्रातराशम्॥12॥

रूप, शब्द, गन्ध, रस और स्पर्श– जो प्राणियों को मोहित कर लेते हैं, इन बातों में राग त्याग कर समय पर प्रातराश (प्रात: के भोजन) के लिये गाँव में प्रवेश करे॥12॥

'Let not the Bhikkhu walk about at a wrong time, let him go to the village for alms at the right time; for ties ensnare the one that goes at a wrong time, therefore Buddhas do not go at a wrong time.12.

"पिण्डं च भिक्खु समयेन लद्धा, एको पटिक्कम्म रहो निसीदे।
अज्झत्तचिन्ती न मनो बहिद्धा, निच्छारये सङ्गहितत्तभावो॥2/14/13॥

"Piṇḍaṃ ca bhikkhu samayena laddhā, eko paṭikkamma raho nisīde;
Ajjhattacintī na mano bahiddhā, nicchāraye saṅgahitattabhāvo.॥13॥

"पिण्डञ्च भिक्षु: समयेन लब्ध्वा, एक: प्रतिक्रम्य रहसि निसीदेत्।
अध्यात्मचिन्ती: न मनो बहिर्धा, निश्चारयेत् संग्रहीतात्मभाव:॥13॥

भिक्षु समय से प्राप्त भिक्षा को लेकर एकान्त में जो अकेले बैठे, वह अपने भीतर ही मनन करे। मन को बाहर न जाने दे और चित्त को एकाग्र करके रखे॥13॥

'And let the Bhikkhu, after having obtained his food at the right time and returned, sit down alone and privately; reflecting within himself let him not turn his mind to outward things, but be self-collected.13

•सङ्गतितत्तभावो ति सुट्ठ गहितचित्तो ।

"सचे पि सो सल्लपे सावकेन, अञ्ञेन वा केनचि भिक्खुना वा।
धम्मं पणीतं तमुदाहरेय्य, न पेसुणं नोपि परूपवादं॥2/14/14॥

"Sace pi so sallape sāvakena, aññena vā kenaci bhikkhunā vā;
Dhammaṃ paṇītaṃ tamudāhareyya, na pesuṇaṃ nopi parūpavādaṃ.॥14॥

सचेदपि स सल्लपेत् श्रावकेन, अन्येन वा केनचित् भिक्षुणा वा।
धर्मं प्रणीतं तमुदाहरेत्, न पैशुनं नापि परोपवादम्॥14॥

यदि वह किसी श्रावक या अन्य किसी भिक्षु से बातचीत करे, तो उत्तम धर्म की ही बात करे, न चुगली करे और न दूसरे की निन्दा करे॥14॥

'If he speak with a Sravaka or with anybody else, or with a Bhikkhu, let him talk about the excellent Dhamma, but let him not utter slander, nor blaming words against others.14.

"वादं हि एके पटिसेनियन्ति, न ते पसंसाम परित्तपञ्ञे।
ततो ततो ने पसजन्ति सङ्गा, चित्तं हि ते तत्थ गमेन्ति दूरे॥2/14/15॥

"Vādaṃ hi eke paṭiseniyanti, na te pasaṃsāma parittapaññe;
Tato tato ne pasajanti saṅgā, cittaṃ hi te tattha gamenti dūre.॥15॥

"वादं हि एके प्रतिसेनीयन्ते, न तान् प्रशंसाम: परीत्तप्रज्ञान्।
तत: तत: नु प्रसजन्ति सङ्गा:, चित्तं हि ते तत्र गमयन्ति दूरम्॥15॥

कोई-कोई वाद-विवाद किया करते हैं, उन अल्पज्ञों की हम प्रशंसा नहीं करते । इधर-उधर से आसक्तियाँ लग जाती हैं और उनका चित्त उन्हीं वाद-विवादों में ही दूर-दूर तक जाता रहता है॥15॥

'For some utter language opposing others'; those narrow-minded ones we do not praise. Ties from here and there ensnare them and they send their mind far away in that dispute.15.

"पिण्डं विहारं सयनासनं च, आपं च सङ्घाटिरजूपवाहनं।
सुत्वान धम्मं सुगतेन देसितं, सङ्खाय सेवे वरपञ्ञसावको॥2/14/16॥

"Piṇḍaṃ vihāraṃ sayanāsanaṃ ca, āpaṃ ca saṅghāṭirajūpavāhanaṃ;

Sutvāna dhammaṃ sugatena desitaṃ, saṅkhāya seve varapaññasāvako.॥16॥

"पिण्डं विहारं शयनासनञ्च, अपश्च संघाटिरजोऽपवाहनम् ।

श्रुत्वा धर्मं सुगतेन देशितम्, संख्याय सेवेत वरप्रज्ञश्रावकः॥16॥

उत्तम प्रज्ञावाला श्रावक सुगत के उपदिष्ट धर्म को सुन कर भिक्षा, विहार, शयनासन, जल और संघाटी के मैल को धोए– इनका विचार पूर्वक सेवन करे॥16॥

'Let a Sravaka of hIm with the excellent understanding Buddha, after hearing the Dhamma taught by Sugata, discriminately seek for food, a monastery, a bed and a chair, and water for taking away the dirt of his clothes.16.

"तस्मा हि पिण्डे सयनासने च, आपे च सङ्घाटिरजूपवाहने।

एतेसु धम्मेसु अनूपलित्तो, भिक्खु यथा पोक्खरे वारिबिन्दु॥2/14/17॥

"Tasmā hi piṇḍe sayanāsane ca, āpe ca saṅghāṭirajūpavāhane;

Etesu dhammesu anūpalitto, bhikkhu yathā pokkhare vāribindu.॥17॥

"तस्माद्धि पिण्ड-शयनासनेषु च, अप्सु च संघाटिरजोऽपवाहनेषु।

एतेषु धर्मेषु अनुपलिप्तः, भिक्षुः यथा पुष्करे वारिबिन्दुः॥17॥

इसलिये भिक्षा, शयनासन, जल और संघाटी के मैल को धोने जैसी बातों में भिक्षु उसी प्रकार आसक्ति-रहित हो जैसे कि कमल-पत्र पर जल बिन्दु॥17॥

'But without clinging to these things, to food, to bed and chair, to water for taking away the dirt of his clothes, let a Bhikkhu be like a waterdrop on a lotus.17.

"गहट्ठवत्तं पन वो वदामि, यथाकरो सावको साधु होति।

न हेस लब्भा सपरिग्गहेन, फस्सेतुं यो केवलो भिक्खुधम्मो॥2/14/18॥

"Gahaṭṭhavattaṃ pana vo vadāmi, yathākaro sāvako sādhu hoti;

Na hesa labbhā sapariggahena, phassetuṃ yo kevalo bhikkhudhammo.॥18॥

"गृहस्थवृत्तं पुनः वो वदामि, यथाकरः श्रावकः साधुः भवति।

न ह्येष लभ्यः सपरिग्रहेण, स्प्रष्टुं यः केवलो भिक्षुधर्मः॥18॥

अब मैं तुम्हें गृहस्थ-धर्म बतलाता हूँ, ऐसा करने वाला श्रावक अच्छा होता है । जो सम्पूर्ण भिक्षु-धर्म है, उसका पालन, सपरिग्रही (गृहस्थ) से नहीं किया जा सकता॥18॥

'A householder's work I will also tell you, how a Sravaka is to act to be a good one; for that complete Bhikkhu-dhamma cannot be carried out by one who is taken up by worldly occupations.18.

"पाणं न हने न च घातयेय्य, न चानुजञ्ञा हनतं परेसं।

सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं, ये थावरा ये च तसा सन्ति लोके॥2/14/19॥

"Pāṇaṃ na hane na ca ghātayeyya, na cānujaññā hanataṃ paresaṃ;

Sabbesu bhūtesu nidhāya daṇḍaṃ, ye thāvarā ye ca tasā santi loke.॥19॥

"प्राणं न हन्यात् न च घातयेत्, न चानुजानीयात् हनतां परेषाम्।

सर्वेषु भूतेषु निधाय दण्डम्, ये स्थावराः ये च त्रसाः सन्ति लोके॥19॥

संसार में जो स्थावर और जंगम प्राणी हैं, न उनके प्राण की हत्या करे, न मरवाये, और न उन्हें मारने की आज्ञा दे, सभी प्राणियों के प्रति दण्ड त्यागी हो॥19॥

'Let him not kill, nor cause to be killed any living being, nor let him approve of others killing, after having refrained from hurting all creatures, both those that are strong and those that tremble in the world.19.

"ततो अदिन्नं परिवज्जयेय्य, किञ्चि क्वचि सावको बुज्झमानो।
न हारये हरतं नानुजञ्ञा, सब्बं अदिन्नं परिवज्जयेय्य॥2/14/20॥

"Tato adinnaṃ parivajjayeyya, kiñci kvaci sāvako bujjhamāno;
Na hāraye harataṃ nānujaññā, sabbaṃ adinnaṃ parivajjayeyya.॥20॥

"ततोऽदत्तं परिवर्जयेत्, किञ्चित् क्वचित् श्रावक: बुध्यमान:।
न हारयेत् हरन्तं नानुजानीयात्, सर्वमदत्तं परिवर्जयेत्॥20॥

तब दूसरे की समझी जाने वाली किसी चीज को चुराना त्याग दे, न चुराये, और न चुराने वाले को अनुमति ही दे। सब प्रकार की चोरी का त्याग कर दे॥20॥

'Then let the Sravaka abstain from taking anything in any place that has not been given to him, knowing it to belong to another, let him not cause any one to take, nor approve of those that take, let him avoid all sort of theft.20.

"अब्रह्मचरियं परिवज्जयेय्य, अङ्गारकासुं जलितंव विञ्ञू।
असम्भुणन्तो पन ब्रह्मचरियं, परस्स दारं नातिक्कमेय्य॥2/14/21॥

"Abrahmacariyaṃ parivajjayeyya, aṅgārakāsuṃ jalitaṃva viññū;
Asambhuṇanto pana brahmacariyaṃ, parassa dāraṃ na atikkameyya.॥21॥

"अब्रह्मचर्यं परिवर्जयेत्, अङ्गारकर्षुं ज्वलितमिव विज्ञ:।
असंभवन् पुन: ब्रह्मचर्यम्, परस्य दारान् नातिक्रमेत्॥21॥

विज्ञ पुरुष जलते हुए आग के गड्ढे की भाँति अब्रह्मचर्य को छोड़ दे, ब्रह्मचर्य का पालन न कर सकते हुए भी दूसरे की स्त्री का सेवन न करे॥21॥

'Let the wise man avoid an unpurelife as a burning heap of coals; not being able to live a life of chastity, let him not transgress with another man's wife.21.

"सभग्गतो वा परिसग्गतो वा, एकस्स वेको न मुसा भणेय्य।
न भाणये भणतं नानुजञ्ञा, सब्बं अभूतं परिवज्जयेय्य॥2/14/22॥

"Sabhaggato vā parisaggato vā, ekassa veko na musā bhaṇeyya;
Na bhāṇaye bhaṇataṃ nānujaññā, sabbaṃ abhūtaṃ parivajjayeyya.॥22॥

"सभागतो वा परिषद्गतो वा, एकाय वैको न मृषा भणेत्।
न भाषयेत् भणतां नानुजानीयात्, सर्वमभूतं परिवर्जयेत्॥22॥

सभा या परिषद् में जाकर एक दूसरे के लिए झूठ न बोले और न बोलने वाले को अनुमति दे, सब प्रकार के असत्य-भाषण को त्याग दे॥22॥

'Let no one speak falsely to another in the hall of justice or in the hail of the assembly, let him not cause any one to speak falsely, nor approve of those that speak falsely, let him avoid all sort of untruth.22.

मज्जं च पानं न समाचरेय्य, धम्मं इमं रोचये यो गहट्ठो।
न पाययेय पिवतं नानुजञ्ञा, उम्मादनन्तं इति नं विदित्वा॥2/14/23॥

"Majjaṃ ca pānaṃ na samācareyya, dhammaṃ imaṃ rocaye yo gahaṭṭho;
Na pāyaye pivataṃ nānujaññā, ummādanantaṃ iti naṃ viditvā.॥23॥

मद्यञ्च पानं न समाचरेत्, धर्ममिमं रोचेत यो गृहस्थः।
न पाययेत् पिबतां नानुजानीयात्, उन्मादकमिदमिति तं विदित्वा॥23॥

जो गृहस्थ इस धर्म को पसन्द करता हो वह शराब का पान न करे, न पिलाये और न पीने वाले के लिए अनुमति दे कि 'यह उन्मादक है' – ऐसा उसे जानकर॥23॥

'Let the householder who approves of this Dhamma, not give himself to intoxicating drinks; let him not cause others to drink, nor approve of those that drink, knowing it to end in madness.23.

"मदा हि पापानि करोन्ति बाला, कारेन्ति चञ्ञेपि जने पमत्ते।
एतं अपुञ्ञायतनं विवज्जये, उम्मादनं मोहनं बालकन्तं॥2/14/24॥

"Madā hi pāpāni karonti bālā, kārenti caññepi jane pamatte;
Etaṃ apuññāyatanaṃ vivajjaye, ummādanaṃ mohanaṃ bālakantaṃ.॥24॥

"मदात् हि पापानि कुर्वन्ति बालाः, कारयन्ति चान्येऽपि जनाः प्रमत्ताः।
एतम् अपुण्यायतनं विवर्जयेत्, उन्मादनं मोहनं बालकान्तम्॥24॥

मूर्ख लोग मद के कारण पाप करते हैं और दूसरे अन्य प्रमत्त लोगों से कराते भी हैं । इस पाप के घर को त्याग दे । जो कि उन्मादन है, मोहक है और मूर्खों को प्रिय है॥24॥

'For through intoxication the stupid commit sins and make other people intoxicated; let him avoid this seat of sin, this madness, this folly, delightful to the stupid.24.

"पाणं न हने न चादिन्नमादिये, मुसा न भासे न च मज्जपो सिया।
अब्रह्मचरिया विरमेय्य मेथुना, रत्तिं न भुञ्जेय्य विकालभोजनं॥2/14/25॥

"Pāṇaṃ na hane na cādinnamādiye, musā na bhāse na ca majjapo siyā;
Abrahmacariyā virameyya methunā, rattiṃ na bhuñjeyya vikālabhojanaṃ.25.

"प्राणं न हन्यात् न चादत्तम् आदद्यात्, मृषा न भाषेत न च मद्यपः स्यात् ।
अब्रह्मचर्यात् विरमेत मैथुनात्, रात्रौ न भुञ्जीत विकालभोजनम्॥25॥

प्राण-वध न करे, चोरी न करे, झूठ न बोले और न शराब पिये । अब्रह्मचर्य और मैथुन से विरत रहे और रात्रि में विकाल भोजन न करे॥25॥

'Let him not kill any living being, let him not take what has not been given to him, let him not speak falsely, and let him not drink intoxicating drinks, let him refrain from unchaste sexual pleasure, and let him not at night eat untimely food.25.

मालं न धारे न च गन्धमाचरे, मञ्चे छमायं व सयेथ सन्थते।
एतञ्हि अट्ठङ्गिकमाहुपोसथं, बुद्धेन दुक्खन्तगुना पकासितं॥2/14/26॥

Mālaṃ na dhāre na ca gandhamācare, mañce chamāyaṃ va sayetha santhate;
Etañhi aṭṭhaṅgikamāhuposathaṃ, buddhena dukkhantagunā pakāsitaṃ.॥26॥

मालां न धारयेत् न च गन्धमाचरेत्, मञ्चे क्षमायाञ्च शयेत संस्मृते ।

एतं हि अष्टाङ्गिकमाहु उपोसथम्, बुद्धेन दु:खान्तगेन प्रकाशितम्॥26॥

न माला धारण करे, न गंध का सेवन करे, चौकी, भूमि या जमीन पर सोये–इसे अष्टांगिक उपोसथ कहते हैं, दु:खपारंगत बुद्ध द्वारा यह प्रकाशित किया गया है॥26॥

'Let him not wear wreaths nor use perfumes, let him lie on a couch spread on the earth:— this they call the eightfold abstinence uposatha, proclaimed by Buddha, who has overcome pain.26.

"ततो च पक्खस्सुपवस्सुपोसथं, चातुद्दसिं पञ्चदसिं च अट्ठमिं।

पाटिहारियपक्खं च पसन्नमानसो, अट्ठङ्गुपेतं सुसमत्तरूपं॥2/14/27॥

"Tato ca pakkhassupavassuposathaṃ, cātuddasiṃ pañcadasiṃ ca aṭṭhamiṃ;

Pāṭihāriyapakkhaṃ ca pasannamānaso, aṭṭhaṅgupetaṃ susamattarūpaṃ.॥27॥

"ततश्च पक्षस्योपोष्योपोसथम्, चातुर्दशीं पञ्चदशीं च अष्टमीम् ।

प्रातिहार्यपक्षञ्च प्रसन्नमानस:, अष्टाङ्गोपेतं सुसमस्तरूपम्॥27॥

प्रत्येक पक्ष की चतुर्दशी, पूर्णिमा, अष्टमी और प्रतिहार्य पक्ष को प्रसन्न मन से अष्टांग उपोसथ का पूर्णरूप से पालन करना चाहिए॥27॥

'Then having with a believing mind kept abstinente uposatha on the fourteenth, fifteenth, and the eighth days of the half-month, and having kept the complete Patiharakapakkha' consisting of eight parts, .27.

"ततो च पातो उपवुत्थुपोसथो, अन्नेन पानेन च भिक्खुसङ्घं।

पसन्नचित्तो अनुमोदमानो, यथारहं संविभजेथ विञ्ञू॥2/14/28॥

"Tato ca pāto upavutthuposatho, annena pānena ca bhikkhusaṅghaṃ;

Pasannacitto anumodamāno, yathārahaṃ saṃvibhajetha viññū.॥28॥

"ततश्च प्रात उपवसितोपोसथ:, अन्नेन पानेन च भिक्षुसङ्घम्।

प्रसन्नचित्त: अनुमोदमान:, यथारहो संविभजेत विज्ञ:॥28॥

तब विज्ञ पुरुष प्रात: उपोसथ ग्रहण कर अपनी शक्ति के अनुसार श्रद्धापूर्वक अनुमोदन करते हुए प्रसन्नता से भिक्षुसंघ को अन्न और पेय का दान दे॥28॥

'And then in the morning, after having kept abstinence, let a wise man with a believing mind, gladdening the assembly of Bhikkhus with food and drink, make distributions according to his ability.28.

"धम्मेन मातापितरो भरेय्य, पयोजये धम्मिकं सो वणिज्जं।

एतं गिही वत्तयमप्पमत्तो, सयम्पभे नाम उपेति देवे"'ति॥2/14/29॥

"Dhammena mātāpitaro bhareyya, payojaye dhammikaṃ so vaṇijjaṃ;

Etaṃ gihī vattayamappamatto, sayampabhe nāma upeti deve"ti.॥29॥

"धर्मेण मातापितरौ भरेत्, प्रयोजयेत् धार्मिकं स वणिज्यम्।

एतं गृही वर्तयन् अप्रमत्त:, *सयम्पभ* (स्वयंप्रभ) नाम उपैति देवान्" इति॥29॥

धर्म से माता-पिता का पोषण करे और किसी धार्मिक व्यापार में अपने को लगाये । जो अप्रमत्त गृहस्थ इस व्रत का पालन करता है, वह स्वयंप्रभ नामक देवलोक में उत्पन्न होता है॥29॥

'Let him dutifully maintain his parents, and practise an honourable trade; the house-holder whoseserves this strenuously goes to the gods by name Sayampabhas.'29.

धम्मिकसुत्तं निट्ठितं

(Dhammikasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

तस्सुद्दानं- रतनामगन्धो हिरि च, मङ्गलं सूचिलोमेन।
धम्मचरियं च ब्राह्मणो नावा किंसीलमुट्ठानं॥
राहुलो पुन कप्पो च, परिब्बाजनियं तथा।
धम्मिकं च विदुनो आहु, चूळवग्गं ति चुद्दसाति॥

Tassuddānaṃ- Ratanāmagandho hiri ca, maṅgalaṃ sūcilomena;
Dhammacariyaṃ ca brāhmaṇo, nāvā kiṃsīlamuṭṭhānaṃ.
Rāhulo puna kappo ca, paribbājaniyaṃ tathā;
Dhammikaṃ ca viduno āhu, cūḷavaggaṃ ti cuddasāti.

तस्योद्दानम्– *रतनामगन्धः हिरिश्च, मङ्गलं सूचिलोमेन*।
*धर्म*चरियं च ब्राह्मणो *नावा किंसीलो*द्दानम्॥
राहुलः पुनः *कप्पश्च, परिब्बाजनियं* तथा।
धम्मिकं च विद्वास आहुः चूलवग्गमिति चतुर्दशम्॥

उद्दान=सुत्त-समुदाय– इस चूलवर्ग में 14 सुत्त कहे गए हैं– 1. रतनसुत्त, 2 आमगन्धसुत्त, 3. हिरिसुत्त, 4. मङ्गलसुत्त, 5. सूचिलोमसुत्त, 6. धम्मचरियसुत्त, 7. ब्राह्मणधम्मिकसुत्त, 8. नावा सुत्त, 9. किंसीलसुत्त, 10. उट्ठानसुत्त, 11. राहुलसुत्त, 12. न्यग्रोधकप्प या वङ्गीस सुत्त, 13. सम्मापरिब्बाजनीयसुत्त और 14. धम्मिकसुत्त।

Group of Suttas-1. Ratansutta 2. Āmagandhasutta 3. Hirisutta 4. Maṅgalasutta 5. Sūcilomsutta 6. Dhammacariyasutta 7. Brāhmadhammikasutta 8. Nāvāsutta 9. Kiṃsīlasutta 10. Uṭṭhānasutta 11. Rāhulsutta, 12. Nyagrodhakappasutta 13. Sammapribbājaniyasutta 14. Dhammikasutta - these fourteen suttas are described in Culvaggo.

चूळवग्गो निट्ठितो

(Cūḷavaggo niṭṭhito.)

***

3. महावग्गो (Mahāvaggo)

(3.1) पब्बज्जासुत्तं (Pabbajjāsuttaṃ)

पब्बज्जं कित्तयिस्सामि, यथा पब्बजि चक्खुमा।
यथा वीमंसमानो सो, पब्बज्जं समरोचयि॥3/1/1॥

Pabbajjaṃ kittayissāmi, yathā pabbaji cakkhumā;
Yathā vīmaṃsamāno so, pabbajjaṃ samarocayi.॥1॥

प्रव्रज्यां कीर्तयिष्यामि, यथा प्राव्रजत् चक्षुष्मान् ।
यथा मीमांसमान: स:, प्रव्रज्यां समारोचिष्ट॥1॥

जिस प्रकार चक्षुष्मान् (बुद्ध) प्रव्रजित हुए, उनकी प्रव्रज्या का वर्णन करूँगा कि किस प्रकार विचार करते हुए उन्होंने प्रव्रज्या को पसन्द किया॥1॥

I will praise an ascetic life such as the clearly-seeing Buddha led, such as he thinking over it approved of as an ascetic life.1

सम्बाधोयं घरावासो, रजस्सायतनं इति।
अब्भोकासोव पब्बज्जा, इति दिस्वान पब्बजि॥3/1/2॥

Sambādhoyaṃ gharāvāso, rajassāyatanaṃ iti;
Abbhokāsova pabbajjā, iti disvāna pabbaji.॥2॥

सम्बाधोऽयं गृहावास:, रजस आयतनमिति।
अभ्याकाश इव प्रव्रज्या, इति दृष्ट्वा प्राव्रजत्॥2॥

इस घर-गृहस्थी में रहना संकटपूर्ण है । यह अपवित्रता का घर है । प्रव्रज्या स्वच्छ आकाश की भाँति है– ऐसा देखकर वे प्रव्रजित हुए॥2॥

'This house-life is pain, the seat of impurity,' and 'an ascetic life is an open-air life,' so considering he embraced an ascetic life.2.

पब्बजित्वान कायेन, पापकम्मं विवज्जयि।
वचीदुच्चरितं हित्वा, आजीवं परिसोधयि॥3/1/3॥

Pabbajitvāna kāyena, pāpakammaṃ vivajjayi;
Vacīduccaritaṃ hitvā, ājīvaṃ parisodhayi.॥3॥

प्रव्रज्य कायेन, पापकर्म अवीवृजत् ।
वचो दुश्चरितं हित्वा, आजीवं पर्यशुध्यत्॥3॥

प्रव्रजित होकर उन्होंने शरीर से पाप-कर्म करना छोड़ दिया। वचन के दुष्कर्मों को भी छोड़ कर आजीविका का परिशोधन किया॥3॥

Leading an ascetic life, he avoided with his body sinful acts, and having also abandoned sin in words, he cleansed his life.3.

अगमा राजगहं बुद्धो, मगधानं गिरिब्बजं।
पिण्डाय अभिहारेसि, आकिण्णवरलक्खणो॥3/1/4॥

Agamā rājagahaṃ buddho, magadhānaṃ giribbajaṃ;
Piṇḍāya abhihāresi, ākiṇṇavaralakkhaṇo.॥4॥

अगमत् *राजगृहं* बुद्धः, मगधानां *गिरिव्रजम्*।
पिण्डाय अभ्यहार्षीत्, आकीर्णवरलक्षणः॥4॥

बुद्ध मगध-जनपद की राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) गए । विशिष्ट लक्षणों से युक्त शरीर वाले बुद्ध भिक्षा के लिए नगर में प्रविष्ट हुए॥4॥

Buddha went to Rajagraha, he entered the Giribbaja in Magadha for alms with a profusion of excellent signs.4.

तमद्दसा बिम्बिसारो, पासादस्मिं पतिट्ठितो।
दिस्वा लक्खणसम्पन्नं, इममत्थं अभासथ॥3/1/5॥

Tamaddasā bimbisāro, pāsādasmiṃ patiṭṭhito;
Disvā lakkhaṇasampannaṃ, imamatthaṃ abhāsatha.॥5॥

तमद्राक्षीत् *बिम्बिसारः*, प्रासादे प्रतिष्ठितः ।
दृष्ट्वा लक्षणसम्पन्नम्, इममर्थम् अभाषत॥5॥

महल में खड़े हुए राजा बिम्बिसार ने उन्हें देखा । विशिष्ट लक्षणों से युक्त देखकर उन्होंने यह बात कही॥5॥

Bimbisara standing in his palace saw him, and seeing him endowed with these signs, he spoke these words:.5.

"इमं भोन्तो निसामेथ, अभिरूपो ब्रह्म सुचि।
चरणेन च सम्पन्नो, युगमत्तं च पेक्खति॥3/1/6॥

"Imaṃ bhonto nisāmetha, abhirūpo brahā suci;
Caraṇena ca sampanno, yugamattaṃ ca pekkhati.॥6॥

"इमं भो ! निशाम्येत्, अभिरूपो ब्रह्म शुचिः।
चरणेन चैव सम्पन्नः, युगमात्रञ्च प्रेक्षते॥6॥

"अरे ! इस सुन्दर, विशाल, पवित्र आचरण रूप विद्याओं से युक्त व्यक्ति को देखो, जो कि केवल चार हाथ तक (युगमात्र) ही देखता है॥6॥

'Attend you to this man, he is handsome, great, clean, he is both endowed with good conduct and he does not look before him further than a yuga the distance of a plough.6.

"ओक्खित्तचक्खु सतिमा, नायं नीचकुलमिव।
राजदूताभिधावन्तु, कुहिं भिक्खु गमिस्सति"॥3/1/7॥

"Okkhittacakkhu satimā, nāyaṃ nīcakulāmiva;
Rājadūtābhidhāvantu, kuhiṃ bhikkhu gamissati".॥7॥

"अवक्षिप्तचक्षुः स्मृतिमान्, नायं नीचकुलमिव।
राजदूताभिधावन्तु, कुह भिक्षुः गमिष्यति"॥7॥

नीची की हुई आँख वाला, स्मृतिमान, यह छोटे कुल के समान नहीं है । राजदूत इसके पीछे दौड़ें और देखें कि भिक्षु कहाँ जायेगा ?"॥7॥

'With downcast eyes, thoughtful, this one is not like those of low caste; let the king's messengers run off, and ask: "Where is the Bhikkhu going?".7.

ते पेसिता राजदूता, पिट्ठितो अनुबन्धिसुं।
कुहिं गमिस्सति भिक्खु, कत्थ वासो भविस्सति॥3/1/8॥

Te pesitā rājadūtā, piṭṭhito anubandhisuṃ;
Kuhiṃ gamissati bhikkhu, kattha vāso bhavissati.॥8॥

ते प्रेषिता: राजदूता:, पृष्ठतोऽन्वभान्त्सु: ।
कुह गमिष्यति भिक्षु:, कुत्र वासो भविष्यति॥8॥

भेजे गए वे राजदूत भगवान् के पीछे-पीछे लग गये और यह जानने की कोशिश करने लगे कि यह भिक्षु कहाँ जायेगा और इसका वास (स्थान) कहाँ होगा ?॥8॥

The king's messengers followed after him, and said: 'Where is the Bhikkhu going, where will he reside?.8.

सपदानं चरमानो, गुत्तद्वारो सुसंवुतो।
खिप्पं पत्तं अपूरेसि, सम्पजानो पटिस्सतो॥3/1/9॥

Sapadānaṃ caramāno, guttadvāro susaṃvuto;
Khippaṃ pattaṃ apūresi, sampajāno paṭissato.॥9॥

सपदानां चरन्, गुप्तद्वार: सुसंवृत्त:।
क्षिप्रं पात्रम् अपूपुरत्, सम्प्रजान: प्रतिस्मृत:॥9॥

संयमी, जागरूक और स्मृतिमान् बुद्ध ने घर-घर भिक्षा माँगी और शीघ्र ही पात्र भिक्षा से भर गया॥9॥

'Going begging from house to house, watching the door of the senses, well restrained, he quickly filled his bowl, conscious, thoughtful.9.

पिण्डाचारं चरित्वान, निक्खम्म नगरा मुनि।
पण्डवं अभिहारेसि, एत्थ वासो भविस्सति॥3/1/10॥

Piṇḍacāraṃ caritvāna, nikkhamma nagarā muni;
Paṇḍavaṃ abhihāresi, ettha vāso bhavissati.॥10॥

पिण्डाचारं चरित्वा, निष्क्रम्य नगरात् मुनि:।
पाण्डवम् अभ्यहार्षीत्, अत्र वासो भविष्यति॥10॥

भिक्षाटन करके मुनि नगर से निकलकर पाण्डव पर्वत पर चढ़े कि यहाँ निवास होगा॥10॥

'Wandering about in search of alms, having gone out of town, the Muni repaired to Pandava; it must be there he lives.' .10.

दिस्वान वासूपगतं, तयो दूता उपाविसुं।
तेसु एकोव आगन्त्वा, राजिनो पटिवेदयि॥3/1/11॥

Disvāna vāsūpagataṃ, tayo dūtā upāvisuṃ;
Tesu ekova āgantvā, rājino paṭivedayi.॥11॥

दृष्ट्वा वासोपगतम्, ततो दूता उपविविशु:।
तेषु एक एव आगत्य, राजानं प्रत्यवीविदत॥11॥

उनको वहाँ ठहरते देख दूत पास बैठ गये । एक दूत ने आकर राजा से निवेदन किया–॥11॥

Seeing that he had entered his dwelling, the messengers then sat down, and one messenger having returned announced it to the king.11.

"एस भिक्खु महाराज, पण्डवस्स पुरत्थतो ।
निसिन्नो ब्यग्घुसभोव, सीहोव गिरिगब्भरे"॥3/1/12॥

"Esa bhikkhu mahārāja, paṇḍavassa puratthato;
Nisinno byagghusabhova, sīhova girigabbhare".॥12॥

"एष भिक्षु: महाराज ! *पाण्डवस्य* पुरस्थित: ।
निषण्णो व्याघ्रर्षभ इव, सिंह इव गिरिगह्वरे"॥12॥

'महाराज ! यह भिक्षु पाण्ड़व पर्वत के पूर्वाभिमुख उस प्रकार बैठा है जैसे कि व्याघ्र, साँढ़ या सिंह पहाड़ की गुफा में बैठा हो॥12॥

'This Bhikkhu, O great king, is sitting on the east side of Pandava, like a tiger, like a bull, like a lion in a mountain cave.'.12.

सुत्वान दूतवचनं, भद्दयानेन खत्तियो।
तरमानरूपो निय्यासि, येन पण्डवपब्बतो॥3/1/13॥

Sutvāna dūtavacanaṃ, bhaddayānena khattiyo;
Taramānarūpo niyyāsi, yena paṇḍavapabbato.॥13॥

श्रुत्वा दूतवचनम्, भद्रयानेन क्षत्रिय:।
त्वरमाणरूपो न्यगात्, यत्र *पाण्डव*पर्वत:॥13॥

दूत के वचन को सुनकर राजा उत्तम रथ से शीघ्र ही पाण्ड़व पर्वत की ओर चल दिये॥13॥

Having heard the messenger's words, the Khattiya in a fine chariot hastening went out to the Pandava mountain.13.

स यानभूमिं यायित्वा, याना ओरुय्ह खत्तियो।
पत्तिको उपसङ्कम्म, आसज्ज नं उपाविसि॥3/1/14॥

Sa yānabhūmiṃ yāyitvā, yānā oruyha khattiyo;
Pattiko upasaṅkamma, āsajja naṃ upāvisi.॥14॥

स: यानभूमिं यात्वा, यानात् अवरुह्य क्षत्रिय:।
पदिक उपसंक्रम्य, आसाद्य तमोपाविशत्॥14॥

रथ के योग्य भूमि तक रथ से जाकर, रथ से उतरकर, राजा पैदल ही जाकर उनके पास बैठ गया॥14॥

Having gone as far as the ground was practicable for a chariot, the Khattiya, after alighting from the chariot, and approaching on foot, having come up to him, seated himself.14.

निसज्ज राजा सम्मोदि, कथं सारणीयं ततो।
कथं सो वीतिसारेत्वा, इममत्थं अभासथ॥3/1/15॥

Nisajja rājā sammodi, kathaṃ sāraṇīyaṃ tato;
Kathaṃ so vītisāretvā, imamatthaṃ abhāsatha.॥15॥

निषद्य राजा सममोदिष्ट, कथं (कथनं) सारणीयं तत:।
कथं स व्यतिसार्य, इममर्थम् अभाषिष्ट॥15॥

तब राजा ने बैठकर कुशल-मंगल पूछा। कुशल-मंगल पूछकर इस बात को कहा–॥15॥

Having sat down the king then exchanged the usual ceremonious greetings with him, and after the complimentary talk he spoke these words: .15.

"युवा च दहरो चासि, पठमुप्पत्तिको सुसु।
वण्णारोहेन सम्पन्नो, जातिमा विय खत्तियो॥3/1/16॥

"Yuvā ca daharo cāsi, paṭhamuppattiko susu;
Vaṇṇārohena sampanno, jātimā viya khattiyo.॥16॥

"युवा च दहरश्चासीत्, प्रथमोत्पत्तिक: शिशु: ।
वर्णारोहेण सम्पन्न:, जातिमान् इव क्षत्रिय:॥16॥

बिम्बिसार–आप नवयुवक हैं, प्रथम अवस्था-प्राप्त तरुण हैं । आप रूप तथा शरीर की बनावट से क्षत्रिय जाति के प्रतीत होते हैं॥16॥

'Thou are both young and delicate, a lad in his first youth, possessed of a fine complexion, like a high-born Khattiya.16.

"सोभयन्तो अनीकग्गं, नागसङ्घपुरक्खतो।
ददामि भोगे भुञ्जस्सु, जातिं अक्खाहि पुच्छितो"॥3/1/17॥

"Sobhayanto anīkaggaṃ, nāgasaṅghapurakkhato;
Dadāmi bhoge bhuñjassu, jātiṃ akkhāhi pucchito".॥17॥

"शोभयन् अनीकाग्र:, नागसंघपुरस्कृत: ।
ददामि भोगान् भुङ्क्ष्व, जातिम् आख्याहि पृष्टे"॥17॥

मैं सम्पत्ति देता हूँ । हाथी समूह से युक्त सेना को सुशोभित करते हुए उसका उपभोग करें । मेरे पूछने पर बतायें कि आपकी क्या जाति है ?"॥17॥

'I will ornament the army-house, and at the head of the assembly of chiefs (naga=elephants) give thee wealth; enjoy it and tell me thy birth, when asked.' 17.

"उजुं जनपदो राज, हिमवन्तस्स पस्सतो।
धनवीरियेन सम्पन्नो, कोसलेसु निकेतिनो॥3/1/18॥

"Ujuṃ janapado rāja, himavantassa passato;
Dhanavīriyena sampanno, kosalesu niketino.॥18॥

"ऋजु: जनपदो राजा, हिमवन्त: पार्श्वत:।
धनवीर्य-सम्पन्न:, *कोसलेषु* निकेतन:॥18॥

हिमालय की तराई के एक जनपद में कोशल देशवासी धन तथा पराक्रम से युक्त एक ऋजु राजा हैं॥18॥

'Just beside Himavanta, O king, there lives a people endowed with the power of wealth, the inhabitants of Kosala.18.

"आदिच्चा नाम गोत्तेन, साकिया नाम जातिया।
तम्हा कुला पब्बजितोम्हि, न कामे अभिपत्थयं॥3/1/19॥

"Ādiccā nāma gottena, sākiyā nāma jātiyā;
Tamhā kulā pabbajitomhi, na kāme abhipatthayaṃ.॥19॥

"आदित्य: नाम गोत्रेण, शाक्य: नाम जातिना।

तस्मात् कुलात् प्रव्रजितोऽस्मि, न कामेऽभिप्रार्थयेयम्॥19॥

गोत्र से सूर्यवंशी हैं और शाक्य जाति के हैं । हे महाराज ! मैं उस कुल से प्रव्रजित हुआ हूँ। मैं काम-भोगों की कामना नहीं करता॥19॥

'They are Adiccas by family, Sakyas by birth; from that family I have wandered out, not longing for sensual pleasures.19.

"कामेस्वादीनवं दिस्वा, नेक्खम्मं दट्ठु खेमतो।

पधानाय गमिस्सामि, एत्थ मे रञ्जती मनो"'ति॥3/1/20॥

"Kāmesvādīnavaṃ disvā, nekkhammaṃ daṭṭhu khemato;

Padhānāya gamissāmi, ettha me rañjatī mano"ti.॥20॥

"कामेष्वादीनवं दृष्ट्वा, नैष्क्रम्यं दृष्टुं क्षेमत:।

प्रधानाय गमिष्यामि, अत्र मे रज्यते मन:" इति॥20॥

सांसारिक काम-भोगों के दुष्परिणामों तथा नैष्क्रम्य (निष्कामता) को कल्याण के रूप में देख मैं तप करने के लिए जाऊँगा । इसी में मेरा मन लग रहा है॥20॥

'Seeing misery in sensual pleasures and considering the forsaking of the world as happiness, I will go and exert myself; in this my mind delights.'20.

पब्बज्जासुत्तं निट्ठितं

(Pabbajjāsuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 2) पधानसुत्तं (Padhānasuttaṃ)

"तं मं पधानपहितत्तं, नदिं नेरञ्जरं पति।

विपरक्कम्म झायन्तं, योगक्खेमस्स पत्तिया॥3/2/1॥

"Taṃ maṃ padhānapahitattaṃ, nadiṃ nerañjaraṃ pati;

Viparakkamma jhāyantaṃ, yogakkhemassa pattiyā.॥1॥

"तन्मां प्रधानप्रहितत्वम्, नदीं *नेरञ्जरां* प्रति।

विपरिक्रम्य ध्यायन्तम्, योगक्षेमस्य प्राप्तये॥1॥

जब मैं तप में अधिष्ठित होते हुए योगक्षेम=निर्वाण की प्राप्ति के लिए नेरंजरा नदी के किनारे पराक्रमपूर्वक ध्यान कर रहा था॥1॥

To me, whose mind was intent upon exertion near the river Nerañjra, having exerted myself, and given myself to meditation for the sake of acquiring Nibbana yogakkhema,.1.

"नमुची' करुणं वाचं, भासमानो उपागमि।

किसो त्वमसि दुब्बण्णो, सन्तिके मरणं तव॥3/2/2॥

"Namucī karuṇaṃ vācaṃ, bhāsamāno upāgami;

'Kiso tvamasi dubbaṇṇo, santike maraṇaṃ tava.॥2॥

"नमुची करुणं वाचम्, भाषमाण उपागमत्।

कृश: त्वमसि दुर्वर्ण:, सान्तिकं मरणं तव॥2॥

मार करुणाभरी बात कहते हुए मेरे पास आया– "तुम कृश और कुरूप हो, तेरी मृत्यु पास आ गई है॥2॥

Came Namuci speaking words full of compassion: 'Thou art lean, ill-favoured, death is in thy neighbourhood.2.

* नमुची ति मारो । सो हि अतनो विसया निक्खमितुकामे देवमनुस्से न मुञ्चति, अन्तरायं नेसं करोति, तस्मा "नमुची' ति वुच्चति ।

"सहस्सभागो मरणस्स, एकंसो तव जीवितं।
जीव भो जीवितं सेय्यो, जीवं पुञ्ञानि काहसि॥3/2/3॥

"'Sahassabhāgo maraṇassa, ekaṃso tava jīvitaṃ;
Jīva bho jīvitaṃ seyyo, jīvaṃ puññāni kāhasi.॥3॥

"सहस्रभागो मरणस्य, एकांश: तव जीवितम्।
जीव, भो ! जीवितं श्रेय:, जीवन् पुण्यानि करिष्यसि॥3॥

हजार अंश तेरी मृत्यु का है, केवल एक अंश तेरे जीवन का है । अरे ! जीओ, जीवित रहना उत्तम है, जीवित रहते हुए ही पुण्य करोगे॥3॥

'A thousant part of thee is the property of death, only one part belongs to life; living life, O thou venerable one, is better; living thou wilt be able to do good works.3.

"चरतो च ते ब्रह्मचरियं, अग्गिहुत्तं च जूहतो।
पहूतं चीयते पुञ्ञं, किं पधानेन काहसि॥3/2/4॥

"Carato ca te brahmacariyaṃ, aggihuttaṃ ca jūhato;
Pahūtaṃ cīyate puññaṃ, kiṃ padhānena kāhasi.॥4॥

"चरतश्च ते ब्रह्मचर्यम्, अग्निहोत्रञ्च जुह्वता।
प्रभूतं चीयते पुण्यम्, किं प्रधानेन करिष्यसि॥4॥

यदि तुम ब्रह्मचर्य का पालन करो और अग्निहोत्र करो, बहुत पुण्य का संचय होता है। तप करके क्या करोगे?॥4॥

'When up it livest a religious life, and feedest the sacrificial fire, manifold good works are woven to thee; what dost your want with exertion? .4.

"दुग्गो मग्गो पधानाय, दुक्करो दुरभिसम्भवो"।
इमा गाथा भणं मारो, अट्ठा बुद्धस्स सन्तिके॥3/2/5॥

"Duggo maggo padhānāya, dukkaro durabhisambhavo";
Imā gāthā bhaṇaṃ māro, aṭṭhā buddhassa santike.॥5॥

"दुगर्मो मार्ग: प्रधानस्य, दुष्करो दुरभिसम्भव:"।
इमा: गाथा: भणन् मारोऽस्थात् बुद्धस्य सान्तिकम्॥5॥

तप का मार्ग दुर्गम है, निर्वाण दुष्कर है। इन गाथाओं को कहते हुए मार बुद्ध के पास खड़ा रहा॥5॥

'Difficult is the way of exertion, difficult to pass, difficult to enter upon;' saying these verses Māra stood near Buddha.5.

तं तथावादिनं मारं, भगवा एतदब्रवि।
"पमत्तबन्धु पापिम, येनत्थेन इधागतो॥3/2/6॥

Taṃ tathāvādinaṃ māraṃ, bhagavā etadabravi;
"Pamattabandhu pāpima, yenatthena idhāgato.॥6॥

तं तथावादिनं मारम्, भगवान् एतदब्रवीत् ।

"प्रमत्तबन्धो ! पापिमत्, येनार्थेन इहागत:॥6॥

उस कहने वाले मार से भगवान् ने यह कहा– "हे प्रमत्तबन्धु ! पापी ! किसलिए यहाँ आए हो॥6॥

To Mara thus speaking Bhagavān said this: 'O thou friend of the indolent, thou wicked one, for what purpose hast thou come here?.6.

"अणुमत्तोपि पुञ्ञेन, अत्थो मय्हं न विज्जति।

येसं च अत्थो पुञ्ञेन, ते मारो वत्तुमरहति॥3/2/7॥

"Aṇumattopi puññena, attho mayhaṃ na vijjati;

Yesaṃ ca attho puññena, te māro vattumarahati.॥7॥

"अणुमात्रमपि पुण्येन, अर्थो मह्यं न विद्यते।

येषाञ्च अर्थ: पुण्येन, तान् मारो वक्तुमर्हते॥7॥

पुण्य की अणुमात्र भी मुझे आवश्यकता नहीं है। जिन्हें पुण्य की आवश्यकता हो, मार उन्हीं से कहे॥7॥

'Even the least good work is of no use to me; and what good works are required, Māra thought to tell.7.

"अत्थि सद्धा तथा वीरियं, पञ्ञा च मम विज्जति।

एवं मं पहितत्तम्पि, किं जीवमनुपुच्छसि॥3/2/8॥

"Atthi saddhā tathā vīriyaṃ, paññā ca mama vijjati;

Evaṃ maṃ pahitattampi, kiṃ jīvamanupucchasi.॥8॥

"अस्ति श्रद्धा तथा वीर्यम्, प्रज्ञा च मम विद्यते।

एवं मां प्रहितत्त्वमपि, किं जीवितमनुपृच्छसि॥8॥

मुझमें श्रद्धा, वीर्य और प्रज्ञा विद्यमान है । मुझ ऐसे संयमात्मा से भी जीने की बात करते हो॥8॥

'I have faith and power and understanding is found in me; while thus exerting myself, why do you ask me to live'?.8.

"नदीनमपि सोतानि, अयं वातो विसोसये।

किं च मे पहितत्तस्स, लोहितं नुपसुस्सये॥3/2/9॥

"Nadīnamapi sotāni, ayaṃ vāto visosaye;

Kiṃ ca me pahitattassa, lohitaṃ nupasussaye.॥9॥

"नदीनामपि स्रोतांसि, अयं वातो विशोषयेत्।

किञ्च मे प्रहितत्त्वस्य, लोहितं नोपशोषयेत्॥9॥

यह हवा नदियों की धाराओं को सुखा दे, क्या यह मुझ संयमात्मा के रक्त को भी नहीं सुखा पायेगी॥9॥

'This burning wind will dry up even the currents of the rivers; should it not by degrees dry up my blood, while I am exerting myself? .9.

"लोहिते सुस्समानम्हि, पित्तं सेम्हं च सुस्सति।

मंसेसु खीयमानेसु, भिय्यो चित्तं पसीदति।

भिय्यो सति च पञ्ञा च, समाधि मम तिट्ठति॥3/2/10॥

"Lohite sussamānamhi, pittaṃ semhaṃ ca sussati;
Maṃsesu khīyamānesu, bhiyyo cittaṃ pasīdati;
Bhiyyo sati ca paññā ca, samādhi mama tiṭṭhati.॥10॥

"लोहिते शोष्यमाणे, पित्तं श्लेष्मश्च शुष्यति।
मांसेषु क्षीयमाणेषु, भूयः चित्तं प्रसीदति।
भूयः स्मृतिश्च प्रज्ञा च, समाधिः मम तिष्ठति॥10॥

रक्त के सूखने पर पित्त और कफ सूख जाते हैं । मांस के क्षीण होने पर चित्त और भी अधिक प्रसन्न होता है और स्मृति, प्रज्ञा और समाधि मुझमें अधिक ठहरती है॥10॥

'While the blood is drying up, the bile and the phlegm are dried up; while the flesh is wasting away, the mind gets more tranquil, and my attention, understanding, and meditation get more steadast'.10.

"तस्स मेवं विहरतो, पत्तस्सुत्तमवेदनं।
कामेसु नापेक्खते चित्तं, पस्स सत्तस्स सुद्धतं॥3/2/11॥

"Tassa mevaṃ viharato, pattassuttamavedanaṃ;
Kāmesu nāpekkhate cittaṃ, passa sattassa suddhataṃ.॥11॥

"तस्य मे एवं विहरतः, प्राप्तस्योत्तमवेदनाम्।
कामान् नापेक्षते चित्तम्, पश्य सत्त्वस्य शुद्धताम्॥11॥

इसप्रकार विहरने वाले उत्तम वेदना प्राप्त मेरा मन कामों की इच्छा नहीं करता। इस व्यक्ति की शुद्धि को देखो॥11॥

'While I am living thus, after having felt the extreme sensations, my mind does not look for sensual pleasures; behold a being's purity.11.

"कामा ते पठमा सेना, दुतिया अरति वुच्चति।
ततिया खुप्पिपासा ते, चतुत्थी तण्हा पवुच्चति॥3/2/12॥

"Kāmā te paṭhamā senā, dutiyā arati vuccati;
Tatiyā khuppipāsā te, catutthī taṇhā pavuccati.॥12॥

"कामा ते प्रथमा सेना, द्वितीया अरति उच्यते।
तृतीया क्षुत्पिपासे ते, चतुर्थी तृष्णा प्रोच्यते॥12॥

हे मार ! काम तेरी पहली सेना है, अरति दूसरी सेना कहलाती है । भूख-प्यास तेरी तीसरी सेना है और तृष्णा चौथी सेना कहलाती है॥12॥

'Lust thy first army is called, discontent thy second, thy third is called hunger and thirst, thy fourth craving.12.

"पञ्चमं थिनमिद्धं ते, छट्ठा भीरू पवुच्चति।
सत्तमी विचिकिच्छा ते, मक्खो थम्भो ते अट्ठमो॥3/2/13॥

"Pañcamaṃ thinamiddhaṃ te, chaṭṭhā bhīrū pavuccati;
Sattamī vicikicchā te, makkho thambho te aṭṭhamo.॥13॥

"पञ्चमी स्त्यानमृद्धं ते, षष्ठी भीरुत्वं प्रोच्यते।
सप्तमी विचिकित्सा ते, मक्षः स्तम्भश्च अष्टमी॥13॥

तेरी पाँचवी सेना स्त्यान-मृद्ध है, छठीं भीरुपन (डरपोकपन) कहलाती है । तेरी सातवीं सेना शंका है और ईर्ष्या तथा जड़ता तेरी आठवीं सेना है॥13॥

'Thy fifth is called sloth and drowsiness, thy sixth cowardice, thy seventh doubt, thy eighth hypocrisy and stupor,.13.

"लाभो सिलोको सक्कारो, मिच्छालद्धो च यो यसो।
यो चत्तानं समुक्कंसे, परे च अवजानति॥3/2/14॥

"Lābho siloko sakkāro, micchāladdho ca yo yaso;
Yo cattānaṃ samukkaṃse, pare ca avajānati.॥14॥

"लाभ: श्लोकश्च सत्कार:, मिथ्यालब्धश्च यो यश:।
यश्चात्मानं समुत्कर्षेत्, परांश्च वै अवजानाति॥3/2/14॥

लाभ, प्रशंसा, सत्कार, अनुचित ढंग से प्राप्त जो यश है, जो अपने को प्रशंसा और दूसरे की निन्दा करती है॥14॥

'Gain, fame, honour and what celebrity has been falsely obtained; and he who exalts himself and despises others.14.

"एसा नमुचि ते सेना, कण्हस्साभिप्पहारिनी।
न नं असूरो जिनाति, जेत्वा च लभते सुखं॥3/2/15॥

"Esā namuci te senā, kaṇhassābhippahārinī;
Na naṃ asūro jināti, jetvā ca labhate sukhaṃ.॥15॥

"एषा *नमुचि* ! ते सेना, कृष्णस्याभिप्रहारिणी।
न तामशूर: जयति, जित्वा च लभते सुखम्॥15॥

हे मार ! यह तेरी सेना श्रमण-ब्रह्मणों पर प्रहार करने वाली है । उसे अ-शूर जीत नहीं सकता और जो उसे जीत लेता है वह सुख पाता है॥15॥

'This, O Namuci, is thine, the black one's, fighting army; none but a hero conquers it, and after conquering it obtains joy'.15.

"एस मुञ्जं परिहरे, धिरत्थु मम जीवितं।
सङ्गामे मे मतं सेय्यो, यं चे जीवे पराजितो॥3/2/16॥

"Esa muñjaṃ parihare, dhiratthu mama jīvitaṃ;
Saṅgāme me mataṃ seyyo, yaṃ ce jīve parājito.॥16॥

"एतं मुञ्जं परिहरेयम्, धिगस्तु इह जीवितम्।
संग्रामे मे मरणं श्रेय:, यत् चेत् जीवितं पराजितम्॥16॥

मैं इस मूँज को धारण करता हूँ । यहाँ जीवित रहना धिक्कार है । पराजित होकर जीने की अपेक्षा संग्राम में मुझे मर जाना उचित है॥16॥

'I myself wear Munja rass. Woe upon life in this world! death in battle is better for me than that I should live defeated.16.

"पगाळ्हेत्थ न दिस्सन्ति, एके समणब्राह्मणा।
तञ्च मग्गं न जानन्ति, येन गच्छन्ति सुब्बता॥3/2/17॥

"Pagāḷhettha na dissanti, eke samaṇabrāhmaṇā;
Tañca maggaṃ na jānanti, yena gacchanti subbatā.॥17॥

"प्रगाढा: ह्यत्र न दृश्यन्ते, एके श्रमणब्राह्मणा:।
तञ्च मार्गं न जानन्ति, यत्र गच्छन्ति सुव्रता:॥17॥

वासनाओं में डूबे हुए कुछ श्रमण-ब्राह्मण यहाँ सत्य को नहीं देखते । वे उस मार्ग को नहीं जानते जिस पर सुव्रती चलते हैं॥17॥

'Plunged into this world some Sramaṇas and Brāhmaṇas are not seen, and they do not know the way in which the virtuous walk.17.

"समन्ता धजिनिं दिस्वा, युत्तं मारं सवाहनं।
युद्धाय पच्चुग्गच्छामि, मा मं ठाना अचावयि॥3/2/18॥

"Samantā dhajiniṃ disvā, yuttaṃ māraṃ savāhanaṃ;
Yuddhāya paccuggacchāmi, mā maṃ ṭhānā acāvayi.॥18॥

"समन्तात् ध्वजिनीं दृष्ट्वा, युक्तं मारं सवाहनम्।
युद्धाय प्रत्युद्गच्छामि, मा मां स्थानात् अच्यवत्॥18॥

चारों ओर से वाहन सहित सुसज्जित मार की सेना को देखकर मैं युद्ध के लिए निकलता हूँ जिसमें कि मार मुझे अपने स्थान से च्युत न कर सके॥18॥

'Seeing on all sides an army arrayed, and Māra on his elephant, I am going out to do battle, that he may not drive me away from my place.18.

"यं ते तं नप्पसहति, सेनं लोको सदेवको।
तं ते पञ्ञाय भेच्छामि, आमं पत्तं व अस्मना॥3/2/19॥

"Yaṃ te taṃ nappasahati, senaṃ loko sadevako;
Taṃ te paññāya bhecchāmi, āmaṃ pattaṃ va asmanā.॥19॥

"यत्ते तां न प्रसहते, सेनां लोक: सदेवक:।
तां ते प्रज्ञया भेत्स्यामि, आमं पात्रमिव अश्मना॥19॥

देव मनुष्य सहित सारा संसार तेरी जिस सेना को जीत नहीं पाता, उसे मैं प्रज्ञा से उसी प्रकार नष्ट कर दूँगा जिस प्रकार के पत्थर से कच्चे बर्तन को॥19॥

'This army of thine, which the world of men and gods cannot conquer, I will crush with understanding as one crushes an unbaked earthen pot with a stone'.19.

"वसीकरित्वा सङ्कप्पं, सतिं च सूपतिट्ठितं।
रट्ठा रट्ठं विचरिस्सं, सावके विनयं पुथू॥3/2/20॥

"Vasīkaritvā saṅkappaṃ, satiṃ ca sūpatiṭṭhitaṃ;
Raṭṭhā raṭṭhaṃ vicarissaṃ, sāvake vinayaṃ puthū.॥20॥

"वशीकृत्य संकल्पम्, स्मृतिञ्च सुप्रतिष्ठिताम्।
राष्ट्रात् राष्ट्रं चरिष्यामि, श्रावकान् विनयन् पृथु॥20॥

संकल्प को अपने वश में करके, स्मृति को सुप्रतिष्ठित कर बहुत से श्रावकों को शिक्षित करते हुए एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में विचरण करूँगा॥20॥

'Having made my thought subject to me and my attention firm, I shall wander about from kingdom to kingdom, training disciples extensively.20.

"ते अप्पमत्ता पहितत्ता, मम सासनकारका।

अकामस्स ते गमिस्सन्ति, यत्थ गन्त्वा न सोचरे"॥3/2/21॥

"Te appamattā pahitattā, mama sāsanakārakā;
Akāmassa te gamissanti, yattha gantvā na socare".॥21॥

"ते अप्रमत्ता: प्रहितत्त्वात्, मम शासनकारका:।

अकामं ते गमिष्यन्ति, यत्र गत्वा न शोचन्ति"॥21॥

वे मेरी आज्ञा का पालन करने वाले अप्रमादी और संयमी शिष्य निर्वाण को प्राप्त कर लेंगे, जहाँ जाकर शोक नहीं करेंगे॥21॥

'They will be zealous and energetic, executing my orders, the orders of one free from lust and they will go to the place where, having gone, they will not mourn.' .21.

"सत्त वस्सानि भगवन्तं, अनुबन्धिं पदापदं।

ओतारं नाधिगच्छिस्सं, सम्बुद्धस्स सतीमतो॥3/2/22॥

"Satta vassāni bhagavantaṃ, anubandhiṃ padāpadaṃ;
Otāraṃ nādhigacchissaṃ, sambuddhassa satīmato.॥22॥

"सप्तवर्षाणि भगवन्तम्, अन्वबन्धाम् पदे पदे।

अवतारं नाध्यगमिष्यम्, सम्बुद्धस्य स्मृतिमत:॥22॥

मार–सात वर्ष तक मैं भगवान् के पीछे-पीछे लगा रहा किन्तु स्मृतिमान् सम्बुद्ध के लिए कोई भी अवसर नहीं पाया॥22॥

'For seven years I followed Bhagavān step by step; I found no fault in the perfectly enlightened, thoughtful Buddha.22.

"मेदवण्णं व पासाणं, वायसो अनुपरियगा।

अपेत्थ मुदुं विन्देम, अपि अस्सादना सिया॥3/2/23॥

"Medavaṇṇaṃ va pāsāṇaṃ, vāyaso anupariyagā;
Apettha muduṃ vindema, api assādanā siyā.॥23॥

"मेदवर्णमिव पाषाणम्, वायसोऽनुपर्यगमत्।

अप्यत्र मृदुं विन्देम, अप्यास्वादनं स्यात्॥23॥

लाल पत्थर को चर्बी का टुकड़ा समझ कर कौवा उस पर झपटा कि कुछ कोमल स्वादिष्ट चीज मिलेगी॥23॥

'The crow hovered round the rock that looked like a lump of fat: "Do we here find something soft, is it something sweet ?.23.

"अलद्धा तत्थ अस्सादं, वायसेत्तो अपक्कमि।

काकोव सेलमासज्ज, निब्बिज्जापेम गोतमं"॥3/2/24॥

"Aladdhā tattha assādaṃ, vāyasetto apakkami;
Kākova selamāsajja, nibbijjāpema gotamaṃ".॥24॥

"अलब्धः तत्राऽऽस्वादम्, वायस इत अपाक्रमीत्।

काकमिव शैलमास्वाद्य, निर्वेदम् अपेम *गौतमम्*"॥24॥

उसमें कुछ स्वाद प्राप्त न किया हुआ कौवा वहाँ से हट गया। कौवे के पत्थर पर ठोकर मारने की भाँति गौतम से वैराग्य ले रहा हूँ॥24॥

'Having obtained nothing sweet there, the crow went away from that spot. Thus like the crow approaching the rock, being disgusted, we shall go away from Gotama.'24.

तस्स सोकपरेतस्स, वीणा कच्छा अभस्सथ।

ततो सो दुम्मनो यक्खो, तत्थेवन्तरधायथा ति॥3/2/25॥

Tassa sokaparetassa, vīṇā kacchā abhassatha;

Tato so dummano yakkho, tatthevantaradhāyathā ti.॥25॥

तस्य शोकपरीतस्य, वीणा कक्षात् अभ्रंशिष्ट।

ततः स दुर्मनो यक्षः, तत्रेवान्तरधादिति॥25॥

शोकाकुल उस मार की काँख से वीणा नीचे खिसक गई, वह यक्ष दुःखी हो वहीं अन्तर्धान (अदृश्य) हो गया॥25॥

While overcome with sorrow the string of his lute slipped down; then that evil-minded Yakkha disappeared there. 25.

पधानसुत्तं निट्ठितम्

(Padhānasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 3) सुभासितसुत्तं (Subhāsitasuttaṃ)

एवं मे सुतं– एक समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। तत्र खो भगवा भिक्खू आमन्तेसि– ''भिक्खवो''ति। ''भदन्ते''ति ते भिक्खू भगवतो पच्चस्सोसुं। भगवा एतदवोच– ''चतूहि, भिक्खवे, अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, न दुब्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञूनं। कतमेहि चतूहि? इध, भिक्खवे, भिक्खु सुभासितंयेव भासति नो दुब्भासितं, धम्मंयेव भासति नो अधम्मं, पियंयेव भासति नो अप्पियं, सच्चंयेव भासति नो अलिकं। इमेहि खो, भिक्खवे, चतूहि अङ्गेहि समन्नागता वाचा सुभासिता होति, नो दुब्भासिता, अनवज्जा च अननुवज्जा च विञ्ञूनं''ति। इदमवोच भगवा। इदं वत्वान सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था–

Evaṃ me sutaṃ – eka samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Tatra kho bhagavā bhikkhū āmantesi – "bhikkhavo"ti. "Bhadante"ti te bhikkhū bhagavato paccassosuṃ. Bhagavā etadavoca – "Catūhi, bhikkhave, aṅgehi samannāgatā vācā subhāsitā hoti, na dubbhāsitā, anavajjā ca ananuvajjā ca viññūnaṃ. Katamehi catūhi? Idha, bhikkhave, bhikkhu subhāsitaṃyeva bhāsati no dubbhāsitaṃ, dhammaṃyeva bhāsati no adhammaṃ, piyaṃyeva bhāsati no appiyaṃ, saccaṃyeva bhāsati no alikaṃ. Imehi kho, bhikkhave, catūhi aṅgehi samannāgatā vācā subhāsitā hoti, no dubbhāsitā, anavajjā ca ananuvajjā ca viññūnaṃ"ti. Idamavoca bhagavā. Idaṃ vatvāna sugato athāparaṃ etadavoca satthā –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवने अनाथपिण्डिकस्य* आरामे । तत्र खलु भगवान् भिक्षून् आमन्त्रयत– "भिक्षवः"! इति । "भदन्त"! इति ते भिक्षवः भगवन्तं प्रत्यश्रौषुः। भगवान् एतदवोचत्– ''चतुर्भिः, भिक्षवः! अङ्गैः समन्वागता वाचा सुभाषिता भवति, न दुर्भाषिता, अनवद्या च अननुवद्या च विज्ञेभ्यः। कैश्चित् चतुर्भिः? इह, भिक्षवः! भिक्षुः सुभाषितमेव भाषते न दुर्भाषितम्, धर्ममेव भाषते न अधर्मम्, प्रियमेव भाषते न अप्रियम्, सत्यमेव भाषते नालीकम्। एभिः खलु, भिक्षवः ! चतुर्भिरङ्गैः समन्वागता वाचा सुभाषिता भवति, न दुर्भाषिता, अनवद्या चाननुवद्या च विज्ञेभ्यः" इति। इदमवोचत् भगवान् ! इदमुक्त्वा सुगतोऽथापरम् एतदवोचत् शास्ता–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे।.... भगवान् ने यह कहा– "भिक्षुओं ! चार अंगों से युक्त वचन सुभाषित होता है, न कि दुर्भाषित विज्ञों के लिए यह निर्दोष होता है, न कि दोषयुक्त । किन चार ? भिक्षुओं ! यहाँ भिक्षु सुभाषित ही बोलता है, न कि दुर्भाषित । धर्म को ही बोलता है, न कि अधर्म । प्रिय ही बोलता है, न कि अप्रिय । सत्य ही बोलता है न कि असत्य । भिक्षुओं ! इन चार अंगों से युक्त वचन सुभाषित होता है, न कि दुर्भाषित । विज्ञों के लिए वह निर्दोष होता है, न कि दोषयुक्त भगवान् ने यह कहा। सुगत ने यह कहकर पश्चात् यह कहा –

So it was heard by me: Once Bhagavān dwelt at Śāvatthi in Jetavana. Anāthapindakāram of Bhagavān called Bhikkhus and said this: 'O Bhikkhus, the speech that is provided with four requisites is well-spoken, not ill-spoken, both faultless and blameless to the wise.' 'Which four?' 'O Bhikkhus, the Bhikkhu speaks well-spoken language, not ill-spoken; he speaks what is right dhamma, not what is unrighteous adhamma; he speaks what is pleasing, not what is unpleasing; he speaks what is true, not what is false. O Bhikkhus, the speech that is provided with these four requisites, is well-spoken, not ill-spoken, both faultless and blameless to the wise.' This said Bhagavān. When Sugata had said this, then the Shāstā spoke the following:

"सुभासितं उत्तममाहु सन्तो, धम्मं भणे नाधम्मं तं दुतियं।
पियं भणे नाप्पियं तं ततियं, सच्चं भणे नालिकं तं चतुत्थं''ति॥3/3/1॥

Subhāsitaṃ uttamamāhu santo, dhammaṃ bhaṇe nādhammaṃ taṃ dutiyaṃ;
Piyaṃ bhaṇe nāppiyaṃ taṃ tatiyaṃ, saccaṃ bhaṇe nālikaṃ taṃ catutthaṃ''ti.॥1॥

"सुभाषितमुत्तममाह सन्तः, धर्मं भणेत् नाधर्मं तत् द्वितीयम्।
प्रियं भणेत् नाप्रियं तत् तृतीयम्, सत्यं भणेत् नालीकं तत् चतुर्थम्" इति॥1॥

सन्तों ने सुभाषित को ही उत्तम वचन कहा है । धर्म को ही कहे, अधर्म को नहीं –यह दूसरा है । प्रिय वचन बोले, अप्रिय नहीं– यह तीसरा है । सत्य बोले, असत्य नहीं–यह चौथा है॥1॥

'Well-spoken language the just call the principal thing; let one speak what is right dhamma, not what is adhamma, that is the second; let one speak what is pleasing, not what is unpleasing. that is the third; let one speak what is true, not what is false, that is the fourth.'.1.

अथ खो आयस्मा वङ्गीसो उट्ठायासना एकंसं चीवरं कत्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा भगवन्तं एतदवोच – ''पटिभाति मं भगवा, पटिभाति मं सुगता''ति। ''पटिभातु तं वङ्गीसा''ति भगवा अवोच। अथ खो आयस्मा वङ्गीसो भगवन्तं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवि –

Atha kho āyasmā vaṅgīso uṭṭhāyāsanā ekaṃsaṃ cīvaraṃ katvā yena bhagavā tenañjaliṃ paṇāmetvā bhagavantaṃ etadavoca – "paṭibhāti maṃ bhagavā, paṭibhāti maṃ sugatā"ti. "Paṭibhātu taṃ vaṅgīsā"ti bhagavā avoca. Atha kho āyasmā vaṅgīso bhagavantaṃ sammukhā sāruppāhi gāthāhi abhitthavi –

अथ खलु आयुष्मान् *वङ्गीस* उत्थायासनात् एकांशं चीवरं कृत्वा यत्र भगवान् तत्राञ्जलिं प्रणम्य भगवन्तमेतदवोचत् – ''प्रतिभाति मां भगवन् ! प्रतिभाति मां सुगत!" इति। ''प्रतिभातु त्वां *वङ्गीस* !" इति भगवान् अवोचत्। अथ खलु आयुष्मान् *वङ्गीसो* भगवन्तं सम्मुखं सारूप्याभि: गाथाभिरभ्यस्तावीत् –

तब आयुष्मान् वंगीस आसन से उठ, चीवर को एक कन्धे पर करके जिधर भगवान् थे, उधर दोनों हाथ जोड़ प्रणाम कर भगवान् से यह बोले– "सुगत ! मुझे सूझता है ।" "वंगीस। उसे सुनाओ ।" भगवान् ने ऐसा कहा तब आयुष्मान् वंगीस ने भगवान् के सामने अनुकूल गाथाओं से स्तुति की–

Then the venerable Vañgisa, rising from his seat, throwing his robe over one shoulder and bending his joined hands towards Bhagavān, said this: 'It occurs to me, O Sugata!' 'Let it occur to thee, O Vañgisa!' said Bhagavān. Then the venerable Vañgisa, standing before Bhagavān, praised him with appropriate stanzas:

"तमेव वाचं भासेय्य, यायत्तानं न तापये।
परे च न विहिंसेय्य, सा वे वाचा सुभासिता॥3/3/2॥

"Tameva vācaṃ bhāseyya, yāyattānaṃ na tāpaye;
Pare ca na vihiṃseyya, sā ve vācā subhāsitā.॥2॥

"तामेव वाचं भाषेत, ययात्मानं न तापयेत् ।
पराँश्च न विहिंस्यात्, सा वै वाचा सुभाषिता॥2॥

उसी बात को बोले जिससे न स्वयं कष्ट पाये और न दूसरे को ही दु:ख हो । वही बात सुभाषित है॥2॥

'Let one say such words by which he does not pain himself, nor hurt others; such words are truly well-spoken.2.

"पियवाचमेव भासेय्य, या वाचा पटिनन्दिता।
यं अनादाय पापानि, परेसं भासते पियं॥3/3/3॥

"Piyavācameva bhāseyya, yā vācā paṭinanditā;
Yaṃ anādāya pāpāni, paresaṃ bhāsate piyaṃ.॥3॥

"प्रियवाचमेव भाषेत, या वाचा प्रतिनन्दिता।
यामनादाय पापानि, परेषां भाषते प्रियम्॥3॥

जो बात आनन्दमयी हो वह प्रिय बात बोले । पापी बातों को छोड़कर दूसरों को प्रियवचन ही बोले॥3॥

'Let one speak pleasing words which are received joyfully by all, and which saying he, without committing sins, speaks what is pleasing to others.3.

"सच्चं वे अमता वाचा, एस धम्मो सनन्तनो।
सच्चे अत्थे च धम्मे च, आहु सन्तो पतिट्ठिता॥3/3/4॥

"Saccaṃ ve amatā vācā, esa dhammo sanantano;
Sacce atthe ca dhamme ca, āhu santo patiṭṭhitā.॥4॥

"सत्यं वै अमृता वाचा, एष धर्म: सनातन:।
सत्ये अर्थे च धर्मे च, आहु: सन्ता: प्रतिष्ठिता:॥4॥

सत्य ही अमृत वचन है–यह सदा का नियम है। सत्य, अर्थ और धर्म में प्रतिष्ठित सन्तों ने ऐसा कहा है॥4॥

'Truth is immortal speech, this is a true saying; in what is true, in what is good, and in what is right, the just stand firm, so they say.

"यं बुद्धो भासति वाचं, खेमं निब्बानपत्तिया।
दुक्खस्सन्तकिरियाय, सा वे वाचानमुत्तमा''ति॥3/3/5॥

"Yaṃ buddho bhāsati vācaṃ, khemaṃ nibbānapattiyā;
Dukkhassantakiriyāya, sā ve vācānamuttamā"ti.॥5॥

"यां बुद्धो भाषते वाचाम्, क्षेमं निर्वाणप्राप्तये ।
दु:खस्यान्तकरणाय, सा वै वाचामुत्तमा" इति॥5॥

भगवान् बुद्ध जो कल्याणकर निर्वाण की प्राप्ति और दु:ख का अन्त करने के लिए जो वचन बोलते हैं, वही वचनों में उत्तम है॥5॥

'The words which Buddha speaks, which are sure to bring about extinction and put an end to pain, such words are truly the best.5.

सुभासितसुत्तं निट्ठितं
(Subhāsitasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 4) सुन्दरिकभारद्वाजसुत्तं* (Sundarikabhāradvājasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा कोसलेसु विहरति सुन्दरिकाय* नदिया तीरे। तेन खो पन समयेन सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो सुन्दरिकाय नदिया तीरे अग्गिं जुहति, अग्गिहुत्तं परिचरति। अथ खो सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो अग्गिं जुहित्वा अग्गिहुत्तं परिचरित्वा उट्ठायासना समन्ता चतुद्दिसा अनुविलोकेसि– ''को नु खो इमं हब्यसेसं भुञ्जेय्या''ति? अद्दसा खो सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं अविदूरे अञ्ञतरस्मिं रुक्खमूले ससीसं पारुतं निसिन्नं; दिस्वान वामेन हत्थेन हब्यसेसं गहेत्वा दक्खिणेन हत्थेन कमण्डलुं गहेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि। अथ खो भगवा सुन्दरिकभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स पदसद्देन सीसं विवरि। अथ खो सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो– ''मुण्डो अयं भवं, मुण्डको अयं भवं''ति ततोव पुन निवत्तितुकामो अहोसि। अथ खो सुन्दरिकभारद्वाजस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि– ''मुण्डा पि हि इधेकच्चे ब्राह्मणा भवन्ति, यंनूनाहं उपसङ्कमित्वा जातिं पुच्छेय्यं''ति। अथ खो सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं एतदवोच– ''किं जच्चो भवं''ति? अथ खो भगवा सुन्दरिकभारद्वाजं ब्राह्मणं गाथाहि अज्झभासि–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā kosalesu viharati sundarikāya nadiyā tīre. Tena kho pana samayena sundarikabhāradvājo brāhmaṇo sundarikāya nadiyā tīre aggiṃ juhati, aggihuttaṃ paricarati. Atha kho sundarikabhāradvājo brāhmaṇo aggiṃ juhitvā aggihuttaṃ paricaritvā uṭṭhāyāsanā samantā catuddisā anuvilokesi – "ko nu kho imaṃ habyasesaṃ

bhuñjeyyā"ti? Addasā kho sundarikabhāradvājo brāhmaṇo bhagavantaṃ avidūre aññatarasmiṃ rukkhamūle sasīsaṃ pārutaṃ nisinnaṃ; disvāna vāmena hatthena habyasesaṃ gahetvā dakkhiṇena hatthena kamaṇḍaluṃ gahetvā yena bhagavā tenupasaṅkami. Atha kho bhagavā sundarikabhāradvājassa brāhmaṇassa padasaddena sīsaṃ vivari. Atha kho sundarikabhāradvājo brāhmaṇo – "muṇḍo ayaṃ bhavaṃ, muṇḍako ayaṃ bhavaṃ"ti tatova puna nivattitukāmo ahosi. Atha kho sundarikabhāradvājassa brāhmaṇassa etadahosi – "muṇḍā pi hi idhekacce brāhmaṇā bhavanti, yaṃnūnāhaṃ upasaṅkamitvā jātiṃ puccheyyaṃ"ti. Atha kho sundarikabhāradvājo brāhmaṇo yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ etadavoca – "kiṃ jacco bhavaṃ"ti? Atha kho bhagavā sundarikabhāradvājaṃ brāhmaṇaṃ gāthāhi ajjhabhāsi–

एवं मया श्रुतम्– एकस्मिन् समये भगवान् *कोसलेषु* विहरति सुन्दरिकाया: नद्या: तीरे। तस्मिन् खलु पुन: समये *सुन्दरिकभारद्वाजो* ब्राह्मणो *सुन्दरिकाया: नद्या:* तीरेऽग्निं जुहोति, अग्निहोत्रं परिचरति। अथ खलु *सुन्दरिकभारद्वाजो* ब्राह्मणोऽग्निं जुहुत्वा अग्निहोत्रं परिचार्य, उत्थायासनात् समन्तात् चतुर्दिशा अनुव्यलुलोकत्– "को नु खलु इमं हव्यशेषं भुञ्जीयात्" इति? अद्राक्षीत् खलु *सुन्दरिकभारद्वाजो* ब्राह्मणो भगवन्तम् अविदूरेऽन्यस्मिन् वृक्षमूले स्वशीर्षम् प्रावृतं निषण्णम्; दृष्ट्वा वामेन हस्तेन हव्यशेषं गृहीत्वा, दक्षिणेन हस्तेन कमण्डलुं गृहीत्वा, यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्। अथ खलु भगवान् *सुन्दरिकभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य पदशब्देन शीर्षं व्यवीवरत्। अथ खलु *सुन्दरिकभारद्वाजो* ब्राह्मण:– "मुण्डोऽयं भवान्, मुण्डकोऽयं भवान्" इति, तत एव पुन: निवर्त्तितुंकामोऽभूत् । अथ खलु *सुन्दरिकभारद्वाजस्य* ब्राह्मणस्य एतदभूत् – ''मुण्डा अपि हि इह एके ब्राह्मणा: भवन्ति, यत् नूनमहमुपसंक्रम्य जातिं पृच्छेयम्" इति । अथ खलु सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्, उपसंक्रम्य भगवन्तमेतदवोचत्– ''किं जातिकरो भवान्" इति? अथ खलु भगवान् *सुन्दरिकभारद्वाजं* ब्राह्मणं गाथाभिरध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् कोसल जनपद में सुन्दरी नदी के किनारे विहार कर रहे थे । उस समय सुन्दरिक भारद्वाज नामक ब्राह्मण सुन्दरी नदी के किनारे अग्नि-हवन करता था, अग्निहोत्र में लगा था । तब सुन्दरिक भारद्वाज ने अग्नि-हवन करके, अग्निहोत्र की परिचर्या कर, आसन से उठ चारों ओर चारों दिशाओं का अवलोकन किया– "कौन इस हव्यशेष को खायेगा ?" सुन्दरिक ब्राह्मण ने भगवान् को पास में ही किसी एक वृक्ष के नीचे सिर से चीवर ओढ़े बैठे देखा । देखकर बायें हाथ से हव्यशेष को लेकर, दाये हाथ से कमण्डलु ले, जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया । तब भगवान् ने सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण के पैरों के शब्द से सिर खोल दिया । तब सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण – 'यह आप मथमुंडे हैं, यह आप मथमुंडे हैं !" वहीं से पुन: लौटना चाहा । तब सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण को ऐसा हुआ– "यहाँ कोई-कोई ब्राह्मण भी मथमुंडे होते हैं, क्यों न मैं पास जाकर जाति पूछूँ ?" तब सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया । जाकर भगवान् से यह कहा– "आप किस जाति के हैं?" तब भगवान् ने सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण से गाथाओं में कहा–

So it was heard by me: Once Bhagavān dwelt in Kosala on the bank of the river Sundarika. And during that time the Brāhmaṇa Sundarikabharadvaja made offerings to the fire and worshipped the fire. Then the Brāhmaṇa Sundarikabharadvaja, having made offerings to the fire and worshipped the fire, and having risen from his seat, looked about him on all sides towards the four quarters of the globe, saying: 'Who is to enjoy the rest of this oblation?' The Brāhmaṇa Sundarikabharadvaja saw Bhagavān sitting not far off at the root of a tree, wrapped up bead and body; and seeing him he, after taking the rest of the oblation with his left hand and the waterpot with his right hand, went up to Bhagavān. Then Bhagavān, on hearing the footsteps of Sundarikabharadvaja, the Brāhmaṇa, uncovered his head. Then the Brāhmaṇa Sundarika

bharadvaja thought: 'This man is shaved, this man is a shaveling,' and he wished to return again from there. Then this came to the mind of Sundarikabharadvaja, the Brāhmaṇa: 'Some Brāhmaṇas also here are shaved, I think I shall go up and ask him about his descent.' Then the Brahmana Sundarikabharadvaja went up to Bhagavān, and having gone up he said this: 'Of what family art thou?' Then Bhagavān answered Sundarikabharadvaja, the Brāhmaṇa, in stanzas:

* पूरळाससुत्त भी अपर नाम है । * सई नदी का प्राचीन नाम है ।

"न ब्राह्मणो नोम्हि न राजपुत्तो, न वेस्सायनो उद कोचि नोम्हि।
गोत्तं परिञ्ञाय पुथुज्जनानं, अकिञ्चनो मन्त चरामि लोके॥3/4/1॥

"Na brāhmaṇo nomhi na rājaputto, na vessāyano uda koci nomhi;
Gottaṃ pariññāya puthujjanānaṃ, akiñcano manta carāmi loke.॥1॥

"न ब्राह्मणो नास्मि च न राजपुत्र:, न वैश्यायन: उत् कोऽपि नास्मि।
गोत्रं परिज्ञाय पृथग्जनानाम्, अकिञ्चनो मन्ता चरामि लोके॥1॥

भगवान–मैं न तो ब्राह्मण हूँ, न राजपुत्र हूँ, न वैश्य हूँ और न कोई और ही हूँ । पृथकजनों के गोत्र को भली प्रकार जानकर मैं विचार-पूर्वक अकिंचन भाव से लोक में विचरण करता हूँ॥1॥

'No Brāhmaṇa am I, nor a king's son, nor any Vessa; having thoroughly observed the class of common people, I wander about the world reflectingly, possessing nothing.1.

"सङ्घाटिवासी अगहो चरामि, निवुत्तकेसो अभिनिब्बुतत्तो।
अलिप्पमानो इध माणवेहि, अकल्लं मं ब्राह्मण पुच्छसि गोत्तपञ्हं''॥3/4/2॥

"Saṅghāṭivāsī agaho carāmi, nivuttakeso abhinibbutatto;
Alippamāno idha māṇavehi, akallaṃ maṃ brāhmaṇa pucchasi gottapañhaṃ".॥1॥

"संघाटिवासी अगेह: चरामि, निवृत्तकेशोऽभिनिवृतत्त्वात्।
अलिप्यमान इह *माणवस्तु* ! अकल्यं मां ब्राह्मण! पृच्छसि गोत्रप्रश्नम्"॥2॥

चीवर पहन, बेघर होकर, सिर मुँड़ाकर, पूर्ण रूप से शान्त होकर, यहाँ लोगों में अनासक्त होकर विचरण करता हूँ। हे माणव ! तू मुझसे गोत्र का प्रश्न अनुचित पूछ रहा है॥2॥

'Dressed in a saṅghati and houseless I wander about, with my hair cut off, calm, not intermixing with people in this world. Thou askest me an unseasonable question about my family, O Brāhmaṇa!'.2.

"पुच्छन्ति वे भो ब्राह्मणा, ब्राह्मणेभि सह ब्राह्मणो नो भवं''ति॥
"ब्राह्मणो हि चे त्वं ब्रूसि, मञ्च ब्रूसि अब्राह्मणं।
तं तं सावित्तिं पुच्छामि, तिपदं चतुवीसतक्खरं॥3/4/3॥

"Pucchanti ve bho brāhmaṇā, brāhmaṇebhi saha brāhmaṇo no bhavaṃ"ti.
"Brāhmaṇo hi ce tvaṃ brūsi, mañca brūsi abrāhmaṇaṃ;
Taṃ taṃ sāvittiṃ pucchāmi, tipadaṃ catuvīsatakkharaṃ.॥3॥

"पृच्छन्ति वै भो ब्राह्मणा: ! ब्राह्मणै: सह ब्राह्मणो नु भवान्" इति।
"ब्राह्मणो हि चेत् त्वं ब्रवीषि, मां च ब्रवीषि अब्राह्मणम् ।
त्वां तां सावित्रीं पृच्छामि, त्रिपदां चतुर्विंशत्यक्षराम्॥3॥

ब्राह्मण– "ब्राह्मण ही ब्राह्मण से पूछते हैं कि आप ब्राह्मण हैं ?" भगवान्– तू अपने को ब्राह्मण कहते हो और मुझे अब्राह्मण कहते हो, तो तुमसे मैं त्रिपद और चौबीस अक्षर वाले सावित्री मंत्र को पूछता हूँ॥3॥

Brāhmaṇas together with Brāhmaṇas ask truly, Art thou a Brāhmaṇa?' Bhagavān: 'If thou sayest. I am a Brāhmaṇa, and callest me no Brāhmaṇa, then I ask thee about the Sāvitti that consists of three padas and twenty-four syllables'.3.

"किं निस्सिता इसयो मनुजा, खतिया ब्राह्मणा।
देवतानं यञ्ञमकप्पयिंसु, पुथू इध लोके ।
यदन्तगू वेदगू यञ्ञकाले, यस्साहुतिं लभे तस्सिज्झेति ब्रूमि"॥3/4/4॥

"Kiṃ nissitā isayo manujā, khattiyā brāhmaṇā devatānaṃ;
Yaññamakappayiṃsu puthū idha loke.
"Yadantagū vedagū yaññakāle, yassāhutiṃ labhe tassijjheti brūmi".॥4॥

"किं निःश्रिता ऋषयो मनुजाः, क्षत्रियाः ब्राह्मणाः।
देवताभ्यः यज्ञमकल्पयन्, पृथु इह लोके ।
"योऽन्तगः वेदगः यज्ञकाले, यमाहुतिं लभेत तमृद्ध्यति ब्रवीमि"॥4॥

ब्राह्मण– इस संसार में ऋषियों, मनुष्यों, क्षत्रियों और ब्राह्मणों ने किस कारण देवताओं के लिए बहुत यज्ञ किये थे? भगवान–यज्ञ के समय पारंगत, किसी ज्ञानी को आहुति मिल गई तो उसका यज्ञ सफल होता है–ऐसा मैं कहता हूँ॥4॥

'For what reason did the Isis, men, Khattiyas, Brāhmaṇas make offerings to the gods abundantly in this world?' Bhagavān: 'He who, perfect and accomplished at the time of offering, obtains the ear of one or the other god, he will succeed, so I say.'.4.

"अद्धा हि तस्स हुतमिज्झे, (इति ब्राह्मणो) यं तादिसं वेदगुमद्दसाम।
तुम्हादिसानं हि अदस्सनेन, अञ्ञो जनो भुञ्जति पूरळासं''॥3/4/5॥

"Addhā hi tassa hutamijjhe, (iti brāhmaṇo) Yaṃ tādisaṃ vedagumaddasāma;
Tumhādisānaṃ hi adassanena, añño jano bhuñjati pūraḷāsaṃ".॥5॥

"अद्धा हि तस्य हुतं सिध्येत्, (इति ब्राह्मणः) यत् *तादिसं** वेदगुमद्राक्षम् ।
त्वादृशानां ह्यदर्शनेन, अन्यः जनः भुङ्क्ते पुरोडाशम्"॥5॥

ब्राह्मण– अवश्य ही उसका यज्ञ सफल होगा जो वैसे रक्षक, ज्ञानी का दर्शन पाये । आप जैसे ज्ञानियों के दर्शन न होने से ही दूसरे लोग पूड़ी और चिउरा (प्रसाद ग्रहण करते हैं) खाते हैं॥5॥

'Surely his offering will bear fruit,'—so said the Brāhmaṇa,—' because we saw such an accomplished man; for by not seeing such as you, somebody else will enjoy the oblation.'5.

* तादिसं=तायिनम्=बुद्ध, स्थिरात्मा

"तस्मातिह त्वं ब्राह्मण अत्थेन, अत्थिको उपसङ्कम्म पुच्छ।
सन्तं विधूमं अनीघं निरासं, अप्पेविध अभिविन्दे सुमेधं''॥3/4/6॥

"Tasmātiha tvaṃ brāhmaṇa atthena, atthiko upasaṅkamma puccha;
Santaṃ vidhūmaṃ anīghaṃ nirāsaṃ, appevidha abhivinde sumedhaṃ".॥6॥

"तस्माद्धि त्वं ब्राह्मण ! अर्थेन, अर्थिक उपसंक्रम्य पृच्छ !
सन्तं विधूममनघं निराशम्, अल्पमेवेह अभिविन्देम् सुमेधम्"॥6॥

इसलिए हे ब्राह्मण ! आप अर्थ के इच्छुक हो, आप शान्त, धैर्यवान् पापरहित, तृष्णारहित हैं, हे सुमेध! आपको नमस्कार है, अर्थहीन हूँ आप अन्यत्र ज्ञानी के पास जाकर पूछो॥6॥

'Therefore, O Brāhmaṇa, as you have come here to ask for something, ask; perhaps thou mightest here that is calm, without anger, free from pain, free from desire, one with a good understanding.'.6.

"यञ्ञे रतोहं भो गोतम, यञ्ञं यिट्ठुकामो नाहं पजानामि।
अनुसासतु मं भवं यत्थ हुतं इज्झते ब्रूहि मे तं"॥3/4/7॥

"Yaññe ratohaṃ bho gotama, yaññaṃ yiṭṭhukāmo nāhaṃ pajānāmi;
Anusāsatu maṃ bhavaṃ, yattha hutaṃ ijjhate brūhi me taṃ".॥7॥

"यज्ञे रतोऽहं भो *गौतम*! यज्ञं इष्टकामो नाहं प्रजानामि ।
अनुशास्तु मां भवान्, यत्र हुतम् इज्यते ब्रूहि मां तत्"॥7॥

ब्राह्मण–हे गौतम ! मैं यज्ञ में रत हूँ, यज्ञ करना चाहता हूँ । मैं उसे नहीं जानता इसलिए आप अनुशासित करें आप बतावें कि यज्ञ कैसे किया जाए ?॥7॥

'I delight in offering, O Gotama, I wish to make an offering, but I do not understand it; do thou instruct me, tell me in what case the offering succeeds.'7.

"तेन हि त्वं, ब्राह्मण, ओदहस्सु सोतं; धम्मं ते देसेस्सामि –
"मा जातिं पुच्छी चरणं च पुच्छ, कट्ठा हवे जायति जातवेदो।
नीचाकुलीनोपि मुनी धितीमा, आजानियो होति हिरीनिसेधो॥3/4/8॥

"Tena hi tvaṃ, brāhmaṇa, odahassu sotaṃ; dhammaṃ te desessāmi –
"Mā jātiṃ pucchī caraṇaṃ ca puccha, kaṭṭhā have jāyati jātavedo;
Nīcākulīnopi munī dhitīmā, ājāniyo hoti hirīnisedho.॥8॥

"तेन हि त्वम्, ब्राह्मण ! अवध्यायस्व श्रोतम्; धर्मं तान् देक्ष्यामि –
"मा जातिं पृच्छ, चरणञ्च पृच्छ, काष्ठात् ह वै जायते जातवेदः।
नीचाकुलीनोऽपि मुनिः धृतिमान्, *आजानीयो* भवति ह्रीनिषेधः॥8॥

भगवान्– "ब्राह्मण ! आप कान लगाएँ । मैं तुम्हें धर्म का उपदेश दूँगा । जाति मत पूछो, आचरण पूछो। लकड़ी से आग निकलती है । इसी प्रकार नीच अकुलीन भी मुनि धृतिमान्, उत्तम और लज्जा-युक्त कार्यों से दूर रहने वाला होता है॥8॥

'Therefore, O Brāhmaṇa, lend me thy ear, I will teach your the Dhamma.'Do not ask about descent, but ask about conduct; from wood, it is true, fire is born; likewise a firm Muni, although belonging to a low family, may become noble, when restrained from sining by humility.8.

"सच्चेन दन्तो दमसा उपेतो, वेदन्तगू वूसितब्रह्मचरियो।
कालेन तम्हि हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/4/9॥

"Saccena danto damasā upeto, vedantagū vūsitabrahmacariyo;
Kālena tamhi habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥9॥

"सत्येन दान्तो दमेन उपेतः, वेदान्तग उषितब्रह्मचर्यः।
कालेन तेभ्यः हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मणः पुण्यापेक्षो यजेत॥9॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से यज्ञ करता है, उसे चाहिए कि वह सत्य से दान्त, दम (इन्द्रिय-दमन) से युक्त, ज्ञान-पारंगत, ब्रह्मचारी मुनि को समयानुसार हव्य प्रदान करे॥9॥

'He who is subdued by truth, endowed with temperance, accomplished, leading a religious life, on such a one in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.9.

"ये कामे हित्वा अगहा चरन्ति, सुसञ्ञतत्ता तसरं व उज्जुं।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/4/10॥

"Ye kāme hitvā agahā caranti, susaññatattā tasaraṃ va ujjuṃ;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥10॥

"ये कामान् हित्वा अगृहाश्चरन्ति, सुसंयता: तसरमिव ऋजुम्।
कालेन तेभ्य: हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥10॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से यज्ञ करता है, उसे चाहिए कि तसर (ढरकी=तांत) के समान ऋजु, दूसरे संयमी जो काम-भोगों को छोड़, बेघर हो विचरण करने वाले मुनि हैं, उन्हें समयानुसार हव्य प्रदान करे॥10॥

'Those who, after leaving sensual pleasures, wander about houssless, well restrained, being like a straight shuttle, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.10.

"ये वीतरागा सुसमाहितिन्द्रिया, चन्दो व राहुग्गहणा पमुत्ता।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/4/11॥

"Ye vītarāgā susamāhitindriyā, cando va rāhuggahaṇā pamuttā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥11॥

"ये वीतरागा: सुसमाहितेन्द्रिया:, चन्द्र इव राहुग्रहणात् प्रमुक्ता:।
कालेन तेषु हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥11॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से यज्ञ करता है, उसे चाहिए कि राहु-ग्रहण से वियुक्त चन्द्रमा के समान जो वीतरागी, इन्द्रियों में संयम रखने वाले मुनि हैं, उन्हें समयानुसार हव्य प्रदान करे॥11॥

'Those whose passions are gone, whose senses are well composed, who are liberated like the moon out of the grasp of Rahu, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer. 11.

"असज्जमाना विचरन्ति लोके, सदा सता हित्वा ममायितानि।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/4/12॥

"Asajjamānā vicaranti loke, sadā satā hitvā mamāyitāni;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥12॥

"असजन्त: विचरन्ति लोके, सदा स्मृता: हित्वा ममायत्तानि।
कालेन तेषु हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥12॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से यज्ञ करता है, उसे चाहिए कि जो सदा स्मृतिमान् हैं, ममत्व छोड़कर, संसार में अनासक्त होकर विचरण करते हैं, समयानुसार उन्हें हव्य प्रदान करे॥12॥

'Those who wander about in the world without clinging to anything, always thoughtful, having left selfishness, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer. 12.

"यो कामे हित्वा अभिभुय्यचारी, यो वेदि जातीमरणस्स अन्तं।
परिनिब्बुतो उदकरहदोव सीतो, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/13॥

"Yo kāme hitvā abhibhuyyacārī, yo vedi jātīmaraṇassa antaṃ;
Parinibbuto udakarahadova sīto, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥13॥

"यो कामान् हित्वा अभिभूयचारी, योऽवेत् जातिमरणस्यान्तम्।
परिनिवृत्त उदकह्रद इव शीतः, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥13॥

जो विषयों को छोड़, निर्भय रूप से विचरण करते हैं, जिन्होंने जन्म-मृत्यु का अन्त जान लिया है, उपशान्त, गम्भीर जलाशय की तरह तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥13॥

'He who, after leaving sensual pleasures, wanders about victorious, he who knows the end of birth and death, who is perfectly happy calm like a deep water, Tathagata deserves the oblation.13.

"समो समेहि विसमेहि दूरे, तथागतो होति अनन्तपञ्ञो।
अनूपलित्तो इध वा हुरं वा, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/14॥

"Samo samehi visamehi dūre, tathāgato hoti anantapañño;
Anūpalitto idha vā huraṃ vā, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥14॥

"समः समैः विषमैः दूरे, तथागतो भवत्यनन्तप्रज्ञः।
अनुपलिप्त इह वापरं वा, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥14॥

सत्पुरुषों के साथ समान व्यवहार वाले, दुर्जनो से दूर रहने वाले तथागत अनन्त ज्ञानी हैं। इस लोक या परलोक में आसक्ति नहीं रखने वाले तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥14॥

'Just with the just and far from the unjust'. Tathagata is possessed of infinite understanding; undeflected both in this world and in the other, Tathagata deserves the oblation.14.

• वा हुरं (वाहि ओरं>वाह+ओरं=(अपरं) ह+उरं=हुरं)

"यं हि न माया वसति न मानो, यो वीतलोभो अममो निरासो।
पनुण्णकोधो अभिनिब्बुतत्तो, यो ब्राह्मणो सोकमलं अहासि।
तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/15॥

"Yaṃ hi na māyā vasati na māno, yo vītalobho amamo nirāso;
Panuṇṇakodho abhinibbutatto, yo brāhmaṇo sokamalaṃ ahāsi;
Tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥15॥

"यस्मिन् न माया वसति न मानः, यो वीतलोभोऽममो निराशः।
अपनुत्तक्रोधोऽभिनिवर्तितः, यो ब्राह्मणः शोकमलमहार्षीत्।
तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥15॥

जिनमें न माया है, न अभिमान है, जो लोभ, अहंकार और तृष्णा-रहित हैं, क्रोध को दूर कर उपशान्त हो गए हैं, जिस ब्राह्मण ने शोक रूपी मल को दूर कर दिया है, ऐसे तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥15॥

'He in whom there lives no deceit, no arrogance, he who is free from cupidity, free from selfishness, free from desire, who has banished anger, who is calm, the Brāhmaṇa who has removed the taint of grief, Tathagata deserves the oblation.15.

"निवेसनं यो मनसो अहासि, परिग्गहा यस्स न सन्ति केचि।
अनुपादियानो इध वा हुरं वा, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/16॥

"Nivesanaṃ yo manaso ahāsi, pariggahā yassa na santi keci;
Anupādiyāno idha vā huraṃ vā, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥16॥

"निवेशनं यो मनसोऽहार्षीत्, परिग्रहा: यस्य न सन्ति केचित्।
अनुत्पद्यमान इह वापरं वा, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥16॥

जिन्होंने मन से आसक्तियों को त्याग दिया है, जिन्हें किसी प्रकार का परिग्रह नहीं है, इस लोक या परलोक में अनासक्त तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥16॥

'He who has destroyed every resting-place of the mind, he for whom there is no grasping, he who covets nothing either in this world or in the other, Tathagata deserves the oblation.16.

"समाहितो यो उदतारि ओघं, धम्मं चञ्ञासि परमाय दिट्ठिया।
खीणासवो अन्तिमदेहधारी, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/17॥

"Samāhito yo udatāri oghaṃ, dhammaṃ caññāsi paramāya diṭṭhiyā;
Khīṇāsavo antimadehadhārī, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥17॥

"समाहितो य उदतारीत् ओघम्, धर्मञ्च अज्ञासीत् परमदृष्ट्या।
क्षीणास्रव: अन्तिमदेहधारी, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥17॥

जिन्होंने एकाग्र-चित्त होकर सांसारिक बाढ़ को पार कर लिया और उत्तम दृष्टि से धर्म को जान लिया, वह क्षीणाश्रव और अन्तिम शरीर धारण करने वाले तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥17॥

'He who is composed, who has crossed over the stream of existence and knows the Dhamma by taking the highest view of it, he whose passions are destroyed, who is wearing the last body, Tathagata deserves the oblation.17.

"भवासवा यस्स वची खरा च, विधूपिता अत्थगता न सन्ति।
स वेदगू सब्बधि विप्पमुत्तो, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/18॥

"Bhavāsavā yassa vacī kharā ca, vidhūpitā atthagatā na santi;
Sa vedagū sabbadhi vippamutto, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥18॥

"भवास्रवा: यस्य वाच: खराश्च, विधूपिता अर्थगता: न सन्ति।
स वेदग: सर्वथा विप्रमुक्त:, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥18॥

जिनके भवाश्रव और कटु-वचन नष्ट हो गए हैं, अस्त हो गए हैं, नहीं हैं, वे ज्ञानी, सब प्रकार से मुक्त तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥18॥

'He whose passion for existence and whose harsh talk are destroyed, are perished, and therefore exist not, he the accomplished and in every respect liberated Tathagata deserves the oblation.18.

"सङ्गातिगो यस्स न सन्ति सङ्गा, यो मानसत्तेसु अमानसत्तो।
दुक्खं परिञ्ञाय सखेत्तवत्थुं, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/19॥

"Saṅgātigo yassa na santi saṅgā, yo mānasattesu amānasatto;
Dukkhaṃ pariññāya sakhettavatthuṃ, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥19॥

"संगतिगो यस्य न सन्ति सङ्गा:, मानसत्त्वेष्वमानसत्त्व:।
दु:खं परिज्ञाय सक्षेत्रवस्तु, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥19॥

जो रागादि आसक्तियों के परे हो गए हैं, जो अभिमानी लोगों में अभिमान शून्य हैं; जिन्होंने दु:ख और उसकी उत्पत्ति-क्षेत्र को जान लिया है, ऐसे तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥19॥

'He who has shaken off all ties, for whom there are no ties, who amongst arrogant beings is free from arrogance, having penetrated pain together with its domain and subject, Tathagata deserves the oblation.19.

"आसं अनिस्साय विवेकदस्सी, परवेदियं दिट्ठिमुपातिवत्तो।
आरम्मणा यस्स न सन्ति केचि, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/20॥

"Āsaṃ anissāya vivekadassī, paravediyaṃ diṭṭhimupātivatto;
Ārammaṇā yassa na santi keci, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥20॥

"आशामनाश्रित्य विवेकदर्शी, परवेदनीयं दृष्टिमुपातिवृत्त:।
आरम्भा: यस्य न सन्ति केचित्, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥20॥

जो तृष्णा-रहित हैं, विवेकदर्शी हैं, दूसरों की दृष्टियों से परे हैं और जिनके लिए कहीं कुछ भी विषयावलम्बन नहीं है; ऐसे तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥20॥

'He who, without giving himself up to desire, sees Nibbana, who has overcome the view that is to be taught by others, to whom there are no objects of sense whatever, Tathagata deserves the oblation.20.

•आरम्भा: परिग्रहा: विषयावलम्बना: वेत्यर्थ:।

"परोपरा यस्स समेच्च धम्मा, विधूपिता अत्थगता न सन्ति।
सन्तो उपादानखये विमुत्तो, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/21॥

"Paroparā yassa samecca dhammā, vidhūpitā atthagatā na santi;
Santo upādānakhaye vimutto, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥21॥

"परापरा: यस्य समेत्य धर्मा:, विधूपिता अर्थगता: न सन्ति।
शान्त उपादानक्षये विमुक्त:, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥21॥

ज्ञान द्वारा जिनमें आदि से अन्त तक वासनाएँ नष्ट हो चुकी हैं, जो शान्त और आसक्तियों के क्षय से विमुक्त हैं, ऐसे तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥21॥

'He to whom all Dhammas of every description, after he has penetrated them, are destroyed, are perished, and therefore exist not, he who is calm, liberated in the destruction of attachment (Nibbana), Tathagata deserves the oblation.21.

"संयोजनं जातिखयन्तदस्सी, योपानुदि रागपथं असेसं।
सुद्धो निदोसो विमलो अकाचो, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/22॥

"Saṃyojanaṃ jātikhayantadassī, yopānudi rāgapathaṃ asesaṃ;
Suddho nidoso vimalo akāco, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥22॥

"संयोजनं जातिक्षयान्तदर्शी, योऽपानुदत् रागपथमशेषम्।
शुद्धो निर्दोषो विमलोऽकाच:, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥22॥

जिन्होंने जन्म-क्षय को देख लिया है, सभी सांसारिक और राग के बन्धनों को नष्ट कर दिया है, जो शुद्ध हैं, निर्दोष हैं, विमल हैं और मलरहित हैं, ऐसे तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥22॥

'He who sees the destruction of bond and birth, who has totally evaded the path of passion, who is pure, faultless, spotless, undepraved, Tathagata deserves the oblation.22.

* मलरहितो-अमलो

"यो अत्तनो अत्तानं नानुपस्सति, समाहितो उज्जुगतो ठितत्तो।
स वे अनेजो अखिलो अकङ्खो, तथागतो अरहति पूरळासं॥3/4/23॥

"Yo attano attānaṃ nānupassati, samāhito ujjugato ṭhitatto;
Sa ve anejo akhilo akaṅkho, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ.॥23॥

"यो आत्मनाऽऽत्मानं नानुपश्यति, समाहित ऋजुगत: स्थेष्ठ: ।
स वै अनेजोऽखिलोऽकांक्ष:, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥23॥

जो अपने भीतर आत्मा को नहीं देखता, एकाग्र, ऋजुगामी और स्थिर चित्त है, पापी (निष्पाप) वही तृष्णा-रहित तथागत पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥23॥

'He who does not measure himself by himself, who is composed, upright, firm, without desire, free from harshness, free from doubt, Tathagata deserves the oblation.23.

"मोहन्तरा यस्स न सन्ति केचि, सब्बेसु धम्मेसु च ञाणदस्सी।
सरीरञ्च अन्तिमं धारेति, पत्तो च सम्बोधिमनुत्तरं सिवं।
एत्तावता यक्खस्स सुद्धि, तथागतो अरहति पूरळासं"॥3/4/24॥

"Mohantarā yassa na santi keci, sabbesu dhammesu ca ñāṇadassī;
Sarīrañca antimaṃ dhāreti, patto ca sambodhimanuttaraṃ sivaṃ;
Ettāvatā yakkhassa suddhi, tathāgato arahati pūraḷāsaṃ".॥24॥

"मोहान्तरा: यस्य न सन्ति केचित्, सर्वेषु धर्मेषु च ज्ञानदर्शी।
शरीरं चान्तिमं धारयति, प्राप्तश्च सम्बोधिमनुत्तरं शिवम्।
एतावता यक्षस्य (सत्त्वस्य) शुद्धि:, तथागतोऽर्हति पुरोडाशम्॥24॥

जिनमें किसी भी प्रकार का मोह नहीं है जो सभी धर्मों में ज्ञानदर्शी है, अन्तिम शरीरधारी है और जिन्होंने सर्वोत्तम कल्याणकर सम्बोधि (ज्ञान) को प्राप्त कर लिया है, इतने मात्र से जिस पुरुष (यक्ष) की शुद्धि होती है, ऐसे (परमविशुद्ध) तथागत ही पूड़ी और चिउरा के योग्य हैं॥24॥

'He to whom there is no cause of folly, who has a supernatural insight in all Dhammas, who wears the last body and who has acquired perfect enlightenment, the highest, the blessed, for him thus a Yakkha's purification.24.

"हुतं च मय्हं हुतमत्थु सच्चं, यं तादिसं वेदगुनं अलत्थं।
ब्रह्मा हि सक्खि पटिगण्हातु मे भगवा, भुञ्जतु मे भगवा पूरळासं॥3/4/25॥

"Hutaṃ ca mayhaṃ hutamatthu saccaṃ, yaṃ tādisaṃ vedagunaṃ alatthaṃ;
Brahmā hi sakkhi paṭigaṇhātu me bhagavā, bhuñjatu me bhagavā pūraḷāsaṃ".25.

"हुतञ्च मह्यं हुतमस्तु सत्यम्, यं *तादिं* वेदगुणमलब्धम् ।
ब्रह्मा हि साक्षी प्रतिगृह्णातु मे भगवन् ! भुञ्जीत मे भगवन् ! पुरोडाशम्॥25॥

आप जैसे ज्ञान-पारंगत को पाकर मेरा यज्ञ पूर्ण हो । कारण कि आप साक्षात् ब्रह्म हैं, भगवन्! मेरा भोजन स्वीकार करें, भगवन् ! मेरी पूड़ी और चिउरा को खायें॥25॥

'May my offering be a true offering, because I met with such an accomplished one; Brahman is my witness, may Bhagavān accept me, may Bhagavān enjoy my oblation.' 25.

"गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं, सम्पस्सतं ब्राह्मण नेस धम्मो।
गाथाभिगीतं पनुदन्ति बुद्धा, धम्मे सती ब्राह्मण वुत्तिरेसा॥3/4/26॥

"Gāthābhigītaṃ me abhojaneyyaṃ, sampassataṃ brāhmaṇa nesa dhammo;
Gāthābhigītaṃ panudanti buddhā, dhamme satī brāhmaṇa vuttiresā.॥26॥

"गाथाभिगीतं मेऽभोजनीयम्, सम्पश्यन्तं ब्राह्मण! नैष धर्मः।
गाथाभिगीतं प्रणुदन्ति बुद्धाः, धर्मे सति ब्राह्मण! वृत्तिरेषा॥26॥

भगवान्–धर्मोपदेश करने से प्राप्त भोजन मेरे लिए अभोज्य है। हे ब्राह्मण! यथार्थदर्शी का यह धर्म (नियम) नहीं है। बुद्ध धर्मोपदेश से प्राप्त भोजन को त्याग देते हैं। ब्राह्मण! धर्म के विद्यमान रहने पर यही रीति है॥26॥

'What is obtained by stanzas is not to be enjoyed by me, this is not the custom of the clearly-seeing, O Brāhmaṇa; Buddhas reject what is obtained by stanzas. While the Dhamma exists, O Brāhmaṇa, this is the practice of the Buddhas.26.

"अञ्ञेन च केवलिनं महेसिं, खीणासवं कुक्कुच्चवूपसन्तं।
अन्नेन पानेन उपट्ठहस्सु, खेत्तञ्हि तं पुञ्ञपेक्खस्स होति"॥3/4/27॥

"Aññena ca kevalinaṃ mahesiṃ, khīṇāsavaṃ kukkuccavūpasantaṃ;
Annena pānena upaṭṭhahassu, khettañhi taṃ puññapekkhassa hoti".॥27॥

"अन्येन च केवलिनं महर्षिम्, क्षीणास्रवं कुकृत्योपशान्तम् ।
अन्नेन पानेन उपास्थास्व, क्षेत्रं हि तत् पुण्यापेक्षस्य भवति॥27॥

केवलज्ञानी, महर्षि, क्षीणास्रव, कुकृत्यपनारहित दूसरे, पुण्य चाहने वाले के लिए यह उत्तम क्षेत्र होता है॥27॥

'With other food and drink must thou serve one that is perfect, a great Isi, whose passions are destroyed, and whose misbehaviour has ceased, for this is a field for one who looks for good works.27.

"साधाहं भगवा तथा विजञ्ञं, यो दक्खिणं भुञ्जेय्य मादिसस्स।
यं यञ्ञकाले परियेसमानो, पप्पुय्य तव सासनं॥3/4/28॥

"Sādhāhaṃ bhagavā tathā vijaññaṃ, yo dakkhiṇaṃ bhuñjeyya mādisassa;
Yaṃ yaññakāle pariyesamāno, pappuyya tava sāsanaṃ".॥28॥

"साध्वहं भगवन् ! तथा विजानामि, यो दक्षिणं भुञ्जीत् मादृशस्य ।
यं यज्ञकाले परिसेव्यमानम्, प्राप्य तव शासनम्॥28॥

ब्राह्मण– बहुत अच्छा भगवन् ! मैं जानना चाहता हूँ कि मुझ जैसे की दक्षिणा कौन ग्रहण करे ? आपके धर्म को ग्रहण कर मैं यज्ञ के समय किसको खोजूँ ?॥28॥

'Good, O Bhagavān, then I should like to know, who will enjoy a gift from one like me, and whom I shall seek at the time of sacrifice as one worthy of offerings after having accepted thy doctrine.'28.

"सारम्भा यस्स विगता, चित्तं यस्स अनाविलं।

विप्पमुत्तो च कामेहि, थिनं यस्स पनूदितं॥3/4/29॥

"Sārambhā yassa vigatā, cittaṃ yassa anāvilaṃ;
Vippamutto ca kāmehi, thinaṃ yassa panūditaṃ.॥29॥

"सारम्भा: यस्य विगता:, चित्तं यस्यानाबिलम् ।
विप्रमुक्तश्च कामै:, स्त्यानं यस्यापनोदितम्॥29॥

भगवान्– जिनमें हिंसा-भाव नहीं है, जिनका चित्त राग-रहित परिशुद्ध है, जो काम-भोगों से मुक्त है स्त्यान जिनसे दूर हो गया है॥29॥

'Whosoever has no quarrels, whose mind is untroubled, and who has freed himself from lusts, whose sloth is driven away,.29.

"सीमन्तानं विनेतारं, जातिमरणकोविदं।

मुनिं मोनेय्यसम्पन्नं, तादिसं यञ्ञमागतं॥3/4/30॥

"Sīmantānaṃ vinetāraṃ, jātimaraṇakovidaṃ;
Muniṃ moneyyasampannaṃ, tādisaṃ yaññamāgataṃ.॥30॥

"सीमन्तानां विनेतारम्, जातिमरणकोविदम् ।
मुनिं मौनसम्पन्नम्, तादृशं यज्ञमागतम्॥30॥

जो वासनाओं को नाश करने वाले हैं, जन्म और मृत्यु के जानकार हैं, जो मौन व्रत से युक्त मुनि हैं, वैसे यज्ञ में आएं॥30॥

'Whosoever conquers his sins, knows birth and death, the Muni who is endowed with wisdom, such a one who has attained to offering,.30.

"भकुटिं विनयित्वान, पञ्जलिका नमस्सथ।

पूजेथ अन्नपानेन, एवं इज्झन्ति दक्खिणा॥3/4/31॥

"Bhakuṭiṃ vinayitvāna, pañjalikā namassatha;
Pūjetha annapānena, evaṃ ijjhanti dakkhiṇā.॥31॥

"भृकुटिं विनम्य, प्राञ्जलिकया नमत।
पूजयेदन्नपानेन, एवमिष्यन्ति दक्षिणा:॥31॥

आँखें नीची करके, दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करो । अन्न और पेय से उनकी पूजा करो– इस प्रकार दक्षिणा सफल होती है॥31॥

'Him you should worship and honour with food and drink, putting away frowning; so the gifts will prosper.'31.

"बुद्धो भवं अरहति पूरळासं, पुञ्ञखेत्तमनुत्तरं।

आयागो सब्बलोकस्स, भोतो दिन्नं महप्फलं''ति॥3/4/32॥

"Buddho bhavaṃ arahati pūraḷāsaṃ, puññakhettamanuttaraṃ;
Āyāgo sabbalokassa, bhoto dinnaṃ mahapphalaṃ"ti.॥32॥

"बुद्धो भवानर्हति पुरोडाशम्, पुण्यक्षेत्रमनुत्तरम् ।
आयाग: सर्वलोकस्य, भवते दत्तं महत् फलम्" इति"॥32॥

आप बुद्ध पूड़ी चिउरा के योग्य हैं । आप उत्तम पुण्य-क्षेत्र हैं । सारे संसार के पूज्य हैं । आपको देना महाफलदायी है॥32॥

'Thou Buddha deservest the oblation, thou art the best field for good works, the object of offering to all the world; what is given to thee will bear great fruit.'

अथ खो सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तं एतदवोच – ''अभिक्कन्तं, भो गोतम, पे0.....अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो। एसाहं भवन्तं गोतमं सरणं गच्छामि धम्मञ्च भिक्खुसङ्घं च। लभेय्याहं भोतो गोतमस्स सन्तिके पब्बज्जं, लभेय्यं उपसम्पदं''ति। अलत्थ खो सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो...पे.... अरहतं अहोसीति।

Atha kho sundarikabhāradvājo brāhmaṇo bhagavantaṃ etadavoca – "abhikkantaṃ, bho gotama, pe..... anekapariyāyena dhammo pakāsito. Esāhaṃ bhavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammañca bhikkhusaṅghaṃ ca. Labheyyāhaṃ bhoto gotamassa santike pabbajjaṃ, labheyyaṃ upasampadaṃ"ti. Alattha kho sundarikabhāradvājo brāhmaṇo...pe... arahataṃ ahosīti.

अथ खलु सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो भगवन्तमेतदवोचत्– "अभिकान्तम्, भो *गौतम*! .....*पे0*.....अनेकपर्यायेन धर्मः प्रकाशितः । एषोऽहं भवन्तं गौतमं शरणं गच्छामि, धर्मं च भिक्षुसंघञ्च। लभेयमहं भवतः गौतमस्य सान्तिकं प्रव्रज्याम्, लभेयम् उपसम्पदाम्" इति । आलब्धः खलु सुन्दरिकभारद्वाजो ब्राह्मणो...*पे0*.... अर्हत् अभूत इति ।

तब सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण ने भगवान् से यह कहा– "आश्चर्य है हे गौतम ! ... अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया । यह मैं आप गौतम की शरण जा रहा हूँ, धर्म और भिक्षु-संघ की भी । आप गौतम के पास मुझे प्रव्रज्या मिले, उपसम्पदा मिले । "सुन्दरिक भारद्वाज ब्राह्मण ने...उपसम्पदा पाई।... अर्हन्तों में से एक हुए ।

Then the Brāhmaṇa Sundarikabharadvaja said this to Bhagavān: 'It is excellent, O venerable Gotama!.....Pe..... It is excellent, O venerable Gotama! even so by the venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illustrated; I take refuge in the venerable Gotama, in the Dhamma, and in the Assembly of Bhikkhus; I wish to receive the robe and the orders from the venerable Gotama.' the venerable Bharadvaja became one of the arahatas.

सुन्दरिकभारद्वाजसुत्तं निट्ठितं

(Sundarikabhāradvājasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 5) माघसुत्तं (Māghasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एक समयं भगवा राजगहे विहरति गिज्झकूटे पब्बते। अथ खो माघो माणवो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो माघो माणवो भगवन्तं एतदवोच – ''अहं हि, भो गोतम, दायको दानपति वदञ्ञू याचयोगो; धम्मेन भोगे परियेसामि; धम्मेन भोगे परियेसित्वा धम्मलद्धेहि भोगेहि धम्माधिगतेहि एकस्सपि ददामि द्विन्नम्पि तिण्णम्पि चतुन्नम्पि पञ्चन्नम्पि छन्नम्पि सत्तन्नम्पि अट्ठन्नम्पि नवन्नम्पि दसन्नम्पि ददामि, वीसायपि तिंसायपि चत्तालीसायपि पञ्ञासायपि ददामि, सतस्सपि

ददामि, भिय्योपि ददामि। कच्चाहं, भो गोतम, एवं ददन्तो एवं यजन्तो बहुं पुञ्ञं पसवामी''ति ? ''तग्घ त्वं, माणव, एवं ददन्तो एवं यजन्तो बहुं पुञ्ञं पसवसि। यो खो, माणव, दायको दानपति वदञ्ञू याचयोगो; धम्मेन भोगे परियेसति; धम्मेन भोगे परियेसित्वा धम्मलद्धेहि भोगेहि धम्माधिगतेहि एकस्सपि ददाति...पे.... सतस्सपि ददाति, भिय्योपि ददाति, बहुं सो पुञ्ञं पसवती''ति। अथ खो माघो माणवो भगवन्तं गाथाय अज्झभासि–

Evaṃ me sutaṃ – eka samayaṃ bhagavā rājagahe viharati gijjhakūṭe pabbate. Atha kho māgho māṇavo yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavatā saddhiṃ sammodi. Sammodanīyaṃ kathaṃ sāraṇīyaṃ vītisāretvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinno kho māgho māṇavo bhagavantaṃ etadavoca –"Ahaṃ hi, bho gotama, dāyako dānapati vadaññū yācayogo; dhammena bhoge pariyesāmi; dhammena bhoge pariyesitvā dhammaladdhehi bhogehi dhammādhigatehi ekassapi dadāmi dvinnampi tiṇṇampi catunnampi pañcannampi channampi sattannampi aṭṭhannampi navannampi dasannampi dadāmi, vīsāyapi tiṃsāyapi cattālīsāyapi paññāsāyapi dadāmi, satassapi dadāmi, bhiyyopi dadāmi. Kaccāhaṃ, bho gotama, evaṃ dadanto evaṃ yajanto bahuṃ puññaṃ pasavāmī"ti ? "Taggha tvaṃ, māṇava, evaṃ dadanto evaṃ yajanto bahuṃ puññaṃ pasavasi. Yo kho, māṇava, dāyako dānapati vadaññū yācayogo; dhammena bhoge pariyesati; dhammena bhoge pariyesitvā dhammaladdhehi bhogehi dhammādhigatehi ekassapi dadāti...pe... satassapi dadāti, bhiyyopi dadāti, bahuṃ so puññaṃ pasavatī"ti. Atha kho māgho māṇavo bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् राजगृहे विहरति *गिज्झकूटे* (गृध्रकूटे) पर्वते। अथ खलु *माघो* माणवको यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवता सार्धं सममोदिष्ट। सम्मोद्य कथं सारणीयं व्यतिसार्य एकान्तं न्यसीदत्। एकान्तं निषण्णः खलु *माघो* माणवको भगवन्तम् एतदवोचत्– ''अहं हि, भो गौतम ! दायको दानपतिः वदान्यः याचयोगः, धर्मेण भोगं पर्येष्यामि; धर्मेण भोगान् पर्येष्य धर्मलब्धैः भोगैः धर्माधिगतैः एकस्मैरपि ददामि द्वाभ्यामपि ददामि, त्रिभ्योऽपि ददामि, चतुर्भ्योऽपि ददामि, पञ्चभ्योऽपि ददामि, षड्भ्योऽपि ददामि, सप्तभ्योऽपि ददामि, अष्टभ्योऽपि ददामि, नवभ्योऽपि ददामि, दशभ्योऽपि ददामि, विंशत्यै अपि ददामि, त्रिंशतेऽपि ददामि, चत्वारिंशतेऽपि ददामि, पञ्चाशतेऽपि ददामि, शतेऽपि ददामि, भूयसोऽपि ददामि। कश्चिदहम्, भो *गौतम* ! एवं ददन् एवं यजन् बहुकं पुण्यं प्रसृजामि इति ? ''तद्धि त्वं माणवक! एवं ददन्त एवं यजन्तः बहुं पुण्यं प्रसृजसि । यः खलु, माणवक! दायको दानपतिः वदान्यः याचयोगो धर्मेण भोगं पर्येषते; धर्मेण भोगान् पर्येष्य धर्मलब्धैः भोगैः धर्माधिगतैः एकस्मै अपि ददाति...*पे*.... शतेऽपि ददाति, भूयसोऽपि ददाति, बहुकं स पुण्यं प्रसृजति" इति। अथ खलु *माघो* माणवको भगवन्तं गाथयाध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् राजगृह में गृध्रकूट पर्वत पर विहार कर रहे थे । तब माघ माणवक जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया । जाकर भगवान् के साथ कुशल-मंगल पूछा । कुशल-मंगल पूछकर एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठे माघ माणवक ने भगवान् से यह कहा– "हे गौतम ! मैं दायक हूँ, दानपति हूँ, (याचकों के) कहते ही समझने वाला हूँ, मैं याचना के योग्य हूँ । धर्म से धन कमाता हूँ, धर्म से धन कमाकर धर्म से प्राप्त तथा धर्म से हस्तगत धन से एक को भी देता हूँ, दो को भी देता हूँ, तीन को भी देता हूँ, चार

को भी देता हूँ, पाँच को भी देता हूँ, छः को भी देता हूँ, सात को भी देता हूँ, आठ को भी देता हूँ, नव को भी देता हूँ, दस को भी देता हूँ, बीस को भी देता हूँ, तीस को भी देता हूँ, चालीस को भी देता हूँ, पचास को भी देता हूँ, सौ को भी देता हूँ, अधिक को भी देता हूँ । क्या हे गौतम ! मैं ऐसे देते, ऐसे चढ़ाते बहुत पुण्य कमाता हूँ ? " "तो तू माणवक ! देते, ऐसे चढ़ाते बहुत पुण्य कमाते हो । माणवक ! जो दायक, दानपति (याचकों के) कहते ही समझने वाला, यावना के योग्य धर्म से धन कमाता है, धर्म से धन कमाकर धर्म से प्राप्त, धर्म से हस्तगत धन से एक को देता है...सौ को देता है, अधिक को भी देता है, वह बहुत पुण्य कमाता है । "तब माघ माणवक ने भगवान् से गाथा में कहा–

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Rajagaha, in the mountain called the Vulture's Peak. Then the young man Magha went to Bhagavān. and having gone to him he talked pleasantly with him, and after having had some pleasant, remarkable conversation with him he sat down apart; sitting down apart the young man Magha spoke this to Bhagavān:'O venerable Gotama, I am a liberal giver, bount iful, suitable to beg of; justly I seek for riches, and having sought for riches justly, I give out of the justly obtained and justly acquired riches to one, to two, to three, to four, to five, to six, to seven, to eight, to nine, to ten, to twenty, to thirty, to forty, to fifty, to a hundred, I give still more. I should like to know, O venerable Gotama, whether I, while so giving, so offering, produce much good.' 'Certainly, O young man, dost thou in so offering produce much good; he, O young man, who is a liberal giver, bountiful, suitable to beg of, and who justly seeks for riches, and having sought for riches justly, gives out of his justly obtained and justly acquired riches to one, to two, to three, to four, to five, to six, to seven, to eight, to nine, to ten, to twenty, to thirty, to forty, to fifty, to a hundred, and gives still more, produces much good.' Then the young man Magha addressed Bhagavān in stanzas:

"पुच्छामहं गोतमं वदञ्ञुं, (इति माघो माणवो) कासायवासिं अगहं चरन्तं।
यो याचयोगो दानपति गहट्ठो, पुञ्ञत्थिको यजति पुञ्ञपेक्खो।
ददं परेसं इध अन्नपानं, कथं हुतं यजमानस्स सुज्झे"॥3/5/1॥

"Pucchāmahaṃ gotamaṃ vadaññuṃ, (iti māgho māṇavo) Kāsāyavāsiṃ agahaṃ carantaṃ;
Yo yācayogo dānapati gahaṭṭho, puññatthiko yajati puññapekkho;
Dadaṃ paresaṃ idha annapānaṃ, kathaṃ hutaṃ yajamānassa sujjhe".॥1॥

"पृच्छाम्यहं भो *गौतमं* वदान्यम्, (इति *माघो* माणवको) काषायवासम् अगेहं चरन्तम्।
यो याचयोगो दानपतिः गृहस्थः, पुण्यार्थिको यजति पुण्यापेक्षः ।
ददत् परेषामिह अन्नपानम्, कस्मै हुतं यजमानस्य सिध्येत्"॥1॥

माघ–काषायवस्त्रधारी, याचकों को जानने वाले आप गौतम से मैं पूछता हूँ कि पुण्यार्थी हो, पुण्य का अपेक्षी हो, दूसरों के अन्न-पेय का दान करने वाले, याचने योग्य, दानपति, गृहस्थ का दान किसे देने से महाफल होता है?॥1॥

'I ask the venerable Gotama, the bountiful,'— so said the young man Magha,—' wearing the yellow robe, wandering about houseless:' 'He who is a householder, suitable to beg of, a donor, who, desirous of good, offers having what is good in view, and giving to others in this world food and drink,— where will the oblation of such an offerer prosper?' .1.

"यो याचयोगो दानपति गहट्ठो, (माघा ति भगवा) पुञ्ञत्थिको यजति पुञ्ञपेक्खो।
ददं परेसं इध अन्नपानं, आराधये दक्खिणेय्येभि तादि''॥3/5/2॥

"Yo yācayogo dānapati gahaṭṭho, (māghā ti bhagavā) Puññatthiko yajati puññapekkho;
Dadaṃ paresaṃ idha annapānaṃ, ārādhaye dakkhiṇeyyebhi tādi".॥2॥

"यो याचयोगो दानपतिः गृहस्थः, (माघ इति भगवान्) पुण्यार्थिको यजति पुण्यापेक्षः।
ददत् परेषामिह अन्नपानम्, आराधयेत् दाक्षिणेयैः *तादिम्* "॥2॥

भगवान्– जो याचना करने योग्य, दानपति गृहस्थ पुण्य को चाहता, पुण्य की आकांक्षा करता है, यहाँ दूसरों को अन्न और पेय देता है, उसे चाहिए कि वह ज्ञानी, तथागत की दक्षिणा देने वाले के द्वारा आराधना की जानी चाहिए॥2॥

'He who is a householder, suitable to beg of, a donor, O Magha,'—so said Bhagavān,—' who, desirous of good. offers having what is good in view, and giving to others in this world food and drink, such a one will prosper with those worthy of offerings.'.2.

"यो याचयोगो दानपति गहट्ठो, (इति माघो माणवो) पुञ्ञत्थिको यजति पुञ्ञपेक्खो।
ददं परेसं इध अन्नपानं, अक्खाहि मे भगवा दक्खिणेय्ये''ति॥3/5/3॥

"Yo yācayogo dānapati gahaṭṭho, (iti māgho māṇavo) Puññatthiko yajati puññapekkho;
Dadaṃ paresaṃ idha annapānaṃ, akkhāhi me bhagavā dakkhiṇeyye".॥3॥

"यो याचयोगो दानपतिः गृहस्थः, (इति *माघो* माणवकः) पुण्यार्थिको यजति पुण्यापेक्षः।
ददन् परेषामिह अन्नपानम्, आख्येत् मां भगवन्! दाक्षिणेयम्" इति॥3॥

माघ– जो याचना करने योग्य, दानपति गृहस्थ पुण्य को चाहते, पुण्य की आकांक्षा से दान देते हैं तथा जो यहाँ दूसरों को अन्न और पेय का दान करता है, भगवन् ! ऐसे मुझे दाक्षिणेय (व्यक्ति) को बतलायें॥3॥

'He who is a householder, suitable to beg of, a donor,'—so said the young man,—' who, desirous of good, offers having what is good in view, and giving to others in this world food and drink,—tell me, O Bhagavān, of those worthy of offerings.' .3.

"ये वे असत्ता विचरन्ति लोके, अकिञ्चना केवलिनो यतत्ता।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/4॥

"Ye ve asattā vicaranti loke, akiñcanā kevalino yatattā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥4॥

"ये वै अशक्ता* विचरन्ति लोके, अकिञ्चनाः केवलिनो यतिताः ।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मणः पुण्यापेक्षो यजेत्॥4॥

भगवान्– जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से यज्ञ को करता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि अनासक्त हो लोक में विचरण करते हैं तथा जो अकिंचन, ज्ञानी तथा प्रयत्नशील हैं॥4॥

Bhagavān: 'Those indeed who wander about in the world without clinging to anything and without possessing anything, perfect, self-restrained, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer..4.

* अनासक्ताः

"ये सब्बसंयोजनबन्धनच्छिदा, दन्ता विमुत्ता अनीघा निरासा।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/5॥

"Ye sabbasaṃyojanabandhanacchidā, dantā vimuttā anīghā nirāsā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥5॥

"ये सर्वसंयोजनबन्धनच्छिदा:, दान्ता: विमुक्ता अनिघा: निराशा:।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत्॥5॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि दान्त, विमुक्त, निष्पाप, तृष्णारहित तथा सारे सांसारिक बन्धनों से रहित हैं॥5॥

'Those who have cut through all bonds and fetters, who are subdued, liberated, free from pain, and free from desire, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.5.

"ये सब्बसंयोजनविप्पमुत्ता, दन्ता विमुत्ता अनीघा निरासा।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/6॥

"Ye sabbasaṃyojanavippamuttā, dantā vimuttā anīghā nirāsā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥6॥

"ये सर्वसंयोजनविप्रमुक्ता:, दान्ता: विमुक्ता अनिघा: निराशा:।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत्॥6॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि दान्त, विमुक्त, निष्पाप, तृष्णारहित तथा सारे सांसारिक बन्धनों से रहित हैं॥6॥

'Those who are released from all bonds, who are subdued, liberated, free from pain, and free from desire, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.6.

रागं च दोसं च पहाय मोहं, खीणासवा वूसितब्रह्मचरिया।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/7॥

"Rāgaṃ ca dosaṃ ca pahāya mohaṃ, khīṇāsavā vūsitabrahmacariyā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥7॥

"रागञ्च दोषञ्च प्रहाय मोहम्, क्षीणास्रवा उषितब्रह्मचर्या।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥7॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि राग, द्वेष और मोह को त्यागकर क्षीणास्रव हो गये हैं तथा जिन्होंने ब्रह्मचर्यवास को पूर्ण कर लिया है॥7॥

Those who, having forsaken both passion and hatred and folly, have destroyed their desires and lead a religious life, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.7.

"येसु न माया वसति न मानो, खीणासवा वूसितब्रह्मचरिया।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/8॥

"Yesu na māyā vasati na māno, khīṇāsavā vūsitabrahmacariyā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥8॥

"येषु माया वसति न मान:, क्षीणास्रवा उषितब्रह्मचर्या।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्ष: यजेत॥8॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जिनमें न माया है, न अभिमान है, जो लोभरहित, ममतारहित और तृष्णारहित हैं॥8॥

'Those in whom there lives no deceit, no arrogance, who are free from cupidity, free from selfishness, free from desire, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.8.

"ये वे न तण्हासु उपातिपन्ना, वितरेय्य ओघं अममा चरन्ति।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/9॥

"Ye ve na taṇhāsu upātipannā, vitareyya oghaṃ amamā caranti;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥9॥

"ये वै न तृष्णासु उपातिपन्ना:, वितीर्य ओघममा: चरन्ति।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥9॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो तृष्णा में फँसे हुए नहीं हैं और जो संसाररूपी बाढ़ को पार कर आसक्तिरहित हो विचरण करते हैं॥9॥

'Those indeed who without being lost in craving. after crossing the stream of existence, wander about free from selfishness, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.9.

"येसं तण्हा नत्थि कुहिञ्चि लोके, भवाभवाय इध वा हुरं वा।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/10॥

"Yesaṃ taṇhā natthi kuhiñci loke, bhavābhavāya idha vā huraṃ vā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥10॥

"येषां तृष्णा नास्ति कुहचित् लोके, भवाभवाय इह वापरं (दूरं) वा।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥10॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जिन्हें कि इस लोक या परलोक में कहीं भी उत्पत्ति या विनाश के लिए तृष्णा नहीं है॥10॥

'Those in whom there is no craving for anything in the world, nor for existence after existence here or in the other world, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.10.

"ये कामे हित्वा अगहा चरन्ति, सुसञ्ञतत्ता तसरंव उज्जुं।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/11॥

"Ye kāme hitvā agahā caranti, susaññatattā tasaraṃva ujjuṃ;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥11॥

"ये कामान् हित्वा अगेहा: चरन्ति, सुसंयता: तसरमिव ऋजुम्।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥11॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो काम-भोगों को त्यागकर, बेघर होकर सीधे तसर (ढरकी) के समान संयमी होकर विचरण करते हैं॥11॥

'Those who, after leaving sensual pleasures, wander about houseless, well restrained, being like a straight shuttle, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.11.

"ये वीतरागा सुसमाहितिन्द्रिया, चन्दोव राहुग्गहणा पमुत्ता।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/12॥

"Ye vītarāgā susamāhitindriyā, candova rāhuggahaṇā pamuttā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥12॥

"ये वीतरागा: सुसमाहितेन्द्रिया:, चन्द्र इव राहुग्रहणात् प्रमुक्ता:।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥12॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि राहु से मुक्त चन्द्रमा की भाँति वीतराग और सुसंयमित इन्द्रिय वाले हैं॥12॥

'Those whose passions are gone, whose senses are well composed, who are liberated like the moon out of the grasp of Rahu, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.12.

"समितावि‌नो वीतरागा अकोपा, येसं गती नत्थिध विप्पहाय।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/13॥

"Samitāvino vītarāgā akopā, yesaṃ gatī natthidha vippahāya;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥13॥

"शमितवन्तो वीतरागा अकोपा:, येषां गति: नास्ति इह विप्रहाय।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥13॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि वासनारहित हैं, रागरहित हैं, क्रोधरहित हैं और जिन्हें इस जन्म के पश्चात् फिर जन्म नहीं लेना है॥13॥

'Those who are calm, whose passions are gone, who are wiihout anger, and for whom there is no transmigration after having left here, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.13.

"जहित्वा जातिमरणं असेसं, कथंकथिं सब्बमुपातिवत्ता।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/14॥

"Jahitvā jātimaraṇaṃ asesaṃ, kathaṃkathiṃ sabbamupātivattā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥14॥

"हित्वा जातिमरणमशेषम्, *कथंकथिं* सर्वमुपातिवृत्ता: ।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥14॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि जन्म-मृत्यु को सम्पूर्णत: छोड़ सब संशयों से परे हो गये हैं॥14॥

'Those who, after leaving birth and death altog ether, have conquered all doubt, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.14.

*कथोपकथन में कथं पर कथं का क्रम कथंकथिं कहलाता है।

"ये अत्तदीपा विचरन्ति लोके, अकिञ्चना सब्बधि विप्पमुत्ता।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/15॥

"Ye attadīpā vicaranti loke, akiñcanā sabbadhi vippamuttā;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥15॥

"ये आत्मद्वीपा: विचरन्ति लोके, अकिञ्चना: सर्वथा विप्रमुक्ता: ।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥15॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि लोक में अपने लिए द्वीप बनाकर विचरण करते हैं, जो अकिंचन हैं और इस प्रकार ये मुक्त हो गये हैं॥15॥

'Those who wander about in the world with themselves for a light, not possessed of anything, in every respect liberated, on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.15.

"ये हेत्थ जानन्ति यथा तथा इदं, अयमन्तिमा नत्थि पुनब्भवोति।
कालेन तेसु हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/16॥

"Ye hettha jānanti yathā tathā idaṃ, ayamantimā natthi punabbhavoti;
Kālena tesu habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha.॥16॥

"ये ह्यत्र जानन्ति यथा तथा इदम्, अयमन्तिम: नास्ति पुनर्भव इति ।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत॥16॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि यथार्थ रूप से जानते हैं कि यह मेरा अन्तिम जन्म है और पुर्नजन्म नहीं होगा॥16॥

'Those who in this world rightly understand this: "This is the last birth, there is no re-birth," on such in due time people should bestow oblations; let the Brāhmaṇa who has good works in view, offer.16.

"यो वेदगू झानरतो सतीमा, सम्बोधिपत्तो सरणं बहूनं।
कालेन तम्हि हब्यं पवेच्छे, यो ब्राह्मणो पुञ्ञपेक्खो यजेथ॥3/5/17॥

"Yo vedagū jhānarato satīmā, sambodhipatto saraṇaṃ bahūnaṃ;
Kālena tamhi habyaṃ pavecche, yo brāhmaṇo puññapekkho yajetha".॥17॥

"यो वेदग: ध्यानरत: स्मृतिमान्, सम्बोधिप्राप्त: शरणं बहूनाम् ।
कालेन तेभ्यो हव्यं प्रयच्छेत्, यो ब्राह्मण: पुण्यापेक्षो यजेत"॥17॥

जो ब्राह्मण पुण्य की कामना से दान देता है, उसे चाहिए कि समयानुसार उन्हें हव्य का दान करे जो कि ज्ञानी हैं, ध्यान में रत हैं, स्मृतिमान् हैं, सम्बोधि प्राप्त हैं और बहुत प्राणियों के शरण हैं॥17॥

'He who is accomplished, and delights in meditation, thoughtful, possessed of through enlightenment, a refuge for many, on such a one in due time people should bestow oblations; let the Brahmana who has good works in view, offer.' 17.

"अद्धा अमोघा मम पुच्छना अहु, अक्खासि मे भगवा दक्खिणेय्ये'।
त्वञ्हेत्थ जानासि यथा तथा इदं, तथा हि ते विदितो एस धम्मो॥3/5/18॥

"Addhā amoghā mama pucchanā ahu, akkhāsi me bhagavā dakkhiṇeyye;
Tvañhettha jānāsi yathā tathā idaṃ, tathā hi te vidito esa dhammo.॥18॥

"अद्धा अमोघं मम प्रश्नमभूत्, आख्यात् मां भगवान् दाक्षिणेयम् ।
त्वं ह्यत्र जानासि यथा तथा इदम्, तथा हि त्वया विदित एष धर्म:॥18॥

निश्चय ही मेरा प्रश्न निरर्थक नहीं हुआ । भगवान् ने दक्षिणा देने वाले व्यक्तियों को बतलाया है। आप इसे यथार्थ से जानते हैं, आपको ही यह कर्म यथार्थ रूप से विदित है॥18॥

'Certainly my question was not in vain, Bhagavān has told me of those worthy of offerings; for thou truly knowest this in this world, as surely to thee this Dhamma is known.18.

• यहाँ प्राकृत अर्धमागधी प्राकृत का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। अकारान्त पुर्लिग में एकारान्त का प्रयोग किया गया है।

"यो याचयोगो दानपति गहट्ठो, (इति माघो माणवो)
पुञ्ञत्थिको यजति पुञ्ञपेक्खो।
ददं परेसं इध अन्नपानं, अक्खाहि मे भगवा यञ्ञसम्पदं॥3/5/19॥

"Yo yācayogo dānapati gahaṭṭho, (iti māgho māṇavo)
Puññatthiko yajati puññapekkho; Dadaṃ paresaṃ idha annapānaṃ, Akkhāhi me bhagavā yaññasampadaṃ". ॥19॥

"यो याचयोगो दानपतिः गृहस्थः, (इति *माघो* माणवकः)
पुण्यार्थिको यजति पुण्यापेक्षः ।
ददाति परेषामिह अन्नपानम्, आख्याहि मां भगवन् ! यज्ञसम्पदाम्"॥19॥

जो याचना करने योग्य दानपति गृहस्थ पुण्य की कामना से यज्ञ करता है, जो यहाँ दूसरों को अन्न और पेय देता है, भगवन् ! उसके लिए मुझे यज्ञ सम्पदा (दान का फल) बतलायें॥19॥

'He who is a householder, suitable to beg of, a donor,'—so said the young man Magha,—' who, desirous of good, offers having what is good in view, and giving to others in this world food and drink,—tell me, O Bhagavān. of the blessing of offering.'.19.

"यजस्सु यजमानो, (माघाति भगवा) सब्बत्थ च विप्पसादेहि चित्तं।
आरम्मणं यजमानस्स यञ्ञो, एत्थप्पतिट्ठाय जहाति दोसं॥3/5/20॥

"Yajassu yajamāno māghāti bhagavā, sabbattha ca vippasādehi cittaṃ;
Ārammaṇaṃ yajamānassa yañño, etthappatiṭṭhāya jahāti dosaṃ. ॥20॥

"यजस्व यजमानः, (माघ इति भगवान्) सर्वत्र विप्रसीद चित्तम् ।
आलम्बनं यजमानस्य यज्ञः, अत्र प्रतिष्ठाय जहाति दोषम्॥20॥

दान दो और दान देते समय सबके प्रति अपने मन को प्रसन्न रखो। दान ही दायक का आलम्बन है। इसमें प्रतिष्ठित होकर दायक के मन का द्वेष दूर हो जाता है॥20॥

'Offer, O Magha,'—so said Bhagavān,—' and while offering make calm thy mind in all things; the object of the one that offers is the oblation, standing fast in this he leaves sin behind.20.

"सो वीतरागो पविनेय्य दोसं, मेत्तं चित्तं भावयमप्पमाणं।
रत्तिन्दिवं सततमप्पमत्तो, सब्बा दिसा फरति अप्पमञ्ञं"॥3/5/21॥

"So vītarāgo pavineyya dosaṃ, mettaṃ cittaṃ bhāvayamappamāṇaṃ;
Rattindivaṃ satatamappamatto, sabbā disā pharati appamaññaṃ". ॥21॥

"स वीतरागः प्रविनीय दोषम्, मैत्रीं चित्तं भावयेत् अप्रमाणम् ।
रात्रिं दिवं सततमप्रमत्तः, सर्वासु दिक्षु स्फुरति अप्रमाद्यम्"॥21॥

वह राग-रहित हो, दोष का दमन कर, अप्रमाण मैत्री चित्त की भावना करें, रात-दिन सदा अप्रमादी रहकर सभी दिशाओं में अप्रमाण (असीम) मैत्री भाव फैलाता है॥21॥

'Such a one whose passion is gone will repress hatred, cultirating an unbounded friendly mind; continually strenuous night and day he will spread infinite goodness through all regions.' 21.

"को सुज्झति मुच्चति बज्झती च, केनत्तना गच्छति ब्रह्मलोकं।
अजानतो मे मुनि ब्रूहि पुट्ठो, भगवा हि मे सक्खि ब्रह्मञ्ञदिट्ठो।
तुवं हि नो ब्रह्मसमोसि सच्चं, कथं उपपज्जति ब्रह्मलोकं जुतिम"॥3/5/22॥

"Ko sujjhati muccati bajjhatī ca, kenattanā gacchati brahmalokaṃ;
Ajānato me muni brūhi puṭṭho, bhagavā hi me sakkhi brahmajjadiṭṭho;
Tuvaṃ hi no brahmasamosi saccaṃ, kathaṃ upapajjati brahmalokaṃ jutima".॥22॥

"कः शुध्यति मुञ्चति बध्नाति च, क आत्मना गच्छति ब्रह्मलोकम् ।
अजानतो मे मुनि ब्रूहि पृष्टः, भगवान् हि मे साक्षात् ब्रह्मज्ञदृष्टः ।
त्वं हि नः ब्रह्मसमोऽसि सत्यम्, कथमुत्पद्यते ब्रह्मलोके द्युतिमान्"॥22॥

माघ– मुझ अज्ञानी को मुनि बतायें कि कौन शुद्ध होता है, मुक्त होता है, बन्धन में पड़ता है और स्वयं ब्रह्मलोक को जाता है ? भगवान् मेरे द्वारा देखे गए साक्षात् ब्रह्म हैं । यह सत्य है कि आप हमारे लिए ब्रह्म रूप हैं । द्युतिमान् ! ब्रह्मलोक में उत्पत्ति किस प्रकार होती है ?॥22॥

Magha: 'Who prospers? who is liberated and who is bound? In which way can one by himself go to Brahmaloka? Tell this to me who does not know, O Muni, when asked. Bhagavān is indeed my witness that Brahman is seen by me to-day, for thou art to us equal to Brahman, this is the truth; how can one attain Brahmaloka, O thou glorious one?'.22.

"यो यजति तिविधं यञ्ञसम्पदं, (माघाति भगवा)
आराधये दक्खिणेय्येभि तादि।
एवं यजित्वा सम्मा याचयोगो, उपपज्जति ब्रह्मलोकन्ति ब्रूमी''ति॥3/5/23॥

"Yo yajati tividhaṃ yaññasampadaṃ, (māghāti bhagavā)
Ārādhaye dakkhiṇeyyebhi tādi; Evaṃ yajitvā sammā yācayogo,
Upapajjati brahmalokanti brūmī"ti.॥23॥

"यो यजति त्रिविधं यज्ञसम्पदम्, (*माघ* इति भगवान्)
आराधयेत् दाक्षिणेयैः *तादिम्* ।
एवं इष्ट्वा सम्यक् याचयोगः, उत्पद्यते ब्रह्मलोकमिति ब्रवीमि" इति॥23॥

भगवान्– जो तीन प्रकार का दान देते हैं, वह दक्षिणा पाने वालों को प्रसन्न रखता है । इस प्रकार अच्छी तरह दान देकर दाता ब्रह्मलोक में जन्म लेता है–ऐसा मैं कहता हूँ॥23॥

'He who offers the threefold blessing of oblation, O Māgha,'—so said Bhagavān,—' such a one will prosper with those worthy of offerings; so, having offered properly, he who is suitable to beg of attains Brahmaloka, so I say.' .23.

एवं वुत्ते, माघो माणवो भगवन्तं एतदवोच– ''अभिक्कन्तं, भो गोतम... पे....अनेकपरियायेन धम्मो पकासितो। एसाहं भवन्तं गोतमं सरणं गच्छामि, धम्मं च भिक्खुसङ्घं च। उपासकं मे भवं गोतमो धारेत् अज्जतग्गे पाणुपेतं सरणं गतं''ति।

Evaṃ vutte, māgho māṇavo bhagavantaṃ etadavoca – "abhikkantaṃ, bho gotama…pe… anekapariyāyena dhammo pakāsito. Esāhaṃ bhavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammañca bhikkhusaṅghaṃ ca. gotama, me me gotamaṃ ajjhabhāsi pāṇupetaṃ saraṇaṃ gataṃ"ti.

एवमुक्ते, माघो माणवको भगवन्तमेतदवोचत्- "अभिकान्तम्, भो गौतम.....*पे0*.... अनेकपर्यायेन धर्मः प्रकाशितः । एषोऽहं भवन्तं गौतमं शरणं गच्छामि, धर्मञ्च भिक्षुसंघञ्च । उपासकं मां भवान् गौतमः धारयतु अद्यतोऽग्रे प्राणपर्यन्तं शरणं गतम्" इति॥

ऐसा कहने पर माघ माणव ने भगवान् से कहा –आश्चर्य है हे गौतम ! ... अनेक प्रकार से धर्म प्रकाशित किया । यह मैं आप गौतम की शरण जा रहा हूँ, धर्म और भिक्षु संघ को भी। आप गौतम मुझे आज से जीवन-पर्यन्त शरणागत उपासक धारण करें ।

This having been said, Māgha the young man spoke as follows to Bhagavān: 'Excellent, O venerable Gotama!... Venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illustrated; I take refuge in the venerable Gotama and in the Dhamma and in the Assembly of Bhikkhus. Let the venerable Gotama accept me as an upasaka, who henceforth for all my life have taken refuge in him.'

माघसुत्तं निट्ठितं
(Māghasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 6) सभियसुत्तं (Sabhiyasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा राजगहे विहरति वेळुवने कलन्दकनिवापे। तेन खो पन समयेन सभियस्स परिब्बाजकस्स पुराणसालोहिताय देवताय पञ्हा उद्दिट्ठा होन्ति – ''यो ते, सभिय, समणो वा ब्राह्मणो वा इमे पञ्हे पुट्ठो ब्याकरोति तस्स सन्तिके ब्रह्मचरियं चरेय्यासी''ति।

अथ खो सभियो परिब्बाजको तस्सा देवताय सन्तिके ते पञ्हे उग्गहेत्वा ये ते समणब्राह्मणा सङ्घिनो गणिनो गणाचरिया ञाता यसस्सिनो तित्थकरा साधुसम्मता बहुजनस्स, सेय्यथीदं – पूरणो कस्सपो मक्खलिगोसालो अजितो केसकम्बलो पकुधो कच्चानो सञ्जयो बेलट्ठपुत्तो निगण्ठो नाटपुत्तो, ते उपसङ्कमित्वा ते पञ्हे पुच्छति। ते सभियेन परिब्बाजकेन पञ्हे पुट्ठा न सम्पायन्ति; असम्पायन्ता कोपं च दोसं च अप्पच्चयं च पातुकरोन्ति। अपि च सभियं येव परिब्बाजकं पटिपुच्छन्ति।

अथ खो सभियस्स परिब्बाजकस्स एतदहोसि – ''ये खो ते भोन्तो समणब्राह्मणा सङ्घिनो गणिनो गणाचरिया ञाता यसस्सिनो तित्थकरा साधुसम्मता बहुजनस्स, सेय्यथीदं – पूरणो कस्सपो...पे.... निगण्ठो नाटपुत्तो, ते मया पञ्हे पुट्ठा न सम्पायन्ति, असम्पायन्ता कोपं च दोसं च अप्पच्चयं च पातुकरोन्ति; अपि च मञ्ञेवेत्थ पटिपुच्छन्ति। यन्नूनाहं हीनायावत्तित्वा* कामे परिभुञ्जेय्यं''ति।

अथ खो सभियस्स परिब्बाजकस्स एतदहोसि – ''अयं पि खो समणो गोतमो सङ्घी चेव गणी च गणाचरियो च ञातो यसस्सी तित्थकरो साधुसम्मतो बहुजनस्स; यन्नूनाहं समणं गोतमं उपसङ्कमित्वा इमे पञ्हे पुच्छेय्यं''ति।

अथ खो सभियस्स परिब्बाजकस्स एतदहोसि – ''ये पि खो ते भोन्तो समणब्राह्मणा जिण्णा वुड्ढा महल्लका अद्धगता वयोअनुप्पत्ता थेरा रत्तञ्ञू* चिरपब्बजिता सङ्घिनो गणिनो गणाचरिया ञाता यसस्सिनो तित्थकरा साधुसम्मता बहुजनस्स, सेय्यथीदं – पूरणो कस्सपो...पे. ... निगण्ठो नाटपुत्तो, तेपि मया पञ्हे पुट्ठा न सम्पायन्ति, असम्पायन्ता कोपञ्च दोसञ्च अप्पच्चयञ्च पातुकरोन्ति, अपि च मञ्ञेवेत्थ पटिपुच्छन्ति; किं पन मे समणो गोतमो इमे पञ्हे पुट्ठो ब्याकरिस्सति! समणो हि गोतमो दहरो चेव जातिया, नवो च पब्बज्जाया''ति।

अथ खो सभियस्स परिब्बाजकस्स एतदहोसि – ''समणो खो दहरो ति न उञ्ञातब्बो न परिभोतब्बो। दहरोपि चेस समणो गोतमो महिद्धिको होति महानुभावो, यन्नूनाहं समणं गोतमं उपसङ्कमित्वा इमे पञ्हे पुच्छेय्यं''ति।

अथ खो सभियो परिब्बाजको येन राजगहं तेन चारिकं पक्कामि। अनुपुब्बेन चारिकं चरमानो येन राजगहं वेळुवनं कलन्दकनिवापो, येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सभियो परिब्बाजको भगवन्तं गाथाय अज्झभासि–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā rājagahe viharati veḷuvane kalandakanivāpe. Tena kho pana samayena sabhiyassa paribbājakassa purāṇasālohitāya devatāya pañhā uddiṭṭhā honti – "yo te, sabhiya, samaṇo vā brāhmaṇo vā ime pañhe puṭṭho byākaroti tassa santike brahmacariyaṃ careyyāsī"ti.

Atha kho sabhiyo paribbājako tassā devatāya santike te pañhe uggahetvā ye te samaṇabrāhmaṇā saṅghino gaṇino gaṇācariyā ñātā yasassino titthakarā sādhusammatā bahujanassa, seyyathidaṃ – pūraṇo kassapo makkhaligosālo ajito kesakambalo pakudho kaccāno sañcayo belaṭṭhaputto nigaṇṭho nāṭaputto, te upasaṅkamitvā te pañhe pucchati. Te sabhiyena paribbājakena pañhe puṭṭhā na sampāyanti; asampāyantā kopaṃ ca dosaṃ ca appaccayañca pātukaronti. Api ca sabhiyaṃ yeva paribbājakaṃ paṭipucchanti.

Atha kho sabhiyassa paribbājakassa etadahosi – "ye kho te bhonto samaṇabrāhmaṇā saṅghino gaṇino gaṇācariyā ñātā yasassino titthakarā sādhusammatā bahujanassa, seyyathidaṃ – pūraṇo kassapo…pe… nigaṇṭho nāṭaputto, te mayā pañhe puṭṭhā na sampāyanti, asampāyantā kopaṃ ca dosaṃ ca appaccayaṃ ca pātukaronti; api ca maññevettha paṭipucchanti. Yannūnāhaṃ hīnāyāvattitvā kāme paribhuñjeyyaṃ"ti.

Atha kho sabhiyassa paribbājakassa etadahosi – "ayaṃ pi kho samaṇo gotamo saṅghī ceva gaṇī ca gaṇācariyo ca ñāto yasassī titthakaro sādhusammato bahujanassa; yannūnāhaṃ samaṇaṃ gotamaṃ upasaṅkamitvā ime pañhe puccheyyaṃ"ti.

Atha kho sabhiyassa paribbājakassa etadahosi – "ye pi kho te bhonto samaṇabrāhmaṇā jiṇṇā vuḍḍhā mahallakā addhagatā vayoanuppattā therā rattaññū cirapabbajitā saṅghino gaṇino gaṇācariyā ñātā yasassino titthakarā sādhusammatā bahujanassa, seyyathidaṃ – pūraṇo kassapo…pe. … nigaṇṭho nāṭaputto, tepi mayā pañhe puṭṭhā na sampāyanti, asampāyantā kopañca dosañca appaccayañca pātukaronti, api ca maññevettha paṭipucchanti; kiṃ pana me samaṇo gotamo ime pañhe puṭṭho byākarissati! Samaṇo hi gotamo daharo ceva jātiyā, navo ca pabbajjāyā"ti.

Atha kho sabhiyassa paribbājakassa etadahosi – "samaṇo kho daharo ti na uññātabbo na paribhotabbo. Daharopi cesa samaṇo gotamo mahiddhiko hoti mahānubhāvo, yannūnāhaṃ samaṇaṃ gotamaṃ upasaṅkamitvā ime pañhe puccheyyaṃ"ti.

Atha kho sabhiyo paribbājako yena rājagahaṃ tena cārikaṃ pakkāmi. Anupubbena cārikaṃ caramāno yena rājagahaṃ veḷuvanaṃ kalandakanivāpo, yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavatā saddhiṃ sammodi. Sammodanīyaṃ kathaṃ sāraṇīyaṃ vītisāretvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinno kho sabhiyo paribbājako bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम् । एकस्मिन् समये भगवान् राजगृहे विहरति *वेलुवने कलन्दकनिवापे* । तत्र खलु पुनः समये *सभियस्य* परिव्राजकस्य पुराणसालोहितदेवतया प्रश्ना उद्दिष्टाः भवन्ति– "यः ते सभिय ! श्रमणो वा ब्राह्मणो वा इमान् प्रश्नान्, व्याकरोति तस्य सान्तिकं ब्रह्मचर्यं चरेत्" इति।

अथ खलु सभियः परिव्राजकः तस्याः देवतायाः सान्तिकं तान् प्रश्नान् उदगृह्य, ये ते श्रमणब्राह्मणाः, संङ्घिनः, गणिनः, गणाचार्याः, ज्ञाताः, यशस्विनः, तीर्थकराः, साधुसम्मताः बहुजनस्य, तद्यथेदम्– *पूरणकस्सपः, मक्खलिगोसालः, अजितकेसकम्बलः, पकुधकच्चानः संजयवेलट्ठिपुत्तो निगण्ठो नाटपुत्तः* तान् उपसंक्रम्य (सभियः) तान् प्रश्नान् पृच्छति । ते *सभियेन* परिव्राजकेन प्रश्नान् पृष्टान् न सम्पादयन्ति, असम्पादयन्तः क्रोधञ्च दोषञ्चाप्रत्ययाच्च प्रादुर्कुर्वन्ति, अपि च *सभियमेव* परिव्राजकं प्रतिपृच्छन्ति।

अथ खलु सभियस्य परिव्राजकस्येतदभूत्– "ये खलु ते भवन्तः श्रमणब्राह्मणाः सङ्घिनो गणिनो गणाचार्याः ज्ञाताः यशस्विनः तीर्थकराः साधुसम्मताः बहुजनस्य तद्यथेदम्– *पूरणकस्सपः*..... *पे0*.....*निगण्ठो नाटपुत्तः*, तेऽपि मया प्रश्नान् पृष्टान् न सम्पादयन्ति, असम्पादयन्तः क्रोधञ्च दोषञ्च अप्रत्ययाच्च प्रादुर्कुर्वन्ति, अपि च मामेवात्र प्रतिपृच्छन्ति, यन्नूनमहं हीनाय (गर्हितभावाय) आवृत्य कामान् परिभुञ्जेयम्" इति।

अथ खलु *सभियस्य* परिव्राजकस्य एतदभूत्– "अयमपि श्रमणो गौतमः संघी चैव गणी च गणाचार्यश्च ज्ञाता यशस्वी तीर्थकरः साधुसम्मतो बहुजनस्य, यन्नूनामहं श्रमणं गौतममुपसंक्रम्य इमान् प्रश्नान् पृच्छेयम्" इति।

अथ खलु *सभियस्य* परिव्राजकस्य एतदभूत्–"येऽपि खलु ते भवन्तः श्रमणब्राह्मणाः जीर्णाः वृद्धाः महर्द्धिकाः अर्द्धगताः वयोऽनुप्राप्ताः स्थविराः रत्नज्ञाः चिरप्रव्रजिताः, संघिनः, गणिनः, गणाचार्याः ज्ञाताः यशस्विनः तीर्थकराः साधुसम्मताः बहुजनस्य तद्यथेदम्-*पूरणकस्सपः* ....*पे0*.... *निगण्ठो नाटपुत्तः*, तेऽपि मया पृष्टप्रश्नान् न सम्पादयन्ति, असम्पादयन्तः कोपञ्च दोषञ्च अप्रत्ययाच्च प्रादुर्कुर्वन्ति, अपि च मामेवात्र प्रतिपृच्छन्ति । किं पुनः मे श्रमणो *गौतमः* इमान् पृष्टप्रश्नान् व्याकरिष्यति । श्रमणो हि *गौतमो* दहरश्चैव जात्या नवश्च प्रव्रज्यायाम्" इति ।

अथ खलु *सभियस्य* परिव्राजकस्य एतदभूत्–"श्रमणः खलु दहर इति उद्ज्ञातव्यो न परिभवितव्यः । दहरोऽपि चैष श्रमणो भवति, स भवति महर्द्धिको महानुभावो यन्नूनमहं श्रमणं गौतममुपसंक्रम्य इमान् प्रश्नान् पृच्छेयम्" इति ।

अथ खलु सभियः परिव्राजको यत्र राजगृहं तत्र चारिकं प्राक्रमीत् । अनुपूर्वेण चारिकं चरन् यत्र राजगृहे वेणुवनं कलन्दकनिवापो यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवता सार्धं

संमोदिष्ट। सम्मोदनीयां कथां सारणीयां व्यतिसार्य एकान्तं न्यसीदत्; एकान्तं निषण्ण: खलु *सभिय:* परिव्राजक: भगवन्तं गाथयाध्यभाषिष्ट–

ऐसे मैंने सुना । एक समय भगवान् राजगृह में वेणवन कलन्दक निवाप में विहार कर रहे थे। उस समय सभिय परिव्राजक के एक पुराने हितैषी देवता द्वारा प्रश्न बतलाये गये थे– "सभिय ! जो श्रमण या ब्राह्मण इन प्रश्नों को पूछने पर उत्तर दे, उसके पास तुम ब्रह्मचर्य का पालन करना ।" तब सभिय परिव्राजक उस देवता के पास प्रश्नों को सीख, जो श्रमण-ब्राह्मण संघ वाले, गणवाले, गणाचार्य, प्रसिद्ध, यशस्वी, तीर्थंकर, बहुत लोगों से उत्तम माने जाने वाले थे, जैसे कि पूर्ण काश्यप, मक्खलि गोशाल, अजित केशकम्बली, प्रक्रुध कात्यायन, संजय बेलट्ठिपुत्र, निर्ग्रन्थ ज्ञातृपुत्र– उनके पास जाकर उन प्रश्नों को पूछता था। वे सभिय परिव्राजक के प्रश्न पूछने पर उत्तर नहीं दे पाते थे, उत्तर न दे पाते हुए क्रोध, द्वेष और नाराजगी प्रगट करते थे । यहाँ तक कि सभिय परिव्राजक से प्रश्न करने लगते थे । तब सभिय परिव्राजक के मन में यह हुआ– "यह भी श्रमण गौतम संघवाले, गणवाले, गणाचार्य, प्रसिद्ध, यशस्वी, तीर्थंकर, और बहुत लोगों से उत्तम माने जाने वाले हैं, क्यों न मैं श्रमण गौतम के पास इन प्रश्नों को पूछूँ ?"

तब सभिय परिव्राजक के मन में यह हुआ– "वे जो भी आप श्रमण-ब्राह्मण जीर्ण, वृद्ध, पुरनिया, अवस्था बीते हुए, अवस्था-प्राप्त, स्थविर, दीर्घजीवी, बहुत दिनों के प्रव्रजित, संघवाले, गणवाले, गणाचार्य, प्रसिद्ध, यशस्वी, तीर्थंकर, और बहुत लोगों से उत्तम माने जाने वाले हैं, जैसे कि पूर्ण काश्यप.....पे0..... निर्ग्रंथ ज्ञातृपुत्र, वे भी मेरे पूछे प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाते हैं, उत्तर न दे पाते हुए क्रोध, द्वेष और नाराजगी प्रगट करते हैं, यहाँ तक कि मुझसे ही प्रश्न पूछने लगते हैं । फिर श्रमण गौतम क्या मेरे पूछे इन प्रश्नों का उत्तर दे सकेगा ? श्रमण गौतम जन्म से तरुण है और प्रव्रज्या में भी नए हैं !"

तब सभिय परिव्राजक के मन में यह हुआ–"श्रमण तरुण है– ऐसा समझकर उनका अनादर नहीं करना चाहिए । यदि तरुण भी श्रमण हो और वह महाऋद्धिमान् और महाप्रतापी हो । क्यों न मैं श्रमण गौतम के पास जाकर इन प्रश्नों को पूछूँ ?" तब सभिय परिव्राजक जहाँ राजगृह है, वहाँ के लिए चारिका पर चल दिया । क्रमश: चारिका करते जहाँ राजगृह का वेणुवन निवाप था, जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया । जाकर भगवान् के साथ कुशल-क्षेम पूछा । कुशल-क्षेम पूछकर, स्मरण दिलाने वाली बात को समाप्त कर एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठे सभिय परिव्राजक ने भगवान से गाथाओं में कहा –

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Rājagraha, in Veluvana, in Kalandakanivapa. And at that time questions were recited to Sabhiya, the Paribbajaka wandering mendicant, by a deity who had in a former birth been a relation of his: 'He who, O Sabhiya, be it a Sramaṇa or a Brāhmaṇa, explains these questions to thee when asked, near him thou should live a religious life.'

Then Sabhiya, the Paribbajaka, having learnt the questions from that deity, went to whatever Sramaṇas and Brāhmaṇas there were that had an assembly of Bhikkhus, a crowd of followers, and were well- known teachers, famous leaders, considered excell ent by the multitude, as Purana-Kassapa, Makkhali Gosala, Agita-Kesakambali, Pakudha-Kakkayana, Saijya-Belathiputta, and Niganlha- Nataputta. Those he went to, and after going to them, he asked the questions. They, being asked the questions by Sabhiya, the Paribbajaka, did not succeed in answering them, and not succeeding they showed wrath and hatred and discontent, and they also in return put questions to Sabhiya, the Paribbajaka.

Then this came to the mind of Sabhiya, the Paribbajaka: 'Whatever Sramaṇas and Brāhmaṇas there are that have an assembly of Bhikkhus, a crowd of followers, and are well-known teachers, famous leaders, considered excellent by the multitude, as Prana-Kassapa, Makkhali-Gosala, Agita-Kesakamball, Pakudha- Kakkyana, Sañjaaya- Belaittiputta, and Niganlha-Nataputta,

they, being asked questions by me, did not succeed, and not succeeding they showed wrath and hatred and discontent, and they also in return put questions to me in this matter; surely I think I shall go back to what I have left, and enjoy sensual pleasures.'

Then this came to the mind of Sabhiya, the Paribbajka: 'This Sramaṇa Gotama has both an assembly of Bhikkhus and a crowd of followers, and is a well-known teacher, a famous leader, considered excellent by the multitude, surely I think I shall go to Samana Gotama and ask these quest ions.' Then this came to the mind of Sabhiya, the Paribbajaka: 'Whatever Sramaṇas and Biahm anas there are that are decayed, old, aged, advanced in years, having reached old age, experience delders, long ordained, having assemblies of Bhikkhus, crowds of followers, being teachers well known, famous leaders, considered excellent by the multitude, as Prana- Kassapa, Makkhali-Gosala, Agita-Kesakambali, Pakudha-Kakkayana, Sañjaya Belatthiputta, and Nigantha-Nataputta, they, being asked questions by me, did not succeed in answering them, and not succeeding they showed wrath and hatred and discontent, and they also in return put questions to me in this matter; I should like to know whether Sramaṇa Gotama being asked these questions will be able to explain them to me, for Sramaṇa Gotama is both young by birth and new in ascetic life.' Then this came to the mind of Sabhiya, the Paribbajaka: 'Sramaṇa Gotama is not to be slighted because he is young; even if the Sramaṇa is young, yet he is mighty and powerful; surely I think I shall go to Sramaṇa Gotama and ask these questions.' Then Sabhiya, the Paribbajaka, went on a journey to Rājagraha, and wandering on his journey in regular order he came to Rājagraha, Veluvaṇa, Kalandakanivapa, to Bhagavān, and having come to Bhagavān he talked pleasantly with him, and after having had some pleasant and remarkable conversat ion with him he sat down apart; sitting down apart Sabhiya, the Paribbajka, spoke to Bhagavān in stanzas:

*हीनाया ति गहट्ठभावाय । गहट्ठभावो हि पब्बज्जं उपनिधाय सीलादिगुणहीनतो हीनकामसुखपटिसेवनतो वा "हीनो" ति वुच्चति। उच्चा पब्बज्जा । आवत्तित्वा ति ओसक्कित्वा।

*रतञ्ञू ति रतनञ्ञू, "निब्बानरतनं जानाम मयं" ति एवं सकाय पटिञ्ञाय लोकेनापि सम्मता, बहुरतिविदू वा ।

"कङ्खी वेचिकिच्छी आगमं, (इति सभियो),
पञ्हे पुच्छितुं अभिकङ्खमानो।
तेसन्तकरो भवाहि पञ्हे मे पुट्ठो, अनुपुब्बं अनुधम्मं ब्याकरोहि मे"॥3/6/1॥

"Kaṅkhī vecikicchī āgamaṃ, (iti sabhiyo) Pañhe pucchituṃ abhikaṅkhamāno;
Tesantakaro bhavāhi pañhe me puṭṭho, Anupubbaṃ anudhammaṃ byākarohi me".॥1॥

"काङ्क्षी विचिकित्सी आगमम्, (इति *सभियः*),
प्रश्नान् प्रष्टुमभिकाङ्क्षमाणः।
तेषामन्तकरो भवान् हि प्रश्नान् पृष्ठोऽनुपूर्वमनुधर्मं व्याकुरु मे"॥1॥

सभिय– मैं संशय और विचिकित्सा में पड़ कर प्रश्न पूछने की इच्छा से आपके पास आया हूँ । भगवन्! मेरे पूछे गए प्रश्नों का उत्तर धार्मिक रीति से क्रमशः देकर उनका समाधान करें॥1॥

'Anxious and doubtful I have come,'—so said Sabhiya,—' longing to ask questions. Do thou put an end to these doubts when asked these questions by me, in regular order, and rightly explain them to me.'.1.

"दूरतो आगतोसि सभिय, (इति भगवा)
पञ्हे पुच्छितुं अभिकङ्खमानो।
तेसन्तकरो भवामि पञ्हे ते पुट्ठो,
अनुपुब्बं अनुधम्मं ब्याकरोमि ते॥3/6/2॥

"Dūrato āgatosi sabhiya, (iti bhagavā)
Pañhe pucchituṃ abhikaṅkhamāno;
Tesantakaro bhavāmi pañhe te puṭṭho,
Anupubbaṃ anudhammaṃ byākaromi te.॥2॥

"दूरतोऽऽगतोऽसि *सभिय*, (इति भगवान्) प्रश्नान् प्रष्टुमभिकाङ्क्षमाण: ।
तेषामन्तकरो भवामि, प्रश्नान् ते पृष्टोऽनुपूर्वमनुधर्मं व्याकरोमि ते॥2॥

भगवान्– तुम दूर से प्रश्नों को पूछने की इच्छा से आए हो । तुम्हारे पूछने पर मैं धार्मिक रीति से क्रमश: उनका समाधान करूँगा॥2॥

'Thou hast come from a far, O Sabhiya,'—so said Bhagavān,—' longing to ask questions; I shall put an end to those doubts when asked those questions by thee, in regular order, and rightly I shall explain them to thee.2.

"पुच्छ मं सभिय पञ्हं, यं किञ्चि मनसिच्छसि।
तस्स तस्सेव पञ्हस्स, अहं अन्तं करोमि ते"'ति॥3/6/3॥

"Puccha maṃ sabhiya pañhaṃ, yaṃ kiñci manasicchasi;
Tassa tasseva pañhassa, ahaṃ antaṃ karomi te"ti.॥3॥

"पृच्छ मां *सभिय* ! प्रश्नम्, यत्किञ्चित् मनसीच्छसि ।
तस्य तस्यैव प्रश्नस्याहमन्तं करोमि ते"इति॥3॥

सभिय! तुम्हारे मन में जो कुछ भी है, मुझसे प्रश्न पूछो । मैं तेरे उन-उन प्रश्नों का उत्तर देकर अन्त करूँगा॥3॥

'Ask me, O Sabhiya, a question; whatsoever thou wishest in thy mind that question I will explain, and put an end to thy doubt.'3.

अथ खो सभियस्स परिब्बाजकस्स एतदहोसि– ''अच्छरियं वत, भो, अब्भुतं वत, भो! यं वताहं अञ्ञेसु समणब्राह्मणेसु ओकासकम्ममत्तं पि नलत्थं तं मे इदं समणेन गोतमेन ओकासकम्मं कतं''ति। अत्तमनो पमुदितो उदग्गो पीतिसोमनस्सजातो भगवन्तं पञ्हं अपुच्छि –

Atha kho sabhiyassa paribbājakassa etadahosi – "acchariyaṃ vata, bho, abbhutaṃ vata, bho! Yaṃ vatāhaṃ aññesu samaṇabrāhmaṇesu okāsakammamattaṃ pi nālatthaṃ taṃ me idaṃ samaṇena gotamena okāsakammaṃ kataṃ"ti. Attamano pamudito udaggo pītisomanassajāto bhagavantaṃ pañhaṃ apucchi –

अथ खलु सभिय: परिव्राजकस्य एतदभूत्– "आश्चर्यं वत, भो, अद्भुतं वत भो! यावद् अहमन्येषु श्रमण-ब्राह्मणेषु अवकाशकर्ममात्रमपि न लब्धवान्, तन्ममेदं श्रमणेन गौतमेन अवकाशकर्म कृतम्" इति, आत्तमन: प्रमुदित उदग्र: प्रीति-सौमनस्यजातो भगवन्तं प्रश्नं पप्रच्छ–

तब सभिय परिव्राजक के मन में यह हुआ – "आश्चर्य है ! अद्भुत है ! यहाँ तक कि अन्य श्रमण-ब्राह्मणों के पास मुझे समय भी नहीं दिया गया था, उसके लिए श्रमण गौतम ने मुझे समय दे दिया !" ऐसा सोच, प्रसन्न-मन, प्रमुदित, हर्षित, प्रीति और प्रसन्नता से विभोर होकर उसने भगवान् से प्रश्न पूछा–

Then this came to the mind of Sabhiya, the Paribbajaka: 'It is marvellous, it is wonderful indeed, the reception which I did not get from other Sramaṇas and Brahmairas has been given me by Gotama,' so saying he glad, rejoicing, delighted, and highly elated asked Bhagavān a question:

"किं पत्तिनमाहु भिक्खुनं, (इति सभियो) सोरतं केन कथं च दन्तमाहु।
बुद्धो ति कथं पवुच्चति, पुट्ठो मे भगवा ब्याकरोहि"॥3/6/4॥

"Kiṃ pattinamāhu bhikkhunaṃ, (iti sabhiyo) Soratam kena kathaṃ ca dantamāhu;
Buddho ti kathaṃ pavuccati, Puṭṭho me bhagavā byākarohi". ॥4॥

"किं प्रापकमाहु: भिक्षु, (इति *सभिय:*) सूरतं केन कथञ्च दान्तमाहु:।
बुद्ध इति कथं प्रोच्यते, पृष्टो मे भगवन् व्याकुरु"॥4॥

सभिय– किस प्रकार की प्राप्ति वाले को भिक्षु कहते हैं ? शान्त और दान्त किसे कहते हैं? बुद्ध किसे कहते हैं? भगवन् ! मेरे इन पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर दें॥4॥

'What should a man necessarily have obtained that people may call him a Bhikkhu ? '—so said Sabhiya,—' how may they call him compassionate, and how subdued? how can he be called enlightened Buddha? Asked about this do thou, Bhagavān, explain it to me.'4.

"पज्जेन कतेन अत्तना, (सभिया ति भगवा) परिनिब्बानगतो वितिण्णकङ्खो।
विभवं च भवं च विप्पहाय, वुसितवा खीणपुनब्भवो स भिक्खु॥3/6/5॥

"Pajjena katena attanā, (sabhiyā ti bhagavā) Parinibbānagato vitiṇṇakaṅkho;
Vibhavaṃ ca bhavaṃ ca vippahāya, Vusitavā khīṇapunabbhavo sa bhikkhu.॥5॥

"पद्येन कृतेनऽऽत्मना, (सभिय इति भगवान्) परिनिर्वाणगतो वितीर्णकांक्ष:।
विभवञ्च भवञ्च विप्रहाय, उषितवान् वा क्षीणपुनर्भव: स भिक्षु:॥5॥

भगवान्– जिसने स्वयं अपने द्वारा निर्मित मार्ग पर चलकर, संशय रहित हो परिनिर्वाण प्राप्त कर लिया है, जिसने जन्म-मृत्यु को त्याग दिया है, जिसने ब्रह्मचर्य पूर्ण कर लिया है और जिसका पुनर्जन्म क्षीण हो गया है, वह भिक्षु है॥5॥

'He who by the path he has himself made, O Sabhiya,'—so said Bhagavān,—' has attained to perfect happiness, who has conquered doubt,who lives after having left behind both misfortune and fortune, who has destroyed re-birth, he is a Bhikkhu.5.

"सब्बत्थ उपेक्खको सतिमा, न सो हिंसति कञ्चि सब्बलोके।
तिण्णो समणो अनाविलो, उस्सदा यस्स न सन्ति सोरतो सो॥3/6/6॥

"Sabbattha upekkhako satimā, na so hiṃsati kañci sabbaloke;
Tiṇṇo samaṇo anāvilo, ussadā yassa na santi sorato so.॥6॥

"सर्वत्र उपेक्षक: स्मृतिमान्, न स हिनस्ति कञ्चित् सर्वलोके।
तीर्ण: श्रमणोऽनाबिल:, उत्सदा: यस्य न सन्ति सूरत: स:॥6॥

जो सब प्रकार से उपेक्षा करने वाला है, स्मृतिमान् है, सारे लोक में जो किसी की हिंसा नहीं करता, जो संसार- सागर पार कर गया है, जो श्रमण और निर्मल है, जिसमें आसक्तियाँ नहीं हैं, वह शान्त है॥6॥

'Always resigned and attentive, he will not hurt any one in all the world, the Sramaṇa who has crossed the stream of existence and is untroubled; for whom there are no desires ussada, he is compassionate.6.

"यस्सिन्द्रियानि भावितानि, अज्झत्तं बहिद्धा च सब्बलोके।
निब्बिज्झ इमं परं च लोकं, कालं कङ्खति भावितो स दन्तो॥3/6/7॥

"Yassindriyāni bhāvitāni, ajjhattaṃ bahiddhā ca sabbaloke;
Nibbijjha imaṃ paraṃ ca lokaṃ, kālaṃ kaṅkhati bhāvito sa danto.॥7॥

"यस्येन्द्रियाणि भावितानि, अध्यात्मं बहिर्द्धा च सर्वलोके।
निर्विध्य इमं परञ्च लोकम्, कालमाकांक्षते भावित: स दान्त:॥7॥

जिसकी इन्द्रियाँ भीतर और बाहर सारे लोक में वश में कर ली गई हैं, जो इस लोक और परलोक को जानकर समय की प्रतीक्षा करता है अर्थात् मृत्यु की राह देखता है, वह संयमी है, वह दान्त है॥7॥

'He whose senses are trained internally and externally in all the world, he who after penetrating this and the other world longs for death, being trained, he is subdued.7.

"कप्पानि विचेय्य केवलानि, संसारं दुभयं चुतूपपातं।
विगतरजमनङ्गणं* विसुद्धं, पत्तं जातिखयं तमाहु बुद्धं"ति॥3/6/8॥

"Kappāni viceyya kevalāni, saṃsāraṃ dubhayaṃ cutūpapātaṃ;
Vigatarajamanaṅgaṇaṃ visuddhaṃ, pattaṃ jātikhayaṃ tamāhu buddhaṃ"ti.॥8॥

"कल्पानि विचीय केवलानि, संसारमुभयं च्युत्युत्पादम् ।
विगतरजसनङ्गणं विशुद्धम्, प्राप्तं जातिक्षयं तमाहु: बुद्धम्" इति॥8॥

जिसने सम्पूर्ण तृष्णा का मननकर, संसार की उत्पत्ति और च्युति दोनों को जान लिया है, जो तृष्णा आदि मलों से रहित तथा निर्मल है, विशुद्ध है, जिसने जन्म क्षय को प्राप्त कर लिया, उसे बुद्ध कहते हैं॥8॥

'Whosoever, after having considered all times kappa, the revolution samsara, both the vanishing and re-appearance of beings, is free from defilement, free from sin, is pure, and has obtained destruction of birth, him they call enlightened Buddha.'8.

*विगतरजमनङ्गणं विसुद्धं ति रागादिरजानं विगमा अङ्गणानं अभावा मलानं च विगमा ।

अथ खो सभियो परिब्बाजको भगवतो भासितं अभिनन्दित्वा अनुमोदित्वा अत्तमनो पमुदितो उदग्गो पीतिसोमनस्सजातो भगवन्तं उत्तरिं पञ्हं अपुच्छि –

Atha kho sabhiyo paribbājako bhagavato bhāsitaṃ abhinanditvā anumoditvā attamano pamudito udaggo pītisomanassajāto bhagavantaṃ uttariṃ pañhaṃ apucchi –

अथ खलु *सभिय:* परिव्राजको भगवतो भाषितमभिनन्द्य अनुमोद्य आत्तमन: प्रमुदित उदग्र: प्रीतिसौमनस्यजातो भगवन्तमुत्तरं प्रश्नं पप्रच्छ –

तब सभिय परिव्राजक ने भगवान् के कथन का अभिनन्दन कर अनुमोदन कर प्रसन्न एवं प्रमुदित, हर्षित, प्रीति और प्रसन्नता प्राप्त हो भगवान् से आगे प्रश्न पूछा –

Then Sabhiya, the Paribbgaka, having approved of and rejoiced at the words of Bhagavān, glad, rejoicing, delighted, highly elated, asked Bhagavān another question:

"किं पत्तिनमाहु ब्राह्मणं, (इति सभियो)
समणं केन कथं च न्हातको ति।
नागो ति कथं पवुच्चति, पुट्ठो मे भगवा ब्याकरोहि"॥3/6/9॥

"Kiṃ pattinamāhu brāhmaṇaṃ, (iti sabhiyo)
Samaṇaṃ kena kathaṃ ca nhātako ti;
Nāgo ti kathaṃ pavuccati, Puṭṭho me bhagavā byākarohi". ॥9॥

"किं प्रापकमाहु: ब्राह्मणम्, (इति *सभिय:*)
श्रमणं कस्मात् कथञ्च स्नातक इति।
नाग इति कथं प्रोच्यते, पृष्टो मे भगवन् ! व्याकुरु"॥9॥

सभिय–किस प्रकार की प्राप्ति वाले को ब्राह्मण कहते हैं ? श्रमण और स्नातक किसे कहते हैं ? नाग किसे कहते हैं न+अग =नाग जिसके पास सभी जा सके भगवन् ! मेरे प्रश्न का उत्तर दें॥9॥

'What should a man necessarily have obtained that people may call him a Brāhmaṇa ? '—so said Sabhiya,—' and how may they call him a Sramaṇa? and how a Nahàtaka? how can he be called a Naga? Asked about this do thou, Bhagavān, explain it to me.'.9.

"बाहित्वा सब्बपापकानि, (सभिया ति भगवा)
विमलो साधुसमाहितो ठितत्तो।
संसारमतिच्च केवली सो,
असितो तादि पवुच्चते स ब्रह्मा*॥3/6/10॥

"Bāhitvā sabbapāpakāni, (sabhiyā ti bhagavā)
Vimalo sādhusamāhito ṭhitatto;
Saṃsāramaticca kevalī so,
Asito tādi pavuccate sa brahmā.॥10॥

"ऊढ्वा सर्वपापकानि, (*सभिय* इति भगवान्)
विमल: साधुसमाहित: स्थेष्ठ: हि।
संसारमतीत्य केवली सोऽशित: *तादि:* प्रोच्यते स ब्रह्मा॥10॥

भगवान्– जो सब पापों को बहाकर निर्मल, साधु, एकाग्रचित्त, स्थिर, संसार-परंगत, केवली (ज्ञानी) और अनासक्त है, वह ब्राह्मण कहा जाता है॥10॥

'He who, after removing all sins, O Sabhiya.' —so said Bhagavān,—'is immaculate, well composed. firm-minded, perfect after crossing the Samsãra, such an independent one is called a Brāhmaṇa.10.

*ब्राह्मणो सो ब्रह्मा। लोकधम्मेहि निब्बिकारता "तादी'ति च पवुच्चति अथवा–राग-द्वेष से मुक्त होकर सभी अवस्थाओं में जिसका चित्त स्थिर रहे वह तादि है यह बुद्ध का विशेषण है। – अट्ठकथा

"समितावि पहाय पुञ्ञपापं, विरजो त्वा इमं परं च लोकं।
जातिमरणं उपातिवत्तो, समणो तादि पवुच्चते तथत्ता॥3/6/11॥

"Samitāvi pahāya puññapāpaṃ, virajo ñatvā imaṃ paraṃ ca lokaṃ;
Jātimaraṇaṃ upātivatto, samaṇo tādi pavuccate tathattā.॥11॥

"शमिता विप्रहाय पुण्यपापम्, विरज: ज्ञात्वा इमं परञ्च लोकम्।
जातिमरणमुपातिवृत्त:, श्रमण: *तादि:* प्रोच्यते *तथता*॥11॥

जो पुण्य और पाप को दूर कर शान्त हो गया है, इस लोक और परलोक को जानकर मल रहित हो गया है, जो जन्म और मृत्यु से परे हो गया है, जो स्थिर होने के कारण तथता है, वह श्रमण कहा जाता है॥11॥

'He who is calm, having left behind good and evil, free from defilement, having understood this and the other world, and conquered birth and death. such a one is called a Sramaṇa by being so a.' Sanwio tadi pavukkate tathatta.11.

"निन्हाय सब्बपापकानि, अज्झत्तं बहिद्धा च सब्बलोके।

देवमनुस्सेसु कप्पियेसु, कप्पं नेति तमाहु न्हातको''ति॥3/6/12॥

"Ninhāya sabbapāpakāni, ajjhattaṃ bahiddhā ca sabbaloke;

Devamanussesu kappiyesu, kappaṃ neti tamāhu nhātako"ti.॥12॥

"निष्णाय सर्वपापकानि, अध्यात्मं बहिर्धा च सर्वलोके।

देवमनुष्येषु कल्पेषु, कल्पं नैति तमाहु: स्नातक" इति॥12॥

जिसने सारे लोक में भीतर और बाहर के सब पापों को धो डाला है और जो आवागमन में पड़े देवताओं और मनुष्यों में फिर जन्म ग्रहण नहीं करता, वह स्नातक कहा जाता है॥12॥

'Whosoever, after having washed away all sins internally and externally in all the world, does not enter time kappa amongst gods and men who are subject to time, him they call a Nahataka cleansed'.12.

"आगुं न करोति किञ्चि लोके, सब्बसंयोगे विसज्ज बन्धनानि।

सब्बत्थ न सज्जती विमुत्तो, नागो तादि पवुच्चते तथत्ता''ति॥3/6/13॥

"Āguṃ na karoti kiñci loke, sabbasaṃyoge visajja bandhanāni;

Sabbattha na sajjatī vimutto, nāgo tādi pavuccate tathattā"ti.॥13॥

"आग: न करोति किञ्चिल्लोके, सर्वसंयोगे विसृज्य बन्धनानि।

सर्वत्र न सजति विमुक्त:, नाग: *तादि:* प्रोच्यते *तथता*" इति॥13॥

जो संसार में कोई अपराध नहीं करता, जिसने सब बन्धनों को तोड़ डाला है, जो कहीं आसक्त नहीं होता, जो विमुक्त हैं और जो स्थिर होने के कारण तथता है, वह नाग कहा जाता है॥13॥

'He who does not commit any crime in the world, who, after abandoning all bonds and fetters, clings to nothing, being liberated, such a one is called a Naga (sinless) by being so'.13.

अथ खो सभियो परिब्बाजको...पे.... भगवन्तं उत्तरिं पञ्हं पुच्छि—

Atha kho sabhiyo paribbājako...pe... bhagavantaṃ uttariṃ pañhaṃ apucchi –

अथ खलु *सभिय:* परिव्राजक:.... *पे॰* ... भगवन्तम् उत्तरं प्रश्नं पप्रच्छ —

तब सभिय परिव्राजक ने... भगवान् से आगे प्रश्न पूछा–

Then Sabhiya, the Paribbajaka, having approved of and rejoiced at the words of Bhagavān, glad. rejoicing, delighted, highly elated, further asked Bhagavān a question:

"कं खेत्तजिनं वदन्ति बुद्धा, (इति सभियो) कुसलं केन कथं च पण्डितो'ति।

मुनि नाम कथं पवुच्चति, पुट्ठो मे भगवा व्याकरोहि"॥3/6/14 ।

"Kaṃ khettajinaṃ vadanti buddhā, (iti sabhiyo) Kusalaṃ kena kathañca paṇḍitoti;

Muni nāma kathaṃ pavuccati, Puṭṭho me bhagavā byākarohi".॥14॥

"कं क्षेत्रजिनं वदन्ति बुद्धा:, (इति *सभिय:*) कुशलं केन कथञ्च पण्डितोऽस्ति।

मुनि: नाम कथं प्रोच्यते, पृष्टो मे भगवन् ! व्याकुरु" ।14 ।

सभिय–बुद्ध किसे क्षेत्रजिन बतलाते हैं ? कुशल कौन है ? पण्डित कौन है ? और मुनि किसे कहते हैं? मेरे पूछे प्रश्न का उत्तर दें॥14॥

'Whom do the Buddhas call a Khettajina ?'— so said Sabhiya,—' how can they call any one a Kushala? and how a Pandita? how can he be called a Muni? Asked about this do thou, Bhagavān, explain it to me.'.14.

"खेत्तानि विचेय्य केवलानि, (सभियाति भगवा)
दिब्बं मानुसकं च ब्रह्मखेत्तं।
सब्बखेत्तमूलबन्धना पमुत्तो,
खेत्तजिनो तादि पवुच्चते तथत्ता॥3/6/15॥

"Khettāni viceyya kevalāni, (sabhiyāti bhagavā)
Dibbaṃ mānusakaṃ ca brahmakhettaṃ;
Sabbakhettamūlabandhanā pamutto,
Khettajino tādi pavuccate tathattā.॥15॥

"क्षेत्राणि विचीय केवलानि, (*सभिय* इति भगवान्)
दिव्यं मानुषकञ्च ब्रह्मक्षेत्रम् ।
सर्वक्षेत्रमूलबन्धनात् प्रमुक्तः,
क्षेत्रजिनः *तादिः* प्रोच्यते *तथता* ॥15॥

भगवान्– जो सम्पूर्ण दिव्य, मानवीय और ब्रह्म लोकों को जीतकर सारे लोकों के बन्धन से मुक्त हो गया है, वह स्थिर होने के कारण तथता है, वह क्षेत्रजिन कहा जाता है॥15॥

'He who, after examining all regions, O Sabhiya,'—so said Bhagavān,—' the divine and the human, and Brahman's region, is delivered from the radical bond of all regions, such a one is called a Khettajina he who has conquered the regions by being so.15.

"कोसानि विचेय्य केवलानि, दिब्बं मानुसकं च ब्रह्मकोसं।
सब्बकोसमूलबन्धना पमुत्तो, कुसलो तादि पवुच्चते तथत्ता॥3/6/16॥

"Kosāni viceyya kevalāni, dibbaṃ mānusakaṃ ca brahmakosaṃ;
Sabbakosamūlabandhanā pamutto, kusalo tādi pavuccate tathattā.॥16॥

"कोषान् विचीय केवलानि, दिव्यं मानुषकञ्च ब्रह्मकोशम्।
सर्वकोशमूलबन्धनात् प्रमुक्तः, कुशलः *तादिः* प्रोच्यते *तथता* ॥16॥

जो सम्पूर्ण दिव्य, मानवीय और ब्रह्मलोक के अच्छे-बुरे कर्मों को जीत कर सारे कर्मबन्धनों से मुक्त हो गया है, वह स्थिर होने के कारण तथता हैं, उन्हें कुशल कहा जाता है॥16॥

'He who, after examining all treasures, the divine and human, and Brahman's treasure, is delivered from the radical bond of all treasures, such a one is called a Kushala happy by being so.16.

"दुभयानि विचेय्य पण्डरानिं, अज्झत्तं बहिद्धा च सुद्धिपञ्ञो।
कण्हं सुक्कं उपातिवत्तो, पण्डितो तादि पवुच्चते तथत्ता॥3/6/17॥

"Dubhayāni viceyya paṇḍarāni, ajjhattaṃ bahiddhā ca suddhipañño;
Kaṇhaṃ sukkaṃ upātivatto, paṇḍito tādi pavuccate tathattā.॥17॥

"तदुभयानि विचीय पाण्डुराणि, अध्यात्मं बहिर्धा च शुद्धिप्रज्ञः ।
कृष्णं शुक्लमुपात्तवृत्तः, पण्डितः *तादिः* प्रोच्यते *तथता* ॥17॥

जो शुद्ध-प्रज्ञ भीतर और बाहर के विषयों पर विजय पाकर पुण्य तथा पाप के परे हो गया है, वह स्थिर होने के कारण तथता है, उन्हें पण्डित कहा जाता है॥17॥

'He who, after examining both kinds of senses, internally and externally, is endowed with a clear understanding and has conquered evil and good kanha sukka, such a one is called a Pandita wise by being so.17.

"असतं च सतं च ञत्वा धम्मं, अज्झत्तं बहिद्धा च सब्बलोके।
देवमनुस्सेहि पूजनीयो, सङ्गं जालमतिच्च सो मुनी''ति॥3/6/18॥

"Asataṃ ca sataṃ ca ñatvā dhammaṃ, ajjhattaṃ bahiddhā ca sabbaloke;
Devamanussehi pūjanīyo, saṅgaṃ jālamaticca so munī"ti.॥18॥

"असतञ्च सतञ्च ज्ञात्वा धर्मम्, अध्यात्मञ्च बहिर्धा च सर्वलोके।
देवमनुष्यैः पूजनीयः सः, सङ्गं जालमतीत्य स मुनिः" इति॥18॥

जो सारे संसार में भीतर और बाहर के सत् और असत् बातों को जानकर देव-मनुष्यों से पूजनीय है और जो आसक्ति रूपी जाल से परे हैं, वह मुनि कहा जाता है॥18॥

'He who, having understood the Dhamma of the just and the unjust, internally and externally, in all the world, is to be worshipped by gods and men, he, after breaking through the net of ties, is called a Muni sage.'. 18.

अथ खो सभियो परिब्बाजको...पे॰... भगवन्तं उत्तरिं पञ्हं अपुच्छि –
Atha kho sabhiyo paribbājako...pe... bhagavantaṃ uttariṃ pañhaṃ apucchi –
अथ खलु *सभियः* परिव्राजकः... *पे॰*... भगवन्तमुत्तरं प्रश्नं पप्रच्छ –
तब सभिय परिव्राजक ने भगवान् से आगे प्रश्न पूछा–
Then Sabhiya, the Paribbajaka...pe... further asked Bhagavān a question:

"किं पत्तिनमाहु वेदगुं, (इति सभियो)
अनुविदितं केन कथं च वीरियवाति।
आजानियो किन्ति नाम होति, पुट्ठो मे भगवा ब्याकरोहि''॥3/6/19॥

"Kiṃ pattinamāhu vedaguṃ, (iti sabhiyo)
Anuviditaṃ kena kathaṃ ca vīriyavāti;
Ājāniyo kinti nāma hoti, Puṭṭho me bhagavā byākarohi".॥19॥

"किं प्रापकमाहुः वेदगः, (इति *सभियः*)
अनुविदितं केन कथञ्च वीर्यवानिति।
आजानेयः किमिति नाम भवति, पृष्टो मे भगवन् ! व्याकुरु"॥19॥

सभिय– किस प्रकार की प्राप्ति वाले को वेदज्ञ कहते हैं ? अनुविज्ञ कौन है ? वीर्यवान् कौन है ? आजानेय (निर्भीक, उच्च जाति का) किसका नाम है ? भगवन् ! मेरे प्रश्न का उत्तर दें॥19॥

'What should one necessarily have obtained that people may call him Vedag ?'—so said Sabhiya, —' and how may they call him Anuvidita? and how Viriyavan? How does one become Aganiya? Asked about this do thou, O Bhagavān, explain it to me.'.19.

"वेदानि विचेय्य केवलानि, (सभियाति भगवा)
समणानं यानिधत्थि ब्राह्मणानं।
सब्बवेदनासु वीतरागो, सब्बं वेदमतिच्च वेदगू सो॥3/6/20॥

"Vedāni viceyya kevalāni, (sabhiyāti bhagavā)
Samaṇānaṃ yānidhatthi brāhmaṇānaṃ;
Sabbavedanāsu vītarāgo, Sabbaṃ vedamaticca vedagū so.॥20॥

"वेदानि विचीय केवलानि, (*सभिय* इति भगवान्)
श्रमणानां यानीहास्ति ब्राह्मणानाम्।
सर्ववेदनासु वीतराग:, सर्वं वेदमतीत्य वेदग: स:॥20॥

भगवान्– जो यहाँ श्रमणों और ब्राह्मणों की सम्पूर्ण अवस्थाओं को जान गया है, जो सब वेदनाओं में रागरहित है, जो सब वेदनाओं से परे है, वह वेदज्ञ है॥20॥

'He who, having conquered all sensations, O Sabhiya,'—so said Bhagavān,—' which are known to Sramaṇas and to Brāhmaṇa, is free from passion for all sensations, he is Vedag having passed sensation after conquering all sensation.20.

"अनुविच्च पपञ्चनामरूपं, अज्झत्तं बहिद्धा च रोगमूलं।
सब्बरोगमूलबन्धना पमुत्तो, अनुविदितो तादि पवुच्चते तथत्ता॥3/6/21॥

"Anuvicca papañcanāmarūpaṃ, ajjhattaṃ bahiddhā ca rogamūlaṃ;
Sabbarogamūlabandhanā pamutto, anuvidito tādi pavuccate tathattā.॥21॥

"अनुविद्य प्रपञ्चनामरूपम्, अध्यात्मं बहिर्धा च रोगमूलम्।
सर्वरोगमूलबन्धनात् प्रमुक्त:, अनुविदित: *तादि:* प्रोच्यते *तथता* ॥21॥

जो भीतर और बाहर के रोगमूल रूपी नाम-रूप के बन्धन को जान गया है और जो सब रोगों के मूल बन्धन से मुक्त है, वह स्थिर और स्थितात्मा अनुविदित कहा जाता है॥21॥

'He who, having seen the delusion of name and form, internally and externally, the root of sickness, and is delivered from the radical bond of all sickness, such a one is called Anuvidita well-informed by being so.21.

"विरतो इध सब्बपापकेहि, निरयदुक्खं अतिच्च वीरियवा सो।
सो वीरियवा पधानवा, धीरो तादि पवुच्चते तथत्ता॥3/6/22॥

"Virato idha sabbapāpakehi, nirayadukkhaṃ aticca vīriyavā so;
So vīriyavā padhānavā, dhīro tādi pavuccate tathattā.॥22॥

"विरत इह सर्वपापकै:, निरयदु:खमतीत्य वीर्यवान् स:।
स वीर्यवान् प्रधानवान्, धीर: *तादि:* प्रोच्यते *तथता* ॥22॥

जो सब पापों से विरत है, नरक के दु:ख से मुक्त हो गया है, वह वीर्यवान् है। वह स्थिर होने के कारण तथता है, उन्हें वीर्यवान्, पराक्रमी तथा धीर (धैर्यवान्) कहा जाता है॥22॥

'He who is disgusted in this world with all sins, is strong after conquering the pain of hell, is strong and powerful, such a one is called Dhira by being so.22.

"यस्सस्सु लुनानि बन्धनानि, अज्झत्तं बहिद्धा च सङ्गमूलं।
सब्बसङ्गमूलबन्धना पमुत्तो, आजानियो तादि पवुच्चते तथत्ता''ति॥3/6/23॥

"Yassassu lunāni bandhanāni, ajjhattaṃ bahiddhā ca saṅgamūlaṃ;
Sabbasaṅgamūlabandhanā pamutto, ājāniyo tādi pavuccate tathattā"ti.॥23॥

"यस्यास्रलूनानि बन्धनानि, अध्यात्मं बहिर्धा च सङ्गमूलम्।
सर्वसङ्गमूलबन्धनात् प्रमुक्त:, *आजानेय: तादि:* प्रोच्यते *तथता*" इति॥23॥

जिसके भीतर और बाहर के भी बन्धन प्रज्ञा रूपी शस्त्र के द्वारा काट दिए गए है जो कि सभी तरह की तृष्णा के मूल हैं, वह स्थिर होने के कारण तथता है, उन्हें आजानीय (उत्तम) कहा जाता है॥23॥

'He whose bonds are cut off internally and externally, the root of ties', who is delivered from the radical bond of all ties, such a one is called Ajaniya high-bred by being so.'23.

अथ खो सभियो परिब्बाजको...पे.... भगवन्तं उत्तरिं पञ्हं अपुच्छि –

Atha kho sabhiyo paribbājako...pe... bhagavantaṃ uttariṃ pañhaṃ apucchi –

अथ खलु *सभिय:* परिव्राजक:.... *पे*.... भगवन्तमुत्तरं प्रश्नं पपृच्छ –

तब सभिय परिव्राजक ने भगवान् से आगे प्रश्न पूछा–

Then Sabhiya, the Paribbāgaka.....pe..... further asked Bhagavān a question:

"किं पत्तिनमाहु सोत्तियं, (इति सभियो) अरियं केन कथं च चरणवा ति।
परिब्बाजको किन्ति नाम होति, पुट्ठो मे भगवा ब्याकरोहि''॥3/6/24॥

"Kiṃ pattinamāhu sottiyaṃ, (iti sabhiyo) Ariyaṃ kena kathaṃ ca caraṇavā ti;
Paribbājako kinti nāma hoti, Puṭṭho me bhagavā byākarohi".॥24॥

"किं प्रापकमाहु: श्रोत्रियम्, (इति *सभिय:*) आर्यं केन कथञ्च चरणवानिति।
परिव्राजक: किम् नाम भवति, पृष्टो मे भगवन् ! व्याकुरु"॥24॥

सभिय– किस प्रकार की प्राप्ति वाले को श्रोत्रिय कहते हैं ? आर्य कौन है ? आचारवान् कौन है ? परिव्राजक किसका नाम है ? भगवन् ! मेरे प्रश्न का उत्तर दें॥24॥

What should a man necessarily have obtained that people may call him a Sottiya ? '— so said Sabhiya,—' how may they call him an Ariya? and how a Caranavan? how may he become a Paribbajaka? Asked about this do thou, O Bhagavān, explain it to me.'24.

"सुत्वा सब्बधम्मं अभिञ्ञाय लोके, (सभिया ति भगवा)
सावज्जानवज्जं यदत्थि किञ्चि।
अभिभुं अकथंकथिं विमुत्तं, अनिघं सब्बधिमाहु सोत्तियो ति॥3/6/25॥

"Sutvā sabbadhammaṃ abhiññāya loke, (sabhiyā ti bhagavā)
Sāvajjānavajjaṃ yadatthi kiñci;
Abhibhuṃ akathaṃkathiṃ vimuttaṃ, Anighaṃ sabbadhimāhu sottiyo ti.॥25॥

"श्रुत्वा सर्वधर्ममभिज्ञाय लोके, (*सभिय* इति भगवान्) सावद्यानवद्यं यदस्ति किञ्चित्।
अभिभूय *अकथंकथीं* विमुक्तम्, अनघं सर्वधियमाहु: श्रोत्रिय इति॥25॥

भगवान्– इस संसार में जो भी सदोष और निर्दोष बातें हैं, उन सबको सुनकर भली प्रकार जान जो विजयी, पापरहित और विमुक्त हो गया है और जो सभी प्रकार की प्रज्ञावाला है, उसे श्रोत्रिय कहा जाता है॥25॥

'Whosoever, after having heard and understood every Dhamma in the world. O Sabhiya,'—so said Bhagavān,—' whatsoever is wrong and whatsoever is blameless, is victorious, free from doubt, liberated, free from pain in every respect, him they call a Sottiya.25.

"छेत्वा आसवानि आलयानि, विद्वा सो न उपेति गब्भसेय्यं।
सञ्ञं तिविधं पनुज्ज पङ्कं, कप्पं नेति तमाहु अरियो ति॥3/6/26॥

"Chetvā āsavāni ālayāni, vidvā so na upeti gabbhaseyyaṃ;
Saññaṃ tividhaṃ panujja paṅkaṃ, kappaṃ neti tamāhu ariyo ti.॥26॥

"छित्वा आस्रवान् आलयान्, विद्वान् स न उपैति गर्भशय्याम्।
सञ्ञां त्रिविधां प्रणुद्य पङ्कम्, कल्पं नैति तमाहुः आर्य इति॥26॥

जो विज्ञ आश्रवों (चित्त मलों) के आलयों को समाप्त कर फिर जन्म नहीं ग्रहण करता, जो सारे त्रिविध कामों को त्यागकर फिर काम-भोग में नहीं पड़ता, उसे आर्य कहा जाता है॥26॥

'Whosoever, after having cut off passions and desires, is wise and does not again enter the womb, having driven away the threefold sign, the mud of lust, and who does not enter time kappa, him they call an Ariya noble. 26.

"यो इध चरणेसु पत्तिपत्तो, कुसलो सब्बदा आजानाति धम्मं।
सब्बत्थ न सज्जति विमुत्तचित्तो, पटिघा यस्स न सन्ति चरणवा सो॥3/6/27॥

"Yo idha caraṇesu pattipatto, kusalo sabbadā ājānāti dhammaṃ;
Sabbattha na sajjati vimuttacitto, paṭighā yassa na santi caraṇavā so.॥27॥

"य इह चरणेषु प्रतिप्राप्तः, कुशलः सर्वदा आजानाति धर्मम्।
सर्वत्र न सजति विमुक्तचित्तः, प्रतिघाः यस्य न सन्ति चरणवान् सः॥27॥

जो शीलों का पालन करने वाला है, कुशल है, सदा धर्म को जानने वाला है, सर्वत्र अनासक्त है, विमुक्त है और जिसमें द्वेषभाव नहीं हैं, वह आचारवान् है॥27॥

'He who in this world, after having attained the highest gain in the Caranas, is skilful, has always understood the Dhamma, clings to nothing, is liberated, and for whom there are no passions, he is a Caranavan endowed with the observances.27.

"दुक्खवेपक्कं यदत्थि कम्मं, उद्धमधो तिरियं वा पि मज्झे।
परिब्बाजयित्वा परिञ्ञचारी, मायं मानमथोपि लोभकोधं।
परियन्तमकासि नामरूपं, तं परिब्बाजकमाहु पत्तिपत्तं''ति॥3/6/28॥

"Dukkhavepakkaṃ yadatthi kammaṃ, uddhamadho tiriyaṃ vā pi majjhe;
Paribbājayitvā pariññacārī, māyaṃ mānamathopi lobhakodhaṃ;
Pariyantamakāsi nāmarūpaṃ, taṃ paribbājakamāhu pattipattaṃ"ti.॥28॥

"दुःखवैपक्वं यदस्ति कर्म, ऊर्ध्वमधः तिर्यञ्च वापि मध्ये।
परिव्राज्य परिज्ञचारी, मायां मानमथोऽपि लोभक्रोधम्।
पर्यन्तमकार्षीत् नामरूपम्, तं परिव्राजकमाहुः प्राप्तिप्राप्तम्" इति॥28॥

जो भूत, भविष्य तथा वर्तमानकालिक कर्म और माया, मान, लोभ तथा क्रोध को दूर कर विचारपूर्वक विचरण करता है, जिसने नाम-रूप का अन्त कर दिया है, प्राप्तव्य को प्राप्त उसे परिव्राजक कहा जाता है॥28॥

'Whosoever abstains from the action that has a painful result, above and below and across and in the middle, who wanders with understanding, who has put an end to deceit, arrogance, cupidity and anger, name and form, him they call a Paribbajaka a wandering mendicant who has attained the highest gain.'28.

अथ खो सभियो परिब्बाजको भगवतो भासितं अभिनन्दित्वा अनुमोदित्वा अत्तमनो पमुदितो उदग्गो पीतिसोमनस्सजातो उट्ठायासना एकंसं उत्तरासङ्गं करित्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा भगवन्तं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवि–

Atha kho sabhiyo paribbājako bhagavato bhāsitaṃ abhinanditvā anumoditvā attamano pamudito udaggo pītisomanassajāto uṭṭhāyāsanā ekaṃsaṃ uttarāsaṅgaṃ karitvā yena bhagavā tenañjaliṃ paṇāmetvā bhagavantaṃ sammukhā sāruppāhi gāthāhi abhitthavi –

अथ खलु *सभियः* परिव्राजको भगवतो भाषितमभिनन्द्य अनुमोद्य आसमनः प्रमुदित उदग्रः प्रीतिसौमनस्यजात उत्थायासनात् एकांशमुत्तरासङ्गं कृत्वा यत्र भगवान् तत्राञ्जलिं प्रणम्य भगवन्तं सम्मुखं सारूप्याभिः गाथाभिरभ्यस्तावीत्–

तब सभिय परिव्राजक ने भगवान् के कथन का अभिनन्दन कर, अनुमोदन कर प्रसन्न, प्रमुदित, हर्षित, प्रीति और सौमनस्य प्राप्त हो आसन से उठ उत्तरासंग (ओढ़ने की चादर) को एक कंधे पर करके जिधर भगवान् थे उधर दोनों हाथों को जोड़ प्रणाम कर भगवान् के सामने समयोचित गाथाओं से स्तुति की ।

Then Sabhiya, the Paribbajaka, having approved of and rejoiced at the words of Bhagavān, glad, rejoicing, delighted, highly elated, having risen from his seat and having put his upper robe upon one shoulder, bending his joined hands towards Bhagavān, praised Bhagavān face to face in appropriate stanzas:

"यानि च तीणि यानि च सट्ठि, समणप्पवादसितानि भूरिपञ्ञ।
सञ्ञक्खरसञ्ञनिस्सितानि, ओसरणानि* विनेय्य ओघतमगा॥3/6/29॥

"Yāni ca tīṇi yāni ca saṭṭhi, samaṇappavādasitāni bhūripaññ;
Saññakkharasaññanissitāni, osaraṇāni vineyya oghatamagā.॥29॥

"यानि च त्रीणि यानि च षष्टिः, श्रमणप्रवादाश्रितानि *भूरिप्रज्ञ* ! ।
संज्ञाक्षरसंज्ञानिःश्रितानि, अवसरणानि विनीय ओघतममगात्॥29॥

सभिय– हे महाप्रज्ञ ! जो श्रमणों के तिरेसठ वाद (मत=दृष्टियाँ) हैं और जो केवल कल्पना आश्रित हैं, आप इन मिथ्यादृष्टियों के बाढ़ को पार कर गए हैं॥29॥

'Having conquered the three and sixty philosophical views refering to the disputations of the Samanas, thou hast crossed over the darkness of the stream.29.

*ओसणानी ति ओगहणानि तित्थानि, दिट्ठियो ति अत्थो । ओघतमगा ओघतमं ओघन्धकारं अगा अतिक्कन्तो । ओघन्तमगा ति पि पाठो, ओघानं अन्तं अगा।

अन्तगूसि पारगू दुक्खस्स, अरहासि सम्मासम्बुद्धो खीणासवं तं मञ्ञे।
जुतिमा मुतिमा पहूतपञ्ञो, दुक्खस्सन्तकरं अतारेसि मं॥3/6/30॥

Antagūsi pāragū dukkhassa, arahāsi sammāsambuddho khīṇāsavaṃ taṃ maññe;
Jutimā mutimā pahūtapañño, dukkhassantakaraṃ atāresi maṃ.॥30॥

अन्तगोऽसि पारगः दुःखस्य, अर्हदसि सम्यक्सम्बुद्धः क्षीणास्रवं त्वां मन्ये।
द्युतिमान् ! मतिमान् ! प्रभूतप्रज्ञ !, दुःखस्यान्तकरोऽतारीत् माम्॥30॥

आप दु:ख का अन्त कर गए हैं, दु:ख को पार कर गए हैं, आप अर्हत् हैं, सम्यक् सम्बुद्ध हैं, क्षीणास्रव हैं– ऐसा मैं मानता हूँ। हे ज्योतिष्मन्! महाप्रज्ञ! दु:ख के अन्तकर! आपने मेरा उद्धार कर दिया॥30॥

'Thou hast passed to the end of and beyond pain, thou art a saint, perfectly enlightened, I consider thee one that has destroyed his passions, thou art glorious, thoughtful, of great understanding, O thou who puts an end to pain, thou hast carried me across.30.

"यं मे कङ्खितमञ्ञासि, विचिकिच्छा मं तारयि नमो ते।
मुनि मोनपथेसु पत्तिपत्त, अखिल आदिच्चबन्धु सोरतोसि॥3/6/31॥

"Yaṃ me kaṅkhitamaññāsi, vicikicchā maṃ tārayi namo te;
Muni monapathesu pattipatta, akhila ādiccabandhu soratosi.॥31॥

"यन्मे कांक्षितमज्ञासी:, विचिकित्साया: मामतारी: नम: तुभ्यम्।
मुने ! मौनपथेषु प्राप्तिप्राप्त:, *अखिल आदित्यबन्धो* ! सूरतोऽसि॥31॥

जो आपने मुझे संशय में पड़ा जान, संशय से पार कर दिया, उसके लिए आपको नमस्कार है । ज्ञान के पथ पर चल कर निर्वाण प्राप्त, द्वेष रहित, आदित्यबन्धु मुनि आप शान्त हैं॥31॥

'Because thou sawest my longing, and carriedst me across my doubt, adoration be to thee, O Muni, who hast attained the highest gain in the ways of wisdom; O thou who art a true kinsman of the Adiccas, thou art compassionate.31.

• बौद्धसंस्कृत में सूरत:= सहृदय, कृपालु, शान्त।

"या मे कङ्खा पुरे आसि, तं मे ब्याकासि चक्खुमा।
अद्धा मुनीसि सम्बुद्धो, नत्थि नीवरणा तव॥3/6/32॥

"Yā me kaṅkhā pure āsi, taṃ me byākāsi cakkhumā;
Addhā munīsi sambuddho, natthi nīvaraṇā tava.॥32॥

"या मे कांक्षा पुरा आसीत्, तां मे व्याकार्षी: चक्षुष्मन् !
अद्धा मुनि असि सम्बुद्ध:, नास्ति नीवरणानि तव॥32॥

चक्षुष्मन् ! पहले मुझमें जो शंकायें थीं, आपने उनका समाधान कर दिया । सम्बुद्ध आप स्वयं मुनि हैं। आप में नीवरण नहीं हैं॥32॥

'The doubt I had before thou hast cleared away for me, O thou clearly-seeing; surely thou art a Muni, perfectly enlightened, there is no obstacle for thee.32.

• नीवरण 5 हैं 1. कामच्छंद=कामछन्द, 2. व्यापाद=व्यापाद, 3. थीनमिद्ध=स्त्यानमिद्ध, 4. उद्धच्चकुकुच्च=उद्धत्यकौकृत्य, 5. विचिकिच्छा= विचिकित्सा।

"उपायासा च ते सब्बे, विद्धस्ता विनळीकता।
सीतिभूतो दमप्पत्तो, धितिमा सच्चनिक्कमो॥3/6/33॥

"Upāyāsā ca te sabbe, viddhastā vinaḷīkatā;
Sītibhūto damappatto, dhitimā saccanikkamo.॥33॥

"उपायासा: च ते सर्वे, विध्वस्ता: विनलीकृता:।
शीतिभूतो दमप्राप्त:, धृतिमान् सत्यनिष्क्रम:॥33॥

आपको सब परेशानियाँ नष्ट और विनष्ट हैं। आप शान्त हैं, दान्त हैं, धृतिमान् हैं और सत्यवादी हैं॥33॥

'And all thy troubles are scattered and cut off, thou art calm, subdued, firm, truthful.33.

"तस्स ते नागनागस्स, महावीरस्स भासतो।
सब्बे देवानुमोदन्ति, उभो नारदपब्बता* ॥3/6/34॥

"Tassa te nāganāgassa, mahāvīrassa bhāsato;
Sabbe devānumodanti, ubho nāradapabbatā.॥34॥

"तस्य ते नागनागस्य, *महावीरस्य* भाषत:।
सर्वे देवा अनुमोदन्ति, उभौ नारदपर्वतौ॥34॥

श्रेष्ठ महावीर! दोनों नारद और पर्वत तथा अन्य सब देवता आपके भाषण का अनुमोदन करते हैं॥34॥

'All gods and both Narada and Pabbata rejoice at thee, the chief of the sinless naganaga, the great hero, when thou art speaking.34.

*ये देवतागणों के नाम हैं।

"नमो ते पुरिसाजञ्ञ*, नमो ते पुरिसुत्तम।
सदेवकस्मिं लोकस्मिं, नत्थि ते पटिपुग्गलो॥3/6/35॥

"Namo te purisājaññā, namo te purisuttama;
Sadevakasmiṃ lokasmiṃ, natthi te paṭipuggalo.॥35॥

"नमस्तुभ्यं पुरुषाजानेय ! नमस्तुभ्यं पुरुषोत्तम ! ।
सदेवके लोके, नास्ति ते प्रतिपुद्गल:॥35॥

हे श्रेष्ठ पुरुष ! आपको मेरा नमस्कार है, हे उत्तम पुरुष ! आपको मेरा नमस्कार है, देवता और मनुष्य सहित सारे संसार में आपके समान कोई नहीं है॥35॥

'Adoration be to thee, O noble man, adoration be to thee, O thou best of men; in the world of men and gods there is no man equal to thee.35.

* पुरिसेसु जातिसम्पन्नं।

"तुवं बुद्धो तुवं सत्था, तुवं माराभिभू मुनि।
तुवं अनुसये छेत्वा, तिण्णो तारेसि मं पजं॥3/6/36॥

"Tuvaṃ buddho tuvaṃ satthā, tuvaṃ mārābhibhū muni;
Tuvaṃ anusaye chetvā, tiṇṇo tāresi maṃ pajaṃ.॥36॥

"त्वं बुद्ध: त्वं शास्ता, त्वं माराभिभू: मुनि:।
त्वमनुशयान् छित्वा, तीर्ण: तारयसि इमां प्रजाम्॥36॥

आप बुद्ध हैं, आप शास्ता हैं, आप मार विजयी मुनि हैं ! आपने समूल वासनाओं को नष्ट कर भवसागर को पार कर लिया है और इस प्रजा को भी पार लगाया है॥36॥

'Thou art Buddha, thou art the Shāstā, thou art the Muni that conquers Mara; after having cut off desire thou hast crossed over and hast carried across this generation. 36.

"उपधी ते समतिक्कन्ता, आसवा ते पदालिता।
सीहोसि अनुपादानो, पहीनभयभेरवो॥37॥

"Upadhī te samatikkantā, āsavā te padālitā;
Sīhosi anupādāno, pahīnabhayabheravo.॥37॥

"उपधय: त्वया समतिक्रान्ता:, आस्रवा: ते प्रदालिता:।

सिंहोऽसि अनुपादान:, प्रहीणभयभैरव:॥37॥

आपने वासना-बन्धनों को पार किया है, वासनाओं को नष्ट किया है, आप अनासक्त भय और भयानकता से रहित सिंह हैं॥37॥

'The elements of existence (upadhi) are overcome by thee, the passions are destroyed by thee, thou art a lion, free from desire, thou hast left behind fear and terror.37.

"पुण्डरीकं यथा वग्गु, तोये न उपलिम्पति ।

एवं पुञ्ञे च पापे च, उभये त्वं न लिम्पसि।

पादे वीर पसारेहि, सभियो वन्दति सत्थुनो''ति॥3/6/38॥

"Puṇḍarīkaṃ yathā vaggu, toye na upalimpati;
Evaṃ puññe ca pāpe ca, ubhaye tvaṃ na limpasi;
Pāde vīra pasārehi, sabhiyo vandati satthuno"ti.॥38॥

"पुण्डरीकं यथा वल्गु, तोये न उपलिम्पति ।

एवं पुण्ये च पापे च, उभयो: त्वं न लिम्पसि।

पादौ *वीर* प्रसारय, *सभिय:* वन्दति *शास्तृन्*" इति॥38॥

जैसे सुन्दर कमल-पुष्प जल में लिप्त नहीं होता, वैसे ही आप पुण्य और पाप दोनों में लिप्त नहीं होते। हे वीर! पैरों को फैलायें, सभिय शास्ता की वन्दना कर रहा है॥38॥

'As a beautiful lotus does not adhere to the water, so thou dost not cling to good and evil, to either; stretch forth thy feet, O Veer, Sabhiya worships the Shasta's feet.' 38.

अथ खो सभियो परिब्बाजको भगवतो पादेसु सिरसा निपतित्वा भगवन्तं एतदवोच– ''अभिक्कन्तं, भन्ते...पे.... एसाहं भगवन्तं सरणं गच्छामि धम्मं च भिक्खुसङ्घं च; लभेय्याहं, भन्ते, भगवतो सन्तिके पब्बज्जं, लभेय्यं उपसम्पदं''ति ।

''यो खो, सभिय, अञ्ञतित्थियपुब्बो इमस्मिं धम्मविनये आकङ्खति पब्बज्जं, आकङ्खति उपसम्पदं, सो चत्तारो मासे परिवसति; चतुन्नं मासानं अच्चयेन आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजेन्ति, उपसम्पादेन्ति भिक्खुभावाय। अपि च मेत्थ पुग्गलवेमत्तता विदिता''ति।

''सचे, भन्ते, अञ्ञतित्थियपुब्बा इमस्मिं धम्मविनये आकङ्खन्ता पब्बज्जं, आकङ्खन्ता उपसम्पदं चत्तारो मासे परिवसन्ति, चतुन्नं मासानं अच्चयेन आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजेन्ति, उपसम्पादेन्ति भिक्खुभावाय, अहं चत्तारि वस्सानि परिवसिस्सामि; चतुन्नं वस्सानं अच्चयेन आरद्धचित्ता भिक्खू पब्बाजेन्तु उपसम्पादेन्तु भिक्खुभावाया''ति। अलत्थ खो सभियो परिब्बाजको भगवतो सन्तिके पब्बज्जं अलत्थ उपसम्पदं...पे.... अञ्ञतरो खो पनायस्मा सभियो अरहतं अहोसी ति।

Atha kho sabhiyo paribbājako bhagavato pādesu sirasā nipatitvā bhagavantaṃ etadavoca– "abhikkantaṃ, bhante…pe… esāhaṃ bhagavantaṃ saraṇaṃ gacchāmi dhammaṃ ca

bhikkhusaṅghaṃ ca; labheyyāhaṃ, bhante, bhagavato santike pabbajjaṃ, labheyyaṃ upasampadaṃ"ti .

"Yo kho, sabhiya, aññatitthiyapubbo imasmiṃ dhammavinaye ākaṅkhati pabbajjaṃ, ākaṅkhati upasampadaṃ, so cattāro māse parivasati; catunnaṃ māsānaṃ accayena āraddhacittā bhikkhū pabbājenti, upasampādenti bhikkhubhāvāya. Api ca mettha puggalavemattatā viditā"ti.

"Sace, bhante, aññatitthiyapubbā imasmiṃ dhammavinaye ākaṅkhantā pabbajjaṃ, ākaṅkhantā upasampadaṃ cattāro māse parivasanti, catunnaṃ māsānaṃ accayena āraddhacittā bhikkhū pabbājenti, upasampādenti bhikkhubhāvāya, ahaṃ cattāri vassāni parivasissāmi; catunnaṃ vassānaṃ accayena āraddhacittā bhikkhū pabbājentu upasampādentu bhikkhubhāvāyā"ti. Alattha kho sabhiyo paribbājako bhagavato santike pabbajjaṃ alattha upasampadaṃ…pe… aññataro kho panāyasmā sabhiyo arahataṃ ahosī ti.

अथ खलु सभिय: परिव्राजको भगवत: पादयो: शिरसा निपत्य भगवन्तमेतदवोचत् – ''अभिकान्तं *भन्ते*…*पे*.… एष अहं भगवन्तं शरणं गच्छामि धर्मं च भिक्षुसंघञ्च; लभेयमहम्, *भन्ते*! भगवत: सान्तिकं प्रव्रज्याम्, लभेयम् उपसम्पदाम्" इति ।

''य: खलु, *सभिय*! अन्यतीर्थिकपूर्व: अस्मिन् धर्मविनये आकांक्षति प्रव्रज्याम्, आकांक्षति उपसम्पदाम्, स चत्वारि मासानि परिवसति, चतुर्णा मासानामत्ययेन आरब्धचित्ता: भिक्षव: परिव्राजयन्ति, उपसम्पादयन्ति भिक्षुभावाय। अपि च मेऽत्र पुद्गलवैमात्रता (विभिन्नता) विदिता'' इति।

''सचेत्, *भन्ते* ! अन्यतीर्थिकपूर्वा अस्मिन् धर्मविनये आकांक्षन्त: प्रव्रज्याम्, आकांक्षन्त: उपसम्पदाम्, चत्वारि मासानि परिवसन्ति, चतुर्णा मासानाम् अत्ययेन आरब्धचित्ता: भिक्षव: प्ररिव्राजयन्ति, उपसम्पादयन्ति भिक्षुभावाय, अहं चत्वारि वर्षाणि परिवत्स्यामि, चतुर्णा वर्षाणामत्ययेन आरब्धचित्ता: भिक्षव: परिव्राजयन्तु उपसम्पादयन्तु भिक्षुभावाय'' इति। अलभत् खलु सभिय: परिव्राजको भगवत: सान्तिकं प्रव्रज्याम् अलभत् उपसम्पदाम्…*पे*.… अन्यतर: खलु पुन आयुष्मान् *सभिय*: अर्हत् अभूत्" इति।

तब सभिय परिव्राजक ने भगवान् के पैरों पर सिर से गिर कर भगवान् से यह कहा– "आश्चर्य है हे गौतम!… धर्म और भिक्षु संघ की भी । भन्ते ! भगवान् के पास मुझे प्रव्रज्या मिले, उपसम्पदा मिले।" भगवान्–सभिय ! जो कोई पहले का अन्यतीर्थक (दूसरे धर्म का साधु) इस धर्म-विनय में प्रव्रज्या लेना चाहता है, उपसम्पन्न होना चाहता है, तो उसे चार मास परिवास करना पड़ता है । चार मासों के बीतने पर प्रसन्न मन भिक्षु उसे भिक्षु होने के लिए प्रव्रजित करते हैं, उपसम्पन्न करते हैं । फिर भी मुझे यहाँ व्यक्ति की विभिन्नता ज्ञात है।" सभिय– यदि भन्ते ! पहले के अन्यतीर्थकों को इस धर्म-विनय में प्रव्रज्या चाहने पर, उपसम्पदा चाहने पर चार मास परिवास करना पड़ता है, चार मासों के बीतने पर प्रसन्न मन भिक्षु उसे भिक्षु होने के लिए प्रव्रजित करते है, उपसम्पन्न करते हैं, तो मैं चार वर्षों तक परिवास करूँगा, चार वर्षो के बीतने पर प्रसन्न चित्त भिक्षु मुझे भिक्षु होने के लिए प्रव्रजित करें, उपसम्पन्न करें ।" सभिय परिव्राजक ने भगवान् के पास प्रव्रज्या पाई, उपसम्पदा पाई । … आयुष्मान् सभिय अर्हन्तों में से एक अर्हत् हो गए ।

Then Sabhiya, the Paribbajaka, stooping with his head to Bhagavān's feet, said this to Bhagavān: 'It is excellent, O venerable! It is excellent, O venerable! As one raises what has been overt hrown, or reveals what has been hidden, or tells the way to him who has gone astray, or holds out an oil lamp in the dark that those who have eyes may see the objects, even so by the venerable Gotama in manifold ways the Dhamma has been illust rated; I take refuge in the

venerable Gotama, in the Dhamma, and in the Assembly of Bhikkhus; I wish to receive the robe and the orders from the venerable Bhagavān.

'He who, O Sabhiya, formerly belonging to another creed aññatitthiyapubba, wishes to be adopted into this religion dhammavinaya, and wishes to receive the robe and the orders, he serves for four months; after the lapse of four months Bhikkhus who have appeased their thoughts will give him the robe and the orders to become a Bhikkhu, I also in this matter acknowledge a difference of persons.'

If, O venerable, those that formerly belonged to another creed and wish to be adopted into this religion and to receive the robe and the orders, serve for four months, and after the lapse of four months Bhikkhus who have appeased their thoughts give them the robe and the orders that they may become Bhikkhus, I will serve for four years, and after the lapse of four years Bhikkhus who have appeased their thoughts shall give me the robe and the orders that I may become a Bhikkhu.' Sabhiya, the Paribbajaka, received the robe and the orders from Bhagavān, and the venerable Sabhiya, having lately received the upasampada, leading a solitary, retired, strenuous, ardent, energetic life, lived after having in a short time in this existence by his own understanding ascertained and possessed himself of that highest perfection of a religious life for the sake of which men of good family rightly wander away from their houses to a houseless state. 'Birth had been destroyed, a religious life had been led, what was to be done had been done, there was nothing else to be done for this existence,' so he perceived, and the venerable Sabhiya became Arahantas.

सभियसुत्तं निट्ठितं।

Sabhiyasuttaṃ niṭṭhitaṃ.

(3, 7) सेलसुत्तं (Selasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा अङ्गुत्तरापेसु चारिकं चरमानो महता* भिक्खुसङ्घेन सद्धिं अड्ढतेळसेहि* भिक्खुसतेहि येन आपणं नाम अङ्गुत्तरापानं निगमो तदवसरि। अस्सोसि खो केणियो जटिलो*– ''समणो खलु, भो, गोतमो सक्यपुत्तो सक्यकुला पब्बजितो अङ्गुत्तरापेसु चारिकं चरमानो महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं अड्ढतेळसेहि भिक्खुसतेहि आपणं अनुप्पत्तो। तं खो पन भवन्तं गोतमं एवं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो – 'इति पि सो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथि सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति । सो इमं लोकं सदेवकं समारकं सब्रह्मकं सस्समणब्राह्मणिं पजं सदेवमनुस्सं सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा पवेदेति। सो धम्मं देसति आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं सात्थं सब्यञ्जनं, केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेति। साधु खो पन तथारूपानं अरहतं दस्सनं होती''ति।

अथ खो केणियो जटिलो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो केणियं जटिलं भगवा धम्मिया कथाय सन्दस्सेसि समादपेसि समुत्तेजेसि सम्पहंसेसि। अथ खो केणियो जटिलो भगवता धम्मिया कथाय सन्दस्सितो समादपितो समुत्तेजितो

सम्पहंसितो भगवन्तं एतदवोच – ''अधिवासेतु मे भवं गोतमो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना''ति। एवं वुते, भगवा केणियं जटिलं एतदवोच – ''महा खो, केणिय, भिक्खुसङ्घो अड्ढतेळसानि भिक्खुसतानि; त्वं च ब्राह्मणेसु अभिप्पसन्नो''ति।

दुतियं पि खो केणियो जटिलो भगवन्तं एतदवोच – ''किञ्चापि, भो गोतम, महा भिक्खुसङ्घो अड्ढतेळसानि भिक्खुसतानि, अहं च ब्राह्मणेसु अभिप्पसन्नो; अधिवासेतु मे भवं गोतमो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना''ति। दुतियं पि खो भगवा केणियं जटिलं एतदवोच – ''महा खो, केणिय, भिक्खुसङ्घो अड्ढतेळसानि भिक्खुसतानि; त्वं च ब्राह्मणेसु अभिप्पसन्नो''ति।

ततियं पि खो केणियो जटिलो भगवन्तं एतदवोच – ''किञ्चापि, भो गोतम, महा भिक्खुसङ्घो अड्ढतेळसानि भिक्खुसतानि, अहं च ब्राह्मणेसु अभिप्पसन्नो, अधिवासेतु मे भवं गोतमो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना''ति। अधिवासेसि भगवा तुण्हीभावेन। अथ खो केणियो जटिलो भगवतो अधिवासनं विदित्वा उट्ठायासना येन सको अस्समो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा मित्तामच्चे ञातिसालोहिते आमन्तेसि – ''सुणन्तु मे भवन्तो मित्तामच्चा ञातिसालोहिता, समणो मे गोतमो निमन्तितो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेन, येन मे कायवेय्यावटिकं करेय्याथा''ति। ''एवं, भो''ति खो केणियस्स जटिलस्स मित्तामच्चा ञातिसालोहिता केणियस्स जटिलस्स पटिस्सुत्वा अप्पेकच्चे उद्धनानि खणन्ति, अप्पेकच्चे कट्ठानि फालेन्ति, अप्पेकच्चे भाजनानि धोवन्ति, अप्पेकच्चे उदकमणिकं पतिट्ठापेन्ति, अप्पेकच्चे आसनानि पञ्ञापेन्ति। केणियो पन जटिलो सामंयेव मण्डलमाळं पटियादेति। तेन खो पन समयेन सेलो ब्राह्मणो आपणे पटिवसति, तिण्णं वेदानं पारगू सनिघण्डुकेटुभानं साक्खरप्पभेदानं इतिहासपञ्चमानं पदको वेय्याकरणो लोकायतमहापुरिसलक्खणेसु अनवयो, तीणि च माणवकसतानि मन्ते वाचेति।

तेन खो पन समयेन केणियो जटिलो सेले ब्राह्मणे अभिप्पसन्नो होति। अथ खो सेलो ब्राह्मणो तीहि माणवकसतेहि परिवुतो जङ्घाविहारं अनुचङ्कममानो अनुविचरमानो येन केणियस्स जटिलस्स अस्समो तेनुपसङ्कमि। अद्दसा खो सेलो ब्राह्मणो केणियस्स जटिलस्स अस्समे अप्पेकच्चे उद्धनानि खणन्ते...पे.... अप्पेकच्चे आसनानि पञ्ञपेन्ते, केणियं पन जटिलं सामंयेव मण्डलमाळं पटियादेन्तं। दिस्वान केणियं जटिलं एतदवोच – ''किं नु खो भोतो केणियस्स आवाहो वा भविस्सति, विवाहो वा भविस्सति, महायञ्ञो वा पच्चुपट्ठितो, राजा वा मागधो सेनियो बिम्बिसारो निमन्तितो स्वातनाय सद्धिं बलकायेना''ति?

''न मे, भो सेल, आवाहो वा भविस्सति विवाहो वा, नापि राजा मागधो सेनियो बिम्बिसारो निमन्तितो स्वातनाय सद्धिं बलकायेन; अपि च खो मे महायञ्ञो पच्चुपट्ठितो। अत्थि समणो गोतमो सक्यपुत्तो सक्यकुला पब्बजितो अङ्गुत्तरापेसु चारिकं चरमानो महता भिक्खुसङ्घेन सद्धिं अड्ढतेळसेहि भिक्खुसतेहि आपणं अनुप्पत्तो। तं खो पन भवन्तं गोतमं...पे.... बुद्धो भगवा ति। सो मे निमन्तितो स्वातनाय भत्तं सद्धिं भिक्खुसङ्घेना''ति। ''बुद्धो ति, भो केणिय, वदेसि''? ''बुद्धो ति, भो सेल, वदामि''। ''बुद्धो ति, भो केणिय, वदेसि''? ''बुद्धो ति, भो सेल, वदामी''ति।

अथ खो सेलस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि – ''घोसो पि खो एसो दुल्लभो लोकस्मिं यदिदं बुद्धो ति। आगतानि खो पनम्हाकं मन्तेसु द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि, येहि समन्नागतस्स महापुरिसस्स द्वेव गतियो भवन्ति अनञ्ञा। सचे अगारं अज्झावसति राजा होति चक्कवत्ति धम्मिको धम्मराजा चातुरन्तो विजितावी जनपदत्थावरियप्पत्तो सत्तरतनसमन्नागतो। तस्सिमानि सत्त रतनानि भवन्ति, सेय्यथीदं – चक्करतनं, हत्थिरतनं, अस्सरतनं, मणिरतनं, इत्थिरतनं, गहपतिरतनं, परिणायकरतनमेव सत्तमं। परोसहस्सं खो पनस्स पुत्ता भवन्ति सूरा वीरङ्गरूपा परसेनप्पमद्दना। सो इमं पथविं सागरपरियन्तं अदण्डेन असत्थेन धम्मेन अभिविजिय अज्झावसति। सचे खो पन अगारस्मा अनगारियं पब्बजति, अरहं होति सम्मासम्बुद्धो लोके विवट्टच्छदो । कहं पन, भो केणिय, एतरहि सो भवं गोतमो विहरति अरहं सम्मासम्बुद्धो''ति?

एवं वुत्ते, केणियो जटिलो दक्खिणं बाहुं पग्गहेत्वा सेलं ब्राह्मणं एतदवोच – ''येनेसा, भो सेल, नीलवनराजी''ति। अथ खो सेलो ब्राह्मणो तीहि माणवकसतेहि सद्धिं येन भगवा तेनुपसङ्कमि। अथ खो सेलो ब्राह्मणो ते माणवके आमन्तेसि – ''अप्पसद्दा भोन्तो आगच्छन्तु, पदे पदं निक्खिपन्ता। दुरासदा हि ते भगवन्तो सीहा व एकचरा। यदा चाहं, भो, समणेन गोतमेन सद्धिं मन्तेय्युं, मा मे भोन्तो अन्तरन्तरा कथं ओपातेथ; कथापरियोसानं मे भवन्तो आगमेन्तू''ति।

अथ खो सेलो ब्राह्मणो येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदि। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो सेलो ब्राह्मणो भगवतो काये द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि समन्नेसि । अद्दसा खो सेलो ब्राह्मणो भगवतो काये द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि ये भुय्येन ठपेत्वा द्वे। द्वीसु महापुरिसलक्खणेसु कङ्खति विचिकिच्छति नाधिमुच्चति न सम्पसीदति – कोसोहिते च वत्थगुय्हे, पहूतजिव्हताय चा ति। अथ खो भगवतो एतदहोसि – ''पस्सति खो मे अयं सेलो ब्राह्मणो द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि येभुय्येन ठपेत्वा द्वे। द्वीसु महापुरिसलक्खणेसु कङ्खति

विचिकिच्छति नाधिमुच्चति न सम्पसीदति – कोसोहिते च वत्थगुय्हे, पहूतजिव्हताय चा''ति। अथ खो भगवा तथारूपं इद्धाभिसङ्खारं अभिसङ्खासि, यथा अद्दस सेलो ब्राह्मणो भगवतो कोसोहितं वत्थगुय्हं ।

अथ खो भगवा जिव्हं निन्नामेत्वा उभो पि कण्णसोतानि अनुमसि पटिमसि, उभो पि नासिकसोतानि अनुमसि पटिमसि, केवलं पि नलाटमण्डलं जिव्हाय छादेसि। अथ खो सेलस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि – ''समन्नागतो खो समणो गोतमो द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि परिपुण्णेहि, नो अपुरिपुण्णेहि। नो च खो नं जानामि बुद्धो वा नो वा। सुतं खो पन मेतं ब्राह्मणानं वुड्ढानं महल्लकानं आचरियपाचरियानं भासमानानं – 'ये ते भवन्ति अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, ते सके वण्णे भञ्ञमाने अत्तानं पातुकरोन्ती'ति। यन्नूनाहं समणं गोतमं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवेय्यं''ति। अथ खो सेलो ब्राह्मणो भगवन्तं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवि–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā aṅguttarāpesu cārikaṃ caramāno mahatā bhikkhusaṅghena saddhiṃ aḍḍhateḷasehi bhikkhusatehi yena āpaṇaṃ nāma aṅguttarāpānaṃ nigamo tadavasari. Assosi kho keṇiyo jaṭilo "samaṇo khalu, bho, gotamo sakyaputto sakyakulā pabbajito aṅguttarāpesu cārikaṃ caramāno mahatā bhikkhusaṅghena saddhiṃ aḍḍhateḷasehi bhikkhusatehi āpaṇaṃ anuppatto. Taṃ kho pana bhavantaṃ gotamaṃ evaṃ kalyāṇo kittisaddo abbhuggato – 'iti pi so bhagavā arahaṃ sammāsambuddho vijjācaraṇasampanno sugato lokavidū anuttaro purisadammasārathi satthā devamanussānaṃ buddho bhagavā'ti. So imaṃ lokaṃ sadevakaṃ samārakaṃ sabrahmakaṃ sassamaṇabrāhmaṇiṃ pajaṃ sadevamanussaṃ sayaṃ abhiññā sacchikatvā pavedeti. So dhammaṃ desati ādikalyāṇaṃ majjhekalyāṇaṃ pariyosānakalyāṇaṃ sātthaṃ sabyañjanaṃ, kevalaparipuṇṇaṃ parisuddhaṃ brahmacariyaṃ pakāseti. Sādhu kho pana tathārūpānaṃ arahataṃ dassanaṃ hotī"ti.

Atha kho keṇiyo jaṭilo yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavatā saddhiṃ sammodi. Sammodanīyaṃ kathaṃ sāraṇīyaṃ vītisāretvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinnaṃ kho keṇiyaṃ jaṭilaṃ bhagavā dhammiyā kathāya sandassesi samādapesi samuttejesi sampahaṃsesi. Atha kho keṇiyo jaṭilo bhagavatā dhammiyā kathāya sandassito samādapito samuttejito sampahaṃsito bhagavantaṃ etadavoca – "adhivāsetu me bhavaṃ gotamo svātanāya bhattaṃ saddhiṃ bhikkhusaṅghenā"ti. Evaṃ vutte, bhagavā keṇiyaṃ jaṭilaṃ etadavoca – "mahā kho, keṇiya, bhikkhusaṅgho aḍḍhateḷasāni bhikkhusatāni; tvaṃ ca brāhmaṇesu abhippasanno"ti.

Dutiyaṃ pi kho keṇiyo jaṭilo bhagavantaṃ etadavoca – "kiñcāpi, bho gotama, mahā bhikkhusaṅgho aḍḍhateḷasāni bhikkhusatāni, ahañca brāhmaṇesu abhippasanno; adhivāsetu me bhavaṃ gotamo svātanāya bhattaṃ saddhiṃ bhikkhusaṅghenā"ti. Dutiyaṃ pi kho bhagavā keṇiyaṃ jaṭilaṃ etadavoca – "mahā kho, keṇiya, bhikkhusaṅgho aḍḍhateḷasāni bhikkhusatāni; tvaṃ ca brāhmaṇesu abhippasanno"ti.

Tatiyaṃ pi kho keṇiyo jaṭilo bhagavantaṃ etadavoca – "kiñcāpi, bho gotama, mahā bhikkhusaṅgho aḍḍhateḷasāni bhikkhusatāni, ahaṃ ca brāhmaṇesu abhippasanno, adhivāsetu me bhavaṃ gotamo svātanāya bhattaṃ saddhiṃ bhikkhusaṅghenā"ti. Adhivāsesi bhagavā tuṇhībhāvena. Atha kho keṇiyo jaṭilo bhagavato adhivāsanaṃ viditvā uṭṭhāyāsanā yena sako assamo tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā mittāmacce ñātisālohite āmantesi – "suṇantu me bhavanto mittāmaccā ñātisālohitā, samaṇo me gotamo nimantito svātanāya bhattaṃ saddhiṃ bhikkhusaṅghena, yena me kāyaveyyāvaṭikaṃ kareyyāthā"ti. "Evaṃ, bho"ti kho keṇiyassa jaṭilassa mittāmaccā ñātisālohitā keṇiyassa jaṭilassa paṭissutvā appekacce uddhanāni khaṇanti, appekacce

kaṭṭhāni phālenti, appekacce bhājanāni dhovanti, appekacce udakamaṇikaṃ patiṭṭhāpenti, appekacce āsanāni paññāpenti. Keṇiyo pana jaṭilo sāmaṃyeva maṇḍalamāḷaṃ paṭiyādeti.

Tena kho pana samayena selo brāhmaṇo āpaṇe paṭivasati, tiṇṇaṃ vedānaṃ pāragū sanighaṇḍuketubhānaṃ sākkharappabhedānaṃ itihāsapañcamānaṃ padako veyyākaraṇo lokāyatamahāpurisalakkhaṇesu anavayo, tiṇi ca māṇavakasatāni mante vāceti.

Tena kho pana samayena keṇiyo jaṭilo sele brāhmaṇe abhippasanno hoti. Atha kho selo brāhmaṇo tīhi māṇavakasatehi parivuto jaṅghāvihāraṃ anucaṅkamamāno anuvicaramāno yena keṇiyassa jaṭilassa assamo tenupasaṅkami. Addasā kho selo brāhmaṇo keṇiyassa jaṭilassa assame appekacce uddhanāni khaṇante…pe… appekacce āsanāni paññapente, keṇiyaṃ pana jaṭilaṃ sāmaṃyeva maṇḍalamāḷaṃ paṭiyādentaṃ. Disvāna keṇiyaṃ jaṭilaṃ etadavoca – "kiṃ nu kho bhoto keṇiyassa āvāho vā bhavissati, vivāho vā bhavissati, mahāyaññho vā paccupaṭṭhito, rājā vā māgadho seniyo bimbisāro nimantito svātanāya saddhiṃ balakāyenā"ti?

"Na me, bho sela, āvāho vā bhavissati vivāho vā, nāpi rājā māgadho seniyo bimbisāro nimantito svātanāya saddhiṃ balakāyena; api ca kho me mahāyaññho paccupaṭṭhito. Atthi samaṇo gotamo sakyaputto sakyakulā pabbajito aṅguttarāpesu cārikaṃ caramāno mahatā bhikkhusaṅghena saddhiṃ aḍḍhateḷasehi bhikkhusatehi āpaṇaṃ anuppatto. Taṃ kho pana bhavantaṃ gotamaṃ…pe… buddho bhagavā ti. So me nimantito svātanāya bhattaṃ saddhiṃ bhikkhusaṅghenā"ti. "Buddho ti, bho keṇiya, vadesi"? "Buddho ti, bho sela, vadāmi". "Buddho ti, bho keṇiya, vadesi"? "Buddho ti, bho sela, vadāmī"ti.

Atha kho selassa brāhmaṇassa etadahosi – "ghoso pi kho eso dullabho lokasmiṃ yadidaṃ buddho ti. Āgatāni kho panamhākaṃ mantesu dvattiṃsamahāpurisalakkhaṇāni, yehi samannāgatassa mahāpurisassa dveva gatiyo bhavanti anaññā. Sace agāraṃ ajjhāvasati rājā hoti cakkavatti dhammiko dhammarājā cāturanto vijitāvī janapadatthāvariyappatto sattaratanasamannāgato. Tassimāni satta ratanāni bhavanti, seyyathidaṃ – cakkaratanaṃ, hatthiratanaṃ, assaratanaṃ, maṇiratanaṃ, itthiratanaṃ, gahapatiratanaṃ, pariṇāyakaratanameva sattamaṃ. Parosahassaṃ kho panassa puttā bhavanti sūrā vīraṅgarūpā parasenappamaddanā. So imaṃ pathaviṃ sāgarapariyantaṃ adaṇḍena asatthena dhammena abhivijiya ajjhāvasati. Sace kho pana agārasmā anagāriyaṃ pabbajati, arahaṃ hoti sammāsambuddho loke vivaṭṭacchado Kahaṃ pana, bho keṇiya, etarahi so bhavaṃ gotamo viharati arahaṃ sammāsambuddho"ti?

Evaṃ vutte, keṇiyo jaṭilo dakkhiṇaṃ bāhuṃ paggahetvā selaṃ brāhmaṇaṃ etadavoca – "yenesā , bho sela, nīlavanarājī"ti. Atha kho selo brāhmaṇo tīhi māṇavakasatehi saddhiṃ yena bhagavā tenupasaṅkami. Atha kho selo brāhmaṇo te māṇavake āmantesi – "appasaddā bhonto āgacchantu, pade padaṃ nikkhipantā. Durāsadā hi te bhagavanto sīhāva ekacarā. Yadā cāhaṃ, bho, samaṇena gotamena saddhiṃ manteyyuṃ, mā me bhonto antarantarā kathaṃ opātetha; kathāpariyosānaṃ me bhavanto āgamentū"ti. Atha kho selo brāhmaṇo yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavatā saddhiṃ sammodi. Sammodanīyaṃ kathaṃ sāraṇīyaṃ vītisāretvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinno kho selo brāhmaṇo bhagavato kāye dvattiṃsamahāpurisalakkhaṇāni samannesi. Addasā kho selo brāhmaṇo bhagavato kāye dvattiṃsamahāpurisalakkhaṇāni yebhuyyena ṭhapetvā dve. Dvīsu mahāpurisalakkhaṇesu kaṅkhati vicikicchati nādhimuccati na sampasīdati – kosohite ca vatthaguyhe, pahūtajivhatāya cā ti.

Atha kho bhagavato etadahosi– "passati kho me ayaṃ selo brāhmaṇo dvattiṃsamahāpurisalakkhaṇāni yebhuyyena ṭhapetvā dve. Dvīsu mahāpurisalakkhaṇesu kaṅkhati vicikicchati nādhimuccati na sampasīdati– kosohite ca vatthaguyhe, pahūtajivhatāya cā"ti.

Atha kho bhagavā tathārūpaṃ iddhābhisaṅkhāraṃ abhisaṅkhāsi, yathā addasa selo brāhmaṇo bhagavato kosohitaṃ vatthaguyhaṃ. Atha kho bhagavā jivhaṃ ninnāmetvā ubho pi kaṇṇasotāni anumasi paṭimasi, ubho pi nāsikasotāni anumasi paṭimasi, kevalaṃ pi nalāṭamaṇḍalaṃ jivhāya chādesi. Atha kho selassa brāhmaṇassa etadahosi– "samannāgato kho samaṇo gotamo dvattiṃsamahāpurisalakkhaṇehi paripuṇṇehi, no apuripuṇṇehi. No ca kho naṃ jānāmi buddho vā no vā. Sutaṃ kho pana metaṃ brāhmaṇānaṃ vuḍḍhānaṃ mahallakānaṃ ācariyapācariyānaṃ bhāsamānānaṃ – 'ye te bhavanti arahanto sammāsambuddhā, te sake vaṇṇe bhaññamāne attānaṃ pātukarontī'ti. Yannūnāhaṃ samaṇaṃ gotamaṃ sammukhā sāruppāhi gāthāhi

abhitthaveyyaṃ'ti. Atha kho selo brāhmaṇo bhagavantaṃ sammukhā sāruppāhi gāthāhi abhitthavi–

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् *अंगुत्तरापे* चर्यां चरन् महता भिक्षुसंघेन सार्धम् अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतैः यत्र *आपणं* नाम अङ्गुत्तरापानां निगमः तत्र असरत् । अश्रौषीत् खलु *केणियः जटिलः*– ''श्रमण! खलु, भवान् *गौतमः* शाक्यपुत्रः शाक्यकुलः प्रव्रजितः अङ्गुत्तरापेषु चर्यां चरन् महता भिक्षुसंघेन सार्धम् अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतैः आपणमनुप्राप्तः, तं खलु पुनः भगवतो गौतमस्य एवं कल्याणः कीर्तिशब्दोऽभ्युपगतः– 'इत्यपि स भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धो विद्याचरणसम्पन्नः सुगतो लोकविद् अनुत्तरः पुरुषदम्यसारथी शास्ता देवमनुष्याणां बुद्धो भगवान्" इति। स इमं लोकं सदेवकं समारकं सब्रह्मकम्, सश्रमणब्राह्मणप्रजां सदेवमनुष्याणां स्वयं अभिज्ञया साक्षीकृत्य प्रवदति। स धर्मं दिशति आदिकल्याणं मध्यकल्याणं पर्यवसानकल्याणं सार्थं सव्यञ्जनम्, केवलपरिपूर्णं परिशुद्धं ब्रह्मचर्यं प्रकाशते। साधु खलु पुनः तथारूपाणामर्हतां दर्शनं भवति" इति।

अथ खलु *केणियो जटिलो* यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्, उपसंक्रम्य भगवता सार्धं सममोदिष्ट। सम्मोद्य कथां सारणीयां व्यतिसार्य एकान्तं न्यसीदत्। एकान्तं निषण्णं खलु *केणियं जटिलं* भगवता धार्मिक-कथया संदर्शितः, समादापितः समुत्तेजितः संप्रशंसितः । अथ खलु *केणियो जटिलो* भगवतो धार्मिककथया संदर्शितः समादापितः समुत्तेजितः सम्प्रशंसितः भगवन्तमेतदवोचत् – ''अधिवसतु मे भवान् *गौतम* ! श्वस्तनाय भोक्तुं सार्धं भिक्षुसंघेन" इति । एवमुक्ते, भगवान् *केणिय*मेतदवोचत् – ''महान् खलु, केणिय ! भिक्षुसंघः, अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतं त्वञ्च खलु ब्राह्मणेषु अभिप्रसन्नः" इति।

द्वितीयमपि खलु *केणियो जटिलो* भगवन्तमेतदवोचत्– ''किञ्चापि, भो गौतम ! महाभिक्षुसंघः अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतानि, अहञ्च ब्राह्मणेषु अभिप्रसन्नः, अधिवसतु मे भवान् *गौतमः* श्वस्तनाय भोक्तुं सार्धं भिक्षुसंघेन" इति। द्वितीयमपि खलु भगवान् केणियं *जटिलमेत*दवोचत्– ''महान् खलु, *केणिय* ! भिक्षुसंघः अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतानि; त्वञ्च खलु ब्राह्मणेषु अभिप्रसन्नः'' इति।

तृतीयमपि खलु *केणियो जटिलो* भगवन्तमेतदवोचत् – ''किञ्चापि, भो *गौतम* ! महाभिक्षुसंघ अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतानि अहञ्च खलु ब्राह्मणेषु अभिप्रसन्नः, अधिवसतु मे भवान् *गौतमः* श्वस्तनाय भोक्तुं सार्धं भिक्षुसंघेन''इति। अध्यवात्सीत् भगवान् तूष्णीभावेन। अथ खलु *केणियो जटिलो* भगवतोऽधिवासनं विदित्वा उत्थायासनात् यत्र स्वकीय आश्रमः तत्रोपसमक्रमीत्, उपसंक्रम्य मित्रामात्यान् ज्ञाति-सालोहितान् आमन्त्रयत्– ''श्रुण्वन्तु मे भवन्तः मित्रामात्याः ज्ञातिसालोहिताः, श्रमणो मया गौतमः निमन्त्रितः श्वस्तनाय भक्ताय सार्धं भिक्षुसंघेन, यत्र (भवन्तः) कायवैयावृत्तिः कुर्युः'' इति। ''एवं भो'' इति खलु *केणियस्य जटिलस्य* मित्रामात्याः ज्ञातिसालोहिताः केणियं जटिलं प्रतिश्रुत्य अपि केचन इध्मानि खनन्ति, अपि केचन काष्ठानि फालयन्ति, अपि केचन भाजनानि धावन्ति, अपि केचन उदकमणिकानि प्रतिस्थापयन्ति, अपि केचन आसनानि प्रस्तारयन्ति । *केणियः* पुनः *जटिलः* स्वयमेव मण्डलमालं प्रतिच्छादयति। तत्र खलु पुनः समयात् सेलब्राह्मण आपणं

प्रतिवसति, त्रयाणां वेदानां पारगः, सनिघण्टुः-कैटभ-साक्षरप्रभेदानाम् इतिहास-पञ्चमानां पदकः वैयाकरणः लोकायतमहापुरुषलक्षणेषु अन्वयः, त्रीणि माणवकशतानि (सः) मन्त्रान् वाचयति।

तत्र खलु पुनः समयात् *केणियो जटिलो सेलं* ब्राह्मणं प्रति अभिप्रसन्नो भवति। अथ खलु सेलो ब्राह्मणो त्रयैः माणवकशतैः परिवृतः जंघाविहारम् अनुचंक्रमन् अनुविचरन् यत्र *केणियस्य जटिलस्य* आश्रमः तत्रोपसमक्रमीत्। अद्राक्षीत् खलु *सेलो ब्राह्मणः केणियस्य जटिलस्य* आश्रमे अपि केचन इध्मानानि खनन्ति...*पे*... अपि केचन आसनानि प्रच्छादयन्ति, केणियं पुनः जटिलं स्वयमेव मण्डलमालं प्रतिच्छादयन्तं दृष्ट्वा *केणियं जटिलमेतद*वोचत् – ''किन्नु भवतः *केणियस्य* आवाहो वा भविष्यति, विवाहो वा भविष्यति, महायज्ञो वा प्रत्युपस्थितः, राजा वा मागधः सैनिकः बिम्बिसारो निमन्त्रितः श्वस्तनाय सार्धं बलकायेन'' इति?

''न मे, *सेल !* आवाहो वा भविष्यति, नापि विवाहो भविष्यति, नापि राजा मागधः सैनिकः बिम्बिसारो निमन्त्रितः श्वस्तनाय सार्धं बलकायेन; अपि च खलु मे महायज्ञः प्रतिस्थापितः । अस्ति श्रमणो *गौतमः शाक्यपुत्रः* शाक्यकुले प्रव्रजितः अङ्गुत्तरापेषु चर्यां चरन् महता भिक्षुसंघेन सार्धम् अर्धशतोनत्रयोदशभिक्षुशतैः आपणम् अनुप्राप्तः। तं खलु पुनः भगवन्तं *गौतमं*...*पे*... बुद्धो भगवान् इति। सो मया निमन्त्रितः श्वस्तनाय भोक्तुं सार्धं भिक्षुसंघेन'' इति। ''बुद्ध इति, खलु, केणिय ! वदसि''? ''बुद्ध इति, भो *सेल* ! वदामि''। ''बुद्ध इति, भो *केणिय* ! वदसि''? ''बुद्ध इति, *भो सेल* ! वदामि" इति।

अथ खलु *सेलस्य ब्राह्मणस्य* एतदभूत् – ''घोषोऽपि खलु एषो दुर्लभो लोके यदयं बुद्ध इति"। आगतानि खलु पुनः अस्माकं मन्त्रेषु द्वात्रिंशत् महापुरुषलक्षणानि, यैः समागतस्य महापुरुषस्य द्वे गती स्त अनन्ये। स चेत् अगारम् अधिवसति राजा भवति चक्रवर्त्ती धार्मिकः धर्मराजा चतुरन्तं विजेता जनपदे-स्थिरप्राप्तः सप्तरत्नसमागतः। तादृशानि सप्तरत्नानि भवन्ति, तद् यथेदम्– चक्ररत्नम्, हस्तिरत्नम्, अश्वरत्नम्, मणिरत्नम्, स्त्रीरत्नम्, गृहपतिरत्नम्, परिणायकरत्नमेव सप्तमम्। परोसहस्रं खलु तस्य पुत्राः भवन्ति शूराः वीराङ्गरूपाः परसेनाप्रमर्दनाः। स इमां पृथ्वीं सागरपर्यन्तम् अदण्डेन अशस्त्रेण धर्मेण अभिजित्य अधिवसति। स चेत् खलु पुनः अगारात् अनगारिकं प्रव्रजति, अर्हत् भवति सम्यक्सम्बुद्धो लोके विवर्तच्छदः । कथं पुनः, भो *केणिय*, एतर्हि स भवान् *गौतमः* विहरति अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धः'' इति?

एवमुक्ते, *केणियो जटिलो* दक्षिणं बाहुं प्रगृह्य सेलं ब्राह्मणमेतदवोचत् – ''यत्र सा, भो सेल ! नीलवनराजिः'' इति। अथ खलु *सेलो* ब्राह्मणः, तान् माणवकशतैः सार्धं यत्र भगवान् तत्र उपसमक्रमीत्। अथ खलु *सेलः* ब्राह्मणः तान् माणवकान् आममन्त्रत्– ''अल्पशब्दाः भवन्त आगच्छन्तु, पदे पदे निक्षिप्ताः, दुरासदाः हि ते भवन्तः सिंहा इव एकचराः, यदा चाहम्, भो ! श्रमणेन *गौतमेन* सार्धं मन्त्रयेयम्, मा मे भवन्तः अन्तरामन्तरं कथां उपस्थापयेयुः; कथापर्यवसानं मे भवन्त आगच्छन्तु''इति।

अथ खलु *सेलो* ब्राह्मणो यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवता सार्धं सममोदिष्ट, सम्मोदनीयां कथां सारणीयां व्यतिसार्य एकान्तं निससाद। एकान्तं निषण्णः खलु *सेलो* ब्राह्मणो

भगवत: काये द्वात्रिंशत् महापुरुषलक्षणानि समन्वेषयत्। अद्राक्षीत् खलु *सेलो* ब्राह्मणो भगवत: काये द्वात्रिंशत् महापुरुषलक्षणानि येषु त्यक्त्वा द्वे, द्वयो: महापुरुषलक्षणयो: शंङ्कते, विचिकित्सते नाधिमुञ्चति न सम्प्रसीदति – कोषाच्छादितं च वस्तिगुह्यं प्रभूतजिह्वाञ्च।

अथ खलु भगवत एतदभूत् – ''पश्यति खलु मेऽयं सेलो ब्राह्मणो द्वात्रिंशत् महापुरुषलक्षणानि येषु त्यक्त्वा द्वे, द्वयो: महापुरुषलक्षणयो: शङ्कते, विचिकित्सते नाधिमुञ्चति न सम्प्रसीदति – कोषाच्छादितं च वस्तिगुह्यम्, प्रभूतजिह्वाञ्चेति'। अथ खलु भगवान् तथारूपम् ऋद्ध्यभिसंस्कारम् अभिसमाकार्षीत् यथा अद्राक्षीत् *सेलो* ब्राह्मणो भगवत: कोषोपहितं वस्तिगुह्यम्। अथ खलु भगवान् जिह्वां निर्णाम्य कर्णश्रौतौ अन्वमृशत् प्रत्यमृशत्, उभौ नासिकाश्रोतौ अन्वमृशत् प्रत्यमृशत्, केवलमपि ललाटमण्डलं जिह्वया अचिच्छदत्। अथ खलु *सेलस्य* ब्राह्मणस्य एतदभूत् – ''समागत: खलु श्रमणो गौतमो द्वात्रिंशत् महापुरुषलक्षणै: परिपूर्ण:, नो अ-परिपूर्ण:, न च खलु एनं जानामि बुद्धो वा न वा। श्रुतं खलु पुन: एतान् ब्राह्मणान् बुद्धान् महल्लकान् आचार्य-प्राचार्यान् भाषमाणान् – 'ये ते भवन्ति अर्हन्त: सम्यक्सम्बुद्धा:, ते स्वकीयं वर्णं भणमाना: आत्मानं पातुकुर्वन्तीति। यन्नूनमहं श्रमणं गौतमं सम्मुखं सारूप्याभि: गाथाभि: अभिस्तूयम्" इति– अथ खलु *सेल*ब्राह्मणो भगवत: सम्मुखं सारूप्याभि: अभ्यस्तावीत्–

ऐसा मैंने सुना एक समय भगवान् साढ़े बारह सौ भिक्षुओं के महाभिक्षु-संघ के साथ, अंगुत्तराप जनपद में चारिका करते हुये, जहाँ पर आपण नामक अंगुत्तरापों का निगम (कस्बा) था, वहाँ पहुँचे । केणिक जटिल ने सुना– "शाक्य-कुल से प्रव्रजित, शाक्य-पुत्र श्रमण गौतम साढ़े बारह सौ भिक्षुओं के महाभिक्षु-संघ के साथ, अंगुत्तराप में चारिका करते हुए, आपण में आये हैं। उन भगवान् गौतम का ऐसा कल्याण कीर्ति-शब्द फैला हुआ है । वह भगवान् ऐसे अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध, विद्याचरण-सम्पन्न, सुगत, लोकविद् अनुपम पुरुषदम्य सारथी, देवमनुष्यों के शास्ता हैं । वह इस लोक में देव-मार ब्रह्मा-श्रमण-ब्राह्मण सहित देव-मनुष्यों की प्रजा को स्वयं ज्ञान से साक्षात्कार करके उपदेश देते हैं वह आरम्भ, मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में कल्याणकर धर्म का उसके शब्दों और भाव सहित उपदेश करके, सर्वांश में परिपूर्ण परिशुद्ध ब्रह्मचर्य को प्रकाशित करते हैं । इस प्रकार के अर्हंतों का दर्शन उत्तम होता है ।"

तब केणिक जटिल जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये, जाकर भगवान् के साथ संमोदन किया। संमोदन कर, (कुशल-प्रश्न पूछ) एक ओर बैठे। एकान्त में बैठे हुए केणिय जटिल को भगवान् ने धर्म के उपदेश द्वारा संदर्शन, समादपन, समुत्तेजन, संप्रशंसन किया । भगवान् के धर्म-उपकथा-द्वारा संदर्शित... हो, केणिय जटिल ने भगवान् से कहा– "आप गौतम भिक्षु-संघ-सहित कल का मेरा भोजन स्वीकार करें ।" ऐसा कहने पर भगवान् ने केणिय जटिल से कहा– "केणिय ! भिक्षु-संघ बड़ा है, साढ़े बारह सौ भिक्षु हैं और तुम ब्राह्मणों में प्रसन्न (=श्रद्धालु) हो। "

दूसरी बार भी केणिक जटिल ने भगवान् से कहा–"क्या हुआ, हे गौतम ! जो बड़ा मुनि-संघ है, साढ़े बारह सौ भिक्षु हैं, और मैं ब्राह्मणों में प्रसन्न हूँ? आप गौतम भिक्षु-संघ-सहित कल का मेरा भोजन स्वीकार करें ।" दूसरी बार भी भगवान् ने केणिक जटिल से यही कहा– केणिय! भिक्षु-संघ बड़ा है, साढे बारह सौ भिक्षु हैं और तुम ब्राह्मणों में प्रसन्न (श्रद्धालु) हो।

तीसरी बार भी केणिय जटिल ने भगवान से कहा– क्या हुआ, हे गौतम, जो बड़ा मुनि-संघ है, साढे बारह सौ भिक्षु हैं, और मैं ब्राह्मणों में प्रसन्न हूँ? आप गौतम भिक्षु संघ सहित का मेरा भोजन स्वीकार करें।

भगवान् ने मौन रह स्वीकार किया । तब केणिक जटिल ने भगवान् की स्वीकृति को जान, आसन से उठ, जहाँ उसका आश्रम था, वहाँ गया। जाकर मित्र-अमात्य, जाति-बिरादरी वालों से बोला– "आप सब मेरे मित्र-अमात्य, जाति-बिरादरी सुनें–मैंने भिक्षु-संघ-सहित श्रमण गौतम-को कल के भोजन के लिये निमंत्रित किया है, आप लोग सेवा करें ।" "अच्छा !" केणिक जटिल से, ... मित्र-अमात्य, जाति-बिरादरी ने कहा । (उनमें से) कोई चूल्हा खोदने लगे, कोई लकड़ी फाड़ने लगे, कोई बर्तन धोने लगे, कोई पानी के मटके (माणिक) रखने लगे, कोई आसन बिछाने लगे । केणिय जटिल स्वयं पट-मंडप (मंडल माल) तैयार करने लगा। उस समय निघण्टु, कल्प (केटुभ) – अक्षर-प्रभेद सहित तीनों वेदों तथा पाँचवें इतिहास में पारङ्गत, पदक (कवि), वैयाकरण, लोकायत (शास्त्र) तथा महापुरुष-लक्षण (सामुद्रिक-शास्त्र) में निपुण सेल नामक ब्राह्मण आपण में, वास करता था; और तीन सौ विद्यार्थियों (माणवक) को मंत्र (वेद) पढ़ाता था । उस समय सेल ब्राह्मण केणिय जटिल के प्रति अत्यन्त प्रसन्न (श्रद्धावान्) था। ... तब (वह) तीन सौ माणवकों के साथ जंघा-विहार (चहल-कदमी) के लिये टहलता हुआ, जहाँ केणिय जटिल आश्रम था, वहाँ गया । सेल ब्राह्मण ने देखा कि केणिय जटिल के जटिलों (जटाधारी, वानप्रस्थी शिष्यों) में, कोई चूल्हा खोद रहे हैं आसन विछा रहे हैं..., तथा केणिक जटिल को स्वयं मंडल-माल तैयार करते हुए देखकर (उसने) केणिय जटिल से कहा –

"क्या आप केणिक के यहाँ आवाह होगा, विवाह होगा, या महा-यज्ञ आ पहुँचा है ? क्या बलकाय (सेना) सहित मगध-राज श्रेणिक बिम्बिसार, कल के भोजन के लिये निमंत्रित किया गया है?" "नहीं, सेल ! न मेरे यहाँ आवाह होगा, न विवाह होगा, और न बल-काय सहित मगध-राज श्रेणिक बिम्बिसार, कल के भोजन के लिये निमन्त्रित हैं, बल्कि मेरे यहाँ महायज्ञ है । शाक्य-कुल से प्रव्रजित शाक्य-पुत्र श्रमण गौतम साढ़े बारह सौ भिक्षुओं के महाभिक्षु-संघ के साथ अंगुत्तराप में चारिका करते, आपण में आये हैं । .....पे0..... वे भिक्षु-संघ-सहित कल मेरे यहाँ निमंत्रित हुए हैं.....पे0.....।" "हे केणिय ! (क्या) 'बुद्ध' कह रहे हो ?" "हे सेल ! (हाँ) 'बुद्ध' कह रहा हूँ ।" "बुद्ध कह रहे हो ?" "बुद्ध कह रहा हूँ ।" "बुद्ध कह रहे हो ?" "बुद्ध कह रहा हूँ ।"

तब सेल ब्राह्मण को ऐसा हुआ– 'बुद्ध' ऐसा घोष (आवाज) भी लोक में दुर्लभ है । हमारे मंत्रों में महापुरुषों के बत्तीस लक्षण आए हुए हैं, जिनसे युक्त महापुरुष की दो गतियाँ होती है, अन्य नहीं । यदि वह घर में वास करता है, तो चारों छोर तक का राज्य वाला, धार्मिक धर्म-राजा चक्रवर्ती...राजा (होता) है...। वह सागर-पर्यन्त इस पृथ्वी को बिना दण्ड-शस्त्र से, धर्म से विजय कर शासन करता है, सात रत्नों से युक्त हो । उसके ये सात रत्न हैं, जैसे कि–चक्ररत्न, हस्तिरत्न, अश्वरत्न, मणिरत्न, स्त्री-रत्न, गृहपतिरत्न, सातवाँ परिणायक-रत्न । हजार से अधिक शूर वीरांग और शूर, वीरांग और परसेना को मर्दन करने वाले उसके पुत्र होते हैं । वह इस पृथ्वी पर सागर तक बिना दण्ड तथा शस्त्र के धर्म से जीत कर निवास करता है और यदि घर छोड़ बेघर हो प्रव्रजित होता है; लोक में आच्छादन-रहित अर्हत् सम्यक-सम्बुद्ध होता है– "हे केणिय ! तो फिर कहाँ वह आप गौतम अर्हत् सारे भ्रान्ति रूपी विवर्तों को छेदने वाले सम्यक् सम्बुद्ध, इस समय विहार करते हैं?"

ऐसा कहने पर केणिक जटिल ने दाहिनी बाँह उठा कर, सेल ब्राह्मण से यह कहा– "हे सेल ! जहाँ वह नील वन-राजि है ।" तब सेल तीन सौ माणवकों के साथ जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया । तब सेल ब्राह्मण ने उन माणवकों से कहा – "आप लोग नि:शब्द (अल्प-शब्द) हों, पैर के बाद पैर रखते आएं । सिंहों की भाँति वे भगवान् अकेले विचरने वाले, दुर्लभ होते हैं और जब मैं श्रमण गौतम के साथ संवाद करूँ, तो आप लोग मेरे बीच में बात न उठावें । आप लोग मेरे कथन की समाप्ति तक चुप रहें ।

तब सेल ब्राह्मण जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया, जाकर भगवान् के साथ सम्मोदन किया, सम्मोदनकर... (कुशल प्रश्न पूछ)... एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठ सेल ब्राह्मण भगवान् के शरीर में महापुरुषों के बत्तीस लक्षण खोजने लगा । सेल ब्राह्मण ने बत्तीस महापुरुष-लक्षणों में से दो को छोड़ अधिकांश भगवान् के शरीर में देख लिए । दो महापुरुष-लक्षणों–झिल्ली से ढँकी पुरुष-गुह्येन्द्रिय और अति-दीर्घ-जिह्वा–के बारे में...सन्देह था...। तब भगवान् ने इस प्रकार का योग-बल प्रकट किया, जिससे कि सेल ब्राह्मण ने भगवान् के कोष-आच्छादित वस्ति-गुह्य को देखा । फिर भगवान् ने जीभ निकाल कर उससे दोनों कानों के श्रोतों को छुआ..., दोनों नाक के श्रोतों को छुआ..., सारे ललाट-मण्डल को जीभ से ढाँक दिया । तब सेल ब्राह्मण को ऐसा विचार हुआ– श्रमण गौतम अ-परिपूर्ण नहीं, परिपूर्ण बत्तीस महापुरुष-लक्षणों से युक्त हैं । लेकिन नहीं जानता कि बुद्ध हैं या नहीं । वृद्ध=महल्लक ब्राह्मणों आचार्य-प्राचार्यों को कहते सुना है– कि जो अर्हत् सम्यक्-सम्बुद्ध होते हैं, वे अपने गुण कहे जाने पर अपने को प्रकाशित करते हैं । क्यों न मैं श्रमण गौतम के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं से स्तुति करूँ । तब सेल ब्राह्मण भगवान् के सामने गाथाओं के द्वारा स्तुति करने लगा–

So it was heard by me: At one time Bhagavān wandering about in Anguttarapa, with a large assembly of Bhikkhus, with Bhikkhus, went to Apana, a town in Anguttarapa. And Keṇiya, the ascetic, with matted hair giila heard the following: 'The Sramaṇa, the venerable Gotama, the Sakya son, gone out from the family of the Sakyas, wandering about in Añguttarapa with a large assembly of Bhikkhus, with 125O Bhikkhus, has reached Apana, and the following good praising words met the venerable Gotama: "And so he is Bhagavān, the venerable, the perfectly enlightened, endowed with science and works, the happy, knowing the world, the incomparable, the charioteer of men that are to be subdued, the master, the enlightened of gods and men, the glorious; he teaches this world and the world of gods. of Māras, of Brahmans, and beings comprising Sam anas and Brāhmaṇas, gods and men, having hims elf known and seen them face to face; he teaches the Dhamma which is good in the beginning, in the middle, and in the end, is full of meaning and rich in words, quite complete; he teaches a perfectly pure religious life, and good is the sight of such saints."Then Keṇiya, the Jatila, went to the place where Bhagavān was, and having gone there he talked pleasantly with him, and after having had some pleasant and remarkable conversation with him he sat down apart; and while ṇ, the Jatila, was sitting down apart, Bhagavān, by religious talk, taught, advised, roused, and delighted him. Then Keṇiya, the Jatila, having been taught, advised, roused, and delighted by Bhagavān through religious talk, said this to Bhagavān: 'Let the venerable Gotama accept my food tom orrow, together with the assembly of Bhikkhus.' This having been said, Bhagavān answered Keṇiya, the Jatila: 'Large, O Keṇiya, is the assembly of Bhikkhus, one thousand two hundred and fifty Bhikkhus, and thou art intimate with the Brāhmaṇas.'

A second time Keṇiya, the Jatila, said this to Bhagavān: 'Although, O venerable Gotama, the assembly of Bhikkhus is large, one thousand two hundred and fifty Bhikkhus, and I am intimate with the Brāhmaṇas, let the venerable Gotama accept my food to-morrow, together with the assembly of Bhikkhus.' A second time Bhagavān said this to Keṇiya, the Gatila: 'Large, O Keṇiya, is the assembly of Bhikkhus, one thousand two hundred and fifty Bhikkhus, and thou art intimate with the Brāhmaṇas.'

A third time Keṇiya, the Jatila, said this to Bhagavān: 'Although, O venerable Gotama, the assembly of Bhikkhus is large, one thousand two hundred and fifty Bhikkhus, and I am intimate with the Brāhmaṇas, yet let the venerable Gotama accept my food to-morrow, together with the assembly of Bhikkhus.' Bhagavān assented by being silent. Then Keṇiya, the Jatila, having learnt the assent of Bhagavān, after rising from his seat went to his hermitage, and having gone there he addressed his friends and servants, his relatives and kinsmen as follows: 'Let my venerable friends and servants, relatives and kinsmen hear me ;—the Sramaṇa Gotama has been invited by me to take his food with me to-morrow, together with the assembly of Bhikkhus; wherefore you must render me bodily service.' 'Surely, O venerable one,' so saying the friends and servants, relatives

and kinsmen of Keṇiya, the Jatila, complying with his request, some of them dug fireplaces, some chopped firewood, some washed the vessels, some placed waterpots, some prepared seats. Keṇiya, the Jatila, on the other hand, himself provided a circular pavilion.

At that time the Brāhmaṇa Sela lived at Apana, perfect in the three Vedas, vocabulary, Ketubha, etymology, Itihasa as the fifth Veda, versed in metre, a grammarian, one not deficient in popular controversy and the signs of a great man, be taught three hundred young men the hymns. At that time Keṇiya, the Jatila, was intimate with the Brāhmaṇa Sela. Then the Brāhmaṇa Sela surrounded by three hundred young men, walking on foot, arrived at the place where the hermitage of Keṇiya, the Jatila, was. And the Brāhmaṇa Sela saw the Jatila in Keṇiya's hermitage, some of them digging fireplaces, some chopping firewood, some washing the vessels, some placing waterpots, some preparing seats, and Keṇiya, the Jatila, on the other hand, himself providing a circular pavilion; seeing Keṇiya, the Jatila, he said this: 'Is the venerable Keṇiya to celebrate the marriage of a son or the marriage of a daughter, or is there a great sacrifice at hand, or has Bimbisara, the Icing of Magadha, who has a large body of troops, been invited for to-morrow, together with his army?' 'I am not to celebrate the marriage of a son or the marriage of a daughter, nor has Bimbisara, the king of Magadha, who has a large body of troops, been invited for to-morrow, together with his army, yet a great sacrifice of mine is at hand. The Sramana Gotama, the Sakya son, gone out from the Sakya family, wandering about in Añguttarapa with a large assembly of Bhikkhus, one thousand two hundred and fifty Bhikkhus, has reached Āpaṇa, and the following good praising words met the venerable Gotama: "And so he is Bhagavat, the venerable, the perfectly enlightened, endowed with science and works, the happy, knowing the world, the incomparable, the charioteer of men that are to be subdued, the master, the enlightened of gods and men, the glorious, he has been invited by me for to-morrow, together with the assembly of Bhikkhus." 'Didst thou say that he is a Buddha, O venerable Keṇiya?' 'Yes, I say, O venerable Sela, that he is a Buddha.' 'Didst thou say that he is a Buddha, O venerable Keṇiya?' 'Yes, I say, O venerable Sela, that he is a Buddha.' Then this occurred to the Brāhmaṇa Sela: 'This sound "Buddha" is indeed rare, but in our hymns are to be found the thirty-two signs of a great man, and for a great man endowed with these there are two conditions and no more: if he lives in a house he is a king, a universal king, a just religious king, a lord of the four-cornered earth, a conqueror, one who has obtained the security of his people and is possessed of the seven gems. These are his seven gems, namely, the wheel gem, the elephant gem, the horse gem, the pearl gem, the woman gem, the householder gem, and the chief gem as the seventh. He has more than a thousand sons, heroes, possessing great bodily strength and crushing foreign armies; he having conquered this ocean-girt earth without a rod and without a weapon, but by justice, lives in a house. But if, on the other hand, he goes out from his house to the houseless state, he becomes a saint, a perfectly enlightened, one who has removed the veil in the world. And where, O venerable Keṇiya, dwells now that venerable Gotama, the saint and the perfectly enlightened?' This having been said, Keṇiya, the Jatila, stretching out his right arm, spoke as follows to the Brāhmaṇa Sela: 'There, where yon blue forest line is, O venerable Sela.' Then the Brāhmaṇa Sela together with his three hundred young men went to the place where Bhagavan was. Then the Brāhmaṇa Sela addressed those young men: 'Come ye, venerable ones, with but little noise, walking step by step, for Bhagavāns are difficult of access, walking alone like lions, and when I speak to the venerable Sramaṇa Gotama, do you not utter interrupting words, but wait you venerable ones, for the end of my speech.'

Then the Brāhmaṇa Sela went to the place where Bhagavān was, and having gone there he talked pleasantly with Bhagavān, and after having had some pleasant and remarkable conversation with him he sat down apart, and while sitting down apart Sela, the Brāhmaṇa, looked for the thirty-two signs of a great man on the body of Bhagavan. And the Brāhmaṇa Sela saw the thirty-two signs of a great man on the body of Bhagavān with the exception of two; in respect to two of the signs of a great man he had doubts, he hesitated, he was not satisfied, he was not assured as to the member being enclosed in a membrane and as to his having a large tongue.

Then this occurred to Bhagavān: 'This Brāhmaṇa Sela sees in me the thirty-two signs of a great man with the exception of two, respect to two of the signs of a great man he has doubts, he hesitates, he is not satisfied, he is not assured as to the member being enclosed in a membrance, and as to puy having a large tongue.' Then Bhagavān created such a miraculous creature that the Brāhmaṇa Sela might see Bhagavān's member enclosed in a nembrane. Then Bhagavān having put out his tongue touched and stroked both his ears, touched and stroked both nostrils, and the whole circumference of his forehead he covered with his tongue.

Then this occurred to the Brāhmaṇa Sela: 'The Sramaṇa Gotama is endowed with the thirty-two signs of a great man, with them all, not with only some of them, and yet I do not know whether he is a Buddha or not; I have heard old and aged Brahmanas, teachers and their previous teachers, say that those who are saints and perfectly enlightened manifest themselves when their praise is uttered. 1 think I shall praise the Sramaṇa Gotama face to face in suitable stanzas.' Then the Brāhmaṇa Sela praised Bhagavān face to face in suitable stanzas:

"परिपुण्णकायो सुरुचि, सुजातो चारुदस्सनो।
सुवण्णवण्णोसि भगवा, सुसुक्कदाठोसि वीरियवा॥3/7/1॥

"Paripuṇṇakāyo suruci, sujāto cārudassano;
Suvaṇṇavaṇṇosi bhagavā, susukkadāṭhosi vīriyavā.॥1॥

"परिपूर्णकाय: सुरुचि:, सुजात: चारुदर्शन:।
सुवर्णवर्णोऽसि भगवन्! सुशुक्लदाढाऽसि वीर्यवान्॥1॥

परिपूर्ण-काया सुन्दर रुचि (कांति) वाले, सुजात, चारु-दर्शन, सुवर्णवर्ण हो भगवन् ! सु-शुक्ल-दाँत हो और वीर्यवान् हो॥1॥

'Thou hast a perfect body, thou art resplendent, well-born, of beautiful aspect, thou hast a golden colour, O Bhagavān, thou hast very white teeth, thou art strong.1.

"नरस्स हि सुजातस्स, ये भवन्ति वियञ्जना।
सब्बे ते तव कायस्मिं, महापुरिसलक्खणा॥3/7/2॥

"Narassa hi sujātassa, ye bhavanti viyañjanā;
Sabbe te tava kāyasmiṃ, mahāpurisalakkhaṇā.॥2॥

"नरस्य हि सुजातस्य, यानि भवन्ति व्यञ्जनानि।
सर्वाणि तानि तव काये, महापुरुषलक्षणानि॥2॥

सुजात पुरुष के जो व्यञ्जक (लक्षण) होते हैं, वे सभी महापुरुष-लक्षण तुम्हारी काया में (हैं)॥2॥

'All the signs that are for a well-born man, they are on thy body, the signs of a great man.2.

"पसन्ननेत्तो सुमुखो, ब्रहा उजु पतापवा।
मज्झे समणसङ्घस्स, आदिच्चोव विरोचसि॥3/7/3॥

"Pasannanetto sumukho, brahā uju patāpavā;
Majjhe samaṇasaṅghassa, ādiccova virocasi.॥3॥

"प्रसन्ननेत्र: सुमुख:, बृहत् ऋजु: प्रतापवान्।
मध्ये श्रमणसंघस्य, आदित्य इव विरोचसे॥3॥

प्रसन्न नेत्र, सुमुख, बड़े, सीधे, प्रताप-वान्, आप श्रमण-संघ के बीच में आदित्य की भाँति सुशोभित हो॥3॥

'Thou hast a bright eye, a handsome count enance, thou art great, straight, majestic, thou shinest like a sun in the midst of the assembly of the Sramaṇas.3.

"कल्याणदस्सनो भिक्खु, कञ्चनसन्निभत्तचो।
किं ते समणभावेन, एवं उत्तमवण्णिनो॥3/7/4॥

"Kalyāṇadassano bhikkhu, kañcanasannibhattaco;
Kiṃ te samaṇabhāvena, evaṃ uttamavaṇṇino.॥4॥

"कल्याणदर्शन ! भिक्षो ! काञ्चनसन्निभत्वच: ! ।
किं ते श्रमणभावेन, एवमुत्तमवर्णिन:॥4॥

कल्याणदर्शन भिक्षु! कंचन-समान शरीरवाले। उत्तम वर्णवाले तुम्हें श्रमण-भावभिक्षु होने में क्या लाभ है॥4॥

'Thou art a Bhikkhu of a lovely appearance, thou hast a skin like gold; what is the use of being a Sramaṇa to thee who art possessed of the highest beauty?.4.

"राजा अरहसि भवितुं, चक्कवत्ती रथेसभो।
चातुरन्तो विजितावी, जम्बुसण्डस्स इस्सरो॥3/7/5॥

"Rājā arahasi bhavituṃ, cakkavattī rathesabho;
Cāturanto vijitāvī, jambusaṇḍassa issaro.॥5॥

"राजा अर्हसि भवितुम्, चक्रवर्ती रथर्षभ:।
चतुरन्तो विजितवान्, जम्बुखण्डस्येश्वर:॥5॥

तुम चारों छोर के राज्य वाले, जम्बूद्वीप के स्वामी । रथर्षभ, चक्रवर्ती, राजा हो सकते हो॥5॥

'Thou deservest to be a king, a king of universal kings, a ruler of the four-cornered earth, a conqueror, a lord of the jambu grove.5.

"खतिया भोगिराजानो, अनुयन्ता भवन्तु ते।
राजाभिराजा मनुजिन्दो, रज्जं कारेहि गोतम"॥3/7/6॥

"Khattiyā bhogirājāno, anuyantā bhavantu te;
Rājābhirājā manujindo, rajjaṃ kārehi gotama".॥6॥

"क्षत्रिया: भोगिराजा:, अनुयन्तारो भवन्तु ते।
राजाभिराज ! मनुजेन्द्र ! राज्यं कारय *गौतम* !॥6॥

क्षत्रिय भोगि-राजा (माण्डलिकराजा) तुम्हारे अनुयायी होंगे। हे गौतम! राजाभिराज मनुजेन्द्र हो राज्य करो॥6॥

'Khattiyas and wealthy kings are devoted to thee; rule, O Gotama, as a king of kings, a leader of men.'6.

"राजाहमस्मि सेला ति, (भगवा) धम्मराजा अनुत्तरो।
धम्मेन चक्कं वत्तेमि, चक्कं अप्पटिवत्तियं"॥3/7/7॥

"Rājāhamasmi selā ti, (bhagavā) dhammarājā anuttaro;
Dhammena cakkaṃ vattemi, cakkaṃ appaṭivattiyaṃ".॥7॥

"राजाहमस्मि *सेल* ! (इति भगवान्) धर्मराज: अनुत्तर:।
धर्मेण चक्रं वर्ते, चक्रमप्रतिवर्त्यम्"॥7॥

भगवान्– "सेल ! मैं राजा हूँ; अनुपम धर्मराजा । मैं न पलटनेवाला... धर्म के साथ चला चक्र रहा हूँ॥7॥

'I am a king, O Sela,'—so said Bhagavān,— 'an incomparable, religious king, with justice I turn the wheel, a wheel that is irresistible.7.

"सम्बुद्धो पटिजानासि, (इति सेलो ब्राह्मणो) धम्मराजा अनुत्तरो।
'धम्मेन चक्कं वत्तेमि', इति भाससि गोतम॥3/7/8॥

"Sambuddho paṭijānāsi, (iti selo brāhmaṇo) dhammarājā anuttaro;
'Dhammena cakkaṃ vattemi', iti bhāsasi gotama.॥8॥

"सम्बुद्धं प्रतिजानासि, (इति *सेलो* ब्राह्मण:) धर्मराजमनुत्तरम्।
'धर्मेण चक्रं वर्ते', इति भाषसे *गौतम* !॥8॥

सेल "अनुपम धर्म-राजा सम्बुद्ध अपने को कहते हो? हे गौतम! धर्म चक्र चला रहा हूँ' कह रहे हो॥8॥

'Thou acknowledgest thyself perfectly enlightened sambuddha,'—so said Sela, the Brahm ana,—' an incomparable, religious king; "with justice I turn the wheel," so thou sayest, O Gotama.8.

"को नु सेनापति भोतो, सावको सत्थुरन्वयो।
को ते तमनुवत्तेति, धम्मचक्कं पवत्तितं"॥3/7/9॥

"Ko nu senāpati bhoto, sāvako satthuranvayo;
Ko te tamanuvatteti, dhammacakkaṃ pavattitaṃ".॥9॥

"को नु सेनापति: भवत:, श्रावक: शास्तुरन्वय:।
कस्ते तमनुवर्तते, धर्मचक्रं प्रवर्तितम्"॥9॥

कौन सा आप शास्ता का दन्तप (नाग) श्रावक सेनापति है ? कौन इस चलाये धर्म-चक्र का अनु-चालन कर रहा है?॥9॥

'Who is thy general, who is thy disciple, who is the successor of the master, who is to turn after thee the wheel of religion turned by thee?'

"मया पवत्तितं चक्कं, (सेला ति भगवा) धम्मचक्कं अनुत्तरं।
सारिपुत्तो अनुवत्तेति, अनुजातो तथागतं॥3/7/10॥

"Mayā pavattitaṃ cakkaṃ, (selā ti bhagavā) dhammacakkaṃ anuttaraṃ;
Sāriputto anuvatteti, anujāto tathāgataṃ.॥10॥

"मया प्रवर्तितं चक्रम्, (*सेल* इति भगवान्) धर्मचक्रमनुत्तरम्।
सारिपुत्त अनुवर्तते, अनुजात: तथागतम्॥10॥

भगवान्–"सेल! मेरे द्वारा संचालित चक्र, अनुपम धर्म-चक्र को तथागत का अनुजात (पीछे उत्पन्न) सारिपुत्त अनुचालित कर रहा है॥10॥

'The wheel turned by me, O Sela,'—so said Bhagavān,—' the incomparable wheel of religion, Sariputta is to turn after me, he taking after Tathagata.10.

"अभिञ्ञेय्यं अभिञ्ञातं, भावेतब्बं च भावितं।
पहातब्बं पहीनं मे, तस्मा बुद्धोस्मि ब्राह्मण॥3/7/11॥

"Abhiññeyyaṃ abhiññātaṃ, bhāvetabbaṃ ca bhāvitaṃ;
Pahātabbaṃ pahīnaṃ me, tasmā buddhosmi brāhmaṇa.॥11॥

"अभिज्ञेयम् अभिज्ञातम्, भावयितव्यञ्च भावितम्।

प्रहातव्यं प्रहीणं मे, तस्मात् बुद्धोऽस्मि ब्राह्मण !॥11॥

ज्ञातव्य को जाना, भावनीय की भावना कर ली। परित्याज्य को छोड़ दिया, अत: हे ब्राह्मण! मैं बुद्ध हूँ।11।

'What is to be known is known by me, what is to be cultivated is cultivated by me, what is to be left is left by me, therefore I am a Buddha, O Brāhmaṇa.11.

"विनयस्सु मयि कङ्खं, अधिमुच्चस्सु ब्राह्मण।

दुल्लभं दस्सनं होति, सम्बुद्धानं अभिण्हसो॥3/7/12॥

"Vinayassu mayi kaṅkhaṃ, adhimuccassu brāhmaṇa;

Dullabhaṃ dassanaṃ hoti, sambuddhānaṃ abhiṇhaso.॥12॥

"विनयस्व मयि कांक्षाम्, अधिमुञ्चस्व ब्राह्मण! ।

दुर्लभं दर्शनं भवति, सम्बुद्धानाम् अभीक्ष्णश:॥12॥

ब्राह्मण ! मेरे विषय में संशय को हटाओ, छोड़ो । बार-बार सम्बुद्धों का दर्शन दुर्लभ है॥12॥

'Subdue thy doubt about me, have faith in me, O Brahmana, difficult is the sight of Buddhas repeatedly.12.

"येसं वे दुल्लभो लोके, पातुभावो अभिण्हसो।

सोहं ब्राह्मण सम्बुद्धो, सल्लकत्तो अनुत्तरो॥3/7/13॥

"Yesaṃ ve dullabho loke, pātubhāvo abhiṇhaso;

Sohaṃ brāhmaṇa sambuddho, sallakatto anuttaro.॥13॥

"येषां वै दुर्लभो लोके, प्रादुर्भावोऽभीक्ष्णश: ।

सोऽहं ब्राह्मणसम्बुद्ध:, शल्यकार्तितोऽनुत्तर:॥13॥

लोक में जिसका बार बार प्रादुर्भाव दुर्लभ है, वह मैं राग आदि शल्य का छेदने वाला अनुपम सम्बुद्ध हूँ॥13॥

'Of those whose manifestation is difficult for you in the world repeatedly, I am, O Brāhmaṇa, a perfectly enlightened, an incomparable physician,.13.

"ब्रह्मभूतो अतितुलो, मारसेनप्पमद्दनो।

सब्बामित्ते वसीकत्वा, मोदामि अकुतोभयो"॥3/7/14॥

"Brahmabhūto atitulo, mārasenappamaddano;

Sabbāmitte vasīkatvā, modāmi akutobhayo".॥14॥

"ब्रह्मभूतोऽतितुल:, मारसेनाप्रमर्दन:।

सर्वामित्राणि वशीकृत्य, मोदेऽकुतोभय:"॥14॥

ब्रह्मभूत तुलनारहित, मार की सेना का प्रमर्दक, सभी शत्रुओं को वश में करके निर्भय होकर प्रमुदित हूँ॥14॥

'Most eminent, matchless, a crusher of Māra's army; having subjected all enemies I rejoice secure on every side.'14.

"इमं भवन्तो निसामेथ, यथा भासति चक्खुमा।

सल्लकत्तो महावीरो, सीहोव नदती वने॥3/7/15॥

"Imaṃ bhavanto nisāmetha, yathā bhāsati cakkhumā;

Sallakatto mahāvīro, sīhova nadatī vane. ॥15॥

"इमं भवान् निशाम्येत्, यथा भाषते चक्षुष्मान्।
शल्यकर्तित: महावीर:, सिंह इव नदति वने॥15॥

आप सुनें, जैसाकि चक्षुष्मान् कर रहे हैं शल्यकर्ता, महावीर जैसे कि वन में सिंह गर्जना कर रहा हो॥15॥

Sela: 'O venerable ones, pay attention to this: as the clearly-seeing Buddha says, so it is: he is a physician, a great hero (Mahāveer), and roars like a lion in the forest.15.

"ब्रह्मभूतं अतितुलं, मारसेनप्पमद्दनं।
को दिस्वा नप्पसीदेय्य, अपि कण्हाभिजातिको॥3/7/16॥

"Brahmabhūtaṃ atitulaṃ, mārasenappamaddanaṃ;
Ko disvā nappasīdeyya, api kaṇhābhijātiko.॥16॥

"ब्रह्मभूतमतितुलम्, मारसेनाप्रमर्दनम्।
को दृष्ट्वा न प्रसीदेत्, अपि कृष्णाभिजातिक:*॥16॥

ब्रह्मभूत, तुलना-रहित, मार की सेना को मर्दन करने वाले को देखकर कौन नहीं प्रसन्न होगा, चाहे वह कृष्ण अभिजातिक क्यों न हो ?॥16॥

'Who, having seen him, the most eminent, the matchless, the crusher of Mara's army, is not appeased, even if he be of black origin. 16.

*दुर्गुणो से भरा ।

"यो मं इच्छति अन्वेतु, यो वा निच्छति गच्छतु।
इधाहं पब्बजिस्सामि, वरपञ्ञस्स सन्तिके"॥3/7/17॥

"Yo maṃ icchati anvetu, yo vā nicchati gacchatu;
Idhāhaṃ pabbajissāmi, varapaññassa santike".॥17॥

"यो मामिच्छति अन्वेतु, यो वा नेच्छति गच्छतु।
इहाहं प्रव्रजिष्यामि, वरप्रज्ञस्य सान्तिकम्"॥17॥

सेल– "जो मुझे चाहता है, वह मेरे पीछे आवे, जो नहीं चाहता है, वह जावे । मैं यहाँ उत्तम-प्रज्ञावाले बुद्ध के पास प्रव्रजित होऊँगा॥17॥

'He who likes me, let him follow after me, he who does not like me, let him go away; I shall at once take the orders in the presence of him of excellent understanding.' .17.

"एवं चे रुच्चति भोतो, सम्मासम्बुद्धसासने ।
मयं पि पब्बजिस्साम, वरपञ्ञस्स सन्तिके"॥3/7/18॥

"Evaṃ ce ruccati bhoto, sammāsambuddhasāsane;
Mayaṃ pi pabbajissāma, varapaññassa santike".॥18॥

"एवं चेद् रुच्यते भवत:, सम्यक् सम्बुद्धशासनम् ।
वयमपि प्रव्रजिष्याम:, वरप्रज्ञस्य सान्तिकम्"॥18॥

सेल– यदि आपको सम्यक्-सम्बुद्ध का शासन धर्म रुचता है। तो हम भी वर-प्रज्ञ के पास प्रव्रजित होंगे॥18॥

The followers of Sela: 'If this doctrine of the perfectly enlightened pleases thee, we also shall take the orders in the presence of him of excellent understanding.'18.

"ब्राह्मणा तिसता इमे, याचन्ति पञ्जलीकता।

ब्रह्मचरियं चरिस्साम, भगवा तव सन्तिके"॥3/7/19॥

"Brāhmaṇā tisatā ime, yācanti pañjalīkatā;

Brahmacariyaṃ carissāma, bhagavā tava santike".॥19॥

"ब्राह्मणा: त्रिंशत् इमे, याचन्ते प्राञ्जलीकृता:।

ब्रह्मचर्यं चरिष्याम:, भगवन् ! तव सान्तिकम्"॥19॥

ये तीन सौ ब्राह्मण हाथ-जोड़े याचना करते हैं। भगवन्! हम लोग तुम्हारे पास ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे॥19॥

these three hundred Brāhmaṇas ask with clasped hands to be admitted into the order: 'we want to cultivate a religious life, O Bhagavān, in thy presence.'.19.

"स्वाक्खातं* ब्रह्मचरियं, (सेला ति भगवा) सन्दिट्ठिकम*कालिकं*।

यत्थ अमोघा पब्बज्जा, अप्पमत्तस्स सिक्खतो"'ति॥3/7/20॥

"Svākkhātaṃ brahmacariyaṃ, (selā ti bhagavā) sandiṭṭhikamakālikaṃ;

Yattha amoghā pabbajjā, appamattassa sikkhato"ti.॥20॥

"स्वाख्यातं ब्रह्मचर्यम्, (*सेल* इति भगवान्) सांदृष्टिकमकालिकम्।

यत्र अमोघा प्रव्रज्या, अप्रमत्ताय शिक्षिताय" इति॥20॥

भगवान्– "सेल ! यह सांदृष्टिक अकालिक स्वाख्यात ब्रह्मचर्य है । जहाँ प्रमाद-शून्य सीखने वालों के लिए प्रव्रज्या अ-मोघ है॥20॥"

'A religious life is well taught by me,— O Sela,' so said Bhagavān,—' an instantaneous, an immediate life, in which it is not in vain to become an ascetic to one who learns in earnest.20.

* सुन्दर प्रकार से व्याख्यान किया हुआ। * प्रत्यक्ष फल-प्रद। * न कालान्तर में फलप्रद ।

अलत्थ खो सेलो ब्राह्मणो सपरिसो भगवतो सन्तिके पब्बज्जं, अलत्थ उपसम्पदं। अथ खो केणियो जटिलो तस्सा रत्तिया अच्चयेन सके अस्समे पणीतं खादनीयं भोजनीयं पटियादापेत्वा भगवतो कालं आरोचापेसि– ''कालो, भो गोतम, निट्ठितं भत्तं''ति । अथ खो भगवा पुब्बण्हसमयं निवासेत्वा पत्तचीवरमादाय येन केणियस्स जटिलस्स अस्समो तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि सद्धिं भिक्खुसङ्घेन। अथ खो केणियो जटिलो बुद्धप्पमुखं भिक्खुसङ्घं पणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन सहत्था सन्तप्पेसि सम्पवारेसि। अथ खो केणियो जटिलो भगवन्तं भुत्तावि ओनीतपत्तपाणिं अञ्ञतरं नीचं आसनं गहेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नं खो केणियं जटिलं भगवा इमाहि गाथाहि अनुमोदि–

Alattha kho selo brāhmaṇo sapariso bhagavato santike pabbajjaṃ, alattha upasampadaṃ. Atha kho keṇiyo jaṭilo tassā rattiyā accayena sake assame paṇītaṃ khādanīyaṃ bhojanīyaṃ paṭiyādāpetvā bhagavato kālaṃ ārocāpesi – "kālo, bho gotama, niṭṭhitaṃ bhattaṃ"ti. Atha kho bhagavā pubbaṇhasamayaṃ nivāsetvā pattacīvaramādāya yena keṇiyassa jaṭilassa assamo tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā paññatte āsane nisīdi saddhiṃ bhikkhusaṅghena. Atha kho keṇiyo jaṭilo buddhappamukhaṃ bhikkhusaṅghaṃ paṇītena khādanīyena bhojanīyena sahatthā santappesi sampavāresi. Atha kho keṇiyo jaṭilo bhagavantaṃ bhuttāviṃ onītapattapāṇiṃ aññataraṃ nīcaṃ

āsanaṃ gahetvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinnaṃ kho keṇiyaṃ jaṭilaṃ bhagavā imāhi gāthāhi anumodi–

अलभत् खलु *सेलो* ब्राह्मण: सपरिषद: भगवत: सान्तिकं प्रव्रज्याम्, अलभत् उपसम्पदाम्। अथ खलु केणियो *जटिल:* तस्या: रात्र्या अत्ययेन स्वके आश्रमे प्रणीतं खादनीयं भोजनीयं प्रत्यादाप्य भगवन्तं कालम् आरोचयीत् – ''काल:, भो गौतम! निष्ठित: भक्तस्य" इति। अथ खलु भगवान् पूर्वाह्नसमये निवस्य पात्रचीवरमादाय यत्र *केणियस्य जटिलस्य* आश्रम: तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य प्रज्ञप्ते आसने निससाद सार्धं भिक्षुसंघेन। अथ खलु *केणियो जटिलो* बुद्धप्रमुखं भिक्षुसंघं प्रणीतेन खादनीयेन भोजनीयेन स्वहस्तेन समतर्पयत् समप्रवारिष्ट । अथ खलु *केणियो जटिलो* भगवति भुङ्क्ते अपनीतपात्रपाणौ अन्यतरं निम्नम् आसनं गृहीत्वा एकान्तं निससाद। एकान्तं निषण्णं खलु *केणियं जटिलं* भगवान् आभि: गाथाभि अन्वमोदिष्ट–

सेल ब्राह्मण ने परिषद्-सहित भगवान् के पास प्रव्रज्या और उपसम्पदा पाई । तब केणिय जटिल ने उस रात के बीतने पर, अपने आश्रम में उत्तम खाद्य-भोज्य तैयार करा, भगवान् को काल की सूचना दिलवाई...। तब भगवान् पूर्वाह्न समय पहन कर पात्र-चीवर ले, जहाँ केणिय जटिल का आश्रम था, वहाँ गये। जाकर बिछे आसन पर भिक्षु-संघ के साथ बैठे। तब केणिय जटिल ने बुद्ध-प्रमुख भिक्षु-संघ को अपने हाथ से, संतर्पित किया, पूर्ण किया। केणिय जटिल भगवान् को भोजन कराकर, पात्र हटा लेने पर एक नीचा आसन ले, एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठे हुये केणिय जटिल को भगवान् ने इन गाथाओं से अनुमोदन किया –

Then the Brāhmaṇa Sela together with his assembly took the robe and the orders in the presence of Bhagavān. Then Keṇiya, the Jatila, by the expiration of that night, having provided in his hermitage nice hard food and soft food, let Bhagavān know the time of the meal: 'It is time, O venerable Gotama, the meal is prepared.' Then Bhagavān in the morning, having put on his raiment and taken his bowl and robes, went to the Jatila Keṇiya's hermitage, and having gone there he sat down on the prepared seat, together with the assembly of Bhikkhus. Then Keṇiya, the Jatila, satisfied and served with his own hands the assembly of Bhikkhus, with Buddha at their head, with nice hard food and soft food. Then Keṇiya, the Jatila, having goneup to Bhagavān who had finished eating and had taken his hand out of the bowl, took a low seat and sat down apart, and while Keṇiya, the Jatila, was sitting down apart, Bhagavān delighted him with these stanzas:

"अग्गिहुत्तमुखा यञ्ञा, सावित्ती छन्दसो मुखं।
राजा मुखं मनुस्सानं, नदीनं सागरो मुखं॥3/7/21॥

"Aggihuttamukhā yaññā, sāvittī chandaso mukhaṃ;
Rājā mukhaṃ manussānaṃ, nadīnaṃ sāgaro mukhaṃ.॥21॥

"अग्निहोत्रमुखा: यज्ञा:, सावित्री छन्दसां मुखम्।
राजा मुखं मनुष्याणाम्, नदीनां सागरो मुखम्॥21॥

यज्ञों में श्रेष्ठ अग्निहोत्र है, छन्दों का मुख सावित्री, मनुष्यों में मुख राजा है, नदियों में मुख सागर है॥21॥

'The principal thing in sacrifice is the sacred fire, the principal thing amongst the hymns is the Sāvitti', the king is the principal among men, and the sea the principal among rivers'.21.

"नक्खत्तानं मुखं चन्दो, आदिच्चो तपतं मुखं।
पुञ्ञं आकङ्खमानानं, सङ्घो वे यजतं मुखं''ति॥3/7/22॥

"Nakkhattānaṃ mukhaṃ cando, ādicco tapataṃ mukhaṃ;
Puññaṃ ākaṅkhamānānaṃ, saṅgho ve yajataṃ mukhaṃ"ti.॥22॥

"नक्षत्राणां मुखं चन्द्रः, आदित्यः तपतां मुखम्।
पुण्यम् आकांक्षमाणानाम्, संघो वै यजतां मुखम्" इति॥22॥

नक्षत्रों में मुख (श्रेष्ठ) चन्द्रमा है, तपने वालों में मुख आदित्य है । इच्छितों में मुख पुण्य है, यजन=पूजनीयों में मुख संघ है॥22॥

'Among the stars, moon is the principal thing, sun is the principal thing among the burning objects, among those that wish for good works and make offerings the samgha indeed is the principal.'22.

अथ खो भगवा केणियं जटिलं इमाहि गाथाहि अनुमोदित्वा उट्ठायासना पक्कामि। अथ खो आयस्मा सेलो सपरिसो एको वूपकट्ठो अप्पमत्तो आतापी पहितत्तो विहरन्तो नचिरस्सेव यस्सत्थाय कुलपुत्ता सम्मदेव अगारस्मा अनगारियं पब्बजन्ति तदनुत्तरं ब्रह्मचरियपरियोसानं दिट्ठे व धम्मे सयं अभिञ्ञा सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहासि– 'खीणा जाति, वुसितं ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरं इत्थत्ताया'ति अब्भञ्ञासि। अञ्ञतरो खो पनापस्मा सेलो सपरिसो अरहतं अहोसि। अथ खो आयस्मा सेलो सपरिसो येन भगवा तेनुपसङ्कमि, उपसङ्कमित्वा एकंसं चीवरं कत्वा येन भगवा तेनञ्जलिं पणामेत्वा भगवन्तं गाथाय अज्झभासि –

Atha kho bhagavā keṇiyaṃ jaṭilaṃ imāhi gāthāhi anumoditvā uṭṭhāyāsanā pakkāmi. Atha kho āyasmā selo sapariso eko vūpakaṭṭho appamatto ātāpī pahitatto viharanto nacirassera yassatyāya kulputta sammadeva agārasmā angāriyaṃ pabbajanti taduttaraṃ brahemmeariyapariyosāṃ ditthe va dhamme sayaṃ abiññña sacchikatvā upsampajja vihāsi 'Khīṇa jāti, vusita brahma cariyaṃ, kataṃ karṇiyaṃ, nāparaṃ itthttāyāti abbhaññasi. aññataro kho panāpasmā selo sapariso arahataṃ ahosi. Atha kho āyasmā selo sapariso yena bhagavā tenupasaṅkami, upasaṅkamitvā ekaṃsaṃ cīvaraṃ katvā yena bhagavā tenañjaliṃ paṇāmetvā bhagavantaṃ gāthāya ajjhabhāsi –

अथ खलु भगवान् *केणियं जटिलं* आभिः गाथाभिः अनुमोद्य उत्थाय आसनात् प्राक्रमीत्। अथ खलु आयुष्मान् *सेलः* सपरिषद एकः व्युपकृष्टः अप्रमत्त आतापी प्रहितः विहरन् न चिरस्यैव यस्यार्थाय कुलपुत्रा आगारात् अनागारिकं प्रव्रजन्ति तदनुत्तरं ब्रह्मचर्यपर्यवसानं दृष्टे एव धर्मे स्वयं अभिज्ञाय साक्षात्कृत्य उपसम्पद्य व्यहार्षीत् 'क्षीणा जातिः, उषितं ब्रह्मचर्यम्, कृतं करणीयम्, नापरम् अत्रत्याय" इति अभ्यज्ञासीत् । अन्यतरः खलु पुन आयुष्मान् *सेलः* सपरिषदः अर्हत् अभूत्। अथ खलु आयुष्मान् *सेलः* सपरिषदः यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्, उपसंक्रम्य एकांशं चीवरं कृत्वा यत्र भगवान् तत्राञ्जलिं प्रणम्य भगवन्तं गाथया अध्यभाषिष्ट–

भगवान् केणिय जटिल को इन गाथाओं से अनुमोदित कर आसन से उठकर चल दिये। तब आयुष्मान् सेल परिषद्-सहित एकान्त में प्रमाद-रहित, उद्योग-युक्त, आत्म-निग्रही हो विहरते शीघ्र ही, जिसके लिये कुल-पुत्र घर से बेघर हो प्रव्रजित होते हैं, उस अनुपम ब्रह्मचर्य के अन्त (निर्वाण) को, इसी जन्म में स्वयं जानकर, साक्षात् कर, प्राप्त कर, विहरने लगे । 'जन्म क्षीण हो गय, ब्रह्मचर्यवास पूरा हो गया, करणीय कर लिया गया, और यहाँ कुछ करना शेष नहीं'– यह जान गये । परिषद्-सहित आयुष्मान् सेल अर्हत् हुये । तब आयुष्मान् सेल ने शास्ता बुद्ध के पास जाकर, चीवर को एक कंधे पर रखकर जिधर भगवान् थे, उधर अञ्जलि जोड़कर, भगवान् से गाथा के द्वारा कहा–

Then Bhagavān, having delighted Keṇiya, the Jatila, with these stanzas, rose from his seat and went away. Then the venerable Sela together with his assembly leading a solitary, retired, strenuous, ardent, energetic life, lived after having in a short time in this existence by his own understanding ascertained and possessed himself of that highest perfection of a religious life for the sake of which men of good family rightly wander away from their houses to a houseless state; 'birth has been destroyed, a religious life had been led, what was to be done, there was nothing else to be done for this existence,' so he perceived, and the venerable Sela together with his assembly became one of the saints. Then the venerable Sela together with his assembly went to Bhagavān, and having gone to him he put his upper robe on one shoulder, and bending his joined hands towards Bhagavān he addressed him in stanzas:

"यं तं सरणमागम्ह, इतो अट्ठमि चक्खुम।

सत्तरत्तेन भगवा, दन्तम्ह तव सासने॥3/7/23॥

"Yaṃ taṃ saraṇamāgamha, ito aṭṭhami cakkhuma;

Sattarattena bhagavā, dantamha tava sāsane.॥23॥

"यत् तव शरणमागमम्, इत: अष्टमे चक्षुष्मन्! ।

सप्तरात्रिभि: भगवन् ! दान्तोऽहं तव शासने॥23॥

हे चक्षुष्मन् ! जो मैं आज से आठ दिन पूर्व तुम्हारी शरण आया । हे भगवन् ! तुम्हारे शासन में सात ही रात में मैं दान्त हो गया॥23॥

'Because we took refuge in thee on the eighth day previous to this, O thou clearly-seeing, in seven nights, O Bhagavān, we have been trained in thy doctrine.23.

"तुवं बुद्धो तुवं सत्था, तुवं माराभिभू मुनि।

तुवं अनुसये छेत्वा, तिण्णो तारेसि मं पजं॥3/7/24॥

"Tuvaṃ buddho tuvaṃ satthā, tuvaṃ mārābhibhū muni;

Tuvaṃ anusaye chetvā, tiṇṇo tāresimaṃ pajaṃ.॥24॥

"त्वमेव बुद्ध: त्वमेव शास्ता, त्वमेव माराभिभू: मुनि:।

त्वमेव अनुशयान् छित्वा, तीर्ण: तारयसि इमां प्रजाम्॥24॥

तुम्हीं बुद्ध हो, तुम्हीं शास्ता हो, तुम्हीं मार-विजयी मुनि हो । तुम राग आदि अनुशयों को छिन्न कर, स्वयं उत्तीर्ण हो, इस प्रजा को तारते हो॥24॥

'Thou art Buddha, thou art the shasta, thou art the Muni that conquered Mara, thou hast, after cutting off the affections, crossed over the stream of existence and taken over these beings.24.

"उपधी ते समतिक्कन्ता, आसवा ते पदालिता।

सीहोसि अनुपादानो*, पहीनभयभेरवो॥3/7/25॥

"Upadhī te samatikkantā, āsavā te padālitā;

Sīhosi anupādāno, pahīnabhayabheravo.॥25॥

"उपधय: त्वया समतिक्रान्ता:, आस्रवा: ते प्रदालिता:।

सिंहोऽसि अनुपादान:, प्रहीणभयभैरव:॥25॥

उपाधि तुम्हारी हट गई, आस्रव तुम्हारे विदारित हो गये । सिंह-समान, भव सागर की भीषणता से रहित, तुम उपादान-रहित हो॥25॥

'The elements of existence upadhi have been overcome by thee, the passions have been destroyed by thee, thou art a lion not seizing on anything, thou hast left behind fear and danger.25.

* उपादान रहित-परिग्रहरहित ।

"भिक्खवो तिसता इमे, तिट्ठन्ति पञ्जलीकता।

पादे वीर पसारेहि, नागा वन्दन्तु सत्थुनो''ति॥3/7/26॥

"Bhikkhavo tisatā ime, tiṭṭhanti pañjalīkatā;

Pāde vīra pasārehi, nāgā vandantu satthuno"ti.॥26॥

"भिक्षव: त्रिशता इमे, तिष्ठन्ति प्राञ्जलीकृता:।

पादौ *वीर* ! प्रसारय, नागा: वन्दन्तु शास्तारम्" इति॥26॥

ये तीन सौ भिक्षु हाथ जोड़े खड़े हैं। वीर! पाद प्रसारित करो, ये नाग पाप-रहित शास्ता की वन्दना करें॥26॥

'These three hundred Bhikkhus stand here with clasped hands; stretch out thy feet, O hero, let the Nagas worship the shasta's feet.' 26.

सेलसुत्तं निट्ठितं

(Selasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 8) सल्लसुत्तं (Sallasuttaṃ)

अनिमित्तमनञ्ञातं , मच्चानं इध जीवितं।

कसिरं च परित्तं च, तं च दुक्खेन संयुतं॥3/8/1॥

Animittamanaññātaṃ , maccānaṃ idha jīvitaṃ;

Kasiraṃ ca parittaṃ ca, taṃ ca dukkhena saṃyutaṃ.॥1॥

अनिमित्तमनाज्ञातम् , मर्त्यानामिह जीवितम्।

कृच्छ्रञ्च प्ररिक्तञ्च, तच्च दु:खेन संयुतम्॥1॥

यहाँ मनुष्यों का जीवन अनिमित्त और अज्ञात है, कठिन और अल्प है और वह भी दु:ख से युक्त है॥1॥

Without a cause and unknown is the life of mortals in this world, troubled and brief and combined with pain.1.

न हि सो उपक्कमो अत्थि, येन जाता न मिय्यरे।

जरं पि पत्वा मरणं, एवंधम्मा हि पाणिनो॥3/8/2॥

Na hi so upakkamo atthi, yena jātā na miyyare;

Jaraṃ pi patvā maraṇaṃ, evaṃdhammā hi pāṇino.॥2॥

नहि स उपक्रमोऽस्ति, येन जाता: न म्रियन्ते।

जरामपि प्राप्य मरणम्, एवंधर्मा: हि प्राणिन:॥2॥

ऐसा कोई उपक्रम नहीं है जिससे कि जन्मे हुये लोग न मरें । बुढ़ापा प्राप्त करके भी मरना होता है । प्राणियों का ऐसा ही स्वभाव है॥2॥

For there is not any means by which those that have been born can avoid dying; after reaching old age there is death, of such a nature are living beings.2.

फलानमिव पक्कानं, पातो पतनतो भयं।

एवं जातान मच्चानं, निच्चं मरणतो भयं॥3/8/3॥

Phalānamiva pakkānaṃ, pāto patanato bhayaṃ;
Evaṃ jātāna maccānaṃ, niccaṃ maraṇato bhayaṃ.॥3॥

फलानामिव पक्वानाम्, प्रात: पतनात् भयम्।

एवं जातानां मर्त्यानाम्, नित्यं मरणात् भयम्॥3॥

जैसे पके हुए फलों को प्रति प्रात:काल गिरने का भय होता है, वैसे ही जन्म लिए हुए प्राणियों को नित्य मृत्यु से भय लगा रहता है॥3॥

As ripe fruits are early in danger of falling, so mortals when born are always in danger of death.3.

यथापि कुम्भकारस्स, कता मत्तिकभाजना।

सब्बे भेदनपरियन्ता, एवं मच्चान जीवितं॥3/8/4॥

Yathāpi kumbhakārassa, katā mattikabhājanā;
Sabbe bhedanapariyantā, evaṃ maccāna jīvitaṃ.॥4॥

यथापि कुम्भकारेण, कृतानि मृत्तिकाभाजनानि।

सर्वाणि भेदनपर्यन्तानि, एवं मर्त्यानां जीवितम्॥4॥

जैसे कुम्हार द्वारा बनाये मिट्टी के बर्तन भी टूट जाने वाले हैं, ऐसा ही प्राणियों का जीवन है॥4॥

As all earthen vessels made by the potter end in being broken, so is the life of mortals.4.

दहरा च महन्ता च, ये बाला ये च पण्डिता।

सब्बे मच्चुवसं यन्ति, सब्बे मच्चुपरायणा॥3/8/5॥

Daharā ca mahantā ca, ye bālā ye ca paṇḍitā;
Sabbe maccuvasaṃ yanti, sabbe maccuparāyaṇā.॥5॥

दहरा: च महन्तश्च, ये बाला: ये च पण्डिता:।

सर्वे मृत्युवशं यान्ति, सर्वे मृत्युपरायणा:॥5॥

तरुण, बड़े बच्चे और बुद्धिमान् सभी मृत्यु के वश में चले जाते हैं। सभी मृत्यु को प्राप्त होने वाले हैं॥5॥

Both young and grown-up men, both those who are fools and those who are wise men, all fall into the power of death, all are subject to death.5.

तेसं मच्चुपरेतानं, गच्छतं परलोकतो।

न पिता तायते पुत्तं, ञाती वा पन ञातके॥3/8/6॥

Tesaṃ maccuparetānaṃ, gacchataṃ paralokato;
Na pitā tāyate puttaṃ, ñātī vā pana ñātake.॥6॥

तेषां मृत्युपरेतानाम्, गच्छन्तां परलोकम्।

न पिता त्रायते पुत्रम्, ज्ञाती: वा पुन: ज्ञातकान्॥6॥

उन मृत्यु के अधीन रहने वालों के परलोक जाते समय न तो पिता पुत्र की रक्षा करता है और न भाई-बन्धु भाई-बन्धुओं की॥6॥

Of those who, overcome by death, go to the other world, a father does not save his son, nor relatives their relations.6.

पेक्खतं येव ञातीनं, पस्स लालपतं पुथु।
एकमेको व मच्चानं, गोवज्झो विय नीयति॥3/8/7॥

Pekkhataṃ yeva ñātīnaṃ, passa lālapataṃ puthu;
Ekameko va maccānaṃ, govajjho viya nīyati.॥7॥

प्रेक्षतामेव ज्ञातीनाम्, पश्य लालपतां पृथु।
एकमेक इव मर्त्यानाम्, गोवध्य इव नीयते॥7॥

भाई-बन्धुओं के देखते हुए ही, नाना प्रकार के विलाप को देखते हुए भी मृत्यु-अकेले ही प्राणियों को, वध की जाने वाली गौ की भाँति ले जाती है॥7॥

While relatives are looking on and lamenting greatly, one by one of the mortals is carried off, like an ox that is going to be killed.7.

एवमब्भाहतो लोको, मच्चुना च जराय च।
तस्मा धीरा न सोचन्ति, विदित्वा लोकपरियायं॥3/8/8॥

Evamabbhāhato loko, maccunā ca jarāya ca;
Tasmā dhīrā na socanti, viditvā lokapariyāyaṃ.॥8॥

एवमभ्याहतो लोकः, मृत्युना च जरया च।
तस्मात् धीराः न शोचन्ति, विदित्वा लोकपर्यायम्॥8॥

इस प्रकार लोक मृत्यु और बुढ़ापे से पीड़ित हैं इसलिए धीर पुरुष संसार के स्वभाव को जानकर शोक नहीं करते हैं॥8॥

So the world is afflicted with death and decay, therefore the wise do not grieve, knowing the terms of the world.8.

यस्स मग्गं न जानासि, आगतस्स गतस्स वा।
उभो अन्ते असम्पस्सं, निरत्थं परिदेवसि॥3/8/9॥

Yassa maggaṃ na jānāsi, āgatassa gatassa vā;
Ubho ante asampassaṃ, niratthaṃ paridevasi.॥9॥

यस्य मार्गं न जानासि, आगमनस्य गमनस्य वा।
उभे अन्ते असम्पश्यन्, निरर्थकं परिदेवयसि॥9॥

जिसके आने और जाने के मार्ग को नहीं जानते हो, दोनों अन्तों को न देखते हुए व्यर्थ विलाप कर रहे हो॥9॥

For him, whose way thou dost not know, either when he is coming or when he is going, not seeing both ends, thou grievest in vain.9.

परिदेवयमानो चे, किञ्चिदत्थं उदब्बहे।
सम्मूळ्हो हिंसमत्तानं, कयिरा चे नं विचक्खणो॥3/8/10॥

Paridevayamāno ce, kiñcidatthaṃ udabbahe;
Sammūḷho hiṃsamattānaṃ, kayirā ce naṃ vicakkhaṇo.॥10॥

परिदेवयमानश्चेत्, किञ्चिदर्थम् उद्वहेत्।

सम्मूढः हिंसनात्मानम्, कुर्यात् चेत् एनं विचक्षणः॥10॥

यदि विलाप करते हुए कुछ भी अपना भला कर सके तो बुद्धिमान् व्यक्ति ही अपने को पीडित करता हुआ वैसा करे॥10॥

If he who grieves gains anything, although he is only a fool hurting himself, let the wise man do the same.10.

न हि रुण्णेन सोकेन, सन्तिं पप्पोति चेतसो।

भिय्यस्सुप्पज्जते दुक्खं, सरीरं चुपहञ्ञति॥3/8/11॥

Na hi ruṇṇena sokena, santiṃ pappoti cetaso;

Bhiyyassuppajjate dukkhaṃ, sarīraṃ cupahaññati.॥11॥

न हि रुदनेन शोकेन, शान्तिं प्राप्नोति चेतसः।

भूयोऽस्य उत्पद्यते दुःखम्, शरीरं चोपहन्यते॥11॥

किन्तु रोने और शोक करने से चित्त को शान्ति नहीं प्राप्त होती, प्रत्युत् अधिक दुःख ही उत्पन्न होता है और शरीर पीडित होता है॥11॥

Not from weeping nor from grieving will any one obtain peace of mind; on the contrary, the greater his pain will be and his body will suffer.11.

किसो विवण्णो भवति, हिंसमत्तानमत्तना।

न तेन पेता पालेन्ति, निरत्था परिदेवना॥3/8/12॥

Kiso vivaṇṇo bhavati, hiṃsamattānamattanā;

Na tena petā pālenti, niratthā paridevanā.॥12॥

कृशो विवर्णो भवति, हिंसनात्मानमात्मना ।

न तेन प्रेताः पालयन्ते, निरर्था परिदेवना॥12॥

अपने आपको पीडित करते हुए व्यक्ति कृश और कुरूप हो जाता है । उससे प्रेत्यों का पालन नहीं होता। विलाप करना निरर्थक है॥12॥

He will be lean and pale, hurting himself by himself, and yet the dead are not kept alive, lamentation therefore is of no avail.12.

सोकमप्पजहं जन्तु, भिय्यो दुक्खं निगच्छति।

अनुत्थुनन्तो कालङ्कतं, सोकस्स वसमन्वगू॥3/8/13॥

Sokamappajahaṃ jantu, bhiyyo dukkhaṃ nigacchati;

Anutthunanto kālaṅkataṃ, sokassa vasamanvagū.13.

शोकमप्रजहन् जन्तुः, भूयो दुःखं निगच्छति।

अनुस्तुन् कालंकृतम्, शोकस्य वशमन्वगात्॥13॥

जो व्यक्ति शोक को नहीं छोड़ता है, वह अत्यधिक दुःख को प्राप्त होता है, मरे हुए व्यक्ति के लिए पश्चाताप करते हुए शोक के ही वश में पड़ जाता है॥13॥

He who does not leave grief behind, goes only deeper into pain; bewailing the dead he falls into the power of grief.13.

अञ्ञेपि पस्स गमिने, यथाकम्मूपगे नरे।
मच्चुनो वसमागम्म, फन्दन्तेविध पाणिनो॥3/8/14॥

Aññepi passa gamine, yathākammūpage nare;
Maccuno vasamāgamma, phandantevidha pāṇino.॥14॥

अन्यानपि पश्य गामिनः, यथाकर्मोपगान् नरान्।
मृत्योः वशमागत्य, स्पन्दन्तान् इह प्राणिनः॥14॥

अपने कर्मानुसार अन्य भी मर जाने वाले मनुष्यों और मृत्यु के वश में पड़कर यहाँ छटपटाते हुए प्राणियों को देखो॥14॥

Look at others passing away, men that go to what they deserve according to their deeds, beings trembling already here, after falling into the power of death.14.

येन येन हि मञ्ञन्ति, ततो तं होति अञ्ञथा।
एतादिसो विनाभावो, पस्स लोकस्स परियायं॥3/8/15॥

Yena yena hi maññanti, tato taṃ hoti aññathā;
Etādiso vinābhāvo, passa lokassa pariyāyaṃ.॥15॥

यं यं हि मन्यन्ते, ततः तत् भवति अन्यथा।
एतादृशो विनाभावः, पश्य लोकस्य पर्यायम्॥15॥

मनुष्य जिस-जिस बात को अच्छा समझता है; वह उससे भिन्न हो जाती है । इस प्रकार के वियोग और लोक के स्वभाव को देखो॥15॥

In whatever manner people think it will come to pass, different from that it becomes, so great is the disapointment in this world; see, such are the terms of the world.15.

अपि वस्ससतं जीवे, भिय्यो वा पन माणवो।
ञातिसङ्घा विना होति, जहाति इध जीवितं॥3/8/16॥

Api vassasataṃ jīve, bhiyyo vā pana māṇavo;
Ñātisaṅghā vinā hoti, jahāti idha jīvitaṃ.॥16॥

अपि वर्षशतं जीवेत्, भूयो वा पुनः मानवः।
ज्ञातिसंघं विना भवति, जहाति इह जीवितम्॥16॥

यदि मनुष्य सौ वर्ष या उससे अधिक जीवित रहे तो भी वह भाई-बन्धुओं से अलग हो जाता है और यहाँ जीवन को छोड़ देता है॥16॥

Even if a man lives a hundred years or even more, he is at last separated from the company of his relatives, and leaves life in this world.16.

तस्मा अरहतो सुत्वा, विनेय्य परिदेवितं।
पेतं कालङ्कतं दिस्वा, नेसो लब्भा मया इति॥3/8/17॥

Tasmā arahato sutvā, vineyya paridevitaṃ;
Petaṃ kālaṅkataṃ disvā, neso labbhā mayā iti.॥17॥

तस्मात् अर्हन्तं श्रुत्वा, विनीय परिदेवनम्।
प्रेतं कालकृतं दृष्ट्वा, न एष लभ्यो मया इति॥17॥

इसलिए अर्हत् के उपदेश को सुनकर विलाप करना छोड़, मरे हुए प्रेत्य व्यक्ति को देखकर सोचे कि अब तुझे फिर नहीं मिल सकता॥17॥

Therefore let one, hearing the words of the saints subdue his lamentation; seeing the one that has passed away and is dead, let him say: 'He will not be found by me any more.17.

यथा सरणमादित्तं, वारिना परिनिब्बये ।
एवं पि धीरो सपञ्ञो, पण्डितो कुसलो नरो।
खिप्पमुप्पतितं सोकं, वातो तूलं व धंसये॥3/8/18॥

Yathā saraṇamādittaṃ, vārinā parinibbaye;
Evaṃ pi dhīro sapaññо, paṇḍito kusalo naro;
Khippamuppatitaṃ sokaṃ, vāto tūlaṃ va dhaṃsaye.॥18॥

यथा शरणमादीप्तम्, वारिणा परिनिर्वापयात् ।
एवमपि धीरः सप्रज्ञः, पण्डितः कुशलः नरः।
क्षिप्रमुत्पतितं शोकम्, वातः तूलमिव ध्वंसयेत्॥18॥

जिस प्रकार आग लगे घर को पानी से बुझाये, ऐसे ही धीर, प्रज्ञावान, बुद्धिमान् और कुशल नर उत्पन्न शोक को शीघ्र ही उसी तरह नष्ट कर देता है जैसे कि वायु रुई को उड़ा ले जाय॥18॥

As a house on fire is extinguished by water, so also the wise, sensible, learned, clever man rapidly drives away sorrow that has arisen, as the wind a tuft of cotton.18.

परिदेवं पजप्पं च, दोमनस्सं च अत्तनो।
अत्तनो सुखमेसानो, अब्बहे सल्लमत्तनो॥3/8/19॥

Paridevaṃ pajappaṃ ca, domanassaṃ ca attano;
Attano sukhamesāno, abbahe sallamattano.॥19॥

परिदेवनं प्रजल्पञ्च, दौर्मनस्यञ्च आत्मनः।
आत्मनः सुखेषमाणः, उद्वहेत् शल्यमात्मनः॥19॥

अपना सुख चाहने वाला मनुष्य शल्य रूपी रोना, विलाप करना और मानसिक दुःख को निकाल दे॥19॥

He who seeks his own happiness should draw out his arrow which is his lamentation and complaint and grief.19.

अब्बुळ्हसल्लो असितो, सन्तिं पप्पुय्य चेतसो।
सब्बसोकं अतिक्कन्तो, असोको होति निब्बुतो ति॥3/8/20॥

Abbuḷhasallo asito, santiṃ pappuyya cetaso;
Sabbasokaṃ atikkanto, asoko hoti nibbuto ti.॥20॥

अब्यूढशल्योऽश्रितः, सन्तिं प्राप्य चेतसः।
सर्वशोकमतिक्रान्तः, अशोको भवति निवृत्त इति॥20॥

जो शल्य रहित है, अनासक्त है और चित्त-शान्ति को प्राप्त है, वह सब शोक से परे हो, शोक-रहित होकर शान्त होता है॥20॥

He who has drawn out the arrow and is not dependent on anything, he, having obtained peace of mind and having overcome all sorrow, will become free from sorrow, and blessed.20.

सल्लसुत्तं निट्ठित
(Sallasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 9) वासेट्ठसुत्तं* (Vāseṭṭhasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे। तेन खो पन समयेन सम्बहुला अभिञ्ञाता अभिञ्ञाता ब्राह्मणमहासाला इच्छानङ्गले पटिवसन्ति, सेय्यथीदं – चङ्की ब्राह्मणो, तारुक्खो ब्राह्मणो, पोक्खरसाति ब्राह्मणो, जाणुस्सोणि ब्राह्मणो, तोदेय्यो ब्राह्मणो, अञ्ञे च अभिञ्ञाता अभिञ्ञाता ब्राह्मणमहासाला। अथ खो वासेट्ठभारद्वाजानं माणवानं जङ्घाविहारं अनुचङ्कमन्तानं अनुविचरन्तानं अयमन्तराकथा उदपादि – ''कथं, भो, ब्राह्मणो होती''ति? भारद्वाजो माणवो एवमाह – ''यतो खो, भो, उभतो सुजातो होति मातितो च पितितो च संसुद्धगहणिको याव सत्तमा पितामहयुगा अक्खित्तो अनुपक्कुट्ठो जातिवादेन, एत्तावता खो भो ब्राह्मणो होती''ति। वासेट्ठो माणवो एवमाह – ''यतो खो, भो, सीलवा च होति वतसम्पन्नो च, एत्तावता खो, भो, ब्राह्मणो होती''ति। नेव खो असक्खि भारद्वाजो माणवो वासेट्ठं माणवं सञ्ञापेतुं, न पन असक्खि वासेट्ठो माणवो भारद्वाजं माणवं सञ्ञापेतुं। अथ खो वासेट्ठो माणवो भारद्वाजं माणवं आमन्तेसि – ''अयं खो, भो भारद्वाज, समणो गोतमो सक्यपुत्तो सक्यकुला पब्बजितो इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनसण्डे; तं खो पन भवन्तं गोतमं एवं कल्याणो कित्तिसद्दो अब्भुग्गतो – 'इति पि...पे.... बुद्धो भगवा'ति। आयाम, भो भारद्वाज, येन समणो गोतमो तेनुपसङ्कमिस्साम; उपसङ्कमित्वा समणं गोतमं एतमत्थं पुच्छिस्साम। यथा नो समणो गोतमो ब्याकरिस्सति तथा नं धारेस्सामा''ति। ''एवं, भो''ति खो भारद्वाजो माणवो वासेट्ठस्स माणवस्स पच्चस्सोसि।

अथ खो वासेट्ठभारद्वाजा माणवा येन भगवा तेनुपसङ्कमिंसु; उपसङ्कमित्वा भगवता सद्धिं सम्मोदिंसु। सम्मोदनीयं कथं सारणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदिंसु। एकमन्तं निसिन्नो खो वासेट्ठो माणवो भगवन्तं गाथाहि अज्झभासि–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā icchānaṅgale viharati icchānaṅgalavanasaṇḍe. Tena kho pana samayena sambahulā abhiññātā abhiññātā brāhmaṇamahāsālā icchānaṅgale paṭivasanti, seyyathidaṃ – caṅkī brāhmaṇo, tārukkho brāhmaṇo, pokkharasāti brāhmaṇo, jāṇussoṇi brāhmaṇo, todeyyo brāhmaṇo, aññe ca abhiññātā abhiññātā brāhmaṇamahāsālā. Atha kho vāseṭṭhabhāradvājānaṃ māṇavānaṃ jaṅghāvihāraṃ anucaṅkamantānaṃ anuvicarantānaṃ ayamantarākathā udapādi – "kathaṃ, bho, brāhmaṇo hotī"ti? Bhāradvājo māṇavo evamāha – "yato kho, bho, ubhato sujāto hoti mātito ca pitito ca saṃsuddhagahaṇiko yāva sattamā pitāmahayugā akkhitto anupakkuṭṭho jātivādena, ettāvatā kho bho brāhmaṇo hotī"ti. Vāseṭṭho māṇavo evamāha– "yato kho, bho, sīlavā ca hoti vatasampanno ca, ettāvatā kho, bho, brāhmaṇo hotī"ti. Neva kho asakkhi bhāradvājo māṇavo vāseṭṭhaṃ māṇavaṃ saññāpetuṃ, na pana asakkhi vāseṭṭho māṇavo bhāradvājaṃ māṇavaṃ saññāpetuṃ. Atha kho vāseṭṭho māṇavo bhāradvājaṃ māṇavaṃ āmantesi– "ayaṃ kho, bho bhāradvāja, samaṇo gotamo sakyaputto sakyakulā pabbajito

icchānaṅgale viharati icchānaṅgalavanasaṇḍe; taṃ kho pana bhavantaṃ gotamaṃ evaṃ kalyāṇo kittisaddo abbhuggato– 'iti pi…pe… buddho bhagavā'ti. Āyāma, bho bhāradvāja, yena samaṇo gotamo tenupasaṅkamissāma; upasaṅkamitvā samaṇaṃ gotamaṃ etamatthaṃ pucchissāma. Yathā no samaṇo gotamo byākarissati tathā naṃ dhāressāmā"ti. "Evaṃ, bho"ti kho bhāradvājo māṇavo vāseṭṭhassa māṇavassa paccassosi.

Atha kho vāseṭṭhabhāradvājā māṇavā yena bhagavā tenupasaṅkamiṃsu; upasaṅkamitvā bhagavatā saddhiṃ sammodiṃsu. Sammodanīyaṃ kathaṃ sāraṇīyaṃ vītisāretvā ekamantaṃ nisīdiṃsu. Ekamantaṃ nisinno kho vāseṭṭho māṇavo bhagavantaṃ gāthāhi ajjhabhāsi –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान् *इच्छानङ्गले* विहरति *इच्छानङ्गलवनखण्डे*। तस्मिन् खलु पुनः समये सम्बहुला अभिज्ञाता अभिज्ञाताः ब्राह्मणमहाशाला इच्छानङ्गले प्रतिवसन्ति, तद्यथा एवम् – *चङ्किब्राह्मणः*, *तारुक्खो* ब्राह्मणः, *पोक्खरसातिब्राह्मणः*, जानुस्सोणि (जानुश्रोणि) ब्राह्मणः, *तौदेयो* ब्राह्मणः, अन्ये च अभिजाता अभिज्ञाता ब्राह्मणमहासालाः। अथ खलु *वासेट्ठ*-भारद्वाजयोः माणवकयोः जंघाविहाराय अनुचंक्रमणयोः अनुविचरन्तयोः एषान्तरा कथा उत्पद्यत्–''कथं, भो ! ब्राह्मणो भवति'' इति । भारद्वाजो माणवक एवमाह – ''यतः खलु, भो ! उभयतः *सुजातो* भवति मातुश्च पितुश्च संशुद्धग्रहणिकः, यावत् सप्तमात् पितामहयुगात् अक्षिप्तः (अनिन्दितः) अनुपकृष्टः जातिवादेन, एतावता खलु ब्राह्मणो भवति'' इति।*वासेट्ठो* माणवक एवमाह – ''यतः खलु, भो ! शीलवान् च भवति व्रतसम्पन्नश्च, एतावता खलु, ब्राह्मणो भवति'' इति। नैव खलु अशक्नोत् भारद्वाज ! माणवको *वासेट्ठ* माणवकं संज्ञापयितुम्, न पुनः अशक्नोत् *वासेट्ठो* माणवको *भारद्वाजं* माणवकं संज्ञापयितुम् । अथ खलु वासेट्ठो माणवको भारद्वाजं माणवकम् आमन्त्रयत् – ''अयं खलु, *भारद्वाज* ! श्रमणो *गौतमो* शाक्यपुत्रः शाक्यकुलात् प्रव्रजित इच्छानङ्गले विहरति इच्छानङ्गलवनखण्डे; तं खलु पुनः भवन्तं *गौतमम्* एवं कल्याणः कीर्तिशब्दः अभ्युद्गतः – इत्यपि स भगवान्…*पे*.… बुद्धो भगवान्' इति। आयाहि, भो *भारद्वाज!* यत्र श्रमणः *गौतमः* तत्रोपसङ्क्रमिष्याव; उपसंक्रम्य एतमर्थं प्रक्ष्यावः । यथा नः श्रमणो *गौतमो* व्याकरिष्यति तथा आवां धारिष्यावः'' इति। ''एवम्, भो!''इति खलु भारद्वाजो माणवको *वासेट्ठं* माणवकं प्रत्यश्रौषीत्।

अथ खलु *वासेट्ठभारद्वाजौ* माणवकौ यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमिष्टाम्, उपसंक्रम्य भगवता सार्धं सम्मोदिषताम्। सम्मोदनीयां व्यतिसार्य कथां सारणीयां एकान्तं न्यसदताम्। एकान्तं निषण्णः खलु *वासेट्ठः माणवः* भगवन्तं गाथाभिरध्यभाषिष्ट–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् इच्छानंगल में इच्छानंगल के वन-खण्ड में विहार करते थे । उस समय बहुत से अभिजात-अभिज्ञात ब्राह्मण महाशाल (महाधनी) जैसे कि– चंकि ब्राह्मण, तारुक्ख (तारुक्ष) ब्राह्मण, जानुस्सोणि ब्राह्मण, तोदेय्य ब्राह्मण, तथा दूसरे अभिज्ञात-अभिज्ञात ब्राह्मण महाशाल, इच्छानंगल में वास करते थे । तब वासेट्ठ और भारद्वाज दो माणवों (छात्रों) की, जंघाविहार के लिए टहलते घूमते समय यह बात बीच में चल पड़ी– "ब्राह्मण कैसा होता है ?" ।

भारद्वाज माणव ने कहा– "जब (पुरुष) दोनों ओर से माता से भी पिता से भी सुजात होता है; (माता-पिता) दोनों ओर के पितामहों की सात पीढ़ी तक विशुद्ध वंशवाले, जातिवाद से अ-क्षिप्त=अ-निंदित हों– इतने से ब्राह्मण होता है । "वासेट्ठ माणव ने यह कहा–"जब आदमी शीलवान् और व्रत-सम्पन्न होता है, इतने से ब्राह्मण होता है।" भारद्वाज माणव वासेट्ठ माणव को नहीं समझा था, वासेट्ठ माणव भारद्वाज माणव को नहीं समझा सका। तब वासेट्ठ माणव ने भारद्वाज माणव को सम्बोधित किया– "यह शाक्यकुल से प्रव्रजित शाक्य-

पुत्र श्रमण गौतम इच्छानंगल के वन-खण्ड में विहार करते हैं । उन आप गौतम का ऐसा कल्याण कीर्ति शब्द उठा हुआ है– 'वे भगवान्... बुद्ध भगवान् हैं'। चलो, हे भारद्वाज ! जहाँ श्रमण गौतम हैं, वहाँ चलें। चल कर श्रमण गौतम से इस बात को पूछे; जैसा श्रमण गौतम बतलायेंगे, वैसा धारण करेंगे ।" "अच्छा" – कहकर भारद्वाज माणव ने वासेट्ठ माणव को उत्तर दिया । तब वासेट्ठ और भारद्वाज माणव जहाँ भगवान् थे, वहाँ गये; जाकर भगवान् के साथ...सम्मोदन कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे वासेट्ठ माणव ने भगवान् से गाथाओं में कहा–

So it was heard by me: Once Bhagavān dwelt at Icchānañna, in the Icchānañna forest. At that time many dist inguished, wealthy Brāmanas lived at Icchānañna, as the Brāhmaṇa canki, the Brāhmaṇa Tarukkha, the Brahmana Pokkharasati, the Brāhmaṇa Ganussoni, the Brāhmaṇa Todeyya, and other distinguished, wealthy Brāhmaṇas. Then this dialogue arose between the young men Vasettha and Bharadvaja while walking about: Show does one become a Brāhmaṇa?' The young man Bharadvaja said: 'When one is noble by birth on both sides, on the mother's and on the father's side, of pure conception up to the seventh generation of ancestors, not discarded and not reproached in point of birth, in this way one is a Brāhmaṇa.'

The young man Vasettha said: 'When one is virtuous and endowed with holy works, in this way he is a Brahmana.' Neither could the young man Bharadvaja convince the young man Vasettha, nor could the young man Vasettha convince the young man Bharadvaja. Then the young man Vasettha addressed the young man Bharadvaja: 'O Bharadvaja, this Sramaṇa Gotama, the Sakya son, gone out from the Sakya family, dwells at Icchānañna, in the forest of Icchānañna, and the following good praising words met the venerable Gotama: "And so he is Bhagavān, the venerable, the enlightened, the glorious, let us go, O venerable Bharadvaja, let us go to the place where the Sramaṇa Gotama is, and having gone there let us ask the Sramaṇa Gotama about this matter, and as the Sramaṇa Gotama replies so will we understand it."' 'Very well, O venerable one;' so the young man Bharadvaja answered the young man Vasettha. Then the young men Vasettha and Bharadvaja went to the place where Bhagavān was, and having gone, they talked pleasantly with Bhagavān, and after having had some pleasant and remarkable conversation with him they sat down apart. Sitting down apart the young man Vasettha addressed Bhagavān in stanzas:

*यह सुत मज्झिमनिकायपालि (मज्झिमपण्णासक) में भी है ।

"अनुञ्ञातपटिञ्ञाता, तेविज्जा मयमस्मुभो।
अहं पोक्खरसातिस्स, तारुक्खस्सायं माणवो॥3/9/1॥

"Anuññātapaṭiññātā, tevijjā mayamasmubho;
Ahaṃ pokkharasātissa, tārukkhassāyaṃ māṇavo.॥1॥

"अनुज्ञात-प्रतिज्ञातौ, त्रैविद्यौ आवां स्व उभौ ।
अहं *पौक्खरसादेः*, *तारुक्खस्य*ायं माणवक:॥1॥

हे ! हम अनुज्ञात-प्रविज्ञात त्रैविद्य हैं । मैं पौष्करसाति का और यह तारुक्ष के माणवक हैं॥1॥

'We are accepted and acknowledged masters of the three Vedas, I am a pupil of Pokkharasati, and this young man is the pupil of Tarukkha.1.

"तेविज्जानं यदक्खातं, तत्र केवलिनोस्मसे।
पदकस्म वेय्याकरणा, जप्पे आचरियसादिसा॥3/9/2॥

"Tevijjānaṃ yadakkhātaṃ, tatra kevalinosmase;
Padakasma veyyākaraṇā, jappe ācariyasādisā.॥2॥

"त्रैविद्यासु यदाख्यातम्, तत्र केवलिनौ स्वः।
पदके वैयाकरणे, जल्पे आचार्यसदृशौ॥2॥

त्रैविद्या का आख्यान है, उसमें हम केवली हैं। पद, व्याकरण और जल्प में हम अपने आचार्य के समान हैं।2।

'We are accomplished in all the knowledge propounded by those who are acquainted with the three Vedas, we are padakas versed in the metre, veyyakaranas grammarians? and equal to our teachers in recitation jappa'.2.

"तेसं नो जातिवादस्मिं, विवादो अत्थि गोतम।
जातिया ब्राह्मणो होति, भारद्वाजो इति भासति।
अहं च कम्मुना ब्रूमि, एवं जानाहि चक्खुम॥3/9/3॥

"Tesaṃ no jātivādasmiṃ, vivādo atthi gotama;
Jātiyā brāhmaṇo hoti, bhāradvājo iti bhāsati;
Ahaṃ ca kammunā brūmi, evaṃ jānāhi cakkhuma.॥3॥

"तयोः आवयोः जातिवादे, विवादोऽस्ति *गौतम* !
जात्या ब्राह्मणो भवति, *भारद्वाज* इति भाषते ।
अहञ्च कर्मणा ब्रवीमि, एवं जानीहि चक्षुष्मन् !॥3॥

गौतम! ऐसे हम दोनों का जाति-वाद के विषय में विवाद है। भारद्वाज कहता है–'जाति से ब्राह्मण होता है, चक्षुष्मन् ! मैं कर्म से कहता हूँ, ऐसा आप जानें ॥3॥

'We have a controversy regarding the distinctions of birth, O Gotama! Bharadvaja says, one is a Brāhmaṇa by birth, and I say, by deeds; know this, O thou clearly-seeing .3.

"ते न सक्कोम सञ्ञापेतुं, अञ्ञमञ्ञं मयं उभो।
भवन्तं पुट्ठुमागम्हा, सम्बुद्धं इति विस्सुतं॥3/9/4॥

"Te na sakkoma saññāpetuṃ, aññamaññaṃ mayaṃ ubho;
Bhavantaṃ puṭṭhumāgamhā, sambuddhaṃ iti vissutaṃ.॥4॥

"तस्मात् न शक्नुवः संज्ञापयितुम्, अन्योन्यम् आवयोः उभौ ।
भवन्तं प्रष्टुमागच्छाव, सम्बुद्धम् इति विश्रुतम्॥4॥

हम दोनों एक दूसरे को समझा नहीं सकते । तब सम्बुद्ध, विश्रुत भगवान् के पास आये हैं॥4॥

'We are both unable to convince each other, therefore we have come to ask thee celebrated as perfectly enlightened.4.

"चन्दं यथा खयातीतं, पेच्च पञ्जलिका जना।
वन्दमाना नमस्सन्ति, एवं लोकस्मि गोतमं॥3/9/5॥

"Candaṃ yathā khayātītaṃ, pecca pañjalikā janā;
Vandamānā namassanti, evaṃ lokasmi gotamaṃ.॥5॥

"चन्द्रं यथा क्षयातीतम्, प्रेत्य प्राञ्जलिकाः जनाः।
वन्दमानाः नंस्यन्ति, एवं लोके *गौतमम्* ॥5॥

अक्षर चन्द्रमा को जैसे लोग हाथ जोड़, वन्दना करके नमस्कार करते हैं और करेंगे, ऐसे ही लोक में गौतम को॥5॥

'As people adoring the full moon worship her with uplifted clasped hands, so they worship Gotama in the world.5.

"चक्खुं लोके समुप्पन्नं, मयं पुच्छाम गोतमं।
जातिया ब्राह्मणो होति, उदाहु भवति कम्मुना।
अजानतं नो पब्रूहि, यथा जानेसु ब्राह्मणं"॥3/9/6॥

"Cakkhuṃ loke samuppannaṃ, mayaṃ pucchāma gotamaṃ;
Jātiyā brāhmaṇo hoti, udāhu bhavati kammunā;
Ajānataṃ no pabrūhi, yathā jānesu brāhmaṇaṃ".॥6॥

"चक्षुष्मन्तं लोके समुत्पन्नम्, आवां पृच्छाव *गौतमम्* ।
जात्या ब्राह्मणो भवति, उताहो भवति कर्मणा।
अजानन्तौ नौ प्रब्रूहि, यथा जानीयाव ब्राह्मणम्"॥6॥

लोक के, चक्षु जैसे उत्पन्न आप गौतम से हम पूछते हैं– "जन्म से ब्राह्मण होता है, या कर्म से'? हम न जानने वालों को बतावें, जिससे हम ब्राह्मण को जानें'॥6॥

'We ask Gotama who has come as an eye to the world: Is a man a Brāhmaṇa by birth, or is he so by deeds? Tell us who do not know, that we may know a Brāhmaṇa.'6.

"तेसं वो अहं ब्यक्खिस्सं, (वासेट्ठा ति भगवा) अनुपुब्बं यथातथं।
जातिविभङ्गं पाणानं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/7॥

Tesaṃ vo ahaṃ byakkhissaṃ, (vāseṭṭhā ti bhagavā) anupubbaṃ yathātathaṃ;
Jātivibhaṅgaṃ pāṇānaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥7॥

"तेषां वोऽहं व्याकरिष्यामि, (*वासेट्ठ* इति भगवान्) अनुपूर्वं यथातथम्।
जातिविभङ्गं प्राणिनाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥7॥

भगवान्– "वासेट्ठ! तुमसे मैं यथार्थतः कहता हूँ। प्राणियों की जातियों में एक दूसरे से जाति का भेद है॥7॥

'I will explain to you, O Vasettha,'—so said Bhagavān, in due order the exact distinction of living beings according to species, for their species are manifold.7.

"तिणरुक्खे पि जानाथ, न चापि पटिजानरे।
लिङ्गं जातिमयं तेसं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/8॥

"Tiṇarukkhe pi jānātha, na cāpi paṭijānare;
Liṅgaṃ jātimayaṃ tesaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥8॥

"तृणवृक्षेऽपि जानीत, न चापि प्रतिजज्ञिरे।
लिङ्गं जातिमयं तेषाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥8॥

तृण और वृक्ष भी, जानते हो इसके लिये वे प्रतिज्ञा नहीं करते, उनका लिंग जातिमय है, उनमें जातियाँ एक दूसरे से भिन्न हैं॥8॥

'Know ye the grass and the trees, although they do not exhibit it, the marks that constitute species are for them and their species are manifold.8.

"ततो कीटे पटङ्गे च, याव कुन्थकिपिल्लिके।

लिङ्गं जातिमयं तेसं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/9॥

"Tato kīṭe paṭaṅge ca, yāva kunthakipillike;
Liṅgaṃ jātimayaṃ tesaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥9॥

"ततः कीटे पतङ्गे च, यावत् कुन्थपिपीलिके।
लिङ्गं जातिमयं तेषाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥9॥

फिर कीट, पतंग से चींटी तक जाति लिंग भेद है; उनका लिंग जातिमय है, उनमें जातियाँ भी एक-दूसरे से भिन्न है॥9॥

'Then the worms, and the moths, and the different sorts of ants, the marks that constitute species are for them and their species are manifold.9.

"चतुप्पदेपि जानाथ, खुद्दके च महल्लके।

लिङ्गं जातिमयं तेसं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/10॥

"Catuppadepi jānātha, khuddake ca mahallake;
Liṅgaṃ jātimayaṃ tesaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥10 ।

"चतुष्पादानपि जानीत, क्षुद्रकान् च महर्द्धिकान्।
लिङ्गं जातिमयं तेषाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥10॥

छोटे बड़े चौपायों को तुम जानते हो, उनका लिंग जातिमय है, उनमें जातियाँ भी परस्पर भिन्न हैं॥10॥

'Know ye also the four-footed animals, small and great, the marks that constitute species are for them and their species are manifold.10.

"पादूदरेपि जानाथ, उरगे दीघपिट्ठिके।

लिङ्गं जातिमयं तेसं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/11॥

"Pādūdarepi jānātha, urage dīghapiṭṭhike;
Liṅgaṃ jātimayaṃ tesaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥11॥

"पादोदरेऽपि जानीत, उरगान् दीर्घपृष्ठकान्।
लिङ्गं जातिमयं तेषाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥11॥

लम्बी पीठवाले पादोदर साँप को भी जानते हो, उनका लिंग जातिमय है, उनमें जातियाँ भी एक-दूसरे से भिन्न हैं॥11॥

'Know ye also the serpents, the long-backed snakes, the marks that constitute species are for them and species are manifold.11.

"ततो मच्छेपि जानाथ, ओदके वारिगोचरे।

लिङ्गं जातिमयं तेसं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/12॥

"Tato macchepi jānātha, odake vārigocare;
Liṅgaṃ jātimayaṃ tesaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥12॥

"ततो मत्स्यानपि जानीत, उदके वारि-गोचरान्।
लिङ्गं जातिमयं तेषाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥12॥

फिर जलचर पानी में मछलियों को भी जानते हो, उनका लिंग जातिमय है, उनमें जातियाँ भी एक-दूसरे से भिन्न हैं॥12॥

'Then know ye also the fish which range in the water, the marks that constitute species are for them and their species are manifold.12.

"ततो पक्खी पि जानाथ, पत्तयाने विहङ्गमे।
लिङ्गं जातिमयं तेसं, अञ्ञमञ्ञा हि जातियो॥3/9/13॥

"Tato pakkhī pi jānātha, pattayāne vihaṅgame;
Liṅgaṃ jātimayaṃ tesaṃ, aññamaññā hi jātiyo.॥13॥

"ततः पक्षीः अपि जानीत, पत्रयाने विहङ्गमे।
लिङ्गं जातिमयं तेषाम्, अन्या अन्याः हि जातयः॥13॥

आकाशचारी पत्रयान पक्षियों को भी जानते हो, लिंग जातिमय है, उनमें जातियाँ भी परस्पर भिन्न हैं॥13॥

'Then know you also the birds that are borne along on wings and move through the air, the marks that constitute species are for them and their species are manifold.13.

"यथा एतासु जातीसु, लिङ्गं जातिमयं पुथु।
एवं नत्थि मनुस्सेसु, लिङ्गं जातिमयं पुथु॥3/9/14॥

"Yathā etāsu jātīsu, liṅgaṃ jātimayaṃ puthu;
Evaṃ natthi manussesu, liṅgaṃ jātimayaṃ puthu.॥14॥

"यथा एतासु जातिषु, लिङ्गं जातिमयं पृथक्।
एवं नास्ति मनुष्येषु, लिङ्गं जातिमयं पृथक्॥14॥

जैसे इन जातियों में जाति का अलग-अलग लिंग है। इसप्रकार जाति-लिंग मनुष्यों में अलग नहीं है॥14॥

'As in these species the marks that constitute species are abundant, so in men the marks that constitute species are not abundant.14.

"न केसेहि न सीसेन, न कण्णेहि न अक्खिभि।
न मुखेन न नासाय, न ओट्ठेहि भमूहि वा॥3/9/15॥

"Na kesehi na sīsena, na kaṇṇehi na akkhibhi;
Na mukhena na nāsāya, na oṭṭhehi bhamūhi vā.॥15॥

"न केशैः न शीर्षेण, न कर्णैः, न अक्षिभिः।
न मुखेन न नासिकया, न ओष्ठैः भ्रूभिः वा॥15॥

न केशों में, न सिर में, न कान में, न आँख में। न मुख से, न नासिका में, न ओष्ठ अथवा भौं में॥15॥

'Not as regards their hair, head, ears, eyes, mouth, nose, lips or brows, .15.

"न गीवाय न अंसेहि, न उदरेन न पिट्ठिया।
न सोणिया न उरसा, न सम्बाधे न मेथुने॥3/9/16॥

"Na gīvāya na aṃsehi, na udarena na piṭṭhiyā;
Na soṇiyā na urasā, na sambādhe na methune.॥16॥

"न ग्रीवया न अंशै:, न उदरेण न पृष्ठेन।

न श्रोण्या न उरसा, न सम्बाधे न मैथुने॥16॥

न गले में, न अंश में, न उदर में और न पीठ परा न श्रोणि में, न गोप्यस्थान में, न मैथुन में॥16॥

'Nor as regards their neck, shoulders, belly, back, hip, breast, female organ, sexual pleasure.16.

"न हत्थेहि न पादेहि, नाङ्गुलीहि नखेहि वा।

न जङ्घाहि न ऊरूहि, न वण्णेन सरेन वा।

लिङ्गं जातिमयं नेव, यथा अञ्ञासु जातिसु॥3/9/17॥

"Na hatthehi na pādehi, nāṅgulīhi nakhehi vā;
Na jaṅghāhi na ūrūhi, na vaṇṇena sarena vā;
Liṅgaṃ jātimayaṃ neva, yathā aññāsu jātisu.॥17॥

"न हस्तै: न पादै:, नाङ्गुलिभि: नखै: वा।

न जंघाभि: न उरूभि:, न वर्णेन स्वरेण वा।

लिङ्गं जातिमयं नैव, यथा अन्यासु जातिषु॥17॥

न हाथ में, न पैर में, न अंगुली और नख में, न जंघा में, न उरू में, न वर्ण या स्वर में । जैसा कि अन्य जातियों में है, वैसा जाति का कोई पृथक् लिंग नहीं॥17॥

'Nor as regards their hands, feet, palms, nails, calves, thighs, colour, or voice are there marks that constitute species as in other species.17.

"पच्चत्तं च सरीरेसु, मनुस्सेस्वेतं न विज्जति।

वोकारं च मनुस्सेसु, समञ्ञाय पवुच्चति॥3/9/18॥

"Paccattaṃ ca sarīresu, manussesvetaṃ na vijjati;
Vokāraṃ ca manussesu, samaññāya pavuccati.॥18॥

"प्रत्यन्तं च शरीरेषु, मनुष्येषु एतं न विद्यते।

व्यवहारं च मनुष्येषु, संज्ञया प्रोच्यते॥18॥

मनुष्यों के शरीर में यह (भेदक लिंग) नहीं मिलता। मनुष्यों में भेद मात्र व्यवहार संज्ञा से है॥18॥

'Difference there is in beings endowed with bodies, but among men this is not the case, the difference among men is nominal only.18.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, गोरक्खं उपजीवति।

एवं वासेट्ठ जानाहि, कस्सको सो न ब्राह्मणो॥3/9/19॥

"Yo hi koci manussesu, gorakkhaṃ upajīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, kassako so na brāhmaṇo.॥19॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, गोरक्षमुपजीवति।

एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, कृषक: स न ब्राह्मण:॥19॥

मनुष्यों में जो गोरक्षा से जीविका करता है । वासेट्ठ ! ऐसे व्यक्ति को कृषक जानो, ब्राह्मण नहीं॥19॥

'For whoever among men lives by cowkeeping,—know this, O Vasettha,—he is a husbandman, not a Brāhmaṇa.19.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, पुथुसिप्पेन जीवति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, सिप्पिको सो न ब्राह्मणो॥3/9/20॥

"Yo hi koci manussesu, puthusippena jīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, sippiko so na brāhmaṇo.॥20॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, पृथक् शिल्पेन जीवति।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, शिल्पक: स न ब्राह्मण:॥20॥

मनुष्यों में जो किसी शिल्प से जीविका करता है । वासेट्ठ ! ऐसे को शिल्पी जानो, ब्राह्मण नहीं॥20॥

'And whoever amongst men lives by different mechanical arts,—know this, O Vasettha,— he is an artisan, not a Brāhmaṇa.20.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, वोहारं उपजीवति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, वाणिजो सो न ब्राह्मणो॥3/9/21॥

"Yo hi koci manussesu, vohāraṃ upajīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, vāṇijo so na brāhmaṇo.॥21॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, व्यवहारमुज्जीवति।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, वणिक् स न ब्राह्मण:॥21॥

मनुष्यों में जो व्यापार से जीविका करता है । वासेट्ठ ! ऐसे को बनिया जानो, ब्राह्मण नहीं॥21॥

'And whoever among men lives by trade,— know this, O Vasettha,—he is a merchant, not a Brāhmaṇa.21.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, परपेस्सेन जीवति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, पेस्सिको सो न ब्राह्मणो॥3/9/22॥

"Yo hi koci manussesu, parapessena jīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, pessiko so na brāhmaṇo.॥22॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, परप्रेष्येण जीवति।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, प्रेष्यक:* स न ब्राह्मण:॥22॥

मनुष्यों में जो पर-प्रेषण से जीविका करता है । वासेट्ठ ! ऐसे को प्रेष्यक जानो, ब्राह्मण नहीं॥22॥

'And whoever among men lives by serving others,—know this, O Vàsettha,—he is a servant, not a Brāhmaṇa.22.

* प्रेष्यक=पठवनिया (मालिक के भेजे अनुसार काम करने वाला)

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, अदिन्नं उपजीवति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, चोरो एसो न ब्राह्मणो॥3/9/23॥

"Yo hi koci manussesu, adinnaṃ upajīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, coro eso na brāhmaṇo.॥23॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, अदत्तमुपजीवति।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, चौर एष न ब्राह्मण:॥23॥

मनुष्यों में जो अदत्तादान से जीता है । वासेट्ठ ! ऐसे को चोर जानो, ब्राह्मण नहीं॥23॥

'And whoever among men lives by theft, know this, O Vasettha, he is a thief, not a Brāhmaṇa.23.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, इस्सत्थं उपजीवति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, योधाजीवो न ब्राह्मणो॥3/9/24॥

"Yo hi koci manussesu, issatthaṃ upajīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, yodhājīvo na brāhmaṇo.॥14॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, इष्वस्त्रमुपजीवति।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, योद्धाजीवी न ब्राह्मण:॥24॥

मनुष्यों में जो इषु-अस्त्र से जीता है । वासेट्ठ ! ऐसे को योद्धाजीवी जानो, ब्राह्मण नहीं॥24॥

'And whoever among men lives by archery, know this, O Vasettha, he is a soldier, not a Brāhmaṇa.24.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, पोरोहिच्चेन जीवति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, याजको एसो न ब्राह्मणो॥3/9/25॥

"Yo hi koci manussesu, porohiccena jīvati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, yājako eso na brāhmaṇo.॥25॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, पौरोहित्येन जीवति।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, याजक एष न ब्राह्मण:॥25॥

मनुष्यों में जो पौरोहित्य से जीता है । वासेट्ठ ! ऐसे को याजक जानो, ब्राह्मण नहीं॥25॥

'And whoever among men lives by performing household ceremonials,—know this, O Vasettha,—he is a sacrificer, not a Brhmana.25.

"यो हि कोचि मनुस्सेसु, गामं रट्ठं च भुञ्जति।
एवं वासेट्ठ जानाहि, राजा एसो न ब्राह्मणो॥3/9/26॥

"Yo hi koci manussesu, gāmaṃ raṭṭhaṃ ca bhuñjati;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, rājā eso na brāhmaṇo.॥26॥

"यो हि कश्चित् मनुष्येषु, ग्रामं राष्ट्रञ्च भुञ्जते।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, राजा एष न ब्राह्मण:॥26॥

मनुष्यों में जो ग्राम राष्ट्र का उपभोग करता है । वासेट्ठ ! ऐसे को राजा जानो, ब्राह्मण नहीं॥26 ।

'And whoever among men possesses villages and countries,—know this, O Vasettha,—he is a king, not a Brāhmaṇa.26.

"न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि, योनिजं मत्तिसम्भवं।
भोवादि नाम सो होति, सचे होति सकिञ्चनो।
अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/27॥

"Na cāhaṃ brāhmaṇaṃ brūmi, yonijaṃ mattisambhavaṃ;
Bhovādi nāma so hoti, sace hoti sakiñcano;
Akiñcanaṃ anādānaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥27॥

"*न चाऽहं ब्राह्मणं ब्रवीमि, योनिजं मातृसम्भवम्।
'भो वादी*' नाम स भवति, स चेत् भवति सकिञ्चन:।

अकिञ्चनम् अनादानम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥27॥

माता और योनि से उत्पन्न होने के कारण मैं ब्राह्मण नहीं कहता । वह 'भो-वादी' है, वह तो संग्रही है। मैं ब्राह्मण उसे कहता हूँ, जो अपरिग्रही = न लेने वाला है॥27॥

'And I do not call one a Brāhmaṇa on account of his birth or of his origin from a particular mother; he may be called bhovadi, and he may be wealthy, but the one who is possessed of nothing and seizes upon nothing, him I call a Brahmana'.27.

*27-54 तक गाथाएं धम्मपद 396-423 तक समरूप हैं।

*उस समय ब्राह्मण को हा, भो कहकर सम्बोधित किया जाता था।

"सब्बसंयोजनं छेत्वा, सो वे न परितस्सति।
सङ्गातिगं विसंयुत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/28॥

"Sabbasaṃyojanaṃ chetvā, so ve na paritassati;
Saṅgātigaṃ visaṃyuttaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥28॥

"सर्वसंयोजनं छित्वा, स वै न परित्रस्यति।
सङ्गाऽतिगं विसंयुक्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥28॥

जो सारे संयोजनों (बन्धनों) को काटकर, भय नहीं खाता । जो संग और आसक्ति से विरत है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥28॥

'Whosoever, after cutting all bonds, does not tremble, has shaken off all ties and is liberated, him I call a Brāhmaṇa.28.

"छेत्वा नद्धिं वरत्तं च, सन्दानं सहनुक्कमं।
उक्खित्तपलिघं बुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/29॥

"Chetvā naddhiṃ varattaṃ ca, sandānaṃ sahanukkamaṃ;
Ukkhittapaligha ṃ buddhaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥29॥

"छित्वा नन्दिं वरत्राञ्च, सन्दानं सहनुक्रमम्।
उत्क्षिप्तपरिघं बुद्धम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥29॥

नन्दी (क्रोध), वरत्रा (तृष्णा रूपी रस्सी), सन्दान (62 प्रकार के मतवाद-रूपी पगहे) और हनुक्रम (मुँह पर बाँधने के जाबे), को काट एवं परिघ (जुए), को फेंक जो बुद्ध (ज्ञानी) हुआ, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥29॥

'The man who, after cutting the strap the thong (attachment), and the rope. (scepticism) with all that pertains to it, has destroyed all obstacles (ignorance), the enlightened Buddha, him I call a Brāhmaṇa.29.

"अक्कोसं वधबन्धं च, अदुट्ठो यो तितिक्खति।
खन्तीबलं बलानीकं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/30॥

"Akkosaṃ vadhabandhaṃ ca, aduṭṭho yo titikkhati;
Khantībalaṃ balānīkaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥30॥

"आक्रोशं वधबंधञ्च, अदुष्टो यस्तितिक्षति।
क्षान्तिबलं बलानीकम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥30॥

जो बिना दूषित चित्त किये गाली, वध और बन्धन को सहन करता है, क्षमा बल ही जिसके बल (सेना) का सेनापति है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥30॥

'Whosoever, being innocent, endures reproach, blows and bonds, the man who is strong in his endurance and has for his army this strength, him I call a Brāhmaṇa.30.

"अक्कोधनं वतवन्तं, सीलवन्तं अनुस्सदं।
दन्तं अन्तिमसरीरं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/31॥

"Akkodhanaṃ vatavantaṃ, sīlavantaṃ anussadaṃ;
Dantaṃ antimasārīraṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥31॥

"अक्रोधनं व्रतवन्तम्, शीलवन्तमनुश्रुतम्।
दान्तमन्तिमशरीरम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥31॥

जो अक्रोधी, व्रती, शीलवान्, बहुश्रुत, संयमी और अन्तिम शरीर वाला है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥31॥

'The man who is free from anger, endowed with holy works, virtuous, without desire, subdued, and wearing the last body, him I call a Brāhmaṇa.31.

"वारि पोक्खरपत्तेव, आरग्गेरिव सासपो।
यो न लिम्पति कामेसु, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/32॥

"Vāri pokkharapatteva, āraggeriva sāsapo;
Yo na limpati kāmesu, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥32॥

"वारि पुष्कर-पत्र इव, आराग्र इव सार्षप:।
यो न लिप्यते कामेषु, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥32॥

कमल के पत्ते पर जल, और आरे के नोंक पर सरसों की भाँति जो भोगों में लिप्त नहीं होता, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥32॥

'The man who, like water on a lotus leaf, or a mustard seed on the point of a needle, does not cling to sensual pleasures, him I call a Brāhmana.32.

"यो दुक्खस्स पजानाति, इधेव खयमत्तनो।
पन्नभारं विसंयुत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/33॥

"Yo dukkhassa pajānāti, idheva khayamattano;
Pannabhāraṃ visaṃyuttaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥33॥

"यो दु:खस्य प्रजानाति, इह एव क्षयमात्मन:।
पन्नभारं विसंयुक्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥33॥

जो यहीं (इसी जन्म में) अपने दु:खों के विनाश को जानता है, जिसने अपने बोझ को उतार फेंका और जो आसक्ति रहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥33॥

'The man who knows in this world the destruction of his pain, who has laid aside his burden and is liberated, him I call a Brāhmaṇa.33.

"गम्भीरपञ्ञं मेधाविं, मग्गामग्गस्स कोविदं।
उत्तमत्थमनुप्पत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/34॥

"Gambhīrapaññaṃ medhāviṃ, maggāmaggassa kovidaṃ;
Uttamatthamanuppattaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥34॥

"गम्भीरप्रज्ञं मेधाविनम्, मार्गामार्गस्य कोविदम्।
उत्तमार्थमनुप्राप्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥34॥

जो गम्भीर, प्रज्ञावाला, मेधावी, मार्ग-अमार्ग का ज्ञाता, उत्तम पदार्थ (सत्य) को प्राप्त हैं, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥34॥

'The man who has a profound understanding, who is wise, who knows the true way and the wrong way, who has attained the highest good, him I call a Brāhmaṇa.34.

"असंसट्ठं गहट्ठेहि, अनागारेहि चूभयं।
अनोकसारिमप्पिच्छम्, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/35॥

"Asaṃsaṭṭhaṃ gahaṭṭhehi, anāgārehi cūbhayaṃ;
Anokasārimappicchaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥35॥

"असंसृष्टं गृहस्थैः, अनागारैश्चोभयम्।
अनोकसारिणमल्पेच्छम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥35॥

घरवाले (गृहस्थ) और बेघरवाले दोनों ही में जो लिप्त नहीं होता, जो बिना ठिकाने के घूमता तथा अल्पेक्ष है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥35॥

'The man who does not mix with householders nor with the houseless, who wanders about without a house, and who has few wants, him I call a Brāhmaṇa.35.

"निधाय दण्डं भूतेसु, तसेसु थावरेसु च।
यो न हन्ति न घातेति, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/36॥

"Nidhāya daṇḍaṃ bhūtesu, tasesu thāvaresu ca;
Yo na hanti na ghāteti, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥36॥

"निधाय दण्डं भूतेषु, त्रसेषु स्थावरेषु च।
यो न हन्ति न घातयति, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥36॥

चर-अचर प्राणियों को जो न प्रताड़ित करे, न मारे और न मारने की प्रेरणा दे, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥36॥

'Whosoever, after refraining from hurting living creatures, those that tremble and those that are strong, does not kill or cause to be killed, him I call a Brāhmaṇa.36.

"अविरुद्धं विरुद्धेसु, अत्तदण्डेसु निब्बुतं।
सादानेसु अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/37॥

"Aviruddhaṃ viruddhesu, attadaṇḍesu nibbutaṃ;
Sādānesu anādānaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥37॥

"अविरुद्धं विरुद्धेषु, आत्मदण्डेषु निवृत्तम् ।
सादानेष्वनादानम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥37॥

जो विरोधियों के बीच विरोध-रहित रहता है, जो दंडधारियों के बीच दण्ड रहित है, संग्राहियों में जो संग्रहरहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥37॥

'The man who is not hostile amongst the hostile, who is peaceful amongst the violent, not seizing upon anything amongst those that seize upon everything, him I call a Brāhmaṇa.37.

"यस्स रागो च दोसो च, मानो मक्खो च पातितो।
सासपोरिव आरग्गा, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/38॥

"Yassa rāgo ca doso ca, māno makkho ca pātito;
Sāsaporiva āraggā, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥38॥

"यस्य रागश्च दोषश्च, मानो म्रक्षश्च पातित:।
सर्षप इवाऽऽराग्रात्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥38॥

आरे के ऊपर सरसों की भाँति जिसके चित्त से राग, द्वेष, मान, डाह फेंक दिये गये हैं, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥38॥

'The man whose passion and hatred, arrogance and hypocrisy have dropt like a mustard seed from the point of a needle, him I call a Brāhmaṇa.38.

"अकक्कसं विञ्ञापनिं, गिरं सच्चमुदीरये।
याय नाभिसजे कञ्चि, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/39॥

"Akakkasaṃ viññāpaniṃ, giraṃ saccamudīraye;
Yāya nābhisaje kañci, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥39॥

"अकर्कशां विज्ञापनीम्, गिरं सत्यमुदीरयेत् ।
यया नाभिसजेत् किंचित्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥39॥

(जो इस प्रकार की) अकर्कश, आदरयुक्त तथा सच्ची वाणी को बोले जिससे कुछ भी पीड़ा न होवे, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥39॥

'The man that utters true speech, instructive and free from harshness, by which he does not offend any one, him I call a Brāhmaṇa.39.

"योध दीघं व रस्सं वा, अणुं थूलं सुभासुभं।
लोके अदिन्नं नादियति, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/40॥

"Yodha dīghaṃ va rassaṃ vā, aṇuṃ thūlaṃ subhāsubhaṃ;
Loke adinnaṃ nādiyati, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥40॥

"य इह दीर्घं वा ह्रस्वं वाऽणुं स्थूलं शुभाशुभम् ।
लोकेऽदत्तं नादीयते, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥40॥

वस्तु चाहे दीर्घ हो या ह्रस्व, मोटी हो या पतली, शुभ हो या अशुभ, जो संसार में बिना दी चीज को नहीं लेता, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥40॥

'Whosoever in the world does not take what has not been given to him, be it long or short, small or large, good or bad, him I call a Brāhmaṇa.40.

"आसा यस्स न विज्जन्ति, अस्मिं लोके परम्हि च।
निरासासं विसंयुत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/41॥

"Āsā yassa na vijjanti, asmiṃ loke paramhi ca;
Nirāsāsaṃ visaṃyuttaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥41॥

"आशा: यस्य न विद्यन्तेऽस्मिन् लोके परस्मिञ्च ।
निराशयं विसंयुक्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥41॥

इस लोक और परलोक के विषय में जिसकी आशायें (चाह) नहीं रह गई है, जो आशारहित और आसक्ति रहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥41॥

'The man who has no desire for this world or the next, who is desireless and liberated, him I call a Brāhmaṇa.41.

"यस्सालया न विज्जन्ति, अञ्ञाय अकथंकथी।
अमतोगधमनुप्पत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/42॥

"Yassālayā na vijjanti, aññāya akathaṃkathī;
Amatogadhamanuppattaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥42॥

"यस्याऽलया: न विद्यन्ते, आज्ञाय *अकथंकथी* ।
अमृतावगधमनुप्राप्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥42॥

जिसको आलय (तृष्णा) नहीं है, जो भली प्रकार जानकर अकथ का कहने वाला है, जिसने गाढ़े अमृत को पा लिया; उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥42॥

'The man who has no desire, who through his knowledge is free from doubt and has attained the depth of immortality, him I call a Brāhmaṇa.42.

"योध पुञ्ञं च पापं च, उभो सङ्गमुपच्चगा।
असोकं विरजं सुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/43॥

"Yodha puññaṃ ca pāpaṃ ca, ubho saṅgamupaccagā;
Asokaṃ virajaṃ suddhaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥43॥

"य इह पुण्यञ्च पापञ्च, उभयो: सङ्गमुपत्यगात् ।
अशोकं विरजं शुद्धम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥43॥

जिसने यहाँ पुण्य और पाप दोनों की आसक्ति को छोड़ दिया, जो शोक रहित, निर्मल, और शुद्ध है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥43॥

'Whosoever in this world has overcome good and evil, both ties, who is free from grief and defilement and is pure, him I call a Brāhmaṇa.43.

"चन्दं व विमलं सुद्धं, विप्पसन्नमनाविलं।
नन्दीभवपरिक्खीणं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/44॥

"Candaṃ va vimalaṃ suddhaṃ, vippasannamanāvilaṃ;
Nandībhavaparikkhīṇaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.। 44॥

"चन्द्र इव विमलं शुद्धम्, विप्रसन्नमनाविलम् ।
नन्दीभवपरिक्षीणम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥44॥

जो चन्द्रमा की भाँति विमल, शुद्ध, स्वच्छ=अनाविल है, तथा जिसकी सभी जन्मों की तृष्णा नष्ट हो गयी है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥44॥

'The man that is stainless like the moon, pure, serene and undisturbed, who has destroyed joy, him I call a Brāhmaṇa.44.

"योमं पलिपथं दुग्गं, संसारं मोहमच्चगा।

तिण्णो पारङ्गतो झायी, अनेजो अकथंकथी।

अनुपादाय निब्बुतो, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/45॥

"Yomaṃ palipathaṃ duggaṃ, saṃsāraṃ mohamaccagā;
Tiṇṇo pāraṅgato jhāyī, anejo akathaṃkathī;
Anupādāya nibbuto, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥45॥

"य इमं प्रतिपथं दुर्गम्, संसारं मोहमत्यगात् ।

तीर्णं पारंगतो ध्यायी, अनेजोऽ*कथंकथी* ।

अनुपादाय निवृत्तः, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥45॥

जिसने इस दुर्गम संसार, (जन्म-मरण) के चक्कर में डालने वाले मोह रूपी उलटे मार्ग को त्याग दिया, तो संसार से पारंगत, ध्यानी तथा तीर्ण (तर गया) है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥45॥

'Whosoever has passed over this quagmire difficult to pass, who has passed over revolution samsara and folly, who has crossed over, who has reached the other shore, who is meditative, free from desire and doubt, calm without seizing upon anything, him I call a Brāhmaṇa. 45.

"योध कामे पहन्त्वान, अनागारो परिब्बजे।

कामभवपरिक्खीणं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/46॥

"Yodha kāme pahantvāna, anāgāro paribbaje;
Kāmabhavaparikkhīṇaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥46॥

"य इह कामान् प्रहायाऽनागारः परिव्रजेत् ।

कामभवपरिक्षीणम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥46॥

जो यहाँ भोगों को छोड़, बेघर हो प्रव्रजित (संन्यासी) हो गया है, जिसके भोग और जन्म नष्ट हो गये, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥46॥

'Whosoever in this world, after abandoning sensual pleasures, wanders about houseless and has destroyed the existence of sensual pleasures, him I call a Brāhmaṇa.46.

"योध तण्हं पहन्त्वान, अनागारो परिब्बजे।

तण्हाभवपरिक्खीणं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/47॥

"Yodha taṇhaṃ pahantvāna, anāgāro paribbaje;
Taṇhābhavaparikkhīṇaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥47॥

"य इह तृष्णां प्रहायाऽनागारः परिव्रजेत् ।

तृष्णाभवपरिक्षीणम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥47॥

जो जहाँ तृष्णा को छोड़, बेघर होकर प्रव्रजित है, जिसके तृष्णा और पुर्नजन्म नष्ट हो गये, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥47॥

'Whosoever in this world, after abandoning craving, wanders about houseless and has destroyed the existence of desire, him I call a Brāhmaṇa.47.

"हित्वा मानुसकं योगं, दिब्बं योगं उपच्चगा।

सब्बयोगविसंयुत्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/48॥

"Hitvā mānusakaṃ yogaṃ, dibbaṃ yogaṃ upaccagā;
Sabbayogavisaṃyuttaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥48॥

"हित्वा मानुषकं योगम्, दिव्यं योगमुपत्यगात् ।
सर्वयोगविसंयुक्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥48॥

मानुष्य भोगों के बन्धन को छोड़ दिव्य भोगों के बन्धन को भी जिसने त्याग दिया, सारे ही बन्धनों में जिसकी आसक्ति नहीं है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥48॥

'Whosoever, after leaving human attachment yoga, has overcome divine attachment and is liberated from all attachment, him I call a Brāhmaṇa.48.

"हित्वा रतिं च अरतिं, सीतिभूतं निरूपधिं।
सब्बलोकाभिभुं वीरं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/49॥

"Hitvā ratiṃ ca aratiṃ, sītibhūtaṃ nirūpadhiṃ;
Sabbalokābhibhuṃ vīraṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥49॥

"हित्वा रतिञ्चारतिञ्च, शीतीभूतं निरूपधिम् ।
सर्वलोकाऽभिभुवं वीरम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥49॥

रति और अरति (उदासी) को छोड़, जो शीतल-स्वभाव तथा क्लेशरहित है, जो ऐसा सर्वलोकविजयी, वीर है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥49॥

'The man that, after leaving pleasure and disgust, is calm and free from the elements of existence nirupadhi, who is Veer, and has conquered all the world, him I call a Brāhmaṇa.49.

"चुतिं यो वेदितानं, उपपतिं च सब्बसो।
असत्तं सुगतं बुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/50॥

"Cutiṃ yo vedittānaṃ, upapattiṃ ca sabbaso;
Asattaṃ sugataṃ buddhaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥50॥

"च्युतिं योऽवेदीदात्मनाम् उपपत्तिञ्च सर्वशः।
असक्तं सुगतं बुद्धम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥50॥

जो प्राणियों की च्युति (मृत्यु) और उत्पत्ति को भली प्रकार जानता है, जो आसक्ति-रहित सुगत (सुन्दर गति को प्राप्त) और बुद्ध (ज्ञानी) है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥50॥

'Whosoever knows wholly the vanishing and reappearance of beings, does not cling to anything, is happy (Sugata), and enlightened, him I call a Brāhmaṇa.50.

"यस्स गतिं न जानन्ति, देवा गन्धब्बमानुसा।
खीणासवं अरहन्तं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/51॥

"Yassa gatiṃ na jānanti, devā gandhabbamānusā;
Khīṇāsavaṃ arahantaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥51॥

"यस्य गतिं न जानन्ति, देव-गन्धर्व-मानुषाः ।
क्षीणास्रवम् अर्हन्तम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥51॥

जिसकी गति को देवता, गन्धर्व और मनुष्य नहीं जानते, क्षीणास्रव (रागादिरहित) और अर्हत् है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥51॥

'The man whose way neither gods nor Gandhabba nor men know and whose passions are destroyed, who is a saint, him I call a Brāhmaṇa.51.

"यस्स पुरे च पच्छा च, मज्झे च नत्थि किञ्चनं।

अकिञ्चनं अनादानं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/52॥

"Yassa pure ca pacchā ca, majjhe ca natthi kiñcanaṃ;

Akiñcanaṃ anādānaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥52॥

"यस्य पुरश्च पश्चाच्च, मध्ये च नास्ति किञ्चन ।

अकिञ्चनमनादानम्, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥52॥

जिसके पूर्व और पश्चात् और मध्य में कुछ नहीं है, जो परिग्रह-रहित=आदान-रहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥52॥

'The man for whom there is nothing, neither before nor after nor in the middle, who possesses nothing, and does not seize upon anything, him I call a Brāhmaṇa.52.

"उसभं पवरं वीरं, महेसिं विजिताविनं।

अनेजं न्हातकं बुद्धं, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/53॥

"Usabhaṃ pavaraṃ vīraṃ, mahesiṃ vijitāvinaṃ;

Anejaṃ nhātakaṃ buddhaṃ, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥53॥

"ऋषभं प्रवरं *वीरम्*, महर्षिं विजितवन्तम् ।

अनेजं स्नातकं *बुद्धम्*, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥53॥

जो ऋषभ=श्रेष्ठ, प्रवर, महर्षि, विजेता, अकम्प्य, स्नातक और बुद्ध हैं, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥53॥

'The man that is undaunted like a bull, who is eminent, a hero, a great sage mahesi, victorious, free from desire, purified, enlightened, him I call a Brāhmaṇa.53.

"पुब्बेनिवासं यो वेदि, सग्गापायं च पस्सति।

अथो जातिक्खयं पत्तो, तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥3/9/54॥

"Pubbenivāsaṃ yo vedi, saggāpāyaṃ ca passati;

Atho jātikkhayaṃ patto, tamahaṃ brūmi brāhmaṇaṃ.॥54॥

"पूर्वनिवासं योऽवेदीत्, स्वर्गाऽपायञ्च पश्यति ।

अथ जातिक्षयं प्राप्तः, तमहं ब्रवीमि ब्राह्मणम्॥54॥

जो पूर्व जन्म को जानता है, स्वर्ग और कुगति को देखता है और जिसका पुनर्जन्म क्षीण हो गया, जो अभिज्ञा-परायण मुनि है। सारे कृत्य जिसके समाप्त हो गये हैं, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ॥54॥

'The man who knows his former dwellings, who sees both heaven and hell and has reached the destruction of births, him I call a Brāhmaṇa.54.

"समञ्ञा हेसा लोकस्मिं, नामगोत्तं पकप्पितं।

सम्मुच्चा समुदागतं, तत्थ तत्थ पकप्पितं॥3/9/55॥

"Samaññā hesā lokasmiṃ, nāmagottaṃ pakappitaṃ;

Sammuccā samudāgataṃ, tattha tattha pakappitaṃ.॥55॥

"संज्ञा हि एषा लोके, नामगोत्रं प्रकल्पितम् ।
सम्मुच्यात् समुदागतम्, तत्र तत्र कल्पितम्॥। 55॥

लोक में यह सज्ञायें हैं, यह कल्पित नाम-गोत्र हैं। वहाँ-वहाँ कल्पित करके लोक-व्यवहार से चला आया है॥55॥

'For what has been designated as "name" and "family" in the world is only a term, what has been designated here and there is understood by common consent.55.

"दीघरत्तमनुसयितं, दिट्ठिगतमजानतं।
अजानन्ता नो पब्रुवन्ति, जातिया होति ब्राह्मणो॥3/9/56॥

"Dīgharattamanusayitaṃ, diṭṭhigatamajānataṃ;
Ajānantā no pabruvanti, jātiyā hoti brāhmaṇo.॥56॥

"दीर्घरात्रिमनुशयितम्, दृष्टिगतमजानन्तम् ।
अजानन्त: न प्रब्रुवन्ति, जात्या भवति ब्राह्मण:॥56॥

अज्ञों की धारणा में चिर काल से यह घुसा हुआ है जानने वाले नहीं कहते– 'ब्राह्मण जन्म से होता है'॥56॥

'Adhered to for a long time are the views of the ignorant, the ignorant tell us, one is a Brāhmaṇa by birth.56.

"न जच्चा ब्राह्मणो होति, न जच्चा होति अब्राह्मणो।
कम्मुना ब्राह्मणो होति, कम्मुना होति अब्राह्मणो॥3/9/57॥

"Na jaccā brāhmaṇo hoti, na jaccā hoti abrāhmaṇo;
Kammunā brāhmaṇo hoti, kammunā hoti abrāhmaṇo.॥57॥

"न जात्या ब्राह्मणो भवति, न जात्या भवति अब्राह्मण: ।
कर्मणा ब्राह्मणो भवति, कर्मणा भवति अब्राह्मण:॥57॥

जन्म से न ब्राह्मण होता है, न जन्म से अ-ब्राह्मण । कर्म से ब्राह्मण होता है, और कर्म से अ-ब्राह्मण॥57॥

'Not by birth is one a Brāhmaṇa, nor is one by birth no Bràhmana; by work one is a Brāhmaṇa, by work one is no Brāhmaṇa.57.

"कस्सको कम्मुना होति, सिप्पिको होति कम्मुना।
वाणिजो कम्मुना होति, पेस्सिको होति कम्मुना॥3/9/58॥

"Kassako kammunā hoti, sippiko hoti kammunā;
Vāṇijo kammunā hoti, pessiko hoti kammunā.॥58॥

"कृषक: कर्मणा भवति, शिल्पको भवति कर्मणा ।
वणिक् कर्मणा भवति, प्रेष्यको भवति कर्मणा॥58॥

कर्म से कृषक होता है, और कर्म से शिल्पी। कर्म से बनिया होता है, और कर्म से प्रेष्यक॥58॥

'I work one is a farmer, by work one is an artisan, by work one is a merchant, by work one is a massanger.58.

"चोरो पि कम्मुना होति, योधाजीवो पि कम्मुना।
याजको कम्मुना होति, राजापि होति कम्मुना॥3/9/59॥

"Coro pi kammunā hoti, yodhājīvo pi kammunā;
Yājako kammunā hoti, rājāpi hoti kammunā.॥59॥

"चौरोऽपि कर्मणा भवति, युद्धाजीवोऽपि कर्मणा ।
याजक: कर्मणा भवति, राजाऽपि भवति कर्मणा॥59॥

कर्म से चोर होता है, युद्धाजीवी भी कर्म से । कर्म से याजक होता है, और राजा भी कर्म से॥59॥

'By work one is a thief, by work one is a soldier, by work one is a sacrificer, by work one is a king.59.

"एवमेतं यथाभूतं, कम्मं पस्सन्ति पण्डिता।
पटिच्चसमुप्पाददस्सा, कम्मविपाककोविदा॥3/9/60॥

"Evametaṃ yathābhūtaṃ, kammaṃ passanti paṇḍitā;
Paṭiccasamuppādadassā, kammavipākakovidā.॥60॥

"एवमेतत् यथाभूतम्, कर्म पश्यन्ति पण्डिता: ।
प्रतीत्यसमुत्पादद्रष्टार:*, कर्मविपाककोविदा:॥60॥

प्रतीत्य-समुत्पाद-दर्शी और कर्म-विपाक-कोविद, पंडित जन इस प्रकार कर्म को यथार्थ से जानते हैं॥60॥

'So the wise, who see the cause of things and understand the result of work, know this work as it really is.60.

* कार्य-कारण नियमों से सभी चीजें उत्पन्न है–यह सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद है।

"कम्मुना वत्तति लोको, कम्मुना वत्तति पजा।
कम्मनिबन्धना सत्ता, रथस्साणीव यायतो॥3/9/61॥

"Kammunā vattati loko, kammunā vattati pajā;
Kammanibandhanā sattā, rathassāṇīva yāyato.॥61॥

"कर्मणा वर्तते लोक:, कर्मणा वर्तते प्रजा ।
कर्मनिबन्धना: सत्त्वा:, रथस्याणीव यायत:॥61॥

लोक कर्म से चल रहा है, प्रजा कर्म से चल रही है । चलते हुए रथ के चक्के की आणी की भाँति प्राणी कर्म में बँधे हैं॥61॥

'By work the world exists, by work mankind exists, beings are bound by work as the linch-pin of the rolling cart.61.

"तपेन ब्रह्मचरियेन, संयमेन दमेन च।
एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमं॥3/9/62॥

"Tapena brahmacariyena, saṃyamena damena ca;
Etena brāhmaṇo hoti, etaṃ brāhmaṇamuttamaṃ.॥62॥

"तपसा ब्रह्मचर्येण, संयमेन दमेन च ।
एतेन ब्राह्मणो भवति, एतद् ब्राह्मणमुत्तमम्॥62॥

तप, ब्रह्मचर्य, संयम और दम, इनसे ब्राह्मण होता है, यही उत्तम ब्राह्मण हैं॥62॥

'By penance, by a religious life,by self-restraint, and by temperance, by this one is a Brāhmaṇa, such a one they call the best Brāhmaṇa.62.

"तीहि विज्जाहि सम्पन्नो, सन्तो खीणपुनब्भवो।
एवं वासेट्ठ जानाहि, ब्रह्मा सक्को विजानतं''ति॥3/9/63॥

"Tīhi vijjāhi sampanno, santo khīṇapunabbhavo;
Evaṃ vāseṭṭha jānāhi, brahmā sakko vijānataṃ"ti.॥63॥

"त्रीभि: विद्याभि: सम्पन्न:, सन्त: क्षीणपुनर्भव:।
एवं *वासेट्ठ* ! जानीहि, ब्रह्मा शक्र: विजानताम्" इति॥63॥

तीन विद्याओं से युक्त, शान्त और पुनर्जन्म-रहित, वासेट्ठ ! ऐसों को तुम विज्ञों के ब्रह्मा और शक्र जानो॥

'He who is endowed with the threefold knowledge, is calm and has destroyed regeneration,—know this, O Vaseṭṭha,—he is to the wise Brahman and Sakka.'63.

एवं वुत्ते, वासेट्ठभारद्वाजा माणवा भगवन्तं एतदवोचुं– ''अभिक्कन्तं, भो गोतम...पे.... एते मयं भगवन्तं गोतमं सरणं गच्छाम धम्मं च भिक्खुसङ्घं च, उपासके नो भवं गोतमो धारेतु अज्जतग्गे पाणुपेते सरणं गते''ति।

Evaṃ vutte, vāseṭṭhabhāradvājā māṇavā bhagavantaṃ etadavocuṃ – "abhikkantaṃ, bho gotama...pe... etaāvām bhagavantaṃ gotamaṃ saraṇaṃ gachacava dharamaṃa ca bhikhusañaghaṃa ca upāsake no bhavaṃ gotamo dhāretu ajjatagge pāṇupete saraṇaṃ gate"ti.

एवमुक्ते, *वासेट्ठभारद्वाजौ* माणवकौ भगवन्तमेतदवोचताम्– "अभिकान्तम्, भो गौतम! ... *पे.* .....एते आवां भगवन्तं *गौतमं* शरणं गच्छाव: धर्मञ्च भिक्षुसंघञ्च, उपासकौ नौ भवान् *गौतम:* धारयेत् अद्यतोऽग्रे प्राणोपेतौ शरणं गतौ" इति ।

ऐसा कहने पर वासेट्ठ और भारद्वाज माणवकों ने भगवान् से यह कहा– "आश्चर्य ! हे गौतम ! आश्चर्य! हे गौतम! जैसे औंधे को सीधाकर दे ... यह हम आप गौतम की शरण जाते हैं, धर्म और भिक्षु-संघ की भी । आप गौतम आज से प्राणपर्यन्त हमें अंजलिबद्ध शरणागत उपासक स्वीकार करें ।

This having been said, the young men Vaseṭṭha and Bharadvaja spoke to Bhagavān as following: 'It is excellent, O venerable Gotama! .....Pe.....we take refuge in the venerable Gotama, in the Dhamma, and in the sangha of Bhikkhus; may the venerable Gotama receive us as followers upasaka, who from this day for life have taken refuge in him.'

वासेट्ठसुत्तं निट्ठितं
(Vāseṭṭhasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3,10) कोकालिकसुत्तं (Kokālikasuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे। अथ खो कोकालिको भिक्खु येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं निसीदि। एकमन्तं निसिन्नो खो कोकालिको भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – ''पापिच्छा, भन्ते, सारिपुत्तमोग्गल्लाना, पापिकानं इच्छानं वसं गता''ति। एवं वुत्ते, भगवा कोकालिकं भिक्खुं एतदवोच – ''माहेवं, कोकालिक, माहेवं, कोकालिक! पसादेहि, कोकालिक, सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु चित्तं। पेसला सारिपुत्तमोग्गल्लाना''ति।

दुतियं पि खो...पे.... ततियं पि खो कोकालिको भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – ''किञ्चापि मे, भन्ते, भगवा सद्धायिको पच्चयिको, अथ खो पापिच्छाव सारिपुत्तमोग्गल्लाना, पापिकानं इच्छानं वसं गता''ति। ततियं पि खो भगवा कोकालिकं भिक्खुं एतदवोच – ''मा हेवं, कोकालिक , मा हेवं, कोकालिक! पसादेहि, कोकालिक, सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु चित्तं। पेसला सारिपुत्तमोग्गल्लाना''ति।

अथ खो कोकालिको भिक्खु उट्ठायासना भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा पक्कामि। अचिरप्पक्कन्तस्स च कोकालिकस्स भिक्खुनो सासपमत्तीहि पिळकाहि सब्बो कायो फुटो अहोसि; सासपमत्तियो हुत्वा मुग्गमत्तियो अहेसुं; मुग्गमत्तियो हुत्वा कळायमत्तियो अहेसुं; कळायमत्तियो हुत्वा कोलट्ठिमत्तियो अहेसुं; कोलट्ठिमत्तियो हुत्वा कोलमत्तियो अहेसुं; कोलमत्तियो हुत्वा आमलकमत्तियो अहेसुं; आमलकमत्तियो हुत्वा बेळुवसलाटुकमत्तियो अहेसुं; बेळुवसलाटुकमत्तियो हुत्वा बिल्लमत्तियो अहेसुं; बिल्लमत्तियो हुत्वा पभिज्जिंसु; पुब्बञ्च लोहितञ्च पग्घरिंसु। अथ खो कोकालिको भिक्खु तेनेवाबाधेन कालमकासि। कालङ्कतो च कोकालिको भिक्खु पदुमं निरयं उपपज्जि सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु चित्तं आघातेत्वा ।

अथ खो ब्रह्मा सहम्पति अभिक्कन्ताय रत्तिया अभिक्कन्तवण्णो केवलकप्पं जेतवनं ओभासेत्वा येन भगवा तेनुपसङ्कमि; उपसङ्कमित्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा एकमन्तं अट्ठासि । एकमन्तं, ठितो खो ब्रह्मा सहम्पति भगवन्तं एतदवोच – ''कोकालिको, भन्ते, भिक्खु कालङ्कतो; कालङ्कतो च, भन्ते, कोकालिको भिक्खु पदुमं निरयं उपपन्नो सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु चित्तं आघातेत्वा''ति। इदमवोच ब्रह्मा सहम्पति; इदं वत्वा भगवन्तं अभिवादेत्वा पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायि। अथ खो भगवा तस्सा रत्तिया अच्चयेन भिक्खू आमन्तेसि – ''इमं, भिक्खवे, रत्तिं ब्रह्मा सहम्पति अभिक्कन्ताय रत्तिया...पे.... इदमवोच, भिक्खवे, ब्रह्मा सहम्पति, इदं वत्वा मं पदक्खिणं कत्वा तत्थेवन्तरधायी''ति।

एवं वुत्ते, अञ्ञतरो भिक्खु भगवन्तं एतदवोच – ''कीवदीघं नु खो, भन्ते, पदुमे निरये आयुप्पमाणं''ति? ''दीघं खो, भिक्खु, पदुमे निरये आयुप्पमाणं; तं न सुकरं सङ्खातुं एत्तकानि वस्सानि इति वा एत्तकानि वस्ससतानि इति वा एत्तकानि वस्ससहस्सानि इति वा एत्तकानि वस्ससतसहस्सानि इति वा''ति। ''सक्का पन, भन्ते, उपमा कातुं''ति? ''सक्का, भिक्खू''ति भगवा अवोच –

''सेय्यथापि, भिक्खु, वीसतिखारिको कोसलको तिलवाहो; ततो पुरिसो वस्ससतस्स वस्ससतस्स अच्चयेन एकमेकं तिलं उद्धरेय्य। खिप्पतरं खो सो भिक्खु वीसतिखारिको कोसलको तिलवाहो इमिना उपक्कमेन परिक्खयं परियादानं गच्छेय्य, नत्वेव एको अब्बुदो निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति अब्बुदा निरया एवमेको निरब्बुदो निरयो। सेय्यथापि,

भिक्खु, वीसति निरब्बुदा निरया एवमेको अबबो निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति अबबा निरया एवमेको अहहो निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति अहहा निरया एवमेको अटटो निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति अटटा निरया एवमेको कुमुदो निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति कुमुदा निरया एवमेको सोगन्धिको निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति सोगन्धिका निरया एवमेको उप्पलको निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति उप्पलका निरया एवमेको पुण्डरीको निरयो। सेय्यथापि, भिक्खु, वीसति पुण्डरीका निरया एवमेको पदुमो निरयो। पदुमं खो पन भिक्खु निरयं कोकालिको भिक्खु उपपन्नो सारिपुत्तमोग्गल्लानेसु चित्तं आघातेत्वा''ति। इदमवोच भगवा, इदं वत्वान सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था–

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati jetavane anāthapiṇḍikassa ārāme. Atha kho kokāliko bhikkhu yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ abhivādetvā ekamantaṃ nisīdi. Ekamantaṃ nisinno kho kokāliko bhikkhu bhagavantaṃ etadavoca – "pāpicchā, bhante, sāriputtamoggallānā, pāpikānaṃ icchānaṃ vasaṃ gatā"ti. Evaṃ vutte, bhagavā kokālikaṃ bhikkhuṃ etadavoca – "mā hevaṃ, kokālika, mā hevaṃ, kokālika! Pasādehi, kokālika, sāriputtamoggallānesu cittaṃ. Pesalā sāriputtamoggallānā"ti.

Dutiyaṃ pi kho…pe… tatiyaṃ pi kho kokāliko bhikkhu bhagavantaṃ etadavoca – "kiñcāpi me, bhante, bhagavā saddhāyiko paccayiko, atha kho pāpicchāva sāriputtamoggallānā, pāpikānaṃ icchānaṃ vasaṃ gatā"ti. Tatiyaṃ pi kho bhagavā kokālikaṃ bhikkhuṃ etadavoca – "mā hevaṃ, kokālika, mā hevaṃ, kokālika! Pasādehi, kokālika, sāriputtamoggallānesu cittaṃ. Pesalā sāriputtamoggallānā"ti.

Atha kho kokāliko bhikkhu uṭṭhāyāsanā bhagavantaṃ abhivādetvā padakkhiṇaṃ katvā pakkāmi. Acirappakkantassa ca kokālikassa bhikkhuno sāsapamattīhi piḷakāhi sabbo kāyo phuṭo ahosi; sāsapamattiyo hutvā muggamattiyo ahesuṃ; muggamattiyo hutvā kaḷāyamattiyo ahesuṃ; kaḷāyamattiyo hutvā kolaṭṭhimattiyo ahesuṃ; kolaṭṭhimattiyo hutvā kolamattiyo ahesuṃ; kolamattiyo hutvā āmalakamattiyo ahesuṃ; āmalakamattiyo hutvā beḷuvasalāṭukamattiyo ahesuṃ; beḷuvasalāṭukamattiyo hutvā billamattiyo ahesuṃ; billamattiyo hutvā pabhijjiṃsu; pubbañca lohitañca paggahariṃsu. Atha kho kokāliko bhikkhu tenevābādhena kālamakāsi. Kālaṅkato ca kokāliko bhikkhu padumaṃ nirayaṃ upapajji sāriputtamoggallānesu cittaṃ āghātetvā . Atha kho brahmā sahampati abhikkantāya rattiyā abhikkantavaṇṇo kevalakappaṃ jetavanaṃ obhāsetvā yena bhagavā tenupasaṅkami; upasaṅkamitvā bhagavantaṃ abhivādetvā ekamantaṃ aṭṭhāsi . Ekamantaṃ, ṭhito kho brahmā sahampati bhagavantaṃ etadavoca – "kokāliko, bhante, bhikkhu kālaṅkato; kālaṅkato ca, bhante, kokāliko bhikkhu padumaṃ nirayaṃ upapanno sāriputtamoggallānesu cittaṃ āghātetvā"ti. Idamavoca brahmā sahampati; idaṃ vatvā bhagavantaṃ abhivādetvā padakkhiṇaṃ katvā tatthevantaradhāyi.

Atha kho bhagavā tassā rattiyā accayena bhikkhū āmantesi – "imaṃ, bhikkhave, rattiṃ brahmā sahampati abhikkantāya rattiyā…pe… idamavoca, bhikkhave, brahmā sahampati, idaṃ vatvā maṃ padakkhiṇaṃ katvā tatthevantaradhāyī"ti.

Evaṃ vutte, aññataro bhikkhu bhagavantaṃ etadavoca – "kīvadīghaṃ nu kho, bhante, padume niraye āyuppamāṇaṃ"ti? "Dīghaṃ kho, bhikkhu, padume niraye āyuppamāṇaṃ; taṃ na sukaraṃ saṅkhātuṃ ettakāni vassāni iti vā ettakāni vassasatāni iti vā ettakāni vassasahassāni iti vā ettakāni vassasatasahassāni iti vā"ti. "Sakkā pana, bhante, upamā kātuṃ"ti? "Sakkā, bhikkhū"ti bhagavā avoca–

"Seyyathāpi, bhikkhu, vīsatikhāriko kosalako tilavāho; tato puriso vassasatassa vassasatassa accayena ekamekaṃ tilaṃ uddhareyya. Khippataraṃ kho so bhikkhu vīsatikhāriko kosalako tilavāho iminā upakkamena parikkhayaṃ pariyādānaṃ gaccheyya, natveva eko abbudo nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati abbudā nirayā evameko nirabbudo nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu,

vīsati nirabbudā nirayā evameko ababo nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati ababā nirayā evameko ahaho nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati ahahā nirayā evameko aṭaṭo nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati aṭaṭā nirayā evameko kumudo nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati kumudā nirayā evameko sogandhiko nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati sogandhikā nirayā evameko uppalako nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati uppalakā nirayā evameko puṇḍarīko nirayo. Seyyathāpi, bhikkhu, vīsati puṇḍarīkā nirayā evameko padumo nirayo. Padumaṃ kho pana bhikkhu nirayaṃ kokāliko bhikkhu upapanno sāriputtamoggallānesu cittaṃ āghātetvā"ti. Idamavoca bhagavā, idaṃ vatvāna sugato athāparaṃ etadavoca satthā –

एवं मया श्रुतम् । एकस्मिन् समये भगवान् *सावत्थ्यां* विहरति *जेतवने अनाथपिण्डिकस्याऽऽरामे* । अथ खलु *कोकालिको* भिक्षु: यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्, उपसंक्रम्य भगवन्तमभिवाद्य एकान्तं न्यसदत्। एकान्तं निषण्ण: खलु *कोकालिको* भिक्षु: भगवन्तमेतदवोचत्– "पापेच्छुकौ, *भन्ते* ! *सारिपुत्तमोग्गल्लानौ*, पापिकानामिच्छानां वशंगतौ" इति । एवमुक्ते भगवान् *कोकालिकं* भिक्षुमेतदवोचत्– "मा एवमाह, *कोकालिक:*, मा एवमाह, *कोकालिक !* प्रसादय *कोकालिक: सारिपुत्तमोग्गल्लानयो*: चित्तम्, पेशलौ *सारिपुत्तमोग्गल्लानौ* " इति ।

द्वितीयमपि खलु .....*पे0*..... *तृतीयमपि कोकालिको* भिक्षु: भगवन्तमेतदवोचत्– "किञ्चापि मे, *भन्ते* ! भगवान् श्रद्धायक:, प्रत्यायक:, अथ खलु पापेच्छुकाविव *सारिपुत्त-मोग्गल्लानौ*, पापिकानामिच्छानां वशंगतौ" इति । तृतीयमपि खलु भगवान् *कोकालिकं* भिक्षुमेतदवोचत्– "मा एवमाह, *कोकालिक !* मा एवमाह, *कोकालिक !* प्रसादय, *कोकालिक ! सारिपुत्त-मोग्गल्लान*यो: चित्तम् । पेशलौ *सारिपुत्त-मोग्गल्लानौ* " इति ।

अथ खलु कोकालिको भिक्षु उत्थायाऽऽसनात् भगवन्तमभिवाद्य प्रदक्षिणां कृत्वा प्राक्रमीत् । अचिरं प्रक्रान्तस्य च *कोकालिकस्य* भिक्षो: सर्षपमात्रपीलकाभि: सर्व: काय: स्फुटोऽभूत् सर्षपमात्रिका: भूत्वा मुद्गमात्रिका अभूवन्, मुद्गमात्रिका: भूत्वा कलायमात्रिका अभूवन्, कलायमात्रिका: भूत्वा कोलास्थिमात्रिका अभूवन्, कोलास्थिमात्रिका: भूत्वा कोलमात्रिका अभूवन्, कोलमात्रिका: भूत्वा आमलकमात्रिका अभूवन्, आमलकमात्रिका: भूत्वा तरुणबिल्वमात्रिका अभूवन्, तरुणबिल्वमात्रिका: भूत्वा बिल्वमात्रिका अभूवन् । बिल्वमात्रिका: भूत्वा प्राभिन्दिषु:, पूयञ्च लोहितञ्च प्राघौत्सु: । अथ खलु *कोकालिको* भिक्षु: तेनैवाबाधेन कालमकार्षीत् । कालङ्कृतश्च *कोकालिको* भिक्षु: पद्मनिरयमुपापादि *सारिपुत्त-मोग्गल्लानयो:* चित्तमाहत्य ।

अथ खलु ब्रह्मा सहम्पति: अभिक्रान्तायां रात्रौ अभिकान्तवर्ण: केवलकल्पं *जेतवन*मवभास्य यत्र भगवान् तत्रोपसमक्रमीत्; उपसंक्रम्य भगवन्तमभिवाद्य एकान्तमस्थात् । एकान्तं स्थित: खलु ब्रह्मा *सहम्पति:* भगवन्तमेतदवोचत्– "*कोकालिक* ! *भन्ते* !! भिक्षु: कालंकृत:, कालङ्कृतश्च, *भन्ते*! *कोकालिक* ! भिक्षु पद्मनिरयमुपपन्न: *सारिपुत्र-मोग्गल्लानयो:* चित्तमाहत्य" इति । इदमवोचत् *ब्रह्मा सहम्पति:*; इदमुक्त्वा भगवन्तमभिवाद्य प्रदक्षिणां कृत्वा तत्र एव अन्तरध्यासीत् । अथ खलु भगवान् तस्यां रात्र्याम् अत्ययेन भिक्षून् आमन्त्रयत–"भिक्षव: ! इमां रात्रिं अस्यां ब्रह्मा सहम्पति: अभिक्रान्तायां रात्र्याम्.....*पे0* ..... इदमवोचत्, ब्रह्मा *सहम्पति:*, इदम् उक्त्वा भिक्षव: ! प्रदक्षिणां कृत्वा तत्र एव अन्तरध्यासीत्" इति ।

एवमुक्ते अन्यतरो भिक्षुः भगवन्तमेतदवोचत्–कियत् दीर्घं नु खलु, भन्ते! पद्मे निरये आयुः प्रमाणमात्रम्" इति ? "दीर्घं खलु, भिक्षो ! पद्मे निरये आयुप्रमाणम्, तं न सुकरं संख्यातुम् इयत्तानि वर्षाणीति वा, इयत्तानि वर्षशतानीति वा, इयत्तानि वर्षसहस्राणीति वा" इयत्तानि वर्षशतसहस्राणीति वा" इति। "शक्यः पुनः, *भन्ते* ! उपमा कर्तुम्" इति ? "शक्यः भिक्षवः !" इति भगवान् अवोचत् – "तद्यथापि, भिक्षो ! विंशतिखारिकः कोसलकः तिलवाहः, ततः पुरुषः वर्षसहस्राय अत्ययेन एकमेकं तिलमुद्धरेत्, क्षिप्रतरं खलु स भिक्षुः विंशतिखारिको कोसलकः तिलवाह अनेनोपक्रमेण परिक्षयं पर्यादानं गच्छेत्, न त्वेवम् एकोऽर्ब्बुदो निरयः । तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति-अर्बुदाः निरया एवम् एको निरर्बुदो निरयः । तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति निर्बुदाः निरयः एवमेकोऽबबो निरयः। तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति अर्बुदाः निरयाः एवमेकोऽहो निरयः। तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति-अहहाः निरया एवमेकोऽटटो निरयः । तद्यथापि भिक्षो ! विंशतिः अटटाः निरया एवमेको कुमुदो निरयः । तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति-कुमुदाः निरयाः एकमेको सौगन्धिकः निरयः। तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति-सौगन्धिकाः निरया एवमेको *उप्पलको* निरयः । तद्यथापि, भिक्षो ! विंशति-उप्पलकाः निरया एवमेको पुण्डरीको निरयः । तद्यथापि भिक्षो ! विंशतिपुण्डरीकाः निरया एवमेको पद्मो निरयः। पद्मं खलु पुनः भिक्षो ! निरये *कोकालिको* भिक्षो ! उपपन्नः *सारिपुत्तमोग्गल्लानयोः* चित्तमाहत्य" इति । इदमवोचत् भगवान्, इदमुक्त्वा *सुगतो*ऽथापरमेतदवोचत् शास्ता–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार कर रहे थे। कोकालिक भिक्षु जहाँ भगवान् थे, वहाँ गया, जाकर भगवान् को प्रणाम कर एक ओर बैठ गया । एक ओर बैठे कोकालिक भिक्षु ने भगवान् से कहा– "भन्ते ! सारिपुत्त और मौद्गल्यायन बुरे विचार वाले हैं, बुरी इच्छाओं के वशीभूत हैं ।" ऐसा कहने पर भगवान् ने कोकालिक भिक्षु को यह कहा–कोकालिक ! ऐसा मत कहो, कोकालिक ! ऐसा मत कहो। कोकालिक ! सारिपुत्त और मौद्गल्यायन पर अपना चित्त प्रसन्न करो । सारिपुत्त और मौद्गल्यायन उत्तम हैं।"

दूसरी बार भी कोकालिक भिक्षु ने भगवान् से यह कहा– "भन्ते! यद्यपि मैं भगवान् पर श्रद्धा रखता हूँ और प्रसन्न हूँ, फिर भी सारिपुत्त और मौद्गल्यायन बुरे विचार वाले हैं, बुरी इच्छाओं के वशीभूत हैं।" दूसरी बार भी भगवान् ने कोकालिक भिक्षु से यह कहा–"कोकालिक! ऐसा मत कहो, कोकालिक! ऐसा मत कहो। कोकालिक ! सारिपुत्त और मौद्गल्यायन पर अपना चित्त प्रसन्न करो। सारिपुत्त और मौद्गल्यायन उत्तम हैं।"

तीसरी बार भी कोकालिक भिक्षु ने भगवान् से यह कहा–"भन्ते ! यद्यपि मैं भगवान् पर श्रद्धा रखता हूँ और प्रसन्न हूँ, फिर भी सारिपुत्त और मौद्गल्यायन बुरे विचार वाले हैं, बुरी इच्छाओं के वशीभूत हैं । " तीसरी बार भी भगवान् ने कोकालिक भिक्षु से यह कहा–"कोकालिक ! ऐसा मत कहो, कोकालिक ! ऐसा मत कहो। कोकालिक ! सारिपुत्त-मौद्गल्यायन पर अपना चित्त प्रसन्न करो । सारिपुत्र और मौद्गल्यायन उत्तम हैं।"तब कोकालिक भिक्षु आसन से उठ, भगवान् को प्रणाम कर प्रदक्षिणा कर चला गया ।

कोकालिक भिक्षु के थोड़ी देर बार ही सरसों के बराबर फुंसियों से उसका सारा शरीर भर गया । सरसों के बराबर होकर मूँग के बराबर हो गईं । मूँग के बराबर होकर मटर के बराबर हो गईं । मटर के बराबर होकर बेर की गुठली के बराबर हो गईं । बेर की गुठली के बराबर होकर बेर के बराबर हो गईं। बेर के बराबर होकर आँवला के बराबर हो गईं । आँवला के बराबर होकर छोटे बेल के बराबर हो गईं । छोटे बेल के बराबर होकर बेल के बराबर हो गईं । बेल के बराबर होकर फूट गईं । पीब और लहू बह चले। तब कोकालिक

भिक्षु उसी रोग से मर गया और मर कर कोकालिक भिक्षु सारिपुत्त तथा मौद्गल्यायन के प्रति द्वेष-चित्त करके पद्म नरक में उत्पन्न हुआ ।

तब सहम्पति ब्रह्मा रात बीतने पर अपनी कान्ति से सम्पूर्ण जेतवन को प्रकाशित करके जहाँ भगवान् थे, एक ओर खड़े हुए सहम्पति ब्रह्मा ने भगवान् से यह कहा– "भन्ते ! कोकालिक भिक्षु मर गया और भन्ते ! मर कर कोकालिक भिक्षु सारिपुत्त और मौद्गल्यायन के प्रति द्वेष-चित्त करके पद्म नरक में उत्पन्न हुआ है ।" सहम्पति ब्रह्मा ने यह कहा ।यह कह कर भगवान् को प्रणाम कर, प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया।

तब भगवान् ने उस रात्रि के बीतने पर भिक्षुओं को आमंत्रित किया– "भिक्षुओं ! आज की रात कोकालिक रात बीतने पर...द्वेष-चित्त करके पद्म नरक में उत्पन्न हुआ है।" सहम्पति ब्रह्मा ने यह कहा। इसे कह कर मुझे प्रणाम कर, प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्धान हो गया ।" ऐसा कहने पर किसी भिक्षु ने भगवान् से यह कहा–"भन्ते ! पद्म नरक की आयु कितनी लम्बी होती है ?" "भिक्षु ! पद्म नरक की आयु लम्बी होती है। उसकी गणना कर सकना सहज नहीं है कि इतने वर्ष, इतने सौ वर्ष, अथवा इतने लाख वर्ष ?" "भन्ते ! उपमा दे सकते हैं ?" "भिक्षु ! सकते हैं । भगवान् ने कहा–जैसे भिक्षु ! बीस खारी तिल अटने वाली कोसल की जो गाड़ी है, एक पुरुष एक हजार वर्ष बीतने पर उसमें से एक तिल निकाल दे, इस क्रम से कालान्तर में बीस खारी तिल से भरी वह गाड़ी खाली हो जायेगी, समाप्त हो जायेगी, किन्तु अर्बुद नरक के जीवन काल की आयु नहीं । भिक्षु ! अर्बुद नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है निरर्बुद नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु ! अबब नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है अहह नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु ! अटट नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है कुमुद नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु ! कुमुद नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है सोगन्धिक नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु! सोगन्धिक नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है उत्पल नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु! उत्पल नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है पुण्डरीक नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु ! पुण्डरीक नरक के बीस जीवनों की आयु के बराबर है पद्म नरक का एक जीवन-काल। भिक्षु ! सारिपुत्त और मौद्गल्यायन के प्रति द्वेष-चित्त करके कोकालिक भिक्षु पद्म नरक में उत्पन्न हुआ है ।" भगवान् ने यह कहा । सुगत ने यह कह कर, शास्ता ने यह कहा–

So it was heard by me: Once Bhagavān dwelt at Savatthi, in Jetavana, in the park of Anathapindika. Then the Bhikkhu Kokaliya approached Bhagavān, and after having approached and saluted Bhagavat he sat down apart; sitting down apart the Bhikkhu Kokaliya said this to Bhagavān: 'O thou venerable one, Sariputta and Moggallana 'have evil desires, they have fallen into the power of evil desires.' When this had been said, Bhagavān spoke to the Bhikkhu Kokaliya as follows: 'Do not say so, Kokaliya; do not say so, Kokaliya; appease, O Kokaliya, your mind in regard to Sariputta and Moggallāna: Sariputta and Moggallana are amiable.'

A second time the Bhikkhu Kokaliya said this to Bhagavān: Although thou, O venerable Bhagavān, to me faithful and trustworthy, yet Sariputta and Moggallāna have evil desires, they have fallen into the power of evil desires.' A second time Bhagavān said this to the Bhikkhu Kokaliya: 'Do not say so, Kokaliya; do not say so, Kokaliya; appease,O Kokaliya, your mind in regard to Sariputta and Moggallana: Sariputta and Moggallana are amiable.'

A third time the Bhikkhu Kokaliya said this to Bhagavān: 'Although thou, O venerable Bhagavān, appearest to me to be faithful and trustworthy, yet Sariputta and Moggallana have evil desires, Sariputta and Moggallana have fallen into the power of evil desires.' A third time Bhagavān said this to the Bhikkhu Kokaliya: 'Do not say so, Kokaliya; do not say so, Kokaliya; appease, O Kokaliya, thy mind in regard to Sariputta and Moggallana: Sariputta and Moggallana are amiable.'

Then the Bhikkhu Kokaliya, after having risen from his seat and saluted Bhagavān and walked round him towards the right, went away; and when he had been gone a short time, all his body was struck with boils as large as mustard seeds; after being only as large as mustard seeds, they became as large as kidney beans; after being only as large as kidney beans, they became as large as chick peas; after being only as large as chick peas, they became as large as a Kolatthi egg ? ; after being only as large as a Kolatthi egg, they became as large as the jujube fruit; after being only as large as the jujube fruit, they became as large as the fruit of the emblic myrobalan; after being only as large as the fruit of the emblic myrobalan, they became as large as the unripe beluva fruit; after being only as large as the unripe beluva fruit, they became as large as a billi fruit; after being as large as a billi fruit, they broke, and matter and blood flowed out. Then the Bhikkhu Kokaliya died of that disease, and when he had died the Bhikkhu Kokliya went to the Paduma hell, having shown a hostile mind against Sariputta and Moggallāna. Then when the night had passed Brahman Sahampati of a beautiful app earance, having lit up all Jetavana, approached Bhagavān, and having approached and saluted Bhagavān, he stood apart, and standing apart Brahman Sahampati said this to Bhagavān: 'O thou venerab le one, Kokaliya, the Bhikkhu, is dead; and after death, O thou venerable one, the Bhikkhu Kokaliya is gone to the Paduma hell, having shown a hostile mind against Sariputta and Moggallana.' This said Brahman Sahampati, and after saying this and saluting Bhagavān, and walking round him towards the right, he disappeared there.

Then Bhagavān, after the expiration of that night, addressed the Bhikkhus thus: 'Last night, O Bhikkhus, when the night had nearly passed, Brāhmaṇ Sahampati of a beautiful appearance, having lit up all Jetavana, approached Bhagavān, and having approached and saluted Bhagavān, he stood apart, and standing apart Brahman Sahampati said this to Bhagavan: "O thou venerable one, Kokaliya, the Bhikkhu, is dead; and after death, O thou venerable one, the Bhikkhu Kokaliya is gone to the Paduma hell, having shown a hostile mind against Sariputta and Moggallāna." This said Brāhmaṇ Sahampati, O Bhikkhus, and having said this and saluted me, and walked round me towards the right, he disappeared there.' When this had been said, a Bhikkhu asked Bhag avat: 'How long is the rate of life, O venerable one, in the Paduma hell?' 'Long, O Bhikkhu, is the rate of life in the Paduma hell, it is not easy to calculate either so many years or so many hundreds of years or so many thousands of years or so many hundred thousands of years.' 'But it is possible, I suppose, to make a com parison, O thou venerable one?' 'It is possible, O Bhikkhu;' so saying, Bhagavān spoke as follows: 'Even as, O Bhikkhu, if there were a Kosala load of sesamum seed containing twenty khàris, and a man after the lapse of every hund red years were to take from it one sesamum seed at a time, then that Kosal.a load of sesamum seed, containing twenty kharis, would, O Bhikkhu, sooner by this means dwindle away and be used up than one Abbuda hell; and even as are twenty Abbuda hells, O Bhikkhu, so is one Nirabbuda hell; and even as are twenty Nirabbuda hells, O Bhikkhu, so is one Ababa hell; and even as are twenty Ababa hells, O Bhikkhu, so is one Ahaha hell; and even as are twenty Ahaha hells, O Bhikkhu, so is one Ahaha hell; and even as are twenty Atata hells, O Bhikkhu, so is one Kumuda hell; and even as are twenty Kumuda hells, O Bhikkhu, so is one Sogandhika hell; and even as are twenty Sogand hika hells, O Bhikkhu, so is one Uppalaka hell; and even as are twenty Uppalaka hells, O Bhikkhu so is one Pundarika hell; and even as are twenty Pundarika hells, O Bhikkhu, so is one Paduma hell: and to the Paduma hell, O Bhikkhu, the Bhikkhu Kokaliya is gone, having shown a hostile mind against Sariputta and Moggallāna.' This said Bhagavān, and having said this Sugata, the Shāsta, furthermore spoke as following:

• एक प्राचीन माप चार मन की एक खारी होती है- अट्ठकथा।

"पुरिसस्स हि जातस्स, कुठारी जायते मुखे।
याय छिन्दति अत्तानं, बालो दुब्भासितं भणं॥3/10/1॥

"Purisassa hi jātassa, kuṭhārī jāyate mukhe;
Yāya chindati attānaṃ, bālo dubbhāsitaṃ bhaṇaṃ.॥1॥

"पुरुषस्य हि जातस्य, कुठारी जायते मुखे।
यया छिनत्ति आत्मानम्, बालो दुर्भाषितं भणन्॥1॥

"इस संसार में उत्पन्न होने वाले पुरुष के मुख में कुठारी उत्पन्न होती है । मूर्ख बुरी बात बोलता हुआ उससे ही अपने को काट डालता है॥1॥

'To every man that is born, an axe is born in his mouth, by which the fool cuts himself, when speaking bad language.1.

"यो निन्दियं पसंसति, तं वा निन्दति यो पसंसियो।
विचिनाति मुखेन सो कलिं, कलिना तेन सुखं न विन्दति॥3/10/2॥

"Yo nindiyaṃ pasaṃsati, taṃ vā nindati yo pasaṃsiyo;
Vicināti mukhena so kaliṃ, kalinā tena sukhaṃ na vindati.॥2॥

"यो निन्द्यं प्रशंसति, तं वा निन्दति यः प्रशंस्यः ।
विचिनोति मुखेन स कलिम्, कलिना स सुखं न विन्दति॥2॥

जो निन्दा करने योग्य की प्रशंसा करता है अथवा प्रशंसक की निन्दा करता है, वह मुख से पाप (कलह) करता है और पाप (कलह) के कारण वह सुख को प्राप्त नहीं होता॥2॥

'He who praises him who is to be blamed, or blames him who is to be praised, gathers up sin in his mouth, and through that sin he will not find any joy.2.

"अप्पमत्तो अयं कलि, यो अक्खेसु धनपराजयो, सब्बस्सापि सहापि अत्तना।
अयमेव महत्तरो कलि*, यो सुगतेसु मनं पदोसये॥3/10/3॥

"Appamatto ayaṃ kali, yo akkhesu dhanaparājayo;
Sabbassāpi sahāpi attanā, ayameva mahattaro kali;
Yo sugatesu manaṃ padosaye.॥3॥

"अप्रमत्तोऽयं कलिः, योऽक्षेषु धनपराजयः, सर्वस्वमपि सहापि आत्मना।
अयमेव महत्तरः कलिः, यः सुगतेषु मनः प्रदोषयेत्॥3॥

जो जुए में अपने को और अपने सर्वस्व धन को पराजित कर देता है, वह बहुत थोड़ी-हानि है, यही सबसे बड़ी हानि है जो कि तथागत के प्रति मन को दूषित करना है॥3॥

'Trifling is the sin that consists in losing riches by dice; this is a greater sin that corrupts the mind against Sugatas.3.

*कलिं ति अपराधं, कलहः।

"सतं सहस्सानं निरब्बुदानं, छत्तिंसति पञ्च च अब्बुदानि ।
यमरियगरही निरयं उपेति, वाचं मनं च पणिधाय पापकं॥3/10/4॥

"Sataṃ sahassānaṃ nirabbudānaṃ, chattiṃsati pañca ca abbudāni;
Yamariyagarahī nirayaṃ upeti, vācaṃ manaṃ ca paṇidhāya pāpakaṃ.॥4॥

"शतं सहस्राणां निर्बुदानाम्, षट् त्रिंशच्च पञ्च च अर्बुदानि ।
यमार्यगर्ही निरयमुपैति, वाचं मनश्च प्रणिधाय पापकम्॥4॥

आर्य पुरुष की निन्दा करने वाला अपने मन और वचन को पाप में लगाकर उस नरक में उत्पन्न होता है जहाँ की आयु एक लाख निर्बुद और छत्तीस अर्बुद है॥4॥

'Out of the one hundred thousand Nirabbudas he goes to thirty-six, and to five Abbudas; because he blames an Ariya he goes to hell, having employed his speech and mind badly.4.

"अभूतवादी निरयं उपेति, यो वापि कत्वा न करोमि चाह।
उभोपि ते पेच्च समा भवन्ति, निहीनकम्मा मनुजा परत्थ॥3/10/5॥

"Abhūtavādī nirayaṃ upeti, yo vāpi katvā na karomicāha;
Ubhopi te pecca samā bhavanti, nihīnakammā manujā parattha.॥5॥

"अभूतवादी निरयमुपैति, यो वाऽपि कृत्वा न करोमीति चाह।
उभावपि तौ प्रेतसमौ भवत:, निहीनकर्माणौ मनुजौ परत्र॥5॥

असत्यवादी नरक को जाता है और जो कोई काम करके कहता है कि मैंने ऐसा नहीं किया वह भी । हीन कर्म करने वाले वे दोनों मनुष्य परलोक में समान होते हैं॥5॥

'He who speaks falsely goes to hell, or he who having done something says, "I have not done it;" both these after death become equal, in another world they are both men guilty of a mean deed'.5.

"यो अप्पदुट्ठस्स नरस्स दुस्सति, सुद्धस्स पोसस्स अनङ्गणस्स।
तमेव बालं पच्चेति पापं, सुखुमो रजो पटिवातंव खित्तो॥3/10/6॥

"Yo appaduṭṭhassa narassa dussati, suddhassa posassa anaṅgaṇassa;
Tameva bālaṃ pacceti pāpaṃ, sukhumo rajo paṭivātaṃva khitto.॥6॥

"योऽल्पदुष्टाय नराय दुष्यति, शुद्धाय पुरुषायऽनङ्गणाय ।
तमेव बालं प्रत्येति पापम्, सूक्ष्मं रज: प्रतिवातमिव क्षिप्त:॥6॥

जो दोष रहित, शुद्ध, निर्मल पुरुष को दूषित करता है, उसका पाप उल्टी हवा में फेंकी सूक्ष्म धूल की तरह उसी मूर्ख पर पड़ता है॥6॥

'He who offends an offenceless man, a pure man, free from sin, such a fool the evil deed reverts against, like fine dust thrown against the wind'.6.

"यो लोभगुणे अनुयुत्तो, सो वचसा परिभासति अञ्ञे।
असद्धो कदरियो अवदञ्ञू*, मच्छरि पेसुणियं अनुयुत्तो॥3/10/7॥

"Yo lobhaguṇe anuyutto, so vacasā paribhāsati aññe;
Asaddho kadariyo avadaññū, macchari pesuṇiyaṃ anuyutto.॥7॥

"यो लोभगुणोऽनुयुक्त:, स वचसा परिभाषतेऽन्यान् ।
अश्रद्ध: कदर्य: अवदान्य:, मत्सरी पैशुन्येऽनुयुक्त:॥7॥

जो श्रद्धा रहित है, जो दूसरों को दान देना नहीं सकता, जो किसी की बात नहीं सुनता, कंजूस है, चुगलखोरी में लगा है और लोभ में पड़ा है, वह वचन से दूसरों की निन्दा करता है॥7॥

'He who is given to the quality of covetousness, such a one censures others in his speech, being himself unbelieving, stingy, wanting in affability, niggardly, given to backbiting.7.

*अवदञ्ञू ति अवचनञ्ञू बुद्धानं पि ओवादं गग्गहणेन।

"मुखदुग्ग विभूत* अनरिय, भूनहु पापक दुक्कटकारि।
पुरिसन्त कली अवजात, मा बहुभाणिध नेरयिकोसि॥3/10/8॥

"Mukhadugga vibhūta anariya, bhūnahu pāpaka dukkaṭakāri;
Purisanta kalī avajāta, mā bahubhāṇidha nerayikosi.॥8॥

"मुखदुर्ग ! विभूत ! अनार्य ! भूतिहनक ! पापक ! दुष्कृतकारिन् ।
पुरुषान्त ! कलि-अवजात ! मा बहु भण इह नैरयिकोऽसि॥8॥

दुर्वच, झूठ बोलने वाले, अनार्य, वृद्धि-नाशक, पापी, बुरे कर्म करने वाले, अधम पुरुष और नीच नरक में जाने वाले तुम यहाँ बहुत मत बोलो॥8॥

'O thou foul-mouthed, false, ignoble, blasting, wicked, evil-doing, low, sinful, base-born man, do not be garrulous in this world, else thou wilt be an inhabitant of hell".8.

* विगतभूत अलिकवादि • भूनहू भूतिहनक बुड्ठिसिक

"रजमाकिरसी अहिताय, सन्ते गरहसि किब्बिसकारी।
बहूनि दुच्चरितानि चरित्वा, गच्छसि खो पपतं चिररत्तं॥3/10/9॥

"Rajamākirasī ahitāya, sante garahasi kibbisakārī;
Bahūni duccaritāni caritvā, gacchasi kho papataṃ cirarattaṃ.॥9॥

"रज आकिर अहिताय, सतां गर्हषे किल्विषकारी।
बहूनि च दुश्चरितानि चरित्वा, गमिष्यसि खलु प्रपातं चिररात्रम्॥9॥

तुम पापकारी सन्तों की निन्दा करके अपने अहित का कर्म करते हो । अनेक बुराइयों को करके बहुत समय के लिये गड्ढे में गिरोगे॥9॥

'Thou spreadest pollution to the misfortune of others, thou revilest the just, committing sin yourself, and having done many evil deeds thou wilt go to the pool of hell for a long time.9.

"न हि नस्सति कस्सचि कम्मं, एति हतं* लभतेव सुवामि।
दुक्खं मन्दो परलोके, अत्तनि पस्सति किब्बिसकारी॥3/10/10॥

"Na hi nassati kassaci kammaṃ, eti hataṃ labhateva suvāmi;
Dukkhaṃ mando paraloke, attani passati kibbisakārī.॥10॥

"नहि नश्यति कस्यचित् कर्म, एति हतं लभते एव स्वामी।
दुःखं मन्दः परलोके, आत्मनि पश्यति किल्विषकारी॥10॥

किसी का कर्म नष्ट नहीं होता । कर्ता उसे प्राप्त करता ही है । पापकारी मूर्ख अपने को परलोक में दुःख में पड़ा पाता है॥10॥

'For one's deeds are not lost, they will surely come back to you, the fool who commits sin will feel the pain in himself in the other world.10.

"अयोसङ्कुसमाहतट्ठानं, तिण्हधारमयसूलमुपेति ।
अथ तत्तअयोगुळ्सन्निभं, भोजनमत्थि तथा पतिरूपं*॥3/10/11॥

"Ayosaṅkusamāhataṭṭhānaṃ , tiṇhadhāramayasūlamupeti;
Atha tattaayoguḷasannibhaṃ, bhojanamatthi tathā patirūpaṃ.॥11॥

"अयःसङ्कुशमाहतस्थानम्, तीक्ष्णधारमयश्शूलमुपैति ।
अथ ततोऽयःगोलसन्निभम्, भोजनमस्ति तथा प्रतिरूपम्॥11॥

वह लोहे के काँटों और तीक्ष्ण धार वाली लोहे की बर्छियों से सताये जाने वाले नरक में गिरता है । वहाँ तपे लोहे के गोले के समान उसके अनुरूप भोजन है॥11॥

'To the place where one is struck with iron rods, to the iron stike with sharp edges he goes; then there is for him food as appropriate, resembling a red-hot ball of iron.11.

*कतकम्मानुरूपं ।

"न हि वग्गु वदन्ति वदन्ता, नाभिजवन्ति न ताणमुपेन्ति ।
अङ्गारे सन्थते सेन्ति, अग्गिनिसमं जलितं पविसन्ति॥3/10/12॥

"Na hi vaggu vadanti vadantā, nābhijavanti na tāṇamupenti;
Aṅgāre santhate sayanti, ginisampajjalitaṃ pavisanti.॥12॥

"नहि वल्गु वदन्ति वदन्तः, नाभिजवन्ते न त्राणमुपयन्ति ।
अङ्गारे संदीप्ते शेते, अग्निसमं प्रज्वलितं प्रविशन्ति॥12॥

नरकपाल उनसे मीठी बातें करते । वे प्रसन्न मुख से रक्षार्थ उनके पास नहीं आते । वे जलते हुए अंगार पर सोते हैं और भभकती हुई आग में प्रवेश करते हैं॥12॥

'For those who have anything to say do not say fine things, they do not approach; they do not find refuge from their sufferings, they lie on spread embers, they enter a blazing pyre.12.

"जालेन च ओनहियाना, तत्थ हनन्ति अयोमयकूटेहि ।
अन्धं'व, तिमिसमायन्ति, तं विततं हि यथा महिकायो॥3/10/13॥

"Jālena ca onahiyāna, tattha hananti ayomayakuṭebhi;
Andhaṃ va timisamāyanti, taṃ vitatañhi yathā mahikāyo.॥13॥

"जालेन चावनद्धं हि तत्र घ्नन्त्ययोमयैः कूटैः ।
अन्ध इव, तिमिस्रमायन्ति, सा ते विस्तृता हि यथा महीम्॥13॥

नरकपाल जाल से बन्द करके लोहे के हथौड़ों से उनको कूटते हैं । वे घोर अन्धकार में पड़ते हैं जो विस्तृत पृथ्वी की तरह फैला है॥13॥

'Covering them with a net they kill them there with iron hammers; they go to dense darkness, for that is spread out like the body of the earth.13.

"अथ लोहमयं पन कुम्भिं, गिनिसम्पज्जलितं पविसन्ति।
पच्चन्ति हि तासु चिररत्तं, अग्गिनिसमासु समुप्पिलवाते॥3/10/14॥

"Atha lohamayaṃ pana kumbhiṃ, ginisampajjalitaṃ pavisanti;
Paccanti hi tāsu cirarattaṃ, agginisamāsu samuppilavāte.॥14॥

"अथ लौहमयं पुनः कुम्भम्, अग्निसम्प्रज्वलितं प्रविशन्ति।
पचन्ति हि तासु चिररात्रम्, अग्निसमासु समुपप्लवन्ते॥14॥

तब वे आग के समान जलती लोहे की कड़ाही में गिरते हैं और आग के समान उसमें चिरकाल तक ऊपर नीचे आते जाते पचते रहते हैं॥14॥

'Then they enter an iron pot, they enter a blazing pyre, for they are boiled in those iron pots for a long time, jumping up and down in the pyre.14.

"अथ पुब्बलोहितमिस्से, तत्थ किं पच्चति किब्बिसकारी।
यं यं दिसकं अधिसेति, तत्थ किलिस्सति सम्फुसमानो॥3/10/15॥

"Atha pubbalohitamisse, tattha kiṃ paccati kibbisakārī;
Yaṃ yaṃ disakaṃ adhiseti, tattha kilissati samphusamāno.॥15॥

"अथ पूयलोहिते, तत्र किं पचति किल्विषकारी।
यां यां दिशमधिशेते, तत्र क्लिश्नाति संस्पर्शमाण:॥15॥

तब पीव और लहू से लथपथ होकर पापकारी किस प्रकार पचता है । जहाँ जहाँ वह लेटता है, वहाँ-वहाँ उनसे लथपथ हो दु:खी हो जाता है॥15॥

'Then he who commits sin is surely boiled in a mixture of pus and blood; whatever quarter he inhabits, he becomes rotten there from coming in contact with pus and blood.15.

"पुळवावसथे सलिलस्मिं, तत्थ किं पच्चति किब्बिसकारी।
गन्तुं न हि तीरमपत्थि, सब्बसमा हि समन्तकपल्ला॥3/10/16॥

"Puḷavāvasathe salilasmiṃ, tattha kiṃ paccati kibbisakārī;
Gantuṃ na hi tīramapatthi, sabbasamā hi samantakapallā.॥16॥

"पुलवावसथे* सलिले, तत्र किं पचति किल्विषकारी ।
गन्तुं न हि तीरमाप्नोति, सर्वसमा: हि समन्तकपाला:॥16॥

पापकारी कीड़ों से भरे पानी में किस प्रकार पचता है वह कहीं तीर को नहीं पा सकता, क्योंकि चारों ओर कड़ाह (पात्र) हैं॥16॥

'He who commits sin will surely be boiled in the water, the dwelling-place of worms; there it is not possible to get to the shore, for the jars are even all round.16.

*कृमि

"असिपत्तवनं पन तिण्हं, तं पविसन्ति समुच्छिदगत्ता।
जिव्हं बलिसेन गहेत्वा, आरजयारजया विहनन्ति॥3/10/17॥

"Asipattavanaṃ pana tiṇhaṃ, taṃ pavisanti samucchidagattā;
Jivhaṃ balisena gahetvā, ārajayārajayā vihananti.॥17॥

"असिपत्रवनं पुन: तीक्ष्णम्, तं प्रविशन्ति समुच्छिदगात्रा:।
जिह्वां बलात् गृहीत्वा, *आरजयारजया* विघ्नन्ति॥17॥

घायल शरीर हो वे तीक्ष्ण असिपत्र वन में प्रवेश करते हैं । नरकपाल उनकी जीभ काँटों से पकड़ कर उनका वध करते हैं॥17॥

'Again they enter the sharp Asipattavana with mangled limbs; having seized the tongue with a hook, the different watchmen of hell kill them.17.

"अथ वेतरणिं पन दुग्गं, तिण्हधारखुरधारमुपेन्ति।
तत्थ मन्दा पपतन्ति, पापकरा पापानि करित्वा॥3/10/18॥

"Atha vetaraṇiṃ pana duggaṃ, tiṇhadhārakhuradhāramupenti;
Tattha mandā papatanti, pāpakarā pāpāni karitvā.॥18॥

"अथ वैतरणिं पुन: दुर्गम्, तीक्ष्णधारक्षुरधारमुपयन्ति।
तत्र मन्दा: प्रपतन्ति, पापकरा: पापानि कृत्वा॥18॥

तब वे छूरे की धार के समान तीक्ष्ण धारा वाली दुर्गम वैतरणी नदी में गिरते हैं । मूर्ख पापकारी पाप पर उसी में गिरते हैं॥18॥

Then they enter Vetarant, that is difficult to cross and has got streams of razors with sharp edges; there the fools fall in, the evil-doers after having done evil.18.

"खादन्ति हि तत्थ रुदन्ते, सामा सबला काकोलगणा च।
सोणा सिङ्गाला पटिगिद्धा, कुलला वायसा च वितुदन्ति॥3/10/19॥

"Khādanti hi tattha rudante, sāmā sabalā kākolagaṇā ca;
Soṇā siṅgālā paṭigiddhā, kulalā vāyasā ca vitudanti.॥19॥

"खादन्ति हि तत्र रुदन्ति, श्यामा: सबला: काकोलगणाश्च।
श्वाना: श्रृगाला: प्रतिगृद्धा:, कुरारा: वायसाश्च वितुदन्ति॥19॥

वहाँ काले और चितकबरे कौवे उन्हें खा जाते हैं । कुत्ते, गीदड़, गृध्र (महागिद्ध), चील और कौवे चाव के साथ उन्हें नोचते हैं॥19॥

'There black, mottled flocks of ravens eat them who are weeping, and dogs, jackals, great vultures, falcons, crows tear them.19.

"किच्छा वतयं इध वुत्ति, यं जनो फुसति किब्बिसकारी।
तस्मा इध जीवितसेसे, किच्चकरो सिया नरो न चप्पमज्जे॥3/10/20॥

"Kicchā vatayaṃ idha vutti, yaṃ jano phusati kibbisakārī;
Tasmā idha jīvitasese, kiccakaro siyā naro na cappamajje.॥20॥

"कृच्छ्रा वत इयमिह वृत्ति:, यां जन: स्पृशति किल्विषकारी।
तस्मादिह जीवितशेषे, कृत्यकर: स्यात् नरो न च प्रमाद्येत्॥20॥

पापकारी मनुष्य नरक में जिस जीव का अनुभव करता है, वह दु:खमय है । इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपने शेष जीवन में अच्छे कर्म करे और प्रमाद न करे॥20॥

'Miserable indeed is the life here in hell which the man sees that commits sin. Therefore should a man in this world for the rest of his life be strenuous and not indolent.20.

"ते गणिता विदूहि तिलवाहा, ये पदुमे निरये उपनीता।
नहुतानि हि कोटियो पञ्च भवन्ति, द्वादस कोटिसतानि पुनञ्ञा॥3/10/21॥

"Te gaṇitā vidūhi tilavāhā, ye padume niraye upanītā;
Nahutāni hi koṭiyo pañca bhavanti, dvādasa koṭisatāni punaññā.॥21॥

"ते गणिता: विद्वद्भि: तिलवाहा:, ये पद्मे निरये उपनीता:।
नहुतानि हि कोटय: पञ्च भवन्ति, द्वादशकोटिशतानि पुनरन्यानि॥21॥

पद्म नरक में जो उत्पन्न होते हैं उनकी आयु पण्डितों की गिनती के अनुसार तिल के भार (एक-एक कर) गिने जाने की तरह लम्बी है, जो पाँच नरक कोटि और बारह सौ कोटि के बराबर है॥21॥

'Those loads of sesamum seed which are carried in Paduma hell have been counted by the wise, they are five nahutas of kotis and twelve hundred kotis besides'.21.

"याव दुखा निरया इध वुत्ता, तत्थपि ताव चिरं वसितब्बं।
तस्मा सुचिपेसलसाधुगुणेसु, वाचं मनं सततं परिरक्खे''ति॥3/10/22॥

"Yāva dukhā nirayā idha vuttā, tatthapi tāva ciraṃ vasitabbaṃ;
Tasmā sucipesalasādhuguṇesu, vācaṃ manaṃ satataṃ parirakkhe"ti.॥22॥

"यावत् दुःखनिरया इह उक्ताः, तत्रापि तावत् चिरं वसितव्यम्।
तस्मात् शुचिपेशलसाधुगुणेषु, वाचं मनः सततं परिरक्षेत्''इति॥22॥

यहाँ जितने भी नरक-दुःख बताये गये हैं उसे इन सबको चिरकाल तक भोगना पड़ता है। इसलिए पवित्र, उत्तम साधुओं के प्रति अपना मन और वचन सदा संयत रखे॥22॥

'As long as hells are called painful in this world, so long people will have to live there for a long time; therefore amongst those who have pure, amiable, and good qualities one should always guard speech and mind.' 22.

कोकालिकसुत्तं निट्ठितं
(Kokālikasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 11) नाळकसुत्तं (Nālakasuttaṃ)

आनन्दजाते तिदसगणे पतीते, सक्कं च इन्दं सुचिवसने च देवे।
दुस्सं गहेत्वा अतिरिव थोमयन्ते, असितो इसि अद्दस दिवाविहारे॥3/11/1॥

Ānandajāte tidasagaṇe patīte, sakkaṃ ca indaṃ sucivasane ca deve;
Dussaṃ gahetvā atiriva thomayante, asito isi addasa divāvihāre.॥1॥

आनन्दजातान् त्रिदशगणान् प्रतीतान्, *शक्रञ्च* इन्द्रं शुचिवसनान् देवान्।
दूष्यं गृहीत्वा अतिरिव स्तुवन्ति, *असित ऋषिः* अद्राक्षीत् दिवाविहारान्॥1॥

असित ऋषि ने तुषित देवलोक में दिन के विहार के लिए जाकर देखा कि सभी देवता आनन्दित हैं, प्रसन्न हैं। देवता और इन्द्र सत्कार पूर्वक शुद्ध वस्त्र धारण किए हुए हैं तथा (धुस्सा) वस्त्र लेकर अत्यधिक स्तुति कर रहे हैं॥1॥

The Isi Asita saw in their resting-places during the day the joyful, delighted groups of the Tidasa gods, and the gods in bright clothes, always highly praising Indra, after taking their clothes and waving them.1.

दिस्वान देवे मुदितमने उदग्गे, चित्तिं करित्वान इदमवोच तत्थ।
"किं देवसङ्घो अतिरिव कल्यरूपो, दुस्सं गहेत्वा रमयथ किं पटिच्च॥3/11/2॥

Disvāna deve muditamane udagge, cittiṃ karitvāna idamavoca tattha;
"Kiṃ devasaṅgho atiriva kalyarūpo, dussaṃ gahetvā ramayatha kiṃ paṭicca.॥2॥

दृष्ट्वा देवान् मुदितमनांसि उदग्रान्, चित्तं कृत्वा इदमवोचत् तत्र।
"किं देवसङ्घोऽतिरिव कल्यरूपः, दूष्यं गृहीत्वा रमध्वम् किं प्रतीत्य॥2॥

देवताओं को प्रसन्न और हर्षित मन देखकर विचार कर असित ऋषि ने वहाँ यह कहा– "किस कारण देवगण अत्यन्त प्रसन्न हो वस्त्र लेकर घूम रहे हैं ? क्या कारण है?॥2॥

Seeing the gods with pleased minds, delighted and showing his respect, he said this on that occassion: 'Why is the assembly of the gods so exceedingly pleased, why do they take their clothes and wave them? .2.

"यदा पि आसी असुरेहि सङ्गमो, जयो सुरानं असुरा पराजिता।
तदा पि नेतादिसो लोमहंसनो, किमब्भुतं दट्ठु मरू पमोदिता॥3/11/3॥

"Yadā pi āsī asurehi saṅgamo, jayo surānaṃ asurā parājitā.
Tadā pi netādiso lomahaṃsano, kimabbhutaṃ daṭṭhu marū pamoditā.॥3॥

"यदापि आसीत् असुरैः सङ्गमः, जयः सुराणामसुराः पराजिताः।
तदापि नैतादृशो लोमहर्षणः, किमद्भुतं द्रष्टुं मरुताः प्रमुदिताः॥3॥

जिस समय असुरों से युद्ध हुआ था, देवताओं की विजय हुई थी और असुर पराजित हुए थे, उस समय भी ऐसा रोमांचकारी आनन्द नहीं मनाया गया था, किस अद्भुत बात को देखने के लिए देवता प्रमुदित हैं ?॥3॥

'When there was an encounter with the Asuras, a victory for the gods and the Asuras were defeated, then there was not such a rejoicing. What wonderful thing have the gods seen that they are so delighted? .3.

"सेळेन्ति गायन्ति च वादयन्ति च, भुजानि फोटेन्ति च नच्चयन्ति च।
पुच्छामि वोहं मेरुमुद्धवासिने, धुनाथ मे संसयं खिप्प मारिसा'॥3/11/4॥

"Seḷenti gāyanti ca vādayanti ca, bhujāni phoṭenti ca naccayanti ca;
Pucchāmi vohaṃ merumuddhavāsine, dhunātha me saṃsayaṃ khippa mārisā".॥4॥

"श्लाघ्यन्ति गायन्ति च वादयन्ति च, भुजाः स्फोटयन्ति च नृत्यन्ति च।
पृच्छामि वोऽहं मेरुमूर्द्धवासिनः, धुनुयाः मे संशयं क्षिप्रं *मारिस* !"॥4॥

देवता चिल्लाते हैं, गाते हैं, बजाते हैं, भुजाओं को फड़काते हैं और नाचते हैं । मैं मेरु शिखर पर रहने वाले आप लोगों से पूछता हूँ, मार्ष ! मेरे संशय को शीघ्र दूर करें॥4॥

'They shout and sing and make music, they throw about their arms and dance; I ask you, the inhabitants of the tops of mount Meru, remove my doubt quickly, O venerable ones!'.4.

"सो बोधिसत्तो रतनवरो अतुल्यो, मनुस्सलोके हितसुखत्थाय जातो।
सक्यान गामे जनपदे लुम्बिनेय्ये, तेनम्ह तुट्ठा अतिरिव कल्यरूपा॥3/11/5॥

"So bodhisatto ratanavaro atulyo, manussaloke hitasukhatthāya jāto;
Sakyāna gāme janapade lumbineyye, tenamha tuṭṭhā atiriva kalyarūpā.॥5॥

"स बोधिसत्त्वो रत्नवरोऽतुल्यः, मनुष्यलोके हितसुखार्थाय जातः।
शाक्यानां ग्रामे जनपदे लुम्बिन्याम्, तेन स्मः तुष्टा अतिरिव कल्यरूपाः॥5॥

"वह अतुलनीय, श्रेष्ठ-रत्न, बोधिसत्व मनुष्यों के हित सुख के लिए मनुष्य लोक में शाक्य जनपद के लुम्बिनी ग्राम में उत्पन्न हुए हैं, इसीलिए हम लोग अत्यधिक तुष्ट और प्रसन्न हैं॥5॥

'The Bodhisatta, the excellent pearl, the incomparable, is born for the good and for a blessing in the world of men, in the town of the Sakyas, in the country of Lumbini. Therefore we are glad and exceedingly pleased. 5.

"सो सब्बसत्तुत्तमो अग्गपुग्गलो, नरासभो सब्बपजानमुत्तमो।
वत्तेस्सति चक्कमिसिव्हये वने, नदं व सीहो बलवा मिगाभिभू॥3/11/6॥

"So sabbasattuttamo aggapuggalo, narāsabho sabbapajānamuttamo;
Vattessati cakkamisivhaye vane, nadaṃ va sīho balavā migābhibhū". ॥6॥

"स सर्वसत्त्वोत्तमोऽग्रपुद्गल:, नरर्षभ: सर्वप्रजानामुत्तम:।
वर्तिष्यते चक्रमृषिह्वये वने, नादमिवचक्रम् ऋषिसिंहो बलवान् मृगाभिभू:"॥6॥

वह सब प्राणियों में उत्तम, श्रेष्ठ-व्यक्ति, सब मनुष्यों में श्रेष्ठ, सारी प्रजा में उत्तम जिस प्रकार बलवान् मृगराज सिंह गर्जना करता है उसी प्रकार ऋषिवन (ऋषिपतन) में धर्मचक्र का प्रवर्तन करेंगे॥6॥

'He, the most excellent of all beings, the preminent man, the bull of men, the most excellent of all creatures will turn the wheel of the Dhamma in the forest called after the sants, he who is like the roaring lion, the strong lord of beasts.' .6.

तं सद्दं सुत्वा तुरितमवसरी सो, सुद्धोदनस्स तद भवनं उपाविसि ।
निसज्ज तत्थ इदमवोचासि सक्ये, "कुहिं कुमारो अहमपि दट्ठुकामो"॥3/11/7॥

Taṃ saddaṃ sutvā turitamavasarī so,suddhodanassa tada bhavanaṃ upāvisi;
Nisajja tattha idamavocāsi sakye, "kuhiṃ kumāro ahamapi daṭṭhukāmo". ॥7॥

तं शब्दं श्रुत्वा त्वरितमवसरी स:, शुद्धोदनस्य तद्भवनमुपागमत् ।
निषद्य तत्र इदमवोचत् शाक्यान्, "कुह कुमार:, अहमपि द्रष्टुकाम:"॥7॥

उस बात को सुनकर वह असित ऋषि शीघ्र शुद्धोदन के भवन में आए । वहाँ बैठकर शाक्यों से यह कहा– "कुमार कहाँ हैं ? मैं भी देखना चाहता हूँ॥7॥

Having heard that noise he descended from the heaven of Tusita. Then he went to Suddhodana's palace, and having sat down there he said this to the Sakyas: 'Where is the prince? I wish to see him.'.7.

ततो कुमारं जलितमिव सुवण्णं, उक्कामुखेव सुकुसलसम्पहट्ठं ।
दद्दल्लमानं सिरिया अनोमवण्णं, दस्सेसु पुत्तं असितव्हयस्स सक्या॥3/11/8॥

Tato kumāraṃ jalitamiva suvaṇṇaṃ, ukkāmukheva sukusalasampahaṭṭhaṃ;
Daddallamānaṃ siriyā anomavaṇṇaṃ, dassesu puttaṃ asitavhayassa sakyā. ॥8॥

तत: कुमारं ज्वलितमिव सुवर्णम्, उल्कामुखमिव सुकुशलं सम्प्रहृष्टम् ।
दंदम्यमानं श्रिया अनोमवर्णमदर्शयन् पुत्रमसिताह्वयाय शाक्या:॥8॥

तब सुन्दर ढंग से निर्मित, चमकदार, स्वर्ण के समान कान्ति से दमकते हुए उत्तम रूपवान् पुत्र को शाक्यों ने असित ऋषि को दिखलाया॥8॥

Then the Sakyas showed to the Isi, called Asita, the child, the prince who was like shining gold, manufactured by a very skilful in the mouth of a forge, and beaming in glory and having a beautiful appearance. .8.

दिस्वा कुमारं सिखिमिव पज्जलन्तं, तारासभंव नभसिगमं विसुद्धं।
सूरियं तपन्तं सरदरिवब्भमुत्तं, आनन्दजातो विपुलमलत्थ पीतिं॥3/11/9॥

Disvā kumāraṃ sikhimiva pajjalantaṃ, tārāsabhaṃva nabhasigamaṃ visuddhaṃ;
Sūriyaṃ tapantaṃ saradarivabbhamuttaṃ, ānandajāto vipulamalattha pītiṃ. ॥9॥

दृष्ट्वा कुमारं शिखिनमिव प्रज्वलन्तम्, तारर्षभमिव नभसि गामिनं विशुद्धम्।
सूर्यं तपन्तं शरदिव अभ्रमुक्तम्, आनन्दजातो विपुलमलभत प्रीतिम्॥9॥

जलती आग, आकाश में निर्मल चन्द्रमा और मेघ रहित शरद में सूर्य के समान तपते हुए कुमार को देखकर ऋषि आनन्दित हो गए और उन्हें विपुल प्रीति उत्पन्न हो आई॥9॥

Seeing the prince shining like fire, bright like the bull of stars wandering in the sky, like the burning sun in autumn, free from clouds, he joyfully obtained great delight.9.

अनेकसाखं च सहस्समण्डलं, छत्तं मरू धारयुमन्तलिक्खे।
सुवण्णदण्डा वीतिपतन्ति चामरा, न दिस्सरे चामरछत्तगाहका॥3/11/10॥

Anekasākhaṃ ca sahassamaṇḍalaṃ, chattaṃ marū dhārayumantalikkhe;
Suvaṇṇadaṇḍā vītipatanti cāmarā, na dissare cāmarachattagāhakā.॥10॥

अनेकशाखं च सहस्रमण्डलम्, छत्रं मरुत् अधारयत् अन्तरिक्षे ।
सुवर्णदण्डा: व्यतिपतन्ति चामरा:, न दृश्यन्ते चामरछत्रग्राहका:॥10॥

आकाश में देवताओं ने अनेक शाखा और सहस्र मण्डल वाले छत्र को धारण किया, स्वर्ण दण्ड लगे चामर (चँवर) डुलाये, किन्तु चामर और छत्र को धारण करने वाले दिखाई नहीं दे रहे थे॥10॥

The gods held in the sky a parasol with a thousand circles and numerous branches, yak's tails with golden sticks were fanned, but those who held the yak's tails and the parasol were not seen.10.

दिस्वा जटी कण्हसिरिव्हयो इसि, सुवण्णनिक्खं विय पण्डुकम्बले।
सेतं च छत्तं धरियन्त मुद्धनि, उदग्गचित्तो सुमनो पटिग्गहे॥3/11/11॥

Disvā jaṭī kaṇhasirivhayo isi, suvaṇṇanikkhaṃ viya paṇḍukambale;
Setaṃ ca chattaṃ dhariyanta muddhani, udaggacitto sumano paṭiggahe.॥11॥

दृष्ट्वा जटी कृष्णश्रीह्वय ऋषि:, सुवर्णनिष्कमिव पाण्डुकम्बले।
श्वेतञ्च छत्रं धारयन्तं मूर्धनि, उदग्रचित्त: सुमन: प्रत्यग्रहीष्ट॥11॥

जटाधारी असित नामक ऋषि ने पीतवर्ण कम्बल में रखी स्वर्ण मुद्रा अथवा आभूषण के समान सुन्दर, श्वेत छत्रधारी कुमार को देख हर्षित कर और प्रमुदित मन हो उन्हें ग्रहण किया॥11॥

The Isi with the matted hair, by name Kanhas in, on seeing the yellow blankets like a golden coin, and the white parasol held over his head, received him delighted and happy. 11.

पटिग्गहेत्वा पन सक्यपुङ्गवं, जिगीसतो लक्खणमन्तपारगू।
पसन्नचित्तो गिरमब्भुदीरयि, ''अनुत्तरायं द्विपदानमुत्तमो''॥3/11/12॥

Paṭiggahetvā pana sakyapuṅgavaṃ, jigīsato lakkhaṇamantapāragū;
Pasannacitto giramabbhudīrayi, "anuttarāyaṃ dvipadānamuttamo".॥12॥

प्रतिगृह्य पुन: शाक्यपुङ्गवम्, जिज्ञासु: लक्षणमन्तपारगम्।
प्रसन्नचित्तो गिरमभ्युदीरयत्, "अनुत्तरोऽयं द्विपदामुत्तम:"॥12॥

उत्तम शाक्य कुमार को ग्रहण कर, लक्षण शास्त्र और वेद-पारंगत जिज्ञासु ऋषि ने प्रसन्न मन से यह बात कही–"यह सर्वोत्तम हैं ! मनुष्यों में उत्तम हैं !"॥12॥

And having received the bull of the Sakyas, he who was wishing to receive him and knew the signs and the hymns, with pleased thoughts raised his voice, saying: 'Without superior is this, the most excellent of men.'.12.

अथत्तनो गमनमनुस्सरन्तो, अकल्यरूपो गळयति अस्सुकानि।
दिस्वान सक्या इसिमवोचुं रुदन्तं,
"नो चे कुमारे भविस्सति अन्तरायो"॥3/11/13॥

Athattano gamanamanussaranto, akalyarūpo gaḷayati assukāni;
Disvāna sakyā isimavocuṃ rudantaṃ,
"No ce kumāre bhavissati antarāyo".॥13॥

अथात्मनो गमनमनुसरन्तोऽकल्यरूपो गलयतेऽश्रूणि ।
दृष्ट्वा शाक्या ऋषिमवोचु: रुदन्तम्, "न चेत् कुमारे भविष्यति अन्तराय:"॥13॥

तब अपने परलोक–गमन का स्मरण करते हुए उनके नेत्रों से आँसू प्रवाहित होने लगे । शाक्यों ने ऋषि को रोता हुआ देख कहा– "क्या कुमार के लिए कोई विघ्न तो नहीं होगा?"॥13॥

Then remembering his own migration he was displeased and shed tears; seeing this the Sakyas asked the weeping Isi, whether there would be any obstacle in the prince's path.13.

दिस्वान सक्ये इसिमवोच अकल्ये, ''नाहं कुमारे अहितमनुस्सरामि।
न चापिमस्स भविस्सति अन्तरायो, न ओरकायं अधिमानसा भवाथ॥3/11/14॥

Disvāna sakye isimavoca akalye, "nāhaṃ kumāre ahitamanussarāmi;
Na cāpimassa bhavissati antarāyo, na orakāyaṃ adhimānasā bhavātha.॥14॥

दृष्ट्वा शाक्ये ऋषिरवोचत् अकल्ये, ''नाऽहं कुमारेऽहितमनुस्मरामि।
न चाप्यस्य भविष्यत्यन्तराय:, नावरकायमधिमानसा: भवत॥14॥

ऋषि ने शाक्यों को दु:खित देखकर कहा– "मैं कुमार का कोई अहित नहीं देखता और न उनका कोई विघ्न होगा। वह साधारण मनुष्य नहीं हैं।" आप लोग प्रसन्न हों॥14॥

Seeing the Sakyas displeased the Isi said: 'I do not remember anything that will be unlucky for the prince, there will be no obstacles at all for him, for this is no inferior person. Be without anxiety.14.

"सम्बोधियग्गं फुसिस्सतायं कुमारो, सो धम्मचक्कं परमविसुद्धदस्सी।
वत्तेस्सतायं बहुजनहितानुकम्पी, वित्थारिकस्स भविस्सति ब्रह्मचरियं॥3/11/15॥

"Sambodhiyaggaṃ phusissatāyaṃ kumāro, so dhammacakkaṃ paramavisuddhadassī;
Vattessatāyaṃ bahujanahitānukampī, vitthārikassa bhavissati brahmacariyaṃ.॥15॥

"सम्बोध्यंगं स्प्रक्ष्यति अयं कुमार:, स धर्मचक्रं परमविशुद्धदर्शी।
वर्तिष्यतेऽयं बहुजनहितानुकम्पी, विस्तारितमस्य भविष्यति ब्रह्मचर्यम्॥15॥

उत्तम, विशुद्धदर्शी यह कुमार सम्बोधि को प्राप्त करेंगे और बहुजन के प्रति अनुकम्पा कर उनके हित के लिए धर्मचक्र का प्रवर्तन करेंगे, उनका ब्रह्मचर्य फैलेगा॥15॥

'This prince will reach the summit of perfect enlightenment, he will turn the wheel of the Dhamma, he who sees what is exceedingly pure (Nibbana), this feels for the welfare of the multitude and his religion' will be widely spread.15.

"ममं च आयु न चिरमिधावसेसो, अथन्तरा मे भविस्सति कालकिरिया।
सोहं न सोस्सं असमधुरस्स धम्मं, तेनम्हि अट्टो ब्यसनंगतो अघावी"॥3/11/16॥

"Mamaṃ ca āyu na ciramidhāvaseso, athantarā me bhavissati kālakiriyā;
Sohaṃ na sossaṃ asamadhurassa dhammaṃ, tenamhi aṭṭo byasanaṃgato aghāvī".

"मम चायु: न चिरमिहावशिष्टोऽथान्तरा मे भविष्यति कालक्रिया।

सोऽहं न श्रोष्यामि अ-सम-धुरस्य धर्मम्, तेनास्मि आर्त: व्यसनगतोऽघायु:"॥16॥

यहाँ मेरी आयु अधिक शेष नहीं है । इस बीच में ही मेरी मृत्यु हो जायेगी, सो मैं असदृश्य पराक्रमी के धर्म को नहीं सुन पाऊँगा, इसीलिए मैं आतुर हूँ, कष्ट में हूँ और दु:खित हूँ॥16॥

'My life here will shortly be at an end, in the middle of his life there will be death for me; I shall not hear the Dhamma of the incomparable one; therefore I am afflicted, unfortunate and suffering.'.16.

"सो साकियानं विपुलं जनेत्वा पीतिं, अन्तेपुरम्हा निग्गमा ब्रह्मचारी।

सो भागिनेय्यं सयं अनुकम्पमानो, समादपेसि असमधुरस्स धम्मे॥3/11/17॥

"So sākiyānaṃ vipulaṃ janetvā pītiṃ, antepuramhā niggamā brahmacārī;

So bhāgineyyaṃ sayaṃ anukampamāno, samādapesi asamadhurassa dhamme.॥17॥

"स शाक्यानां विपुलां जनयित्वा प्रीतिम्, अन्त:पुरात् न्यगमत् ब्रह्मचारी।

स भागिनेयं स्वयमनुकम्पमान:, समादयिष्ट अ-सम-धुरस्य धर्मे॥17॥

शाक्यों को विपुल आनन्द देकर वह ब्रह्मचारी अन्त:पुर से निकले। उन्होंने अपने भांजे पर अनुकम्पा करके उसे असदृश्य पराक्रमी के धर्म में लगाया॥17॥

Having afforded the Sakyas great joy he went out from the interior of the palace to lead a religious life; but taking pity on his sister's son, he induced him to embrace the Dhamma of the incomparable one.17.

"बुद्धो ति घोसं यद परतो सुणासि, सम्बोधिपत्तो विवरति धम्ममग्गं।

गन्त्वान तत्थ समयं परिपुच्छमानो,

चरस्सु तस्मिं भगवति ब्रह्मचरियं"॥3/11/18॥

"Buddho ti ghosaṃ yada parato suṇāsi, sambodhipatto vivarati dhammamaggaṃ;

Gantvāna tattha samayaṃ paripucchamāno,

Carassu tasmiṃ bhagavati brahmacariyaṃ".18.

"बुद्ध' इति घोषं यदि परत: शृणोषि, सम्बोधिप्राप्तो विवृणोति धर्ममार्गम्।

गत्वा तत्र समयं परिपृच्छमाण:, चर तस्मिन् भगवति ब्रह्मचर्यम्"॥18॥

"सम्बोधि प्राप्त, धर्म मार्ग उपदेश देने वाले 'बुद्ध' का घोष, जब दूसरे से सुनना तो उनके पास जा, धर्म के विषय में पूछकर उन भगवान् के पास ब्रह्मचर्य का पालन करना॥18॥

'When thou hearest from others the sound 'Buddha," "he who has acquired perfect enlightenment walks the way of the Dhamma," then going there and enquiring about the particulars, lead a religious life with that Bhagavān.' .18.

तेनानुसिट्ठो हितमनेन तादिना, अनागते परमविसुद्धदस्सिना।

सो नालको उपचितपुञ्ञसञ्चयो, जिनं पतिक्खं परिवसि रक्खितिन्द्रियो॥3/11/19॥

Tenānusiṭṭho hitamanena tādinā, anāgate paramavisuddhadassinā;

So nālako upacitapuññasañcayo, jinaṃ patikkhaṃ parivasi rakkhitindriyo.॥19॥

तेनानुशिष्टो हितमनेन *तादिना*, अनागत: परमविशुद्धदर्शिना।

स *नालक* उपचितपुण्यसञ्चय:, जिनां प्रतीक्षां पर्यवात्सीत् रक्षितेन्द्रिय:॥19॥

हितैषी भाव से स्थिर, उत्तम, विशुद्ध भविष्य-द्रष्टा से उपदिष्ट पुण्यवान् उन नालक ने जिन (बुद्ध) की प्रतीक्षा में तपस्वी हो इन्द्रियों की रक्षा की॥19॥

Instructed by him, the friendly-minded, by one who saw in the future what is exceedingly pure he, Nalaka, with a heap of gathered-up good works and with guarded senses dwelt with him, looking forward to Jina (Buddha).19.

सुत्वान घोसं जिनवरचक्कवत्तने, गन्त्वान दिस्वा इसिनिसभं पसन्नो ।

मोनेय्यसेट्ठं मुनिपवरं अपुच्छि, समागते असिताव्हयस्स सासनेति॥3/11/20॥

Sutvāna ghosaṃ jinavaracakkavattane, gantvāna disvā isinisabhaṃ pasanno;

Moneyyaseṭṭhaṃ munipavaraṃ apucchi, samāgate asitāvhayassa sāsaneti.॥20॥

श्रुत्वा घोषं जिनवरचक्रप्रवर्तने, गत्वा दृष्ट्वा ऋषिसदृशं प्रसन्न: ।

मौनेयश्रेष्ठं मुनिप्रवरमप्राक्षीत्, समागतेऽ*सिताव्ह*यस्य शासने इति॥20॥

धर्मचक्र-प्रवर्तन के समय बुद्ध का घोष सुनकर, पास जाकर, श्रेष्ठ ऋषि को देख धर्म के विषय में असित के सिखाये प्रश्नों को उत्तम प्रज्ञ से पूछा॥20॥

Hearing the noise, while the excellent Jina turned the wheel of the Dhamma, and going and seeing the bull of the Isis, he, after being converted, asked the eminent Muni about the best wisdom, when the time of Asita's order had come.20.

वत्थुगाथा निट्ठिता

(Vatthugāthā niṭṭhitā)

"अञ्ञातमेतं वचनं, असितस्स यथातथं।

तं तं गोतम पुच्छामि, सब्बधम्मान पारगुं॥3/11/21॥

"Aññātametaṃ vacanaṃ, asitassa yathātathaṃ;

Taṃ taṃ gotama pucchāmi, sabbadhammāna pāraguṃ.॥21॥

"अज्ञातमेतद् वचनम्, *असितस्य* यथातथम्।

तं त्वां गौतम ! पृच्छामि, सर्वधर्माणां पारगम्॥21॥

नालक– मैंने यह बात असित ऋषि से यथार्थ रूप से जानी थी । सभी धर्मों के पारंगत हे गौतम ! मैं उसे आपसे पूछ रहा हूँ॥21॥

'These words of Asita are acknowledged true by me, therefore we ask thee, O Gotama, who art perfect in all things.21.

"अनगारियुपेतस्स, भिक्खाचरियं जिगीसतो।

मुनि पब्रूहि मे पुट्ठो, मोनेय्यं उत्तमं पदं"॥3/11/22॥

"Anagāriyupetassa, bhikkhācariyaṃ jigīsato;

Muni pabrūhi me puṭṭho, moneyyaṃ uttamaṃ padaṃ".॥22॥

"अनगारोपेतस्य, भिक्षाचर्यां जिगीषत:।

मुने ! प्रब्रूहि मया पृष्ट:, मौनेयमुत्तमं पदम्"॥22॥

बेघर हो भिक्षा पर जीने वाले मुझे प्रश्न करने पर उत्तम पद के विषय में मुनि! बतलायें॥22॥

'O Muni, to me who am houseless, and who wish to embrace a Bhikkhu's life, explain when asked the highest state, the state of wisdom moneyya.' 22.

"मोनेय्यं ते उपञ्ञिस्सं, (इति भगवा) दुक्करं दुरभिसम्भवं।
हन्द ते नं पवक्खामि, सन्थम्भस्सु दळ्हो भव॥3/11/23॥

"Moneyyaṃ te upaññissaṃ, (iti bhagavā) dukkaraṃ durabhisambhavaṃ;
Handa te naṃ pavakkhāmi, santhambhassu daḷho bhava.॥23॥

"मौनेयं तव उपजिगीषस्य, (इति भगवान्) दुष्करं दुरभिसम्भवम्।
हन्त ! त्वामेनं प्रवक्ष्यामि, संस्तब्धः सुदृढो भव॥23॥

भगवान्– दुष्कर और कठिनता से प्राप्त ज्ञान मार्ग की मैं व्याख्या करूँगा । मैं अब उसके विषय में तुम्हें बताऊँगा, इसलिए तुम स्थिर चित्त और दृढ़ हो जाओ॥23॥

'I will declare to thee the state of wisdom,' —so said Bhagavān,—' difficult to carry out and difficult to obtain; come, I will explain it to thee, stand fast, be firm.23.

"समानभागं कुब्बेथ, गामे अक्कुट्ठवन्दितं।
मनोपदोसं रक्खेय्य, सन्तो अनुण्णतो चरे॥3/11/24॥

"Samānabhāgaṃ kubbetha, gāme akkuṭṭhavanditaṃ;
Manopadosaṃ rakkheyya, santo anuṇṇato care.॥24॥

"समानभागं कुर्यात्, ग्रामेऽकृच्छ्रवन्दितम्।
मनः प्रदोषात् रक्षेत्, सन्तोऽनुन्नतश्चरेत्॥24॥

ग्राम में जो वन्दना करते हैं या जो निन्दा करते हैं, उनके प्रति समान रूप से सहभागिता रखे, मन को दूषित न होने दें, शान्त और विनीत होकर विचरण करें॥24॥

'Let a man cultivate equanimity: which is both reviled and praised in the village, let him take care not to corrupt his mind, let him live calm and without pride.24.

"उच्चावचा निच्छरन्ति, दाये* अग्गिसिखूपमा।
नारियो मुनिं पलोभेन्ति, तासु तं मा पलोभयुं॥3/11/25॥

"Uccāvacā niccharanti, dāye aggisikhūpamā;
Nāriyo muniṃ palobhenti, tāsu taṃ mā palobhayuṃ.॥25॥

"उच्चावचा निर्गच्छन्ति, दायेऽग्निशिखोपमा।
नार्यः मुनिं प्रलोभयन्ति, ताः प्रति मा प्रलुभेयुः॥25॥

दावाग्नि की ज्वाला के समान नाना प्रकार के आलम्बन (आकर्षण) उपस्थित होते हैं। स्त्रियां मुनि को प्रलोभित करती हैं । उनके प्रति तुम प्रलोभित मत हो॥25॥

'Various objects disappear, like a flame of fire in the wood; women tempt the Muni, let them not tempt him.25.

*वने

"विरतो मेथुना धम्मा, हित्वा कामे परोपरे ।
अविरुद्धो असारत्तो, पाणेसु तसथावरे॥3/11/26॥

"Virato methunā dhammā, hitvā kāme paropare;
Aviruddho asāratto, pāṇesu tasathāvare.॥26॥

"विरतो मैथुनात् धर्मात्, हित्वा कामं परापरम्* ।
अविरुद्धोऽनासक्त:, प्राणिषु त्रसस्थावरेषु॥26॥

मैथुन धर्म से विरत हो अच्छे-बुरे काम-भोगों को त्यागकर स्थावर और जंगम प्राणधारियों के प्रति विरोधाभाव या आसक्ति रहित होवे॥26॥

'Let him be disgusted with sexual pleasure, having left behind sensual pleasures of all kinds, being inoffensive and dispassionate towards living creatures, towards anything that is feeble or strong.26.

*सुन्दरमसुन्दरं कर्म

"यथा अहं तथा एते, यथा एते तथा अहं।
अत्तानं उपमं कत्वा, न हनेय्य न घातये॥3/11/27॥

"Yathā ahaṃ tathā ete, yathā ete tathā ahaṃ;
Attānaṃ upamaṃ katvā, na haneyya na ghātaye.॥27॥

"यथाऽहं तथा एते, यथा एते तथाऽहम्।
आत्मानमुपमां कृत्वा, न हन्यात् न घातयेत्॥27॥

जैसा मैं हूँ, वैसे ये प्राणी भी हैं। जैसे ये प्राणी हैं, वैसा मैं हूँ । इस प्रकार अपने समान समझकर न तो किसी का बध करे और न कराये॥27॥

'As I am so are these, as these are so am I, identifying himself with others, let him not kill nor cause any one to kill.27.

"हित्वा इच्छं च लोभं च, यत्थ सत्तो पुथुज्जनो।
चक्खुमा पटिपज्जेय्य, तरेय्य नरकं इमं॥3/11/28॥

"Hitvā icchaṃ ca lobhaṃ ca, yattha satto puthujjano;
Cakkhumā paṭipajjeyya, tareyya narakaṃ imaṃ.॥28॥

"हित्वा इच्छाञ्च लोभञ्च, यत्र सत्व: पृथग्जन:।
चक्षुष्मान् प्रतिपद्येत, तरेत् नरकमिमम्॥28॥

जिस इच्छा और लोभ में पृथक् जन प्राणी आसक्त रहता है उसे त्यागकर चक्षुष्मान् विचरण करे और इस नरक को पार कर जाय॥28॥

'Having abandoned desire and covetousness let him act as one that sees clearly where a common man sticks, let him cross over this hell.28.

"ऊनूदरो मिताहारो, अप्पिच्छस्स अलोलुपो।
सदा इच्छाय निच्छातो, अनिच्छो होति निब्बुतो॥3/11/29॥

"Ūnūdaro mitāhāro, appicchassa alolupo;
Sadā icchāya nicchāto, aniccho hoti nibbuto.॥29॥

"ऊनोदरो मिताहार:, अल्पेच्छु: सोऽलोलुप:।
सदा इच्छाया: नि:श्रितोऽनिच्छु: भवति निवृत:॥29॥

भूख से कम खाता है, मात्रा से भोजन करता है, कम इच्छा वाला और लोभ रहित होता है, वही इच्छा से रहित सन्तोषी व्यक्ति शान्त होता है॥29॥

'Let him be with an empty stomach, taking little food, let him have few wants and not be covetous; not being consumed by desire he will without desire be happy.29.

"स पिण्डचारं चरित्वा, वनन्तमभिहारये।
उपट्ठितो रुक्खमूलस्मिं, आसनूपगतो मुनि॥3/11/30॥

"Sa piṇḍacāraṃ caritvā, vanantamabhihāraye;
Upaṭṭhito rukkhamūlasmiṃ, āsanūpagato muni.॥30॥

"स पिण्डचारं चरित्वा, वनान्तमभिहरेत्।
उपस्थितो वृक्षमूलेऽऽसनोपगतो मुनिः॥30॥

भिक्षा करके वह मुनि वन में जाय और पेड़ के नीचे आसन लगा कर बैठे॥30॥

'Let the Muni, after going about for alms, repair to the outskirts of the wood, let him go and sit down near the root of a tree.30.

"स झानपसुतो धीरो, वनन्ते रमितो सिया।
झायेथ रुक्खमूलस्मिं, अत्तानमभितोसयं॥3/11/31॥

"Sa jhānapasuto dhīro, vanante ramito siyā;
Jhāyetha rukkhamūlasmiṃ, attānamabhitosayaṃ.॥31॥

"स ध्यानप्रसूतो धीरः, वनान्ते रतः स्यात्।
ध्यायेत् वृक्षमूले, आत्मानमभितोषयन्॥31॥

वन में रहते हुए वह धीर ध्यान तत्पर होवे, अपने को सन्तुष्ट कराते हुए पेड़ के नीचे ध्यान करे॥31॥

'Applying himself to meditation and being wise, let him find his pleasure in the outskirts of the wood, let him meditate at the root of a tree enjoying himself.31.

"ततो रत्या विवसाने गामन्तमभिहारये।
अव्हानं नाभिनन्देय्य, अभिहारं च गामतो॥3/11/32॥

"Tato ratyā vivasāne, gāmantamabhihāraye;
Avhānaṃ nābhinandeyya, abhihāraṃ ca gāmato.॥32॥

"ततो रात्र्याः व्यवसाने ग्रामान्तोऽभिहरेत्।
आह्वानं नाभिनन्देत्, अभ्याहारञ्च ग्रामतः॥32॥

तब रात्रि के बीतने पर प्रातः भिक्षा के लिए गाँव में प्रवेश करे । वहाँ न तो किसी का निमंत्रण स्वीकार करे और न किसी के द्वारा गाँव से लाये गये भोजन को॥32॥

'Then when night is passing away let him repair to the outskirts of the village, let him not delight in being invited nor in what is brought away from the village. 32.

"न मुनी गाममागम्म, कुलेसु सहसा चरे।
घासेसनं छिन्नकथो, न वाचं पयुतं भणे॥3/11/33॥

"Na munī gāmamāgamma, kulesu sahasā care;
Ghāsesanaṃ chinnakatho, na vācaṃ payutaṃ bhaṇe.॥33॥

"न मुनि: ग्राममागत्य, कुलेषु सहसा चरेत्।
घासैषणं• छिन्नकथम्, न वाचं प्रयुक्तं भणेत्॥33॥

मुनि गाँव में आकर सहसा कुलों में विचरण न करे । चुपचाप रहकर भिक्षाटन करे, संकेत करने वाली कोई बात न बोले॥33॥

'Let not the Muni, after going to the village, walk about to the houses in haste; cutting off all talk while seeking food, let him not utter any coherent speech.33.

•अट्ठकथा के अनुसार घासेसनं=गोचरी (आहारचर्या के लिए निकलना), घास=ग्रास+एषणा=अन्वेषणा-ग्रास के अन्वेषण के लिए निकलना।

"अलत्थं यदिदं साधु, नालत्थं कुसलं इति।
उभयेनेव सो तादी, रुक्खंवुपनिवत्तति॥3/11/34॥

"Alatthaṃ yadidaṃ sādhu, nālatthaṃ kusalaṃ iti;
Ubhayeneva so tādī, rukkhaṃvupanivattati .॥34॥

"अलब्धं यदिदं साधु, नालब्धं कुशलमिति।
उभयेनैव स *तादी*, वृक्ष इवोपनिवर्तते॥34॥

यदि कुछ मिल जाय जो उत्तम है और न मिले तो भी ठीक है । एक स्थान पर स्थित वृक्ष के समान वह दोनों ही अवस्थाओं में समान रहते है॥34॥

'"What I have obtained that is good," " I did not get anything that is good," so thinking in both cases he returns to the tree unchanged.34.

"स पत्तपाणि विचरन्तो, अमूगो मूगसम्मतो।
अप्पं दानं न हीळेय्य, दातारं नावजानिया॥3/11/35॥

"Sa pattapāṇi vicaranto, amūgo mūgasammato;
Appaṃ dānaṃ na hīḷeyya, dātāraṃ nāvajāniyā.॥35॥

"स पात्रपाणि: विचरन्, अमूको मूकसम्मत:।
अल्पं दानं न हेडेत्, दातारं नावजानीयात्॥35॥

गूँगा न होते हुए भी गूँगे की भाँति हाथ में भिक्षा पात्र लेकर विचरण करते हुए अल्प दान का अनादर न करे और न तो दाता की निन्दा करे॥35॥

Wandering about with his alms-bowl in his hand, considered dumb without being dumb, let him not disregard a little gift, let him not despise the giver.35.

"उच्चावचा हि पटिपदा, समणेन पकासिता।
न पारं दिगुणं यन्ति, नयिदं एकगुणं मुतं॥3/11/36॥

"Uccāvacā hi paṭipadā, samaṇena pakāsitā;
Na pāraṃ diguṇaṃ yanti, nayidaṃ ekaguṇaṃ mutaṃ.॥36॥

"उच्चावचा: हि प्रतिपदा, श्रमणेन प्रकाशिता।
न पारं द्विगुणं यान्ति, न इदमेकगुणं मतम्॥36॥

श्रमण (भगवान् बुद्ध) द्वारा अच्छे-बुरे मार्ग बतलाये गये हैं । लोग दो बार संसार-सागर के पार नहीं जाते और न इस पार को एक बार में ही प्राप्त किया जा सकता है॥36॥

'Various are the practices illustrated by the Sramaṇa, they do not go twice to the other shore. this is not once thought.36.

"यस्स च विसता नत्थि, छिन्नसोतस्स भिक्खुनो।
किच्चाकिच्चप्पहीनस्स, परिळाहो न विज्जति॥3/11/37॥

"Yassa ca visatā natthi, chinnasotassa bhikkhuno;
Kiccākiccappahīnassa, pariḷāho na vijjati.॥37॥

"यस्य च विसृता नास्ति, छिन्नस्रोतस: भिक्षो: ।
कृत्याकृत्यप्रहीणस्य, परिदाहो न विद्यते॥37॥

जिसमें तृष्णा नहीं है, जिस भिक्षु का (भव) स्रोत नष्ट हो गया है, जो कृत्याकृत्य से परे है, उसे किसी प्रकार का संताप नहीं होता॥37॥

'For whom there is no desire, for the Bhikkhu who has cut off the stream of existence and aband oned all kinds of work, there is no pain.37.

"मोनेय्यं ते उपञ्ञिस्सं, खुरधारूपमो भवे।
जिव्हाय तालुमाहच्च, उदरे सञ्ञतो सिया॥3/11/38॥

"Moneyyaṃ te upaññissaṃ, khuradhārūpamo bhave;
Jivhāya tālumāhacca, udare saññato siyā.॥38॥

"मौनेयं त्वामुपज्ञापयिस्यामि (इति भगवान्) क्षुरधारोपमो भवेत्।
जिह्वया तालुमाहत्य, उदरे संयत: स्यात्॥38॥

मैं तुम्हें मौनेय (ज्ञानयोग- एकान्त मौन साधना) को बताऊँगा । वह छूरे की धार के समान होता है । तालु से जीभ सटा कर पेट के प्रति संयमी बने॥38॥

'I will declare to thee the state of wisdom,'— so said Bhagavān,—' let one be like the edge of a razor, having struck his palate with his tongue, let him be restrained in regard to his stomach.38.

"अलीनचित्तो च सिया, न चापि बहु चिन्तये।
निरामगन्धो असितो, ब्रह्मचरियपरायणो॥3/11/39॥

"Alīnacitto ca siyā, na cāpi bahu cintaye;
Nirāmagandho asito, brahmacariyaparāyaṇo.॥39॥

"अलीनचित्तश्च स्यात्, न चापि बहुचिन्तयेत्।
निरामगन्धोऽनासक्त:, ब्रह्मचर्यपरायण:॥39॥

आसक्ति रहित चित्त वाला बने, बहुत चिन्तन न करें, दुर्गुणरहित और अनासक्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करे॥39॥

'Let his mind be free from attachment, let him not think much about worldly affairs, let him be without defilement, independent and devoted to a religious life. 39.

"एकासनस्स सिक्खेथ, समणूपासनस्स च।
एकतं मोनमक्खातं, एको चे अभिरमिस्ससि।
अथ भाहिसि दसदिसा॥3/11/40॥

"Ekāsanassa sikkhetha, samaṇūpāsanassa ca;
Ekattaṃ monamakkhātaṃ, eko ce abhiramissasi;
Atha bhāhisi dasadisā.॥40॥

"एकासन: स शिक्षयेत्, श्रमणोपासनश्च।
एकान्तं मौनमाख्यातम्, एकश्चेत् अभिरंस्यति।
अथ भाषिष्यते दशदिशा:॥40॥

एक आसन पर रहने का अभ्यास करे और श्रमणों की संगति करे । एकान्तवास मौन कहा जाता है। यदि अकेले विहार करेगा तो दसों दिशाओं को प्रकाशित करेगा॥40॥

'For the sake of a solitary life and for the sake of the service that is to be carried out by Srāmaṇas, let him learn, solitariness is called wisdom; alone indeed he will find pleasure. 'Then he will shine through the ten regions.40.

"सुत्वा धीरानं निग्घोसं, झायीनं कामचागिनं।
ततो हिरिं च सद्धं च, भिय्यो कुब्बेथ मामको॥3/11/41॥

"Sutvā dhīrānaṃ nigghosaṃ, jhāyīnaṃ kāmacāginaṃ;
Tato hiriṃ ca saddhaṃ ca, bhiyyo kubbetha māmako.॥41॥

"श्रुत्वा धीराणां निर्घोषम्, ध्यानीनां कामत्यागिनाम् ।
ततो ह्रीं च श्रद्धाञ्च, भूय: कुर्यात् मामक:॥41॥

ध्यानी विषय-वासना-त्यागी धीरों के घोष को सुनकर श्रद्धालु व्यक्ति पाप कर्म करने में लज्जा करे और पुण्य कर्मों के करने में श्रद्धा को अधिकाधिक बढ़ावे॥41॥

Having heard the voice of the wise, of the meditating, of those that have abandoned sensual pleas ures, let my adherent then still more devote himself to modesty and belief. 41.

"तं नदीहि विजानाथ, सोब्भेसु पदरेसु च।
सणन्ता यन्ति कुसोब्भा, तुण्हीयन्ति महोदधी॥3/11/42॥

"Taṃ nadīhi vijānātha, sobbhesu padaresu ca;
Saṇantā yanti kusobbhā , tuṇhīyanti mahodadhī.॥42॥

"तां नदीति विजानीयात्, स्वम्भस्सु प्रदरेषु च।
स्वनन्त्य: यान्ति कुस्ब्म्भा:, तूष्णीं याति महोदधि:॥42॥

छोटी नदियों और नालों के मध्य उसे नदी समझे । छोटी नदी शोर करते हुए बहती है किन्तु सागर चुपचाप बहता है॥42॥

'Understand this from the waters in chasms and cracks: noisy go the small waters, silent goes the vast ocean. 42.

"यदूनकं तं सणति, यं पूरं सन्तमेव तं।
अड्ढकुम्भूपमो बालो, रहदो पूरोव पण्डितो॥3/11/43॥

"Yadūnakaṃ taṃ saṇati, yaṃ pūraṃ santameva taṃ;
Aḍḍhakumbhūpamo bālo, rahado pūrova paṇḍito.॥43॥

"यदूनकं तत् श्रवति, यत् पूरं सन्तमेव तत्।

अर्धकुम्भोपमो बाल:, ह्रद: पूर इव पण्डित:॥43॥

जिसमें कमी होती है वह शोर करता है, जो पूर्ण होता है, वह शान्त होता है । मूर्ख आधे भरे घड़े की तरह है, किन्तु पण्डित भरे हुए जलाशय की तरह॥43॥

'What is deficient that makes a noise, what is full that is calm; the fool is like a half-filed water pot, the wise is like a full pool.43.

"यं समणो बहुं भासति, उपेतं अत्थसञ्हितं।

जानं सो धम्मं देसेति, जानं सो बहु भासति॥3/11/44॥

"Yaṃ samaṇo bahuṃ bhāsati, upetaṃ atthasañhitaṃ;

Jānaṃ so dhammaṃ deseti, jānaṃ so bahu bhāsati.॥44॥

"य: श्रमणो बहु भाषते, उपेतमर्थसंहितम्।

जानन् स धर्ममुपदिशति, जानन् स बहु भाषते॥44॥

जो श्रमण अर्थयुक्त बहुत बात बोलता है, वह जानते हुए धर्म का उपदेश देता है और जानते हुए ही बहुत बोलता है॥44॥

'When the Sramaṇa speaks much that is possessed of good sense, he teaches the Dhamma while knowing it, while knowing it he speaks much.44.

"यो च जानं संयतत्तो, जानं न बहु भासति।

स मुनी मोनमरहति, स मुनी मोनमज्झगा''ति॥3/11/45॥

"Yo ca jānaṃ saṃyatatto, jānaṃ na bahu bhāsati;

Sa munī monamarahati, sa munī monamajjhagā"ti.॥45॥

"यश्च जानन् संयतत्वात्, जानन् न बहु भाषते।

स मुनि: मौनमर्हति, स मुनि: मौनमध्यगः'' इति॥45॥

जो जानते हुए भी संयम के कारण जाने हुए धर्म को बहुत नहीं कहता है, वह मुनि मौनेय के योग्य है। उस मुनि ने मौनेय (ज्ञान) को प्राप्त कर लिया है॥45॥

'But he who while knowing it is self-restrained, and while knowing it does not speak much, such a Muni deserves wisdom, such a Muni has attained to wisdom.'45.

नालकसुत्तं निट्ठितं

(Nālakasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(3, 12) द्वयतानुपस्सनासुत्तं (Dvayatānupassanāsuttaṃ)

एवं मे सुतं – एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति पुब्बारामे मिगारमातुपासादे। तेन खो पन समयेन भगवा तदहुपोसथे पन्नरसे पुण्णाय पुण्णमाय रत्तिया भिक्खुसङ्घपरिवुतो अब्भोकासे निसिन्नो होति । अथ खो भगवा तुण्हीभूतं तुण्हीभूतं भिक्खुसङ्घं अनुविलोकेत्वा भिक्खू आमन्तेसि–

''ये ते, भिक्खवे, कुसला धम्मा अरिया निय्यानिका सम्बोधगामिनो, तेसं वो, भिक्खवे, कुसलानं धम्मानं अरियानं निय्यानिकानं सम्बोधगामीनं का उपनिसा सवनाया'ति इति चे, भिक्खवे, पुच्छितारो अस्सु, ते एवमस्सु वचनीया – 'यावदेव द्वयतानं धम्मानं यथाभूतं ञाणाया'ति। किञ्च द्वयतं वदेथ?

''इदं दुक्खं, अयं दुक्खसमुदयोति अयमेकानुपस्सना। अयं दुक्खनिरोधो, अयं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा द्वयतानुपस्सिनो खो, भिक्खवे, भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं फलं पाटिकङ्खं – दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता''ति। इदमवोच भगवा। इदं वत्वान सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था –

Evaṃ me sutaṃ – ekaṃ samayaṃ bhagavā sāvatthiyaṃ viharati pubbārāme migāramātupāsāde. Tena kho pana samayena bhagavā tadahuposathe pannarase puṇṇāya puṇṇamāya rattiyā bhikkhusaṅghaparivuto abbhokāse nisinno hoti. Atha kho bhagavā tuṇhībhūtaṃ tuṇhībhūtaṃ bhikkhusaṅghaṃ anuviloketvā bhikkhū āmantesi –

"'Ye te, bhikkhave, kusalā dhammā ariyā niyyānikā sambodhagāmino, tesaṃ vo, bhikkhave, kusalānaṃ dhammānaṃ ariyānaṃ niyyānikānaṃ sambodhagāmīnaṃ kā upanisā savanāyā'ti iti ce, bhikkhave, pucchitāro assu, te evamassu vacanīyā – 'yāvadeva dvayatānaṃ dhammānaṃ yathābhūtaṃ ñāṇāyā'ti. Kiñca dvayataṃ vadetha?

"Idaṃ dukkhaṃ, ayaṃ dukkhasamudayoti ayamekānupassanā. Ayaṃ dukkhanirodho, ayaṃ dukkhanirodhagāminī paṭipadā ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā dvayatānupassino kho, bhikkhave, bhikkhuno appamattassa ātāpino pahitattassa viharato dvinnaṃ phalānaṃ aññataraṃ phalaṃ pāṭikaṅkhaṃ – diṭṭheva dhamme aññā, sati vā upādisese anāgāmitā"ti. Idamavoca bhagavā. Idaṃ vatvāna sugato athāparaṃ etadavoca satthā –

एवं मया श्रुतम् – एकस्मिन् समये भगवान *सावत्थ्यां* विहरति पूर्वारामे *मृगारमातु:* प्रासादे। तत्र खलु पुन: समये भगवान् तदहन्युपोसथे पञ्चदशे पुण्यां पूर्णिमायां रात्र्यां भिक्षुसंघपरिवृत्तोऽऽआकाशे निषण्णो भवति । अथ खलु भगवान् तूष्णीभूतं भिक्षुसंघम् अनुविलोक्य भिक्षून् आमन्त्रयत्–

''ये ते, भिक्षव: ! कुशला: धर्मा: आर्या: निर्याणिका: सम्बोधगामिन:, क उपन्यास: श्रवणेन इति चेत्, तेषां व:, भिक्षव: ! कुशलानां धर्माणामार्याणां निर्याणिकानां सम्बोधगामिनां इति चेत्, भिक्षव:! पृष्टार: स्यु: ते। एवं स्यु: वचनीया: – 'यावदेव द्वयो: धर्मयो: यथाभूतं ज्ञानाय इति। किञ्च द्वियतमिति वदेयु:?

''इदं दु:खम्, अयं दु:खसमुदय:" इति-इयम् एकानुपश्यना। अयं दु:खनिरोध:, इयं दु:खनिरोधगामिनी प्रतिपदा' इति– इयं द्वितीयानुश्यना। भिक्षो: एवं सम्यक् द्वितीयानुपश्यना खलु, भिक्षव: ! भिक्षो: अप्रमत्तस्य आतापिन: प्रहितत्त्वस्य विहरत: द्वयो: फलयो: अन्यतरं फलं प्रतिकांक्षनीयम् – दृष्टे धर्मे अन्या, सति वा उपाधिशेषे अनागामिता'' इति। इदमवोचत् भगवान्, इदमुक्तवा सुगतोऽथापरमेतदवोचत् शास्ता–

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रावस्ती के पूर्वाराम में मृगारमाता के प्रसाद में विहार कर रहे थे। उस समय भगवान् पूर्णमासी की रात्रि में उपोसथ के लिये खुले मैदान में भिक्षु-संघ से घिरे हुए बैठे थे । तब भगवान् ने मौन भाव से बैठे भिक्षु संघ को देखकर भिक्षुओं को सम्बोधित किया–

"भिक्षुओ ! ये जो आर्य, उत्तम सम्बोधि की ओर ले जाने वाले धर्म हैं, भिक्षुओ ! आर्य, उत्तम सम्बोधि की ओर ले जाने वाले इन कल्याणक धर्मों को सुनने से क्या लाभ है ?" ऐसा पूछने वाले हों तो उन्हें बताना चाहिए कि इससे दो धर्मों के यथार्थ ज्ञान का लाभ होता है । कौन से दो धर्मो को बताना चाहिए?

यह दु:ख और दु:ख का हेतु–एक अनुपश्यना है, यह दु:ख निरोध और दु:ख निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग–दूसरी अनुपश्यना है । भिक्षुओ ! इन दो बातों का मनन करने वाला, अप्रमत्त, प्रयत्नशील, तत्पर भिक्षु दो फलों में से एक की कामना कर सकता है–इसी जन्म में पूर्ण ज्ञान या वासनाओं के शेष रहने पर अनागामी-भाव।" भगवान् ने यह कहा । सुगत ने यह कह कर, फिर शास्ता ने यह कहा –

So it was heard by me: At one time Bhagavān dwelt at Sāvatthi in Pubbarama, Migaramatar's mansion. At that time Bhagavān on the Uposatha day', on the fifteenth, it being full moon, in the evening was sitting in the open air, surrounded by the assembly of Bhikkhus. Then Bhagavān surveying the silent assembly of Bhikkhus addressed them as following:

'Whichever Dhammas there are, O Bhikkhus, good, noble, liberating, leading to perfect enlightenment,—what is the use to you of listening to these good, noble, liberating Dhammas, leading to perfect enlightenment' If, O Bhikkhus, there should be people that ask so, they shall be answered thus: Yes, for the right understanding of the two Dhamm as.' 'Which two do you mean?' 'I mean, "this is pain, this is the origin of pain," this is one consideration,

"this is the destruction of pain, this is the way leading to the destruction of pain," this is the second consideration; thus, O Bhikkhus, by the Bhikkhu that considers the Dyad duly', is strenuous, ardent, resolute, of two fruits one fruit is to be expected: in this world perfect knowledge, or, if any of the five attributes still remain, the state of an Anagamin one that does not return.' This said Bhagavān, and when Sugata had said this, the Shāsta further spoke:

"ये दुक्खं नप्पजानन्ति, अथो दुक्खस्स सम्भवं।
यत्थ च सब्बसो दुक्खं, असेसं उपरुज्झति।
तं च मग्गं न जानन्ति, दुक्खूपसमगामिनं॥3/12/1॥

"Ye dukkhaṃ nappajānanti, atho dukkhassa sambhavaṃ;
Yattha ca sabbaso dukkhaṃ, asesaṃ uparujjhati;
Taṃ ca maggaṃ na jānanti, dukkhūpasamagāminaṃ.॥1॥

"ये दु:खं नाल्पजानन्ति, अथ च दु:खस्य सम्भवम्।
यत्र च सर्वशो दु:खमशेषमुपरुणद्धि।
तच्च मार्गं न जानन्ति, दु:खोपशमगामिनम्॥1॥

"जो दु:ख को नहीं जानते हैं और दु:ख की उत्पत्ति को भी, जहाँ सब प्रकार से सम्पूर्ण दु:ख शान्त हो जाता है और दु:ख ही शान्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग को भी नहीं जानते हैं॥1॥

'Those who do not understand pain and the origin of pain, and where pain wholly and totally is stopped, and do not know the way that leads to the cessation of pain, .1.

"चेतोविमुत्तिहीना ते, अथो पञ्ञाविमुत्तिया।
अभब्बा ते अन्तकिरियाय, ते वे जातिजरूपगा॥3/12/2॥

"Cetovimuttihīnā te, atho paññāvimuttiyā;
Abhabbā te antakiriyāya, te ve jātijarūpagā.॥2॥

"चेतोविमुक्तिहीना: ते, अथ च प्रज्ञाविमुक्ता:।
अभव्या: तेऽन्तक्रियायै, ते वै जाति-जरोपगा:॥2॥

वे चित्त और प्रज्ञा की विमुक्ति से रहित हैं । वे दु:ख का अन्त करने के अयोग्य हैं। वे ही जन्म-जरा में पड़े रहने वाले हैं॥2॥

'They, deprived of the emancipation of thought and the emancipation of knowledge, are unable to put an end to samsara, they will verily continue to undergo birth and decay.2.

"ये च दुक्खं पजानन्ति, अथो दुक्खस्स सम्भवं।
यत्थ च सब्बसो दुक्खं, असेसं उपरुज्झति।
तं च मग्गं पजानन्ति, दुक्खूपसमगामिनं॥3/12/3॥

"Ye ca dukkhaṃ pajānanti, atho dukkhassa sambhavaṃ;
Yattha ca sabbaso dukkhaṃ, asesaṃ uparujjhati;
Taṃ ca maggaṃ pajānanti, dukkhūpasamagāminaṃ.॥3॥

"ये च दु:खं, प्रजानन्ति, अथ च दु:खस्य सम्भवम् ।
यत्र च सर्वत: दु:खमशेषमुपरुणद्धि ।
तच्च मार्गं प्रजानन्ति, दु:खोपशमगामिनम्॥3॥

जहाँ सब प्रकार से सम्पूर्ण दु:ख निरुद्ध हो जाता है, दु:ख, दु:ख की उत्पत्ति और दु:ख की शान्ति की ओर ले जाने वाले मार्ग को जानते हैं॥3॥

'And those who understand pain and the origin of pain, and where pain wholly and totally is stopped, and who know the way that leads to the cessation of pain, .3.

"चेतोविमुत्तिसम्पन्ना, अथो पञ्ञाविमुतिया।
भब्बा ते अन्तकिरियाय, न ते जातिजरूपगा''ति॥3/12/4॥

"Cetovimuttisampannā, atho paññāvimuttiyā;
Bhabbā te antakiriyāya, na te jātijarūpagā"ti.॥4॥

"चेतोविमुक्तिसम्पन्ना:, अथ च प्रज्ञाविमुक्ता: ।
भव्या: तेऽन्तक्रियायै, न ते जातिजरोपगा:''इति॥4॥

वे चित्त और प्रज्ञा की विमुक्ति से युक्त हैं । वे दु:ख का अन्त करने में समर्थ हैं । वे ही जन्म-जरा में न पड़ने वाले हैं॥4॥

'They, endowed with the emancipation of thought and the emancipation of knowledge, are able to put an end, they will not undergo birth and decay.4.

"सिया अञ्ञेन पि परियायेन सम्मा द्वयतानुपस्सना'ति, इति चे, भिक्खवे, पुच्छितारो अस्सु; 'सिया'तिस्सु वचनीया। कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं उपधिपच्चयाति, अयमेकानुपस्सना। उपधीनं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स

सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे....अनागामिता"ति अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi pariyāyena sammā dvayatānupassanā'ti, iti ce, bhikkhave, pucchitāro assu; 'siyā'tissu vacanīyā. Kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ upadhipaccayāti, ayamekānupassanā. Upadhīnaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... anāgāmita"ti athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि' पर्यायेन सम्यक् द्वितीयानुपश्यना' इति, इति चेत्, *भिक्षवः* ! पृष्टारः स्युः 'स्यात्' तस्य वचनीया। कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चिदपि दुःखं सम्भवति, सर्वमुपधिप्रत्ययादिति इयम् एकानुपश्यना (मार्गः)। उपधिनां तु एवाशेषविरागनिरोधात् नास्ति दुःखस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना (मार्गः)। एवं सम्यक्... *पे*.... अनागामिता" इति अथापरमेतदवोचत् शास्ता –

क्या कोई दूसरा क्रम भी है जिससे द्वयता की अनुपश्यना की जा सकती है ? –ऐसा पूछने वालों को बताना चाहिए कि 'है' । वह कौन-सा है ? जो कुछ दुःख है वह वासनाओं के कारण होता है–यह एक अनुपश्यना है। वासनाओं की सम्पूर्ण निवृत्ति और निरोध से दुःख की उत्पत्ति नहीं होती है– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," if, O Bhikkhus, there are people that ask so, they shall be told, there is, and how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of the upadhis elements of existence," this is one consideration, 'but from the complete destruction of the upadhis, through absence of passion, there is no origin of pain," .....Anāgāmitā.... the Shāstā further spoke:

"उपधिनिदाना पभवन्ति दुक्खा, ये केचि लोकस्मिमनेकरूपा।
यो वे अविद्वा उपधिं करोति, पुनप्पुनं दुक्खमुपेति मन्दो।
तस्मा पजानं उपधिं न कयिरा, दुक्खस्स जातिप्पभवानुपस्सी'ति॥3/12/5॥

"Upadhinidānā pabhavanti dukkhā, ye keci lokasmimanekarūpā;
Yo ve avidvā upadhiṃ karoti, punappunaṃ dukkhamupeti mando;
Tasmā pajānaṃ upadhiṃ na kayirā, dukkhassa jātippabhavānupassī"ti.॥5॥

"उपधिनिदानाः प्रभवन्ति दुःखाः, ये केऽपि लोकेऽनेकरूपाः।
यो वै अविद्वान् उपधिं करोति, पुनर्पुनः दुःखमुपैति मन्दः।
तस्मात् प्रज्ञानमुपधिं न कुर्यात्, दुःखस्य जातिप्रभवा*नुपश्यी*'इति॥5॥

जो लोक में अनेक प्रकार के दुःख हैं वे वासनाओं के कारण उत्पन्न होते हैं । जो मूर्ख वासनाओं में पड़ा रहता है, वह मूढ़ बार-बार दुःख में पड़ता है । इसलिये दुःख की उत्पत्ति और हेतु को जानकर लोगों को वासनाओं में नहीं पड़ना चाहिए॥5॥

'Whatever pains there are in the world, of many kinds, they arise having their cause in the upadhis; he who being ignorant creates upadhi, that fool again undergoes pain; therefore being wise do not create upadhi, considering what is the birth and origin of pain.5.

सिया अञ्ञेन पि परियायेन सम्मा द्वयतानुपस्सना'ति, इति चे, भिक्खवे, पुच्छितारो अस्सु; 'सिया'तिस्सु वचनीया। कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं

अविज्जापच्चयाति, अयमेकानुपस्सना। अविज्जाय त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"'Siyā aññena pi pariyāyena sammā dvayatānupassanā'ti, iti ce, bhikkhave, pucchitāro assu; 'siyā'tissu vacanīyā. Kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ avijjāpaccayāti, ayamekānupassanā. Avijjāya tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

स्यात् अन्येनापि पर्यायेन सम्यक् द्वितीयानुपश्यना' इति, चेत्, *भिक्षव:* ! प्रष्टार आसन्; 'स्यात्' तस्य वचनीया। कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति सर्वमविद्याप्रत्ययात् इति— इयमेकानुपश्यना। अविद्याया: तु एव अशेषविरागनिरोधात्, नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— अयं द्वितीयानुपश्यना मार्ग:। एवं सम्यक्...पे.... अथापरमेतदवोचत् शास्ता—

क्या कोई दूसरा क्रम भी है जिससे द्वयता की अनुपश्यना की जा सकती है ? –ऐसा पूछने वालों को बताना चाहिए कि 'है' । वह कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है वह सब अविद्या के कारण होता है–यह एक अनुपश्यना है । अविद्या की सम्पूर्णत: निवृत्ति से, निरोध से, दु:ख उत्पन्न नहीं होता– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," if, O Bhikkhus, there are people that ask so, they shall be told, there is, and how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of avijja norance," this is one consideration, "but from the complete destruction of avigga, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration; .....the Shāstā further spoke:

"जातिमरणसंसारं , ये वजन्ति पुनप्पुनं।
इह भवञ्ञथाभावं, अविज्जायेव सा गति॥3/12/6॥

"Jātimaraṇasaṃsāraṃ , ye vajanti punappunaṃ;
Itthabhāvañathābhāvaṃ, avijjāyeva sā gati.॥6॥

"जातिमरणसंसारम्, ये व्रजन्ति पुनर्पुन:।
इह भवमन्यथाभावम्, अविद्याया एव सा गति:॥6॥

जो लोग जन्म-मृत्यु रूपी संसार में बार-बार पड़ते हैं और इस लोक तथा परलोक में चक्कर काटते हैं। उनकी अविद्या ही उस गति का मूल है॥6॥

'Those who repatedly go to samsara with birth and death, to existence in this way or in that way,— that is the state of avijja.6.

"अविज्जा हायं महामोहो, येनिदं संसितं चिरं।
विज्जागता च ये सत्ता, न ते गच्छन्ति पुनब्भव''न्ति॥3/12/7॥

"Avijjā hāyaṃ mahāmoho, yenidaṃ saṃsitaṃ ciraṃ;
Vijjāgatā ca ye sattā, na te gacchanti punabbhava"nti.॥7॥

"अविद्या ह्ययं महामोह:, येनेदं शंसितं चिरम्।
विद्यागताश्च ये सत्त्वा:, न ते गच्छन्ति पुनर्भवम्" इति॥7॥

यह अविद्या महामोह है । जिसके कारण चिरकाल से चक्कर काट रहे हैं । जो प्राणी विद्या को प्राप्त कर चुके हैं, वे पुनर्जन्म में नहीं पड़ते हैं॥7॥

'For this avijja is the great folly by which this existence has been traversed long, but those beings who resort to knowledge do not go to rebirth. 7.

"सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं सङ्खारपच्चयाति, अयमेकानुपस्सना। सङ्खारानं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ saṅkhārapaccayāti, ayamekānupassanā. Saṅkhārānaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि...*पे*... कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चिदपि दु:खं सम्भवति सर्वं संस्कारप्रत्ययात् इति– इयमेकानुपश्यना। संस्काराणां तु एव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति– इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...*पे*... अथापरमेतदवोचत् शास्ता –

क्या कोई दूसरा क्रम भी है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है वह संस्कारों के कारण होता है–यह एक अनुपश्यना है । संस्कारों के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख नहीं होता– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," ask so, they shall be told, there is, and how there is..... "Whatever pain arises is all in consequence of the samkharas matter," this is one consideration, "but from the complete destruction of the samkharas, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration..... the Shāstā further spoke:

"यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं सङ्खारपच्चया।
सङ्खारानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो॥3/12/8॥

"Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti, sabbaṃ saṅkhārapaccayā;
Saṅkhārānaṃ nirodhena, natthi dukkhassa sambhavo.॥8॥

"यत् किञ्चिदपि दु:खं सम्भवति, सर्वं संस्कारप्रत्ययात् ।
संस्काराणां निरोधात्, नास्ति दु:खस्य सम्भव:॥8॥

जो दु:ख होता है, वह सब संस्कारों के कारण ही होता है । संस्कारों के निरोध से दु:ख उत्पन्न नहीं होता॥8॥

'Whatever pain arises is all in consequence of the samkharas, by the destruction of the samkharas there will be no origin of pain.8.

"एतमादीनवं ञत्वा, दुक्खं सङ्खारपच्चया।
सब्बसङ्खारसमथा, सञ्ञानं उपरोधना।
एवं दुक्खक्खयो होति, एतं ञत्वा यथातथं॥3/12/9॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, dukkhaṃ saṅkhārapaccayā;
Sabbasaṅkhārasamathā, saññānaṃ uparodhanā;
Evaṃ dukkhakkhayo hoti, etaṃ ñatvā yathātathaṃ.॥9॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, दु:खं संस्कारप्रत्ययात् ।
सर्वसंस्कारशमथ:, संज्ञानामुपरोधनम्।
एवं दु:खक्षयो भवति, एवं ज्ञात्वा यथातथम्॥9॥

संस्कारों के कारण दु:ख होता है–इस दुष्परिणाम को जानकर सब संस्कारों की शान्ति और संज्ञा के निरोध से दु:ख का क्षय होता है–इसे यथार्थ रूप से जानकर॥9॥

'Looking upon this pain that springs from the samkharas as misery, from the cessation of all the samkharas, and from the destruction of consciousness will arise the destruction of pain, having understood this exactly, .9.

"सम्मद्दसा वेदगुनो, सम्मदञ्ञाय पण्डिता।
अभिभुय्य मारसंयोगं, न गच्छन्ति पुनब्भवं''ति॥3/12/10॥

"Sammaddasā vedaguno, sammadaññāya paṇḍitā;
Abhibhuyya mārasaṃyogaṃ, na gacchanti punabbhavaṃ"ti.॥10॥

"सम्यग्दर्शिन: वेदगुणा:, सम्यगाज्ञाय पण्डिता:।
अभिभूय मारसंयोगम्, न गच्छन्ति पुनर्भवम्" इति॥10॥

सम्यक्दर्शी, ज्ञानी, पण्डितजन भली प्रकार जानकर मार के संयोग को जीतकर पुर्नजन्म में नहीं पड़ते॥10॥

'The wise who have true views and are accomplished, having understood all things completely, and having conquered all association with Mara, do not go to re-birth.10.

"सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं विञ्ञाणपच्चयाति, अयमेकानुपस्सना। विञ्ञाणस्स त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ viññāṇapaccayāti, ayamekānupassanā. Viññāṇassa tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि...पे...कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चिदपि दु:खं सम्भवति, सर्वं विज्ञानप्रत्ययात् इति– इयमेकानुपश्यना। विज्ञानस्य त्वेव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...पे... । अथापरमेतदवोचत् शास्ता–

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह विज्ञान के कारण होता है–यह एक अनुपश्यना है । विज्ञान के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख नहीं होता– यह एक दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way..... how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of viñana consciousness," this is one consideration, 'but from the complete destruction of viññana, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration;.....Anāgāmitā thus, Shāstā further spoke:

"यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं विञ्ञाणपच्चया।
विञ्ञाणस्स निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो॥3/12/11॥

"Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti, sabbaṃ viññāṇapaccayā;
Viññāṇassa nirodhena, natthi dukkhassa sambhavo.॥11॥

"यत् किञ्चिदपि दु:खं सम्भवति, सर्वं विज्ञानप्रत्ययात् ।
विज्ञानस्य निरोधात्, नास्ति दु:खस्य सम्भव:॥11॥

जो दु:ख उत्पन्न होता है वह विज्ञान के कारण होता है। विज्ञान के निरोध से दु:ख उत्पन्न नहीं होता॥11॥

'Whatever pain arises is all in consequence of viññana, by the destruction of viññana there is no origin of pain.11.

"एतमादीनवं ञत्वा, दुक्खं विञ्ञाणपच्चया।
विञ्ञाणूपसमा भिक्खु, निच्छातो* परिनिब्बुतो''ति॥3/12/12॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, dukkhaṃ viññāṇapaccayā;
Viññāṇūpasamā bhikkhu, nicchāto parinibbuto'ti.॥12॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, दु:खं विज्ञानप्रत्ययात् ।
विज्ञानोपशम: भिक्षु:, नि:श्रान्त: परिनिवृत:" इति॥12॥

विज्ञान के कारण दु:ख होता है–इस दुष्परिणाम को जानकर विज्ञान के निरोध से भिक्षु तृष्णा-रहित होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता है॥12॥

'Looking upon this pain that springs from viññana as misery, from the cessation of viññana a Bhikkhu free from desire will be perfectly happy parinibbuta.12.

*नितण्हो

"सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं फस्सपच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। फस्सस्स त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था –

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ phassapaccayā ti, ayamekānupassanā. Phassassa tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि...पे... कथं स्यात् ? यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति सर्वं स्पर्शप्रत्ययादीति– इयमेकानुपश्यना। स्पर्शस्य तु एव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— 'इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...पे... अथापरमेतदवोचत् शास्ता –

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह सब स्पर्श के कारण होता है–यह एक अनुपश्यना है । स्पर्श के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way....." how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of phassa (touch)" this is one consideration, "but from the complete destruction of phassa, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration;..... thus Shāsta further spoke:

"तेसं फस्सपरेतानं, भवसोतानुसारिनं।
कुम्मग्गपटिपन्नानं, आरा संयोजनक्खयो॥3/12/13॥

"Tesaṃ phassaparetānaṃ, bhavasotānusārinaṃ;
Kummaggapaṭipannānaṃ, ārā saṃyojanakkhayo.॥13॥

"तेषां स्पर्शपरीतानाम्, भवस्रोतानुसारिणाम् ।
कुमार्गप्रतिपन्नानाम्, आरात् संयोजनक्षय:॥13॥

जो लोग स्पर्श में संलग्न हैं, वे संसार-स्रोत के अनुसार चलने वाले हैं; वे कुमार्ग पर चल रहे हैं, वे सांसारिक बन्धनों के क्षय से दूर हैं॥13॥

'For those who are ruined by phassa, who follow the stream of existence, who have entered a bad way, the destruction of bonds is far off.13.

"ये च फस्सं परिञ्ञाय, अञ्ञायुपसमे रता।
ते वे फस्साभिसमया, निच्छाता परिनिब्बुता''ति॥3/12/14॥

"Ye ca phassaṃ pariññāya, aññāyupasame ratā;
Te ve phassābhisamayā, nicchātā parinibbutā"ti.॥14॥

"ये च स्पर्शं परिज्ञाय, आज्ञाय उपशमे रता:।
ते वै स्पर्शाभिसमयात्, नि:श्रान्ता: परिनिवृत्ता:" इति॥14॥

जो स्पर्श को भली प्रकार जानकर ज्ञानपूर्वक उपशम (निर्वाण) में रत हैं, वे स्पर्श के निरोध से तृष्णा-रहित होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हो गये हैं॥14॥

'But those who, having fully understood phassa, knowingly have taken delight in cessation, they verily from the destruction of phassa', and being free from desire, are perfectly happy.14.

"सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं वेदनापच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। वेदनानं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था –

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ vedanāpaccayā ti, ayamekānupassanā. Vedanānaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि.....पे. .....कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चिदपि दु:खं सम्भवति, सर्वं वेदनाप्रत्ययात् इति– इयमेकानुपश्यना। वेदनानां त्वेव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...पे.... अनागामिता" इति । अथापरमेतदवोचत् शास्ता –

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?... कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह सब वेदना के कारण होता है– यह एक अनुपश्यना है । वेदना के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way,"..... how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of the vedanas sensations," this is one consideration, "but from the complete destruction of the vedanas, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration;..... thus, Shāsta further spoke:

"सुखं वा यदि वा दुक्खं, अदुक्खमसुखं सह।
अज्झत्तं च बहिद्धा च, यं किञ्चि अत्थि वेदितं॥3/12/15॥

"Sukhaṃ vā yadi vā dukkhaṃ, adukkhamasukhaṃ saha;
Ajjhattaṃ ca bahiddhā ca, yaṃ kiñci atthi veditaṃ.॥15॥

"सुखं वा यदि वा दु:खमदु:खमसुखं सह।
अध्यात्मञ्च बहिर्धा च, यत् किञ्चिदस्ति वेदितम्॥15॥

सुख, दु:ख और उपेक्षा के रूप में जो कुछ भीतर और बाहर की वेदनायें हैं॥15॥

'Pleasure or pain, together with want of pleasure and want of pain, whatever is perceived internally and externally, .15.

"एतं दुक्खं ति ञत्वान, मोसधम्मं* पलोकिनं*।
फुस्स फुस्स* वयं पस्सं, एवं तत्थ विजानति ।
वेदनानं खया भिक्खु, निच्छातो परिनिब्बुतो'' ति॥3/12/16॥

"Etaṃ dukkhaṃ ti ñatvāna, mosadhammaṃ palokinaṃ ;
Phussa phussa vayaṃ passaṃ, evaṃ tattha vijānati ;
Vedanānaṃ khayā bhikkhu, nicchāto parinibbuto''ti.॥16॥

"एवं दु:खमिति ज्ञात्वा, मोक्षधर्मं प्रलोकिनम् ।
'फुस्स-फुस्स' इति व्ययं पश्यन्, एवं तत्र विज्ञायते ।
वेदनानां क्षयात् भिक्षु:, नि:श्रान्त: परिनिवृत्त:" इति॥16॥

जो उन्हें नश्वर और क्षणभंगुर देखकर–यह दु:ख हुआ, जानकर भली प्रकार उनके नष्ट होने को देखकर उनसे विरक्त हो जाता है, वह भिक्षु वेदनाओं के क्षय से तृष्णा-रहित होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता हैं॥16॥

'Looking upon this as pain, having touched what is perishable and fragile, seeing the decay of everything, the Bhikkhu is disgusted, having from the perishing of the vedana become free from desire, and perfectly happy.16.

*मोसधम्मं ति नस्सनधम्मा।

•पलोकिनं ति जरामरणेहि पलुज्जनधम्म।

'फुस्स फुस्साति उदयब्बयञ्ञानेन फुसित्वा फुसित्वा।

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं तण्हापच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। तण्हाय त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था –

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ taṇhāpaccayā ti, ayamekānupassanā. Taṇhāya tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... *पे॰* .....कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चिदपि दु:खं सम्भवति, सर्वं तृष्णाप्रत्ययात् इयमेकानुपश्यना। तृष्णाया: त्वेव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्... *पे॰*... अथापरमेतदवोचत् शास्ता–

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह सब तृष्णा के कारण होता है– यह एक अनुपश्यना है । तृष्णा के सम्पूर्ण निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होता– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of tanha. craving." this is one cons ideration, "but from the complete destruction of tanha, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration; .....thus, Shāstā further spoke:

"तण्हादुतियो पुरिसो, दीघमद्धान संसरं।
इत्थभावञ्ञथाभावं, संसारं नातिवत्तति॥3/12/17॥

"Taṇhādutiyo puriso, dīghamaddhāna saṃsaraṃ;
Itthabhāvaññathābhāvaṃ, saṃsāraṃ nātivattati.॥17॥

"तृष्णा द्वितीय: पुरुष:, दीर्घमध्वानं संसरन्।
इत्थं भावमन्यथाभावम्, संसारं नातिवर्तते॥17॥

तृष्णा के साथ पुरुष दीर्घकाल से इस लोक तथा परलोक में चक्कर काट रहा है और वह संसार को पार नहीं कर सकता॥17॥

'A man accompanied by tanha, for a long time transmigrating into existence in this way or that way, does not overcome transmigration.17.

"एतमादीनवं ञत्वा, तण्हं दुक्खस्स सम्भवं।
वीततण्हो अनादानो, सतो भिक्खु परिब्बजे''ति॥3/12/18॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, taṇhaṃ dukkhassa sambhavaṃ;
Vītataṇho anādāno, sato bhikkhu paribbaje''ti.॥18॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, तृष्णां दु:खस्य सम्भवम्।
वीततृष्णोऽनादान:, स्मृतो भिक्षु: परिव्रजेत्''इति॥18॥

तृष्णा के ही कारण दु:ख उत्पन्न होता है–इस दुष्परिणाम को जानकर भिक्षु को चाहिए कि वह तृष्णा-रति और आसक्ति-रहित होकर स्मृति के साथ विचरण करे॥18॥

'Looking upon this as misery, this origin of the pain of tanha, let the Bhikkhu free from tanha, not seizing upon anything, thoughtful, wander about.18.

''सिया अञ्ञेन पि...पे....कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं उपादानपच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। उपादानानं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ upādānapaccayā ti, ayamekānupassanā. Upādānānaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... पे॰ .....कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चित् दु:खं सम्भव इति, सर्वमुपादानप्रत्ययात् इति– इयमेकानुपश्यना। उपादानानां त्वेवाशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्... पे॰... अथापरमेतदवोचत् शास्ता–

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह सब उपादान के कारण उत्पन्न होता है–यह एक अनुपश्यना है । उपादान के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of the upadanas the seizures," this is one consideration, "but from the complete destruction of the upadanas, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration;..... thus, Shāstā further spoke:

"उपादानपच्चया भवो, भूतो दुक्खं निगच्छति।
जातस्स मरणं होति, एसो दुक्खस्स सम्भवो॥3/12/19॥

"Upādānapaccayā bhavo, bhūto dukkhaṃ nigacchati;
Jātassa maraṇaṃ hoti, eso dukkhassa sambhavo.॥19॥

"उपादानप्रत्ययात् भवः, भूतो दुःखं निर्गच्छति।
जातस्य मरणं भवति, एष दुःखस्य सम्भवः॥19॥

उपादान के कारण भव होता है और प्राणी दुःख को प्राप्त होता है, उत्पन्न हुए की मृत्यु होती है–यह दुःख की उत्पत्ति है॥19॥

'The existence is in consequence of the upadnas; he who has come into existence goes to pain, he who has been born is to die, this is the origin of pain.19.

"तस्मा उपादानक्खया, सम्मदञ्ञाय पण्डिता।
जातिक्खयं अभिञ्ञाय, न गच्छन्ति पुनब्भवं'' ति॥3/12/20॥

"Tasmā upādānakkhayā, sammadaññāya paṇḍitā;
Jātikkhayaṃ abhiññāya, na gacchanti punabbhavaṃ"ti.॥20॥

"तस्मात् उपादानक्षयात्, सम्यक् आज्ञाय पण्डिताः।
जातिक्षयमभिज्ञाय, न गच्छन्ति पुनर्भवम्" इति॥20॥

इसलिये उपादान के क्षय से पण्डित भली प्रकार जानकर, जन्म-क्षय को जानकर, पुर्नजन्म में नहीं पड़ते हैं॥20॥

'Therefore from the destruction of the upadanas the wise with perfect knowledge, having seen what causes the destruction of birth, do not go to re-birth.20.

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं आरम्भपच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। आरम्भानं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ ārambhapaccayā ti, ayamekānupassanā. Ārambhānaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... पे.....कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चित् दुःखं सम्भवति, सर्वमारम्भप्रत्ययात् इति– इयमेकानुपश्यना। आरम्भानां त्वेव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दुःखस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्... पे.... अथापरमेतदवोचत् शास्ता –

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दुःख है, वह सब कर्मयुक्त प्रयत्न से उत्पन्न होता है–यह एक अनुपश्यना है । कर्मयुक्त प्रयत्न के सम्पूर्णतः निरोध से दुःख की उत्पत्ति नहीं होती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"'Should there be a complete consideration of the Dvayatā in another way,"..... and how there is: "Whatever, pain arises is all in consequence of the arambhas exertions," this is one consideration, "but from the complete destruct ion of the arambhas, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second cons ideration; thus,..... Shāsta further spoke:

"यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं आरम्भपच्चया।

आरम्भानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो॥3/12/21॥

"Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti, sabbaṃ ārambhapaccayā;

Ārambhānaṃ nirodhena, natthi dukkhassa sambhavo.॥21॥

"यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति, सर्वमारम्भप्रत्ययात् ।

आरम्भाणां निरोधात्, नास्ति दु:खस्य सम्भव:॥21॥

जो कुछ दु:ख उत्पन्न होता है वह सब कर्मयुक्त प्रयत्न से उत्पन्न होता है । प्रत्यक्ष के निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती॥21॥

'Whatever pain arises is all in consequence of the arambhas, by the destruction of the arambhas there is no origin of pain'.21.

"एतमादीनवं ञत्वा, दुक्खं आरम्भपच्चया।

सब्बारम्भं पटिनिस्सज्ज, अनारम्भे विमुत्तिनो॥3/12/22॥

"उच्छिन्नभवतण्हस्स, सन्तचित्तस्स भिक्खुनो।

विक्खीणो जातिसंसारो, नत्थि तस्स पुनब्भवो''ति॥3/12/23॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, dukkhaṃ ārambhapaccayā;

Sabbārambhaṃ paṭinissajja, anārambhe vimuttino.॥22॥

"Ucchinnabhavataṇhassa, santacittassa bhikkhuno;

Vikkhīṇo jātisaṃsāro, natthi tassa punabbhavo"ti.॥23॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, दु:खमारम्भप्रत्ययात् ।

सर्वारम्भं प्रतिनिषिध्य, अनारम्भ: विमुक्तेर्हि:॥22॥

"उच्छिन्नभवतृष्णाया:, सन्तचित्तस्य भिक्षो: ।

विक्षीणो जातिसंसार:, नास्ति तस्य पुनर्भव:''इति॥23॥

दु:ख प्रयत्न के कारण होता है–इस दुष्परिणाम को जानकर सारे प्रयत्नों को त्याग कर कर्मयुक्त प्रयत्न-रहित होकर विमुक्ति, भवतृष्णा के विनाश में शान्तचित्त भिक्षु लगे और जन्म रूपी संसार को पारकर ले, फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होगा॥22-23॥

'Looking upon this pain that springs from the arambhas as misery, having abandoned all the arambhas, birth and transmigration have been crossed over by the Bhikkhu who is liberated in non-exertion, who has cut off the craving for existence, and whose mind is calm; there is for him no re-birth.22.23.

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं आहारपच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। आहारानं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था –

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ āhārapaccayā ti, ayamekānupassanā. Āhārānaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... *पे॰* .....कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति, सर्वमाहारप्रत्ययात् इति इयमेकानुपश्यना। आहाराणां त्वेव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव' इति। इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्... *पे॰* ... अथापरमेतदवोचत् शास्ता—

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह सब आहार के कारण होता है– यह एक अनुपश्यना है । आहारों के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way,..... how there is: "Whatever pain arises is all in consequence of the aharas food ?," this is one consid eration, "but from the complete destruction of the ahaxas, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration;.....Thus Shāsta further spoke:

"यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं आहारपच्चया।
आहारानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो॥3/12/24॥

"Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti, sabbaṃ āhārapaccayā;
Āhārānaṃ nirodhena, natthi dukkhassa sambhavo.॥24॥

"यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति, सर्वमाहारप्रत्ययात्।
आहाराणां निरोधात्, नास्ति दु:खस्य सम्भव:॥24॥

जो दु:ख उत्पन्न होता है वह सब आहार के कारण उत्पन्न होता है । आहार के निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती॥24॥

'Whatever pain arises is all in consequence of the aharas, by the loss of the aharas there is no origin of pain. 24.

"एतमादीनवं ञत्वा, दुक्खं आहारपच्चया।
सब्बाहारं परिञ्ञाय, सब्बाहारमनिस्सितो॥3/12/25॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, dukkhaṃ āhārapaccayā;
Sabbāhāraṃ pariññāya, sabbāhāramanissito.॥25॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, दु:खमाहारप्रत्ययात् ।
सर्वाहारं परिज्ञाय, सर्वाहारमनि:श्रित:॥25॥

आहार के कारण दु:ख होता है–इस दुष्परिणाम को जानकर सभी आहारों से विरक्त होवे॥25॥

'Looking upon this pain that springs from the aharas as misery, having seen the result of all aharas, not resorting to all aharas, .25.

"आरोग्यं सम्मदञ्ञाय, आसवानं परिक्खया।
सङ्खाय सेवी धम्मट्ठो, सङ्ख्यं नोपेति वेदगू''ति॥3/12/26॥

"Ārogyaṃ sammadaññāya, āsavānaṃ parikkhayā;
Saṅkhāya sevī dhammaṭṭho, saṅkhyaṃ nopeti vedagū"ti.॥26॥

"आरोग्यं* सम्यक् ज्ञात्वा, आस्रवानां परिक्षयात् ।
संख्याया: सेवी धर्मस्थ:, संख्यं नोपैति वेदग:"इति॥26॥

चित्त-मलों (आश्रवों) के क्षय से निर्वाण (आरोग्य) को भली प्रकार जानकर धर्म में स्थिर व्यक्ति ज्ञानपूर्वक आहार का सेवन करे । ऐसा व्यक्ति फिर जन्म नहीं ग्रहण करता॥26॥

'Having seen that health is from the destruct ion of desire, he that serves discriminatingly and stands fast in the Dhamma cannot be reckoned as existing, being accomplished'.26.

*निर्वाणम्

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति सब्बं इञ्जितपच्चया ति, अयमेकानुपस्सना। इञ्जितानं त्वेव असेसविरागनिरोधा नत्थि दुक्खस्स सम्भवो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti sabbaṃ iñjitapaccayā ti, ayamekānupassanā. Iñjitānaṃ tveva asesavirāganirodhā natthi dukkhassa sambhavo ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... *पे॰* .....कथञ्च स्यात् ? यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति, सर्वं इङ्गितप्रत्ययात्' इति– इयमेकानुपश्यना। इङ्गितानां त्वेव अशेषविरागनिरोधात् नास्ति दु:खस्य सम्भव इति— इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्... *पे॰*... अथापरमेतदवोच शास्ता –

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?... कौन-सा है ? जो कुछ दु:ख है, वह सब चंचलता के कारण होता है–यह एक अनुपश्यना है । चंचलताओं के सम्पूर्णत: निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," ..... how there is: "Whatever pain arises is all in cons equence of the ingitas (commotions)," this is one consideration, "but from the complete destruction of the ingitas, through absence of passion, there is no origin of pain," this is the second consideration;..... thus Shāstā further spoke:

"यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति, सब्बं इञ्जितपच्चया।
इञ्जितानं निरोधेन, नत्थि दुक्खस्स सम्भवो॥3/12/27॥

"Yaṃ kiñci dukkhaṃ sambhoti, sabbaṃ iñjitapaccayā;
Iñjitānaṃ nirodhena, natthi dukkhassa sambhavo.॥27॥

"यत् किञ्चित् दु:खं सम्भवति, सर्वं इङ्गितप्रत्ययात्।
इङ्गितानां निरोधात्, नास्ति दु:खस्य सम्भव:॥27॥

जो कुछ दु:ख उत्पन्न होता है, वह सब चंचलता के कारण होता है । चंचलताओं के निरोध से दु:ख की उत्पत्ति नहीं होती॥27॥

'Whatever pain arises is all in consequence of the iñgitas, by the destruction of the iñgitas there is no origin of pain.27.

"एतमादीनवं ञत्वा, दुक्खं इञ्जितपच्चया।
तस्मा हि एजं वोस्सज्ज, सङ्खारे उपरुन्धिय।
अनेजो अनुपादानो, सतो भिक्खु परिब्बजे''ति॥3/12/28॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, dukkhaṃ iñjitapaccayā;
Tasmā hi ejaṃ vossajja, saṅkhāre uparundhiya;
Anejo anupādāno, sato bhikkhu paribbaje"ti.॥28॥

"एतमादीनवं ञात्वा, दु:खं इङ्गितप्रत्ययात्।
तस्मात् हि एजमुत्सृज्य, संस्कारानुपरुन्धयन्।
अनेजोऽनुपादान:, स्मृतो यथा भिक्षु: परिव्रजेत्''इति॥28॥

इसलिए इसे त्याग दें, संस्कारों का निरोध कर दे, तृष्णा और आसक्ति रहित हो स्मृति के साथ भिक्षु विचरण करे॥28॥

'Looking upon this pain that springs from the igitas as misery, and therefore having aband oned the iñgitas and having stopped the samkharas, let the Bhikkhu free from desire and not seizing upon anything, thoughtful, wander about.28.

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? निस्सितस्स चलितं होती ति, अयमेकानुपस्सना। अनिस्सितो न चलती ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Nissitassa calitaṃ hotī ti, ayamekānupassanā. Anissito na calatī ti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... *पे॰* .....कथञ्च स्यात् ? नि:श्रितस्य चलितं भवतीति– इयमेकानुपश्यना। अनि:श्रितो न चलतीति– इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...*पे॰*... अथापरमेतदवोचत् शास्ता–

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? जो तृष्णा में लिप्त रहता है उसमें चंचलता आ जाती है–यह एक अनुपश्यना है । जो तृष्णा में निर्लिप्त रहता है उसमें चंचलता नहीं आती– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way .....how there is: "For the nissita dependent there is vacillation," this is one consideration, "the independent man does not vacillate," this is the second consideration;..... thus, Shāstā further spoke:

"अनिस्सितो न चलति, निस्सितो च उपादियं।
इत्थभावञ्ञथाभावं, संसारं नातिवत्तति॥3/12/29॥

"Anissito na calati, nissito ca upādiyaṃ;
Itthabhāvaññathābhāvaṃ, saṃsāraṃ nātivattati.॥29॥

"अनि:श्रितो न चलति, नि:श्रितश्च उपादेयम्।
इत्थं भावमन्यथाभावम्, संसारं नातिवर्तते॥29॥

जो तृष्णा में लिप्त नहीं है उसमें चंचलता नहीं होती है, किन्तु तृष्णा में लिप्त रहने वाले को चंचलता होती है। वह इस लोक और परलोक में चक्कर काटने से मुक्त नहीं हो पाता॥29॥

'The independent man does not vacillate and the dependent man seizing upon existence in one way or in another, does not overcome samsara.29.

"एतमादीनवं ञत्वा, निस्सयेसु महब्भयं।
अनिस्सितो अनुपादानो, सतो भिक्खु परिब्बजे''ति॥3/12/30॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, nissayesu mahabbhayaṃ;
Anissito anupādāno, sato bhikkhu paribbaje"ti.॥30॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, नि:श्रयेषु महाभयम्।

अनि:श्रितोऽनुपादान:, स्मृतिमान् भिक्षु: परिव्रजेत्''इति॥30॥

तृष्णा में लिप्त होने में महाभय है–इस दुष्परिणामा को जानकर तृष्णा में निर्लिप्त और अनासक्त हो स्मृति के साथ भिक्षु विचरण करे॥30॥

'Looking upon this as misery and seeing great danger in things you depend upon, let a Bhikkhu wander about independent, not seizing upon anything, thoughtful. 30.

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? रूपेहि, भिक्खवे, अरूपा सन्ततरा ति, अयमेकानुपस्सना। अरूपेहि निरोधो सन्ततरो ति, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था–

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Rūpehi, bhikkhave, arūpā santatarā ti, ayamekānupassanā. Arūpehi nirodho santataroti, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... *पे॰* .....कथञ्च स्यात् ? रूपै:, भिक्षव: ! अरूपा: शान्ततरा इति – इयमेकानुपश्यना। अरूपै: निरोध: शान्ततर इति– इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...*पे॰*... अथापरमेतदवोचत् शास्ता –

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? भिक्षुओ ! रूप-लोक के अरूपलोक शान्ततर है –यह एक अनुपश्यना है । अरूप लोक से निर्वाण शान्ततर– यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way,..... how there is: "The formless beings, O Bhikkhus, are calmer than the ruppa," this is one consideration, "cessation is calmer than the formless," this is another consideration; thus..... Shāstā further spoke:

"ये च रूपूपगा सत्ता, ये च अरूपट्ठायिनो ।

निरोधं अप्पजानन्ता, आगन्तारो पुनब्भवं॥3/12/31॥

"Ye ca rūpūpagā sattā, ye ca arūpaṭṭhāyino;

Nirodhaṃ appajānantā, āgantāro punabbhavaṃ.॥31॥

"ये च रूपोपगा: सत्वा:, ये च अरूपवासिन: ।

निरोधमप्रजानन्त:, आगन्तार: पुनर्भवम्॥31॥

जो प्राणी रूप लोक में रहते हैं और जो अरूप लोक के निवासी हैं वे निरोध (निर्वाण) को न जानते हुए पुनर्जन्म में पड़ते हैं॥31॥

'Those beings who are possessed of form, and those who dwell in the formless world, not knowing cessation, have to go to re-birth, .31.

"ये च रूपे परिञ्ञाय, अरूपेसु असण्ठिता ।

निरोधे ये विमुच्चन्ति, ते जना मच्चुहायिनो''ति॥3/12/32॥

"Ye ca rūpe pariññāya, arūpesu asaṇṭhitā ;

Nirodhe ye vimuccanti, te janā maccuhāyino"ti.॥32॥

"ये च रूपाणि परिज्ञाय, अरूपेषु असंस्थिता: ।

निरोधे ये विमुच्यन्ते, ते जना: मृत्युहारिण:''इति॥32॥

और जो रूप को जानकर, अरूप में अनासक्त हैं, जो निर्वाण को प्राप्त कर विमुक्त हैं, वे लोग मृत्यु का अन्त कर देते हैं॥32॥

'But those who, having fully comprehended the forms, stand fast in the formless worlds, those who are liberated in the cessation, such beings leave death behind.32.

''सिया अञ्ञेन पि...पे.... कथं च सिया? यं, भिक्खवे, सदेवकस्स लोकस्स समारकस्स सब्रह्मकस्स सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय इदं सच्चं ति उपनिज्झायितं तदमरियानं एतं मुसा ति यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठं, अयमेकानुपस्सना। यं , भिक्खवे, सदेवकस्स...पे.... सदेवमनुस्साय इदं मुसा ति उपनिज्झायितं, तदमरियानं एतं सच्चं ति यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठं, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा...पे.... अथापरं एतदवोच सत्था –

"Siyā aññena pi...pe... kathaṃ ca siyā? Yaṃ, bhikkhave, sadevakassa lokassa samārakassa sabrahmakassa sassamaṇabrāhmaṇiyā pajāya sadevamanussāya idaṃ saccaṃ ti upanijjhāyitaṃ tadamariyānaṃ etaṃ musā ti yathābhūtaṃ sammappaññāya sudiṭṭhaṃ, ayamekānupassanā. Yaṃ , bhikkhave, sadevakassa...pe... sadevamanussāya idaṃ musā ti upanijjhāyitaṃ, tadamariyānaṃ etaṃ saccaṃ ti yathābhūtaṃ sammappaññāya sudiṭṭhaṃ, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā...pe... athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि..... *पे॰* .....कथञ्च स्यात् ? यत्, भिक्षव: ! सदेवकाय लोकाय समारकाय सश्रमणब्राह्मणप्रजायै सदेवमनुष्येभ्य इदं सत्यमिति उपनिध्यासितम्, तत् आर्याणाम् एतं मृषा इति यथाभूतं सम्यक्प्रज्ञया सुदिष्टम्– इयमेकानुपश्यना। यत्, भिक्षव: ! सदेवकाय.....*पे॰* ..... सदेवमनुष्येभ्य इदं मृषा इति उपनिध्यासितं तदार्याणामेतं सत्यमिति यथाभूतं सम्यक् प्रज्ञया सुदिष्टम्– इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक्...*पे॰* ... अथापरमेतदवोचत् शास्ता–

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ?...कौन-सा है ? भिक्षुओं ! देव, मार, ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्राह्मण सहित सारे प्राणी समूह ने जिसे सत्य मान लिया है, आर्यो ने सम्यक् प्रज्ञा से उसे यथार्थत: असत्य समझ लिया है –यह एक अनुपश्यना है । देव, मार, ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्राह्मण सहित सारे प्राणी समूह ने जिसे असत्य मान लिया है, आर्यो ने सम्यक् प्रज्ञा से उसे यथार्थत: सत्य समझ लिया है – यह दूसरी अनुपश्यना है...।... शास्ता ने फिर यह कहा–

"Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way,..... how there is: "What has been considered true by the world of men, together with the gods, Mara, Brahman, and amongst the Sramaṇas, Brāhmaṇas, gods, and men, that has by the noble through their perfect knowledge been well seen to be really false," this is one consideration; "what, O Bhikkhus,..... has been considered false by the world of men, together with the gods, Mara, Brahman, and amongst the Sramaṇas, Brāhmaṇas, gods, and men, that has by the noble through their perfect knowledge been well seen to be really true," this is another consideration. Thus,..... Shāstā further spoke:

"अनतनि अत्तमानिं, पस्स लोकं सदेवकं।
निविट्ठं नामरूपस्मिं, इदं सच्चं ति मञ्ञति॥3/12/33॥

"Anattani attamāniṃ, passa lokaṃ sadevakaṃ;
Niviṭṭhaṃ nāmarūpasmiṃ, idaṃ saccaṃ ti maññati.॥33॥

"अनात्मनि आत्मानम्, पश्य लोकं सदेवकम्।

निविष्टं नाम-रूपयोः, इदं सत्यमिति मन्यते॥33॥

अनात्मा में आत्मा को मानने वाले देव सहित लोक को देखो । नाम और रूप में संलग्न प्राणी इसे सत्य मानता है॥33॥

'Seeing the real in the unreal, the world of men and gods dwelling in name and form', he thinks: "This is true." .33.

"येन येन हि मञ्ञन्ति, ततो तं होति अञ्ञथा।

तं हि तस्स मुसा होति, मोसधम्मं हि इत्तरं॥3/12/34॥

"Yena yena hi maññanti, tato taṃ hoti aññathā;

Taṃ hi tassa musā hoti, mosadhammaṃ hi ittaraṃ.॥34॥

"यं यं हि मन्यन्ते, ततः तस्माद भवति अन्यथा।

तत् हि तस्य मृषा भवति, मोषधर्मं हि इत्वरम्॥34॥

जिसे जिस प्रकार का मानते हैं, वह उससे भिन्न होता है । यह उनकी धारणा मृषा (असत्य) होती है। जो असत्य है, वह नश्वर है॥34॥

'Whichever way they think it, it becomes otherwise, for it is perishable to him, and what is perishable is wretched.34.

"अमोसधम्मं निब्बानं, तदरिया सच्चतो विदू।

ते वे सच्चाभिसमया, निच्छाता परिनिब्बुता''ति॥3/12/35॥

"Amosadhammaṃ nibbānaṃ, tadariyā saccato vidū;

Te ve saccābhisamayā, nicchātā parinibbutā"ti.॥35॥

"अमोषधर्मं निर्वाणम्, तद् आर्याः सत्यतः विदुः।

ते वै सत्याभिसमयात्, निःश्रान्ताः परिनिवृताः''इति॥35॥

निर्वाण अनश्वर है । आर्यों ने उसे सत्य जान लिया है । सत्य को जानने वाले वे तृष्णा-रहित हो परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाते हैं॥35॥

'What is not perishable, the Nibbana, that the noble conceive as true, they verily from the comp rehension of truth are free from desire and perfectly happy.35.

''सिया अञ्ञेन पि परियायेन सम्मा द्वयतानुपस्सना'ति, इति चे, भिक्खवे, पुच्छितारो अस्सु; 'सिया'तिस्सु वचनीया। कथं च सिया? यं, भिक्खवे, सदेवकस्स लोकस्स समारकस्स सब्रह्मकस्स सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय इदं सुखं ति उपनिज्झायितं, तदमरियानं एतं दुक्खं ति यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठं, अयमेकानुपस्सना। यं, भिक्खवे, सदेवकस्स...पे.... सदेवमनुस्साय इदं दुक्खं ति उपनिज्झायितं तदमरियानं एतं सुखं ति यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय सुदिट्ठं, अयं दुतियानुपस्सना। एवं सम्मा द्वयतानुपस्सिनो खो, भिक्खवे, भिक्खुनो अप्पमत्तस्स आतापिनो पहितत्तस्स विहरतो द्विन्नं फलानं अञ्ञतरं

फलं पाटिकङ्खं– दिट्ठेव धम्मे अञ्ञा, सति वा उपादिसेसे अनागामिता"ति। इदमवोच भगवा। इदं वत्वान सुगतो अथापरं एतदवोच सत्था–

"'Siyā aññena pi pariyāyena sammā dvayatānupassanā'ti, iti ce, bhikkhave, pucchitāro assu; 'siyā'tissu vacanīyā. Kathaṃ ca siyā? Yaṃ, bhikkhave, sadevakassa lokassa samārakassa sabrahmakassa sassamaṇabrāhmaṇiyā pajāya sadevamanussāya idaṃ sukhaṃ ti upanijjhāyitaṃ, tadamariyānaṃ etaṃ dukkhaṃ ti yathābhūtaṃ sammappaññāya sudiṭṭhaṃ, ayamekānupassanā . Yaṃ, bhikkhave, sadevakassa...pe... sadevamanussāya idaṃ dukkhaṃ ti upanijjhāyitaṃ tadamariyānaṃ etaṃ sukhaṃ ti yathābhūtaṃ sammappaññāya sudiṭṭhaṃ, ayaṃ dutiyānupassanā. Evaṃ sammā dvayatānupassino kho, bhikkhave, bhikkhuno appamattassa ātāpino pahitattassa viharato dvinnaṃ phalānaṃ aññataraṃ phalaṃ pāṭikaṅkhaṃ – diṭṭheva dhamme aññā, sati vā upādisese anāgāmitā ti. Idamavoca bhagavā. Idaṃ vatvāna sugato athāparaṃ etadavoca satthā –

"स्यात् अन्येनापि पर्यायेन सम्यक् द्वितीयानुपश्यना' इति चेत्, भिक्षवः! पृष्टारः आसन्, 'स्यात्' तस्य वचनीयम् । इदमस्य स्यात् ? यत्, भिक्षवः ! सदेवकस्य.....*पे*..... सदेवमनुष्याय इदं सुखमिति उपनिर्ध्यायिते तदेवमार्याणाम् एतं दुःखमिति यथाभूतं सम्यक् प्रज्ञया सुदृष्टम्– इयमेकानुपश्यना। यत् भिक्षवः ! सदेवकस्य.....*पे*..... सदेवमनुष्याय इदं दुखमिति उपनिध्यासितं तदार्याणाम् एतं सुखमिति यथाभूतं सम्यक् प्रज्ञया सुदृष्टम्–इयं द्वितीयानुपश्यना। एवं सम्यक् द्वितीयानुपश्यना खलु, भिक्षवः ! भिक्षोः दृष्टेव अप्रमत्तस्य आतापिनः प्रहितत्त्वस्य विहरतः द्वयोः फलयोः अन्यतरं फलं प्रतिकांक्षितम्-दृष्टे एव धर्मे अन्या, सति वा उपाधिशेषे अनागामिता" इति। इदमवोचत् भगवान्। इदमुक्त्वा सुगतोऽथापरमेतदवोचत् शास्ता–

क्या कोई दूसरा भी क्रम है ? कौन-सा है ? भिक्षुओ ! देव, मार, ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्राह्मण सहित सारे प्राणी समूह ने जिसे सुख मान लिया है, आर्यो ने सम्यक् प्रज्ञा से उसे यथार्थतः दुःख समझ लिया है– यह एक अनुपश्यना है । देव, मार, ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्रह्मा, श्रमण तथा ब्राह्मण सहित सारे प्राणी समूह ने जिसे दुःख मान लिया है, आर्यो ने उसे दुःख समझा है – यह दूसरी अनुपश्यना है । भिक्षुओं! इन दोनों बातों का मनन करने वाला अप्रमत्त, प्रयत्नशील, तत्पर भिक्षु दो फलों में से एक की कामना कर सकता है– इसी जन्म में पूर्ण ज्ञान या वासनाओं के शेष रहने पर अनागामिता। भगवान् ने यह कहा । सुगत ने यह कह कर फिर शास्ता ने यह कहा–

"'Should there be a perfect consideration of the Dvayatā in another way," how there is: "What, O Bhikkhus,..... has been considered pleasure by the world of men, gods, Māra, Brahman, and amongst the Sramaṇas, Brāhmaṇas, gods, and men, that has by the noble by their perfect knowledge been well seen to be really pain," this is one consideration; "what, O Bhikkhus,..... has been considered pain by the world of men, gods, Mara, Brahman, and amongst the Sramaṇas, Brahm anas, gods, and men, that has by the noble by their perfect knowledge been well seen to be really pleasure," this is the second consideration. Thus, O Bhikkhus, by the Bhikkhu who considers the Dvayatā duly, who is strenuous, ardent, resolute, of two fruits one fruit is to be expected: in this world perfect knowledge, the state of an Anagamin one who does not return.' This said Bhagavān, and when Sugata had said so, the Shāstā further spoke:

"रूपा सद्दा रसा गन्धा, फस्सा धम्मा च केवला।
इट्ठा कन्ता मनापा' च, यावतत्थी ति वुच्चति॥3/12/36॥

"सदेवकस्स लोकस्स, एते वो सुखसम्मता।
यत्थ चेते निरुज्झन्ति, तं नेसं दुक्खसम्मतं॥3/12/37॥

"Rūpā saddā rasā gandhā, phassā dhammā ca kevalā;
Iṭṭhā kantā manāpā ca, yāvatatthī ti vuccati.॥36॥
"Sadevakassa lokassa, ete vo sukhasammatā;
Yattha cete nirujjhanti, taṃ nesaṃ dukkhasammataṃ.॥37॥

"रूप-शब्द- रस-गन्ध-स्पर्श-धर्माश्च केवला:।
इष्टा: कान्ता: मनापाश्च, यावदस्तीति उच्यते॥36॥
"सदेवकस्य लोकस्य, एते व: सुखसम्मता:।
यत्र चैते निरुध्यन्ति, तत् तेषां दु:खसम्मतम्॥37॥

जितने भी इष्ट, प्रिय और मनाप रूप, शब्द, गन्ध, रस और स्पर्श हैं, उन्हें देव सहित लोक ने सुख मान लिया है और जहाँ उनका निरोध होता है, उसे दु:ख मान लिया है॥36-37॥

'Form, sound, taste, smell, and touch are all wished for, pleasing and charming things as long as they last, so it is said.'By you, by the world of men and gods these things are deemed a pleasure, but when they cease it is deemed pain by them.36-37.

*मनापा पि मनबुड्ढिकरा । मन: आप्लवति इति मनाप:।

"सुखं ति दिट्ठमरियेहि, सक्कायस्सुपरोधनं।
पच्चनीकमिदं होति, सब्बलोकेन पस्सतं॥3/12/38॥

"Sukhaṃ ti diṭṭhamariyehi, sakkāyassuparodhanaṃ;
Paccanīkamidaṃ hoti, sabbalokena passataṃ.॥38॥

"सुखमिति दिष्टमार्यै:, सत्कायस्योपरोधनम्।
प्रत्यनीकमिदं भवति, सर्वलोकेन पश्यत:॥38॥

पाँच स्कन्धों के निरोध को आर्यों ने सुख जान लिया है । सम्यक् दर्शकों का यह अनुभव सांसारिक अनुभव से भिन्न है॥38॥

'By the noble the cessation of the existing body is regarded as pleasure; this is the opposite of what the wise in all the world.38.

"यं परे सुखतो आहु, तदरिया आहु दुक्खतो।
यं परे दुक्खतो आहु, तदरिया सुखतो विदू।
"पस्स धम्मं दुराजानं, सम्पमूळ्हेत्थ विद्दसु॥3/12/39॥

"Yaṃ pare sukhato āhu, tadariyā āhu dukkhato;
Yaṃ pare dukkhato āhu, tadariyā sukhato vidū.
"Passa dhammaṃ durājānaṃ, sampamūḷhetthaviddasu;॥39॥

"यत् परान् सुखमाहु:, तदार्या आहु: दु:खितम् ।
यत् परान् दु:खितम् आहु:, तदार्या: सुखितं विदु:।
"पश्य धर्म दुर्ज्ञानम्, सम्प्रमूढा अविद्वांस:॥39॥

जिसे दूसरे लोग सुख कहते हैं, उसे आर्य लोग दु:ख कहते हैं । जिसे दूसरे लोग दु:ख कहते हैं, उसे आर्य लोग सुख मानते हैं । जानने में दुष्कर इस धर्म को देखो । अज्ञ जन इस विषय में सर्वथा मूढ़ हैं॥39॥

'What fools say is pleasure that the noble say is pain, what fools say is pain that the noble know as pleasure—see here is a thing difficult to understand, here the ignorant are confounded.39.

निवुतानं तमो होति, अन्धकारो अपस्सतं।
"सतं च विवटं होति, आलोको पस्सतामिव।
सन्तिके न विजानन्ति, मग्गा धम्मस्स अकोविदा॥3/12/40॥

Nivutānaṃ tamo hoti, andhakāro apassataṃ.
"Sataṃ ca vivaṭaṃ hoti, āloko passatāmiva;
Santike na vijānanti, maggā dhammassa kovidā.॥40॥

निवृतानां तमो भवति, अन्धकारोऽपश्यताम्।
"सताञ्च विवृतं भवति, आलोकं पश्यतामिव।
सान्तिकं न विजानन्ति, मार्गधर्मस्य अकोविदा:॥40॥

अविया से ढँके हुए लोगों के लिए तम होता है, अज्ञों के लिए अन्धकारमय होता है। सत्पुरुषों के लिए वह प्रकाश देखने के समान खुला होता है, धर्म को न जानने वाले पास रहने पर भी असत्य नहीं जानते॥40॥

'For those that are enveloped there is gloom, for those that do not see there is darkness, and for the good it is manifest, for those that see there is light; even being near, those that are ignorant of the way and the Dhamma, do not discern anything.40.

"भवरागपरेतेहि , भवसोतानुसारिभि।
मारधेय्यानुपन्नेहि, नायं धम्मो सुसम्बुधो॥3/12/41॥

"Bhavarāgaparetehi , bhavasotānusāribhi;
Māradheyyānupannehi, nāyaṃ dhammo susambudho.॥41॥

"भवरागपरेतै:, भवस्रोतानुसारिभि:।
मारध्येयानुपन्नै:, नायं धर्म: सुसम्बुध:॥41॥

भवराग के वशीभूत, भव-स्रोत में पड़े, मार के अधीन लोगों के लिए यह धर्म समझना आसान नहीं है॥41॥

'By those that are overcome by the passions of existence, by those that follow the stream of existence, by those that have entered the realm of Mara, this Dhamma is not perfectly understood.41.

"को नु अञ्ञत्र मरियेहि, पदं सम्बुद्धुमरहति।
यं पदं सम्मदञ्ञाय, परिनिब्बन्ति अनासवा''ति॥3/12/42॥

"Ko nu aññatramariyehi, padaṃ sambuddhumarahati;
Yaṃ padaṃ sammadaññāya, parinibbanti anāsavā"ti.॥42॥

"को नु अन्यत्र आर्येभ्य:, पदं सम्बुद्धमर्हति।
यं पदं सम्यक् ज्ञात्वा परिनिर्वाणमिति अनास्रवा:'' इति॥42॥

आर्यों के अतिरिक्त और कौन उस सम्बोधि-पद के योग्य है, जिसे भली प्रकार समझ कर वे आश्रव-रहित हो परिनिर्वाण को प्राप्त हो जाता हैं॥42 ॥

'Who except the noble deserve the well understood state of Nibbana? Having perfectly conceived this state, those free from passion are completely extinguished.'42.

इदमवोच भगवा। अत्तमना ते भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुं ति। इमस्मिं च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने सट्ठिमत्तानं भिक्खूनं अनुपादाय आसवेहि चित्तानि विमुच्चिंसू ति।

Idamavoca bhagavā. Attamanā te bhikkhū bhagavato bhāsitaṃ abhinanduṃ ti. Imasmiṃ ca pana veyyākaraṇasmiṃ bhaññamāne saṭṭhimattānaṃ bhikkhūnaṃ anupādāya āsavehi cittāni vimucciṃsū ti.

इदमवोचत् भगवान्। आत्तमना* ते भिक्षव: भगवत: भाषितमभ्यनन्दन्। अस्मिन् च पुन: वैयाकरणे भणमाने षष्ठ्यात्मानां भिक्षुणामनुपादाय आस्रवै: चित्तानि व्यमुञ्चन्" इति।

भगवान् ने यह कहा । उन भिक्षुओं ने प्रसन्न मन से भगवान् के कथन का अनुमोदन किया । इस उपदेश के कहते समय साठ भिक्षुओं के चित्त आश्रवों से रहित हो विमुक्त हो गए ।

This spoke Bhagavān. Glad those Bhikkhus rejoiced at the words of Bhagavān. While this explanation was being given, the minds of sixty Bhikkhus, not seizing upon anything, were liberated.

*अच्छमनसा, बौद्धमिश्रसंस्कृत के अनुसार आत्तमनसा होगा।

द्वयतानुपस्सनासुत्तं निट्ठितं
(Dvayatānupassanāsuttaṃ niṭṭhitaṃ)
महावग्गो निट्ठितो।
(Mahāvaggo niṭṭhito.)

तस्सुद्दानं– सच्चं उपधि अविज्जा च, सङ्खारे विञ्ञाणपञ्चमं।
फस्सवेदनिया तण्हा, उपादानारम्भआहारा।
इञ्जितं चलितं रूपं, सच्चं दुक्खेन सोळसा ति॥

Tassuddānaṃ – Saccaṃ upadhi avijjā ca, saṅkhāre viññāṇapañcamaṃ;
Phassavedaniyā taṇhā, upādānārambhaāhārā;
Iñjitaṃ calitaṃ rūpaṃ, saccaṃ dukkhena soḷasā ti.

तस्योद्दानम्– सत्युपधि: अविद्या च, संस्कार: विज्ञानपञ्चमम्।
स्पर्शवेदना तृष्णा, उपादानारम्भाहारा:।
इञ्जितं चलितं रूपम्, सत्यं दु:खञ्च षोडशा इति॥

इस सुत्त का विषय समुदाय- 1.आर्यसत्य 2- चित्तविकार, 3- अविद्या, 4- संस्कार 5- विज्ञान, 6- स्पर्श, 7- वेदना, 8- तृष्णा 9- उपादान, 10- आरम्भ (प्रयत्न) 11- आहार, 12- कम्पन, 13- चञ्चलता, 14- रूप, 15- सत्य 16- दु:ख।

Group of subjects of this Vagga- 1- Āryastya, 2- Upadhi, 3- Avidyā (ignorance). 4- Sanskār, 5- Vijnāna, 6- Sparśa, 7- Vedan (pain), 8- Traṣṇā (desire) 9- Upādān, 10- Ārambha (effort) 11- Āhāra (meal), 12- Iñjita (trembling), 13- Calita (rtansitoriness), 14- Rūpa (appearance), 15- Satya (truth) 16- Sorrow.

तस्सुद्दानं – पब्बज्जा च पधानं च, सुभासितं च सुन्दरि।
माघसुत्तं सभियो च, सेलो सल्लं च वुच्चति॥
वासेट्ठो चा पि कोकालि, नालको द्वयतानुपस्सना।
द्वादसेतानि सुत्तानि, महावग्गो ति वुच्चती ति॥

Tassuddānaṃ – Pabbajjā ca padhānaṃ ca, subhāsitaṃ ca sundari;
Māghasuttaṃ sabhiyo ca, selo sallaṃ ca vuccati.
Vāseṭṭho cā pi kokāli, nālako dvayatānupassanā;
Dvādasetāni suttāni, mahāvaggo ti vuccatī ti.

तस्योद्दानम् – पब्बज्जा च पधानञ्च, सुभासितञ्च सुन्दरि।
माघसुत्तं सभियश्च, सेल: सल्लञ्च उच्यते॥
वासेट्ठ: चापि कोकालि:, नालको द्वयतानुपस्सना।
द्वादशेतानि सुत्तानि, महावग्ग इति उच्यते इति॥

उद्दान=सुत्त-समुदाय– 1- पब्बज्जासुत्त, 2- पधानसुत्त, 3- सुभाषितसुत्त, 4- सुन्दरिकभारद्वाज सुत्त, 5- माघसुत्त, 6-सभियसुत्त, 7- सेलसुत्त, 8- सल्लसुत्त, 9- वासेट्ठसुत्त, 10- कोकालिकसुत्त, 11- नालकसुत्त एवं 12- द्वयतानुपस्सना सुत्त। इन बारह सुत्तों का संग्रह "महावग्ग" नाम से अभिहित है।

Group of Suttas- 1- Pabbajjāsutta 2- Padhānasutta, 3- Subhāṣitasutta, 4- Sundarik-Bhardrājsutta, 5- Māghasutta, 6- Sabhiyasutta, 7- Selasutta, 8- Shalyasutta, 9-Vaseṭṭasutta, 10- Kokāliyasutta, 11- Nālaks sutta, and 12- Dvayatānupassanā sutta. The group of twelve suttas is know as 'Mahāvagga'.

***

4. अट्ठकवग्गो (Aṭṭhakavaggo)

(4.1) कामसुत्तं (Kāmasuttaṃ)

कामं कामयमानस्स, तस्स चे तं समिज्झति।

अद्धा पीतिमनो होति, लद्धा मच्चो यदिच्छति॥4/1/1॥

Kāmaṃ kāmayamānassa, tassa ce taṃ samijjhati;
Addhā pītimano hoti, laddhā macco yadicchati.॥1॥

कामं कामयमानस्य, तस्य चेत् तत् समिध्यते ।
अद्धा प्रीतिमनो भवति, लब्ध्वा मर्त्यो यदिच्छति॥1॥

यदि भोग विलास की इच्छा करने वाले की इच्छा पूरी हो जाती है, तो वह व्यक्ति अवश्य ही अपनी इच्छा पूरी होने से प्रसन्न मन होता है॥1॥

If he who desires sensual pleasures is successful, he certainly becomes glad-minded, having obt ained what a mortal wishes for.1.

तस्स चे कामयमानस्स, छन्दजातस्स जन्तुनो।

ते कामा परिहायन्ति, सल्लविद्धो व रुप्पति॥4/1/2॥

Tassa ce kāmayamānassa, chandajātassa jantuno;
Te kāmā parihāyanti, sallaviddho va ruppati.॥2॥

तस्य चेत् कामयमानस्य, छन्दजातस्य जन्तुन:।
ते कामा: परिहीयन्ते, शल्यविद्ध इव रुप्यते॥2॥

यदि इच्छा करने वाले तृष्णा के वशीभूत उस व्यक्ति की वे काम-भोग की चीजें नष्ट हो जाती हैं, तो वह तीर चुभने की भाँति पीड़ित होता है॥2॥

But if those sensual pleasures fail the person who desires and wishes for them, he will suffer, pierced by the arrow of pain.2.

यो कामे परिवज्जेति, सप्पस्सेव पदा सिरो।

सोमं विसत्तिकं लोके, सतो समतिवत्तति॥4/1/3॥

Yo kāme parivajjeti, sappasseva padā siro;
Somaṃ visattikaṃ loke, sato samativattati.॥3॥

य: कामान् परिवर्जयति, सर्पस्यैव पदात् शिर:।
स इमां विसक्तिकां लोके, स्मृत: समतिवर्तते॥3॥

जो सर्प के सिर को पैरों से बचाने की भांति काम-भोग को त्याग देता है वह इस संसार में स्मृति के साथ विषैली तृष्णा को त्याग देता है॥3॥

He who avoids sensual pleasures as he would avoid treading upon the head of a snake with his foot, such a one, being thoughtful sato, will conquer this desire.3.

खेतं वत्थुं हिरञ्ञं वा, गवस्सं दासपोरिसं।

थियो बन्धू पुथु कामे, यो नरो अनुगिज्झति॥4/1/4॥

Khettaṃ vatthuṃ hiraññaṃ vā, gavassaṃ dāsaporisaṃ;
Thiyo bandhū puthu kāme, yo naro anugijjhati.॥4॥

क्षेत्रं वस्तु हिरण्यं वा, गवाश्वं दासपौरुषम् ।
स्त्रियो बान्धव: पृथु कामान्, यो नरोऽनुगृध्यति॥4॥

जो मनुष्य खेती-बारी (वस्तु), सोना, गौ, घोड़ा, दास, स्त्रियों या बन्धु सम्बन्धी अनेक प्रकार के भोग-विलास में फँस जाता है॥4॥

He who covets extensively such pleasures as these, fields, goods or gold, cows and horses, servants, women, relations, .4.

अबला नं बलीयन्ति, मद्दन्तेनं परिस्सया।
ततो नं दुक्खमन्वेति, नावं भिन्नमिवोदकं॥4/1/5॥

Abalā naṃ balīyanti, maddantenaṃ parissayā;
Tato naṃ dukkhamanveti, nāvaṃ bhinnamivodakaṃ.॥5॥

अबलास्तं बलीयन्ते, मर्दयन्ते एवं परिश्रया:।
तत् एनं दु:खमन्वेति, नावं भिन्नामिवोदकम्॥5॥

उसे वासनायें दबाती हैं और परेशानियों का मर्दन करता हैं और फिर जैसे फूटी हुई नौका में पानी घुस जाता है, वैसे ही उसके पीछे दु:ख हो जाता है॥5॥

Sins will overpower him, dangers will crush him, and pain will follow him as water pours into a broken ship.5.

तस्मा जन्तु सदा सतो, कामानि परिवज्जये।
ते पहाय तरे ओघं, नावं सित्वा व पारगू ति॥4/1/6॥

Tasmā jantu sadā sato, kāmāni parivajjaye;
Te pahāya tare oghaṃ, nāvaṃ sitvā va pāragū ti.॥6॥

तस्मात् जन्तु: सदा स्मृत्या:, कामान् परिवर्जयेत् ।
तान् प्रहाय तरेत् ओघम्, नावं सिक्त्वा पारग: इति॥6॥

इसलिए व्यक्ति को सदा स्मृतिमान् हो काम-भोगों का परित्याग कर देना चाहिए । उनका त्याग कर, नाव को उलीच कर भव-सागर को पार कर जाय॥6॥

Therefore let one always be thoughtful, and avoid pleasures; having abandoned them, let him cross the stream, after baling out the ship, and go to the other shore.6.

कामसुत्तं निट्ठितं
(Kāmasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 2) गुहट्ठकसुत्तं (Guhaṭṭhakasuttaṃ)

सत्तो गुहायं बहुनाभिछन्नो, तिट्ठं नरो मोहनस्मिं पगाळ्हो।
दूरे विवेका हि तथाविधो सो, कामा हि लोके न हि सुप्पहाया॥4/2/1॥

Satto guhāyaṃ bahunābhichanno, tiṭṭhaṃ naro mohanasmiṃ pagāḷho;
Dūre vivekā hi tathāvidho so, kāmā hi loke na hi suppahāyā.॥1॥

सक्तो गुहायां बहुनाभिछन्नः, स्थितो नरो मोहे प्रगाढः।
दूरे विवेकाद्धि तथाविधः सः, कामाः हि लोके नहि सुप्रहेयाः॥1॥

शरीर में आसक्त, अनेक कामनाओं से आच्छादित, मोह में संलग्न व्यक्ति एकान्त-चिन्तन से बहुत दूर है । संसार में काम-भोगों को त्यागना बड़ा कठिन है॥1॥

A man that lives adhering to the cave who is covered with much sin, and sunk into delusion, such a one is far from seclusion, for the sensual pleasures in the world are not easy to abandon.1.

इच्छानिदाना भवसातबद्धा, ते दुप्पमुञ्चा न हि अञ्ञमोक्खा।
पच्छा पुरे वा पि अपेक्खमाना, इमेव कामे पुरिमेव जप्पं॥4/2/2॥

Icchānidānā bhavasātabaddhā, te duppamuñcā na hi aññamokkhā;
Pacchā pure vā pi apekkhamānā, imeva kāme purimeva jappaṃ.॥2॥

इच्छानिदानाः भवशातबद्धास्ते दुष्प्रमुञ्चाः न ह्यन्यमोक्षाः।
पश्चात् पुरो वाऽप्यपेक्षमाणाः, इमे इव कामाः पूर्वमेव जल्पम्॥2॥

जो इच्छाओं के वशीभूत हैं, सांसारिक सुखों में बँधे हुए हैं, उनकी मुक्ति अति कठिन है, क्योंकि वे दूसरों से मुक्त नहीं किए जा सकते । वे भूत और भविष्यत् की बातों की अपेक्षा करते हैं, वर्तमान् कामनाओं की तरह उनके लिए भी व्यर्थ चर्चा करते हैं॥2॥

Those whose wishes are their motives, those who are linked to the pleasures of the world, they are difficult to liberate, for they cannot be liberated by others, looking for what is after or what is before, coveting these and former sensual pleasures.2.

कामेसु गिद्धा पसुता पमूळ्हा, अवदानिया ते विसमे निविट्ठा।
दुक्खूपनीता परिदेवयन्ति, किंसू भविस्साम इतो चुतासे॥4/2/3॥

Kāmesu giddhā pasutā pamūḷhā, avadāniyā te visame niviṭṭhā;
Dukkhūpanītā paridevayanti, kiṃsū bhavissāma ito cutāse.॥3॥

कामेषु गृद्धाः प्रसुताः प्रमूढाः, अवदानीयाः ते विषमे निविष्टाः ।
दुःखोपनीताः परिदेवयन्ति, किंस्विद् भविष्याम इतः च्यवामहे॥3॥

जो कामों की कामना करते हैं, उनमें संलग्न हैं और उनसे मोहित हैं, जो कंजूस हैं और विषमता में निविष्ट हैं, वे दुःख में पड़कर विलाप करते हैं कि मृत्यु के बाद हम क्या होंगे?॥3॥

Those who are greedy of, given to, and infat uated by sensual pleasures, those who are riggardly, they, having entered upon what is wicked, wail when they are subjected to pain, saying: 'What will become of us, when we die away from here?' .3.

तस्मा हि सिक्खेथ इधेव जन्तु, यं किञ्चि जञ्ञा विसमं ति लोके।
न तस्स हेतू विसमं चरेय्य, अप्पञ्हिदं जीवितमाहु धीरा॥4/2/4॥

Tasmā hi sikkhetha idheva jantu, yaṃ kiñci jaññā visamaṃ ti loke;
Na tassa hetū visamaṃ careyya, appañhidaṃ jīvitamāhu dhīrā.॥4॥

तस्माद्धि शिक्षेत इहैव जन्तुः, यत् किञ्च जानीयात् विषममिति लोके।
न तस्य हेतुं विषमं चरेत्, अल्पं हीदं जीवितमाहुः धीराः॥4॥

इसलिए मनुष्य को चाहिए कि संसार में जो कुछ विषमता है, उसे इसी जीवन में जान ले और विषमता का आचरण न करे, क्योंकि धीरों ने इस जीवन को अल्प कहा है॥4॥

Therefore let a man here' learn, whatever he knows as wicked in the world, let him not for the sake of that practise what is wicked, for short is this life, say the wise.4.

पस्सामि लोके परिफन्दमानं, पजं इमं तण्हगतं भवेसु।
हीना नरा मच्चुमुखे लपन्ति, अवीततण्हासे भवाभवेसु॥4/2/5॥

Passāmi loke pariphandamānaṃ, pajaṃ imaṃ taṇhagataṃ bhavesu;
Hīnā narā maccumukhe lapanti, avītataṇhāse bhavābhavesu.॥5॥

पश्यामि लोके परिस्पन्दमानाम्, प्रजामिमां तृष्णागतां भवेषु।
हीना: नरा: मृत्युमुखे लपन्ति, अवीततृष्णा: भवाभवेषु॥5॥

संसार में तृष्णा में फँसी इस प्रजा को तड़फड़ाते हुए मैं देखता हूँ । सांसारिक तृष्णा में लीन हीन नर जन्म मृत्यु के चक्र में पड़ कर विलाप करते हैं॥5॥

I see in the world this trembling race given to desire for existences; they are wretched men who lament in the mouth of death, not being free from the craving for reiterated existences.5.

ममायिते पस्सथ फन्दमाने, मच्छेव अप्पोदके खीणसोते।
एतं पि दिस्वा अममो चरेय्य, भवेसु आसत्तिमकुब्बमानो॥4/2/6॥

Mamāyite passatha phandamāne, maccheva appodake khīṇasote;
Etaṃ pi disvā amamo careyya, bhavesu āsattimakubbamāno.॥6॥

ममायितान् पश्य स्पन्दमानान्, मत्स्यान् इवाल्पोदके क्षीणस्रोतसि।
एतदपि दृष्ट्वा अममश्चरेत्, भवेषु आसक्तिमकुर्वाण:॥6॥

अल्प जल वाले क्षीणस्रोत वाले जलाशय की मछलियों की तरह तृष्णा के वशीभूत होकर तड़फड़ाने वालों को देखो । इसको देखकर सांसारिक विषयों में आसक्ति न रखते हुए तृष्णा-रहित होकर विचरण करे॥6॥

Look upon those men trembling in selfishness, like fish in a stream nearly dried up, with little water; seeing this, let one wander about unselfish, without forming any attachment to existences.6.

उभोसु अन्तेसु विनेय्य छन्दं, फस्सं परिञ्ञाय अनानुगिद्धो।
यदत्तगरही तदकुब्बमानो, न लिप्पती दिट्ठसुतेसु धीरो॥4/2/7॥

Ubhosu antesu vineyya chandaṃ, phassaṃ pariññāya anānugiddho;
Yadattagarahī tadakubbamāno, na lippatī diṭṭhasutesu dhīro.॥7॥

उभयोरन्तयो: विनीय छन्द:, स्पर्शं परिज्ञाय अननुगृद्ध:।
यदात्मगर्ही तदकुर्वाण:, न लिप्यते दृष्टश्रुतेषु धीर:॥7॥

दोनों अन्तों में इच्छा दूर कर, स्पर्श को अच्छी तरह जानकर, लालायित न हो, आत्म निन्दा की बात न करते हुए धीर पुरुष दृष्ट और श्रुत विषयों में लिप्त नहीं होता॥7॥

Having subdued his wish for both ends, having fully understood touch without being greedy, not doing what he has himself blamed, the wise man does not cling to what is seen and heard.7.

सञ्ञं परिञ्ञा वितरेय्य ओघं, परिग्गहेसु मुनि नोपलित्तो।
अब्बूळ्हसल्लो चरमप्पमत्तो, नासीसती लोकमिमं परं चा ति॥4/2/8॥

Saññaṃ pariññā vitareyya oghaṃ, pariggahesu muni nopalitto;
Abbūḷhasallo caramappamatto, nāsīsatī lokamimaṃ paraṃ cā ti.॥8॥

संज्ञां परिज्ञाय वितरेद् ओघम्, परिग्रहेषु मुनिः नोपलिप्तः ।
अब्यूढशल्यः चरनप्रमत्तः, नाशंसते लोकमिमं परञ्चेति॥8॥

मुनि परिग्रह में लिप्त न हो, संज्ञा को अच्छी तरह जान, भवसागर को तर जाय । कामना रूपी तीर को निकाल कर, अप्रमत्त हो विचरने वाला इस लोक या परलोक की इच्छा नहीं करता॥8॥

Having understood name, let the Muni cross over the stream, not defiled by any grasping; having pulled out the arrow of passion, wandering about strenuous, he does not wish for this world or the other.8.

गुहट्ठकसुत्तं निट्ठितं
(Guhaṭṭhakasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4,3) दुट्ठट्ठकसुत्तं (Duṭṭhaṭṭhakasuttaṃ)

वदन्ति वे दुट्ठमना पि एके, अथो पि वे सच्चमना वदन्ति।
वादं च जातं मुनि नो उपेति, तस्मा मुनी नत्थि खिलो कुहिञ्चि॥4/3/1॥

Vadanti ve duṭṭhamanā pi eke, atho pi ve saccamanā vadanti;
Vādaṃ ca jātaṃ muni no upeti, tasmā munī natthi khilo kuhiñci.॥1॥

वदन्ति वै दुष्टमनसाप्येके, अथापि वै सत्यमना वदन्ति।
वादञ्च जातं मुनिः नो उपैति, तस्मात् मुनिः नास्ति खिलः कुहचित्*॥1॥

कुछ लोग दुष्ट मन से बोलते हैं और कुछ लोग सच्चे मन से बोलते हैं। मुनि विवादों में नहीं पड़ते हैं, इसलिए मुनि के लिए लोक में कहीं भी रागादि के कील (रिक्तता, शून्यता, दोष) नहीं हैं॥1॥

Verily, some wicked-minded people censure and also just-minded people censure, but the Muni does not undergo the censure that has arisen; therefore there is not a discontented khila Muni any here.1.

* किं को कु आदेश और सप्तमी विभक्ति के स्थान पर ह आदेश से चित् प्रत्यय के साथ कुहचित् । इसे अधिकांश व्याख्याकार वैदिक शब्द कहते हैं ।

सकं हि दिट्ठिं कथमच्चयेय्य, छन्दानुनीतो रुचिया निविट्ठो।
सयं समत्तानि पकुब्बमानो, यथा हि जानेय्य तथा वदेय्य॥4/3/2॥

Sakaṃ hi diṭṭhiṃ kathamaccayeyya, chandānunīto ruciyā niviṭṭho;
Sayaṃ samattāni pakubbamāno, yathā hi jāneyya tathā vadeyya.॥2॥

स्वकं हि दृष्टिं कथं त्यजेत्, छन्दानुनीतो रुच्यां निविष्टः ।
स्वयं समस्तानि प्रकुर्वाणः, यथा हि जानीयात् तथा वदेत्॥2॥

राग में पड़ा हुआ, मन से पसन्द किया हुआ व्यक्ति अपनी दृष्टि को कैसे त्याग सकता है ? स्वयं ग्रहण की हुई दृष्टि के अनुसार कार्य करता हुआ वह जैसा जानेगा, वैसा ही बतायेगा॥2॥

How can he who is led by his wishes and possessed by his inclinations overcome his own false view? Doing his own doings let him talk according to his understanding.2.

यो अत्तनो सीलवतानि जन्तु, अनानुपुट्ठो व परेस पाव ।
अनरियधम्मं कुसला तमाहु, यो आतुमानं सयमेव पाव॥4/3/3॥

Yo attano sīlavatāni jantu, anānupuṭṭho va paresa pāva;
Anariyadhammaṃ kusalā tamāhu, yo ātumānaṃ sayameva pāva.॥3॥

योऽऽत्मन: शीलव्रतानि जन्तु:, अननुपृष्टा एव परान् प्राव ।
अनार्यधर्मं कुशलास्तमाहु:, योऽऽत्मानं स्वयमेव प्राव॥3॥

जिस व्यक्ति ने अपने शील-व्रतों को न पूछने पर भी दूसरों की रक्षा की अर्थात् प्रशंसा की, उसे कुशल लोग अनार्य धर्म कहते हैं, जिसने अपने सम्बन्ध में स्वयं की रक्षा की अर्थात् प्रशंसा की॥3॥

The person who, without being asked, praises his own virtue and holy works to others, him the good call ignoble, one who praises himself.3.

सन्तो च भिक्खु अभिनिब्बुतत्तो, इतिहन्ति सीलेसु अकत्थमानो।
तमरियधम्मं कुसला वदन्ति, यस्सुस्सदा नत्थि कुहिञ्चि लोके॥4/3/4॥

Santo ca bhikkhu abhinibbutatto, itihanti sīlesu akatthamāno;
Tamariyadhammaṃ kusalā vadanti, yassussadā natthi kuhiñci loke.॥4॥

सन्तश्च भिक्षु: अभिनिवृतत्त्वात्, इत्यहमिति शीलेषु अकथ्यमान:।
तमार्यधर्मं कुशला: वदन्ति, यस्योत्सदा* नास्ति कुहचिल्लोके॥4॥

जो भिक्षु शान्त है, उपशान्त है और अपने शीलों के सम्बन्ध में इस प्रकार कुछ नहीं कहता, जिसे संसार में कहीं राग नहीं है, उसे कुशल लोग आर्य धर्म कहते हैं॥4॥

But the Bhikkhu who is calm and of a happy mind, 'so I am,' thus not praising himself for his virtues, him the good call noble, one for whom there are no desires anywhere in the world'.4.

*तृष्णा (राग)

पकप्पिता सङ्खता यस्स धम्मा, पुरक्खता सन्ति अवीवदाता।
यदत्तनि पस्सति आनिसंसं, तं निस्सितो कुप्पपटिच्च सन्तिं॥4/3/5॥

Pakappitā saṅkhatā yassa dhammā, purakkhatā santi avīvadātā;
Yadattani passati ānisaṃsaṃ, taṃ nissito kuppapaṭicca santiṃ.॥5॥

प्रकल्पिता: संस्कृता: यस्य धर्मा:, पुरस्कृता: सन्ति अव्यवदातार: ।
यदात्मनि पश्यत्यानृशंस्यम्, तन्नि:श्रित: कुप्रतीत्य• शान्तिम्॥5॥

जिसके धर्म बनावटी, कल्पित और तृष्णा से उत्पन्न हैं, वह अपने में जो गुण देखता है, उसके सहारे ही, उसके कारण उन्हें बतलाता है॥5॥

He whose Dhammas are formed and fabricated, placed in front and confused, because he sees in himself a good result, is therefore given to the view which is called kuppa-patikkasanti.5.

•कुत्सितं प्रतीत्य शान्तिं न लभते।

दिट्ठीनिवेसा न हि स्वातिवत्ता, धम्मेसु निच्छेय्य समुग्गहीतं।
तस्मा नरो तेसु निवेसनेसु, निरस्सती आदियती च धम्मं॥4/3/6॥

Diṭṭhīnivesā na hi svātivattā, dhammesu niccheyya samuggahītaṃ;
Tasmā naro tesu nivesanesu, nirassatī ādiyatī ca dhammaṃ.॥6॥

दृष्टिनिवेशा: नहि स्वातिवृत्ता:, धर्मेषु निश्चीय समुद्ग्रहीतम् ।
तस्मान्नर: तेषु निवेसनेषु, निरस्यति आददाति च धर्मम्॥6॥

दृष्टियों के ग्रहण को आसानी से नहीं छोड़ा जा सकता क्योंकि निर्णय करके ही कोई दृष्टि ग्रहण की जाती है । इसलिए व्यक्ति इन दृष्टियों में रहते हुए धर्म बार-बार छोड़ता और ग्रहण करता है॥6॥

For the dogmas of sights are not easy to overcome, among the Dhammas now this and now that is adopted after consideration; therefore a man rejects and adopts now this and now that Dhamma among the dogmas.6.

धोनस्स हि नत्थि कुहिञ्चि लोके, पकप्पिता दिट्ठि भवाभवेसु।
मायं च मानं च पहाय धोनो, स केन गच्छेय्य अनूपयो* सो॥4/3/7॥

Dhonassa hi natthi kuhiñci loke, pakappitā diṭṭhi bhavābhavesu;
Māyaṃ ca mānaṃ ca pahāya dhono, sa kena gaccheyya anūpayo so.॥7॥

धौतस्य हि नास्ति कुहचिल्लोके, प्रकल्पिता दृष्टिर्भवाभवेषु।
मायाञ्च मानञ्चापहाय धुत:, स कस्माद् गच्छेद् अननुपेय: स:॥7॥

शुद्ध व्यक्ति संसार में कहीं भी कल्पित दृष्टि नहीं रखता । वह शुद्ध व्यक्ति माया और अभिमान को त्याग कर फिर वह अनासक्त किस कारण विवाद में पड़े ?॥7॥

For him who has shaken off sin there is nowhere in the world any prejudiced view of the different existences; he who has shaken off sin, after leaving deceit and arrogance behind, which way should he go, he is independent .7.

*उपय=आसक्ति

उपयो हि धम्मेसु उपेति वादं, अनूपयं केन कथं वदेय्य।
अत्ता निरत्ता न हि तस्स अत्थि, अधोसि सो दिट्ठिमिधेव सब्बं ति॥4/3/8॥

Upayo hi dhammesu upeti vādaṃ, anūpayaṃ kena kathaṃ vadeyya;
Attā nirattā na hi tassa atthi, adhosi so diṭṭhimidheva sabbaṃ ti.॥8॥

उपेयो हि धर्मेषूपैति वादम्, अनुपयं कस्मात् कथं वदेत्।
आत्मा निरात्मा न हि तस्यास्ति, अध्वंसत् स दृष्टिमिहैव सर्वामिति॥8॥

आसक्ति युक्त व्यक्ति ही धर्म सम्बन्धी विवादों में पड़ता है । जो आसक्ति रहित है वह किस कारण और किस प्रकार विवाद में पड़ेगा ? उसे आत्मदृष्टि और उच्छेद-दृष्टि नहीं होती, उसने यहीं सारी दृष्टियों को नष्ट कर दिया॥8॥

But he who is dependent undergoes censure among the Dhammas; with what name and how should one name him who is independent? For by him there is nothing grasped or rejected, he has in this world shaken off every philosophical view.8.

दुट्ठट्ठकसुत्तं निट्ठितं
(Duṭṭhaṭṭhakasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(4, 4) सुद्धट्ठकसुत्तं (Suddhaṭṭhakasuttaṃ)

पस्सामि सुद्धं परमं अरोगं, दिट्ठे न संसुद्धि नरस्स होति।
एवाभिजानं परमं ति ञत्वा, सुद्धानुपस्सी ति पच्चेति ञाणं॥4/4/1॥

Passāmi suddhaṃ paramaṃ arogaṃ, diṭṭhena saṃsuddhi narassa hoti;
Evābhijānaṃ paramaṃ ti ñatvā, suddhānupassī ti pacceti ñāṇaṃ.॥1॥

पश्यामि शुद्धं परममरोगम्, दृष्टे न संशुद्धिर्नरस्य भवति।
एतदभिज्ञानं परममिति ज्ञात्वा, शुद्धानु*पश्यीति* प्रत्येति ज्ञानम्॥1॥

मैं शुद्ध, परम (श्रेष्ठ), आरोग्य को देखता हूँ– मेरी ऐसी दृष्टि से व्यक्ति की शुद्धि नहीं होती। मैं जो यह जानता हूँ, वही सर्वश्रेष्ठ है–ऐसा जान वह शुद्धता को देखने वाला उसे ही परम ज्ञान समझता है॥1॥

I see a pure, most excellent, sound man, by his views a man's purification takes place, holding this opinion, and having seen this view to be the highest, he goes back to knowledge, thinking to see what is pure.1.

*यह वैदिक प्रयोग है, लौकिक प्रयोग में दर्शी बनता है ।

दिट्ठेन चे सुद्धि नरस्स होति, ञाणेन वा सो पजहाति दुक्खं।
अञ्ञेन सो सुज्झति सोपधीको, दिट्ठी हि नं पाव तथा वदानं॥4/4/2॥

Diṭṭhena ce suddhi narassa hoti, ñāṇena vā so pajahāti dukkhaṃ;
Aññena so sujjhati sopadhīko, diṭṭhī hi naṃ pāva tathā vadānaṃ.॥2॥

दृष्टेन चेत् शुद्धिर्नरस्य भवति, ज्ञानेन वा स प्रजहाति दुःखम् ।
अन्येन स शुध्यति सोपधिकः, दृष्टिर्हि तं प्राव तथा वदताम्॥2॥

यदि दृष्टि से मनुष्य की शुद्धि होती है अथवा ज्ञान से वह दुःख को त्याग देता, यदि आसक्ति में पड़े व्यक्ति की शुद्धि अन्य प्रकार से ही होती तो दृष्टि मात्र से रक्षा हो जाती॥2॥

If a man's purification takes place by his philosophical views, or he by knowledge leaves pain behind, then he is purified by another way than the ariyamagga, together with his upadhis, on account of his views he tells him to say so.2.

न ब्राह्मणो अञ्ञतो सुद्धिमाह, दिट्ठे सुते सीलवते मुते वा।
पुञ्ञे च पापे च अनूपलित्तो, अत्तञ्जहो नयिध पकुब्बमानो॥4/4/3॥

Na brāhmaṇo aññato suddhimāha, diṭṭhe sute sīlavate mute vā;
Puññe ca pāpe ca anūpalitto, attañjaho nayidha pakubbamāno.॥3॥

न ब्राह्मणोऽन्यतः शुद्धिमाह, दृष्टे श्रुते शीलव्रते मते वा।
पुण्ये च पापे चानुपलिप्तः, आत्मजहो नेह प्रकुर्वाणः॥3॥

दृष्टि, श्रुत, शील-व्रत और विचारित में से किसी एक के द्वारा ब्राह्मण ने शुद्धि नहीं कही है । जो पुण्य और पाप में लिप्त नहीं है, जो अपने में अनासक्त और पुण्य-पाप नहीं करने वाला है, वही शुद्ध है॥3॥

But the Brāhmaṇa who does not cling to what has been seen, or heard, to virtue and holy works, or to what has been thought, to what is good and to what is evil, and who leaves behind what has been grasped, without doing anything in this world, he does not acknowledge that purification comes from another. 3.

पुरिमं पहाय अपरं सितासे, एजानुगा* ते न तरन्ति सङ्गं।
ते उग्गहायन्ति निसर्जयन्ति, कपीव साखं पमुञ्चं गहायं॥4/4/4॥

Purimaṃ pahāya aparaṃ sitāse, ejānugā te na taranti saṅgaṃ;
Te uggahāyanti nirassajanti, kapīva sākhaṃ pamuñcaṃ gahāyaṃ.॥4॥

पूर्वमपहायापरं श्रयते, एजानुगास्ते न तरन्ति सङ्गम्।
ते उद्गृह्णन्ति निसृजन्ति, कपिरिव शाखां प्रमुच्य गृह्णीते॥4॥

जो व्यक्ति पहली दृष्टि को त्याग दूसरी दृष्टि को ग्रहण करते हैं, वे तृष्णा के वशीभूत कभी आसक्ति को पार नहीं कर पाते । वे जिस प्रकार बन्दर एक शाखा को छोड़कर दूसरी प्रमुख शाखा को पकड़ता है, ऐसे ही एक दृष्टि को छोड़कर दूसरी को ग्रहण करते हैं॥4॥

Having left their former teacher they go to another, following their desires they do not break asunder their ties; they grasp, they let go like a monkey letting go one branch to catch hold of another.4.

*एजा=तृष्णा

सयं समादाय वतानि जन्तु, उच्चावचं गच्छति सञ्ञसत्तो।
विद्वा* च वेदेहि• समेच्च धम्मं, न उच्चावचं गच्छति भूरिपञ्ञो॥4/4/5॥

Sayaṃ samādāya vatāni jantu, uccāvacaṃ gacchati saññasatto;
Vidvā ca vedehi samecca dhammaṃ, na uccāvacaṃ gacchati bhūripaññño.॥5॥

स्वयं समादाय व्रतानि जन्तुरुच्चावचं गच्छति सङ्गसक्तः ।
विद्वांश्च विद्धि समेत्य धर्मम्, नोच्चावचं गच्छति *भूरिप्रज्ञः*॥5॥

व्यक्ति स्वयं व्रतों को धारण कर आसक्तियों में पड़ा अन्यान्य ऊँची-नीची दृष्टियों में पड़ जाता है, किन्तु जिसने अच्छी तरह धर्म को समझ लिया, वह महाप्रज्ञ ऊँची-नीची दृष्टियों के फेर में नहीं पड़ता॥5॥

Having himself undertaken some holy works he goes to various things led by his senses, but a man of great understanding, a wise man who by his wisdom has understood the Dhamma, does not go to various occupations.5.

*विद्वा=परमत्थविद्वा च अरहा • वेदेहि=चतूहि मग्गञाणवेदेहि चतुसच्चधम्मं अभिसमेच्चाति ।

स सब्बधम्मेसु विसेनिभूतो, यं किञ्चि दिट्ठं व सुतं मुतं वा।
तमेव दस्सिं विवटं चरन्तं, केनीध लोकस्मिं विकप्पयेय्य॥4/4/6॥

Sa sabbadhammesu visenibhūto, yaṃ kiñci diṭṭhaṃ va sutaṃ mutaṃ vā;
Tameva dassiṃ vivaṭaṃ carantaṃ, kenīdha lokasmi vikappayeyya.॥6॥

सः सर्वधर्मेषु विसेनीभूतः*, यत्किञ्चिदपि दृष्टं वा श्रुतं मतं वा।
तमेव दर्शिनं विवृतं चरन्तम्, केनेह लोके विकल्पयेत्॥6॥

वह (महाप्रज्ञ) जो कुछ भी दृष्ट, श्रुत या विचारित है उन सब धर्मों में नहीं पड़ता, वह सत्य को देखता हुआ खुला विचरण करता है । इस लोक में उसे कैसे विचलित किया जा सकता है ?॥6॥

He being secluded amongst all the Dhammas, whatever has been seen, heard, or thought—how should any one in this world be able to alter him, the seeing one, who wanders openly?.6.

*विगता सेना इति विसेना तया भूतम् इति विसेनीभूतः।
सर्वधम्मेसु मारसेनं विनासेत्वा ठितभावेन विसेनभूतो, तमेवदस्सिं विसुद्धदस्सिं ।

न कप्पयन्ति न पुरेक्खरोन्ति, अच्चन्तसुद्धी ति न ते वदन्ति।
आदानगन्थं* गथितं विसज्ज, आसं न कुब्बन्ति कुहिञ्चि लोके॥4/4/7॥

Na kappayanti na purekkharonti, accantasuddhī ti na te vadanti;
Ādānaganthaṃ gathitaṃ visajja, āsaṃ na kubbanti kuhiñci loke.॥7॥

न कल्पयन्ति न पुरस्कुर्वन्ति, अत्यन्तशुद्धिरिति न ते वदन्ति।
आदानग्रन्थिं ग्रथितां विसृज्य, आशां न कुर्वन्ति कुहचिल्लोके॥7॥

न वे किसी दृष्टि को कल्पित करते हैं, और न उसे आगे करते हैं । अत्यन्त शुद्धि को वे नहीं कहते हैं। सांसारिक आसक्तियों के बन्धनों को त्यागकर संसार में कहीं भी तृष्णा नहीं करते हैं॥7॥

They do not form any view, they do not prefer anything, they do not say, 'I am infinitely pure;' having cut the tied knot of attachment, they do not long for anything anywhere in the world.7.

*आदानगन्थं ति चतुब्बिधं पि रूपादीनं आदायकत्ता आदानगन्थं अत्तनो चित्तसन्ताने गथितं बद्धं अरियमग्गसत्थेन विसज्ज छिन्दित्वा।

सीमातिगो ब्राह्मणो तस्स नत्थि, ञत्वा व दिस्वा व समुग्गहीतं।
न रागरागी न विरागरत्तो, तस्सीध नत्थी परमुग्गहीतं ति॥4/4/8॥

Sīmātigo brāhmaṇo tassa natthi, ñatvā va disvā va samuggahītaṃ;
Na rāgarāgī na virāgaratto, tassīdha natthī paramuggahītaṃ ti.॥8॥

सीमातिगो ब्राह्मणस्तस्य नास्ति, ज्ञात्वा वा दृष्ट्वा वा समुद्गृहीतम्।
न रागरागी न विरागरक्तः, तस्येह नास्ति परमुद्गृहीतुम् इति॥8॥

जिस ब्राह्मण ने पाप को त्याग कर सीमा पार कर लिया है, और जिसने जानकर या देखकर दृष्टिग्राह को त्याग दिया है, जो न राग में लिप्त है और न विराग में, यहाँ उसके लिए कुछ सीखने को शेष नहीं है॥8॥

He is a Brāhmaṇa that has conquered sin; by him there is nothing embraced after knowing and seeing it; he is not affected by any kind of passion; there is nothing grasped by him as the highest in this world.8.

सुद्धट्ठकसुत्तं निट्ठितं
(Suddhaṭṭhakasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 5) परमट्ठकसुत्तं (Paramaṭṭhakasuttaṃ)

परमं ति दिट्ठीसु परिब्बसानो, यदुत्तरि कुरुते जन्तु लोके।
हीना ति अञ्ञे ततो सब्बमाह, तस्मा विवादानि अवीतिवत्तो॥4/5/1॥

Paramaṃ ti diṭṭhīsu paribbasāno, yaduttari kurute jantu loke;
Hīnā ti aññe tato sabbamāha, tasmā vivādāni avītivatto.॥1॥

परममिति दृष्टिषु पर्यवसानः, यदुत्तरं करोति जन्तुर्लोके।
हीन इति अन्यान् ततः सर्वमाह, तस्माद् विवादैरवीतवृत्तः॥1॥

जो व्यक्ति अपनी दृष्टि को सर्वश्रेष्ठ मानता है और संसार में जिसकी प्रशंसा करता है । उससे अन्य सभी को हीन बतलाता है, इसलिये वह विवादों से रहित नहीं है॥1॥

What one person, abiding by the philosophical views, saying, 'This is the most excellent,' considers the highest in the world, everything different from that he says is wretched, therefore he has not overcome dispute.1.

यदत्तनी पस्सति आनिसंसं, दिट्ठे सुते सीलवते मुते वा।
तदेव सो तत्थ समुग्गहाय, निहीनतो पस्सति सब्बमञ्ञं॥4/5/2॥

Yadattanī passati ānisaṃsaṃ, diṭṭhe sute sīlavate mute vā;
Tadeva so tattha samuggahāya, nihīnato passati sabbamaññaṃ.॥2॥

यदात्मनि पश्यति आनृशंस्यम्, दृष्टे श्रुते शीलव्रते मते वा।
तदेव स तत्र समुद्ग्रह्य, निहीनतया पश्यति सर्वमन्यत्॥2॥

जो स्वयं दृष्ट, श्रुत, शील-व्रत या मत में गुण देखता है, वह उसी को पकड़ कर रहता है और सभी अन्य दृष्टियों को हीनता से देखता है॥2॥

Because he sees in himself a good result, with regard to what has been seen or heard, virtue and holy works, or what has been thought, therefore, having embraced that, he looks upon everything else as bad.2.

तं वा पि गन्थं कुसला वदन्ति, यं निस्सितो पस्सति हीनमञ्ञं।
तस्मा हि दिट्ठं व सुतं मुतं वा, सीलब्बतं भिक्खु न निस्सयेय्य॥4/5/3॥

Taṃ vā pi ganthaṃ kusalā vadanti, yaṃ nissito passati hīnamaññaṃ;
Tasmā hi diṭṭhaṃ va sutaṃ mutaṃ vā, sīlabbataṃ bhikkhu na nissayeyya.॥3॥

तां वाऽपि ग्रन्थिं कुशला: वदन्ति, यं नि:श्रित: पश्यति हीनमन्यम् ।
तस्माद्धि दृष्टं वा श्रुतं मतं वा, शीलव्रतं भिक्षु: न नि:श्रयेत्॥3॥

कुशल लोग उसे भी बन्धन कहते हैं जो कि अपनी दृष्टि में बँधकर दूसरों की दृष्टियों को हीन देखता है इसलिए भिक्षु दृष्ट, श्रुत, विचारित या शील-व्रत के फेर में न पड़े॥3॥

The expert call just that a tie dependent upon which one looks upon anything else as bad. Therefore let a Bhikkhu not depend upon what is seen, heard or thought or upon virtue and holy works.3.

दिट्ठिं पि लोकस्मिं न कप्पयेय्य, ञाणेन वा सीलवतेन वापि।
समोति अत्तानमनूपनेय्य, हीनो न मञ्ञेथ विसेसि वा पि॥4/5/4॥

Diṭṭhiṃ pi lokasmiṃ na kappayeyya, ñāṇena vā sīlavatena vāpi;
Samoti attānamanūpaneyya, hīno na maññetha visesi vā pi.॥4॥

दृष्टिमपि लोके न कल्पयेत् , ज्ञानेन वा शीलव्रतेन वाऽपि।
सममिति आत्मानं नोपनयेत्, हीनं न मन्येत विशेषं वाऽपि॥4॥

संसार में ज्ञान या शील-व्रत के द्वारा किसी दृष्टि (मत) की कल्पना न करे । न तो अपने को दूसरों के समान समझे और न उनसे नीच या श्रेष्ठ ही समझे॥4॥

Let him not form any philosophical view in this world, either by knowledge or by virtue and holy works, let him not represent himself equal to others, nor think himself either low or distinguished.4.

अत्तं पहाय अनुपादियानो, ञाणे पि सो निस्सयं नो करोति।
स वे वियत्तेसु न वग्गसारी, दिट्ठिं पि सो न पच्चेति किञ्चि॥4/5/5॥

Attaṃ pahāya anupādiyāno, ñāṇe pi so nissayaṃ no karoti;
Sa ve viyattesu na vaggasārī, diṭṭhiṃ pi so na pacceti kiñci.॥5॥

आत्मानमपहाय अनुपादीयमान:, ज्ञानेऽपि स नि:श्रयं नो करोति।
स वै वियुक्तेषु न वर्गसारी, दृष्टिमपि स न प्रत्येति किञ्चित्॥5॥

जो 'अहं' को त्याग कर आसक्ति-रहित हो गया है, जो ज्ञान में भी आश्रय नहीं ग्रहण करता। वह दलबन्दियों में किसी का साथ नहीं देता और वह किसी दृष्टि में भी नहीं पड़ता है॥5॥

Having left what has been grasped, not seizing upon anything he does not depend even on knowl edge. He does not associate with those that are taken up by different things, he does not return to any philosophical view.5.

यस्सूभयन्ते पणिधीध नत्थि, भवाभवाय इध वा हुरं वा।
निवेसना तस्स न सन्ति केचि, धम्मेसु निच्छेय्य समुग्गहीतं॥4/5/6॥

Yassūbhayante paṇidhīdha natthi, bhavābhavāya idha vā huraṃ vā;
Nivesanā tassa na santi keci, dhammesu niccheyya samuggahītaṃ.॥6॥

यस्योभयान्ते प्रणिधिरिह नास्ति, भवाभवाय इह वापरं वा।
निवेशनास्तस्य न सन्ति केचित्, धर्मेषु नि:श्रयेत् समुद्गृहीतम्॥6॥

जिसके यहाँ दोनों अन्तों में और इस लोक या परलोक में उत्पन्न होने के लिये तृष्णा नहीं है, उसके धार्मिक दृढ़ग्राह से उत्पन्न किसी भी प्रकार की आसक्तियाँ नहीं होती हैं॥6॥

For whom there is here no desire for both ends, for reiterated existence either here or in another world, for him there are no resting-places of the mind embraced after investigation amongst the doctrines.6.

तस्सीध दिट्ठे व सुते मुते वा, पकप्पिता नत्थि अणू पि सञ्ञा।
तं ब्राह्मणं दिट्ठिमनादियानं, केनीध लोकस्मिं विकप्पयेय्य॥4/5/7॥

Tassīdha diṭṭhe va sute mute vā, pakappitā natthi aṇū pi saññā;
Taṃ brāhmaṇaṃ diṭṭhimanādiyānaṃ, kenīdha lokasmiṃ vikappayeyya.॥7॥

तस्येह दृष्टे वा श्रुते मते वा, प्रकल्पिता नास्ति अणुरपि संज्ञा ।
तं ब्राह्मणं दृष्टिमनादीयमानम्, केनेह लोके विकल्पयेत्॥7॥

उसे किसी दृष्ट, श्रुत या विचारित के विषय में अणुमात्र भी कल्पित धारणा नहीं रहती। किसी भी दृष्टि में अनासक्त उस ब्राह्मण को इस संसार में कौन विचलित कर सकता है?॥7॥

In him there is not the least prejudiced idea with regard to what has been seen, heard, or thought; how could any one in this world alter such a Brahmana who does not adopt any view?.7.

न कप्पयन्ति न पुरेक्खरोन्ति, धम्मा पि तेसं न पटिच्छितासे।
न ब्राह्मणो सीलवतेन नेय्यो, पारङ्गतो न पच्चेति तादी ति॥4/5/8॥

Na kappayanti na purekkharonti, dhammā pi tesaṃ na paṭicchitāse;
Na brāhmaṇo sīlavatena neyyo, pāraṅgato na pacceti tādī ti.॥8॥

न कल्पयन्ति न पुरस्कुर्वन्ति, धर्मा अपि तेषां न प्रतीच्छता:•।
न ब्राह्मण: शीलव्रतेन नेय:, पारंगतो न प्रत्येति *तादि*• इति॥8॥

वे न तो दृष्टियों की कल्पना करते हैं और न उन्हें प्रधान रूप से ग्रहण करते हैं। वे उन दृष्टियों को मानते भी नहीं हैं। ब्राह्मण शील-व्रत से भव-सागर नहीं पार करता, पार गया हुआ स्थिरात्मा इन दृष्टियों के फेर में नहीं पड़ते॥8॥

They do not form any view, they do not prefer anything, the Dhammas are not chosen by them, a Brāhmaṇa is not dependent upon virtue and holy works; having gone to the other shore, such a one does not return.8.

• इच्छा शब्द से कृत प्रत्यय करके इट् के आगम से प्रतीच्छिता: बहुवचन रूप बनेगा।

• तादी=तायी= रक्षा करने वाला, अट्ठकथा के अनुसार बुद्ध के लिए स्थिरात्मा अर्थ भी है।

परमट्ठकसुत्तं निट्ठितं

(Paramaṭṭhakasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 6) जरासुत्तं (Jarāsuttaṃ)

अप्पं वत जीवितं इदं, ओरं वस्ससता पि मिय्यति ।

यो चे पि अतिच्च जीवति, अथ खो सो जरसा पि मिय्यति॥4/6/1॥

Appaṃ vata jīvitaṃ idaṃ, oraṃ vassasatā pi miyyati;

Yo ce pi aticca jīvati, atha kho so jarasā pi miyyati.॥1॥

अल्पं वत ! जीवितमिदम्, अवरो वर्षशतादपि म्रियते ।

यश्चाप्यतीत्य जीवति, अथ खलु स जरसापि म्रियते॥1॥

अहो ! यह जीवन अल्प है ! सौ वर्ष के पहले भी सत्त्व मर जाता है । जो इससे अधिक जीता है, वह वृद्धावस्था को प्राप्त होकर मर जाता है॥1॥

Short indeed is this life, within a hundred years one dies and if any one lives longer, then he dies of old age.1.

सोचन्ति जना ममायिते, न हि सन्ति निच्चा परिग्गहा।

विनाभावसन्तमेविदं, इति दिस्वा नागारमावसे॥4/6/2॥

Socanti janā mamāyite, na hi santi niccā pariggahā;

Vinābhāvasantamevidaṃ, iti disvā nāgāramāvase.॥2॥

शोचन्ति जना: ममायिते, न हि सन्ति नित्या: परिग्रहा:।

विनाभावसदेवेदम्, इति दृष्ट्वा नागारमावसेत्॥2॥

ममत्व में पड़कर लोग शोक करते हैं । किसी प्रकार के परिग्रह नित्य रहने वाले नहीं हैं। इसमें वियोग लगा हुआ है । इस प्रकार देखकर घर में न रहे॥2॥

People grieve from selfishness, perpetual cares kill them, this world is full of disappointment: seeing this, let one not live in a house.2.

मरणेन पि तं पहीयति, यं पुरिसो ममिदं ति मञ्ञति।

एतं पि विदित्वा पण्डितो, न ममत्ताय नमेथ मामको॥4/6/3॥

Maraṇena pi taṃ pahīyati, yaṃ puriso mamidaṃ ti maññati;

Etaṃ pi viditvā paṇḍito, na mamattāya nametha māmako.॥3॥

मरणेनापि तत् प्रहीयते, यत् पुरुषो ममेदमिति मन्यते ।

एतदपि विदित्वा पण्डित:, न ममत्वाय नमेत् मामकम्॥3॥

पुरुष जिसे अपना समझता है उसे भी मरने पर छोड़ जाता है । इसलिए पण्डित को चाहिए कि ऐसा जानकर ममत्व की ओर अपने को न झुकाये॥3॥

That even of which a man thinks 'this is mine' is left behind by death: knowing this, let not the wise man turn himself to worldliness while being my follower.3.

सुपिनेन यथा पि सङ्गतं, पटिबुद्धो पुरिसो न पस्सति।
एवं पि पियायितं जनं, पेतं कालकतं न पस्सति॥4/6/4॥

Supinena yathā pi saṅgataṃ, paṭibuddho puriso na passati;
Evaṃ pi piyāyitaṃ janaṃ, petaṃ kālakataṃ na passati.॥4॥

स्वप्नेन यथाऽपि सङ्गतम्, प्रतिबुद्ध: पुरुषो न पश्यति।
एवमपि प्रियायितं जनम्, प्रेतं कालकृतो न पश्यति॥4॥

जैसे स्वप्न में प्राप्त वस्तु को मनुष्य जागने पर नहीं देखता, ऐसे ही प्रियजनों के मरजाने पर नहीं देखता॥4॥

As a man awakened does not see what he has met within his sleep, so also he does not see the beloved person that has passed away and is dead.4.

दिट्ठा पि सुता पि ते जना, येसं नाममिदं पवुच्चति ।
नामयेवावसिस्सति, अक्खेय्यं पेतस्स जन्तुनो॥4/6/5॥

Diṭṭhā pi sutā pi te janā, yesaṃ nāmamidaṃ pavuccati;
Nāmaṃyevāvasissati, akkheyyaṃ petassa jantuno.॥5॥

दृष्टा अपि श्रुता अपि ते जना:, येषां नामेदं प्रोच्यते ।
नामैवावशिष्यते, आख्येय: प्रेतस्य जन्तुन:॥5॥

जो देखे और सुने जाते हैं, उनकी चर्चा होती है । मृत मनुष्य का नाम मात्र अवश्य रह जाता है॥5॥

Both seen and heard are the persons whose particular name is mentioned, but only the name remains undecayed of the person that has passed away.5.

सोकप्परिदेवमच्छरं, न जहन्ति गिद्धा ममायिते।
तस्मा मुनयो परिग्गहं, हित्वा अचरिंसु खेमदस्सिनो॥4/6/6॥

Sokapparidevamaccharaṃ, na jahanti giddhā mamāyite;
Tasmā munayo pariggahaṃ, hitvā acariṃsu khemadassino.॥6॥

शोकपरिदेवमत्सरम्, न जहति गृद्धा: ममायिता:।
तस्मान्मुनय: परिग्रहम्, हित्वा अर्चाषु: क्षेमदर्शिन:॥6॥

जो बहुत लोभी और ममत्व वाले हैं वे शोक, विलाप और कंजूसी को नहीं छोड़ते हैं, इसलिए मुनि लोग परिग्रह को छोड़ क्षेमदर्शी होकर विचरण करते थे॥6॥

The greedy in their selfishness do not leave sorrow, lamentation and avarice; therefore the Munis leaving greediness wandered about seeing security.6.

पतिलीनचरस्स* भिक्खुनो, भजमानस्स विवित्तमासनं।
सामग्गियमाहु तस्स तं, यो अत्तानं भवने न दस्सये॥4/6/7॥

Patilīnacarassa bhikkhuno, bhajamānassa vivittamāsanaṃ;
Sāmaggiyamāhu tassa taṃ, yo attānaṃ bhavane na dassaye.॥7॥

प्रतिलीनचरस्य भिक्षो:, भजमानस्य विविक्तमासनम्।
सामग्रमाहुस्तस्य तम्, योऽऽत्मानं भवने न दर्शयेत्॥7॥

एकाग्र-चित्त हो विचरण करने वाले, एकान्त-चिन्तन में लीन रहने वाले भिक्षु के लिए यह योग्य है कि वह अपने को फिर पुनर्जन्म में न पड़ने दे॥7॥

For a Bhikkhu, who wanders about unattached and cultivates the mind of a recluse, they say it is proper that he does not show himself again in existence'. 7.

*अनुचर या भिक्षु

सब्बत्थ मुनी अनिस्सितो, न पियं कुब्बति नो पि अप्पियं।
तस्मिं परिदेवमच्छरं, पण्णे वारि यथा न लिम्पति॥4/6/8॥

Sabbattha munī anissito, na piyaṃ kubbati no pi appiyaṃ;
Tasmiṃ paridevamaccharaṃ, paṇṇe vāri yathā na limpati.॥8॥

सर्वत्र मुनिरनि:श्रित:, न प्रियं करोति नाप्यप्रियम्।
तस्मिन् परिदेवमत्सरम्, पत्रे वारि यथा न लिम्पति॥8॥

मुनि सर्वथा अनासक्त होता है, न वह किसी को प्रिय बनाता है और न अप्रिय । जिस प्रकार कमल के पत्ते के ऊपर जल नहीं ठहरता, उसी प्रकार विलाप और कंजूसी उसे प्रभावित नहीं करते॥8॥

Under all circumstances the independent Muni does not please nor displease any one; sorrow and avarice do not stick to him as little as water to aleaf.8.

उदबिन्दु यथा पि पोक्खरे, पदुमे वारि यथा न लिम्पति।
एवं मुनि नोपलिम्पति, यदिदं दिट्ठसुतं मुतेसु वा॥4/6/9॥

Udabindu yathā pi pokkhare, padume vāri yathā na limpati;
Evaṃ muni nopalimpati, yadidaṃ diṭṭhasutaṃ mutesu vā.॥9॥

उतबिन्दुर्यथाऽपि पुष्करे, पद्मे वारि यथा न लिम्पति।
एवं मुनिर्नोपलिम्पति, यदिदं दृष्टश्रुतमतेषु वा॥9॥

जिस प्रकार जलाशय में स्थित कमल के ऊपर जल नहीं ठहरता, उसी प्रकार मुनि दृष्ट, श्रुत या विचार में लिप्त नहीं होता॥9॥

As a drop of water does not stick to a lotus, as water does not stick to a lotus, so a Muni does not cling to anything, namely, to what is seen or heard or thought.9.

धोनो न हि तेन मञ्ञति, यदिदं दिट्ठसुतं मुतेसु वा।
नाञ्ञेन विसुद्धिमिच्छति, न हि सो रज्जति नो विरज्जी"ति॥4/6/10॥

Dhono na hi tena maññati, yadidaṃ diṭṭhasutaṃ mutesu vā;
Nāññena visuddhimicchati, na hi so rajjati no virajjatī"ti.॥10॥

धौतो न हि तेन मन्यते, यदिदं दृष्ट-श्रुतमतेषु वा।
नान्येन विशुद्धिमिच्छति, न हि स रज्यति नो विरज्यति इति॥10॥

शुद्ध पुरुष दृष्ट, श्रुत या विचारित को नहीं अपनाता । वह दूसरे की सहायता से शुद्धि की इच्छा नहीं करता । वह न तो किसी में अनुरक्त होता है और न विरक्त ही॥10॥

He who has shaken off does not therefore think much of anything because it has been seen or heard or thought; he does not wish for purification through another, for he is not pleased nor displeased with anything'.10.

जरासुत्तं निट्ठितं
(Jarāsuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 7) तिस्समेत्तेय्यसुत्तं (Tissametteyyasuttaṃ)

"मेथुनमनुयुत्तस्स, (इच्चायस्मा तिस्सो मेत्तेय्यो) विघातं ब्रूहि मारिस।
सुत्वान तव सासनं, विवेके सिक्खिस्सामसे॥4/7/1॥

"Methunamanuyuttassa, (iccāyasmā tisso metteyyo) vighātaṃ brūhi mārisa;
Sutvāna tava sāsanaṃ, viveke sikkhissāmase.॥1॥

"मैथुनमनुयुक्तस्य, (इत्यायुष्मान् *तिस्स मेत्तेय्य*) विघातं ब्रूहि *मारिस* !।
श्रुत्वा तव शासनम्, विवेकं शिक्षितोऽस्मि ॥1॥

आयुष्मान् तिस्समेत्तेय्य– हे मार्ष । मैथुन-धर्म में लगे हुए की हानि को बतलायें, आपके उपदेश को सुनकर विवेकपूर्वक सीखूंगा॥1॥

'Tell me, O venerable one,'—so said the venerable Tissa Metteyya,—' the defeat of him who is given to sexual pleasure; hearing thy precepts we will learn in seclusion.' .1.

"मेथुनमनुयुत्तस्स, (मेत्तेय्या ति भगवा) मुस्सते वा पि सासनं।
मिच्छा च पटिपज्जति, एतं तस्मिं अनारियं॥4/7/2॥

"Methunamanuyuttassa, (metteyyā ti bhagavā) mussate vā pi sāsanaṃ;
Micchā ca paṭipajjati, etaṃ tasmiṃ anāriyaṃ.॥2॥

"मैथुनमनुयुक्तस्य, (*मेत्तेय्य* इति भगवान्) मुञ्चते वाऽपि तं शासनम्।
मिथ्या च प्रतिपद्यते, एतत् तस्मिन् अनार्यत्त्वम्॥2॥

भगवान्–जो व्यक्ति मैथुन-धर्म में लगता है, वह उपदेश को छोड़ देता है अर्थात् भूल जाता है और वह मिथ्या-मार्ग पर चलने लगता है– यह उसमें अनार्य की बात है॥2॥

'The precepts of him who is given to sexual pleasure, O Metteyya,'—so said Bhagavān,—' are lost, and he employs himself wrongly, this is what is ignoble in him.2.

"एको पुब्बे चरित्वान, मेथुनं यो निसेवति।
यानं भन्तं व तं लोके, हीनमाहु पुथुज्जनं॥4/7/3॥

"Eko pubbe caritvāna, methunaṃ yo nisevati;
Yānaṃ bhantaṃ va taṃ loke, hīnamāhu puthujjanaṃ.॥3॥

"एक: पूर्वं चरित्वा, मैथुनं यो निसेवते।
यानं भ्रान्तमिव तं लोके, हीनमाहु: पृथग्जनम्॥3॥

जो पहले अकेला विचरण करके फिर मैथुन का सेवन करता है, वह इस संसार में घूमते हुए यान (रथ) के समान नीच और पृथक् जन (सामान्य जन) कहा जाता है॥3॥

'He who, having formerly wandered alone, gives himself up to sexual pleasure, him they call in the world a low, common fellow, like a rolling chariot. 3.

"यसो किति च या पुब्बे, हायते वा पि तस्स सा।
एतं पि दिस्वा सिक्खेथ, मेथुनं विप्पहातवे॥4/7/4॥

"Yaso kitti ca yā pubbe, hāyate vā pi tassa sā;
Etaṃ pi disvā sikkhetha, methunaṃ vippahātave.॥4॥

"यश: कीर्तिश्च या पूर्वम्, हीयते वाऽपि तस्य सा।
एतदपि दृष्ट्वा शिक्षेत, मैथुनं विप्रहातुम्॥4॥

पहले उसकी जो यश और कीर्ति रही है उसकी वह नष्ट हो जाती है । इसे भी देखकर मैथुन को त्यागने का अभ्यास करें॥4॥

'What honour and renown he had before, that 'is lost for him; having seen this let him learn to give up sexual pleasure.4.

"सङ्कप्पेहि परेतो सो, कपणो विय झायति।
सुत्वा परेसं निग्घोसं, मङ्कु· होति तथाविधो॥4/7/5॥

"Saṅkappehi pareto so, kapaṇo viya jhāyati;
Sutvā paresaṃ nigghosaṃ, maṅku hoti tathāvidho.॥5॥

"संकल्पै: परेत: स:, कृपण इव ध्यायति।
श्रुत्वा परेषां निर्घोषम्, मङ्कुर्भवति तथाविध:॥5॥

जो संकल्पों के पराधीन हो, कृपण की भाँति सोचता है, ऐसा व्यक्ति दूसरों की निन्दा को सुनकर बुरे मन वाला हो जाता है॥5॥

'He who overcome by his thoughts meditates like a miser, such a one, having heard the blaming voice of others, becomes discontented.5.

· मंकु=दुम्मनो-अट्ठकथा ।

"अथ सत्थानि* कुरुते, परवादेहि चोदितो।
एस ख्वस्स महागेधो*, मोसवज्जं पगाहति॥4/7/6॥

"Atha satthāni kurute, paravādehi codito;
Esa khvassa mahāgedho, mosavajjaṃ pagāhati.॥6॥

"अथ शस्त्राणि क्रियते, परवादैश्च चोदित:।
एष खल्वस्य महाबन्ध:, मृषावद्यं प्रगाहते॥6॥

दूसरों के अपवादों से उत्तेजित हो वह झूठ बोलता है । यह एक बड़ा बन्धन है । वह इस बन्धन में पड़कर झूठ बोलने लगता है॥6॥

'Then he makes weapons urged by the doctrines of others, he is very greedy, and sinks into falsehood.6.

* सत्थानीति कायदुच्चरितादीनि । तानि हि अत्तनो परेसं च छेदनट्ठेन "सत्थानी" ति वुच्चन्ति ।
तेसु चायं विसेसतो चोदितो मुसावचनसत्थानेव करोति। शारीरिक कष्ट पहुंचाना शस्त्र के द्वारा सूचित होता है ।

* महागेधो ति महाबन्धनं । स्वास्स मुसावादज्झोगाहो महागेधोति ।

"पण्डितो ति समञ्ञातो, एकचरियं अधिट्ठितो।
अथा पि मेथुने युत्तो, मन्दो व परिकिस्सति॥4/7/7॥

"Paṇḍito ti samaññāto, ekacariyaṃ adhiṭṭhito;
Athā pi methune yutto, mando va parikissati.॥7॥

"पण्डितोऽपि समज्ञात:, एकचर्यामधिष्ठित:।
अथाऽपि मैथुने युक्त:, मन्द इव परिक्लिश्यते॥7॥

पण्ड़ित रूप में प्रसिद्ध और एकचर्या में प्रतिष्ठित जो व्यक्ति मैथुन में आसक्त होता है वह मूढ़ की तरह क्लेश को प्राप्त होता है॥7॥

'Designated "wise" he has entered upon a solitary life, then having given himself up to sexual pleasure, he being a fool suffers pain.7.

"एतमादीनवं ञत्वा, मुनि पुब्बापरे इध।
एकचरियं दळ्हं कयिरा, न निसेवेथ मेथुनं॥4/7/8॥

"Etamādīnavaṃ ñatvā, muni pubbāpare idha;
Ekacariyaṃ daḷhaṃ kayirā, na nisevetha methunaṃ.॥8॥

"एतमादीनवं ज्ञात्वा, मुनि: पूर्वापरमिह।
एकचर्यां दृढं कुर्यात्, न निषेवेत मैथुनम्॥8॥

मुनि आरम्भ और अन्त में इस दुष्परिणाम को जानकर अकेले दृढ़ता पूर्वक विचरण करे और मैथुन का सेवन न करे॥8॥

'Looking upon this as misery let the Muni from first to last in the world firmly keep to his solitary life, let him not give himself up to sexual pleasure.8.

"विवेकञ्ञेव सिक्खेथ, एतदरियानमुत्तमं।
न तेन सेट्ठो मञ्ञेथ, स वे निब्बानसन्तिके॥4/7/9॥

"Vivekaññeva sikkhetha, etadariyānamuttamaṃ;
Na tena seṭṭho maññetha, sa ve nibbānasantike.॥9॥

"विवेकमेव शिक्षेत, एतदार्याणामुत्तमम्।
न तेन श्रेष्ठो मन्येत, स वै निर्वाणसान्तिक:॥9॥

विवेक को सीखें । यह आर्यों की उत्तम बात है । उससे अपने को श्रेष्ठ न समझे, वही निर्वाण के पास पहुँचा हुआ है॥9॥

'Let him learn seclusion, this is the highest for noble men, but let him not therefore think himself the best, although he is verily near Nibbana.9.

"रित्तस्स मुनिनो चरतो, कामेसु अनपेक्खिनो।
ओघतिण्णस्स पिहयन्ति, कामेसु गधिता पजा"ति॥4/7/10॥

"Rittassa munino carato, kāmesu anapekkhino;
Oghatiṇṇassa pihayanti, kāmesu gadhitā pajā"ti.॥10॥

"रिक्तस्य मुनेश्चरत:, कामेष्वनपेक्षिण: ।
ओघतीर्णस्य स्पृहयन्ति, कामेषु ग्रथिता प्रजा" इति॥10॥

काम-भोग में आसक्त लोग आसक्तियों से रहित होकर, काम-भोगों की अपेक्षा न करते विचरण करने वाले भव-पारंगत मुनि की स्पृहा करते हैं॥10॥

'The Muni who wanders void of desire, not coveting sensual pleasures, and who has crossed the stream, him the creatures that are tied in sensual pleasures.' 10.

तिस्समेत्तेय्यसुत्तं निट्ठितं
(Tissametteyyasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 8) पसूरसुत्तं* (Pasūrasuttaṃ)

इधेव सुद्धि इति वादयन्ति, नाञ्ञेसु धम्मेसु विसुद्धिमाहु।
यं निस्सिता तत्थ सुभं वदाना, पच्चेकसच्चेसु पुथू निविट्ठा॥4/8/1॥

Idheva suddhi iti vādayanti, nāññesu dhammesu visuddhimāhu;
Yaṃ nissitā tattha subhaṃ vadānā, paccekasaccesu puthū niviṭṭhā.॥1॥

इहैव शुद्धिरिति विवदन्ते, नान्येषु धर्मेषु विशुद्धिमाहुः।
यं निःश्रितास्तं शुभं वदन्तः, प्रत्येकं सत्येषु पृथु निविष्टाः॥1॥

यहाँ पर ही शुद्धि है' – लोग ऐसा कहकर विवाद करते हैं और कहते हैं कि 'अन्य धर्मों में शुद्धि नहीं है ।' वे जिसे मानते हैं उसे ही अच्छा कहते हैं । लोग विभिन्न अन्य धर्मों को मानते हैं॥1॥

Here they maintain 'purity,' in other doctrines dhamma they do not allow purity; what they have devoted themselves to, that they call good, and they enter extensively upon the single truths.1.

* एक के अनेक अर्थ हैं यहाँ पर अन्य अर्थ ग्राह्य हैं - अमरकोष

* पसूर शब्द दो अर्थ में है। –प्रशूर– जिसका अर्थ 'अतिविशिष्ट बलवान् है और दूसरा प्रचुर-जिसका अर्थ -बाहुल्येन होगा। वर्तमान प्रसंग में ये दोनों ही अर्थ अनुकूल प्रतीत होते हैं।

ते वादकामा परिसं विगय्ह, बालं दहन्ती मिथु* अञ्ञमञ्ञं।
वदन्ति ते अञ्ञसिता कथोज्जं, पसंसकामा कुसला वदाना॥4/8/2॥

Te vādakāmā parisaṃ vigayha, bālaṃ dahantī mithu aññamaññaṃ;
Vadanti te aññasitā kathojjaṃ, pasaṃsakāmā kusalā vadānā.॥2॥

ते वादकामाः परिषदं विगह्य, बालं दहन्तो मिथोऽन्योऽन्यम् ।
वदन्ति तेऽन्यसृताः कुचोद्यम्, प्रशंसकामाः कुशलाः• वदन्तः॥2॥

वे विवाद की कामना वाले परिषद् में जाकर एक दूसरे को मूर्ख बताते हैं । वे विभिन्न गुरुओं को मानते हुए उनकी कथा-प्रशंसा करते हैं और अपने को कुशल मानते हैं॥2॥

Those wishing for dispute, having plunged into the assembly, brand each other as fools mutually, they go to others and pick a quarrel, wishing for praise and calling themselves expert.2.

* मूर्खः, बालः, दहन्ति मिथु, बालं दहन्ति, बालतो पस्सन्ति । • अञ्ञमञ्ञं सत्थारादिं निस्सिता कलहं वदन्ति ।

• कुसला कुसलवादा पण्डितवादा ति ।

युत्तो कथायं परिसाय मज्झे, पसंसमिच्छं विनिघाति होति।
अपाहतस्मिं पन मङ्कु होति, निन्दाय सो कुप्पति रन्धमेसी॥4/8/3॥

Yutto kathāyaṃ parisāya majjhe, pasaṃsamicchaṃ vinighāti hoti;
Apāhatasmiṃ pana maṅku hoti, nindāya so kuppati randhamesī.॥3॥

युक्तः कथायां परिषदो मध्ये, प्रशंसामिच्छन् विनिघातिः भवति ।
अपाहते पुनः मङ्कुर्भवति, निन्दया स क्रुध्यति रन्ध्रान्वेषी॥3॥

परिषद् के मध्य वार्ता में संलग्न ही अपनी प्रशंसा चाहते हुए पहले ही वाद निरोपित करता है, किन्तु हार जाने पर लालच रहित और मौन हो जाता है और वह छिद्रान्वेषी अपनी निन्दा से क्रोधित हो उठता है॥3॥

Engaged in dispute in the middle of the assembly, wishing for praise he lays about on all sides; but when' his dispute has been repulsed he becomes discontented, at the blame he gets angry he who sought for the faults of others.3.

यमस्स वादं परिहीनमाहु, अपाहतं पञ्हविमंसकासे।
परिदेवति सोचति हीनवादो, उपच्चगा मं ति अनुत्थुना ति॥4/8/4॥

Yamassa vādaṃ parihīnamāhu, apāhataṃ pañhavimaṃsakāse;
Paridevati socati hīnavādo, upaccagā maṃ ti anutthunā ti.॥4॥

यदस्य वादं परिहीनमाहुरपाहतं प्रश्नविमर्शकास्ते ।
परिदेवति शोचति हीनवादः, उपत्यगो मामिति अनूत्तभ्नाति इति॥4॥

प्रश्न पूछने वालों से पराजित हो, पराजय को दिखाने पर वह परास्त मनुष्य विलाप करता है, शोक करता है और वह यह सोचकर पश्चाताप करता है कि उसने मुझे पराजित कर दिया॥4॥

Because those who have tested his questions say that his dispute is lost and repulsed, he laments and grieves having lost his disputes; 'he has conquered me,' so saying he wails.4.

एते विवादा समणेसु जाता, एतेसु उग्घाति निघाति होति।
एतं पि दिस्वा विरमे कथोज्जं, न हञ्ञदत्थत्थिपसंसलाभा॥4/8/5॥

Ete vivādā samaṇesu jātā, etesu ugghāti nighāti hoti;
Etaṃ pi disvā virame kathojjaṃ, na haññadatthatthipasaṃsalābhā.॥5॥

एते विवादाः श्रमणेषु जाताः, एतेषूद्घातो निघातो भवति।
एतदपि दृष्ट्वा विरमेत् कुचोद्यम्, न ह्यन्योऽर्थोऽस्ति प्रशंसलाभात्॥5॥

ये विवाद श्रमणों में उठते हैं । उनमें प्रहार तथा प्रतिप्रहार होता है । इस बात को देखकर कथामिलाप से विराम करे, इसमें प्रशंसा-प्राप्ति के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं है॥5॥

These disputes have arisen amongst the Sramanas, in these disputes there is blow and stroke; having seen this, let him leave off disputing, for there is no other advantage to obtain from getting praise.5.

पसंसितो वा पन तत्थ होति, अक्खाय वादं परिसाय मज्झे।
सो हस्सती उण्णमती च तेन, पप्पुय्य तमत्थं यथा मनो अहु॥4/8/6॥

Pasaṃsito vā pana tattha hoti, akkhāya vādaṃ parisāya majjhe;
So hassatī uṇṇamatī ca tena, pappuyya tamatthaṃ yathā mano ahu.॥6॥

प्रशंसितो वा पुनस्तत्र भवत्याख्याय वादं परिषदो मध्ये ।
स हसति उन्नमतिस्तेन, प्रपूर्य तमर्थं यथा मनोऽभूत्॥6॥

वह परिषद् के बीच अपने मत को समर्थन कर प्रशंसित होता है । वह मन के अनुसार इच्छा को पूरा कर उससे हँसता और अभिमान करता है॥6॥

He is praised there, having cleared up the dispute in the middle of the assembly; therefore he will laugh and be elated, having won that case as he had a mind to.6.

या उण्णती सास्स विघातभूमि, मानातिमानं वदते पनेसो।
एतं पि दिस्वा न विवादयेथ, न हि तेन सुद्धिं कुसला वदन्ति॥4/8/7॥

Yā uṇṇatī sāssa vighātabhūmi, mānātimānaṃ vadate paneso;
Etaṃ pi disvā na vivādayetha, na hi tena suddhiṃ kusalā vadanti.॥7॥

या उन्नतिः साऽस्य विघातभूमिः, मानातिमानं वदते पुनरेषः।
एतदपि दृष्ट्वा न विवदेत्, न हि तेन शुद्धिं कुशलाः वदन्ति॥7॥

अभिमान को विनाश का कारण न जानते हुए एवं मान और अभिमान की बातें करता है। इसे भी देखकर विवाद में न पड़े। कुशल लोग उससे शुद्धि नहीं बतलाते॥7॥

That which is his exaltation will also be the field of his defeat, still he talks proudly and arrogantly; seeing this, let no one dispute, for the expert do not say that purification takes place by that'.7.

सूरो यथा राजखादाय पुट्ठो, अभिगज्जमेति पटिसूरमिच्छं।
येनेव सो तेन पलेहि सूर, पुब्बेव नत्थि यदिदं युधाय॥4/8/8॥

Sūro yathā rājakhādāya puṭṭho, abhigajjameti paṭisūramicchaṃ;
Yeneva so tena palehi sūra, pubbeva natthi yadidaṃ yudhāya.॥8॥

शूरो यथा राजखाद्येन पुष्टोऽभिगर्जमेति प्रतिशूरमिच्छन्।
येनैव स तेन पद्यस्व शूर! पूर्वादेव नास्ति यदिदं युद्धाय॥8॥

जैसे राजा के भोजन से पला पहलवान मुकाबले के लिए अपने प्रतिद्वन्द्वी पहलवान को ललकारता है, वैसे ही पसूर! तुम उसी प्रकार के लोगों के पास जाओ । क्योंकि मेरे पास पहले से ही युद्ध (विवाद) के लिए कुछ शेष नहीं है॥8॥

As a hero nourished by kingly food goes about roaring, wishing for an adversary—where he is, go thou there, O Pasur; formerly there was nothing like this to fight against.8.

ये दिट्ठिमुग्गय्ह विवादयन्ति, इदमेव सच्चं ति च वादयन्ति।
ते त्वं वदस्सू न हि तेध अत्थि, वादम्हि जाते पटिसेनिकत्ता*॥4/8/9॥

Ye diṭṭhimuggayha vivādayanti, idameva saccaṃ ti ca vādayanti;
Te tvaṃ vadassū na hi tedha atthi, vādamhi jāte paṭisenikattā.॥9॥

ये दृष्टिमुद्गृह्य विवदन्ते, इदमेव सत्यमिति च विदन्ते।
तेन त्वं वदेः नहि ते इहास्ति, वादे जाते प्रतिसेनीकर्त्ता॥9॥

जो दृष्टि को ग्रहण कर विवाद करते हैं और यही सत्य है–ऐसा कहकर विचार करते हैं। उन्हें कहना चाहिये कि विवाद उत्पन्न होने पर तुम्हारे साथ बहस करने के लिए यहाँ कोई नहीं है॥9॥

Those who, having embraced a certain philosophical view, dispute and maintain 'this only is true,' to them say thou when a dispute has arisen, 'Here is no opponent' for thee.' .9.

* पटिलोमकारको

विसेनिकत्वा* पन ये चरन्ति, दिट्ठीहि दिट्ठिं अविरुज्झमाना।
तेसु त्वं किं लभेथो पसूर', येसीध नत्थी परमुग्गहीतं॥4/8/10॥

Visenikatvā pana ye caranti, diṭṭhīhi diṭṭhiṃ avirujjhamānā;
Tesu tvaṃ kiṃ labhetho pasūra, yesīdha natthī paramuggahītaṃ.॥10॥

प्रतिसेनीकृत्य पुनर्ये चरन्ति, दृष्टिभ्यो दृष्टिमविरुध्यमाणाः।
तेषु त्वं किं लप्स्यसे *पसूर*! येषामिह नास्ति परमुद्गृहीतम्॥10॥

जो लोग एक दृष्टि से दूसरी दृष्टि का विरोध न करते हुए प्रतिद्वन्द्वी रहित हो विचरण करते हैं, पशूर ! शिक्षा समाप्त कर तुम विवाद में क्या पाओगे॥10॥

Those who wander about after having secluded themselves, without opposing view to view—what opposition wilt thou meet with amongst those, O Pasüra, by whom nothing in this world is grasped as the best?.10.

* किलेससेनं विनासेत्वा ति विसेनिकत्वा । • पसूर परिब्बाजकं आलपयति ।

अथ त्वं पवितक्कमागमा, मनसा दिट्ठिगतानि चिन्तयन्तो।
धोनेन* युगं समागमा, न हि त्वं सक्खसि सम्पयातवे ति॥4/8/11॥

Atha tvaṃ pavitakkamāgamā, manasā diṭṭhigatāni cintayanto;
Dhonena yugaṃ samāgamā, na hi tvaṃ sakkhasi sampayātave ti.॥11॥

अथ त्वं प्रवितर्कमागमः, मनसा दृष्टिगतानि चिन्तयन् ।
धौतेन युगं समागमः, न हि त्वं शक्ष्यसि सम्प्रयातुमिति॥11॥

अपनी दृष्टि के समर्थन में अनेक बातों को सोचते हुए जब तुम शुद्ध पुरुष के पास पहुँचे थे विवाद में तुम उसे नहीं हरा सकते॥11॥

Then thou wentest to reflection thinking in thy mind over the different philosophical views; thou hast gone into the yoke with him who has shaken off, but thou wilt not be able to proceed together with him.11.

* धुतकिलेसेन धोनेन ति ।

पसूरसुत्तं निट्ठितं
(Pasūrasuttaṃ niṭṭhitaṃ.)

(4, 9) मागण्डियसुत्तं (Māgaṇḍiyasuttaṃ)

"दिस्वान तण्हं अरतिं रागं च, नाहोसि छन्दो अपि मेथुनस्मिं।
किमेविदं मुत्तकरीसपुण्णं, पादा पि नं सम्फुसितुं न इच्छे"॥4/9/1॥

"Disvāna taṇhaṃ aratiṃ ragaṃ ca, nāhosi chando api methunasmiṃ;
Kimevidaṃ muttakarīsapuṇṇaṃ, pādā pi naṃ samphusituṃ na icche".॥1॥

"दृष्ट्वा तृष्णामरतिं रागञ्च, नाभूच्छन्दोऽपि मैथुने ।
किमेवेयं मूत्रकरीषपूर्णाम्, पादेनाप्येनां संस्प्रष्टुं नेच्छेत्"॥1॥

भगवान्–तृष्णा, अरति और राग को देखकर भी मैथुन की इच्छा नहीं हुई, मल-मूत्र से परिपूर्ण यह क्या है? इसका पैरों से भी स्पर्श करना नहीं चाहिए॥1॥

'Even seeing Tanha, Arati, and Rags. There was not the least wish in me for sexual pleasure. What is a thing full of water and excrement? I do not even want to touch it with my foot.'1.

"एतादिसं चे रतनं न इच्छसि, नारिं नरिन्देहि बहूहि पत्थितं।
दिट्ठिगतं सीलवतं नु जीवितं, भवूपपत्तिं च वदेसि कीदिसं"॥4/9/2॥

"Etādisaṃ ce ratanaṃ na icchasi, nāriṃ narindehi bahūhi patthitaṃ;
Diṭṭhigataṃ sīlavataṃ nu jīvitaṃ, bhavūpapattiṃ ca vadesi kīdisaṃ".॥2॥

"एतादृशं चेद् रत्नं नेच्छसि, नारीं नरेन्द्रैः बहुभिः प्रार्थिताम्।
दृष्टिगतं शीलव्रतं नु जीवितम्, भवोत्पतिञ्च वदसि कीदृशम्"॥2॥

मागन्दिय–इस प्रकार के स्त्री-रत्न को जिसे बहुत से राजा पाने की इच्छा करते हैं, यह आप नहीं चाहते हैं तो बतलायें कि दृष्टि, शील-व्रत, जीवन और पुनर्जन्म के विषय में आपके क्या विचार हैं?॥2॥

Magandiya: 'If thou dost not want such a pearl, a woman desired by many kings, what view, virtue, and holy works, mode of life, re-birth dost thou profess?' .2.

"इदं वदामी ति न तस्स होति, (मागण्डिया ति भगवा)
धम्मेसु निच्छेय्य समुग्गहीतं।
पस्सं च दिट्ठीसु अनुग्गहाय, अज्झत्तसन्तिं पचिनं अदस्सं"॥4/9/3॥

"Idaṃ vadāmī ti na tassa hoti, (māgaṇḍiyā ti bhagavā)
Dhammesu niccheyya samuggahītaṃ;
Passaṃ ca diṭṭhīsu anuggahāya, Ajjhattasantiṃ pacinaṃ adassaṃ".॥3॥

"इदं वदामीति न तस्य भवति, (मागन्दिय इति भगवान्) धर्मेषु निश्चित्य समुद्गृहीतम्।
पश्य च दृष्टेः एवानुग्रहम्, अध्यात्मशान्तिं प्रचितमद्राक्षम्"॥3॥

भगवान्–धर्मों को भली प्रकार जानकर मैं किसी मत को नहीं अपनाता । दृष्टियों के दुष्परिणाम को देखकर उनमें आसक्त न हो मैंने आध्यात्मिक शान्ति के उत्कर्ष को पाया॥3॥

"This I say," so I do now declare, after investigation there is nothing amongst the doctrines which such a one as I would embrace,O Magandiya,' —so said Bhagavān,—'and seeing misery in the philosophical views, without adopting any of them, searching for truth I saw "inward peace.".3.

"विनिच्छया यानि पकप्पितानि, (इति मागण्डियो) ते वे मुनी ब्रूसि अनुग्गहाय।
अज्झत्तसन्ती ति यमेतमत्थं, कथं नु धीरेहि पवेदितं तं"॥4/9/4॥

"Vinicchayā yāni pakappitāni, (iti māgaṇḍiyo) Te ve munī brūsi anuggahāya;
Ajjhattasantī ti yametamatthaṃ, Kathaṃ nu dhīrehi paveditaṃ taṃ".॥4॥

"विनिश्चतानि यानि प्रकल्पितानि, (इति *मागन्डियः*) तानि वै मुनिः ब्रूहि अनुग्रहाय।
अध्यात्मशान्तिरिति यदेतदर्थम्, कथन्नु धीरैः प्रवेदितं तत्"॥4॥

मागन्दिय–हे मुनि! आपने अनुग्रहपूर्वक कल्पित मतों के सम्बन्ध में अपने निर्णय बतलाये । आप धीर द्वारा जो आध्यात्मिक शान्ति कही गई है, उसे आपने कैसा बतलाया है?॥4॥

'All the philosophical resolutions' that have been formed,'—so said Māgandiya,—' those indeed thou explainest without adopting any of them; the notion "inward peace" which thou mentionest, how is this explained by the wise?' .4.

"न दिट्ठिया न सुतिया न ञाणेन, (मागण्डिया ति भगवा)
सीलब्बतेना पि न सुद्धिमाह।
अदिट्ठिया अस्सुतिया अञाणा, असीलता अब्बता नो पि तेन।
एते च निस्सज्ज अनुग्गहाय, सन्तो अनिस्साय भवं न जप्पे"॥4/9/5॥

"Na diṭṭhiyā na sutiyā na ñāṇena, (māgaṇḍiyā ti bhagavā) Sīlabbatenā pi na suddhimāha;
Adiṭṭhiyā assutiyā añāṇā, Asīlatā abbatā no pi tena;
Ete ca nissajja anuggahāya, Santo anissāya bhavaṃ na jappe".॥5॥

"न दृष्ट्या न श्रुत्या न ज्ञानेन, (*मागन्डिय* इति भगवान्) शीलव्रतेनापि न शुद्धिमाह।
अदृष्ट्या अश्रुत्या अज्ञानेन, अशीलेनाव्रतेन नापि तेन।
एते च निःसज्यानुग्रहाय, सन्तोऽनिःश्राय भवं न जल्पेत्"॥5॥

भगवान् –न तो दृष्टि, श्रुति, ज्ञान, शील-व्रत और न अश्रुत, अज्ञान और अशील-अव्रत से ही शुद्धि कही गई है। इन्हें त्यागकर, इनमें आसक्त न हो, शान्त पुरुष कहीं भी लिप्त न हो पुनर्जन्म की चर्चा न करे॥5॥

'Not by any philosophical opinion, not by tradition, not by knowledge, O Māgandiya,'—so said Bhagavān.—' not by virtue and holy works can any one say that purity exists; nor by absence of philosophical opinion, by absence of tradition, by absence of knowledge, by absence of virtue and holy works either; having abandoned these without adopting anything else, let him, calm and independent, not desire existence.' .5.

"नो चे किर दिट्ठिया न सुतिया न ञाणेन, (इति मागण्डियो)
सीलब्बतेनापि न सुद्धिमाह।
अदिट्ठिया अस्सुतिया अञाणा, असीलता अब्बता नो पि तेन।
मञ्ञामहं मोमुहमेव* धम्मं, दिट्ठिया एके पच्चेन्ति सुद्धिं"॥4/9/6॥

"No ce kira diṭṭhiyā na sutiyā na ñāṇena, (iti māgaṇḍiyo) Sīlabbatenāpi na suddhimāha;
Adiṭṭhiyā assutiyā añāṇā, Asīlatā abbatā no pi tena;
Maññāmahaṃ momuhameva dhammaṃ, Diṭṭhiyā eke paccenti suddhiṃ".॥6॥

"नो चेत् किल दृष्ट्या न श्रुत्या न ज्ञानेन, (इति *मागन्डियः*) शीलव्रतेनापि न शुद्धिमाह।
अदृष्ट्या अश्रुत्या अज्ञानेनाशीलेनाव्रतेन नापि तेन।
मन्येऽहं मुमोहमेव धर्मम्, दृष्ट्यैके प्रत्येन्ति शुद्धिम्"॥6॥

मागन्दिय– यदि दृष्टि, श्रुति, ज्ञान, शील-व्रत से या अदृष्टि, अश्रुति, अज्ञान और अशील-अव्रत से शुद्धि नहीं होती हो तो मैं इस धर्म को भ्रमात्मक मानता हूँ, क्योंकि कुछ लोग दृष्टि से शुद्धि बतलाते हैं॥6॥

'If one cannot say by any philosophical opinion or by tradition or by knowledge,'—so said Magandiya,—' or by virtue and holy works that purity exists, nor by absence of philosophical opinion, by absence of tradition, by absence of knowledge, by absence of virtue and holy works, then I consider the doctrine foolish for by philosophical opinions some return to purity.' .6.

*मोमुहं ति अतिमूळहं मोहनं वा

"दिट्ठं च निस्साय अनुपुच्छमानो, (मागण्डिया ति भगवा) समुग्गहीतेसु पमोहमागा।
इतो च नाद्दक्खि अणुं पि सञ्ञं, तस्मा तुवं मोमुहतो दहासि॥4/9/7॥

"Diṭṭhaṃ ca nissāya anupucchamāno, (māgaṇḍiyā ti bhagavā)
Samuggahītesu pamohamāgā;
Ito ca nāddakkhi aṇuṃ pi saññaṃ, Tasmā tuvaṃ momuhato dahāsi.॥7॥

"दृष्टिञ्च निःश्राय अनुपृच्छमाणः, (*मागन्डिय* इति भगवान्) समुद्गृहीतेषु प्रमोहमागाः ।
इतश्च नाद्राक्षीः अणुमपि संज्ञाम्, तस्मात् त्वां मुमोहतो दहसि॥7॥

भगवान्–दृष्टि में आश्रित हो, आसक्त हो और मोहित हो तुम प्रश्न करते हो । तुम्हें अणुमात्र भी ज्ञान नहीं, इसलिए तुम हमें भ्रमात्मक समझते हो॥7॥

'And asking on account of thy philosophical opinion, O Magandiya,'—so said Bhagavān,—' thou hast gone to infatuation in what thou hast embraced and of this inward peace thou hast not the least idea, therefore thou holdest it foolish.7.

"समो विसेसी उद वा निहीनो, यो मञ्ञती सो विवदेथ तेन।
तीसु विधासु अविकम्पमानो, समो विसेसी ति न तस्स होति॥4/9/8॥

"Samo visesī uda vā nihīno, yo maññatī so vivadetha tena;
Tīsu vidhāsu avikampamāno, samo visesī ti na tassa hoti.॥8॥

"समो विशेष उत वा निहीन:, यो मन्यते स विवदेत् तेन ।
तिसृषु विधास्वविकम्पमान:, समो विशेष इति न तस्य भवति॥8॥

जो अपने को दूसरों के समान, उनसे उत्तम या हीन समझता है, उसके कारण वह विवाद में पड़ता है । जो इन तीनों अवस्थाओं में अविचिलित रहता है, उसे समानता या उत्तमता का ख्याल नहीं रहता॥8॥

'He who thinks himself equal to others, or distinguished, or low, he for that very reason disputes; but he who is unmoved under those three conditions, for him the notions "equal" and "distinguished" do not exist.8.

"सच्चं ति सो ब्राह्मणो किं वदेय्य, मुसा ति वा सो विवदेथ केन।
यस्मिं समं विसमं वा पि नत्थि, स केन वादं पटिसंयुजेय्य॥4/9/9॥

"Saccaṃ ti so brāhmaṇo kiṃ vadeyya, musā ti vā so vivadetha kena;
Yasmiṃ samaṃ visamaṃ vā pi natthi, sa kena vādaṃ paṭisaṃyujeyya.॥9॥

"सत्यमिति स ब्राह्मण: किं वदेत्, मृषेति वा स विवदेत् केन।
यस्मिन् समं विषमं वापि नास्ति, स केन वादं प्रतिसंयुञ्ज्यात्॥9॥

जिसमें समता या विषमता का ख्याल नहीं है, वह ब्राह्मण किसे सत्य या असत्य सिद्ध करने की बहस करे ? वह किसके साथ विवाद करे ?॥9॥

'The Brahmana for whom the notions "equal" and "unequal" do not exist, would he say, "This is true?" Or with whom should he dispute, saying, "This is false?" With whom should he enter into dispute?.9.

"ओकं पहाय अनिकेतसारी, गामे अकुब्बं मुनि सन्थवानि ।
कामेहि रित्तो अपुरेक्खरानो, कथं न विग्गय्ह जनेन कयिरा॥4/9/10॥

"Okaṃ pahāya aniketasārī, gāme akubbaṃ muni santhavāni;
Kāmehi ritto apurekkharāno, kathaṃ na viggayha janena kayirā.॥10॥

"ओकमपहायानिकेतसारी, ग्रामेऽकुर्वन् मुनि: संस्तवानि ।
कामै: रिक्तोऽपुरेश्रयाण:, कथां न विगर्हां जनेन कुर्यात्॥10॥

घर का त्याग कर बेघर का हो विचरण करने वाला मुनि गाँव में प्रशंसा न करते हुए काम-भोगों से रहित, पूर्व में न रहने वाला लोगों के साथ विवाद (गर्हा) की बातें न करे॥10॥

'Having left his house, wandering about houseless, not making acquaintances in the village, free from lust, not desiring any future existence, let the Muni not get into quarrelsome talk with people.10.

"येहि विवित्तो विचरेय्य लोके, न तानि उग्गय्ह वदेय्य नागो।
जलम्बुजं कण्डकं वारिजं यथा, जलेन पङ्केन च नूपलित्तं।
एवं मुनी सन्तिवादो अगिद्धो, कामे च लोके च अनूपलित्तो॥4/9/11॥

"Yehi vivitto vicareyya loke, na tāni uggayha vadeyya nāgo;
Jalambujaṃ kaṇḍakaṃ vārijaṃ yathā, jalena paṅkena canūpalittaṃ;
Evaṃ munī santivādo agiddho, kāme ca loke ca anūpalitto.॥11॥

"यैर्विविक्तो विचरेल्लोके, न तान्युद्गृह्य वदेन्नागः।
जलाम्बुजं कण्टकं वारिजं यथा, जलेन पङ्केन च नोपलिप्तम् ।
एवं मुनिः सन्तिवादी अगृद्धः, कामे च लोके चानूपलिप्तः॥11॥

उत्तम पुरुष जिन दृष्टियों से अलग हो विचरण करता है । वह उन्हें पकड़ कर विवाद न करे । जिस प्रकार जल में उत्पन्न होने वाला कंटक और कमल जल और कीचड़ से अलिप्त रहता है, उसी प्रकार शान्तिवादी तृष्णा रहित मुनि काम-भोगों और संसार में लिप्त नहीं होता॥11॥

'Let not an eminent man naga dispute after having embraced those views separated from which he formerly wandered in the world; as the thorny lotus elambuga is undefiled by water and mud, so the Muni, the confessor of peace, free from greed, does not cling to sensual pleasures and the world.11.

"न वेदगू दिट्ठियो न मुतिया, स मानमेति न हि तम्मयो सो।
न कम्मुना नो पि सुतेन नेय्यो, अनूपनीतो स निवेसनेसु॥4/9/12॥

"Na vedagū diṭṭhiyāyako na mutiyā, sa mānameti na hi tammayo so;
Na kammunā no pi sutena neyyo, anūpanīto sa nivesanesu.॥12॥

"न वेदगो दृष्ट्या न मत्या, स मानमेति न हि तन्मयः सः।
न कर्मणा नापि श्रुतेन नेयः, अनुपनीतः स निवेशनेषु॥12॥

ज्ञानी पुरुष किसी दृष्टि का विचार के कारण अभिमान नहीं करता और न वह उससे लिप्त ही होता है । वह किसी कर्म विशेष या श्रुत के फेर में नहीं पड़ता, क्योंकि वह दृष्टियों के अधीन नहीं है॥12॥

'An accomplished man does not by a philosophical view, or by thinking become arrogant, for he is not of that sort; not by holy works, nor by tradition is he to be led, he is not led into any of the resting-places of the mind.12.

"सञ्ञाविरत्तस्स न सन्ति गन्था, पञ्ञाविमुत्तस्स न सन्ति मोहा।
सञ्ञं च दिट्ठिं च ये अग्गहेसुं, ते घट्टयन्ता विचरन्ति लोके''ति॥4/9/13॥

"Saññāvirattassa na santi ganthā, paññāvimuttassa na santi mohā;
Saññaṃ ca diṭṭhiṃ ca ye aggahesuṃ, te ghaṭṭayantā vicaranti loke"ti.॥13॥

"संज्ञाविरक्तस्य न सन्ति ग्रन्थाः, प्रज्ञाविमुक्तस्य न सन्ति मोहाः।
संज्ञाञ्च दृष्टिञ्च येऽग्रहीषुस्ते घट्टयन्तो विचरन्ति लोके" इति॥13॥

विभिन्न आसक्तियों से विमुक्त मनुष्य के लिए बन्धन नहीं हैं । प्रज्ञा द्वारा विमुक्त मनुष्य के लिए मोह नहीं है। जो काम-भोगों और दृष्टि में लिप्त हैं, वे संघर्ष करते हुए लोक में विचरण करते हैं॥13॥

'For him who is free from marks there are no ties, to him who is delivered by understanding there are no follies; but those who grasped after marks and philosophical views, they wander in the world annoying people.' 13.

मागन्डियसुत्तं निट्ठितं
(Māgaṇḍiyasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 10) पुराभेदसुत्तं (Purābhedasuttaṃ)

"कथंदस्सी* कथंसीलो*, उपसन्तो ति* वुच्चति।
तं मे गोतम पब्रूहि, पुच्छितो उत्तमं नरं"॥4/10/1॥

"Kathaṃdassī kathaṃsīlo, upasanto ti vuccati;
Taṃ me gotama pabrūhi, pucchito uttamaṃ naraṃ".॥1॥

"कथंदर्शी कथंशील:, उपशान्त इत्युच्यते।
तं मे *गौतम* ! प्रब्रूहि, पृष्टे उत्तमं नरम्"॥1॥

देवता– किस प्रकार के दर्शन (ज्ञान) वाला और किस प्रकार के शील वाला व्यक्ति उपशान्त कहा जाता है ? हे गौतम! मेरे पूछने पर उस उत्तम पुरुष को बतलावें॥1॥

'With what view and with what virtue is one called calm, tell me that, O Gotama, when asked about the best man?' .1.

* कथंदस्सी ति अधिपञ्ञं * कथंसीलोति अधिसीलं • उपसन्तो ति अधिचितं पुच्छति

"वीततण्हो पुरा भेदा*, (इति भगवा) पुब्बमन्तमनिस्सितो।
वेमज्झे नुपसङ्खेय्यो*, तस्स नत्थि पुरक्खतं॥4/10/2॥

"Vītataṇho purā bhedā, (iti bhagavā) pubbamantamanissito;
Vemajjhe nupasaṅkheyyo, tassa natthi purakkhataṃ.॥2॥

"वीततृष्ण: पुराभेद:, (इति भगवान्) पूर्वान्तमनि:श्रित: ।
वैमध्ये* नोपाश्रय:, तस्य नास्ति पुरस्कृतम्॥2॥

भगवान्–जो शरीर त्याग के पूर्व ही तृष्णा-रहित हो गया है और जो भूत तथा भविष्य पर आश्रित नहीं है, जो वर्तमान पर भी आश्रित नहीं है, उसके लिए पहले कुछ नहीं है॥2॥

'He whose craving is departed before the dissolution of his body,'----so said Bhagavān,—' who does not depend upon beginning and end, nor reckons upon the middle, by him there is nothing preferred.2.

*यो सरीरभेदा पुब्बमेव पहीनतण्हो। *वेमज्झो ति पच्चुप्पन्ने पि अद्धनि 'रत्तो' ति आदिना नयेन न उपसङ्खातब्बो।

"अक्कोधनो असन्तासी, अविकत्थी अकुक्कुचो।
मन्तभाणी* अनुद्धतो, स वे वाचा यतो* मुनि॥4/10/3॥

"Akkodhano asantāsī, avikatthī akukkuco;
Mantabhāṇī anuddhato, sa ve vācāyato muni.॥3॥

"अक्रोधनोऽसंत्रासी, अविकत्थी अकौकृत्य: ।
मन्त्रभाषी अनुद्धत:, स वै वाचा यतो* मुनि:॥3॥

जो क्रोध, त्रास, आत्म-प्रशंसा और बुरे कर्मों को करने वाला है, जो विचार कर बोलने वाला है, अभिमान रहित है वह वचन में संयमी मुनि है॥3॥

'He who is free from anger, free from trembling, free from boasting, free from misbehaviour, he who speaks wisely, he who is not elated, he is indeed a Muni who has restrained his speech.3.

* मन्ताय परिग्गहेत्वा वाचं भासिता ।

* वाचाय यतो संयतो चतुदोसविरहितं वाचं भासिता होति ।

• वाचां यमः इति ।

"निरासत्ति अनागते, अतीतं नानुसोचति।
विवेकदस्सी फस्सेसु, दिट्ठीसु* च न नीयति॥4/10/4॥

"Nirāsatti anāgate, atītaṃ nānusocati;
Vivekadassī phassesu, diṭṭhīsu ca na nīyati.॥4॥

"निरासक्तिः अनागतेऽतीतं नानुशोचति।
विवेकदर्शी स्पर्शेषु, दृष्टिषु च न नीयते॥4॥

जो भविष्य के विषय में आसक्ति नहीं रखता और भूत के विषय में पश्चाताप नहीं करता, जो स्पर्शों में विवेकदर्शी है, दृष्टियों के फेर में नहीं पड़ता॥4॥

'Without desire for the future he does not grieve for the past, he sees seclusion in the phass as touch, and he is not led by any philosophical views.4.

* द्वासट्ठिदिट्ठीसु कायचि दिट्ठिया न नीयति ।

"अपतिलीनो* अकुहको, अपिहालु अमच्छरी*।
अप्पगब्भो अजेगुच्छो, पेसुणेय्ये च नो युतो॥4/10/5॥

"Patilīno akuhako, apihālu amaccharī;
Appagabbho ajeguccho, pesuṇeyye ca no yuto.॥5॥

"अप्रतिलीनोऽकुहकः, अस्पृहालुः अमत्सरी।
अप्रगल्भोऽजुगुप्सः, पैशुन्येन च न युतः॥5॥

जो राग, छल, स्पृहा, ईर्ष्या, प्रगल्भता और घृणा से रहित है और चुगलखोरी में नहीं लगता॥5॥

'He is unattached, not deceitful, not covetous, not envious, not impudent, not contemptuous and not given to slander.5.

* रागादीनं पहनीता ततो अपगतो । * अमच्छरी ति पञ्चमच्छेरविरहितो ।

"सातियेसु अनस्सावी, अतिमाने च नो युतो।
सण्हो च पटिभानवा, न सद्धो न विरज्जति॥4/10/6॥

"Sātiyesu anassāvī, atimāne ca no yuto;
Saṇho ca paṭibhānavā na saddho na virajjati.॥6॥

"शातियेषु अनास्रवी , अतिमाने च न युतः।
श्लक्ष्णः प्रतिभानवान्, न शब्दो न विरज्यते॥6॥

जो काम-भोगों में नही रत रहता है, अभिमान नहीं करता है, शान्त और प्रतिभावान् है, वह न तो श्रद्धालु होता है और न विरक्त ही होता है॥6॥

'Without desire for pleasant things and not given to conceit and being gentle, intelligent, not credulous, he is not displeased with anything.6.

"लाभकम्या न सिक्खति, अलाभे च न कुप्पति।

अविरुद्धो च तण्हाय, रसेसु नानुगिज्झति॥4/10/7॥

"Lābhakamyā na sikkhati, alābhe ca na kuppati;
Aviruddho ca taṇhāya, rasesu nānugijjhati.॥7॥

"लाभकाम्या न शिक्षते, अलाभे च न कुप्यति ।
अविरुद्धश्च तृष्णाया:, रसे च नानुगृध्यति॥7॥

वह लाभ चाहते हुए प्रयत्न नहीं करता, अलाभ होने पर कुपित नहीं होता, तृष्णा का विरोधी हो रस में लिप्त नहीं होता॥7॥

'Not from love of gain does he learn and he does not get angry on account of loss and untroubled by craving he has no greed for sweet things.7.

"उपेक्खको सदा सतो*, न लोके मञ्ञते समं।
न विसेसी न नीचेय्यो, तस्स नो सन्ति उस्सदा॥4/10/8॥

"Upekkhako sadā sato, na loke maññate samaṃ;
Na visesī na nīceyyo, tassa no santi ussadā.॥8॥

"उपेक्षक: सदा स्मृत:, न लोके मन्यते समम्।
न विशेष: न नीचश्च, तस्य नो सन्ति उत्सदा:॥8॥

जो उपेक्षक है, सदा स्मृतिमान् रहने वाला है, लोक में किसी को समान, श्रेष्ठ या नीच नहीं मानता, उसमें राग नहीं होते॥8॥

'Equable upekhaka, always thoughtful, he does not think himself equal to others' in the world, nor distinguished, nor low: for him there are no desires ussada.8.

* सतो ति काया नुपस्सनादिसतियुत्तो ।

"यस्स निस्सयना नत्थि, ञत्वा धम्मं अनिस्सितो।
भवाय विभवाय वा, तण्हा यस्स न विज्जति॥4/10/9॥

"Yassa nissayanā natthi, ñatvā dhammaṃ anissito;
Bhavāya vibhavāya vā, taṇhā yassa na vijjati.॥9॥

"यस्य नि:श्रयना नास्ति, ज्ञात्वा धर्ममनि:श्रित: ।
भवाय विभवाय* वा, तृष्णा यस्य न विद्यते॥9॥

जिसमें तृष्णा नहीं है, जो धर्म को जानकर उत्पत्ति या विनाश (जन्म या मरण) के प्रति तृष्णा रहित हो गया है॥। 9॥

'The man in whom there is nothing upon which he depends, who is independent, having understood the Dhamma, in whom there is no craving for coming into existence or leaving existence,.9.

* भवाय विभाव वा ति सस्सताय उच्छेदय वा (शाश्वत या उच्छेद के प्रति)

"तं ब्रूमि उपसन्तो ति, कामेसु अनपेक्खिनं।
गन्था तस्स न विज्जन्ति, अतरी सो विसत्तिकं॥4/10/10॥

"Taṃ brūmi upasanto ti, kāmesu anapekkhinaṃ;
Ganthā tassa na vijjanti, atarī so visattikaṃ.॥10॥

"तं ब्रवीमि उपशान्त इति, कामेष्वनपेक्षिणम् ।
ग्रन्था: तस्य न विद्यन्ते, अतारीत् स विसक्तिकम्॥10॥

काम-भोगों की अपेक्षा न करने वाले उस व्यक्ति को उपशान्त कहता हूँ । उसके लिए सांसारिक बन्धन नहीं है। वह तृष्णा से परे हो गया है॥10॥

'Him I call calm, not looking for sensual pleasures; for him there are no ties, he has over come desire.10.

"न तस्स पुत्ता पसवो, खेत्तं वत्थुं च विज्जति।
अत्ता वा पि निरत्ता वा, न तस्मिं उपलब्भति॥4/10/11॥

"Na tassa puttā pasavo, khettaṃ vatthuṃ ca vijjati;
Attā vā pi nirattā vā, na tasmiṃ upalabbhati.॥11॥

"न तस्य पुत्रा: पशव:, क्षेत्रं वस्तु च विद्यते।
आत्मा वापि निरात्मा वा, न तस्मिनुपलभ्यते॥11॥

उसके लिए पुत्र, पशु, खेत या धन नहीं हैं और न उसके लिए अपना या पराया है॥11॥

'For him there are no sons, cattle, fields, wealth, nothing grasped or rejected is to be found in him.11.

"येन नं वज्जुं पुथुज्जना, अथो समणब्राह्मणा।
तं तस्स अपुरक्खतं, तस्मा वादेसु नेजति॥4/10/12॥

"Yena naṃ vajjuṃ puthujjanā, atho samaṇabrāhmaṇā;
Taṃ tassa apurakkhataṃ, tasmā vādesu nejati.॥12॥

"यस्मात्तं वर्ज्या: पृथग्जना:, अथ श्रमणब्राह्मणा:।
स तस्य अपुरस्कृतम्, तस्मात् वादेषु न एजति॥12॥

जिस बात में पृथक् जन और श्रमण तथा ब्राह्मण उसे दोषी ठहराते हैं, वह उसमें दोषी नहीं है । इसलिए वह अपनी निन्दा से विचलित नहीं होता॥12॥

'That fault of which common people and Sramaṇas and Brāhmaṇas say that he is possessed. is not possessed by him, therefore he is not moved by their talk.12.

"वीतगेधो अमच्छरी, न उस्सेसु वदते मुनि।
न समेसु न ओमेसु, कप्पं नेति अकप्पियो॥4/10/13॥

"Vītagedho amaccharī, na ussesu vadate muni;
Na samesu na omesu, kappaṃ neti akappiyo.॥13॥

"वीतगृद्धोऽमत्सरी, न उत्सेषु वदति मुनि:।
न समेषु न अवरेषु, कल्पं नैति अकल्पित:॥13॥

राग और कंजूसी रहित मुनि अपने को श्रेष्ठ, समान या निम्न लोगों में नहीं गिनता । वह पुनर्जन्म में नहीं पड़ता, क्योंकि वह जन्म से परे हो गया है॥13॥

'Free from covetousness, without avarice, the Muni does not reckon himself amongst the disting uished, nor amongst the plain, nor amongst the low, he does not enter time, being delivered from time.13.

"यस्स लोके सकं नत्थि, असता च न सोचति।
धम्मेसु च न गच्छति, स वे सन्तो ति वुच्चती''ति॥4/10/14॥

"Yassa loke sakaṃ natthi, asatā ca na socati;
Dhammesu ca na gacchati, sa ve santo ti vuccatī"ti.॥14॥

"यस्य लोके स्वकं नास्ति, असत: च न शोचति।
धर्मेषु च न गच्छति, स वै सन्त इत्युच्यते" इति॥14॥

जिसका संसार में अपना कुछ नहीं है, जो अभाव के लिए पश्चाताप नहीं करता और जो सब धर्मों में रागादि के वश में नहीं पड़ता है । वहीं शान्त कहा जाता है॥14॥

'He for whom there is nothing in the world which he may call his own, who does not grieve overwhat is no more, and does not walk amongst the Dhammas after his wish, he is called calm.14.

पुराभेदसुत्तं निट्ठितं
(Purābhedasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 11) कलहविवादसुत्तं (Kalahavivādasuttaṃ)

"कुतोपहूता कलहा विवादा, परिदेवसोका सहमच्छरा च।
मानातिमाना सहपेसुणा च, कुतोपहूता ते[1] तदिङ्घ[2] ब्रूहि"॥4/11/1॥

"Kutopahūtā kalahā vivādā, paridevasokā sahamaccharā ca;
Mānātimānā sahapesuṇā ca, kutopahūtā te tadiṅgha brūhi".॥1॥

"कुत: प्रभूता: कलहा: विवादा:, परिदेवशोका: सह मात्सर्येण च।
मानातिमाना: सह पैशुनेन च, कुत: प्रभूता: तान् तदित्थं ब्रूहि"॥1॥

देवता–यह बतायें कि कलह, विवाद, विलाप, शोक, कंजूसी, मान, अभिमान तथा चुगली कहाँ से उत्पन्न होते हैं?॥1॥

'Whence contentions and disputes, lamentation and sorrow together with Jeolous; and arrogance and conceit together with slander, whence do these spring up? pray, tell me this.'.1.

1. कलह-विवाद-परिदेव-सोक-मच्छरा-मान-अतिमान-पैशुणा चाति सब्बेपि अट्ठ किलेस धम्मा । 2. इङ्घा ति निपातो ।

"पियप्पहूता कलहा विवादा, परिदेवसोका सहमच्छरा च।
मानातिमाना सहपेसुणा च, मच्छेरयुत्ता कलहा विवादा।
विवादजातेसु च पेसुणानि"॥4/11/2॥

"Piyappahūtā kalahā vivādā, Paridevasokā sahamaccharā ca;
Mānātimānā sahapesuṇā ca, Maccherayuttā kalahā vivādā;
Vivādajātesu ca pesuṇāni".॥2॥

"प्रियप्रभूता: कलहा: विवादा:, परिदेवशोका: सह मात्सर्येण च।
मानातिमाना: सह पैशुनेन, मात्सर्ययुक्ता: कलहा: विवादा:।
विवादजातेषु च पैशुन्यानि"॥2॥

भगवान् –कलह, विवाद, विलाप, शोक, कंजूसी, मान, अभिमान तथा चुगली प्रिय से उत्पन्न होते हैं । कलह और विवाद कंजूसी से युक्त हैं और विवाद के उत्पन्न होने पर चुगली होती है॥2॥

'From dear objects spring up contentions and disputes, lamentation and sorrow together with envy; arrogance and conceit together with slander; contentions and disputes are joined with envy and there is slander in the disputes arisen.' .2.

"पिया सु लोकस्मिं कुतोनिदाना, ये चा पि लोभा विचरन्ति लोके।
आसा च निट्ठा च कुतोनिदाना, ये सम्परायाय नरस्स होन्ति"॥4/11/3॥

"Piyā su lokasmiṃ kutonidānā, ye cā pi lobhā vicaranti loke;
Āsā ca niṭṭhā ca kutonidānā, ye samparāyāya narassa honti".॥3॥

"प्रियासु लोके हि कुतो निदाना:, ये चापि लोभाद् विचरन्ति लोके।
आशाश्च निष्ठाश्च कुतो निदाना:, ये सम्परायाय नरस्य भवन्ति"॥3॥

देवता –संसार में प्रिय कहाँ से उत्पन्न होता है ? अथवा जो लोभ के कारण संसार में विचरण करते हैं, वे कहाँ से उत्पन्न होते हैं ? इच्छा और पूर्ति कैसे होती है, जो मनुष्य परलोक (पुनर्जन्म) के हेतु हैं?॥3॥

'The dear objects in the world whence do they originate, and whence the covetousness that prevails in the world, and desire and fulfilment whence do they originate, which are for the future state of a man?'.3.

"छन्दोनिदानानि पियानि लोके, ये चा पि लोभा विचरन्ति लोके।
आसा च निट्ठा च इतो निदाना, ये सम्परायाय नरस्स होन्ति"॥4/11/4॥

"Chandānidānāni piyāni loke, ye cā pi lobhā vicaranti loke;
Āsā ca niṭṭhā ca itonidānā, ye samparāyāya narassa honti".॥4॥

"छन्दो निदानानि प्रियाणि लोके, ये चापि लोभाद् विचरन्ति लोके।
आशाश्च निष्ठाश्च इतो निदाना:, ये सम्परायाय* नरस्य भवन्ति"॥4॥

भगवान् –प्रियों का कारण राग है अथवा जो लोभ के कारण लोग संसार में विचरण करते हैं । इच्छा और उसकी पूर्ति का हेतु भी यही है, जो मनुष्य परलोक (पुनर्जन्म) के हेतु हैं॥4॥

'From wish' originate the dear objects in the world, and the covetousness that prevails in the world, and desire and fulfilment originate from it, which are for the future state of a man.' .4.

*इस शब्द का प्रयोग लौकिक संस्कृत में प्राय: नहीं देखा जाता, वैदिक वाङ्मय (कठोपनिषद) में इसका प्रयोग मिलता है।

"छन्दो नु लोकस्मिं कुतोनिदानो, विनिच्छया चा पि कुतोपहूता।
कोधो मोसवज्जं च कथंकथा च, ये वा पि धम्मा समणेन वुत्ता"॥4/11/5॥

"Chando nu lokasmiṃ kutonidāno, vinicchayā cā pi kutopahūtā;
Kodho mosavajjaṃ ca kathaṃkathā ca, ye vā pi dhammā samaṇena vuttā".॥5॥

"छन्दो नु लोके चापि कुतो निदान:, विनिश्चया: वापि कुत: प्रभूता: ।
क्रोधो मृषावद्यञ्च *कथंकथा** च, ये वापि धर्मा: श्रमणेन उक्ता:"॥5॥

देवता – श्रमण (बुद्ध) ने जो धर्म बतलाये हैं, उसके अनुसार इच्छा कहाँ से उत्पन्न होती है ? अथवा विनिश्चय, क्रोध, असत्य भाषण तथा सन्देह किस प्रकार से उत्पन्न होते हैं ?॥5॥

'From what has wish in the world its origin, and 'whence do they spring, anger and falsehood and doubt, and the Dhammas which are made known by the Sramaṇa Gotama?' .5.

* यह वैदिक शब्द प्रतीत होता है, पूर्वथा- विश्वथा क्रमादि शब्दों की तरह। द्रष्टव्य- डाक आदेश (सुपां सु लुक् इत्यादि)

"सातं असातन्ति यमाहु लोके, तमूपनिस्साय पहोति छन्दो।
रूपेसु दिस्वा विभवं भवं च, विनिच्छयं कुब्बति जन्तु लोके॥4/11/6॥

"Sātaṃ asātanti yamāhu loke, tamūpanissāya pahoti chando;
Rūpesu disvā vibhavaṃ bhavaṃ ca, vinicchayaṃ kubbati jantu loke.॥6॥

"शातमशातमिति यदाहु लोके, तदुपनि:श्राय प्रभवति छन्द:।
रूपेषु दृष्ट्वा विभवं भवञ्च, विनिश्चयं करोति जन्तु: लोके॥6॥

भगवान्– संसार में जो प्रिय और अप्रिय वस्तु है, उन्हीं के कारण इच्छा होती है । रूप के विनाश और उत्पत्ति को देखकर लोग यहाँ किसी निश्चय पर पहुँचते है ॥6॥

'What they call pleasure and displeasure in the world, by that wish springs up; having seen decay and origin in all bodies , a person forms his resolutions in the world..6.

"कोधो मोसवज्जं च कथंकथा च, एते पि धम्मा द्वयमेव सन्ते।
कथंकथी ञाणपथाय सिक्खे, ञत्वा पवुत्ता समणेन धम्मा"॥4/11/7॥

"Kodho mosavajjaṃ ca kathaṃkathā ca, ete pi dhammā dvayameva sante;
Kathaṃkathī ñāṇapathāya sikkhe, ñatvā pavuttā samaṇena dhammā".॥7॥

"क्रोधो मृषावद्यं च *कथंकथा* च, एतेऽपि धर्माश्च द्वयमेव भवन्ति।
कथंकथी ज्ञानपथस्य शिक्षयेत, ज्ञात्वा प्रोक्ता: श्रमणेन धर्मा:"॥7॥

श्रमण ने जानकर इन धर्मो में प्रवृत्त किया कि क्रोध, असत्य भाषण और कथोपकथन (प्रश्नोत्तर)–ये धर्म भी दोनों (प्रिय और अप्रिय) बातों से उत्पन्न होते हैं । कथोपकथन (सन्देह) करने वाले व्यक्ति को ज्ञान-पथ का अभ्यास करना चाहिए॥7॥

'Anger and falsehood and doubt, these Dhammas are a couple'; let the doubtful learn in the way of knowledge, knowingly the Dhammas have been proclaimed by the Sramaṇa.' .7.

* द्रष्टव्य गाथा 5 की टिप्पणी * इसमें णिजर्थ अन्तर्भूत है।

"सातं असातं च कुतोनिदाना, किस्मिं असते न भवन्ति हेते।
विभवं भवं चा पि यमेतमत्थं, एतं मे पब्रूहि यतोनिदानं"॥4/11/8॥

"Sātaṃ asātaṃ ca kutonidānā, kismiṃ asante na bhavanti hete;
Vibhavaṃ bhavaṃ cā pi yametamatthaṃ, etaṃ me pabrūhi yatonidānaṃ".॥8॥

"शातमशातञ्च कुतो निदाना:*, कस्मिन् असति न भवन्ति ह्येते।
विभवं भवञ्चापि यदेतदर्थम्, एतन्मां प्रब्रूहि यतो निदानम्"॥8॥

देवता –मुझे इनकी उत्पत्ति के कारण को बतायें कि सुख (सात) और दु:ख (असात) वेदनाएँ कहाँ से उत्पन्न होती हैं ? किसके न होने पर ये नहीं होतीं ? नाश और उत्पत्ति –जो कहे गए हैं, इनका भी कारण बतलायें॥8॥

'Pleasure and displeasure, whence have they their origin, for want of what do these not arise? This notion which thou mentionest, "decay and origin," tell me from what does this arise.'.8.

*निदानानि के अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त है वेद में जस् सस् का लुक् हुआ है।

"फस्सनिदानं सातं असातं, फस्से असन्ते न भवन्ति हेते।
विभवं भवं चा पि यमेतमत्थं, एतं ते पब्रूमि इतोनिदानं"॥4/11/9॥

"Phassanidānaṃ sātaṃ asātaṃ, phasse asante na bhavanti hete;
Vibhavaṃ bhavaṃ cā pi yametamatthaṃ, etaṃ te pabrūmi itonidānaṃ".॥9॥

"स्पर्शनिदानं शातमशातम्, स्पर्शेऽसति (अभवति) न भवन्ति ह्येते।
विभवं* भवञ्चापि यदेतदर्थम्, एतत् त्वां प्रब्रवीमि इतो निदानम्"॥9॥

भगवान् –स्पर्श के कारण सुख और दु:ख वेदनायें होती हैं । स्पर्श के न होने पर ये नहीं होतीं । जो विनाश और उत्पत्ति कहे गए हैं, इनका भी कारण बताता हूँ॥9॥

'Pleasure and displeasure have their origin from phassa touch, when there is no touch they do not arise. This notion which thou mentionest, viz. "decay and origin," this I tell thee has its origin from this.'.9.

*विभव शब्द वैभव का अर्थबोधक है किन्तु पालि परम्परा से विभव का अर्थ अभाव है।

"फस्सो नु लोकस्मि कुतोनिदानो, परिग्गहा चा पि कुतो पहूता।
किस्मिं असन्ते न ममत्तमत्थि, किस्मिं विभूते न फुसन्ति फस्सा"॥4/11/10॥

"Phasso nu lokasmi kutonidāno, pariggahā cā pi kutopahūtā;
Kismiṃ asante na mamattamatthi, kismiṃ vibhūte na phusanti phassā".॥10॥

"स्पर्शो नु लोके कुतो निदान:, परिग्रहाश्चापि कुत: प्रभूता:।
कस्मिन् असति न ममत्वमस्ति, कस्मिन् विभूते न स्पृशन्ति स्पर्शा:"॥10॥

देवता –संसार में स्पर्श कहाँ से उत्पन्न होता है ? परिग्रह कहाँ से उत्पन्न होते हैं ? किसके न होने से ममत्व नहीं होता ? किसके न होने पर स्पर्श नहीं होते ?॥10॥

'From what has phassa its origin in the world, and from what does grasping spring up? For want of what is there no egotism, by the cessation of what do the touches not touch?' .10.

"नाम च रूपं च पटिच्च फस्सो, इच्छानिदानानि परिग्गहानि।
इच्छाय सन्त्या न ममत्तमत्थि, रूपे विभूते न फुसन्ति फस्सा"॥4/11/11॥

"Nāmañca rūpaṃ ca paṭicca phasso, icchānidānāni pariggahāni;
Icchāyasantyā na mamattamatthi, rūpe vibhūte na phusanti phassā".॥11॥

"नाम च रूपञ्च प्रतीत्य स्पर्श:, इच्छानिदानानि परिग्रहाणि।
इच्छायां सत्यां न ममत्वमस्ति, रूपे विभूते न स्पृशन्ति स्पर्शा:"॥11॥

भगवान् –नाम और रूप से स्पर्श होते हैं । इच्छा के कारण परिग्रह होते हैं । इच्छा के न होने पर ममत्व नहीं होता और रूप के न होने पर स्पर्श नहीं होते॥11॥

'On account of name and form the touches, grasping has its origin in wish; by the cessatIon of wishes there is no egotism, by the cessatIon of form the touches do not touch.' .11.

"कथं समेतस्स विभोति रूपं, सुखं दुखं चा पि कथं विभोति।
एतं मे पब्रूहि यथा विभोति, तं जानियामा ति मे मनो अहु"॥4/11/12॥

"Kathaṃsametassa vibhoti rūpaṃ, sukhaṃ dukhaṃ cā pi kathaṃ vibhoti;
Etaṃ me pabrūhi yathā vibhoti, taṃ jāniyāmā ti me mano ahu".॥12॥

"कथं समेतस्य विभवति रूपम्, सुखं दु:खञ्चापि कथं विभवति।
एतं मां प्रब्रूहि यथा विभवति, तं जानीयाम् इति मे मनोऽभूत्"॥12॥

देवता –कैसा करने वाले को रूप नहीं होता? अथवा सुख और दु:ख कैसे नहीं होते ? ये जैसे नहीं होते हैं उन्हें मुझे बतायें, मेरी इच्छा है कि हम उसे जानें॥12॥

'How is one to be constituted that his form may cease to exist, and how do joy and pain cease to exist? Tell me this, how it ceases, that we should like to know, such was my mind?'.12.

"न सञ्ञसञ्ञी न विसञ्ञसञ्ञी, नो पि असञ्ञी न विभूतसञ्ञी।
एवं समेतस्स विभोति रूपं, सञ्ञानिदाना हि पपञ्चसङ्खा"॥4/11/13॥

"Na saññasaññī na visaññasaññī, no pi asaññī na vibhūtasaññī;
Evaṃsametassa vibhoti rūpaṃ, saññānidānā hi papañcasaṅkhā".॥13॥

"न संज्ञसंज्ञी न विसंज्ञसंज्ञी, नापि असंज्ञी न विभूतसंज्ञी।
एवं समेतस्य विभवति रूपम्, संज्ञानिदाना हि प्रपञ्चसंज्ञा"॥13॥

भगवान्–संज्ञा के कारण ही सारे प्रपंच उत्पन्न होते हैं, इसलिए जो संज्ञा में नहीं है, जो संज्ञा-रहित भी नहीं है और जो असंज्ञी भी नहीं है तथा न तो जिसने संज्ञा का अतिक्रमण कर लिया है–ऐसा होने पर ही रूप नहीं होता॥13॥

'Let one not be with a natural consciousness, nor with a mad consciousness, nor without cons ciousness, nor with his consciousness gone; for him who is thus constituted form ceases to exist, for what is called delusion has its origin in consciousness.' .13.

"यं तं अपुच्छिम्ह अकित्तयी नो, अञ्ञं तं पुच्छाम तदिङ्घ ब्रूहि।
एत्तावतग्गं नु वदन्ति हेके, यक्खस्स सुद्धिं इध पण्डितासे।
उदाहु अञ्ञं पि वदन्ति एत्तो॥4/11/14॥

"Yaṃ taṃ apucchimha akittayī no, Aññaṃ taṃ pucchāma tadiṅgha brūhi;
Ettāvataggaṃ nu vadanti heke, Yakkhassa suddhiṃ idha paṇḍitāse;
Udāhu aññaṃ pi vadanti etto.॥14॥

"यत् तदपृच्छम् अकीर्तयन् न:, अन्यं तं पृच्छाम: तदित्थं ब्रूहि।
एतावताग्रं नु वदन्ति ह्येके, यक्षस्य शुद्धिमिह पण्डितास्ते।
उताहो अन्यमपि वदन्ति एतावता॥14॥

देवता–हमने जो कुछ पूछा, उसे आपने हमें बतलाया, अब हम दूसरा पूछते हैं, उसे बतायें। कोई-कोई पण्डित इसी (अरूप समाधि) को यक्ष की शुद्धि के लिए श्रेष्ठ बतलाते हैं अथवा इससे दूसरा भी बतलाते हैं॥14॥

'What we have asked thee thou hast explained to us; we will ask thee another question, answer us that: Do not some who are considered wise in this world tell us that the principal thing is the purification of the yakkha, or do they say something different from this? .14.

"एत्तावतग्गं पि वदन्ति हेके, यक्खस्स सुद्धिं इध पण्डितासे।
तेसं पनेके समयं वदन्ति, अनुपादिसेसे कुसला वदाना॥4/11/15॥

"Ettāvataggaṃ pi vadanti heke, yakkhassa suddhiṃ idha paṇḍitāse;
Tesaṃ paneke samayaṃ vadanti, anupādisese kusalā vadānā.॥15॥

"एतावदग्रमपि वदन्ति ह्येके, यक्षस्य शुद्धिमिह पण्डितास्ते।
तेषां पुनरेके समयं वदन्ति, अनुपादिशेषं कुशला: वदन्ति॥15॥

भगवान्–कोई-कोई पण्डित व्यक्ति की शुद्धि इतने से ही बतलाते हैं । कुछ उनके उच्छेद की बात कहते हैं, किन्तु कुशल लोग निर्वाण को ही शुद्धि बतलाते हैं॥15॥

'Thus some wise in this world say that the principal thing is the purification of the yakkha; but some of them say samaya (annihilation), the expert say in anupadisesa none of the five attributes remaining.15.

*समय=उच्छेदं, उच्छेदवादा।

"एते च ञत्वा उपनिस्सिता ति, ञत्वा मुनी निस्सये सो विमंसी।
ञत्वा विमुत्तो न विवादमेति, भवाभवाय न समेति धीरो''ति॥4/11/16॥

"Ete ca ñatvā upanissitā ti, ñatvā munī nissaye so vimaṃsī;
Ñatvā vimutto na vivādameti, bhavābhavāya na sameti dhīro"ti.॥16॥

"एताञ्च ज्ञात्वा उपनि:श्रितेति, ज्ञात्वा मुनि: नि:श्रयेत् स मीमांसी।
ज्ञात्वा विमुक्तो न विवादमेति, भवाभवाय न समेति धीर" इति॥16॥

"ये दृष्टियों को ग्रहण कर उसी में फँसे हैं" – ऐसा मुनि (बुद्ध) विवेकपूर्वक जानकर विमुक्त हो गए हैं, यह विवाद में नहीं पड़ते और न धीर उत्पत्ति और विनाश के फेर में पड़ते हैं॥16॥

'And having known these to be dependent, the investigating Muni, having known the things we depend upon and after knowing them being liberated, does not enter into dispute, the wise man does not go to reiterated existence.'.16.

कलहविवादसुत्तं निट्ठितं
(Kalahavivādasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 12) चूळबियूहसुत्तं (Cūḷabyūhasuttaṃ)

सकंसकंदिट्ठिपरिब्बसाना, विग्गय्ह नाना कुसला वदन्ति।
यो एवं जानाति स वेदि धम्मं, इदं पटिक्कोसमकेवली* सो॥4/12/1॥

Sakaṃsakaṃdiṭṭhiparibbasānā, viggayha nānā kusalā vadanti;
Yo evaṃ jānāti sa vedi dhammaṃ, idaṃ paṭikkosamakevalī so.॥1॥

स्वकं स्वकं दृष्टिपरिवसाना:, विगृह्य नाना कुशला: वदन्ति।
य एवं जानाति स वेत्ति धर्मम्, इमं प्रतिक्रोशमकेवली स:॥1॥

देवता–लोग अपनी-अपनी दृष्टि को दृढ़तापूर्वक ग्रहण कर "हम कुशल हैं" कहकर विवाद करते हैं और कहते हैं कि जो ऐसा जानता है, वही धर्म का जानकार है जो इसका विरोध करता है, वह ज्ञानी नहीं है॥1॥

Abiding by their own thoughts, some people, having got into contest, assert themselves to be the expert saying, who understands this, he knows the Dhamma; he who reviles this, he is not perfect.' .1.

* पटिक्कोसन्तो हीनो होती ति वदन्ति । बालो ति हीनो । अक्कुसलो ति अविद्वा ।

एवं पि विग्गय्ह विवादयन्ति, बालो परो अक्कुसलो ति चाहु।
सच्चो नु वादो कतमो इमेसं, सब्बेव हीमे कुसला वदाना॥4/12/2॥

Evaṃ pi viggayha vivādayanti, bālo paro akkusalo ti cāhu;
Sacco nu vādo katamo imesaṃ, sabbeva hīme kusalā vadānā.॥2॥

एवमपि विगृह्य विवादयन्ति, बाला: परेऽकुशलामिति चाहु:।
सत्यो नु वाद: कतमरेते एषाम्, सर्वे हि इमे कुशला: वदन्ति॥2॥

ऐसे भी विग्रह में पड़कर वे विवाद करते हैं और कहते हैं कि दूसरे मूर्ख और अकुशल हैं। इनमें सच्चा मत कौन-सा है ? सभी अपने को कुशल बताते हैं ?॥2॥

So having got into contest they dispute: 'The opponent is a fool, an ignorant person,' so they say. Which one of these, pray, is the true doctrine vada? for all these assert themselves to be the only expert .2.

परस्स चे धम्ममनानुजानं, बालोमको होति निहीनपञ्ञो।
सब्बेव बाला सुनिहीनपञ्ञा, सब्बेविमे दिट्ठिपरिब्बसाना॥4/12/3॥

Parassa ce dhammamanānujānaṃ, bālomako hoti nihīnapañño;
Sabbeva bālā sunihīnapaññā, sabbevime diṭṭhiparibbasānā.॥3॥

परस्य चेत् धर्ममनानुजानन्, बालो मृगो भवति निहीनप्रज्ञ: ।
सर्वे एव बाला: सुनिहीनप्रज्ञा:, सर्वैव इमे दृष्टि-परिवसाना:॥3॥

भगवान् –जो दूसरे के धर्म को स्थान नहीं देता वह मूर्ख, पशु और प्रज्ञाविहीन होता है । सभी मूर्ख और प्रज्ञाविहीन हैं । ये सभी दृष्टियों के फेर में पड़े हैं॥3॥

He who does not acknowledge an opponent's doctrine dhamma, he is a fool, a beast, one of poor understanding, all are fools with a very poor understanding; all these abide by their own views.3.

सन्दिट्ठिया चेव न वीवदाता, संसुद्धपञ्ञा कुसला मुतीमा।
न तेसं कोचि परिहीनपञ्ञो, दिट्ठी हि तेसं पि तथा समत्ता॥4/12/4॥

Sandiṭṭhiyā ceva na vīvadātā, saṃsuddhapaññā kusalā mutīmā;
Na tesaṃ koci parihīnapañño, diṭṭhī hi tesaṃ pi tathā samattā.॥4॥

सन्दृष्ट्यां चैव न व्यवदातार:*, संशुद्धप्रज्ञा: कुशला: मतिमन्त:।
न तेषां कश्चित् परिहीणप्रज्ञो, दृष्टिर्हि तेषामपि तथा समस्ता॥4॥

यदि लोग सम्यक् दृष्टि में विवाद नहीं रखते हैं तो वे शुद्धप्रज्ञ, कुशल और मतिमान् हैं । उनमें कोई प्रज्ञाविहीन नहीं है, क्योंकि उनकी दृष्टि परिपूर्ण है॥4॥

They are surely purified by their own view, they are of a pure understanding, expert, thoughtful, amongst them there is no one of poor understanding, their view is quite perfect.4.

*न विवदन्ति इति भाव:।

न वाहमेतं तथियन्ति ब्रूमि, यमाहु बाला मिथु अञ्ञमञ्ञं।
सकंसकंदिट्ठिमकंसु सच्चं, तस्मा हि बालो ति परं दहन्ति॥4/12/5॥

Na vāhametaṃ tathiyanti brūmi, yamāhu bālā mithu aññamaññaṃ;
Sakaṃsakaṃdiṭṭhimakaṃsu saccaṃ, tasmā hi bālo ti paraṃ dahanti.॥5॥

न वाहमेतं तथ्यमिति ब्रवीमि, यमाहु: बाला: मिथु: अन्योऽन्यम्।
स्वकं स्वकं दृष्टिमाकार्षु: सत्यम्, तस्माद्धि बाल इति परं दुह्यन्ति॥5॥

मैं यह नहीं कहता कि 'यही सत्य है', जिस बात को लेकर लोग एक दूसरे को मूर्ख बताते हैं, वे अपनी-अपनी दृष्टि को सत्य सिद्ध करते हैं और एक दूसरे को मूर्ख बताते हैं॥5॥

I do not say, 'This is the reality,' which fools say mutually to each other; they made their own views the truth, therefore they hold others to be fools.5.

यमाहु सच्चं तथियन्ति एके, तमाहु अञ्ञे तुच्छं मुसा ति।
एवं पि विगय्ह विवादयन्ति, कस्मा न एकं समणा वदन्ति॥4/12/6॥

Yamāhu saccaṃ tathiyanti eke, tamāhu aññe tucchaṃ musā ti;
Evaṃ pi vigayha vivādayanti, kasmā na ekaṃ samaṇā vadanti.॥6॥

यमाहु: सत्यं तथ्यमिति एके, तमाहु: अन्ये तुच्छं मृषा इति।
एवमपि विग्रह्य विवदन्ति, कस्मान्न एकं श्रमणा: वदन्ति॥6॥

देवता –कुछ लोग जिसे सत्य कहते हैं, दूसरे लोग उसे प्रलाप और असत्य बताते हैं। इस प्रकार भी वे विग्रह में पड़कर विवाद करते हैं । श्रमण एक ही बात क्यों नहीं बताते ?॥6॥

What some say is the truth, the reality, that others say is void, false, so having disagreed they dispute. Why do not the Sramaṇas say one and the same thing? .6.

एकं हि सच्चं न दुतीयमत्थि, यस्मिं पजा नो विवदे पजानं।
नाना ते सच्चानि सयं थुनन्ति, तस्मा न एकं समणा वदन्ति॥4/12/7॥

Ekaṃ hi saccaṃ na dutīyamatthi, yasmiṃ pajā no vivade pajānaṃ;
Nānā te saccāni sayaṃ thunanti, tasmā na ekaṃ samaṇā vadanti.॥7॥

एकं हि सत्यं न द्वितीयमस्ति, यस्मिन् प्रजा न विवदेत् प्रजानती ।
नाना ते सत्यानि स्वयं स्तुवन्ति, तस्मान्न एकं श्रमणा: वदन्ति॥7॥

भगवान् –सत्य एक ही है दूसरा नहीं, जिसके सम्बन्ध में व्यक्ति व्यक्ति से विवाद न करे । वे स्वयं नाना सत्यों की प्रशंसा करते हैं, इसलिए श्रमण एक ही बात नहीं बताते॥7॥

For the truth is one, there is not a second, about which one intelligent man might dispute with another intelligent man; but they themselves proclaim different truths, therefore the Sramaṇas do not say one and the same thing.7.

कस्मा नु सच्चानि वदन्ति नाना, पवादियासे कुसला वदाना।
सच्चानि सुतानि बहूनि नाना, उदाहु ते तक्कमनुस्सरन्ति॥4/12/8॥

Kasmā nu saccāni vadanti nānā, pavādiyāse kusalā vadānā;
Saccāni sutāni bahūni nānā, udāhu te takkamanussaranti.॥8॥

कस्मान्नु सत्यानि वदन्ति नाना, प्रवादयन्ति कुशला: वदन्त:।
सत्यानि श्रुतानि बहूनि नाना, उताहो ते तर्कमनुसरन्ति॥8॥

देवता– क्यों लोग नाना सत्यों को बताते हैं ? वे अपने को कुशल कहकर विवाद करते हैं । क्या सुने हुए सत्य नाना प्रकार के और बहुत से हैं ? या वे तर्क का अनुसरण करते हैं?॥8॥

Why do the disputants that assert themselves to be the only expert, proclaim different truths? Have many different truths been heard of, or do they only follow their own reasoning? .8.

न हेव सच्चानि बहूनि नाना, अञ्ञत्र सञ्ञाय निच्चानि लोके।
तक्कं च दिट्ठीसु पकप्पयित्वा, सच्चं मुसा ति द्वयधम्ममाहु॥4/12/9॥

Na heva saccāni bahūni nānā, aññatra saññāya niccāni loke;
Takkaṃ ca diṭṭhīsu pakappayitvā, saccaṃ musā ti dvayadhammamāhu.॥9॥

न ह्येव सत्यानि बहूनि नाना, अन्यत्र संज्ञाय नित्यानि लोके।
तर्कञ्च दृष्टिषु प्रकल्प्य, सत्यं मृषा इति द्वयधर्ममाहु:॥9॥

भगवान् –संज्ञा के अतिरिक्त संसार में बहुत से और विभिन्न प्रकार के सत्य तथा नित्य नहीं हैं । दृष्टियों में तर्क को लगाकर सत्य और असत्य–इन दो धर्मों को बतलाया हैं॥9॥

There are not many different truths in the world, no eternal ones except consciousness; but having reasoned on the philosophical views they proclaim a double Dhamma, truth and falsehood.9.

दिट्ठे सुते सीलवते मुते वा, एते च निस्साय विमानदस्सी।
विनिच्छये ठत्वा पहस्समानो, बालो परो अक्कुसलो ति चाह॥4/12/10॥

Diṭṭhe sute sīlavate mute vā, ete ca nissāya vimānadassī;
Vinicchaye ṭhatvā pahassamāno, bālo paro akkusalo ti cāha.॥10॥

दृष्टे श्रुते शीलव्रते मते वा, एते च नि:श्राय विमानदर्शी।
विनिश्चये स्थित्वा प्रहृष्यन्, बाल: परोऽकुशल इति चाह॥10॥

दृष्टि, श्रुति, शील-व्रत, विचार–इनके कारण दूसरे का अनादर करते हुए प्रसन्नतापूर्वक किसी निश्चय पर स्थित होकर मूर्ख दूसरे को अकुशल कहता है॥10॥

In regard to what has been seen, or heard, virtue and holy works, or what has been thought, and on account of these views looking upon others with contempt, standing in their resolutions joyful, they say that the opponent is a fool and an ignorant person.10.

येनेव बालो ति परं दहाति, तेनातुमानं कुसलो ति चाह।
सयमत्तना सो कुसलो वदानो, अञ्ञं विमानेति तदेव पाव॥4/12/11॥

Yeneva bālo ti paraṃ dahāti, tenātumānaṃ kusalo ti cāha;
Sayamattanā so kusalo vadāno, aññaṃ vimāneti tadeva pāva.॥11॥

येनैव बाल इति परं द्रुह्यति, तस्मादात्मानं कुशल इति चाह।
स्वयमात्मना स कुशलो वदन्, अन्यं विमानयति तदेव प्राव*॥11॥

व्यक्ति जिसके कारण दूसरे को मूर्ख बताता है, उसी से अपने को कुशल बताता है । अपने को कुशल बताने वाला अथवा अपनी रक्षा करने वाला उसी से दूसरे का अनादर करता है॥11॥

Because he holds another to be a fool, therefore he calls himself expert, in his own opinion he is one that tells what is propitious, others he blames, so he said.11.

* पाहि

अतिसारदिट्ठिया व सो समत्तो, मानेन मत्तो परिपुण्णमानी।
सयमेव सामं मनसाभिसित्तो, दिट्ठी हि सा तस्स तथा समत्ता॥4/12/12॥

Atisāraditṭhiyā va so samatto, mānena matto paripuṇṇamānī;
Sayameva sāmaṃ manasābhisitto, diṭṭhī hi sā tassa tathā samattā.॥12॥

अतिसारदृष्ट्या स समस्त:, मानेन मत्त: परिपूर्णमानी।
स्वयमेव सामं मनसाभिषिक्त:, दृष्टिर्हि सा तस्य तथा समस्ता॥12॥

वह व्यक्ति अपनी उस दृष्टि को पूर्ण मानता है और वह मान से परिपूर्ण अभिमानी हो जाता है । वह स्वयं अपने को पण्डित समझता है, क्योंकि उसकी दृष्टि ही वैसी है॥12॥

He is full of his overbearing philosophical view, mad with pride, thinking himself perfect, he is in his own opinion anointed with the.spirit of genius, for his philosophical view is quite complete.12.

परस्स चे हि वचसा निहीनो, तुमो सहा होति निहीनपञ्ञो।
अथ चे सयं वेदगू होति धीरो, न कोचि बालो समणेसु अत्थि॥4/12/13॥

Parassa ce hi vacasā nihīno, tumo sahā hoti nihīnapañño;
Atha ce sayaṃ vedagū hoti dhīro, na koci bālo samaṇesu atthi.॥13॥

परस्य चेत् हि वचसा निहीन:, तेनैव सह भवति निहीनप्रज्ञ: ।
अथ चेत् स्वयं वेदगो भवति धीर:, न कश्चित् बाल: श्रमणेषु अस्ति॥13॥

यदि दूसरे के कहने से कोई हीन होता, तो वह स्वयं भी प्रज्ञाविहीन हो सकता है । यदि अपने कहने से कोई ज्ञानी और धीर होता, तो श्रमणों में कोई भी मूर्ख नहीं है॥13॥

If he according to another's report is low, then he says the other is also of a low understanding, and if he himself is accomplished and wise, there is not any fool amongst the Sramaṇas.13.

अञ्ञं इतो याभिवदन्ति धम्मं, अपराध्वा सुद्धिमकेवली ते ।
एवं पि तित्थ्या पुथुसो वदन्ति, सन्दिट्ठिरागेन हि तेभिरत्ता॥4/12/14॥

Aññaṃ ito yābhivadanti dhammaṃ, aparaddhā suddhimakevalī te;
Evaṃ pi titthyā puthuso vadanti, sandiṭṭhirāgena hi tebhirattā.॥14॥

अन्यमितो येऽभिवदन्ति धर्मम्, अपराध्वां शुद्धिमकेवलिनस्ते ।
एवमपि तैर्थिका: पृथक् वदन्ति, संदृष्टिरागेण हि तेऽभिरक्ता:॥14॥

"जो इसके विपरीत दूसरी दृष्टि बताते हैं और जो शुद्धि के मार्ग से विचलित हैं, वे अकेवली (अज्ञानी) हैं ।" – ऐसा प्राय: तार्किक (दूसरे मतावलम्बी) कहते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि राग में रत हैं॥14॥

'Those who preach a doctrine dhamma different from this, fall short of purity and are imperfect,' so the Titthiyas say repeatedly, for they are inflamed by passion for their own philosophical views.14.

इधेव सुद्धि इति वादयन्ति, नाञ्ञेसु धम्मेसु विसुद्धिमाहु।
एवं पि तित्थ्या पुथुसो निविट्ठा, सकायने तत्थ दळ्हं वदाना॥4/12/15॥

Idheva suddhi iti vādayanti, nāññesu dhammesu visuddhimāhu;
Evaṃ pi titthyā puthuso niviṭṭhā, sakāyane tattha daḷhaṃ vadānā.॥15॥

इहैव शुद्धिरिति वदन्ति, नान्येषु धर्मेषु विशुद्धिमाहु:।
एवमपि तैर्थिका: पृथु निविष्टा:, सत्काये तत्र दृढं वदन्ति॥15॥

"शुद्धि यहीं है, दूसरे धर्मों में शुद्धि नहीं है"–ऐसा प्राय: तैर्थिक अपनी दृष्टि में स्थित और दृढ़ हो बताते हैं॥15॥

Here they maintain purity, in other doctrines dhamma they do not allow purity; so the Titthiyas, entering extensively upon details, say that in their own way there is something firm.15.

सकायने वा पि दळ्हं वदानो, कमेत्थ बालो ति परं दहेय्य।
सयमेव सो मेधगमावहेय्य, परं वदं बालमसुद्धिधम्मं॥4/12/16॥

Sakāyane vā pi daḷhaṃ vadāno, kamettha bālo ti paraṃ daheyya;
Sayameva so medhagamāvaheyya, paraṃ vadaṃ bālamasuddhidhammaṃ.॥16॥

सत्काये वापि दृढं वदन्, किमत्र बाल इति परं द्रुह्येत्।
स्वयमेव स मेधकमाह्वयेत्, परं वदन् बालमशुद्धिधर्मम्॥16॥

जो अपनी दृष्टि को दृढ़तापूर्वक ग्रहण कर दूसरे को मूर्ख बताते हैं, दूसरे धर्म को मूर्ख और अशुद्ध बताने वाला वह स्वयं कलह का आह्वान करता है॥16॥

And saying that there is something firm in his own way he holds his opponent to be a fool; thus he himself brings on strife, calling his opponent a fool and impure asuddhadhamma.16.

विनिच्छये ठत्वा सयं पमाय, उद्धं स लोकस्मिं विवादमेति।
हित्वान सब्बानि विनिच्छयानि, न मेधगं कुब्बति जन्तु लोके ति॥4/12/17॥

Vinicchaye ṭhatvā sayaṃ pamāya, uddhaṃ sa lokasmiṃ vivādameti;
Hitvāna sabbāni vinicchayāni, na medhagaṃ kubbati jantu loke ti.॥17॥

विनिश्चये स्थित्वा स्वयं प्रमाय, ऊर्ध्वं स लोके विवादमेति।
हित्वा सर्वाणि विनिश्चयानि, न मेधकं करोति जन्तु लोके इति॥17॥

वह अपनी दृष्टि में स्थित हो स्वयं दूसरे शास्ताओं से अपनी तुलना कर आगे संसार के विवाद में जाते हैं या विवाद में पड़ते हैं, किन्तु ज्ञानी पुरुष सारी दृष्टियों (धारणाओं) को त्यागकर संसार में कलह नहीं करता है॥17॥

Standing in his resolution, having himself measured., he still more enters into dispute in the world; but having left all resolutions nobody will excite strife in the world.17.

चूळवियूहसुत्तं निट्ठितं
(Cūḷabyūhasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 13) महाबियूहसुत्तं (Mahābiyūhasuttaṃ)

ये केचिमे दिट्ठिपरिब्बसाना, इदमेव सच्चं ति विवादयन्ति ।
सब्बेव ते निन्दमन्वानयन्ति, अथो पसंसं पि लभन्ति तत्थ॥4/13/1॥

Ye kecime diṭṭhiparibbasānā, idameva saccaṃ ti vivādayanti;
Sabbeva te nindamanvānayanti, atho pasaṃsaṃ pi labhanti tattha.॥1॥

ये केचिदिमे दृष्टिपरिवसाना:, इदमेव सत्यमिति विवादयन्ति ।
सर्वे एव ते निन्दामन्वानयन्ति, अथ प्रशंसामपि लभन्ते तत्र॥1॥

देवता –जो कोई दृष्टियों को चारो ओर से ग्रहण करके 'यही सत्य है' विवाद करते हैं, वे सभी निन्दित होते हैं अथवा वहाँ वे प्रशंसा को भी प्राप्त होते हैं ?॥1॥

Those who abiding in the.philosophical views clash, saying, 'This is the truth,' they all incur blame, and they also obtain praise in this matter.1.

अप्पं हि एतं न अलं समाय, दुवे विवादस्स फलानि ब्रूमि।
एतं पि दिस्वा न विवादयेथ, खेमाभिपस्सं अविवादभूमिं*॥4/13/2॥

Appaṃ hi etaṃ na alaṃ samāya, duve vivādassa phalāni brūmi;
Etaṃ pi disvā na vivādayetha, khemābhipassaṃ avivādabhūmiṃ.॥2॥

अल्पं हि एतन्न अलं शमाय, द्वे विवादस्य फले ब्रवीमि।
एवमपि दृष्ट्वा न विवादयेत्, क्षेमाभिपश्यन् अविवादभूमिम्॥2॥

भगवान् –यह अल्प है, शान्ति के लिए पर्याप्त नहीं है । मैं विवाद के दो फल बताता हूँ । क्षेम हेतु निर्विवाद भूमि और कल्याणकर जान-देखकर विवाद में न पड़े॥2॥

This is little, not enough to bring about tranquillity, I say there are two fruits of dispute; having seen this let no one dispute, understanding Khema to be the place where there is no dispute.2.

* खेमं अविवादभूमिं निव्वाणं ।

या काचिमा सम्मुतियो पुथुज्जा, सब्बा व एता न उपेति विद्वा।
अनूपयो सो उपयं* किमेय्य, दिट्ठे सुते खन्तिमकुब्बमानो॥4/13/3॥

Yā kācimā sammutiyo puthujjā, sabbā va etā na upeti vidvā;
Anūpayo so upayaṃ kimeyya, diṭṭhe sute khantimakubbamāno.॥3॥

या: काश्चनिमा: सम्मतय: पृथग्जना:, सर्वासु एतासु नोपैति विद्वान्।
अनुपय: स उपयं किमियात्, दृष्टे श्रुते क्षान्तिमकुर्वाण:॥3॥

जो कुछ पृथक् जनों की मान्यताएँ हैं, उन सबमें बुद्धिमान् नहीं पड़ता । दृष्टि और श्रुति का ग्रहण न करने वाला, आसक्ति रहित वह क्या ग्रहण करे ?॥3॥

The opinions that have arisen amongst people, all these the wise man does not embrace; he is independent. Should he who is not pleased with what has been seen and heard resort to dependency'?.3.

• उपयं रूपादीसु एकं पि धम्मं किं उपेय्य।

सीलुत्तमा सञ्ञमेनाहु सुद्धिं, वतं समादाय उपट्ठितासे।
इधेव सिक्खेम अथस्स सुद्धिं, भवूपनीता कुसला वदाना॥4/13/4॥

Sīluttamā saññamenāhu suddhiṃ, vataṃ samādāya upaṭṭhitāse;
Idheva sikkhema athassa suddhiṃ, bhavūpanītā kusalā vadānā.॥4॥

शीलोत्तमा: संयमेनाहु: शुद्धिम्, व्रतं समादाय उपस्थिता: हि ।
इहैव शिक्षयेयु: अथास्य शुद्धिम्, भवोपनीता: कुशला: वदन्ति॥4॥

शील को उत्तम मानने वाले संयम से शुद्धि बताते हैं । वे व्रत ग्रहण कर बताते हैं कि उसकी शुद्धि यहीं सीखें। भव में पड़े लोग अपने को कुशल बताते हैं॥4॥

Those who consider virtue the highest of all, say that purity is associated with restraint; having taken upon themselves a holy work they serve. Let us learn in this view, then, his purity; wishing for existence they assert themselves to be the only expert.4.

सचे चुतो सीलवततो होति, पवेधती कम्म विराधयित्वा।
पजप्पती पत्थयती च सुद्धिं, सत्था व हीनो पवसं घरम्हा॥4/13/5॥

Sace cuto sīlavatato hoti, pavedhatī kamma virādhayitvā;
Pajappatī patthayatī ca suddhiṃ, satthā va hīno pavasaṃ gharamhā.॥5॥

सचेच्च्युत: शीलव्रततो भवति, प्रवेधते कर्म विराध्य ।
प्रजल्पति प्रार्थयति च शुद्धिम्, शास्ता एव हीनरिव प्रवासं गृहात्॥5॥

यदि वह शील-व्रत से च्युत होता है, तो वह अपना कर्म बिगड़ा समझकर कम्पित होता है। सार्थ से बिछुड़े हुए या घर से प्रवास में गये हुए की भाँति शोक करता है और यहाँ शुद्धि चाहता है॥5॥

If he falls off from virtue and holy works, he trembles, having missed his work; he laments, he prays for purity in this world, as one who has lost his caravan or wandered away from his house.5.

सीलब्बतं वा पि पहाय सब्बं, कम्मं च सावज्जनवज्जमेतं।
सुद्धिं असुद्धिं ति अपत्थयानो, विरतो चरे सन्तिमनुग्गहाय॥4/13/6॥

Sīlabbataṃ vā pi pahāya sabbaṃ, kammaṃ ca sāvajjanavajjametaṃ;
Suddhiṃ asuddhiṃ ti apatthayāno, virato care santimanuggahāya.॥6॥

शीलव्रतं वापि प्रहाय सर्वम्, कर्म च सावद्यानवद्यमेतत् ।
शुद्धिमशुद्धिमिति अप्रार्थयमाण:, विरतश्चरेत् सन्तिमनुग्रहाय॥6॥

सभी शील-व्रत तथा सदोष-निर्दोष कर्म को त्यागकर, शुद्धि और अशुद्धि की कामना न करते हुए शान्ति के लिए विरक्त होकर विचरण करें॥6॥

Having left virtue and holy works altogether, and both wrong and blameless work, not praying for purity or impurity, he wanders abstaining from both purity and impurity, without having embraced peace.6.

तपूपनिस्साय जिगुच्छितं वा, अथवा पि दिट्ठं व सुतं मुतं वा।
उद्धंसरा सुद्धिमनुत्थुनन्ति, अवीततण्हासे भवाभवेसु॥4/13/7॥

Tamūpanissāya jigucchitaṃ vā, athavā pi diṭṭhaṃ va sutaṃ mutaṃ vā;
Uddhaṃsarā suddhimanutthunanti, avītataṇhāse bhavābhavesu.॥7॥

तपोपनि:श्राय जुगुप्सितं वा, अथवाऽपि दृष्टं वा श्रुतं मतं वा।
ऊर्ध्वस्वरेण शुद्धिमनुस्तुवन्ति, अवीततृष्णा: भवाभवेषु॥7॥

कुछ लोग तप अथवा घृणित काम द्वारा अथवा दृष्टि, श्रुति या विचार द्वारा पुनर्जन्म की तृष्णा को बिना छोड़े ही उच्च स्वर से शुद्धि को बताते हैं॥7॥

By means of penance or anything disliked, or what has been seen, or heard, or thought, going upwards they wail for what is pure, without being free from craving for reiterated existence.7.

पत्थयमानस्स हि जप्पितानि, पवेधितं वा पि पकप्पितेसु।
चुतूपपातो इध यस्स नत्थि, स केन वेधेय्य कुहिं व जप्पे॥4/13/8॥

Patthayamānassa hi jappitāni, pavedhitaṃ vā pi pakappitesu;
Cutūpapāto idha yassa natthi, sa kena vedheyya kuhiṃ va jappe.॥8॥

प्रार्थयमाणस्य हि जल्पितानि, प्रवेधितं चापि प्रकम्पितेषु।
च्युतोत्पाद इह यस्य नास्ति, स कस्माद् वेधेत् कुहिञ्च जल्पेत्॥8॥

जो कामना करते हैं उनमें ही तृष्णा होती है, जो उपाय करता है वही कम्पित रहता है। जिसे मृत्यु और जन्म नहीं है, वह किसलिए और कहाँ कम्पित होगा और तृष्णा करेगा?॥8॥

For him who wishes for something there always are desires, and trembling in the midst of his plans; he for whom there is no death and no rebirth, how can he tremble or desire anything? .8.

यमाहु धम्मं परमं ति एके, तमेव हीनं ति पनाहु अञ्ञे।
सच्चो नु वादो कतमो इमेसं, सब्बेव हीमे कुसला वदाना॥4/13/9॥

Yamāhu dhammaṃ paramaṃ ti eke, tameva hīnaṃ ti panāhu aññe;
Sacco nu vādo katamo imesaṃ, sabbeva hīme kusalā vadānā.॥9॥

यमाहु: धर्मं परममिति एके, तमेव हीनमिति पुन आहु: अन्ये ।
सत्यं नु वाद: कतमो हि एषाम्, सर्वे एव हि इमे कुशला: वदन्ति॥9॥

देवता– जिसे कुछ लोग उत्तम धर्म बताते हैं, उसे ही दूसरे लोग हीन कहते हैं । इनमें से कौन-सा कथन सत्य है? ये सभी अपने को कुशल बताते हैं॥9॥

What some call the highest Dhamma, that others again call wretched; which one of these, pray, what is the true doctrine? for all these assert themselves to be the only expert.9.

सकं हि धम्मं परिपुण्णमाहु, अञ्ञस्स धम्मं पन हीनमाहु।
एवं पि विग्गय्ह विवादयन्ति, सकं सकं सम्मुतिमाहु सच्चं॥4/13/10॥

Sakaṃ hi dhammaṃ paripuṇṇamāhu, aññassa dhammaṃ pana hīnamāhu;
Evaṃ pi viggayha vivādayanti, sakaṃ sakaṃ sammutimāhu saccaṃ.॥10॥

स्वकं हि धर्मं परिपूर्णमाहु:, अन्यस्य धर्मं पुन: हीनमाहु:।
एवमपि विगृह्य विवादयन्ति, स्वकं स्वकं सम्मतिमाहु: सत्यम्॥10॥

भगवान् –अपने धर्म को परिपूर्ण बताते हैं और दूसरे के धर्म को हीन बताते हैं । इस प्रकार भिन्न मत वाले ही विवाद करते हैं और अपनी धारणा को सत्य बताते हैं॥10॥

Their own Dhamma they say is perfect, another's Dhamma again they say is wretched; so having disagreed they dispute, they each say their own opinions are the truth. 10.

परस्स चे वम्भयितेन हीनो, न कोचि धम्मेसु विसेसि अस्स।
पुथू हि अञ्ञस्स वदन्ति धम्मं, निहीनतो सम्हि दळ्हं वदाना॥4/13/11॥

Parassa ce vambhayitena hīno, na koci dhammesu visesi assa;
Puthū hi aññassa vadanti dhammaṃ, nihīnato samhi daḷhaṃ vadānā.॥11॥

परस्य चेत् बम्भणितेन हीन:, न कश्चिद् धर्मेषु विशेषोऽस्ति।
पृथक् हि अन्यस्य वदन्ति धर्मम्, निहीनत: सोऽस्मि दृढं वदन्त:॥11॥

यदि दूसरे की निन्दा करने से हीन हो जाय तो धर्म में कोई श्रेष्ठ नहीं होता । सभी दूसरे के धर्म को हीन बताते और अपने को ठोस बताते हैं॥11॥

If one becomes low by another's censure, then there will be no one distinguished amongst the Dhammas; for they all say another's Dhamma is low, in their own they say there is something firm.11.

सद्धम्मपूजा पि नेसं तथेव, यथा पसंसन्ति सकायनानि।
सब्बेव वादा तथिया भवेय्युं, सुद्धी हि नेसं पच्चत्तमेव॥4/13/12॥

Saddhammapūjā pi nesaṃ tatheva, yathā pasaṃsanti sakāyanāni;
Sabbeva vādā tathiyā bhaveyyuṃ, suddhī hi nesaṃ paccattameva.॥12॥

सद्धर्मपूजाऽपि नैषां तथैव, यथा प्रशंसन्ति सकायनानि।
सर्वे एव वादा: तथैव भवेयु:, शुद्धिर्हि नैषां प्रत्यात्ममेव॥12॥

लोग जिस प्रकार अपने धर्म-मार्गों की प्रशंसा करते हैं, उसी प्रकार उनकी पूजा भी करते हैं । यदि सभी के कथन वैसे हों, तो उनकी शुद्धि अपने-अपने में ही अलग-अलग होगी॥12॥

The worshipping of their own Dhamma is as great as their praise of their own ways; all schools would be in the same case, for their purity is individual.12.

न ब्राह्मणस्स परनेय्यमत्थि, धम्मेसु निच्छेय्य समुग्गहीतं।
तस्मा विवादानि उपातिवत्तो, न हि सेट्ठतो* पस्सति धम्ममञ्ञं॥4/13/13॥

Na brāhmaṇassa paraneyyamatthi, dhammesu niccheyya samuggahītaṃ;
Tasmā vivādāni upātivatto, na hi seṭṭhato passati dhammamaññaṃ.॥13॥

न ब्राह्मण: स परनेयमस्ति, धर्मेषु निश्चित्य समुद्गृहीतम्।
तस्मात् विवादेभ्य उपात्तवृत्तम्, न हि श्रेष्ठं पश्यति धर्ममन्यम्॥13॥

ब्राह्मण दूसरे के सहारे नही रहता, उसकी धार्मिक दृष्टियों में समग्रदृष्टि रहती है, इसलिए वह विवाद से परे हैं, वह दूसरे धर्म को श्रेष्ठ नहीं मानता॥13॥

There is nothing about a Brāhmaṇa dependent upon others, nothing amongst the Dhammas which he would embrace after investigation; therefore he has overcome the disputes, for he does not regard any other Dhamma as the best.13.

* स्मृति-प्रस्थानादि के अतिरिक्त अन्य किसी दूसरे धर्म को श्रेष्ठ नहीं मानता-अट्ठकथा।

जानामि पस्सामि तथेव एतं, दिट्ठिया एके पच्चेन्ति सुद्धिं।
अद्दक्खि चे किञ्हि तुमस्स तेन, अतिसित्वा अञ्ञेन वदन्ति सुद्धिं॥4/13/14॥

Jānāmi passāmi tatheva etaṃ, diṭṭhiyā eke paccenti suddhiṃ;
Addakkhi ce kiñhi tumassa tena, atisitvā aññena vadanti suddhiṃ.॥14॥

जानामि पश्यामि तथैव एतम्, दृष्ट्या एके प्रतीयन्ते शुद्धिम्।
अदर्शयच्चेत् किं हि तव तेन, अतिसृत्य अन्येन वदन्ति शुद्धिम्॥14॥

"मैं इसे वैसा ही जानता और देखता हूँ" – इस प्रकार कुछ लोग दृष्टि से शुद्धि बताते हैं । यदि उन्होंने देखा तो क्या देखा ? वे यथार्थ मार्ग छोड़कर दूसरे क्रम से शुद्धि बताते हैं॥14॥

'I understand, I see likewise this,' so saying, some by their philosophical views return to purity. If he saw purity, what then has been effected by another's view? Having conquered they say that purity exists by another.14.

पस्सं नरो दक्खति नामरूपं, दिस्वान वा त्रस्सति तानिमेव।
कामं बहुं पस्सतु अप्पकं वा,
न हि तेन सुद्धिं कुसला वदन्ति॥4/13/15॥

Passaṃ naro dakkhati nāmarūpaṃ, disvāna vā ñassati tānimeva;
Kāmaṃ bahuṃ passatu appakaṃ vā, na hi tena suddhiṃ kusalā vadanti.॥15॥

पश्यन् नरो दर्शयति नामरूपम्, दृष्ट्वा वा ज्ञायते तानि मे एव।
कामं बहुं पश्यतु अल्पकं वा,
न हि तेन (तस्मात्) शुद्धिं कुशला: वदन्ति॥15॥

देखने वाला मनुष्य नाम-रूप को दर्शाता है । देखकर उन्हीं को मान लेता है । वह भले ही बहुत या कम देखे। कुशल जन इसी से शुद्धि नहीं बताते॥15॥

A seeing man will see name and form, and having seen he will understand those things; let him at pleasure see much or little, for the expert do not say that purity exists by that.15.

निविस्सवादी न हि सुब्बिनायो, पकप्पितं दिट्ठि पुरेक्खरानो।
यं निस्सितो तत्थ सुभं वदानो, सुद्धिं वदो तत्थ तथद्दसा सो॥4/13/16॥

Nivissavādī na hi subbināyo, pakappitaṃ diṭṭhi purekkharāno;
Yaṃ nissito tattha subhaṃ vadāno, suddhiṃvado tattha tathaddasā so.॥16॥

निविष्टवादी नहि शुद्धिनेय:, प्रकल्पितं दृष्टि: पुरेक्षमाण: ।
यं नि:श्रितस्तत्र शुभं वदति, शुद्धिं वदति तत्र तथादृश: स:॥16॥

जो किसी बात में आसक्त है वह शुद्धि को प्राप्त नहीं होता, क्योंकि वह किसी दृष्टि को मानता है । मनुष्य जिसमें आसक्त है उसी को शुभ बताता है और जिसे शुद्धि बताता है उसे सत्य मानता है॥16॥

A dogmatist is no leader to purity, being guided by prejudiced views, saying that good consists in what he is given to, and saying that purity is there, he saw the thing so.16.

न ब्राह्मणो कप्पमुपेति सङ्खा, न दिट्ठिसारी न पि ञाणबन्धु।
ञत्वा च सो सम्मुतियो पुथुज्जा, उपेक्खती उग्गहणन्ति मञ्ञे॥4/13/17॥

Na brāhmaṇo kappamupeti saṅkhā, na diṭṭhisārī na pi ñāṇabandhu;
Ñatvā ca so sammutiyo puthujjā, upekkhatī uggahaṇanti maññe.॥17॥

न ब्राह्मण: कल्पमुपैति संख्याम्, न दृष्टिसारी नापि ज्ञानबन्धु: ।
ज्ञात्वा च स सम्मती: पृथग्जा:, उपेक्षते उद्गृह्णन्ति अन्ये ॥17॥

ब्राह्मण विवेकी हो तृष्णा-दृष्टि में नहीं पड़ता। वह दृष्टि का अनुसरण नहीं करता और न ज्ञान-बन्धु है। वह पृथक् जनों की धारणाओं को, जिन्हें और लोग ग्रहण करते हैं, जानकर उनकी उपेक्षा करता है॥17॥

A Brāhmaṇa does not enter time, or the number of living beings, he is no follower of philosophical views, nor a friend of knowledge; and having penetrated the opinions that have arisen amongst people, he is indifferent to learning, while others acquire it.17.

विस्सज्ज गन्थानि मुनीध लोके, विवादजातेसु न वग्गसारी।
सन्तो असन्तेसु उपेक्खको सो, अनुग्गहो उग्गहणन्ति मञ्ञे॥4/13/18॥

Vissajja ganthāni munīdha loke, vivādajātesu na vaggasārī;
Santo asantesu upekkhako so, anuggaho uggahaṇanti maññe.॥18॥

विसृज्य ग्रन्थीनि मुनिरिह लोके, विवादजातेषु न वर्गसारी ।
सन्तोऽसन्तेषु उपेक्षक: स:, अनुग्रह उद्गृह्णन्ति अन्ये ॥18॥

मुनि इस संसार में बन्धनों को छोड़कर विवाद करने वालों में पक्षधर नहीं होता । वह अशान्तों में शान्त जिसे अन्य लोग ग्रहण करते हैं, उसकी उपेक्षा करता है॥18॥

The Muni, having done away with ties here in the world, is no partisan in the disputes that have arisen; appeased amongst the unappeased he is indifferent, not embracing learning, while others acquire it.18.

पुब्बासवे हित्वा नवे अकुब्बं, न छन्दगू नो पि निविस्सवादी।
स विप्पमुत्तो दिट्ठिगतेहि धीरो, न लिम्पति लोके अनत्तगरही॥4/13/19॥

Pubbāsave hitvā nave akubbaṃ, na chandagū no pi nivissavādī;
Sa vippamutto diṭṭhigatehi dhīro, na limpati loke anattagarahī.॥19॥

पूर्वास्रवान् हित्वा नवानकुर्वन्, न छन्दगो नोऽपि निविष्टवादी ।
स विप्रमुक्तो दृष्टिगतेभ्यो धीरः, न लिम्पति लोकेऽनात्मगर्ही ॥19॥

जो पूर्व के आस्रवों को छोड़ नये आश्रवों को उत्पन्न नहीं होने देता, इच्छा रहित, वाद में अनासक्त, दृष्टियों से पूर्ण रूप से मुक्त वह घोर संसार में लिप्त नहीं होता और वह न अपनी निन्दा करता है॥19॥

Having abandoned his former passions, not contracting new ones, not wandering according to his wishes, being no dogmatist, he is delivered from the philosophical views, being wise, and does not cling to the world, neither does he blame himself. 19.

स सब्बधम्मेसु विसेनिभूतो, यं किञ्चि दिट्ठं व सुतं मुतं वा।
स पन्नभारो मुनि विप्पमुत्तो, न कप्पियो नूपरतो न पत्थियो ति*॥4/13/20॥

Sa sabbadhammesu visenibhūto, yaṃ kiñci diṭṭhaṃ va sutaṃ mutaṃ vā;
Sa pannabhāro muni vippamutto, na kappiyo nūparato na patthiyo ti.॥20॥

स सर्वधर्मेषु विसेनीभूतः, यत् किञ्चित् दृष्टं वा श्रुतं मतं वा।
स पन्नभारो मुनिः विप्रमुक्तः, न कल्पितो नोपरतो न प्रार्थितेति॥20॥

जो कुछ दृष्ट, श्रुत या विचार हैं, उन सब पर वह विजयी है । वह रूप से युक्त, भार-त्यक्त संस्कार, उपरति और तृष्णा से रहित है॥20॥

Being secluded amongst all the doctrines dhamma, whatever has been seen, heard, or thought, he is a Muni who has laid down his burden and is liberated, not belonging to time, not dead, not wishing for anything. So said Bhagavān.20.

* न पत्थियो ति नितण्हो ।

महाविय़ूहसुत्तं निट्ठितं
(Mahābyūhasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 14) तुवटकसुत्तं (Tuvaṭakasuttaṃ)

"पुच्छामि तं आदिच्चबन्धु, विवेकं सन्तिपदं च महेसि।
कथं दिस्वा निब्बाति भिक्खु, अनुपादियानो लोकस्मिं किञ्चि"॥4/14/1॥

"Pucchāmi taṃ ādiccabandhu, vivekaṃ santipadaṃ ca mahesi;
Kathaṃ disvā nibbāti bhikkhu, anupādiyāno lokasmiṃ kiñci".॥1॥

"पृच्छामि तमादित्यबन्धो !, विवेकं शान्तिपदञ्च महर्षे ! ।
कथं दृष्ट्वा निर्वाति भिक्षुः, अनुपादीयमानः लोके किञ्चित्"॥1॥

देवता –आदित्यबन्धु ! महर्षि ! मैं आपसे विवेक तथा शान्तिपद के विषय में पूछता हूँ । भिक्षु लोक में किसी में भी आसक्ति न करता हुआ कैसे देखकर शान्त होता है ?॥1॥

'I ask thee, who art a kinsman of the Adiccas and a great Isi, about seclusion viveka and the state of peace. How is a Bhikkhu, after having seen it, extinguished, not grasping at anything in the world?' .1.

"मूलं पपञ्चसङ्खाय, (इति भगवा) मन्ता अस्मी ति सब्बमुपरुन्धे ।
या काचि तण्हा अज्झत्तं, तासं विनया सदा सतो सिक्खे॥4/14/2॥

"Mūlaṃ papañcasaṅkhāya, (iti bhagavā) Mantā asmī ti sabbamuparundhe;
Yā kāci taṇhā ajjhattaṃ, Tāsaṃ vinayā sadā sato sikkhe.॥2॥

"मूलं प्रपञ्चमाख्याय, (इति भगवान्) मत्वा अस्मीति सर्वमुपरुन्ध्यात् ।
याः काश्चित् तृष्णा अध्यात्मम्, तासां विनयेन सदा स्मृतः शिक्षेत्॥2॥

भगवान् –सारे प्रपंचों की जड़ अहंकार को समझकर सब तरह से उसका अन्त कर दे । जो कुछ भी तृष्णायें भीतर हैं, उनसे रहित होने के लिए सदा स्मृतिमान् हो अभ्यास करें॥2॥

'Let him completely cut off the root of what is called papañca' delusion, thinking "I am wisdom;" —so said Bhagavān,—' all the cravings that arise inwardly, let him learn to subdue them, always being thoughtful.2.

"यं किञ्चि धम्ममभिजञ्ञा, अज्झत्तं अथवा पि बहिद्धा।
न तेन थामं कुब्बेथ, न हि सा निब्बुति सताम् वुत्ता॥4/14/3॥

"Yaṃ kiñci dhammamabhijaññā, ajjhattaṃ athavā pi bahiddhā;
Na tena thāmaṃ kubbetha, na hi sā nibbuti sataṃ vuttā.॥3॥

"यत्किञ्चिद् धर्ममभिजानीयात्, अध्यात्मथवाऽपि बहिर्धा ।
न तेन स्थामं (स्थैर्यं) कुर्यात्, न हि सा निवृत्तिः सद्भिरुक्ता॥3॥

भीतर या बाहर के जिस किसी धर्म को जाने, उससे अभिमान न करे, सन्त लोग उसे शान्ति नहीं कहते॥3॥

'Let him learn every Dhamma inwardly or outwardly; let him not therefore be proud, for that is not called bliss by the good.3.

"सेय्यो न तेन मञ्ञेय्य, नीचेय्यो' अथवा पि सरिक्खो।
फुट्ठो अनेकरूपेहि, नातुमानं विकप्पयं तिट्ठे॥4/14/4॥

"Seyyo na tena maññeyya, nīceyyo athavā pi sarikkho;
Phuṭṭho anekarūpehi, nātumānaṃ vikappayaṃ tiṭṭhe.॥4॥

"श्रेयो न तस्मान्मन्येत्, नीचतरोऽथवाऽपि सदृक्षः ।
स्पृष्टोऽनेकरुपैः, नात्मानं विकल्पे तिष्ठेत्॥4॥

उसके कारण न दूसरे से अपने को श्रेष्ठ समझे, न नीच और न समान । अनेक प्रकार का स्पर्श पाकर भी अपने को विकल्प में न डालें॥4॥

'Let him not therefore think himself better than others or low or equal to others; questioned by different people, let him not adorn himself.4.

•नीचेय्य=नीच शब्द पालि के सेय्य=श्रेयस् के समानान्तर प्रतीत होता है। अर्थ की दृष्टि से नीचतर होगा।

"अज्झत्तमेवुपसमे , न अञ्ञतो भिक्खु सन्तिमेसेय्य।
अज्झत्तं उपसन्तस्स, नत्थि अत्ता कुतो निरत्ता वा॥4/14/5॥

"Ajjhattamevupasame , na aññato bhikkhu santimeseyya;
Ajjhattaṃ upasantassa, natthi attā kuto nirattā vā.॥5॥

"अध्यात्ममेवमुपशाम्येत्, नान्यत: भिक्षु: शान्तिमिच्छेत् ।
अध्यात्मम् उपशान्तस्य, नास्ति आत्मा कुतो निरात्मा वा॥5॥

अपने भीतर शान्त रहे । भिक्षु दूसरे उपाय से शान्ति की खोज न करे । जो भीतर से शान्त है उसमें अपनत्व नहीं है, फिर परत्व कहाँ ?॥5॥

'Let the Bhikkhu be appeased inwardly, let him not seek peace from any other quarter; for him who is inwardly appeased there is nothing grasped or rejected.5.

"मज्झे यथा समुद्दस्स, ऊमि नो जायती ठितो होति।
एवं ठितो अनेजस्स, उस्सदं भिक्खु न करेय्य कुहिञ्चि"॥4/14/6॥

"Majjhe yathā samuddassa, ūmi no jāyatī ṭhito hoti;
Evaṃ ṭhito anejassa, ussadaṃ bhikkhu na kareyya kuhiñci".॥6॥

"मध्ये यथा समुद्रस्य, ऊर्मि: न जायते स्थितो भवति ।
एवं स्थितोऽनेज: स उत्सदं भिक्षु: न कुर्यात् कुहिञ्चित्"॥6॥

जैसे समुद्र के बीच में लहर उठती, प्रत्युत् स्थिरता बनी रहती है, वैसे ही स्थिर, चंचलता रहित भिक्षु कहीं तृष्णा न करें॥6॥

'As in the middle (depth) of the sea no wave is born, but as it remains still , so let the Bhikkhu be still', without desire, let him not desire anything whatever.' 6.

"अकित्तयी विवटचक्खु, सक्खिधम्मं परिस्सयविनयं।
पटिपदं वदेहि भद्दन्ते, पातिमोक्खं अथवा पि समाधिं"॥4/14/7॥

"Akittayī vivaṭacakkhu, sakkhidhammaṃ parissayavinayaṃ;
Paṭipadaṃ vadehi bhaddante, pātimokkhaṃ athavā pi samādhiṃ".॥7॥

"अकीर्तयद् विवृतचक्षो ! साक्षिधर्मं परिश्रयविनयाय ।
प्रतिपदं वदे: भद्रं ते, प्रातिमोक्षम् अथवाऽपि समाधिम्"॥7॥

देवता –खुले नेत्र वाले ! आपने बाधाओं को दूर करने के लिए साक्षात् धर्म बताया है । अपनी भद्र प्रतिपदा को बतावें जो कि प्रातिमोक्ष या समाधि कहलाता है॥7॥

He with open eyes expounded clearly the Dhamma that removes all dangers; tell now the religious practices; the precepts or contemlation.7.

"चक्खूहि नेव लोलस्स, गामकथाय आवरये सोतं।
रसे च नानुगिज्झेय्य, न च ममायेथ किञ्चि लोकस्मिं॥4/14/8॥

"Cakkhūhi neva lolassa, gāmakathāya āvaraye sotaṃ;
Rase ca nānugijjheyya, na ca mamāyetha kiñci lokasmiṃ.॥8॥

"चक्षुर्भि: नैव लोलोऽस्य, ग्राम्यकथया अवृणुयात् श्रोत्रम् ।
रसं च नानुगृध्येत्, न च ममायेत किञ्चिल्लोके॥8॥

भगवान् – चक्षु के विषय में लोलुप न हो । ग्राम्य कथाओं से कान को बन्द कर लें । स्वाद की लोलुपता न करे और न संसार में कुछ अपनाये॥8॥

Bhagavān: 'Let him not be greedy with his eyes, let him keep his ears from the talk of the town, let him not be greedy after sweet things, and let him not desire anything in the world.8.

"फस्सेन यदा फुट्ठस्स, परिदेवं भिक्खु न करेय्य कुहिञ्चि।
भवं च नाभिजप्पेय्य, भेरवेसु च न सम्पवेधेय्य॥4/14/9॥

"Phassena yadā phuṭṭhassa, paridevaṃ bhikkhu na kareyya kuhiñcñcci;
Bhavaṃ ca nābhijappeyya, bheravesu ca na sampavedheyya.॥9॥

"स्पृष्टस्य यदा स्फुटस्य, परिदेवनं भिक्षु: न कुर्यात् कुहिञ्चित् ।
भवञ्च नाभिजल्पेत्, भैरवेभ्यश्च न सम्प्रवेपेत॥9॥

दु:खद स्पर्श होने पर भी भिक्षु कहीं भी विलाप न करे। भव की तृष्णा न करे और भयानकता से कम्पित न हो॥9॥

'When he is touched by the touch of illness, let the Bhikkhu not lament, and let him not wish for existence anywhere, and let him not tremble at dangers.9.

"अन्नानमथो पानानं, खादनीयानं अथो पि वत्थानं।
लद्धा न सन्निधिं कयिरा, न च परित्तसे तानि अलभमानो॥4/14/10॥

"Annānamatho pānānaṃ, khādanīyānaṃ atho pi vatthānaṃ;
Laddhā na sannidhiṃ kayirā, na ca parittase tāni alabhamāno.॥10॥

"अन्नानामथ पानानाम्, खादनीयानामथापि वस्त्राणाम् ।
लब्ध्वा न सन्निधिं कुर्यात्, न च परित्रसेत् तानि अलभमान:॥10॥

अन्न अथवा पेय, खाद्य अथवा वस्त्र के मिलने पर उनका संग्रह न करे । उनके न मिलने पर चिन्ता न करें॥10॥

'Having obtained boiled rice and drink, solid food and clothes, let him not store up these things, and let him not be anxious, if he does not get them.10.

"झायी न पादलोलस्स, विरमे कुक्कुच्चा नप्पमज्जेय्य।
अथासनेसु सयनेसु, अप्पसद्देसु भिक्खु विहरेय्य॥4/14/11॥

"Jhāyī na pādalolassa, virame kukkuccā nappamajjeyya;
Athāsanesu sayanesu, appasaddesu bhikkhu vihareyya.॥11॥

"ध्यायी न पादलोल: स्यात्, विरमेत् कौकृत्यात् न अप्रमाद्येत् ।
अथ आसनेषु शयनेषु, अल्पशब्देषु भिक्षु: विहरेत्॥11॥

ध्यानी बने, घुमक्कड़ न बने, कौकृत्य (सन्देह) से विरत रहें, प्रमाद न करे । भिक्षु शोर न होने वाले आसनों और शय्याओं में विहार करे॥11॥

'Let him be meditative, not prying, let him abstain, from misbehaviour , let him not be indolent, let the Bhikkhu live in his quiet dwelling. 11.

"निद्दं न बहुलीकरेय्य, जागरियं भजेय्य आतापी।
तन्दिं मायं हस्सं खिड्डं, मेथुनं विप्पजहे सविभूसं॥4/14/12॥

"Niddaṃ na bahulīkareyya, jāgariyaṃ bhajeyya ātāpī;
Tandiṃ māyaṃ hassaṃ khiḍḍaṃ, methunaṃ vippajahe savibhūsaṃ.॥12॥

"निद्रां न बहुलीकुर्यात्, जागरणं भजेत् आतापी।
तन्द्रां मायां हास्यं क्रीडाम्, मैथुनं विप्रजह्यात् सविभूषणम्॥12॥

बहुत निद्रालु न हो, उद्योगी बन जागरणशील बने । तन्द्रा, माया, हँसी-मजाक, क्रीड़ा, मैथुन और श्रृंगार को त्याग दे॥12॥

'Let him not sleep too much, let him apply himself ardently to watching, let him abandon sloth, deceit, laughter, sport, sexual pleasure and adornment.

"आथब्बणं सुपिनं •लक्खणं, नो विदहे अथो पि नक्खत्तं।
विरुतं च गब्भकरणं, तिकिच्छं मामको न सेवेय्य॥4/14/13॥

"Āthabbaṇaṃ supinaṃ lakkhaṇaṃ, no vidahe atho pi nakkhattaṃ;
Virutaṃ ca gabbhakaraṇaṃ, tikicchaṃ māmako na seveyya.॥13॥

"आथर्वणं स्वप्नं लक्षणम्, नो विदहेत् अथापि नक्षत्रम् ।
विरुतञ्च गर्भकरणम्, चिकित्सां मामको न सेवेत॥13॥

तन्त्र-मन्त्र, स्वप्न-विचार, लक्षण-देखना और नक्षत्रों के विश्वास को त्याग दे । पशु-पक्षियों की बोली को सुनकर बतलाना, गर्भ धारण कराना, चिकित्सा करना –श्रद्धालु भिक्षु इन सबका अभ्यास न करे॥13॥

'Let him not apply himself to practising the Athabbana, to the interpretation of sleep and signs, nor to astrology; let not my follower devote himself to interpreting the cry of birds, to causing impregnation, nor to the art of medicine.13.

•सुपिन= स्वप्नशास्त्रम्

"निन्दाय नप्पवेधेय्य, न उण्णमेय्य पसंसितो भिक्खु।
लोभं सह मच्छरियेन, कोधं पेसुणियं च पनुदेय्य॥4/14/14॥

"Nindāya nappavedheyya, na uṇṇameyya pasaṃsito bhikkhu;
Lobhaṃ saha macchariyena, kodhaṃ pesuṇiyaṃ ca panudeyya.॥14॥

"निन्दया नाप्रवेधेत, नोन्नमेत् प्रशंसितो भिक्षु: ।
लोभं सह मात्सर्येण, क्रोधं पैशुनञ्च अपनुदेत्॥14॥

भिक्षु निन्दा से विचलित न हो, प्रशंसा से न फूले और लोभ, कंजूसी, क्रोध तथा चुगली को त्याग दे॥14॥

'Let the Bhikkhu not tremble at blame, nor puff himself up when praised; let him drive off covetousness together with avarice, anger and slander.14.

"कयविक्कये न तिट्ठेय्य, उपवादं भिक्खु न करेय्य कुहिञ्चि।
गामे च नाभिसज्जेय्य, लाभकम्या जनं न लपयेय्य॥4/14/15॥

"Kayavikkaye na tiṭṭheyya, upavādaṃ bhikkhu na kareyya kuhiñci;
Gāme ca nābhisajjeyya, lābhakamyā janaṃ na lapayeyya.॥15॥

क्रय-विक्रये न तिष्ठेत्, उपवादं भिक्षु: न कुर्यात् कुहिञ्चित् ।
ग्रामे च नाभिसजेत्, लाभकाम्या जनं न लपेत्॥1॥

भिक्षु क्रय-विक्रय में न लगे । कहीं किसी को दोष न दें । गाँव में किसी को गाली न दे और लाभ की इच्छा से लोगों से न बोले॥15॥

'Let the Bhikkhu not be engaged in purchase and sale, let him not blame others in anything, let him not scold in the village, let him not from love of gain speak to people.15.

"न च कत्थिता सिया भिक्खु, न च वाचं पयुत्तं भासेय्य।
पागब्भियं न सिक्खेय्य, कथं विग्गाहिकं न कथयेय्य॥4/14/16॥

"Na ca katthitā siyā bhikkhu, na ca vācaṃ payuttaṃ bhāseyya;
Pāgabbhiyaṃ na sikkheyya, kathaṃ viggāhikaṃ na kathayeyya.॥16॥

"न च कत्थ्यिता स्यात् भिक्षु:, न च वाचं प्रयुतं भाषेत ।
प्रगल्भ्यं न शिक्षेत, कथं न विग्राहकं न कथयेत्॥16॥

भिक्षु अपनी प्रशंसा करने वाला न बने, स्वार्थ की बात न करे, उद्दण्ड (प्रगल्भ) न हो और झगड़े-लड़ाई की बात न करे॥16॥

'Let not the Bhikkhu be a boaster and let him not speak coherent' language; let him not learn pride, let him not speak quarrelsome language. 16.

"मोसवज्जे न नीयेथ, सम्पजानो सठानि न कयिरा।
अथ जीवितेन पञ्ञाय, सीलब्बतेन नाञ्ञमतिमञ्ञे॥4/14/17॥

"Mosavajje na nīyetha, sampajāno saṭhāni na kayirā;
Atha jīvitena paññāya, sīlabbatena nāññamatimaññe.॥17॥

"मोषवद्यं• न नयेत्, सम्प्रजान: शाठ्यानि न कुर्यात् ।
अथ जीवितेन प्रज्ञया, शीलव्रतेन नान्यमति: मन्येत॥17॥

असत्य भाषण न करे, जान-बूझ कर शठता न करे, फिर जीविका, प्रज्ञा, शील-व्रत के विषय में दूसरे का अनादर न करे॥17॥

'Let him not be led into falsehood, let him not consciously do wicked things; and with respect to livelihood, understanding, virtue and holy works let him not despise others.17.

• मृषोद्यम्= अट्ठकथा के अनुसार मोसवज्ज का अर्थ मृषावाद है।

"सुत्वा रुसितो बहुं वाचं, समणानं वा पुथुजनानं ।
फरुसेन ने न पटिवज्जा, न हि सन्तो पटिसेनिकरोन्ति॥4/14/18॥

"Sutvā rusito bahuṃ vācaṃ, samaṇānaṃ vā puthujanānaṃ;
Pharusena ne na paṭivajjā, na hi santo paṭisenikaronti.॥18॥

"श्रुत्वा रुषितो बहु वाचम्, श्रमणानां वा पृथग्जनानाम् ।
परुषेन तान् न प्रतिवदेयुः, न हि सन्ता: प्रतिसेनीकुर्वन्ति॥18॥

बहुभाषी श्रमणों की दोषयुक्त बहुत-सी बातों को सुनकर उनको कठोर जवाब न दे, सन्त लोग प्रतिहिंसक नहीं होते॥18॥

'Having heard much talk from much-talking Sramaṇas let him not irritated answer them with harsh language; for the good do not thwart (Patisenikaronti) others.18.

"एतं च धम्ममञ्ञाय, विचिनं भिक्खु सदा सतो सिक्खे।
सन्ती ति निब्बुतिं ञत्वा, सासने गोतमस्स न पमज्जेय्य॥4/14/19॥

"Etaṃ ca dhammamaññāya, vicinaṃ bhikkhu sadā sato sikkhe;
Santī ti nibbutiṃ ñatvā, sāsane gotamassa na pamajjeyya.॥19॥

"एतञ्च धर्ममाज्ञाय, विचिन्वन् भिक्षु: सदा स्मृत: शिक्षेत ।
सन्तिरिति निवृत्तिं ज्ञात्वा, शासने *गौतमस्य* न प्रमाद्येत्॥19॥

इस धर्म को जानकर विवेकी भिक्षु सदा स्मृतिमान् रहने का अभ्यास करे, निर्वाण की शान्ति जानकर गौतम की शिक्षा में प्रमाद न करे॥19॥

'Having understood this Dhamma, let the investigating and always thoughtful Bhikkhu learn; having conceived bliss to consist in peace, let him not be indolent in Gotama's commandments.19.

"अभिभू हि सो अनभिभूतो, सक्खिधम्ममनीतिहमदस्सी।
तस्मा हि तस्स भगवतो सासने, अप्पमत्तो सदा नमस्समनुसिक्खे"ति॥4/14/20॥

"Abhibhū hi so anabhibhūto, sakkhidhammamanītihamadassī;
Tasmā hi tassa bhagavato sāsane, appamatto sadā namassamanusikkhe"ti.॥20॥

"अभिभू: हि सोऽनभिभूत:, साक्षिधर्ममनितिहमद्राक्षीत् ।
तस्माद्धि तस्य भगवत: शासने, अप्रमत्त: सदा नमन् अनुशिक्षेत" इति॥20॥

उन विजयी ने अजेय हो धर्म को साक्षात् जान लिया है, इसलिए अप्रमत्त हो उन भगवान् की शिक्षा का सावधानीपूर्वक अभ्यास करें॥20॥

'For he a conqueror unconquered saw the Dhamma visibly, without any traditional instruction; therefore let him learn, heedful in his Bhagavān's, commandments, and always worshipping.' 20.

तुवटकसुत्तं निट्ठितं
(Tuvaṭakasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 15) अत्तदण्डसुत्तं (Attadaṇḍasuttaṃ)

"अत्तदण्डा भयं जातं, जनं पस्सथ मेधगं।
संवेगं कित्तयिस्सामि, यथा संविजितं मया॥4/15/1॥

"Attadaṇḍā bhayaṃ jātaṃ, janaṃ passatha medhagaṃ;
Saṃvegaṃ kittayissāmi, yathā saṃvijitaṃ mayā.॥1॥

"आत्मदण्डाद् भयं जातम्, जनं पश्यत मेधगम् ।
संवेगं कीर्तयिष्यामि, यथा संविजितं मया॥1॥

अपने दुष्कर्म से ही भय उत्पन्न होता है, कलह करते हुए लोगों को देखो । मैं संवेग की बात कहूँगा, जैसा मुझे संवेग (विरक्ति) प्राप्त हुआ था॥1॥

From a stick seized fear arises. Look at people killing each other; I will tell of grief as it is known to me'.1.

"फन्दमानं पजं दिस्वा, मच्छे अप्पोदके यथा।
अञ्ञमञ्ञेहि ब्यारुद्धे, दिस्वा मं भयमाविसि॥4/15/2॥

"Phandamānaṃ pajaṃ disvā, macche appodake yathā;
Aññamaññehi byāruddhe, disvā maṃ bhayamāvisi.॥2॥

"स्यन्दमानां प्रजां दृष्ट्वा, मत्स्या अल्पोदके यथा ।
अन्यान्येभ्यो व्यारोधम्, दृष्ट्वा मां भयमविक्षत्॥2॥

जैसे थोड़े जल में मछलियाँ तड़फड़ाती हैं, वैसे ही लोगों को तड़फड़ाते हुए एक-दूसरे के विरुद्ध लोगों को देख मुझे भय हो आया॥2॥

Seeing people struggling like fish in a pond with little water, seeing them obstructed by each other, a fear came over me. 2.

"समन्तमसारो लोको, दिसा सब्बा समेरिता।
इच्छं भवनमत्तनो, नाद्दसासिं अनोसितं॥4/15/3॥

"Samantamasāro loko, disā sabbā sameritā;
Icchaṃ bhavanamattano, nāddasāsiṃ anositaṃ.॥3॥

"समन्तमसारो लोकः, सर्वा: दिशा: समेरिता: ।
इच्छन् भवनमात्मनः, नाद्राक्षम् अनुषितम्॥3॥

सारा संसार असार है, सभी दिशायें विचलित हैं । अपने लिए कल्याणकर स्थान को चाहते हुए मैंने कहीं भी आपत्तियों से खाली नहीं पाया॥3॥

The world is completely unsubstantial, all quarters are shaken; wishing for a house for myself I did not see one uninhabited.3.

"ओसानेत्वेव ब्यारुद्धे, दिस्वा मे अरती अहु ।
अथेत्थ सल्लमद्दक्खिं, दुद्दसं हदयनिस्सितं॥4/15/4॥

"Osānetveva byāruddhe, disvā me aratī ahu;
Athettha sallamaddakkhiṃ, duddasaṃ hadayanissitaṃ.॥4॥

"अवसाने त्वेव व्यारोधम्, दृष्ट्वा मेऽरतिरभूत् ।
अथात्र शल्यमद्राक्षम्, दुर्दृश्यं हृदयनि:श्रितम्॥4॥

अन्त में सर्वत्र विरोधभाव को देख मुझे वैराग्य हुआ । तब मैंने यहाँ देखने में दुर्दृश्य हृदय में चुभे काँटे को देखा॥4॥

But having seen all beings in the end obstructed, discontent arose in me; then I saw in this world an arrow, difficult to see, stuck in the heart.4.

"येन सल्लेन ओतिण्णो, दिसा सब्बा विधावति।
तमेव सल्लमब्बुय्ह, न धावति न सीदति॥4/15/5॥

"Yena sallena otiṇṇo, disā sabbā vidhāvati;
Tameva sallamabbuyha, na dhāvati na sīdati.॥5॥

"येन शल्येन अवतीर्ण:, दिशासु सर्वासु विधावति ।
तमेव शल्यमवोह्य, न धावति न सीदति॥5॥

जिस काँटे के चुभने से व्यक्ति सभी दिशाओं में दौड़ता है, उसी काँटे को निकाल कर न दौड़ता है और न दु:खी होता है॥5॥

He who has been pierced by this arrow runs through all quarters; but having drawn out that arrow, he will not run, he will sit down quietly.5.

"तत्थ सिक्खानुगीयन्ति, यानि लोके गधितानि न तेसु पसुतो सिया ।
निब्बिज्झ सब्बसो कामे, सिक्खे निब्बानमत्तनो॥4/15/6॥

"Tattha sikkhānugīyanti, yāni loke gadhitāni;
Na tesu pasuto siyā, nibbijjha sabbaso kāme; Sikkhe nibbānamattano.॥6॥

"तत्र शिक्षामनुगीयन्ते, या: लोके ग्रथिता: न तासु प्रसृत: स्यात् ।
निर्विध्य सर्वश: कामान्, शिक्षेत निर्वाणमात्मन:॥6॥

यहाँ संसार में आसक्तिजनक बहुत-सी शिक्षायें दी जाती हैं, उनमें न लगे । सर्वथा कामनाओं की ओर से उदास हो अपनी मुक्ति के लिए अभ्यास करे॥6॥

There many studies are gone through; what is tied in the world let him not apply himself to it; having wholly transfixed desire, let him learn his own extinction nibbana.6.

"सच्चो सिया अप्पगब्भो, अमायो रित्तपेसुणो।
अक्कोधनो लोभपापं, वेविच्छं विचरे मुनि॥4/15/7॥

"Sacco siyā appagabbho, amāyo rittapesuṇo;
Akkodhano lobhapāpaṃ, vevicchaṃ vitare muni.॥7॥

"सत्य: स्यात् अप्रगल्भ:, अमायो रिक्तपैशुन: ।
अक्रोधनोऽलोभपापवेविच्छं विचरेत् मुनि:॥7॥

मुनि सत्यवादी हो, उद्दण्ड न हो, मायावी न हो, चुगलखोर न हो, क्रोध, लोभ, पाप तथा कंजूसी रहित हो विचरण करे॥7॥

Let the Muni be truthful, without arrogance, undeceitful, free from slander, not angry, let him overcome avarice. 7.

"निद्दं तन्दिं सहे थीनं, पमादेन न संवसे।
अतिमाने न तिट्ठेय्य, निब्बानमनसो नरो॥4/15/8॥

"Niddaṃ tandiṃ sahe thīnaṃ, pamādena na saṃvase;
Atimāne na tiṭṭheyya, nibbānamanaso naro.॥8॥

"निद्रां तन्द्रां सहेत् स्त्यानम्, प्रमादेन न संवसेत् ।
अतिमाने न तिष्ठेत्, निर्वाणमनम् स नर:॥8॥

निर्वाण चाहने वाला व्यक्ति निद्रा, तन्द्रा तथा आलस्य को जीते, प्रमाद में न रहे, अभिमान में न पड़े।

Let the man who has turned his mind to Nibbana conquer sleepiness, drowsiness and sloth; let him not live together with indolence, let him not indulge in conceit.8.

"मोसवज्जे न नीयेथ, रूपे स्नेहं न कुब्बये ।
मानं च परिजानेय्य, साहसा विरतो चरे॥4/15/9॥

"Mosavajje na nīyetha, rūpe snehaṃ na kubbaye;
Mānaṃ ca parijāneyya, sāhasā virato care.॥9॥

"मोषवद्ये न नयेत्, रूपे स्नेहं न कुर्यात् ।
मानञ्च परिजानीयात्, साहसाद् विरतश्चरेत्॥9॥

असत्य भाषण न करें, रूप में स्नेह न करें, मान को त्याग दे, साहसपूर्वक विरत हो विचरण करे॥9॥

Let him not be led into falsehood, let him not turn his affection to form; let him penetrate arrogance, let him wander abstaining from violence.9.

"पुराणं नाभिनन्देय्य, नवे खन्तिं न कुब्बये।
हिय्यमाने न सोचेय्य, आकासं* न सितो सिया॥4/15/10॥

"Purāṇaṃ nābhinandeyya, nave khantiṃ na kubbaye;
Hiyyamāne na soceyya, ākāsaṃ na sito siyā.॥10॥

"पुराणं नाभिनन्देत्, नवान् क्षान्तिं न कुर्यात् ।
हीयमानं न शोचेत्, आकाशे न श्रित: स्यात्॥10॥

पुराने का अभिनन्दन न करे, नये की चाह न करे, खोये की चिन्ता न करे और तृष्णा (आकाश) में लिप्त न हो॥10॥

Let him not delight in what is old, let him not bear with what is new, let him not grieve for what is lost, let him not give himself up to desire'. 10.

* आकाससंखातं तण्हं ।

"गेधं ब्रूमि महोघो ति, आजवं ब्रूमि जप्पनं।
आरम्मणं पकप्पनं, कामपङ्को दुरच्चयो॥4/15/11॥

"Gedhaṃ brūmi mahogho ti, ājavaṃ brūmi jappanaṃ;
Ārammaṇaṃ pakappanaṃ, kāmapaṅko duraccayo.॥11॥

"गृध्नं ब्रवीमि महौघमिति, आर्जवं ब्रवीमि जल्पनम् ।
आलम्बनं प्रकल्पनम्, कामपङ्को दुरत्यय:॥11॥

मैं लोभ को बड़ी बाढ़, आसक्ति को बकवास कहता हूँ, आलम्बन कम्पन और कामभोगरूप पंक दुस्तर है॥11॥

This desire I call greed, the great stream, I call precipitation, craving, a trouble, a bog of lust difficult to cross. 11.

"सच्चा अवोक्कम्म मुनि, थले तिट्ठति ब्राह्मणो।
सब्बं सो पटिनिस्सज्ज, स वे सन्तो ति वुच्चति॥4/15/12॥

"Saccā avokkamma muni, thale tiṭṭhati brāhmaṇo;
Sabbaṃ so paṭinissajja, sa ve santo ti vuccati.॥12॥

"सत्यान्नावक्रम्य मुनिः, स्थले तिष्ठति ब्राह्मणः।
सर्वं स प्रतिनिसज्य, स वै सन्त इत्युच्यते॥12॥

श्रेष्ठ मुनि सत्य से न हटकर निर्वाण रूपी स्थल पर स्थित है। सर्वत्यागी वह अवश्य शान्त कहलाता है॥121।

The Muni who without deviating from truth stands fast on the firm ground of Nibbana, being a Brāhmaṇa, he, having forsaken everything, is indeed called calm. 12.

"स वे विद्वा स वेदगू, ञत्वा धम्मं अनिस्सितो।
सम्मा सो लोके इरियानो, न पिहेतीध कस्सचि॥4/15/13॥

"Sa ve vidvā sa vedagū, ñatvā dhammaṃ anissito;
Sammā so loke iriyāno, na pihetīdha kassaci.॥13॥

"स वै विद्वान् स वेदगः, ज्ञात्वा धर्मम् अनिःश्रितः ।
सम्यक् स लोके ईरमाणः, न स्पृहयतीह कस्मैचित्॥13॥

वही विद्वान् है, वही ज्ञानी है, जो धर्म को जानकर अनासक्त हो किसी की स्पृहा न करता हुआ सम्यक् रूप से लोक में विचरण करता है॥13॥

He indeed is wise, he is accomplished, having understood the Dhamma independent of everything; wandering rightly in the world he does not envy any one here.13.

"योध कामे अच्चतरि, सङ्गं लोके दुरच्चयं।
न सो सोचति नाज्झेति, छिन्नसोतो अबन्धनो॥4/15/14॥

"Yodha kāme accatari, saṅgaṃ loke duraccayaṃ;
Na so socati nājjheti, chinnasoto abandhano.॥14॥

"य इह कामानत्यतारीत्, सङ्गं लोके दुरत्ययम् ।
न स शोचति नाध्येति, छिन्नस्रोतोऽबन्धनः॥14॥

जिसने यहाँ काम-भोगों को त्याग दिया है जो कि संसार में दुस्तर आसक्ति है, ऐसे सोते से कटा हुआ, बन्धन-रहित व्यक्ति न शोक करता है और न चिन्ता करता है॥14॥

Who soever has here overcome lust, a tie difficult to do away with in the world, he does not grieve, he does not covets, having cut off the stream, and being without bonds. 14.

"यं पुब्बे तं विसोसेहि, पच्छा ते माहु किञ्चनं।
मज्झे चे नो गहेस्ससि, उपसन्तो चरिस्ससि॥4/15/15॥

"Yaṃ pubbe taṃ visosehi, pacchā te māhu kiñcanaṃ;
Majjhe ce no gahessasi, upasanto carissasi.॥15॥

"यत् पूर्वे तं शोषयेः, पश्चात् त्वं मा स्याः किञ्चन ।
मध्ये चेत् नो गृहीष्यसि, उपसन्तः चरिष्यसि॥15॥

जो पूर्व की ही आसक्ति है उसे त्याग दो, पीछे तुम कुछ भी ग्रहण न करो, बीच में ग्रहण न करोगे उपशान्त होकर विचरण करोगे॥15॥

What is before thee, lay that aside; let there be nothing behind thee; if thou wilt not grasp after what is in the middle, thou wilt wander calm.15.

"सब्बसो नामरूपस्मिं, यस्स नत्थि ममायितं।
असता च न सोचति, स वे लोके न जीयति॥4/15/16॥

"Sabbaso nāmarūpasmiṃ, yassa natthi mamāyitaṃ;
Asatā ca na socati, sa ve loke na jīyati.॥16॥

"सर्वशो नामरूपे, यस्य नास्ति ममायितम् ।
असता च न शोचति, स वै लोके न जायते॥16॥

जिसे नाम और रूप में सर्वथा ही ममत्व नहीं है, न होने पर शोक नहीं करता, वही संसार में जन्म ग्रहण नहीं करता है॥16॥

The man who has no desire at all for name and form individuality and who does not grieve over what is no more, he indeed does not decay in the world'. 16.

"यस्स नत्थि इदं मेति, परेसं वा पि किञ्चनं।
ममत्तं सो असंविन्दं, नत्थि मेति न सोचति॥4/15/17॥

"Yassa natthi idaṃ meti, paresaṃ vā pi kiñcanaṃ;
Mamattaṃ so asaṃvindaṃ, natthi meti na socati.॥17॥

"यस्य नास्ति इदं ममेति, परेषां वाऽपि किञ्चन।
ममत्वे सोऽसंविदः, नास्ति ममेति न शोचति॥17॥

जिसे किसी वस्तु के विषय में "यह मेरा है" या "यह दूसरे का है" –ऐसा नहीं होता, ममत्व में न पड़ने वाला वह "मेरा नहीं है" – ऐसा शोक नहीं करता॥17॥

He who does not think, 'this is mine' and 'for others there is also something,' he, not having egotism, does not grieve at having nothing.17.

"अनिद्धुरी अननुगिद्धो, अनेजो सब्बधी समो।
तमानिसंसं पब्रूमि, पुच्छितो अविकम्पिनं॥4/15/18॥

"Aniṭṭhurī ananugiddho, anejo sabbadhī samo;
Tamānisaṃsaṃ pabrūmi, pucchito avikampinaṃ.॥18॥

"अनिष्ठुरोऽननुगृद्धः, अनेजः सर्वथा समः ।
तदनृशंसं प्रब्रवीमि, पृष्ठेऽविकम्पनम्॥18॥

अनिष्ठुरता, निर्लोभिता, वितृष्णा, सर्वत्र समता– इसे मैं, पूछने पर निर्भयता का सुपरिणाम बताता हूँ॥18॥

Not being harsh, not greedy, being without desire and being the same under all circumstances—that I call a good result, when asked about an undaunted man.18.

"अनेजस्स विजानतो, नत्थि काचि निसङ्खति॥
विरतो सो वियारब्भा, खेमं पस्सति सब्बधि॥4/15/19॥

"Anejassa vijānato, natthi kāci nisaṅkhati.
Virato so viyārabbhā, khemaṃ passati sabbadhi.॥19॥

"अनेजस्य विजानतः, नास्ति काचित् निःसंस्कृतिः।
विरतः स व्यारम्भात्, क्षेमं पश्यति सर्वथा॥19॥

तृष्णा रहित विज्ञ को कोई संस्कार नहीं होता । प्रयत्न से विरत वह सर्वत्र क्षेम देखता है॥19॥
For him who is free from desire, for the discerning man there is no Samkhara; abstaining from every sort of effort he sees happiness every here. 19.

"न समेसु न ओमेसु, न उस्सेसु वदते मुनि।
सन्तो सो वीतमच्छरो, नादेति न निरस्सती''ति॥4/15/20॥

"Na samesu na omesu, na ussesu vadate muni;
Santo so vītamaccharo, nādeti na nirassatī"ti.॥20॥

"न समेषु न अवेरषु, नोत्सेषु वदति मुनि: ।
सन्त: स वीतमत्सर:, नाददाति न निरस्यति" इति॥20॥

मुनि समानों, नीचों या श्रेष्ठों में अपने को नहीं बताता । शान्त, कंजूसी रहित वह न तो किसी को ग्रहण करता है, न छोड़ता है॥20॥
The Muni does not reckon himself amongst the plain, nor amongst the low, nor amongst the distinguished; being calm and free from avarice, he does not grasp after nor reject anything.20.

अत्तदण्डसुत्तं निट्ठितं
(Attadaṇḍasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

(4, 16) सारिपुत्तसुत्तं (Sāriputtasuttaṃ)

"न मे दिट्ठो इतो• पुब्बे, (इच्चायस्मा सारिपुत्तो) न सुतो उद कस्सचि।
एवं वग्गुवदो सत्था, तुसिता गणिमागतो* ॥4/16/1॥

"Na me diṭṭho ito pubbe, (iccāyasmā sāriputto) Na suto uda kassaci;
Evaṃ vagguvado satthā, Tusitā gaṇimāgato.॥1॥

"न मया दृष्ट इत: पूर्वम्, (इत्यायुष्मान् *सारिपुत्र:*) न श्रुत उत् कस्यचित्।
एवं वल्गुवद: शास्ता, तुषिताद् गणिमागत:॥1॥

सारिपुत्र– तुषित लोक से मनुष्य लोक में आए ऐसे मृदुभाषी शास्ता को मैंने आज से पहले नहीं देखा, न तो किसी से सुना ही था॥1॥
'Neither has before been seen by me,'—so said the venerable Sariputta,—' nor has any one heard of such a beautifully-speaking master, a teacher arrived from the Tusita heaven.1.

• इतो संङ्कस्सनगरे ओतरणतो पुब्बे ।

* तुसितकाया चवित्वा मातुकुच्छिं आगतता तुसिता आगतो, गणाचरियता गणि।

"सदेवकस्स लोकस्स, यथा दिस्सति चक्खुमा।
सब्बं तमं विनोदेत्वा, एको व रतिमज्झगा॥4/16/2॥

"Sadevakassa lokassa, yathā dissati cakkhumā;
Sabbaṃ tamaṃ vinodetvā, eko va ratimajjhagā.॥2॥

"सदेवकाय लोकाय, यथा दृश्यते चक्षुष्मान् ।
सर्वं तमो विनुद्य, एक एव रतिमध्यगात्॥2॥

देवताओं सहित लोक के लिए जैसे चक्षुष्मान् दिखाई देते हैं, सारे अन्धकार को दूर कर अकेले ही प्रव्रज्या सुख प्राप्त हो विचरण करते हैं॥2॥

'As he, the clearly-seeing, appears to the world of men and gods, after having dispelled all darkness, so he wanders alone in the midst of people. 2.

"तं बुद्धं असितं तादिं, अकुहं गणिमागतं।
बहूनमिध बद्धानं, अत्थि पञ्हेन आगमं॥4/16/3॥

"Taṃ buddhaṃ asitaṃ tādiṃ, akuhaṃ gaṇimāgataṃ;
Bahūnamidha baddhānaṃ, atthi pañhena āgamaṃ.॥3॥

"तं बुद्धमशितं *तादिम्*, अकुहकं गणिमागतम् ।
बहूनामिह बद्धानाम्, अस्ति प्रश्नेन आगमम्॥3॥

मनुष्यों के बीच अनासक्त, स्थिर, निष्कपट बुद्ध से बहुत से बद्ध प्राणियों की ओर से प्रश्न करने आया हूँ॥3॥

'To this Buddha, who is independent, unchanged, a guileless teacher, who has arrived in the world, I have come supplicatingly with a question from many who are bound in this world.3.

"भिक्खुनो विजिगुच्छतो, भजतो रित्तमासनं।
रुक्खमूलं सुसानं वा, पब्बतानं गुहासु वा॥4/16/4॥
"उच्चावचेसु सयनेसु, कीवन्तो तत्थ भेरवा।
येहि भिक्खु न वेधेय्य, निग्घोसे सयनासने॥4/16/5॥

"Bhikkhuno vijigucchato, bhajato rittamāsanaṃ;
Rukkhamūlaṃ susānaṃ vā, pabbatānaṃ guhāsu vā.॥4॥
"Uccāvacesu sayanesu, kīvanto tattha bheravā;
Yehi bhikkhu na vedheyya, nigghose sayanāsane.॥5॥

"भिक्षो: विजुगुप्सत:, भजतो रिक्तमासनम् ।
वृक्षमूले श्मशानं वा, पर्वतानां गुहासु वा॥4॥
"उच्चावचेषु शयनेषु कियन्ता: तत्र भैरवा: ।
येभ्यो भिक्षु: न विध्येत्, निर्घोषे शयनासने॥5॥

वृक्षमूलों, श्मशानों, पर्वतों की गुफाओं में एकान्त चित्त का अभ्यास करने वाले अनासक्त भिक्षु को विविधस्थानों में कितने भयजनक शब्द सुनाई देते हैं, जिनसे कि एकान्त स्थान में रहने वाला भिक्षु कम्पित न हो॥4-5॥

'To a Bhikkhu who is loath of the world and affects an isolated seat, the root of a tree or a cemetery, or who lives in the caves of the mountains, 'How many dangers are there not in these various dwelling-places at which the Bhikkhu does not tremble in his quiet dwelling.4-5.

"कती परिस्सया लोके, गच्छतो अमतं दिसं।
ये भिक्खु अभिसम्भवे, पन्तम्हि सयनासने॥4/16/6॥

"Katī parissayā loke, gacchato agataṃ disaṃ;
Ye bhikkhu abhisambhave, pantamhi sayanāsane.॥6॥

"कति परिश्रया: लोके, गच्छतोऽमृतं दिशम् ।
ये भिक्षुरभिसम्भवेत्, प्रान्ते शयनासने॥6॥

निर्वाण की ओर जानेवाली दिशा में कितनी बाधायें हैं जिनको भिक्षु एकान्त शयनासन में रहकर दूर करे॥6॥

'How many dangers are there not in the world for him who goes to the immortal region, which the Bhikkhu overcomes in his distant dwelling!.6.

"क्यास्स ब्यप्पथयो अस्सु, क्यास्सस्सु इध गोचरा।
कानि सीलब्बतानास्सु, पहितत्तस्स भिक्खुनो॥4/16/7॥

"Kyāssa byappathayo assu, kyāssassu idha gocarā;
Kāni sīlabbatānāssu, pahitattassa bhikkhuno.॥7॥

"केऽस्य वाक्पथा: स्यु:, क्वास्य स्युरिह गोचरा: ।
कानि शीलव्रतानि स्यु:, प्रहितत्त्वस्य भिक्षो:॥7॥

संयमी भिक्षु के वचन कैसे हों ? उसके गोचर (विचरण-भूमि) कौन-से हैं ? और शील-व्रत कौन-से हैं?॥7॥

'Which are his words, which are his objects in this world, which are the virtue and holy works of the energetic Bhikkhu? .7.

"कं सो सिक्खं समादाय, एकोदि निपको सतो।
कम्मारो रजतस्सेव, निद्धमे मलमत्तनो"॥4/16/8॥

"Kaṃ so sikkhaṃ samādāya, ekodi nipako sato;
Kammāro rajatasseva, niddhame malamattano".॥8॥

"कां स शिक्षां समादाय, एकदा निपक: स्मृत: ।
कर्मारो रजतस्येव, निध्मेत् मलमात्मन:॥8॥

एक स्थान पर एक अवधि वाला अपने चित्त को केन्द्रित करने वाला, ज्ञानी और स्मृतिमान् भिक्षु किस शिक्षा को ग्रहण कर सोनार के चाँदी साफ करने के समान अपने मलों को दूर करे ?॥8॥

'What study having devoted himself to, intent on one object , wise and thoughtful, can he blow off his own filth as the smith blows off that of the silver'?' .8.

"विजिगुच्छमानस्स यदिदं फासु, (सारिपुत्ता ति भगवा)
रित्तासनं सयनं सेवतो चे।
सम्बोधिकामस्स यथानुधम्मं, तं ते पवक्खामि यथा पजानं॥4/16/9॥

"Vijigucchamānassa yadidaṃ phāsu, (sāriputtā ti bhagavā)
Rittāsanaṃ sayanaṃ sevato ce;
Sambodhikāmassa yathānudhammaṃ,Taṃ te pavakkhāmi yathā pajānaṃ.॥9॥

"विजिगुप्समानस्य यदिदं *प्रासु*, (*सारिपुत्र* इति भगवान्)
रिक्तासनं शयनं सेवतश्चेत् ।
सम्बोधिकामाय यथानुधर्मम्, तं त्वां प्रवक्ष्यामि यथा प्रजानन्॥9॥

भगवान्– विरक्त-चित्त, एकान्त स्थान-सेवी, धर्मानुसार सम्बोधि की इच्छा करने वाले के लिए जो अनुकूल है, उसके विषय में अनुभव के अनुसार तुम्हें बताता हूँ॥9॥

'What is pleasant for him who is disgusted, O Sariputta,'—so said Bhagavān, —' if he cultivates a lonely dwelling-place, and loves perfect enlightenment in accordance with the Dhamma, that I will tell thee as I under-stand it.9.

"पञ्चन्नं धीरो भयानं न भाये, भिक्खु सतो सपरियन्तचारी।
डंसाधिपातानं• सरीसपानं, मनुस्सफस्सानं• चतुप्पदानं॥4/16/10॥

"Pañcannaṃ dhīro bhayānaṃ na bhāye, bhikkhu sato sapariyantacārī;
Ḍaṃsādhipātānaṃ sarīsapānaṃ, manussaphassānaṃ catuppadānaṃ.॥10॥

"पञ्चभ्यो धीरो भयेभ्यो न विभीयात्, भिक्षु: स्मृत: सपर्यन्तचारी।
दंशाधिपातेभ्य: सरीसृपेभ्य:, मनुष्यस्पर्शेभ्य: चतुष्पद्भ्यश्च॥10॥

धीर, स्मृतिमान्, निर्वाण पर्यन्त चरने वाला भिक्षु पाँच भयों से भयभीत न हो, डँसने से, सर्पों से, मनुष्यों के स्पर्श से और पशुओं से॥10॥

'Let not the wise and thoughtful Bhikkhu wandering on the borders' be afraid of the five dangers: gad-flies and all other flies, snakes, contact with evil men and quadrupeds.10.

• पिङ्गलका मक्खिकानं च सेसमक्खिकानं च । सेसमक्खिकाहि ततो ततो अधिपतित्वा खादन्ति, तस्मात् अधिपाता' ति दुच्चन्ति ।
• मनुस्सफस्सानं ति चोरादिफस्सानं ।

"परधम्मिकानं पि न सन्तसेय्य, दिस्वा पि तेसं बहुभेरवानि।
अथापरानि अभिसम्भवेय्य, परिस्सयानि कुसलानुएसी॥4/16/11॥

"Paradhammikānaṃ pi na santaseyya, disvā pi tesaṃ bahubheravāni;
Athāparāni abhisambhaveyya, parissayāni kusalānuesī.॥11॥

"परधार्मिकेभ्योऽपि न सन्त्रसेत्, दृष्ट्वापि तेषां बहुभैरवाणि।
अथापरानि अभिसम्भवेत्, परिश्रयाणि कुशलान्वेषी॥11॥

जो दूसरे धर्मावलम्बी हैं उनके बहुत से भयानक वेशों को देखकर न डरे । कुशल गवेषक दूसरी बाधाओं का भी सामना करे॥11॥

'Let him not be afraid of adversaries, even having seen many dangers from them; further he will overcome other dangers while seeking what is good.11.

"आतङ्कफस्सेन खुदाय फुट्ठो, सीतं अतुण्हं अधिवासयेय्य।
सो तेहि फुट्ठो बहुधा अनेको, वीरियं परक्कम्मदळ्हं करेय्य॥4/16/12॥

"Ātaṅkaphassena khudāya phuṭṭho, sītaṃ atuṇhaṃ adhivāsayeyya;
So tehi phuṭṭho bahudhā anoko, vīriyaṃ parakkammadaḷhaṃ kareyya.॥12॥

"आतङ्कस्पर्शेन क्षुधायै स्पृष्ट:, शीतमत्युष्णमधिवासयेत् ।
स तै: स्पृष्टो बहुधा अनेक:, वीर्यं पराक्रमदृढं च कुर्यात्॥12॥

रोग-पीड़ा,भूख-वेदना, शीत तथा अधिक गर्मी को सहे । वह अनेक प्रकार से पीड़ित हो, बेघर हो वीर्य तथा पराक्रम को दृढ़ करे॥12॥

'Touched by sickness and hunger let him endure cold and excessive heat, let him, touched by them in many ways and being houseless, make strong exertions.12.

"थेय्यं न कारे न मुसा भणेय्य, मेत्ताय फस्से तसथावरानि।
यदाविलत्तं मनसो विजञ्ञा, कण्हस्स पक्खो ति विनोदयेय्य॥4/16/13॥

"Theyyaṃ na kāre na musā bhaṇeyya, mettāya phasse tasathāvarāni;
Yadāvilattaṃ manaso vijaññā, kaṇhassa pakkho ti vinodayeyya.॥13॥

"स्तेयं न कुर्यान्न मृषा भणेत्, मैत्र्यै स्पृशेत् त्रसस्थावराणि ।
यदाविलं मनो विजानीयात्, कृष्णस्य पक्ष इति विनोदयेत्॥13॥

चोरी न करे, असत्य न बोले, दुर्बलों और सबलों के प्रति मैत्री करे । यदि मन को व्याकुल जाने तो उसे मार का पक्षपाती जानकर दूर करे॥13॥

Let him not commit theft, let him not speak falsely, let him touch friendly what is feeble or strong, what he acknowledges to be the agitation of the mind, let him drive that off as a partisan of Kanha. 13.

"कोधातिमानस्स वसं न गच्छे, मूलं पि तेसं पलिखञ्ञ तिट्ठे।
अथप्पियं वा पन अप्पियं वा, अद्धा भवन्तो अभिसम्भवेय्य॥4/16/14॥

"Kodhātimānassa vasaṃ na gacche, mūlaṃ pi tesaṃ palikhañña tiṭṭhe;
Athappiyaṃ vā pana appiyaṃ vā, addhā bhavanto abhisambhaveyya.॥14॥

"क्रोधातिमानस्य वशं न गच्छेत्, मूलमपि तेषां परिखन्य तिष्ठेत् ।
अथ प्रियं वा पुन: अप्रियं वा, अद्धा भवान् अभिसम्भवेत्॥14॥

क्रोध तथा अभिमान (अधिमान, अतिमान आदि) के वश में न आये, उनके मूल को उखाड़ दे । अवश्य वह प्रिय-अप्रिय दोनों को दूर करे॥14॥

'Let him not fall into the power of anger and arrogance; having dug up the root of these, let him live, and let him overcome both what is pleasant and what is unpleasant.14.

"पञ्ञं पुरक्खत्वा कल्याणपीति, विक्खम्भये तानि परिस्सयानि।
अरतिं सहेथ सयनं हि पन्ते, चतुरो सहेथ परिदेवधम्मे॥4/16/15॥

"Paññaṃ purakkhatvā kalyāṇapīti, vikkhambhaye tāni parissayāni;
Aratiṃ sahetha sayanaṃ hi pante, caturo sahetha paridevadhamme.॥15॥

"प्रज्ञां पुरस्कृत्य कल्याणप्रीति:, विखम्भयेत् तानि परिश्रयाणि ।
अरतिं सहेत शयने प्रान्ते, चतुस्सहेत् परिदेवधर्मे॥15॥

प्रज्ञापूर्वक कल्याणरत होकर उन बाधाओं को दूर करे । एकान्त स्थान में अरति पर विजय पा लें, चार विलाप की बातो पर विजय पा ले॥15॥

'Guided by wisdom, taking delight in what is good, let him scatter those dangers, let him overcome discontent in his distant dwelling, let him overcome the four causes of lamentation.15.

"किंसू असिस्सामि कुवं वा असिस्सं, दुक्खं वत सेत्थ क्वज्ज सेस्सं।
एते वितक्के परिदेवनेय्ये, विनयेथ सेखो अनिकेतचारी॥4/16/16॥

"Kiṃsū asissāmi kuvaṃ vā asissaṃ, dukkhaṃ vata settha kvajja sessaṃ;
Ete vitakke paridevaneyye, vinayetha sekho aniketacārī.॥16॥

"किंस्वित् अशिष्यामि कुत्र वा आश्नीयाम्, दु:खं वत शयित: क्वात्राद्य शयीय ।
एतान् वितर्कान् परिदेवनीयान्, विनयेत् शैक्ष्यमनिकेतचारी॥16 ।

क्या खाऊँगा ? कहाँ खाऊँ ? कल दु:खपूर्वक सोया था, आज कहाँ सोऊँ ? – विलाप करने वाले इन वितर्कों को बेघर हो विचरने वाला शैक्ष्य दूर करे॥16॥

'What shall I eat, or where shall I eat ?—he lay indeed uncomfortably last night—where shall I lie this night? let the Sekha who wanders about houseless subdue these lamentable doubts.16.
* नितण्हाचारी

"अन्नं च लद्धा वसनं च काले, मत्तं सो जञ्ञा इध तोसनत्थं।
सो तेसु गुत्तो यतचारि गामे, रुसितो पि वाचं फरुसं न वज्जा॥4/16/17॥

"Annaṃ ca laddhā vasanaṃ ca kāle, mattaṃ so jaññā idha tosanatthaṃ;
So tesu gutto yatacāri gāme, rusito pi vācaṃ pharusaṃ na vajjā.॥17॥

"अन्नञ्च लब्ध्वा वसनञ्च काले, मात्रं स जानीयात् इह तोषनार्थम् ।
स तेषु गुप्तो यतचारी ग्रामे, रुषितोऽपि वाचां परुषां न वद्या॥17॥

समय पर अन्न तथा वस्त्र पाकर वह वहाँ अपने सन्तोष की मात्रा को जान ले । वह उनके विषय में संयत हो, संयम से गाँव में विचरे । रुष्ट होने पर भी कठोर बात न करे॥17॥

'Having had in due time both food and clothes, let him know moderation in this world for the sake of happiness; guarded in these things and wandering restrained in the village let him, even irritated, not speak harsh words. 17.

"ओक्खित्तचक्खु न च पादलोलो, झानानुयुत्तो बहुजागरस्स।
उपेक्खमारब्भ समाहितत्तो, तक्कासयं कुक्कुच्चियूपछिन्दे॥4/16/18॥

"Okkhittacakkhu na ca pādalolo, jhānānuyutto bahujāgarassa;
Upekkhamārabbha samāhitatto, takkāsayaṃ kukkucciyūpachinde.॥18॥

"अवक्षिप्तचक्षु: न च पादलोल:, ध्यानानुयुक्तो बहुजागृत: ।
उपेक्षामारभ्य समाहितत्त्वात्, तर्काशयं कौकृत्यमुपछिन्द्यात्॥18॥

नीचे की हुई आँखें हो, घुमक्कड़ न हो, ध्यान में लीन और सदा जागरूक हो, उपेक्षक और एकाग्रचित्त हो, काम-भोग सम्बन्धी वितर्को और चंचलताओं को त्याग दे॥18॥

'Let him be with down-cast eyes and not prying, devoted to meditation, very watchful; having acquired equanimity let him with a composed mind cut off the seat of doubt and misbehaviour.18.

"चुदितो वचीभि सतिमाभिनन्दे, सब्रह्मचारीसु खिलं पभिन्दे।
वाचं पमुञ्चे कुसलं नातिवेलं, जनवादधम्माय न चेतयेय्य॥4/16/19॥

"Cudito vacībhi satimābhinande, sabrahmacārīsu khilaṃ pabhinde;
Vācaṃ pamuñce kusalaṃ nātivelaṃ, janavādadhammāya na cetayeyya.॥19॥

"चोदितो वचोभि: स्मृतिमभिनन्देत्, सब्रह्मचारिषु कीलं प्रभिन्देत् ।
वाचं प्रमुञ्चेत् कुशलं नातिवेलम्, जनवादधर्माय न चेतयेत्॥19॥

आचार्य आदि के वचनों द्वारा दोष दिखाये जाने पर स्मृतिमान् हो उन्हें स्वीकार करे, गुरुभाईयों के प्रति द्वेषभाव को त्याग दे, कल्याणकारी अनुकूल बात कहे, लोगों में विवाद उठाने की बात न सोचे॥19॥

'Urged on by words of his teachers let him be thoughtful and rejoice, let him break stubbornness in his fellow-students, let him utter propitious words and not unseasonable, let him not think detractingly of others.19.

"अथापरं पञ्च रजानि लोके, येसं सतीमा विनयाय सिक्खे।
रूपेसु सद्देसु अथो रसेसु, गन्धेसु फस्सेसु सहेथ रागं॥4/16/20॥

"Athāparaṃ pañca rajāni loke, yesaṃ satīmā vinayāya sikkhe;
Rūpesu saddesu atho rasesu, gandhesu phassesu sahetha rāgaṃ.॥20॥

"अथापरं पञ्च रजांसि लोके, येषां स्मृतिमान् विनयाय शिक्षेत।
रूपेषु शब्देषु अथ रसेषु, गन्धेषु स्पर्शेषु सहेत् रागम्॥20॥

संसार में जो पाँच रज हैं, उनसे दूर रहने का स्मृतिमान् अभ्यास करे । रूप, शब्द, रस, गन्ध और स्पर्श में राग पर विजय पा ले॥20॥

'And then the five impurities in the world, the subjection of which he must learn thoughtfully, —let him overcome passion for form, sound and taste, smell and touch.20.

"एतेसु धम्मेसु विनेय्य छन्दं, भिक्खु सतिमा सुविमुत्तचित्तो।
कालेन सो सम्मा धम्मं परिवीमंसमानो,
एकोदिभूतो विहने तमं सो"ति॥4/16/21॥

"Etesu dhammesu vineyya chandaṃ, bhikkhu satimā suvimuttacitto;
Kālena so sammā dhammaṃ parivīmaṃsamāno,
Ekodibhūto vihane tamaṃ so"ti.॥21॥

"एतेषु धर्मेषु विनीय छन्दः, भिक्षुः स्मृतिमान् सुविमुक्तचित्तः ।
कालेन स सम्यग् धर्मं परिमीमांसमानः,
एकाग्रभूतो विहन्यात् तमः सः" इति॥21॥

इन बातों में राग त्यागकर स्मृतिमान् और विमुक्त चित्त भिक्षु समय पर भली प्रकार धर्म का अनुशीलन कर, एकाग्रचित्त हो अन्धकार का नाश करे॥21॥

'Let the Bhikkhu subthie his wish for these Dhammas and be thoughtful and with his mind well liberated, then in time he will, reflecting upon Dhamma, and having become intent upon one object. destroy darkness.' So said Bhagavān. 21.

सारिपुत्तसुत्तं निट्ठितं
(Sāriputtasuttaṃ niṭṭhitaṃ)

अट्ठकवग्गो निट्ठितो
(Aṭṭhakavaggo Niṭṭhito)

तस्सुद्दानं – कामं गुहं च दुट्ठा च, सुद्धं च परमा जरा।
मेत्तेय्यो च पसूरो च, मागण्डिय पुराभेदनं॥
कलहं द्वे च ब्यूहानि, पुनदेव तुवट्टकं।
अत्तदण्डवरं सुत्तं, थेरपुट्ठेन सोळस।
इति एतानि सुत्तानि, सब्बानट्ठकवग्गिका ति॥

Tassuddānaṃ – Kāmaṃ guhaṃ ca duṭṭhā ca, suddhaṃ ca paramā jarā;
Metteyyo ca pasūro ca, māgaṇḍi purābhedanaṃ.
Kalahaṃ dve ca byūhāni, punadeva tuvaṭṭakaṃ;
Attadaṇḍavaraṃ suttaṃ, therapuṭṭhena soḷasa;
Iti etāni suttāni, sabbānaṭṭhakavaggikā ti.

तस्योद्दानम्– *कामं गुहञ्च दुट्ठं* च *शुद्धञ्च परमा जरा* ।
मैत्तेय्यश्च पसूरश्च *मागण्डिय: पुराभेदम्*॥
कलहं द्वौ च *व्यूहानि* पुनरेव *तुवट्टकम्*।
*अत्तदण्ड*वरं सुत्तं थेरपृष्टेन षोडशानि।
इति एतानि *सुत्तानि* सर्वाण्यट्ठकवर्गे इति॥

उद्दान=सुत्त-समुदाय – 1. कामसुत्त, 2. गुहट्ठकसुत्त, 3. दुट्ठट्ठकसुत्त, 4 सुद्धट्ठकसुत्त, 5. परमट्ठकसुत्त, 6. जरासुत्त, 7. तिस्समेतेय्यसुत्त, 8. पसूरसुत्त, 9. मागण्डियसुत्त, 10. पुराभेदसुत्त, 11. कलहविवादसुत्त, 12. चूळव्यूहसुत्त, 13. महाव्यूहसुत्त, 14. तुवटकसुत्त, 15. अत्तदण्डसुत्त, 16. सारिपुत्तसुत्त– ये सभी सुत्त अट्ठकवग्ग नाम में परिगणित हैं।

Group of Suttas of this Vagga- 1- Kāmsutta, Guhaṭṭhakasutta, 3. Duṭṭhaṭṭaka sutta, 4. Suddhṭṭhasutta, 5. Paramṭṭhakasutta, 6. Jarāsutta, 7. Tissametteyasutta, 8. Pasūrsutta, 9.Māgandiyasutta, 10. Purābhedasutta 11. Kalahavādasutta, 12. Cūlbyuhasutta, 13. Mahāvyuhasutta, 14, Tuvaṭhkasutta, 15. Alttadaṇḍasutta, 16. Sāriputtasutta- All these suttas are counted with the name of Aṭṭhakavagga.

***

5. पारायणवग्गो (Pārāyanavaggo)

(5.1) वत्थुगाथा (Vatthugāthā)

कोसलानं पुरा रम्मा, अगमा दक्खिणापथं।
आकिञ्चञ्ञं पत्थयानो, ब्राह्मणो मन्तपारगू॥5/1/1॥

Kosalānaṃ purā rammā, agamā dakkhiṇāpathaṃ;
Ākiñcaññaṃ patthayāno, brāhmaṇo mantapāragū.॥1॥

कोसलानां पुरात् रम्यात्, अगमत् *दक्षिणापथम्* ।
आकिञ्चन्यं प्रार्थयमाण:, ब्राह्मणो मन्त्रपारग:॥1॥

मंत्र पारंगत एक ब्राह्मण सर्वत्यागी होने की कामना से कोसल-जनपद के रम्य नगर (सावत्थी= श्रावस्ती) से दक्षिणापथ को गया॥1॥

From the beautiful city of the Kosalas Savatthi a Brāhmaṇa, well versed in the hymns, went to the South Dakkhinapatha wishing for nothingness'. 1.

सो अस्सकस्स विसये, अळकस्स समासने।
वसि गोधावरीकूले, उञ्छेन च फलेन च॥5/1/2॥

So assakassa visaye, aḷakassa samāsane;
Vasi godhāvarīkūle, uñchena ca phalena ca.॥2॥

सोऽ*स्सकस्य* विषये, *अलकस्य* समासन्ने ।
अवात्सीत् *गोधावरी* कूले, उञ्छेन च फलेन च॥2॥

वह (आन्ध्र के) अश्वक और अलक–दोनों राज्यों के मध्य गोदावरी नदी के किनारे भिक्षा और फल से निवास करने लगा॥2॥

In Assaka's territory, in the neighbourhood of Alaka, he dwelt on the banks of the Godhavari, living on gleanings and fruit. 2.

तस्सेव उपनिस्साय, गामो च विपुलो अहु।
ततो जातेन आयेन, महायञ्ञमकप्पयि॥5/1/3॥

Tasseva upanissāya, gāmo ca vipulo ahu;
Tato jātena āyena, mahāyaññamakappayi.॥3॥

तमेव उपनि:श्राय, ग्रामश्च विपुलोऽभूत् ।
ततो जातेन आयेन, महायज्ञमक्लृपत॥3॥

उसके पास एक बड़ा ग्राम था । उससे प्राप्त आमदनी से उसने महायज्ञ का आयोजन किया॥3॥

And close by the bank there was a large village, with the income of which he prepared a great sacrifice.3.

महायञ्ञं यजित्वान, पुन पाविसि अस्समं।
तस्मिं पटिपविट्ठम्हि, अञ्ञो आगञ्छि ब्राह्मणो॥5/1/4॥

Mahāyañña yajitvāna, puna pāvisi assamaṃ;
Tasmiṃ paṭipaviṭṭhamhi, añño āgañchi brāhmaṇo.॥4॥

महायज्ञं यजित्वा, पुन: प्राविशदाश्रमम् ।
तस्मिन् प्रतिप्रविष्टे, अन्योऽगमत् ब्राह्मण:॥4॥

महायज्ञ करके पुन: आश्रम में प्रवेश किया । वहाँ प्रवेश करते ही दूसरा ब्राह्मण आ गया॥4॥

Having offered the great sacrifice, he again entered the hermitage. Upon his re-entering, another Brāhmaṇa arrived, .4.

उग्घट्टपादो तसितो, पङ्कदन्तो रजस्सिरो।
सो च नं उपसङ्कम्म, सतानि पञ्च याचति॥5/1/5॥

Ugghaṭṭapādo tasito, paṅkadanto rajassiro;
So ca naṃ upasaṅkamma, satāni pañca yācati.॥5॥

उद्घृषितपाद: तृषित:, पङ्कदन्तो रजश्शिर: ।
स च तमुपसंक्रम्य, शतानि पञ्च याचते॥5॥

घिसे पैर, तृषित, मलिन दन्त वाले धूल भरे सिर वाले उसके पास आकर उससे (बावरी से) पाँच सौ (कार्षाण) माँगे॥5॥

With swollen feet, trembling, with dirty teeth and with dust on his head. And he going up to demanded five hundred pieces of money. 5.

तमेनं बावरी दिस्वा, आसनेन निमन्तयि।
सुखं च कुसलं पुच्छि, इदं वचनमब्रवि॥5/1/6॥

Tamenaṃ bāvarī disvā, āsanena nimantayi;
Sukhaṃ ca kusalaṃ pucchi, idaṃ vacanamabravi.॥6॥

तमेनं *बाबरी* दृष्ट्वा, आसनेन न्यममन्त्रत ।
सुखञ्च कुशलमपृच्छत्, इदं वचनमब्रवीत्॥6॥

बावरी ने उसे देखकर आसन दिया, कुशल-मंगल पूछा और यह बात कही॥6॥

Bavari, seeing him, bade him be seated, asked him whether he was happy and well and spoke as following: .6.

"यं खो मम देय्यधम्मं, सब्बं विसज्जितं मया।
अनुजानाहि मे ब्रह्मे, नत्थि पञ्चसतानि मे"॥5/1/7॥

"Yaṃ kho mama deyyadhammaṃ, sabbaṃ visajjitaṃ mayā;
Anujānāhi me brahme, natthi pañcasatāni me".॥7॥

यत् खलु मम देयधर्मम्, सर्वं विसृजितं मया।
अनुजानीहि मां ब्राह्मण ! नास्ति पञ्चशतानि मे"॥7॥

जो कुछ मेरे पास दान करने की वस्तु थी, मैंने उन सबको दान कर दिया । हे ब्राह्मण ! मुझे क्षमा करें। मेरे पास पाँच सौ नहीं हैं॥7॥

'What gifts I had, are all given away by me; pardon me, O Brāhmaṇa, I have no five hundred.' .7.

"सचे मे याचमानस्स, भवं नानुपदस्सति।
सत्तमे दिवसे तुय्हं, मुद्धा फलतु सत्तधा"॥5/1/8॥

"Sace me yācamānassa, bhavaṃ nānupadassati;
Sattame divase tuyhaṃ, muddhā phalatu sattadhā".॥8॥

"सचेत् मह्यं याचमानाय, भवान् नानुप्रदास्यति ।
सप्तमे दिवसे तव, मूर्धा फलतु सप्तधा"॥8॥

"यदि मुझसे माँगने पर तुम नहीं दोगे, तो सातवें दिन तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जाये॥8॥

'If thou wilt not give to me who asks, may thy head on the seventh day cleave into seven.'.8.

अभिसङ्खरित्वा कुहको, भेरवं सो अकित्तयि।
तस्स तं वचनं सुत्वा, बावरी दुक्खितो अहु॥5/1/9॥

Abhisaṅkharitvā kuhako, bheravaṃ so akittayi;
Tassa taṃ vacanaṃ sutvā, bāvarī dukkhito ahu.॥9॥

अभिसंस्कृत्य कुहकः, भैरवं सोऽकीर्तयत् ।
तस्य तद् वचनं श्रुत्वा, *बाबरी* दुःखितोऽभूत्॥9॥

उस ढोंगी ने बनावटी क्रिया करके भय दिखाकर कुछ बोला । उसकी उस बात को सुनकर बावरी दुःखित हुआ॥9॥

So after the usual ceremonies this impostor made known his fearful curse. On hearing these his words Bavari became sorrowful. .9.

उस्सुस्सति अनाहारो, सोकसल्लसमप्पितो।
अथो पि एवं चित्तस्स, झाने न रमती मनो॥5/1/10॥

Ussussati anāhāro, sokasallasamappito;
Atho pi evaṃ cittassa, jhāne na ramatī mano.॥10॥

उच्छुष्यति अनाहारः, शोकशल्यसमर्पितः ।
अथापि एवं चित्तस्य, ध्याने न रमते मनः॥10॥

वह शोक रूपी काँटा चुभने के कारण निराहार होकर सूखने लगा । उसके ऐसा चित्त होने से ध्यान में मन नहीं लगता था॥10॥

He wasted away taking no food, transfixed by the arrow of grief, but yet his mind delighted in meditation. 10.

उत्रस्तं दुक्खितं दिस्वा, देवता अत्थकामिनी।
बावरिं उपसङ्कम्म, इदं वचनमब्रवि॥5/1/11॥

Utrastaṃ dukkhitaṃ disvā, devatā atthakāminī;
Bāvariṃ upasaṅkamma, idaṃ vacanamabravi.॥11॥

उत् त्रस्तं दुःखितं दृष्ट्वा, देवता अर्थकामिनी ।
*बावरि*मुपसंक्रम्य, इदं वचनमब्रवीत्॥11॥

उसे भयभीत और दुःखी देख एक हितैषी देवता ने बावरी के पास आकर यह बात कही॥11॥

Seeing Bavari struck with horror and sorrowful, the benevolent deity of that place approached him and said as follows: .11.

"न सो मुद्धं पजानाति, कुहको सो धनत्थिको।
मुद्धनि मुद्धपाते वा, ञाणं तस्स न विज्जति"॥5/1/12॥

"Na so muddhaṃ pajānāti, kuhako so dhanatthiko;
Muddhani muddhapāte vā, ñāṇaṃ tassa na vijjati".॥12॥

"न स मूर्धानं प्रजानाति, कुहक: स धनार्थिक: ।
मूर्ध्नि मूर्धपाते वा, ज्ञानं तस्य न विद्यते"॥12॥

वह धन चाहने वाला ढोंगी 'सिर' को नहीं जानता, सिर और सिर के गिरने में भी उसे जानकारी नहीं है॥12॥

'He does not know anything about the head; he is a hypocrite coveting riches; knowledge of the head and head-splitting is not found in him.' .12.

"भोती चरहि जानासि, तं मे अक्खाहि पुच्छिता।
मुद्धं मुद्धाधिपातं च, तं सुणोम वचो तव"॥5/1/13॥

"Bhotī carahi jānāsi, taṃ me akkhāhi pucchitā;
Muddhaṃ muddhādhipātaṃ ca, taṃ suṇoma vaco tava".॥13॥

"भवती चेत्तर्हि जानाति, तन्मे आख्याहि पृष्टा ।
मूर्धानं मूर्धाधिपातञ्च, तच्छृणोमि वचस्तव"॥13॥

बावरी–हे देवता! यदि आप सिर और सिर के गिरने को जानते हैं, तो मेरे द्वारा पूछी गई आप बतलायें। मैं आपकी बात सुनना चाहता हूँ॥13॥

'If the venerable deity knows it, then tell me, when asked, all about the head and head- splitting; let us hear thy words.' .13.

"अहम्पेतं न जानामि, ञाणमेत्थ न विज्जति।
मुद्धनि मुद्धाधिपाते च, जिनानं हेत्थ दस्सनं"॥5/1/14॥

"Ahampetaṃ na jānāmi, ñāṇamettha na vijjati;
Muddhani muddhādhipāte ca, jinānaṃ hettha dassanaṃ".॥14॥

"अहमप्येतन्न जानामि, ज्ञानमत्र न विद्यते ।
मूर्ध्नि मूर्धाधिपाते च, जिनानां ह्यत्र दर्शनम्"॥14॥

देवता–मैं भी इसे नहीं जानता, इसका मुझे ज्ञान नहीं है। सिर और सिर का गिरना–यह बुद्धों का विषय है॥14॥

'I do not know this; knowledge of it is not found in me; as to the head and head-splitting, this is to be seen by Buddhas only.' .14.

"अथ को चरहि जानाति, अस्मिं पथविमण्डले ।
मुद्धं मुद्धाधिपातं च, तं मे अक्खाहि देवते"॥5/1/15॥

"Atha ko carahi jānāti, asmiṃ pathavimaṇḍale;
Muddhaṃ muddhādhipātaṃ ca, taṃ me akkhāhi devate".॥15॥

"अथ कस्तर्हि जानाति, अस्मिन् पृथ्वीमण्डले ।

मूर्धानं मूर्धाधिपातञ्च, तन्मे आख्याहि देवते !"॥15॥

बावरी–हे देवता! मुझे बतलायें कि इस पृथ्वी-मण्डल पर सिर और सिर के गिरने को कौन जानता है?॥1॥

'Who then, say, in the circumference of the earth knows the head and head-splitting, tell me that, O deity?' .15.

"पुरा कपिलवत्थुम्हा, निक्खन्तो लोकनायको।

अपच्चो ओक्काकराजस्स, सक्यपुत्तो पभङ्करो॥5/1/16॥

"Purā kapilavatthumhā, nikkhanto lokanāyako;

Apacco okkākarājassa, sakyaputto pabhaṅkaro.॥16॥

"पुरा *कपिलवत्थुतः*, निष्क्रान्तः लोकनायकः ।

अपत्य *ओक्काक*राज्ञः, शाक्यपुत्रः प्रभाकरः॥16॥

देवता–पहले इक्ष्वाकुराज के पुत्र, शाक्यपुत्र, प्रकाशमान्, लोकनायक कपिलवस्तु नगर से निकले थे॥16॥

'Formerly went out from Kapilavatthu a ruler of the world, an offspring of the Okkaka king, the Sakya son, the light-giving; .16.

"सो हि ब्राह्मण सम्बुद्धो, सब्बधम्मान पारगू।

सब्बाभिञ्ञाबलप्पत्तो, सब्बधम्मेसु चक्खुमा।

सब्बकम्मक्खयं पत्तो, विमुत्तो उपधिक्खये॥5/1/17॥

"So hi brāhmaṇa sambuddho, sabbadhammāna pāragū;
Sabbābhiññābalappatto, sabbadhammesu cakkhumā;

Sabbakammakkhayaṃ patto, vimutto upadhikkhaye.॥17॥

"स हि ब्राह्मण! सम्बुद्धः, सर्वधर्माणां पारगः ।

सर्वाभिज्ञाबलप्राप्तः, सर्वधर्मेषु चक्षुष्मान् ।

सर्वधर्मक्षयं प्राप्तः, विमुक्त उपधिक्षयात्॥17॥

हे ब्राह्मण ! वे सम्बुद्ध सभी धर्मों में पारंगत हैं, व अभिज्ञा के बल को प्राप्त हैं, सब धर्मों में चक्षुष्मान् हैं, सभी क्लेशों का क्षय कर लिया हैं और आसक्तियों के नष्ट हो जाने से विमुक्त हो गए हैं॥17॥

'He is, O Brāhmaṇa, the perfectly Enlightened Sambuddha; perfect in all things, he has attained the power of all knowledge sees clearly in everything; he has arrived at the destruction of all things, and is liberated in the destruction of the upadhis'.17.

"बुद्धो सो भगवा लोके, धम्मं देसेति चक्खुमा।

तं त्वं गन्त्वान पुच्छस्सु, सो ते तं ब्याकरिस्सति"॥5/1/18॥

"Buddho so bhagavā loke, dhammaṃ deseti cakkhumā;

Taṃ tvaṃ gantvāna pucchassu, so te taṃ byākarissati".॥18॥

"*बुद्धः* स भगवान् लोके, धर्मं देशयति चक्षुष्मान् ।

तं त्वं गत्वा पृच्छस्व, स ते तत् व्याकरिष्यति"॥18॥

वे चक्षुष्मान् भगवान् बुद्ध लोक में धर्मोपदेश दे रहे हैं, तुम उनके पास जाकर पूछो। वे तेरा उत्तर देंगे॥18॥

'He is Buddha, he is Bhagavān in the world, he, the clearly-seeing, teaches the Dhamma; go thou to him and ask, he will explain it to thee.' .18.

सम्बुद्धो ति वचो सुत्वा, उदग्गो बावरी अहु।
सोकस्स तनुको आसि, पीतिं च विपुलं लभि॥5/1/19॥

Sambuddho ti vaco sutvā, udaggo bāvarī ahu;
Sokassa tanuko āsi, pītiṃ ca vipulaṃ labhi.॥19॥

सम्बुद्ध इति वचः श्रुत्वा, उदग्रो *बाबरी* अभूत् ।
शोकोऽस्य तनुकोऽभूत्, प्रीतिञ्च विपुलामलभत्॥19॥

सम्बुद्ध वचन सुनकर बावरी प्रफुल्लित हो उठा । उसका शोक कम हो गया और बड़ा आनन्दित हो गया॥19॥

Having heard the word 'Sambuddha,' Bavari rejoiced, his grief became little, and he was filled with great delight. 19.

सो बावरी अत्तमनो उदग्गो, तं देवतं पुच्छति वेदजातो।
"कतमम्हि गामे निगमम्हि वा पन, कतमम्हि वा जनपदे लोकनाथो।
यत्थ गन्त्वान पस्सेमु, सम्बुद्धं द्विपदुत्तमं"॥5/1/20॥

So bāvarī attamano udaggo, taṃ devataṃ pucchati vedajāto;
"Katamamhi gāme nigamamhi vā pana, katamamhi vā janapade lokanātho;
Yattha gantvāna passemu, sambuddhaṃ dvipaduttamaṃ",.॥20॥

स *बावरी* आत्तमन उदग्रः, तां देवतां पृच्छति वेदजातः ।
"कतमे ग्रामे निगमे वा पुनः, कतमे वा जनपदे लोकनाथः ।
यत्र गत्वा पश्येम *सम्बुद्धं द्विपदोत्तमम्*"॥20॥

बावरी– उस बावरी ने प्रसन्न, हर्षित और आनन्दित हो उस देवता से पूछा– लोकनाथ किस ग्राम अथवा जनपद में है, जहाँ कि हम लोग जाकर उस नर-श्रेष्ठ सम्बुद्ध को देखे?॥20॥

Bavari glad, rejoicing, and eager asked the deity: 'In what village or in what province dwells the chief of the world, that going there we may adore the perfectly Enlightened, the first of men?' .20.

"सावत्थियं कोसलमन्दिरे जिनो, पहूतपञ्ञो वरभूरिमेधसो।
सो सक्यपुत्तो विधुरो अनासवो, मुद्धाधिपातस्स विदू नरासभो"॥5/1/21॥

"Sāvatthiyaṃ kosalamandire jino, pahūtapañño varabhūrimedhaso;
So sakyaputto vidhuro anāsavo, muddhādhipātassa vidū narāsabho".॥21॥

*"सावत्थ्यां कोसल*मन्दिरे जिनः, प्रभूतप्रज्ञो वरभूरिमेधसः ।
स शाक्यपुत्रो विधुरोऽनास्रवः, मूर्धाधिपातस्य विदो नरर्षभः"॥21॥

देवता–कोसल जनपद के श्रावस्ती नगर में महाप्रज्ञ, उत्तरप्रज्ञ, भारमुक्त, आश्रव रहित, नरश्रेष्ठ, सिर गिरने के ज्ञाता शाक्यपुत्र, जिन (बुद्ध) हैं॥21॥

'In Savatthi, the town of the Kosalas, dwells Jina, the Victorious, of great understanding and excellent wide knowledge, he the Sakya son, uny oked, free from passion, skilled in head-splitting, the bull of men.' 21.

ततो आमन्तयी सिस्से, ब्राह्मणे मन्तपारगे।

"एथ माणवा अक्खिस्सं, सुणाथ वचनं मम॥5/1/22॥

Tato āmantayī sisse, brāhmaṇe mantapārage;

"Etha māṇavā akkhissaṃ, suṇātha vacanaṃ mama.॥22॥

ततः आमन्त्रयत् शिष्यान्, ब्राह्मणान् मन्त्रपारगान् ।

"इत माणवाः ! आख्यास्यामि, शृणुत वचनं मम॥22॥

बावरी – तब वेदों के पारंगत ब्राह्मण शिष्यों को उसने सम्बोधित किया – "हे माणव ! (तरुण ब्राह्मण विद्यार्थी) आओ । मैं तुम लोगों से कहता हूँ, मेरी बात सुनो॥22॥

Then addressed his disciples, Brahmanas, perfect in the hymns: Come, youths, I will tell, listen to my words: .22.

"यस्सेसो दुल्लभो लोके, पातुभावो अभिण्हसो।

स्वाज्ज लोकम्हि उप्पन्नो, सम्बुद्धो इति विस्सुतो।

खिप्पं गन्त्वान सावत्थिं, पस्सव्हो द्विपदुत्तमं"॥5/1/23॥

"Yasseso dullabho loke, pātubhāvo abhiṇhaso;
Svājja lokamhi uppanno, sambuddho iti vissuto;
Khippaṃ gantvāna sāvatthiṃ, passavho dvipaduttamaṃ".॥23॥

"यस्यैष दुर्लभो लोके, प्रादुर्भावोऽभीक्ष्णशः ।

सोऽद्य लोके उत्पन्नः, सम्बुद्ध इति विश्रुतः ।

क्षिप्रं गत्वा *सावत्थीम्,* पश्यद्धि द्विपदोत्तमम्"॥23॥

संसार में जिनका उत्पन्न होना प्रायः दुर्लभ है, वह आज सम्बुद्ध नाम से प्रसिद्ध संसार में उत्पन्न हो गए हैं। शीघ्र ही श्रावस्ती जाकर उन नर-श्रेष्ठ को देखो॥23॥

'He whose appearance in the world is difficult to be met with often, he is at the present time born in the world and widely renowned as Sam-buddha; go quickly to Savatthi and behold the best of men.'.23.

"कथं चरहि जानेमु, दिस्वा बुद्धो ति ब्राह्मण।

अजानतं नो पब्रूहि, यथा जानेमु तं मयं"॥5/1/24॥

"Kathaṃ carahi jānemu, disvā buddho ti brāhmaṇa;
Ajānataṃ no pabrūhi, yathā jānemu taṃ mayaṃ".॥24॥

"कथं तर्हि जानीयाम, दृष्ट्वा *'बुद्ध'* इति ब्राह्मण ! ।

अजानतो नः प्रब्रूहि, यथा जानीयाम तं वयम्"॥24॥

शिष्य –हे ब्राह्मण ! कैसे हम लोग देखकर जानेंगे कि यह बुद्ध हैं ? हम न जानने वालों को बतायें, जिससे हम लोग उन्हें जान सकें॥24॥

'How then can we know, on seeing him, that he is Buddha, O Brahmana? Tell us who do not know him, by what may we recognise him? .24.

"आगतानि हि मन्तेसु, महापुरिसलक्खणा।

द्वतिंसानि च ब्याक्खाता, समत्ता अनुपुब्बसो॥5/1/25॥

"Āgatāni hi mantesu, mahāpurisalakkhaṇā;
Dvattiṃsāni ca byākkhātā, samattā anupubbaso.॥25॥

"आगतानि हि मन्त्रेषु, महापुरुषलक्षणानि ।
द्वात्रिंशच्च व्याख्यातानि, समस्तान्यनुपूर्वशः॥25॥

बावरी –मन्त्रों में महापुरुष-लक्षण आये हुए हैं । क्रमशः और परिपूर्णतः वे बत्तीस बतलाये गये हैं॥25॥

'For in the hymns are to be found the marks of a great man, and thirty-two are disclosed alto gether, one by one.' .25.

"यस्सेते होन्ति गत्तेसु, महापुरिसलक्खणा।
द्वेयेव तस्स गतियो, ततिया हि न विज्जति॥5/1/26॥

"Yassete honti gattesu, mahāpurisalakkhaṇā;
Dveyeva tassa gatiyo, tatiyā hi na vijjati.॥26॥

"यस्यैतानि भवन्ति गात्रेषु, महापुरुषलक्षणानि ।
द्वे एव तस्य गती, तृतीया हि न विद्यते॥26॥

जिनके शरीर में महापुरुष-लक्षण होते हैं, उनको दो ही गतियाँ होती हैं, तीसरी गति नहीं होती॥26॥

'For him on whose limbs these marks of a great man are to be found, there are two ways left, a third does not exist. 26.

"सचे अगारं आवसति, विजेय्य पथविं इमं।
अदण्डेन असत्थेन, धम्मेनमनुसासति॥5/1/27॥

"Sace agāraṃ āvasati, vijeyya pathaviṃ imaṃ;
Adaṇḍena asatthena, dhammenamanusāsati.॥27॥

"सचेत् आगारमावसति, विजित्य पृथ्वीमिमाम् ।
अदण्डेन अशस्त्रेण, धर्मेण एनमनुशास्ति॥27॥

यदि वे इस पृथ्वी को जीतकर घर में रहते हैं तो बिना दण्ड, बिना शस्त्र के ही धर्म से शासन करते हैं॥27॥

'If he abides in a dwelling, he will subdue this earth without rod or sword, he will rule with justice.27.

"सचे च सो पब्बजति, अगारा अनगारियं।
विवट्टच्छदो सम्बुद्धो, अरहा भवति अनुत्तरो॥5/1/28॥

"Sace ca so pabbajati, agārā anagāriyaṃ;
Vivaṭṭacchado sambuddho, arahā bhavati anuttaro.॥28॥

"सचेत् स प्रव्रजति, आगारादनागारिकम् ।
विवृतच्छदः सम्बुद्धोऽर्हद् भवत्यनुत्तरः॥28॥

यदि वे घरबार छोड़कर प्रव्रजित हो जाते हैं तो वे खुले ज्ञानवाले, सर्वश्रेष्ठ, अर्हत् सम्बुद्ध होते हैं॥28॥

'And if he departs from his dwelling for the wilderness, he becomes the saint, incomparable Sambuddha, who has removed the veil from the world. 28.

"जातिं गोत्तं च लक्खणं, मन्ते सिस्से पुनापरे।
मुद्धं मुद्धाधिपातं च, मनसायेव पुच्छथ॥5/1/29॥

"Jātiṃ gottaṃ ca lakkhaṇaṃ, mante sisse punāpare;
Muddhaṃ muddhādhipātaṃ ca, manasāyeva pucchatha.॥29॥

"जातिं गोत्रञ्च लक्षणम्, मन्त्राणि शिष्यान् पुन: अपरान् ।
मूर्धानं मूर्धाधिपातञ्च, मनसि एव पृच्छत॥29॥

जाति, गोत्र, लक्षण, मंत्र, शिष्यों, सिर और सिर के गिरने को मन में ही पूछना॥29॥

'Ask in your mind about my birth and family, my marks, hymns, and my other disciples, the head and head-splitting. 29.

"अनावरणदस्सावी, यदि बुद्धो भविस्सति।
मनसा पुच्छिते पञ्हे, वाचाय विस्सजेस्सति"॥5/1/30॥

"Anāvaraṇadassāvī, yadi buddho bhavissati;
Manasā pucchite pañhe, vācāya vissajessati".॥30॥

"अनावरणद्रष्टा, यदि बुद्धो भविष्यति ।
मनसा पृष्टे प्रश्ने, वचसा विसर्जयिष्यति"॥30॥

यदि बुद्ध आवरण-रहित द्रष्टा होंगे तो मन में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर वचन से देगें॥30॥

'If he is Buddha, the clear-sighted, then he will answer by word of mouth the questions you have asked in your mind.' 30.

बावरिस्स वचो सुत्वा, सिस्सा सोळस ब्राह्मणा।
अजितो तिस्समेत्तेय्यो, पुण्णको अथ मेत्तगू॥5/1/31॥
धोतको उपसीवो च, नन्दो च अथ हेमको।
तोदेय्यकप्पा दुभयो, जतुकण्णी च पण्डितो॥5/1/32॥
भद्रावुधो उदयो च, पोसालो चा पि ब्राह्मणो।
मोघराजा च मेधावी, पिङ्गियो च महाइसि॥5/1/33॥
पच्चेकगणिनो सब्बे, सब्बलोकस्स विस्सुता।
झायी झानरता धीरा, पुब्बवासनवासिता॥5/1/34॥
बावरिं अभिवादेत्वा, कत्वा च नं पदक्खिणं।
जटाजिनधरा सब्बे, पक्कामुं उत्तरामुखा॥5/1/35॥

Bāvarissa vaco sutvā, sissā soḷasa brāhmaṇā;
Ajito tissametteyyo, puṇṇako atha mettagū.॥31॥
Dhotako upasīvo ca, nando ca atha hemako;
Todeyyakappā dubhayo, jatukaṇṇī ca paṇḍito.॥32॥
Bhadrāvudho udayo ca, posālo cā pi brāhmaṇo;
Mogharājā ca medhāvī, piṅgiyo ca mahāisi.॥33॥
Paccekagaṇino sabbe, sabbalokassa vissutā;
Jhāyī jhānaratā dhīrā, pubbavāsanavāsitā.॥34॥
Bāvariṃ abhivādetvā, katvā ca naṃ padakkhiṇaṃ;
Jaṭājinadharā sabbe, pakkāmuṃ uttarāmukhā.॥35॥

बावरे: वच: श्रुत्वा, शिष्या: षोडशब्राह्मणा: ।
अजित: तिस्समेत्तेय्य:, *पुण्णको*ऽथ *मेत्तगू:*॥31॥
धोतक उपसीव च, *नन्द*श्च अथ *हेमक:* ।
तोदेय्यकप्पौ उभय: *जातुकण्णी* च पण्डित:॥32॥
*भद्राबुध उदय*श्च, *पोसाल*श्चापि ब्राह्मण: ।
मोघराजा च मेधावी, *पिंगिय*श्च महर्षि:॥33॥
प्रत्येकगणिन: सर्वे, सर्वलोके च विश्रुता: ।
ध्यायिनो ध्यानरता: धीरा:, पूर्ववासनावासिता:॥34॥
*बावरि*मभिवाद्य, कृत्वा च तस्य प्रदक्षिणाम् ।
जटाजिनधरा: सर्वे प्राक्रमिंषु उत्तराभिमुखा:॥35॥

बावरी की बात सुन सोलह ब्राह्मण शिष्य– अजित, तिस्समेत्तेय्य, पुण्णक, मेत्तगू, घोतक, उपसीव, नन्द, हेमक, तोदेय्य और कप्प-दोनों, पण्डित जातुकण्णी, भद्रायुध, उदय और पोसाल ब्राह्मण, मेधावी मोघराजा, महाऋषि पिंगिय– सब प्रत्येक गणी थे, सब संसार में प्रसिद्ध थे । ध्यानी, ध्यान में लीन रहने वाले, धीर और पूर्व के अच्छे संस्कारों से युक्त थे । बावरी को प्रणाम कर, उसकी प्रदक्षिणा कर, सभी जटा और मृगछालधारी उत्तर की ओर चल पड़े॥31-35॥

Having heard Bavari's words his disciples, sixteen Brāhmaṇas, Agita, Tissametteyya, Punnaka, further Mettagü, Dhotaka and Upasiva, and Nanda, further Hemaka, the two Todeyya and Kappa, and the wise Jatukanni, Bhadravudha and Udaya, and also the Brāhmaṇa Posala, and the wise Mogharaga, and the great Isi Pingiya, All of them, having each their host of pupils, and being themselves widely renowned throughout the world, thinkers delighting in meditation, wise, scented with the perfume of former good deeds', Having saluted Bavari and gone round him towards the right, all with matted hair and bearing hides, departed with their faces turned to the north.31-35.

•पुब्बे कस्सपस्स भगवतो सासने पब्बजित्वा । गतपच्चागतवतपुञ्ञवासनाय वासितचित्ता

अळकस्स पतिट्ठानं[1], पुरिमाहिस्सतिं[2] तदा।
उज्जेनिञ्चा पि[3] गोनद्धं[4], वेदिसं[5] वनसव्हयं[6]॥5/1/36॥

Aḷakassa patiṭṭhānaṃ, purimāhissatiṃ tadā;
Ujjeniñcā pi gonaddhaṃ, vedisaṃ vanasavhayaṃ.॥36॥

अलकस्य प्रतिष्ठानम्, पुरीं *माहिष्मतीं* तदा ।
उज्जयिनीं चापि *गोनद्धम्*, *विदिशां वन*साव्हयम्॥36॥

वे पहले अळक के प्रतिष्ठान गये, वहाँ से माहिष्मती नगर गये । उज्जयिनी, गोनद्ध, विदिशा और वन नामक नगर गए॥36॥

To Patitthana of Alaka first, then to Mahiss ad, and also to Uggent, Gonaddha, Vedis, Vana avhaya,.26.

1.पैठन । 2. मध्यप्रदेश का माहिष्मती । 3.वर्तमान उज्जैन, मध्यप्रदेश । 4.गोधपुर-अट्ठकथा । 5.वर्तमान भेलसा, मध्यप्रदेश । 6. तुम्बनगर, वर्तमान तुम्बेन, मध्यप्रदेश । वनश्रावस्ती-अट्ठकथा ।

कोसम्बिं चा पि[1] साकेतं[2], सावत्थिं च[3] पुरुत्तमं।
सेतब्यं[4] कपिलवत्थुं[5], कुसिनारं च[6] मन्दिरं॥5/1/37॥

Kosambiṃ cā pi sāketaṃ, sāvatthiṃ ca puruttamaṃ;
Setabyaṃ kapilavatthuṃ, kusināraṃ ca mandiraṃ.॥37॥

कौशाम्बीं चापि *साकेतम्*, *सावत्थीञ्च* पुरोत्तमम् ।
सेतव्यं कपिलवत्थुनम्, *कुसिनारञ्च* मन्दिरम्॥37॥

कोसाम्बी और साकेत तथा उत्तम नगर श्रावस्ती, सेतव्य, कपिलवस्तु और कुशीनारा॥37॥

And also to Kosambi, Saketa, and Savattht, the most excellent of cities, to Setavya, Kapilavatthu, and the city of Kusinara, .37.

1.कोसम जिला इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश । 2. अयोध्या, उत्तरप्रदेश । 3. सहेट'महेट (श्रावस्ती) जिला बहराइच, उत्तरप्रदेश । 4. अज्ञात । 5. पिपरहवा, जिला बस्ती, उत्तरप्रदेश । 6. कुशीनगर, जिला देवरिया, उत्तरप्रदेश ।

पावं च[1] भोगनगरं[2], वेसालिं[3] मागधं[4] पुरं।
पासाणकं चेतियं च, रमणीयं मनोरमं॥5/1/38॥

Pāvaṃ ca bhoganagaraṃ, vesāliṃ māgadhaṃ puraṃ;
Pāsāṇakaṃ cetiyaṃ ca, ramaṇīyaṃ manoramaṃ.॥38॥

पावां च *भोगनगरम्*, *वेसालिं मागधं* पुरम् ।
पाषाणकं चैत्यञ्च, रमणीयं मनोरमम्॥38॥

पावा, भोगनगर, वैशाली और राजगृह के रमणीय मनोरम पाषाण चैत्य में पहुँचे॥38॥

And to Pava, the city of wealth, to Vesali, the city of Magadha, to Pasanaka Cetiya the Rock Temple, the lovely, the charming. 38.

1. सठियांव जिला देवरिया, उत्तरप्रदेश । 2. अज्ञात। 3. बनिया बसाद, जिला वैशाली, बिहार।
4. राजगृह वर्तमान राजगिर बिहार । मागधपुर राजगृह का नाम है-अट्ठकथा ।

तसितोवुदकं सीतं, महालाभं व वाणिजो।
छायं घम्माभितत्तो व, तुरिता पब्बतमारुहुं॥5/1/39॥

Tasitovudakaṃ sītaṃ, mahālābhaṃ va vāṇijo;
Chāyaṃ ghammābhitatto va, turitā pabbatamāruhuṃ.॥39॥

तृषितोदकं शीतम्, महालाभमिव वणिज: ।
छायां घर्माभितप्त इव, त्वरितं पर्वतमारूहन्॥39॥

जैसे प्यासा मनुष्य शीलत जल की, व्यापारी महालाभ की और गर्मी से पीडित छाया की इच्छा करते हैं, वैसे ही वे शीघ्र पर्वत पर चढ़ गये॥39॥

As he who is a thirst longs for the cold water, as the merchant longs for gain, as he who is plagued by heat longs for shade, so in haste they ascended the mountain.39.

भगवा तम्हि समये, भिक्खुसङ्घपुरक्खतो।
भिक्खूनं धम्मं दिशति, सीहो व नदती वने॥5/1/40॥

Bhagavā tamhi samaye, bhikkhusaṅghapurakkhato;
Bhikkhūnaṃ dhammaṃ deseti, sīho va nadatī vane.॥40॥

भगवान् तस्मिन् समये, भिक्षुसंघपुरस्कृत: ।
भिक्षून् धर्मं दिशति, सिंह इव नदति वने॥40॥

उस समय भगवान् भिक्षुसंघ के बीच वन में सिंह के गर्जन करने के समान भिक्षुओं को उपदेश दे रहे थे॥40॥

And Bhagavān at that time attended by the assembly of the Bhikkhus taught the Dhamma to the Bhikkhus, and roared like a lion in the forest. 40.

अजितो अद्दस बुद्धं, सतरंसिं व भाणुमं।
चन्दं यथा पन्नरसे, पारिपूरिं उपागतं॥5/1/41॥

Ajito addasa buddhaṃ, sataraṃsiṃ va bhāṇumaṃ;
Candaṃ yathā pannarase, pāripūriṃ upāgataṃ.॥41॥

*अजितो*ऽपश्यत् बुद्धम्, शतरश्मिमिव भानु: ।
चन्द्रं यथा पञ्चदशे, परिपूर्णामुपागतम्॥41॥

अजित ने प्रखर रश्मि रहित प्रकाशमान् सूर्य तथा पूर्णिमा के दिन पूर्णता को प्राप्त चन्द्रमा जैसे सम्बुद्ध को देखा॥41॥

Agita beheld Sambuddha as the shining sun without burning rays, as the moon on the fifteenth, having reached her plenitude.41.

अथस्स गते दिस्वान, परिपूरं च ब्यञ्जनं।
एकमन्तं ठितो हट्ठो, मनोपञ्हे अपुच्छथ॥5/1/42॥

Athassa gatte disvāna, paripūraṃ ca byañjanaṃ;
Ekamantaṃ ṭhito haṭṭho, manopañhe apucchatha.॥42॥

अथास्य गात्राणि दृष्ट्वा, परिपूर्णञ्च व्यञ्जनम् ।
एकान्तं स्थितो हृष्ट:, मन: प्रश्नानपृच्छत्॥42॥

तब उनके शरीर में परिपूर्ण लक्षणों को देखकर हर्षित हो, एक ओर खड़े हो अपने मन में प्रश्नों को पूछा॥42॥

Then observing on his body all the marks in their fulness, standing apart, rejoiced, he asked the questions of his mind: .42.

"आदिस्स जम्मनं ब्रूहि, गोत्तं ब्रूहि सलक्खणं ।
मन्तेसु पारमिं ब्रूहि, कति वाचेति ब्राह्मणो"॥5/1/43॥

"Ādissa jammanaṃ brūhi, gottaṃ brūhi salakkhaṇaṃ;
Mantesu pāramiṃ brūhi, kati vāceti brāhmaṇo".॥43॥

"आदेष्टु: जन्मनं ब्रूहि, गोत्रं ब्रूहि सलक्षणम् ।
मन्त्रेषु पारमीं (पारम्य) ब्रूहि, कति वाचयति ब्राह्मणान्"॥43॥

मेरे आदेशक की आयु बतावें, जाति बतावें, गोत्र बतावें, लक्षण बतावें, मन्त्रों की सफलता बतावें, यह भी बतावें कि वह कितने ब्राह्मणों को पढ़ाते हैं ?॥43॥

'Tell me about my master's birth, tell me about his family together with the marks, tell me about his perfection in the hymns, how many hymns does the Brāhmaṇa recite?' .43.

"वीसं वस्ससतं आयु, सो च गोतेन बावरी।
तीणिस्स लक्खणा गत्ते, तिण्णं वेदान पारगू॥5/1/44॥

"Vīsaṃ vassasataṃ āyu, so ca gottena bāvarī;
Tiṇṇissa lakkhaṇā gatte, tiṇṇaṃ vedāna pāragū.॥44॥

"विंशति: वर्षशतमायु:, स च गोत्रेण *बावरी* ।
त्रीणि अस्य लक्षणानि गात्रे, त्रयाणां वेदानां पारग:॥44॥

भगवान् –उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष है, वह गोत्र से बावरी है, उसके शरीर में तीन लक्षण हैं और वह तीनों वेदों में पारंगत हैं॥44॥

Bhagavān said: 'One hundred and twenty years is his age, and by family he is a Bavart; three are his marks on the limbs, and in the three Vedas he is perfect.44.

"लक्खणे इतिहासे च, सनिघण्डुसकेटुभे।
पञ्चसतानि वाचेति, सधम्मे पारिमिं गतो"॥5/1/45॥

"Lakkhaṇe itihāse ca, sanighaṇḍusaketubhe;
Pañcasatāni vāceti, sadhamme pāramiṃ gato".॥45॥

"लक्षणानि इतिहासे च, सनिघण्टुसकैटुभान्।
पञ्चशतानि वाचयति, स्वधर्मे पारङ्गत:"॥45॥

वह लक्षण शास्त्र, इतिहास को तथा निघण्टु और कैटुभ सहित पाँच सौ शिष्यों को पढ़ाता है और वह अपने धर्म में पारंगत है॥45॥

'In the marks and in the Itihasa together with Nighandu and Ketubha—he recites five hundred—and in his own Dhamma he has reached perfection.' 45.

"लक्खणानं पविचयं, बावरिस्स नरुत्तम।
कङ्खच्छिद पकासेहि, मा नो कङ्खायितं अहु"॥5/1/46॥

"Lakkhaṇānaṃ pavicayaṃ, bāvarissa naruttama;
Kaṅkhacchida pakāsehi, mā no kaṅkhāyitaṃ ahu".॥46॥

"लक्षणानां प्रविचयम्, *बावरे:* नरोत्तम: ।
कांक्षाच्छित् प्रकाशय, मा न: कांक्षायितमभूत्"॥46॥

अजित–हे नर-श्रेष्ठ ! तृष्णा का छेदन करने वाले आप बावरी के लक्षणों का वर्णन करें, जिससे कि हमारे लिए कोई शंका न रहे॥46॥

Agita thought: 'Explain fully the marks of Bavari, O thou best of men, who cuts off desire; let there be no doubt left for us.' .46.

"मुखं जिव्हाय छादेति, उण्णस्स भमुकन्तरे।
कोसोहितं वत्थगुय्हं, एवं जानाहि माणव"॥5/1/47॥

"Mukhaṃ jivhāya chādeti, uṇṇassa bhamukantare;
Kosohitaṃ vatthaguyhaṃ, evaṃ jānāhi māṇava".॥47॥

"मुखं जिह्वया छादयति, ऊर्णास्य भ्रूमुखान्तरे ।
कोषावहितं वस्तुगुह्यम्, एवं जानीहि माणव !"॥47॥

वह जीभ से मुख को ढँक देता है । भौंहों के बीच ऊष्णलोम है, लिंग कोष में छिपा है– माणव ! इस प्रकार जानो॥47॥

Bhagavān said: 'He covers his face with his tongue, he has a circle of hair between the eyebrows, his privy limb is hidden in a sheath, know this, O young man.' .47.

पुच्छं हि किञ्चि असुणन्तो, सुत्वा पञ्हे वियाकते।
विचिन्तेति जनो सब्बो, वेदजातो कतञ्जली॥5/1/48॥

Pucchaṃ hi kiñci asuṇanto, sutvā pañhe viyākate;
Vicinteti jano sabbo, vedajāto katañjalī.॥48॥

पृच्छां हि किञ्चिदशृण्वन्, श्रुत्वा प्रश्नान् व्याकृतान् ।
विचिन्तयति जन: सर्व:, वेदजात: कृताञ्जलि:॥48॥

किसी प्रश्न को बिना सुने ही प्रश्न का उत्तर देते सुनकर सभी लोग प्रमुदित हो, अञ्जलिबद्ध हो सोचने लगे॥48॥

Not hearing him ask anything, but hearing the questions answered, the multitude reflected overjoyed and with joined hands :— .48.

"को नु देवो वा ब्रह्मा वा, इन्दो वा पि सुजम्पति।
मनसा पुच्छिते पञ्हे, कमेतं पटिभासति॥5/1/49॥

"Ko nu devo vā brahmā vā, indo vā pi sujampati;
Manasā pucchite pañhe, kametaṃ paṭibhāsati.॥49॥

"को नु देवो वा ब्रह्मा वा, इन्द्रो वाऽपि *सुजम्पति:*।
मनसा पृष्टे प्रश्ने, कथमेतं प्रतिभाषते॥49॥

किस देव, ब्रह्मा, इन्द्र या सुजम्पति द्वारा मन में किये गये प्रश्नों के उत्तर ये देते हैं?॥49॥

'Who, be he a god, or Brahman, Indra or Sujampati, asked in his mind those questions, and to whom did that speech reply?' .49

"मुद्धं मुद्धाधिपातं च, बावरी परिपुच्छति।
तं ब्याकरोहि भगवा, कङ्खं विनय नो इसे"॥5/1/50॥

"Muddhaṃ muddhādhipātaṃ ca, bāvarī paripucchati;
Taṃ byākarohi bhagavā, kaṅkhaṃ vinaya no ise".॥50॥

"मूर्धानं मूर्धाधिपातञ्च, *बावरी* परिपृच्छति ।
तं व्याकुरु भगवान्, कांक्षां विनय न: ऋषे !"॥50॥

अजित –सिर और सिर गिरने के विषय में बावरी पूछता है । भगवान् उसका उत्तर दें, ऋषि ! हमारी शंका दूर करें॥50॥

Agita said: 'The head and head-splitting Bavari asked about; explain that, O Bhagavān, remove our doubt, O Isi.' .50.

"अविज्जा मुद्धाति जानाहि, विज्जा मुद्धाधिपातिनी।
सद्धासतिसमाधीहि, छन्दवीरियेन संयुता"॥5/1/51॥

"Avijjā muddhāti jānāhi, vijjā muddhādhipātinī;
Saddhāsatisamādhīhi, chandavīriyena saṃyutā".॥51॥

"अविद्या "मूर्धा" इति जानीहि, विद्या मूर्धाधिपातिनी ।
श्रद्धा-स्मृति-समाधिभिः, छन्दवीर्याभ्यां संयुता"॥51॥

भगवान् –अविद्या को सिर जानो और श्रद्धा, स्मृति,समाधि, छन्द तथा वीर्य से युक्त विद्या को सिर का गिरना जानो॥51॥

Bhagavān said: 'Ignorance is the head, know this; knowledge cleaves the head, together with belief, thoughtfulness, meditation, determination and strength.' .51.

ततो वेदेन महता, सन्थम्भित्वान माणवो।
एकंसं अजिनं कत्वा, पादेसु सिरसा पति॥5/1/52॥

Tato vedena mahatā, santhambhitvāna māṇavo;
Ekaṃsaṃ ajinaṃ katvā, pādesu sirasā pati.॥52॥

ततो वेदेन महता, संस्तभ्यो माणवः ।
एकांशमजिनं कृत्वा, पादयोः शिरसापतत्॥52॥

तब माणव बड़े आनन्द से अपने को सम्हाल कर, एक कंधे पर मृगछाल रखकर भगवान् के पैरों पर सिर से गिर पड़ा॥52॥

Then with great joy having composed himself the young man put his hide on one shoulder, fell at Bhagavān's feet and saluted him with his head,: .52.

"बावरी ब्राह्मणो भोतो, सह सिस्सेहि मारिस।
उदग्गचित्तो सुमनो, पादे वन्दति चक्खुम"॥5/1/53॥

"Bāvarī brāhmaṇo bhoto, saha sissehi mārisa;
Udaggacitto sumano, pāde vandati cakkhuma".॥53॥

"बावरी ब्राह्मणो भवतः, सह शिष्यैः *मारिस* ! ।
उदग्रचित्तः सुमनः, पादौ वन्दति चक्षुष्मन् !"॥53॥

अजित–हे मार्ष! शिष्यों सहित बावरी ब्राह्मण हर्षित और प्रसन्न हो चक्षुष्मान् के पैरों की वन्दना करता है॥53॥

'Bhagavān, the Brāhmaṇa, together with his disciples, O thou venerable man, delighted and glad, does homage to thy feet, O thou clearly-seeing.' 53.

"सुखितो बावरी होतु, सह सिस्सेहि ब्राह्मणो।
त्वं चा पि सुखितो होहि, चिरं जीवाहि माणव॥5/1/54॥

"Sukhito bāvarī hotu, saha sissehi brāhmaṇo;
Tvaṃ cā pi sukhito hohi, ciraṃ jīvāhi māṇava.॥54॥

"सुखितो *बावरी* भवतु, सह शिष्यैः ब्राह्मणः ।
त्वं चापि सुखितो भव, चिरं जीव *माणव* !॥54॥

भगवान् –बावरी ब्राह्मण शिष्यों सहित सुखी हो। तुम भी सुखी हो। माणव! चिरंजीवी होओ॥54॥

Bhagavān said: 'Let Bavari, the Brāhamaṇa, be glad together with his disciples! Be thou also glad, live long, O young man! .54.

"बावरिस्स च तुय्हं वा, सब्बेसं सब्बसंसयं।
कतावकासा पुच्छव्हो, यं किञ्चि मनसिच्छथ"॥5/1/55॥

"Bāvarissa ca tuyhaṃ vā, sabbesaṃ sabbasaṃsayaṃ;
Katāvakāsā pucchavho, yaṃ kiñci manasicchatha".॥55॥

"बावरेश्च तव वा, सर्वेषां सर्वसंशयम् ।
कृतावकाश: प्रश्नेभ्य:, यत्किञ्चिदपि मनसीच्छथ"॥55॥

बावरी तथा तुम सबको सभी शंकाओं के विषय में पूछने के लिए अवकाश दे रहा हूँ। जो चाहो सो पूछो॥55॥

'For Bavari and for thee, for all there are all kinds of doubt; having got an opportunity, ask ye whatever you wish.' .55.

सम्बुद्धेन कतोकासो, निसीदित्वान पञ्जली।
अजितो पठमं पञ्हं, तत्थ पुच्छि तथागतं॥5/1/56॥

Sambuddhena katokāso, nisīditvāna pañjalī;
Ajito paṭhamaṃ pañhaṃ, tattha pucchi tathāgataṃ.॥56॥

सम्बुद्धेन कृतावकाश:, निषद्य प्राञ्जलि:।
अजित: प्रथमं प्रश्नम्, तत्र अपृच्छत् तथागतम्॥56॥

सम्बुद्ध के अवकाश देने पर बैठकर अञ्जलिबद्ध हो अजित ने वहाँ तथागत से पहला प्रश्न किया॥56॥

After getting permission from Sambuddha, Agita sitting there with folded hands asked Tathagata the first question. 56.

वत्थुगाथा निट्ठिता
(Vatthugāthā niṭṭhitā)

(5,2) अजितमाणवपुच्छा (Ajitamāṇavapucchā)

"केनस्सु निवुतो लोको, (इच्चायस्मा अजितो) केनस्सु नप्पकासति।
किस्साभिलेपनं ब्रूसि, किंसु तस्स महब्भयं"॥5/2/1॥

"Kenassu nivuto loko, (iccāyasmā ajito) Kenassu nappakāsati;
Kissābhilepanaṃ brūsi, kiṃsu tassa mahabbhayaṃ".॥1॥

"केनस्वित् निवृत्तो लोक:, (इत्यायुष्मान् *अजित:*) केनस्वित् न प्रकाशते ।
कस्याभिलेपनं ब्रूषे, किंस्वित् तस्य महाभयम्"॥1॥

अजित– संसार किससे ढँका हुआ है ? किससे प्रकाशित नहीं होता ? किसे इसका आलेप कहते हैं? इसके लिए क्या महाभय है ?॥1॥

'By what is the world shrouded,'—so said the venerable Agita,—' by what does it not shine? What callest thou its pollution, what is its great danger'?' .1.

"अविज्जाय निवुतो लोको, (अजिता ति भगवा) वेविच्छा पमादा नप्पकासति।
जप्पाभिलेपनं ब्रूमि, दुक्खमस्स महब्भयं"॥5/2/2॥

"Avijjāya nivuto loko, (ajitā ti bhagavā) Vevicchā pamādā nappakāsati;
Jappābhilepanaṃ brūmi, dukkhamassa mahabbhayaṃ".॥2॥

"अविद्यया निवृतो लोकः, (*अजित* इति भगवान्) वैविच्छात् प्रमादात् न प्रकाशते ।
जल्पाभिलेपनं ब्रवीमि, दुःखमस्य महाभयम्"॥2॥

भगवान् – संसार अविद्या से ढँका हुआ है । मात्सर्य तथा प्रमाद के कारण वह प्रकाशित नहीं होता । तृष्णा को मैं इसका आलेप कहता हूँ । दुःख इसके लिए महाभय है ॥2॥

'With ignorance is the world shrouded, O Agita,'—so said Bhagavān,—' by reason of avarice it does not shine; desire I call its pollution, pain is its great danger.' .2.

"सवन्ति सब्बधि सोता, (इच्चायस्मा अजितो), सोतानं किं निवारणं।
सोतानं संवरं ब्रूहि, केन सोता पिधिय्यरे"॥5/2/3॥

"Savanti sabbadhi sotā, (iccāyasmā ajito) Sotānaṃ kiṃ nivāraṇaṃ;
Sotānaṃ saṃvaraṃ brūhi, kena sotā pidhiyyare".॥3॥

"स्रवन्ति सर्वत्र स्रोतांसि, (इत्यायुष्मान् *अजितः*) स्रोतसां किं निवारणम् ।
स्रोतसां संवरं ब्रूहि, केन स्रोतांसि पिधीयन्ते"॥3॥

अजित –सर्वत्र तृष्णा की धारायें बहती हैं । धाराओं का क्या निवारण है ? धाराओं के आवरण को बतावें, धारायें किससे बन्द हो जाती है ?॥3॥

'The streams of desire flow in every direction,' —so said the venerable Agita ;—' what dams the streams, say what restrains the streams, by what may the streams be shut off'?' .3.

"यानि सोतानि लोकस्मिं, (अजिता ति भगवा) सति तेसं निवारणं।
सोतानं संवरं ब्रूमि, पञ्ञायेते पिधिय्यरे"॥5/2/4॥

"Yāni sotāni lokasmiṃ, (ajitā ti bhagavā) Sati tesaṃ nivāraṇaṃ;
Sotānaṃ saṃvaraṃ brūmi, paññāyete pidhiyyare".॥4॥

"यानि स्रोतासिं लोके, (*अजित* इति भगवान्) स्मृतिः तेषां निवारणम् ।
स्रोतसां संवरं ब्रवीमि, प्रज्ञया एतानि पिधीयन्ते"॥4॥

भगवान् –संसार में जितनी धारायें हैं, स्मृति उनका निवारण है । इन धाराओं का आवरण बताता हूँ। ये प्रज्ञा से बन्द हो जाती है ॥4॥

'Whatever streams there are in the world, O Agita,'—so said Bhagavān,—' thoughtfulness is their dam, thoughtfulness I call the restraint of the streams, by understanding they are shut off.' .4.

"पञ्ञा चेव सति यं च, (इच्चायस्मा अजितो) नामरूपं च मारिस।
एतं मे पुट्ठो पब्रूहि, कत्थेतं उपरुज्झति"॥5/2/5॥

"Paññā ceva sati yaṃ ca, (iccāyasmā ajito) Nāmarūpaṃ ca mārisa;
Etaṃ me puṭṭho pabrūhi, katthetaṃ uparujjhati".॥5॥

"प्रज्ञा चैव स्मृतिः यच्च, (इत्यायुष्मान् *अजितः*) नामरूपञ्च *मारिस* ! ।
एतन्मयि पृष्टे प्रब्रूहि, कुत्र एतदुपरुध्यते"॥5॥

अजित–हे मार्ष ! प्रज्ञा, स्मृति और नाम-रूप–इनका अन्त कहाँ होता है? पूछने पर मुझे इसे बतायें॥5॥

'Both understanding and thoughtfulness,'—so said the venerable Agita,—' and name and shape', O venerable man,—asked about this by me, declare by what is this stopped?' .5.

"यमेतं पञ्हं अपुच्छि, अजित तं वदामि ते।
यत्थ नामं च रूपं च, असेसं उपरुज्झति।
विञ्ञाणस्स निरोधेन, एत्थेतं उपरुज्झति"॥5/2/6॥

"Yametaṃ pañhaṃ apucchi, ajita taṃ vadāmi te;
Yattha nāmaṃ ca rūpaṃ ca, asesaṃ uparujjhati;
Viññāṇassa nirodhena, etthetaṃ uparujjhati".॥6॥

"यदेतं प्रश्नमपृच्छः, *अजित* ! तं वदामि त्वाम् ।
यत्र नाम च रूपञ्च, अशेषमुपरुध्यते ।
विज्ञानस्य निरोधात्, अत्रेतमुपरुध्यते"॥6॥

भगवान् –अजित ! जो प्रश्न तुमने किया है, मैं तुम्हें उसे बताता हूँ । जहाँ नाम और रूप सम्पूर्णतः निरुद्ध हो जाते हैं, विज्ञान के निरोध से इनका विरोध हो जाता है॥6॥

'This question which thou hast asked, O Agita, that I will explain to thee; I will explain to thee by what name and shape are totally stopped; by the cessation of consciousness this is stopped here.'6.

"ये च सङ्खातधम्मासे, ये च सेखा पुथू इध।
तेसं मे निपको इरियं, पुट्ठो पब्रूहि मारिस"॥5/2/7॥

"Ye ca saṅkhātadhammāse, ye ca sekhā puthū idha;
Tesaṃ me nipako iriyaṃ, puṭṭho pabrūhi mārisa".॥7॥

"ये च संख्यातधर्माः, ये च शैक्ष्याः पृथु इह ।
तेषां मयि निपकः ईर्यां पृष्टे प्रब्रूहि *मारिस* !"॥7॥

अजित –जो सभी बातों को जान गये हैं और जो यहाँ बहुत शैक्ष्य लोग हैं, मार्ष ! पूछने पर ज्ञानी आप उनकी चर्या को बतायें॥7॥

'Those who have examined all Dhammas and those who are disciples and those who are common men here, —when thou art asked about their mode of life, declare it unto me, thou who art wise, O venerable man.' .7.

"कामेसु नाभिगिज्झेय्य, मनसानाविलो सिया।
कुसलो सब्बधम्मानं, सतो भिक्खु परिब्बजे'ति॥5/2/8॥

"Kāmesu nābhigijjheyya, manasānāvilo siyā;
Kusalo sabbadhammānaṃ, sato bhikkhu paribbaje"ti.॥8॥

"कामेषु नाभिगृध्येत्, मनसाऽनाबिलः स्यात् ।
कुशलः सर्वधर्माणाम्, स्मृतो भिक्षुः परिव्रजेत्" इति॥8॥

भगवन्–काम भोगों में लिप्त न हो, मन को निर्मल रखे, सभी धर्मों में कुशल हो; भिक्षु स्मृति के साथ विचरण करे॥8॥

'Let the Bhikkhu not crave for sensual pleasures, let him be calm in mind, let him wander about skilful in all Dhammas and thoughtful.'.8.

अजितमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Ajitamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 3) तिस्समेत्तेय्यमाणवपुच्छा (Tissametteyyamāṇavapucchā)

"कोध सन्तुसितो लोके, (इच्चायस्मा तिस्समेत्तेय्यो) कस्स नो सन्ति इञ्जिता।
को उभन्तमभिञ्ञाय, मज्झे मन्ता न लिप्पति ।
कं ब्रूसि महापुरिसोति, को इध सिब्बिनिमच्चगा"॥5/3/1॥

"Kodha santusito loke, (iccāyasmā tissametteyyo) Kassa no santi iñjitā;
Ko ubhantamabhiññāya, majjhe mantā na lippati;
Kaṃ brūsi mahāpurisoti, ko idha sibbinimaccagā".॥1॥

"क इह सन्तुष्टो लोके, (इत्यायुष्मान् *तिस्स मेत्तेय्य*) कस्य न सन्ति इञ्जिता: ।
क उभयान्तमभिज्ञाय, मध्ये मन्ता न लिम्पति ।
कं ब्रूषे महापुरुष इति, क इह सीवनीमत्यगात्" इति॥1॥

तिस्समेत्तेय्य–इस संसार में कौन सन्तुष्ट है ? किसमें चंचलताएँ नहीं ? कौन ज्ञानी दोनों अन्तों को जानकर बीच में लिप्त नहीं होता ? किसे महापुरुष कहते हैं ? कौन यहाँ तृष्णा से परे हो गया ?॥1॥

'Who is contented in the world'—so said the venerable Tissametteyya,—' who is without comm otions? Who after knowing both ends does not stick in the middle, as far as his understanding is concerned? Whom dost thou call a great man? Who has overcome desire in this world?' .1.

"कामेसु ब्रह्मचरियवा, (मेत्तेय्या ति भगवा) वीततण्हो सदा सतो।
सङ्खाय निब्बुतो भिक्खु, तस्स नो सन्ति इञ्जिता॥5/3/2॥

"Kāmesu brahmacariyavā, (metteyyā ti bhagavā) Vītataṇho sadā sato;
Saṅkhāya nibbuto bhikkhu, tassa no santi iñjitā.॥2॥

"कामेषु ब्रह्मचर्यवान्, (*मेत्तेय्य* इति भगवान्) वीततृष्ण: सदा स्मृत:।
संख्याय निवृत्तो भिक्षु:, तस्य न सन्ति इञ्जिता:॥2॥

भगवान् – जो काम-भोगों को त्याग ब्रह्मचारी है, तृष्णा-रहित है, स्मृतिमान् है और जो भिक्षु ज्ञान द्वारा मुक्त है, उसमें चंचलताएँ नहीं हैं॥2॥

'The Bhikkhu who abstains from sensual pleasures, O Metteyya,'—so said Bhagavān,—' who is free from desire, always thoughtful, happy by reflection, he is without commotions,.2

"सो उभन्तमभिञ्ञाय, मज्झे मन्ता न लिप्पति।
तं ब्रूमि महापुरिसो ति, सो इध सिब्बिनिमच्चगा''ति॥5/3/3॥

"So ubhantamabhiññāya, majjhe mantā na lippati;
Taṃ brūmi mahāpuriso ti, so idha sibbinimaccagā"ti.
"स उभयान्तमभिज्ञाय, मध्ये मन्ता न लिम्पति ।
तं ब्रवीमि महापुरुष इति, स इह सीवनीमत्यगात्" इति॥3॥

वह ज्ञानी दोनों अन्तों को जानकर बीच में लिप्त नहीं होता है। मैं उसे महापुरुष बताता हूँ, वही यहाँ तृष्णा के परे हो गया॥3॥

He after knowing both ends does not stick in the middle, as far as his understanding is concerned; him I call a great man; he has overcome craving in this world.' .3.

तिस्समेत्तेय्यमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Tissametteyyamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 4) पुण्णकमाणवपुच्छा (Puṇṇakamāṇavapucchā)

"अनेजं मूलदस्सावि, (इच्चायस्मा पुण्णको) अत्थि पञ्हेन आगमं।
किं निस्सिता इसयो मनुजा, खत्तिया ब्राह्मणा देवतानं।
यञ्ञमकप्पयिंसु पुथूध लोके, पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं"॥5/4/1॥

"Anejaṃ mūladassāviṃ, (iccāyasmā puṇṇako) Atthi pañhena āgamaṃ;
Kiṃ nissitā isayo manujā, khattiyā brāhmaṇā devatānaṃ;
Yaññamakappayiṃsu puthūdha loke, pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ".॥1॥

"अनेजं मूलदर्शिनम्, (इत्यायुष्मान् *पुण्णकः*) अस्ति प्रश्नेन आगमम् ।
किं निःश्रिता ऋषयो मनुजाः, क्षत्रियाः ब्राह्मणाः देवताभ्यः ।
यज्ञमकल्पयन् पृथु इह लोके, पृच्छामि तं भगवन् ! ब्रूहि मामेतम्"॥1॥

पुण्णक– तृष्णा रहित, अकुशल मूल आदि के देखने वाले के पास मैं प्रश्न करने आया हूँ । किस कारण ऋषियों, क्षत्रियों और ब्राह्मणों ने देवताओं के लिए इस संसार में बहुत यज्ञ किये थे ? भगवन् ! आपसे यह पूछता हूँ, आप इसे बतावें॥1॥

'To him who is without desire, who has seen the root of sin,'—so said the venerable Punnaka, —' I have come supplicatingly with a question: on account of what did the Isis and men, Khattiyas and Brāhmaṇas, offer sacrifices to the gods abundantly in this world? about this I ask thee, O Bhagavān, tell me this.' .1.

"ये केचिमे इसयो मनुजा, (पुण्णका ति भगवा) खत्तिया ब्राह्मणा
देवतानं यञ्ञमकप्पयिंसु पुथूध लोके, आसीसमाना पुण्णक!
इत्थत्तं जरं सिता यञ्ञमकप्पयिंसु"॥5/4/2॥

"Ye kecime isayo manujā, (puṇṇakā ti bhagavā) Khattiyā brāhmaṇā devatānaṃ;
Yaññamakappayiṃsu puthūdha loke, āsīsamānā
puṇṇaka itthattaṃ; Jaraṃ sitā yaññamakappayiṃsu".2

"ये केचन इमे ऋषयो मनुजाः, (*पुण्णक* इति भगवान्) क्षत्रियाः ब्राह्मणाः
देवताभ्यः यज्ञमकल्पयन् पृथु इह लोके, आशीषमाणाः *पुण्णक* !
इत्थं भावं जरां श्रिताः यज्ञमकल्पयन्"॥2॥

भगवान् –पुण्णक ! बुढ़ापे को प्राप्त होने पर जीवन की कामना करते हुए इस संसार में ऋषियों, मनुष्यों, क्षत्रियों तथा ब्राह्मणों ने देवताओं के नाम बहुत से यज्ञ किये थे॥2॥

'All these Isis and men, Khattiyas and Brahamanas, O Punnaka—so said Bhagavān,—' who offered sacrifices to the gods abundantly in this world, offered sacrifices, O Punnaka, after reaching old age, wishing for their present condition.'.2.

"ये केचिमे इसयो मनुजा, (इच्चायस्मा पुण्णको)
खत्तिया ब्राह्मणा देवतानं, यञ्ञमकप्पयिंसु पुथूध लोके॥5/4/3॥
कच्चिस्सु ते भगवा यञ्ञपथे अप्पमत्ता।
अतारुं जातिं च जरं च मारिस, पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं"॥5/4/4॥

"Ye kecime isayo manujā, (iccāyasmā puṇṇako)
Khattiyā brāhmaṇā devatānaṃ; Yaññamakappayiṃsu puthūdha loke,॥3॥
kaccissu te bhagavā yaññapathe appamattā;
Atāruṃ jātiṃ ca jaraṃ ca mārisa, pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ". ॥4॥

"ये केचन इमे ऋषयो मनुजा:, (इत्यायुष्मान् *पुण्णक:*)।
क्षत्रिया: ब्राह्मणा: देवताभ्य:, यज्ञमकल्पयन् पृथु इह लोके॥3॥
कच्चित् स्वित् ते भगवन् ! यज्ञपथेऽप्रमत्ता: ।
अतारिषु: जातिञ्च जराञ्च *मारिस* ! पृच्छामि तं भगवन्! ब्रूहि मां तम्"॥4॥

पुण्णक –इस संसार में जिन ऋषियों, मनुष्यों, क्षत्रियों तथा ब्राह्मणों ने देवताओं के लिए बहुत से यज्ञ किये थे, भगवन् ! क्या वे यज्ञपथ में अप्रमत्त हो जन्म और बुढ़ापा के पार हो गये ! हे मार्ष ! मैं यह पूछता हूँ, भगवन् ! आप इसे बतावें॥3-4॥

'All these saints and men, Khattiyas and Brahamanas,'—so said the venerable Punnaka,—' who offered sacrifices to the gods abundantly in this world, did they, O Bhagavān, indefatigable in the way of offering, cross over both birth and old age, O venerable man? I ask thee, O Bhagavān, tell me this.' .3-4.

"आसीसन्ति थोमयन्ति, अभिजप्पन्ति जुहन्ति (पुण्णका ति भगवा)
कामाभिजप्पन्ति पटिच्च लाभं ।
ते याजयोगा भवरागरत्ता, नातरिंसु जातिजरं ति ब्रूमि"॥5/4/5॥

"Āsīsanti thomayanti, abhijappanti juhanti; (Puṇṇakā ti bhagavā)
Kāmābhijappanti paṭicca lābhaṃ,
te yājayogā bhavarāgarattā; Nātariṃsu jātijaraṃ ti brūmi". ॥5॥

"आशंसन्ते स्तुवन्ति, अभिजल्पन्ति जुह्वति (*पुण्णक* इति भगवान्)
कामानभिजल्पन्ति प्रतीत्य लाभम्।
ते यज्ञयोगा: भवरागरक्ता:, नातारिषु: जातिजरामिति ब्रवीमि"॥5॥

भगवान्–हे पुण्णक ! लाभ के कारण वे देवताओं के गुण गाते हैं, प्रशंसा करते हैं, चर्चा करते हैं, यज्ञ करते हैं और काम-भोग की इच्छा करते हैं । मैं बताता हूँ कि यज्ञ में आसक्त, भव-तृष्णा में रत वे जन्म तथा बुढ़ापा के पार नहीं हुए॥5॥

'They wished for, praised, desired, abandoned sensual pleasures, O Punnaka,'—so said Bhagavān, —' they desired sensual pleasures on account of what they reached by them; they, devoted to offering, dyed with the passions of existence, did not cross over birth and old age, so I say.'5.

"ते चे नातरिंसु याजयोगा, (इच्चायस्मा पुण्णको) यञ्ञेहि जातिं च जरं च मारिस।
अथ को चरहि देवमनुस्सलोके, अतारि जातिं च जरं च मारिस।
पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं"॥5/4/6॥

"Te ce nātariṃsu yājayogā, (iccāyasmā puṇṇako) Yaññehi jātiṃ ca jaraṃ ca mārisa;
Atha ko carahi devamanussaloke, atāri jātiṃ ca jaraṃ ca mārisa;
Pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ". ॥6॥

"ते चेत् नातारिषु: यज्ञयोगा:, (इत्यायुष्मान् *पुण्णक:*) यज्ञै: जातिञ्च जराञ्च *मारिस* !
अथ क: तर्हि देवमनुष्यलोकेऽतारीत् जातिञ्च जराञ्च *मारिस* !
पृच्छामि तं भगवन्! ब्रूहि मां तम्"॥6॥

पुण्णक –हे मार्ष ! दान में रत लोग यज्ञों द्वारा जन्म तथा बुढ़ापा के पार नहीं हो गए तो फिर हे मार्ष! देव-मनुष्य लोक में कौन जन्म तथा बुढ़ापा के पार हो गया है ? मैं पूछता हूँ । भगवन् ! मुझे यह बतावें॥6॥

'If they, devoted to offering,'—so said the venerable Punnaka,—' did not by offering cross over birth and old age, O venerable man, who then in the world of gods and men crossed over birth and old age, O venerable man, I ask thee, O Bhagavān, tell me this?' .6.

"सङ्खाय लोकस्मि परोपरानि, (पुण्णका ति भगवा)
यस्सिञ्जितं नत्थि कुहिञ्चि लोके।
सन्तो विधूमो अनीघो निरासो, अतारि सो जातिजरं ति ब्रूमी''ति॥5/4/7॥

"Saṅkhāya lokasmi paroparāni, (puṇṇakā ti bhagavā)
Yassiñjitaṃ natthi kuhiñci loke;
Santo vidhūmo anīgho nirāso, atāri so jātijaraṃ ti brūmī"ti.॥7॥

"संख्याय लोके पराऽवरानि, (*पुण्णक* इति भगवान्)
यस्य इञ्जितं नास्ति कुहिञ्चित् लोके ।
सन्तो विधूमोऽनिघो निराश:, अतारीत् स जातिजरामिति ब्रवीमि" इति॥7॥

भगवान् –जो संसार के आर-पार को जान गया है, जिससे संसार के प्रति कहीं भी तृष्णा नहीं है, शान्त, वासना रहित, पाप रहित, आसक्ति रहित वह जन्म तथा बुढ़ापा के पार हो गये हैं–ऐसा मैं बताता हूँ॥7॥

'Having considered everything' in the world, O Punnaka,'—so said Bhagavān,—' he for whom there is no commotion. Anywhere in the world, who is calm without the smoke of passions, free from woe, free from craving, be crossed over birth and old age, so I say.' .7.

पुण्णकमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Puṇṇakamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 5) मेत्तगूमाणवपुच्छा (Mettagūmāṇavapucchā)

"पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं, (इच्चायस्मा मेत्तगू)
मञ्ञामि तं वेदगुं भावितत्तं।
कुतो नु दुक्खा समुदागता इमे, ये केचि लोकस्मिमनेकरूपा"॥5/5/1॥

"Pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ, (iccāyasmā mettagū)
Maññāmi taṃ vedaguṃ bhāvitattaṃ;
Kuto nu dukkhā samudāgatā ime, ye keci lokasmimanekarūpā".॥5॥

"पृच्छामि त्वां भगवन् ! ब्रूहि मां तत्, (इत्यायुष्मान् *मेत्तगू:*)
मन्ये त्वां वेदगं भावितत्त्वम्।
कुतो नु दु:खा: समुद्गता इमे, ये केचिल्लोकेऽनेकरूपाणि"॥1॥

मेत्तगू –भगवान् ! आप से पूछता हूँ, मुझे बतावें । मैं आपको ज्ञानी तथा संयमी मानता हूँ । संसार में जो अनेक प्रकार के दु:ख हैं, ये कहाँ से उत्पन्न हुए हैं ?॥1॥

'I ask thee, O Bhagavān, tell me this,'—so said the venerable Mettagu, —' I consider thee accomplished and of a cultivated mind, why are these creatures, whatsoever they are of many kinds in the world, always subject to pain?' .1.

"दुक्खस्स वे मं पभवं अपुच्छसि, (मेत्तगू ति भगवा)
तं ते पवक्खामि यथा पजानं।
उपधिनिदाना पभवन्ति दुक्खा, ये केचि लोकस्मिमनेकरूपा॥5/5/2॥

"Dukkhassa ve maṃ pabhavaṃ apucchasi, (mettagū ti bhagavā)
Taṃ te pavakkhāmi yathā pajānaṃ;
padhinidānā pabhavanti dukkhā, ye keci lokasmimanekarūpā.॥2॥

दुःखस्य वै मां प्रभवमपृच्छः, (*मेत्तगूः* इति भगवान्)
तत् त्वां प्रवक्ष्यामि यथा प्रजानतम् ।
उपधिनिदानात् प्रभवन्ति दुःखाः, ये केचिल्लोकेऽनेकरूपाः॥2॥

भगवान् –तुम मुझसे दुःख की उत्पत्ति को पूछते हो, मैं जैसा जानता हूँ, तुम्हें बताता हूँ । संसार में जो अनेक प्रकार के दुःख हैं, वे तृष्णा (उपधि) के कारण उत्पन्न होते हैं॥2॥

Thou mayest well ask me concerning the origin of pain, O Mettagu, so said Bhagavān,— 'I will explain that to thee in the way I myself know it: originating in the upadhis pains arise, whatsoever they are, of many kinds in the world. 2.

"यो वे अविद्वा उपधिं करोति, पुनप्पुनं दुक्खमुपेति मन्दो।
तस्मा पजानं उपधिं न कयिरा, दुक्खस्स जातिप्पभवानुपस्सी"॥5/5/3॥

"Yo ve avidvā upadhiṃ karoti, punappunaṃ dukkhamupeti mando;
Tasmā pajānaṃ upadhiṃ na kayirā, dukkhassa jātippabhavānupassī".॥3॥

"यो वै अविद्वान् उपधिं करोति, पुनर्पुनः दुःखमुपैति मन्दः।
तस्मात् प्रजानन् उपधिं न कुर्यात्, दुःखस्य जाति-*प्रभवानुपश्यी*"॥3॥

जो अज्ञानी तृष्णा करता है, वह मूर्ख बार-बार दुःख में पड़ता है । इसलिए जानते हुए, 'दुःख की उत्पत्ति तृष्णा के कारण होती है' – ऐसा मनन करते हुए, तृष्णा न करे॥3॥

'He who being ignorant creates upadhi, that fool again undergoes pain; therefore let not the wise man create upadhi, considering that this is the birth and origin of pain.' .3.

"यं तं अपुच्छिम्ह अकित्तयी नो, अञ्ञं तं पुच्छाम तदिङ्घ ब्रूहि।
कथं नु धीरा वितरन्ति ओघं, जातिं जरं सोकपरिद्दवं च।
तं मे मुनि साधु वियाकरोहि, तथा हि ते विदितो एस धम्मो"॥5/5/4॥

"Yaṃ taṃ apucchimha akittayī no, aññaṃ taṃ pucchāma tadiṅgha brūhi;
Kathaṃ nu dhīrā vitaranti oghaṃ, jātiṃ jaraṃ sokapariddavaṃ ca;
Taṃ me muni sādhu viyākarohi, tathā hi te vidito esa dhammo".॥4॥

"यत् त्वामपृच्छम् अकीर्तयत् नः, अन्यं त्वां पृच्छामि तदिह ब्रूहि ।
कथन्नु धीराः वितरन्ति ओघम्, जातिं जरां शोकपरिदेवनञ्च ।
तं मां मुनि ! साधु व्याकुरु, तथा हि त्वया विदित एष धर्मः"॥ 4॥

मेत्तगू –मैंने आपसे जो पूछा, उसे बताया । अब मैं दूसरा प्रश्न पूछ रहा हूँ, उसे बतायें । कैसे धीर लोग जन्म, बुढ़ापा, शोक और विलाप की बाढ़ को पार करते हैं ? हे मुनि ! उसे मुझे भली प्रकार बतायें, क्योंकि इस धर्म को आप वैसा जानते हैं॥4॥

'What we have asked thee thou hast explained to us; another question I ask thee, answer that, pray: How do the wise cross the stream, birth and old age, and sorrow and lamentation? Explain that thoroughly to me, O Muni, for this thing dhamma is well known to thee.'.4.

"कित्तयिस्सामि ते धम्मं, (मेत्तगू ति भगवा), दिट्ठे धम्मे* अनीतिहं।
यं विदित्वा सतो चरं, तरे लोके विसत्तिकं"॥5/5/5॥

"Kittayissāmi te dhammaṃ, (mettagū ti bhagavā) Diṭṭhe dhamme anītihaṃ;
Yaṃ viditvā sato caraṃ, tare loke visattikaṃ".॥5॥

"कीर्तयिष्यामि त्वां धर्मम्, (*मेत्तगू*: इति भगवान्) दृष्टे धर्मेऽनैतिह्यम् ।
यं विदित्वा स्मृतिं चरन्, तरेत् लोके विसक्तिकम्"॥5॥

भगवान् –मैं तुम्हें उस धर्म को बताऊँगा, जिसे इसी जन्म में स्वयं साक्षात्कार कर, जानकर स्मृतिमान् हो विचरण करते हुए संसार में तृष्णा को पार कर जाता है॥5॥

'I will explain the Dhamma to thee, O Mettagü,'—so said Bhagavān ;—' if a man in the visible world, without any traditional instruction, has understood it, and wanders about thoughtful, he may overcome desire in the world.'.5.

* अत्तपच्चक्खं=आत्मप्रत्यक्षम्

"तं चाहं अभिनन्दामि, महेसि धम्ममुत्तमं।
यं विदित्वा सतो चरं, तरे लोके विसत्तिकं"॥5/5/6॥

"Taṃ cāhaṃ abhinandāmi, mahesi dhammamuttamaṃ;
Yaṃ viditvā sato caraṃ, tare loke visattikaṃ".॥6॥

"तं चाहमभिनन्दामि, *महर्षे*! धर्ममुत्तमम् ।
यं विदित्वा स्मृतिं चरन्, तरेत् लोके विसक्तिकम्"॥6॥

मेत्तगू –हे महर्षि ! मैं उस उत्तम धर्म का अभिनन्दन करता हूँ जिसे जानकर स्मृतिमान् हो विचरने वाला संसार में तृष्णा को पार करता है॥6॥

'And I take a delight in that in the most excellent Dhamma, O great Isi, which if a man has understood, and he wanders about thoughtful, he may overcome desire in the world.'.6.

"यं किञ्चि सम्पजानासि, (मेत्तगू ति भगवा)
उद्धं अधो तिरियं चा पि मज्झे।
एतेसु नन्दिं च निवेसनं च, पनुज्ज विञ्ञाणं भवे न तिट्ठे॥5/5/7॥

"Yaṃ kiñci sampajānāsi, (mettagū ti bhagavā)
Uddhaṃ adho tiriyaṃ cā pi majjhe;
Etesu nandiñca nivesanaṃ ca, panujja viññāṇaṃ bhave na tiṭṭhe.॥7॥

"यत् किञ्चित् संप्रजानासि, (*मेत्तगू*: इति भगवन्),
ऊर्ध्वमधः तिर्यक् चापि मध्ये ।
एतेषु नन्दिञ्च निवेशनञ्च, प्रणुद्य विज्ञानं भवे न तिष्ठेत्॥7॥

भगवान् –ऊपर, नीचे, तिरछे तथा बीच में जो भी जानते उनमें तृष्णा तथा राग को त्याग कर मन को भव में न लगने दे॥7॥

'Whatsoever thou knowest, O Mettagu,'—so said Bhagavān,—' of what is above, below, across and in the middle, taking no delight and no rest in these things, let thy mind not dwell on existence.7.

"एवंविहारी सतो अप्पमत्तो, भिक्खु चरं हित्वा ममायितानि।
जातिं जरं सोकपरिद्दवं च, इधेव विद्वा पजहेय्य दुक्खं"॥5/5/8॥

"Evaṃvihārī sato appamatto, bhikkhu caraṃ hitvā mamāyitāni;
Jātiṃ jaraṃ sokapariddavaṃ ca, idheva vidvā pajaheyya dukkhaṃ".॥8॥

"एवंविहारी स्मृतोऽप्रमत्तः, भिक्षुः चरन् हित्वा ममायितानि।
जातिं जरां शोकपरिदेवनञ्च, इहैव विद्वान् प्रजह्यात् दुःखम्"॥8॥

इस प्रकार स्मृतिमान् और अप्रमादी होकर विहरने वाला भिक्षु ममत्व, जन्म, बुढ़ापा, शोक और विलाप को छोड़ कर विचरण करते- यही जानकर दुःख को त्याग दे॥8॥

'Living so, thoughtful, strenuous, let the Bhikkhu wandering about, after abandoning selfishness, birth, and old age, and sorrow, and lamentation, being a wise man, leave pain in this world.'.8.

"एताभिनन्दामि वचो महेसिनो, सुकित्तितं गोतमनूपधीकं।
अद्धा हि भगवा पहासि दुक्खं, तथा हि ते विदितो एस धम्मो॥5/5/9॥

"Etābhinandāmi vaco mahesino, sukittitaṃ gotamanūpadhīkaṃ;
Addhā hi bhagavā pahāsi dukkhaṃ, tathā hi te vidito esa dhammo.॥9॥

"एतानभिनन्दामि वचो महर्षे ! सुकीर्तितं *गौतम* ! अनुपधिकम्•।
अद्धा हि भगवान् प्राहासीत् दुःखम्, तथाहि त्वया विदित एष धर्मः॥9॥

मेत्तगू –महर्षि की इस बात का अभिनन्दन करता हूँ । हे गौतम ! आपने निर्वाण को सुन्दर ढंग से बतलाया। निश्चित ही भगवान् ने दुःख का प्रहाण कर लिया है, क्योंकि आपने वैसा ही भलीप्रकार इस धर्म को जान लिया है॥9॥

'I delight in these words of the great Isi; well expounded, O Gotama, is by thee freedom from upadhi (Nibbana). Bhagavān in truth has left pain, for this Dhamma is well known to thee'. 9.

•निब्बानं

"ते चापि नूनप्पजहेय्यु दुक्खं, ये त्वं मुनि अट्ठितं ओवदेय्य।
तं तं नमस्सामि समेच्च नाग, अप्पेव मं भगवा अट्ठितं ओवदेय्य"॥5/5/10॥

"Te cāpi nūnappajaheyyu dukkhaṃ, ye tvaṃ muni aṭṭhitaṃ ovadeyya;
Taṃ taṃ namassāmi samecca nāga, appeva maṃ bhagavā aṭṭhitaṃ ovadeyya".॥10॥

"ते चापि नूनं प्रजह्युः दुःखम्, यस्मात् त्वं मुनि ! अस्थितमववदेत् ।
तं त्वां नंस्यामि समेत्य *नागम्*, अप्येव मां भगवन् ! अस्थितमववदेत्"॥10॥

निश्चय ही वे भी दुःख को त्याग देंगे, जिन्हें हे मुनि ! आप सदा उपदेश देंगे । हे नाग (उत्तम पुरुष) मैं आपके पास आकर नमस्कार करता हूँ । बहुत अच्छा हो कि भगवन्! मुझे सदा उपदेश दें॥10॥

'And those also will certainly leave pain whom thou, O Muni, constantly mayest admonish; therefore I bow down to thee, having come hither, O chief naga, may Bhagavān also admonish me constantly.'10.

"यं ब्राह्मणं वेदगुमाभिजञ्ञा, अकिञ्चनं कामभवे असत्तं।
अद्धा हि सो ओघमिमं अतारि, तिण्णो च पारं अखिलो अकङ्खो॥5/5/11॥

"Yaṃ brāhmaṇaṃ vedagumābhijaññā, akiñcanaṃ kāmabhave asattaṃ;
Addhā hi so oghamimaṃ atāri, tiṇṇo ca pāraṃ akhilo akaṅkho.॥11॥

"यं ब्राह्मणं वेदगमभिजानीत्, अकिञ्चनं कामभवेऽसक्तम् ।
अद्धा हि स ओघमिमं अतारीत्, तीर्णश्च पारमखिलोऽकाङ्क्षः॥11॥

भगवान् –जिस ब्राह्मण को ज्ञानी, अकिंचन, कामों में अनासक्त जानना, समझ लेना कि अवश्य ही उसने इस संसार रूपी बाढ़ को पार कर लिया है और वह पार उतरकर चित्त-मल तथा सन्देह से रहित हो गया॥11॥

'The Brāhmaṇa whom I may acknowledge as accomplished, possessing nothing, not cleaving to the world of lust, he surely has crossed this stream, and he has crossed over to the other shore, free from harshness akhila and free from doubt.11.

"विद्वा च यो वेदगू नरो इध, भवाभवे सङ्गमिमं विसज्ज।
सो वीततण्हो अनीघो निरासो, अतारि सो जातिजरं ति ब्रूमी"ति॥5/5/12॥

"Vidvā ca yo vedagū naro idha, bhavābhave saṅgamimaṃ visajja;
So vītataṇho anīgho nirāso, atāri so jātijaraṃ ti brūmī"ti.॥12॥

"विज्ञश्च यो वेदगः नर इह, भवाभवे सङ्गमिमं विसृज्य ।
स वीततृष्णः अनिघो निराशोऽतारीत् स जातिजरामिति ब्रवीमि" इति॥12॥

विज्ञ, ज्ञानी वह मनुष्य पुनर्जन्म की आसक्ति को छोड़कर, तृष्णा-रहित हो, पाप-रहित हो, कामना-रहित होकर जन्म तथा बुढ़ापा को पार कर लिया है–ऐसा मैं कहता हूँ॥12॥

'And he is a wise and accomplished man in this world; having abandoned this cleaving to reiterated existence he is without craving, free from woe, free from longing, he has crossed over birth and old age, so I say.' .12.

मेत्तगूमाणवपुच्छा निट्ठिता।
(Mettagūmāṇavapucchā niṭṭhitā.)

(5, 6) धोतकमाणवपुच्छा (Dhotakamāṇavapucchā)

"पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं, (इच्चायस्मा धोतको)
वाचाभिकङ्खामि महेसि तुय्हं।
तव सुत्वान निग्घोसं, सिक्खे निब्बानमत्तनो"॥5/6/1॥

"Pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ, (iccāyasmā dhotako)
Vācābhikaṅkhāmi mahesi tuyhaṃ;
Tava sutvāna nigghosaṃ, sikkhe nibbānamattano".॥1॥

"पृच्छामि त्वां भगवन् ! ब्रूहि मां तत्, (इत्यायुष्मान् *धोतकः*)
वाचमभिकांक्षामि महर्षे ! त्वदीयम् ।
तव श्रुत्वा निर्घोषम्, शिक्षेः निर्वाणमात्मनः"॥1॥

धोतक – हे भगवन् ! मैं आप से यह पूछता हूँ, मुझे बतायें । हे महर्षि ! मैं आपकी बात की आकांक्षा करता हूँ। आपकी बात को सुनकर अपने निर्वाण-प्राप्ति के लिए सीखे॥1॥

'I ask thee, O Bhagavān, tell me this,'—so said the venerable Dhotaka,—' I long for thy word, O great Isi; may one, having listened to thy utterance, learn his own extinction .1.

"तेनहातप्पं करोहि, (धोतका ति भगवा) इधेव निपको सतो।
इतो सुत्वान निग्घोसं, सिक्खे निब्बानमत्तनो"॥5/6/2॥

"Tenahātappaṃ karohi, (dhotakā ti bhagavā) idheva nipako sato;
Ito sutvāna nigghosaṃ, sikkhe nibbānamattano".॥2॥

"तेन हि आतप: कुरु, (*धोतक* इति भगवान्) इहेव निपक: स्मृत: ।
इत: श्रुत्वा निर्घोषम्, शिक्षे: निर्वाणमात्मन:"॥2॥

भगवान् –तुम प्रयत्न करो । यहीं एकान्तवासी और स्मृतिमान् हो, यहाँ बात को सुनकर अपनी निर्वाण-प्राप्ति के लिए अभ्यास करो॥2॥

'Exert thyself then, O Dhotaka,'—so said Bhagavān,—' being wise and thoughtful in this world, let one, having listened to my utterance, learn his own extinction.' .2.

"पस्सामहं देवमनुस्सलोके, अकिञ्चनं ब्राह्मणमिरियमानं।
तं तं नमस्सामि समन्तचक्खु, पमुञ्च मं सक्क कथंकथाहि"॥5/6/3॥

"Passāmahaṃ devamanussaloke, akiñcanaṃ brāhmaṇamiriyamānaṃ;
Taṃ taṃ namassāmi samantacakkhu, pamuñca maṃ sakka kathaṃkathāhi".3.

"पश्याम्यहं देवमनुष्यलोके, अकिञ्चनं ब्राह्मणम् ईर्यमाणम् ।
तं त्वां नंस्यामि *समन्तचक्षो* ! प्रमुञ्च मां *शक्र* ! कथाकथाभ्य:"॥3॥

धोतक –मैं देव और मनुष्य लोक में आप अकिंचन ब्राह्मण को विचरण करते हुए देखता हूँ । हे समन्तचक्षु ! आपको मैं नमस्कार करता हूँ । हे शक्र ! मुझे संशय से मुक्त करें॥3॥

Dhotaka: 'I see in the world of gods and men a Brahamana wandering about, possessing nothing; therefore I bow down to thee, O thou allseeing one, free me, O Sakka, from doubts.'.3.

"नाहं सहिस्सामि पमोचनाय, कथंकथिं धोतक कञ्चि लोके।
धम्मं च सेट्ठं अभिजानमानो, एवं तुवं ओघमिमं तरेसि"॥5/6/4॥

"Nāhaṃ sahissāmi pamocanāya, kathaṃkathiṃ dhotaka kañci loke;
Dhammaṃ ca seṭṭhaṃ abhijānamāno, evaṃ tuvaṃ oghamimaṃ taresi".॥4॥

"नाहं सहिष्ये प्रमोचनाय, *कथंकथिं धोतक* ! कस्मिञ्चिल्लोके ।
धर्मञ्च श्रेष्ठम् अभिज्ञायमान:, एवं त्वम् ओघमिमं तरिष्यसि"॥4॥

भगवान्–हे धोतक ! मैं संसार में किसी संशयी को मुक्त करने नहीं जाऊँगा । जब तुम श्रेष्ठ धर्म को जान लोगे तो इस प्रकार तुम इस बाढ़ को पार कर जाओगे॥4॥

Buddha: 'I shall not go to free any one in the world who is doubtful, O Dhotaka; when thou hast learned the best Dhamma, then thou shalt cross this stream.'

"अनुसास ब्रह्मे करुणायमानो, विवेकधम्मं यमहं विजञ्ञं।
यथाहं आकासोव अब्यापज्जमानो, इधेव सन्तो असितो चरेय्यं"॥5/6/5॥

"Anusāsa brahme karuṇāyamāno, vivekadhammaṃ yamahaṃ vijaññaṃ;
Yathāhaṃ ākāsova abyāpajjamāno, idheva santo asito careyyaṃ".॥5॥

"अनुशास ब्रह्मन् ! करुणायमाणः, विवेकधर्मं यमहं विजानीयाम् ।
यथाऽहं आकाश इव अव्यापद्यमानः, इहैव सन्तोऽसक्तः चरेयम्"॥5॥

धोतक –हे ब्रह्मा ! करुणा करते हुए मुझे उपदेश दें जिससे कि मैं विवेकी धर्म को जान लूँ और आकाश के समान निर्मल हो यहीं शान्त हो, अनासक्त हो विचरण करूँ॥5॥

Dhotaka: 'Teach me, O Brāhmaṇa, having compassion on me, the Dhamma of seclusion (Nibbana), that I may understand that I, without falling into many shapes like the air, may wander calm and independent in this world. 5.

"कित्तयिस्सामि ते सन्तिं, (धोतका ति भगवा) दिट्ठे धम्मे अनीतिहं।
यं विदित्वा सतो चरं, तरे लोके विसत्तिकं"॥5/6/6॥

"Kittayissāmi te santiṃ, (dhotakā ti bhagavā) diṭṭhe dhamme anītihaṃ;
Yaṃ viditvā sato caraṃ, tare loke visattikaṃ".॥6॥

"कीर्तयिष्यामि ते सन्तिम्, (धोतक इति भगवान्) दृष्टे धर्मेऽनैतिह्यम् ।
यं विदित्वा स्मृतश्चरन्, तरेल्लोके विसक्तिकम्"॥6॥

भगवान् –मैं तुम्हें शान्ति को बताऊँगा, जिसे इसी जन्म में साक्षात् कर, जानकर, स्मृतिमान् हो विचरण करोगे और संसार में तृष्णा को पार कर लोगे॥6॥

'I will explain to thee peace a, O Dhotaka,'— so said Bhagavān ;—' if a man in the visible world, without any traditional instruction, has understood it and wanders about thoughtful, he may overcome desire in the world.' .6.

"तञ्चाहं अभिवन्दामि, महेसि सन्तिमुत्तमं।
यं विदित्वा सतो चरं, तरे लोके विसत्तिकं"॥5/6/7॥

"Tañcāhaṃ abhinandāmi, mahesi santimuttamaṃ;
Yaṃ viditvā sato caraṃ, tare loke visattikaṃ".॥7॥

"तं चाहमभिवन्दामि, महर्षे ! सन्तिमुत्तमम् ।
यं विदित्वा स्मृतः चरन्, तरेल्लोके विसक्तिकम्"॥7॥

धोतक –महर्षि ! मैं उस उत्तम शान्ति को प्रणाम करता हूँ, जिसे जानकर, स्मृतिमान् हो विचरण करते संसार में तृष्णा को पार कर जाय॥7॥

Dhotaka: 'And I take delight in that, the highest peace , O great Isi, which if a man has understood and he wanders about thoughtful, he may overcome desire in the world.' .7.

"यं किञ्चि सम्पजानासि, (धोतका ति भगवा)
उद्धं अधो तिरियं चा पि मज्झे।
एतं विदित्वा सङ्गोति लोके, भवाभवाय माकासि तण्हं''ति॥5/6/8॥

"Yaṃ kiñci sampajānāsi, (dhotakā ti bhagavā)
Uddhaṃ adho tiriyaṃ cā pi majjhe;
Etaṃ viditvā saṅgoti loke, bhavābhavāya mākāsi taṇhaṃ''ti.॥8॥

"यत्किञ्चित् संप्रजानासि, (धोतक इति भगवान्)

ऊर्ध्वमध: तिर्यक् चापि मध्ये ।

एतद् विदित्वा सङ्ग इति लोके, भवाभवाय मा कुरु, तृष्णाम्" इति॥8॥

भगवान् –ऊपर, नीचे, तिरछे तथा बीच में जो कुछ भी जानते हो, उसे संसार में आसक्ति जानकर पुनर्जन्म के लिए तृष्णा न करो॥8॥

'Whatsoever thou knowest, O Dhotaka,'—so said Bhagavān,—' of what is above, below, across, and in the middle, knowing this to be a tie in the world, thou must not thirst for reiterated exestence.'.8.

धोतकमाणवपुच्छा निट्ठिता।

(Dhotakamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 7) उपसीवमाणवपुच्छा (Upasīvamāṇavapucchā)

"एको अहं सक्क महन्तमोघं, (इच्चायस्मा उपसीवो)

अनिस्सितो नो विसहामि तारितुं।

आरम्मणं ब्रूहि समन्तचक्खु, यं निस्सितो ओघमिमं तरेय्यं"॥5/7/1॥

"Eko ahaṃ sakka mahantamoghaṃ, (iccāyasmā upasīvo)
Anissito no visahāmi tārituṃ;
Ārammaṇaṃ brūhi samantacakkhu, yaṃ nissito oghamimaṃ tareyyaṃ".॥1॥

"एकोऽहं शक्र ! महान्तमोघम्, (इत्यायुष्मान् *उपसीव:*)

अनि:श्रितो न विसहे तरितुम् ।

आलम्बनं ब्रूहि समन्तचक्षो ! यं नि:श्रित ओघमिमं तरेयम्"॥1॥

उपसीव –हे शक्र ! मैं अकेला हूँ । यह बहुत बड़ी बाढ़ है । बिना सहारा के मैं इसे पार करने में समर्थ नहीं हूँ। हे समन्तचक्षु ! कोई आलम्बन बतायें, जिसके सहारे मैं इस बाढ़ को पार कर जाऊँ॥1॥

'Alone, O Sakka, and without assistance I shall not be able to cross the great stream,'—so said the venerable Upasiva ;—' tell me an object, O thou all-seeing one, by means of which one may cross this stream.' 1.

"आकिञ्चञ्ञं पेक्खमानो सतिमा, (उपसीवा ति भगवा)

नत्थी ति निस्साय तरस्सु ओघं।

कामे पहाय विरतो कथाहि, तण्हक्खयं नत्तमहाभिपस्स"॥5/7/2॥

"Ākiñcaññaṃ pekkhamāno satimā, (upasīvā ti bhagavā)
Natthī ti nissāya tarassu oghaṃ;
Kāme pahāya virato kathāhi, taṇhakkhayaṃ nattamahābhipassa".॥2॥

"आकिञ्चन्यं प्रेक्षमाण: स्मृतिमान्, (उपसीव इति भगवान्)

नास्तीति नि:श्राय तरितुम् ओघम्।

कामं प्रहाय विरत: कथाभि:, तृष्णाक्षयं नक्तमहमभिपश्य"॥ 2॥

भगवान् –आकिंचन्यायतन को देखते हुए, स्मृतिमान् हो 'कुछ नहीं है' –ऐसा समझकर बाढ़ को पार कर जाओ। कामों का त्याग कर, संशयों से विरत हो, रात-दिन तृष्णा क्षय का चिन्तन करो॥2॥

'Having in view nothingness, being thoughtful, O Upasiva,'—so said Bhagavān,—' by the reflection of nothing existing shalt thou cross the stream; having abandoned sensual pleasures, being loath of doubts, thou shalt regard the extinction of craving (Nibbana), both day and night.' .2.

"सब्बेसु कामेसु यो वीतरागो, (इच्चायस्मा उपसीवो)
आकिञ्चञ्ञं निस्सितो हित्वा मञ्ञं।
सञ्ञाविमोक्खे परमे विमुत्तो, तिट्ठे नु सो तत्थ अनानुयायी"॥5/7/3॥

"Sabbesu kāmesu yo vītarāgo, (iccāyasmā upasīvo) Ākiñcaññaṃ nissito hitvā maññaṃ;
Saññāvimokkhe parame vimutto, tiṭṭhe nu so tattha anānuyāyī".॥3॥

"सर्वेषु कामेषु यो वीतराग:, (इत्यायुष्मान् *उपसीव:*)
आकिञ्चन्यं नि:श्रितो हित्वान्यम्ं।
संज्ञाविमोक्षेषु परमो विमुक्त:, तिष्ठेन्नु स तत्र अननुयायी"॥3॥

उपसीव –जो सभी कामों से विरत है, जिसने आकिंचन्यायतन के सहारे अन्य सबको त्याग दिया है, सातों संज्ञा विमोक्षों में उत्तम आकिंचन्यायतन में विमुक्त हो तो क्या वह वहाँ गए बिना रह सकता है॥3॥

'He whose passion for all sensual pleasures has departed, having resorted to nothingness, after leaving everything else, and being delivered in the highest deliverance by knowledge, will he remain there without proceeding further?' .3.

• अन्य नीचे की छ: प्रकार की समापत्तियों को त्याग कर-अट्ठकथा।

"सब्बेसु कामेसु यो वीतरागो, (उपसीवा ति भगवा)
आकिञ्चञ्ञं निस्सितो हित्वा मञ्ञं।
सञ्ञाविमोक्खे परमे विमुत्तो, तिट्ठेय्य सो तत्थ अनानुयायी"॥5/7/4॥

"Sabbesu kāmesu yo vītarāgo, (upasīvā ti bhagavā)
Ākiñcaññaṃ nissito hitvā maññaṃ;
Saññāvimokkhe parame vimutto, tiṭṭheyya so tattha anānuyāyī".॥4॥

"सर्वेषु कामेषु यो वीतराग:, (*उपसीव* इति भगवान्)
आकिञ्चनन्यं नि:श्रितो हित्वान्यम् ।
संज्ञाविमोक्षे परमे विमुक्त:, तिष्ठेत् स तत्र अननुयायी"॥4॥

भगवान्–जो सभी कामों से विरत है, जिसने आकिंचन्यायतन के सहारे अन्य सबको त्याग दिया है, संज्ञा-विमोक्षों में उत्तम आकिंचन्यायतन में विमुक्त हो, तो वह वहाँ गए बिना रह सकता है॥4॥

'He whose passion for all sensual pleasures has departed, O Upasiva,'—so said Bhagavān,— 'having resorted to nothingness after leaving everything else, and being delivered in the highest deliverance by knowledge, he will remain there without proceeding further.' .4.

"तिट्ठे चे सो तत्थ अनानुयायी, पूगं पि वस्सानं समन्तचक्खु।
तत्थेव सो सीतिसिया विमुत्तो, चवेथ विञ्ञाणं तथाविधस्स"॥5/7/5॥

"Tiṭṭhe ce so tattha anānuyāyī, pūgaṃ pi vassānaṃ samantacakkhu;
Tattheva so sītisiyā vimutto, cavetha viññāṇaṃ tathāvidhassa".॥5॥

"तिष्ठेच्चेत् स तत्र अननुयायी, पूगमपि वर्षाणां समन्तचक्षो! ।
तत्रैव स शीतिश्रितो विमुक्तः, च्वेथ विज्ञानं तथाविधस्य" ॥5॥

उपसीव –हे समन्तचक्षु ! यदि वह वहाँ गए बिना भी बहुत वर्षों तक रहे तो उस प्रकार के व्यक्ति का विज्ञान वहीं (आकिंचन्यायतन में ही) विमुक्त और शांत हो जाय ।

'If he remains there without proceeding further for a multitude of years, O thou all-seeing one, and if he becomes there tranquil and delivered, will there be consciousness for such a one?'.5.

"अच्ची यथा वातवेगेन खित्ता, (उपसीवा ति भगवा),
अत्थं पलेति न उपेति सङ्खं।
एवं मुनी नामकाया विमुत्तो, अत्थं पलेति न उपेति सङ्खं"॥5/7/6॥

"Accī yathā vātavegena khittā, (upasīvā ti bhagavā)
Atthaṃ paleti na upeti saṅkhaṃ;
Evaṃ munī nāmakāyā vimutto, atthaṃ paleti na upeti saṅkhaṃ". ॥6॥

"अर्चिः यथा वातवेगेन क्षिप्ता, (*उपसीव* इति भगवान्)
अस्तं पलायते न उपैति संज्ञाम् ।
एवं मुनिः नामकायात् विमुक्तः, अस्तं पलायते न उपैति संज्ञाम्"॥6॥

भगवान् –जैसे चिनगारी तेजी से फेंकने पर बुझ जाती है, फिर दिखायी नहीं देती, इसी प्रकार मुनि नाम-काय से विमुक्त होकर बुझ जाता है, फिर दिखायी नहीं देता॥6॥

'As a flame blown about by the violence of the wind, O Upaslva,'—so said Bhagavān,—'goes out, cannot be reckoned as existing, even so a Muni, delivered from name and body, disappears and cannot be reckoned as existing.'.6.

"अत्थङ्गतो सो उद वा सो नत्थि, उदाहु वे सस्सतिया अरोगो।
तं मे मुनी साधु वियाकरोहि, तथा हि ते विदितो एस धम्मो''॥5/7/7॥

"Atthaṅgato so uda vā so natthi, udāhu ve sassatiyā arogo;
Taṃ me munī sādhu viyākarohi, tathā hi te vidito esa dhammo". ॥7॥

"अस्तंगतः स उत वा स नास्ति, उताहो वै सस्मृतिकोऽरोगः ।
तन्मां मुने ! साधु व्याकुरु, तथा हि त्वया विदित एष धर्मः"॥7॥

उपसीव –वह बुझ गया या वह नहीं है अथवा वह अपरिवर्तनशील और स्मृतिमान हो गया है ? हे मुनि ! उसे मुझे भली प्रकार बतायें, क्योंकि आपने इस धर्म को वैसा जान लिया है॥7॥

Upasiva: 'Has he only disappeared, or does he not exist any longer, or is he for ever free from sickness? Explain that thoroughly to me, O Muni, for this Dharmā is well known to thee.'.7.

"अत्थङ्गतस्स न पमाणमत्थि, (उपसीवा ति भगवा)
येन नं वज्जुं तं तस्स नत्थि।
सब्बेसु धम्मेसु समोहतेसु, समूहता वादपथापि सब्बे''ति॥5/7/8॥

"Atthaṅgatassa na pamāṇamatthi (upasīvā ti bhagavā)
Yena naṃ vajjuṃ taṃ tassa natthi;
Sabbesu dhammesu samohatesu, samūhatā vādapathāpi sabbe"ti. ॥8॥

"अस्तंगतस्य न प्रमाणमस्ति, (*उपसीव* इति भगवान्)
यथा एनं वद्यं तं तस्य नास्ति ।
सर्वेषु धर्मेषु समूहतेषु, समूहता: वादपथा अपि सर्वे" इति॥8॥

भगवान् –बुझ गए का कोई प्रमाण नहीं है, जिससे उसे बतलाया जाता, वह उसके लिए नहीं है । सारे धर्मों के शान्त हो जाने पर सभी वादपथ भी शान्त हो गए॥8॥

'For him who has disappeared there is no form, O Upasiva,'—so said Bhagavān,—' that by which they say he is, exists for him no longer, when all things dhamma have been cut off, all kinds of dispute are also cut off.'.8.

उपसीवमाणवपुच्छा निट्ठिता।
(Upasīvamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 8) नन्दमाणवपुच्छा (Nandamāṇavapucchā)

"सन्ति लोके मुनयो, (इच्चायस्मा नन्दो) जना वदन्ति तयिदं कथंसु।
ञाणूपपन्नं नो मुनिं वदन्ति, उदाहु वे जीवितेनूपपन्नं"॥5/8/1॥

"Santi loke munayo, (iccāyasmā nando) Janā vadanti tayidaṃ kathaṃsu;
Ñāṇūpapannaṃ no muniṃ vadanti, udāhu ve jīvitenūpapannaṃ".॥1॥

"सन्ति लोके मुनय:, (इत्यायुष्मान् *नन्द:*) जना: वदन्ति तदिदं कथन्नु ।
ज्ञानोपपन्नं नु मुनिरिति वदन्ति, उताहो वै जीवितेनोपपन्नम्"॥1॥

नन्द–लोग कहते हैं कि संसार में मुनि हैं, सो किस प्रकार ? ज्ञान के कारण किसी को मुनि कहते हैं अथवा आजीविका के कारण ?

'There are Munis in the world,'—so said the venerable Nanda,—' so people say. How is this understood by thee? Do they call him a Muni who is possessed of knowledge or him who is posessed of life?' .1.

"न दिट्ठिया न सुतिया न ञाणेन, मुनीध नन्द कुसला वदन्ति।
विसेनिकत्वा अनीघा निरासा, चरन्ति ये ते मुनयो ति ब्रूमि"॥5/8/2॥

"Na diṭṭhiyā na sutiyā na ñāṇena, (na sīlabbatena) Munīdha nanda kusalā vadanti;
Visenikatvā anīghā nirāsā, caranti ye te munayo ti brūmi".॥2॥

"न दृष्ट्या न श्रुत्या न ज्ञानेन, मुनि इह *नन्द* ! कुशला: वदन्ति ।
विसेनीकृत्य अनिघा: निराशा:, चरन्ति ये ते मुनय इति ब्रवीमि"॥2॥

भगवान् – नन्द ! पण्डित जन न दृष्टि के कारण, न श्रुति के कारण और न ज्ञान के कारण यहाँ किसी को मुनि कहते हैं । जो शोक, पाप और तृष्णा से रहित हो विचरण करते हैं, उन्हें मैं मुनि कहता हूँ॥2॥

'Not because of any philosophical view, nor of tradition, nor of knowledge, O Nanda, do the expert call any one a Muni; but such as wander free from woe, free from desire, after having secluded themselves, those I call Munis. 2.

"ये केचिमे समणब्राह्मणासे, (इच्चायस्मा नन्दो) दिट्ठस्सुतेना पि वदन्ति सुद्धिं।
सीलब्बतेना पि वदन्ति सुद्धिं, अनेकरूपेन वदन्ति सुद्धिं।

कच्चिस्सु ते भगवा तत्थ यता चरन्ता, अतारु जातिं च जरं च मारिस।
पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं"॥5/8/3॥

"Ye kecime samaṇabrāhmaṇāse, (iccāyasmā nando)
Diṭṭhassutenā pi vadanti suddhiṃ;
Sīlabbatenā pi vadanti suddhiṃ, anekarūpena vadanti suddhiṃ;
Kaccissu te bhagavā tattha yatā carantā, atāru jātiṃ ca jaraṃ ca mārisa;
Pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ".॥3॥

"ये केचिदिमे श्रमणब्राह्मणाः, (इत्यायुष्मान् नन्दः) दृष्टश्रुतेनापि वदन्ति शुद्धिम् ।
शीलव्रतेनापि वदन्ति शुद्धिम्, अनेकरूपेण वदन्ति शुद्धिम् ।
कच्चित् नु ते भगवन् ! तत्र संयताः चरन्तः, अतरन् जातिञ्च जराञ्च *मारिस* !
पृच्छामि त्वां भगवन् ! ब्रूहि मां तत्"॥3॥

नन्द – जो कोई श्रमण-ब्राह्मण हैं, वे देखने और सुनने से भी शुद्धि बताते हैं, शील-व्रत से भी शुद्धि बताते है, अनेक प्रकार से शुद्धि बताते हैं । क्या हे भगवन् ! हे मार्ष ! इस प्रकार उसमें संयमी हो विचरण करने वालों ने जन्म और बुढ़ापा को पार कर लिया है ? भगवान्! मैं आपसे पूछ रहा हूँ; उसे मुझे बतायें॥3॥

'All these Sramaṇas and Brāhmaṇas,'—so said the venerable Nanda,—' say that purity comes from philosophical views, and from tradition, and from virtue and holy works, and in many other ways. Did they, in the way in which they lived in the world, cross over birth and old age, O venerable man? I ask thee, O Bhagavān, tell me this.' .3.

"ये केचिमे समणब्राह्मणासे, (नन्दा ति भगवा) दिट्ठस्सुतेना पि वदन्ति सुद्धिं।
सीलब्बतेनापि वदन्ति सुद्धिं, अनेकरूपेन वदन्ति सुद्धिं।
किं चापि ते तत्थ यता चरन्ति, तारिंसु जातिजरं ति ब्रूमि"॥5/8/4॥

"Ye kecime samaṇabrāhmaṇāse, (nandā ti bhagavā) Diṭṭhassutenā pi vadanti suddhiṃ;
Sīlabbatenāpi vadanti suddhiṃ, anekarūpena vadanti suddhiṃ;
Kiṃ cāpi te tattha yatā caranti, nāriṃsu jātijaraṃ ti brūmi".॥4॥

"ये केचित् इमे श्रमणब्राह्मणाः, (नन्द इति भगवान्) दृष्टश्रुतेनापि वदन्ति शुद्धिम् ।
शीलव्रतेनापि वदन्ति शुद्धिम्, अनेकरूपेण वदन्ति शुद्धिम् ।
किञ्चापि ते तत्र यताः चरन्ति, अतारिषुः जातिजरमिति ब्रवीमि"॥4॥

भगवान् – जो कोई श्रमण-ब्राह्मण हैं, वे देखने और सुनने से भी शुद्धि बताते हैं, अनेक प्रकार से शुद्धि बताते हैं । यद्यपि वे उसमें संयमी हो विचरण करते हैं, उन्होंने जन्म और बुढ़ापा को पार कर लिया है – ऐसा मैं कहता हूँ॥4॥

'All these Sramaṇas and Brāhmaṇas, O Nanda,' —so said Bhagavān,—' say that purity comes from philosophical views, and from tradition, and from virtue and holy works, and in many other ways; still they did not, in the way in which they lived in the world, cross over birth and old age, so I say.'.4.

"ये केचिमे समणब्राह्मणासे, (इच्चायस्मा नन्दो) दिट्ठस्सुतेना पि वदन्ति सुद्धिं।
सीलब्बतेना पि वदन्ति सुद्धिं, अनेकरूपेन वदन्ति सुद्धिं।

ते चे मुनि ब्रूसि अनोघतिण्णे, अथ को चरहि देवमनुस्सलोके।
अतारि जातिं च जरं च मारिस, पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं"॥5/8/5॥

"Ye kecime samaṇabrāhmaṇāse, (iccāyasmā nando) Diṭṭhassutenā pi vadanti suddhiṃ;
Sīlabbatenā pi vadanti suddhiṃ, anekarūpena vadanti suddhiṃ;
Te ce muni brūsi anoghatiṇṇe, atha ko carahi devamanussaloke;
Atāri jātiṃ ca jaraṃ ca mārisa, pucchāmi taṃ bhagavā brūhi me taṃ".॥5॥

"ये केचित् इमे श्रमणब्राह्मणास्ते, (इत्यायुष्मान् *नन्दः*) दृष्टश्रुतेनापि वदन्ति शुद्धिम् ।
शीलव्रतेनापि वदन्ति शुद्धिम्, अनेकरूपेण वदन्ति शुद्धिम् ।
सचेत् मुने ! ब्रूषे अनोघतीर्णान्, अथ कस्तर्हि देवमनुष्यलोके ।
अतारीत् जराञ्च *मारिस* ! पृच्छामि त्वां भगवन् ! ब्रूहि मां त्वम्"॥5॥

नन्द – जो कोई श्रमण-ब्राह्मण हैं, वे देखने और सुनने से भी शुद्धि बताते हैं, शील-व्रत से भी शुद्धि बताते है, अनेक प्रकार से शुद्धि बताते हैं । क्या हे मुनि ! आप उन्हें बाढ़ से पार नहीं बताते हैं तो किसने देव-मनुष्यलोक में मार्ष, जन्म और बुढ़ापा को पार किया है ? भगवन्! मैं आपसे पूछता हूँ; मुझे बतायें॥5॥

'All these Sramaṇas and Brhmanas,'—so said the venerable Nanda,—' say that purity comes from philosophical views, and from tradition, and from virtue and holy works, and in many other ways; if thou, O Muni, sayest that such have not crossed the stream, who then in the world of gods and men crossed over birth and old age, O venerable man? I ask thee, O Bhagavān, tell me this.' .5.

"नाहं सब्बे समणब्राह्मणासे, (नन्दा ति भगवा) जातिजराय निवुता ति ब्रूमि।
ये सीध दिट्ठं व सुतं मुतं वा, सीलब्बतं वा पि पहाय सब्बं।
अनेकरूपं पि पहाय सब्बं, तण्हं परिञ्ञाय अनासवासे।
ते वे नरा ओघतिण्णा ति ब्रूमि"॥5/8/6॥

"Nāhaṃ sabbe samaṇabrāhmaṇāse, (nandā ti bhagavā) Jātijarāya nivutā ti brūmi;
Ye sīdha diṭṭhaṃ va sutaṃ mutaṃ vā, sīlabbataṃ vā pi pahāya sabbaṃ;
Anekarūpaṃ pi pahāya sabbaṃ, taṇhaṃ pariññāya anāsavāse;
Te ve narā oghatiṇṇā ti brūmi"॥6॥

"नाहं सर्वे श्रमणब्राह्मणाः, (*नन्द* इति भगवान्) जातिजरायाः निर्वृत्ता इति ब्रवीमि ।
येषु इह दृष्टं वा श्रुतं वा मतं वा, शीलव्रतं वाति प्रहाय सर्वम् ।
अनेकरूपमपि प्रहाय सर्वम्, तृष्णां परिज्ञाय अनास्रवाः ।
ते वै नरा ओघतीर्णा इति ब्रवीमि"॥6॥

भगवान् – जो कोई श्रमण-ब्राह्मण को 'जन्म और बुढ़ापा से आच्छादित हैं' –ऐसा नहीं कहता । जिन्होंने यहाँ सारे देखे, सुने, विचारे या सारे शील-व्रत को त्याग दिया है, सारे अनेक रूपों को त्याग दिया है, जो तृष्णा को जानकर आश्रव-रहित हो गए हैं, उन मनुष्यों से मैं "बाढ़ पार कर गए हैं" –ऐसा कहता हूँ॥6॥

'I do not say that all Sramaṇas and Brahamanas, O Nanda,'—so said Bhagavān,—' are shrouded by birth and old age; those who, after leaving in this world what has been seen or heard or thought, and all virtue and holy works, after leaving everything of various kinds, after penetrating craving, are free from passion, such indeed I call men that have crossed the stream.' .6.

"एताभिनन्दामि वचो महेसिनो, सुकित्तितं गोतमनूपधीकं।
ये सीध दिट्ठं व सुतं मुतं वा, सीलब्बतं वा पि पहाय सब्बं।
अनेकरूपं पि पहाय सब्बं, तण्हं परिञ्ञाय अनासवासे।
अहं पि ते ओघतिण्णा ति ब्रूमी''ति॥5/8/7॥

"Etābhinandāmi vaco mahesino, sukittitaṃ gotamanūpadhīkaṃ;
Ye sīdha diṭṭhaṃ va sutaṃ mutaṃ vā, sīlabbataṃ vā pi pahāya sabbaṃ;
Anekarūpaṃ pi pahāya sabbaṃ, taṇhaṃ pariññāya anāsavāse;
Ahaṃ pi te oghatiṇṇā ti brūmī"ti.॥7॥

"एताभिनन्दामि वचो महर्षिण:, सुकीर्तितं *गौतम* ! अनुपधिकम् ।
येषु इह दृष्टं वा श्रुतं वा मतं वा, शीलव्रतं वापि प्रहाय सर्वम् ।
अनेकरूपमपि प्रहाय सर्वम्, तृष्णां परिज्ञाय अनास्रवा: ।
अहमपि तान् ओघतीर्ण इति ब्रवीमि" इति॥7॥

नन्द– महर्षि की इस बात का मैं अभिनन्दन करता हूँ। हे गौतम ! आपने निर्वाण को सुन्दर ढंग से बतलाया। जिन्होंने यहाँ सारे देखे, सुने, विचारे या सभी शील-व्रत को त्याग दिया है, सभी अनेक रूपों को त्याग दिया है, जो तृष्णा को जानकर आस्रव-रहित हो गए हैं, मैं भी उन्हें "बाढ़ को पार किया हुआ" कहता हूँ॥7॥

'I delight in these words of the great Isi; well expounded by thee, O Gotama, is freedom from upadhi (Nibbana); those who, after leaving in this world what has been seen or heard or thought, and all virtue and holy works, after leaving everything of various kinds, after penetrating craving, are free from passion, such I verily call men that have crossed the stream: .7.

नन्दमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Nandamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 9) हेमकमाणवपुच्छा (Hemakamāṇavapucchā)

"ये मे पुब्बे वियाकंसु, (इच्चायस्मा हेमको)
हुरं गोतमसासना, इच्चासि इति भविस्सति।
सब्बं तं इतिहीतिहं, सब्बं तं तक्कवड्ढनं। नाहं तत्थ अभिरमिं॥5/9/1॥

"Ye me pubbe viyākaṃsu, (iccāyasmā hemako),
Huraṃ gotamasāsanā; Iccāsi iti bhavissati,
sabbaṃ taṃ itihītihaṃ; Sabbaṃ taṃ takkavaḍḍhanaṃ, nāhaṃ tattha abhiramiṃ.॥1॥

"ये मां पूर्वं व्याकार्षु:, (इत्यायुष्मान् *हेमक:*)
दूरं गौतमशासनात्, इत्यासीत् इति भविष्यति ।
सर्वं तत् इत्यैतिह्यम्, सर्वं तत् तर्कवर्धनम् । नाहं तत्र अभ्यरंसि॥1॥

हेमक– आप गौतम के शासन से पहले जिन लोगों ने मुझे (अपनी धारणा के सम्बन्ध में) बताया, सभी ने कहा–"ऐसा था, ऐसा होगा।" वह सारी बातें कल्पित और तर्क को बढ़ाने वाली थीं, उनमें मेरा मन नहीं लगा॥1॥

'Those who before,'—so said the venerable Hemaka,—' explained to me their doctrine, previously to Gotama's doctrine, saying, "So it was, so it will be," all that was only oral tradition, all that was only something that increased my doubts.1.

"त्वं च मे धम्ममक्खाहि, तण्हानिग्घातनं मुनि।
यं विदित्वा सतो चरं, तरे लोके विसत्तिकं"॥5/9/2॥

"Tvaṃ ca me dhammamakkhāhi, taṇhānigghātanaṃ muni;
Yaṃ viditvā sato caraṃ, tare loke visattikaṃ".॥2॥

"त्वञ्च मां धर्ममारव्याहि, तृष्णानिर्घातनं मुने !
यं विदित्वा स्मृतश्चरन्, तरेल्लोके विसक्तिकम्"॥2॥

हे मुनि ! आप मुझे तृष्णा को नष्ट करने का धर्म बतायें, जिसे जान स्मृति के साथ विचरण करते संसार में तृष्णा को पार कर ले॥2॥

'I took no pleasure in that, but tell thou me the Dhamma that destroys craving, O Muni, which if a man has understood, and he wanders about thoughtful, he may cross desire in the world.' .2.

"इध दिट्ठसुतमुतविञ्ञातेसु, पियरूपेसु हेमक।
छन्दरागविनोदनं, निब्बानपदमच्चुतं॥5/9/3॥

"Idha diṭṭhasutamutaviññātesu, piyarūpesu hemaka;
Chandarāgavinodanaṃ, nibbānapadamaccutaṃ.॥3॥

"इह दृष्ट-श्रुत-मत-विज्ञातेषु, प्रियरूपेषु *हेमक* ।
छन्दोराग-विनोदनम्, निर्वाणपदमच्युतम् ॥3॥

भगवान् – हेमक ! यहाँ दृष्ट, श्रुत, ज्ञात, प्रिय रूपों के प्रति दृढ़ आसक्ति को जो दूर करता है, वह अच्युत निर्वाण पद है॥3॥

'In this world much has been seen, heard, and thought; the destruction of passion and of with for the dear objects that have been perceived, O Hemaka, is the imperishable state of Nibbana.3.

"एतदञ्ञाय ये सता, दिट्ठधम्माभिनिब्बुता।
उपसन्ता च ते सदा, तिण्णा लोके विसत्तिकं''ति॥5/9/4॥

"Etadaññāya ye satā, diṭṭhadhammābhinibbutā;
Upasantā ca te sadā, tiṇṇā loke visattikaṃ"ti.॥4॥

"एतदाज्ञाय ये स्मृता:, दृष्टधर्माभिनिवृत्ता: ।
उपसन्ता: च ते सदा, तीर्णा: लोके विसक्तिकम्" इति॥4॥

जो स्मृतिमान् यह जानकर इसी जन्म में शान्त हो गये हैं, सदा उपशान्त वे संसार में तृष्णा को पार कर गये हैं॥4॥

'Those who, having understood this, are thoughtful, calm, because they have seen the Dhamma, tranquil and divine, such have crossed desire in this world.4.

हेमकमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Hemakamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 10) तोदेय्यमाणवपुच्छा (Todeyyamāṇavapucchā)

"यस्मिं कामा न वसन्ति, (इच्चायस्मा तोदेय्यो) तण्हा यस्स न विज्जति।
कथंकथा च यो तिण्णो, विमोक्खो तस्स कीदिसो"॥5/10/1॥

"Yasmiṃ kāmā na vasanti, (iccāyasmā todeyyo) Taṇhā yassa na vijjati;
Kathaṃkathā ca yo tiṇṇo, vimokkho tassa kīdiso".॥1॥

"यस्मिन् कामा: न वसन्ति, (इत्यायुष्मान् *तोदेय्य:*) तृष्णा यस्य न विद्यते ।
कथंकथिकश्च यस्तीर्ण:, विमोक्षस्तस्य कीदृश:"॥1॥

तोदेय्य–जिसमें वासनाएँ नहीं हैं, तृष्णा नहीं है और जो सन्देह से परे हो गया है, उसका विमोक्ष कैसा?॥1॥

'He in whom there live no lusts,'—so said the venerable Todeyya,—' to whom there is no craving, and who has overcome doubt, what sort of deliverence is there for him?' .1.

"यस्मिं कामा न वसन्ति, (तोदेय्या ति भगवा), तण्हा यस्स न विज्जति।
कथंकथा च यो तिण्णो, विमोक्खो तस्स नापरो"॥5/10/2॥

"Yasmiṃ kāmā na vasanti, (todeyyā ti bhagavā) Taṇhā yassa na vijjati;
Kathaṃkathā ca yo tiṇṇo, vimokkho tassa nāparo".॥2॥

"यस्मिन् कामा: न वसन्ति (*तोदेय्य* इति भगवान्) तृष्णा यस्य न विद्यते ।
कथंकथिकश्च यस्तीर्ण:, विमोक्षस्तस्य नापर:"॥2॥

भगवान् – जिसमें वासनाएँ नहीं हैं, तृष्णा नहीं है और जो सन्देह से परे हो गया है, उसका विमोक्ष दूसरा कोई नहीं है॥2॥

'He in whom there live no lusts, O Todeyya,'— so said Bhagavān,—' to whom there is no craving, and who has overcome doubt, for him there is no other deliverance.' .2.

"निराससो सो उद आससानो, पञ्ञाणवा सो उद पञ्ञकप्पी।
मुनिं अहं सक्क यथा विजञ्ञं, तं मे वियाचिक्ख समन्तचक्खु"॥5/10/3॥

"Nirāsaso so uda āsasāno, paññāṇavā so uda paññakappī;
Muniṃ ahaṃ sakka yathā vijaññaṃ, taṃ me viyācikkha samantacakkhu".॥3॥

"निराश: स उत आशासमान:, प्रज्ञावान् स उत प्रज्ञकल्पी।
मुनिमहं शक्नुयां यथा विज्ञातुम्, त्वं मां व्याचक्षी: समन्तचक्षो !"॥3॥

तोदेय्य – वह तृष्णारहित है या तृष्णायुक्त है ? वह प्रज्ञावान् है या प्रज्ञाकल्प है ? हे समन्तचक्षु ! आप बतायें जिससे कि मैं मुनि को जान सकूँ॥3॥

'Is he without desire or is he longing, is he possessed of understanding or is he forming himself an understanding? Explain this to me, O thou all-seeing one, that I may know a Muni, O Sakka.'.3.

"निराससो सो न च आससानो, पञ्ञाणवा सो न च पञ्ञकप्पी।
एवं पि तोदेय्य मुनिं विजान, अकिञ्चनं कामभवे असत्तं''ति॥5/10/4॥

"Nirāsaso so na ca āsasāno, paññāṇavā so na ca paññakappī;
Evaṃ pi todeyya muniṃ vijāna, akiñcanaṃ kāmabhave asattaṃ"ti.॥4॥

"निराशस: स न च आशास्यमान:, प्रज्ञावान् स न च प्रज्ञकल्पी ।
एवमपि *तोदेय्य* ! मुनिं विजानीहि, अकिञ्चनं कामभवे असक्तम्" इति॥4॥

भगवान् – वह तृष्णारहित है, न कि तृष्णायुक्त है, वह प्रज्ञावान् है, न कि प्रज्ञा की प्राप्ति में लगा है। हे तोदेय्य! अकिंचन, कामभव में अनासक्त मुनि को ऐसे भी जानो॥4॥

'He is without desire, he is not longing, he is possessed of understanding, and he is not forming himself an understanding; know O Todeyya, that such is the Muni, not possessing anything, not cleaving to lust and existence.' .4.

तोदेय्यमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Todeyyamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 11) कप्पमाणवपुच्छा (Kappamāṇavapucchā)

"मज्झे सरस्मिं तिट्ठतं, (इच्चायस्मा कप्पो) ओघे जाते महब्भये।
जरामच्चुपरेतानं, दीपं पब्रूहि मारिस।
त्वं च मे दीपमक्खाहि, यथायिदं नापरं सिया"॥5/11/1॥

"Majjhe sarasmiṃ tiṭṭhataṃ, (iccāyasmā kappo) Oghe jāte mahabbhaye;
Jarāmaccuparetānaṃ, dīpaṃ pabrūhi mārisa;
Tvaṃ ca me dīpamakkhāhi, yathāyidaṃ nāparaṃ siyā".॥1॥

"मध्ये सरसि तिष्ठताम्, (इत्यायुष्मान् *कप्पः*) ओघे जाते महाभये ।
जरामृत्युपरेतान्, द्वीपं प्रब्रूहि *मारिस* !
त्वञ्च मां द्वीपमारव्याहि, यथेदं नापरं स्यात्"॥1॥

कप्प–हे मार्ष ! जलाशय रूपी संसार के बीच रहने वालों के लिए बुढ़ापा और मृत्युरूपी महाभयानक बाढ़ के आने पर (सुरक्षा के लिए) द्वीप बतायें और, आप ऐसा द्वीप बतायें जहाँ कि यह दुःख फिर न हो॥1॥

'For those who stand in the middle of the water,'—so said the venerable Kappa,—' in the form idable stream that has set in, for those who are overcome by decay and death, tell me of an island, O venerable man, and tell thou me of an island that this pain may not again come on.1.

"मज्झे सरस्मिं तिट्ठतं, (कप्पा ति भगवा) ओघे जाते महब्भये।
जरामच्चुपरेतानं, दीपं पब्रूमि कप्प ते॥5/11/2॥

"Majjhe sarasmiṃ tiṭṭhataṃ, (kappā ti bhagavā) Oghe jāte mahabbhaye;
Jarāmaccuparetānaṃ, dīpaṃ pabrūmi kappa te.॥2॥

"मध्ये सरसि तिष्ठताम्, (*कल्प* इति भगवान्) ओघे जाते महाभये ।
जरामृत्युपरेतान्, द्वीपं प्रब्रवीमि *कप्प* ! तव॥2॥

भगवान् –हे कप्प ! जलाशय रूपी संसार के बीच रहने वालों के लिए बुढ़ापा और मृत्युरूपी महाभयानक बाढ़ के आने पर (सुरक्षा के लिए) मैं तुम्हें द्वीप बता रहा हूँ॥2॥

'For those who stand in the middle of the water, O Kappa,'—so said Bhagavān,—' in the formidable stream that has set in, for those overcome by decay and death, I will tell thee of an island, O Kappa.2.

"अकिञ्चनं अनादानं, एतं दीपं अनापरं।
निब्बानं इति नं ब्रूमि, जरामच्चुपरिक्खयं॥5/11/3॥

"Akiñcanaṃ anādānaṃ, etaṃ dīpaṃ anāparaṃ;
Nibbānaṃ iti naṃ brūmi, jarāmaccuparikkhayaṃ.॥3॥

"अकिञ्चनमनादानम्, एतद् द्वीपमनापरम् ।
निर्वाणमिति एनं ब्रवीमि, जरामृत्युपरिक्षयम्॥3॥

आकिंचन और अनासक्ति ही वह द्वीप है, दूसरा नहीं । बुढ़ापा और मृत्यु के अन्त को निर्वाण बताता हूँ॥3॥

'This matchless island, possessing nothing and grasping after nothing, I call Nibbana, the destruction of decay and death . 3.

"एतदञ्ञाय ये सता, दिट्ठधम्माभिनिब्बुता।
न ते मारवसानुगा, न ते मारस्स पद्धगू''ति॥5/11/4॥

"Etadaññāya ye satā, diṭṭhadhammābhinibbutā;
Na te māravasānugā, na te mārassa paddhagū"ti.॥4॥

"एतदाज्ञाय ये स्मृताः, दृष्टधर्माभिनिवृत्ताः ।
न ते मारवशानुगाः, न ते मारस्य पथगा इति॥4॥

यह जानकर जो स्मृतिमान् इसी जन्म में शान्त हो गये हैं, वे मार के वशीभूत नहीं हैं और न तो वे मार के अनुगामी ही हैं॥4॥

'Those who, having understood this, are thoughtful and calm, because they have seen the Dhamma, do not fall into the power of Mara and are not the companions of Mara.'3.

कप्पमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Kappamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 12) जतुकण्णिमाणवपुच्छा (Jatukaṇṇimāṇavapucchā)

"सुत्वानहं वीरमकामकामिं,• (इच्चायस्मा जतुकण्णि) ओघातिगं पुट्ठुमकाममागमं।
सन्तिपदं ब्रूहि सहजनेत्त*, यथातच्छं भगवा ब्रूहि मे तं॥5/12/1॥

"Sutvānahaṃ vīramakāmakāmiṃ, (iccāyasmā jatukaṇṇi)
Oghātigaṃ puṭṭhumakāmamāgamaṃ;
Santipadaṃ brūhi sahajanetta, yathātacchaṃ bhagavā brūhi me taṃ.॥1॥

"श्रुत्वाहं वीरमकामकामम्, (इत्यायुष्मान् *जतुकण्णिः*) ओघातिगं प्रष्टुमकाममगमम् ।
सन्तिपदं ब्रूहि सहजनेत्र! याथातथं भगवन्! ब्रूहि मां तत्॥1॥

जतुकण्णि –हे सर्वज्ञ! मैं आपको निष्काम और बाढ़ को पार किया हुआ सुनकर प्रश्न करने की इच्छा से आया हूँ। शान्तिपद को बतायें । यथार्थ रूप से भगवन् ! मुझे यह बतायें॥1॥

'Having heard of a hero free from lust,'—so said the venerable Jatukannin,—' who has crossed the stream, I have come to ask him who is free from lust; tell me the seat of peace, O thou with the born eye of wisdom, tell me this truly, O Bhagavān.1.

• वीरं कामानं अकामनतो अकामकामिं बुद्धं सुत्वा । * सहजनेत्राति सहजातसब्बञ्ञुतञ्ञाणचक्खु ।

"भगवा हि कामे अभिभुय्य इरियति, आदिच्चोव पथविं तेजी तेजसा।
परित्तपञ्ञस्स मे भूरिपञ्ञ, आचिक्ख धम्मं यमहं विजञ्ञं।
जातिजराय इध विप्पहानं"॥5/12/2॥॥

"Bhagavā hi kāme abhibhuyya iriyati, ādiccova pathaviṃ tejī tejasā;
Parittapaññassa me bhūripaññā, ācikkha dhammaṃ yamahaṃ vijaññaṃ;
Jātijarāya idha vippahānaṃ".॥2॥

"भगवान् हि कामानभिभूय ईरयति, आदित्य इव पृथ्वीं तेजयति तेजसा।
परीत्तप्रज्ञस्य मे भूरिप्रज्ञ ! आरव्याहि धर्मं यमहं विजानीयाम् ।
जातिजराया इह विप्रहाणम्"॥2॥

भगवान् काम-वासनाओं पर विजयी हो उसी प्रकार प्रकाशमान् हो विचरण करते हैं, जिस प्रकार कि सूर्य अपने तेज से पृथ्वी को प्रकाशित करता है । हे महाप्रज्ञ ! मुझ अल्पज्ञ को धर्म बतायें जिससे कि मैं यहाँ जन्म और बुढ़ापा को दूर करना जान लूँ॥2॥

'For Bhagavān wanders about after having conquered lust as the hot sun conquers the earth by its heat; tell the Dhamma to me who has only little understanding, O thou of great understanding, that I may ascertain how to leave in this world birth and decay.' .2.

"कामेसु विनय गेधं, (जतुकण्णी ति भगवा) नेक्खम्मं दट्ठु खेमतो।
उग्गहीतं निरत्तं वा, मा ते विज्जित्थ किञ्चनं॥5/12/3॥

"Kāmesu vinaya gedhaṃ, (jatukaṇṇī ti bhagavā) nekkhammaṃ daṭṭhu khemato;
Uggahītaṃ nirattaṃ vā, mā te vijjittha kiñcanaṃ.॥3॥

"कामेषु विनय गृद्धम्, (*जतुकण्णि* इति भगवान्) नैष्क्रम्यं पश्यन् क्षेमत: ।
उद्गृहीतं निरक्तं वा, मा ते भिन्द्यात् किञ्चनम्॥3॥

भगवान् – निष्कामता को कल्याणकर देखते हुए काम भोगों की आसक्ति को त्याग दो। तुम्हें अपनाने या त्यागने के लिए कुछ न रहे॥3॥

'Subdue thy greediness for sensual pleasures, O Jatukannin,'—so said Bhagavān,—' having consid ered the forsaking of the world as happiness, let there not be anything either grasped after or rejected by thee. .3.

"यं पुब्बे तं विसोसेहि, पच्छा ते माहु किञ्चनं।
मज्झे चे नो गहेस्ससि, उपसन्तो चरिस्ससि॥5/12/4॥

"Yaṃ pubbe taṃ visosehi, pacchā te māhu kiñcanaṃ;
Majjhe ce no gahessasi, upasanto carissasi.॥4॥

"यत् पूर्वं तं विशोषयेत्, पश्चात् त्वं माभू: किञ्चन ।
मध्ये चेन्न ग्रहीष्यसि, उपसन्तश्चरिष्यसि॥4॥

जो पूर्व संस्कार हैं उन्हें नष्ट कर दो और पीछे कुछ न अपनाओ । यदि तुम बीच में कुछ ग्रहण नहीं करोगे तो उपशान्त होकर विचरण करोगे॥4॥

'What is before thee, lay that aside; let there be nothing behind thee; if thou wilt not grasp after what is in the middle, thou wilt wander calm..4.

"सब्बसो नामरूपस्मिं, वीतगेधस्स ब्राह्मण।
आसवास्स न विज्जन्ति, येहि मच्चुवसं वजे''ति॥5/12/5॥

"Sabbaso nāmarūpasmiṃ, vītagedhassa brāhmaṇa;
Āsavāssa na vijjanti, yehi maccuvasaṃ vaje"ti.॥5॥

"सर्वशो नामरूपे, वीतगृद्धस्य ब्राह्मण !

आस्रवा अस्य न विद्यन्ते, यस्मान्मृत्युवशं व्रजेत्" इति॥5॥

हे ब्राह्मण ! जो सब प्रकार से नामरूप के प्रति तृष्णारहित है, उसके वासनाएँ नहीं रहतीं जिनसे कि वह मृत्यु के वश में आये॥5॥

'For him whose greediness for name and form is wholly gone, O Brāhmaṇa, for him there are no passions by which he might fall into the power of death.'.5.

जतुकण्णिमाणवपुच्छा निट्ठिता

(Jatukaṇṇimāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 13) भद्रावुधमाणवपुच्छा (Bhadrāvudhamāṇavapucchā)

"ओकञ्जहं तण्हच्छिदं अनेजं, (इच्चायस्मा भद्रावुधो)

नन्दिञ्जहं ओघतिण्णं विमुत्तं।

कप्पञ्जहं अभियाचे सुमेधं, सुत्वान नागस्स अपनमिस्सन्ति इतो॥5/13/1॥

"Okañjahaṃ taṇhacchidaṃ anejaṃ, (iccāyasmā bhadrāvudho)
Nandiñjahaṃ oghatiṇṇaṃ vimuttaṃ;
Kappañjahaṃ abhiyāce sumedhaṃ, sutvāna nāgassa apanamissanti ito.॥1॥

"ओकञ्जहं तृष्णाच्छिदम् अनेजम्, (इत्यायुष्मान् *भद्रावुधः*)

नन्दिञ्जहम् ओघतीर्णं विमुक्तम्।

कल्पजहम् अभियाचे *सुमेधसम्*, श्रुत्वा *नागस्य* अपनंस्यन्ति इतः॥1॥

भद्रावुध – गृहत्यागी, तृष्णारहित, चंचलतारहित, राग-त्यागी, (भव) बाढ़ को पार किये, विमुक्त, संसार-त्यागी ज्ञानी से मैं याचना करता हूँ । आप श्रेष्ठ (नाग) के उपदेश को सुनकर लोग यहाँ से चले जायेंगे॥1॥

'I entreat the wise Buddha, the houseless, who cuts off desire,'—so said the venerable Bhadravud ha,—'who is free from commotion, forsakes joy, has crossed the stream, is liberated and who leaves time behind; having heard the chiefs, word, they will go away from here.1.

"नानाजना जनपदेहि सङ्गता, तव वीर वाक्यं अभिकङ्खमाना।

तेसं तुवं साधु वियाकरोहि, तथा हि ते विदितो एस धम्मो"॥5/13/2॥

"Nānājanā janapadehi saṅgatā, tava vīra vākyaṃ abhikaṅkhamānā;
Tesaṃ tuvaṃ sādhu viyākarohi, tathā hi te vidito esa dhammo".॥2॥

"नानाजनाः जनपदेभ्यः संगताः, तव वीर ! वाक्यमभिकांक्षमाणः ।

तेषां त्वं साधु व्याकुरु, तथा हि त्वया विदित एष धर्मः"॥2॥

हे वीर ! आपके वचन की आकांक्षा करते हुए जनपदों से अनेक प्रकार के लोग एकत्रित हुए हैं । आप उन्हें भली प्रकार बतायें, क्योंकि आपको यह धर्म वैसा ज्ञात है॥2॥

'Different people have come together from the provinces, longing to hear thy speech, O Veer; do thou expound it thoroughly to them, for this Dhamma is well known to thee.' .2.

"आदानतण्हं विनयेथ सब्बं, (भद्रावुधा ति भगवा)
उद्धं अधो तिरियं चा पि मज्झे।
यं यं हि लोकस्मिमुपादियन्ति, तेनेव मारो अन्वेति जन्तुं॥5/13/3॥

"Ādānataṇhaṃ vinayetha sabbaṃ, (bhadrāvudhā ti bhagavā)
Uddhaṃ adho tiriyaṃ cā pi majjhe;
Yaṃ yaṃ hi lokasmimupādiyanti, teneva māro anveti jantuṃ.॥3॥

"आदानतृष्णां विनयेत् सर्वम्, (भद्रावुध इति भगवान्)
ऊर्ध्वमध: तिर्यक् चापि मध्ये ।
यं यं हि लोके उपादीयन्ते, तस्मादेव मारोऽन्वेति जन्तुम्॥3॥

भगवान् –ऊपर, नीचे, तिरछे और बीच में सारी आसक्ति रूपी तृष्णा को त्याग दो । संसार में लोग जो-जो अपनाते हैं, उसी के कारण मार मनुष्य के पीछे पड़ जाता है॥3॥

'Let one wholly subdue the craving of grasping after everything, O Bhadravudha,'—so said Bhagavān,—' above, below, across, and in the middle; for whatever they grasp after in the world, just by that Mara follows the man. 3.

"तस्मा पजानं न उपादियेथ, भिक्खु सतो किञ्चनं सब्बलोके।
आदानसत्ते इति पेक्खमानो, पजं इमं मच्चुधेय्ये विसत्तं'ति॥5/13/4॥

"Tasmā pajānaṃ na upādiyetha, bhikkhu sato kiñcanaṃ sabbaloke;
Ādānasatte iti pekkhamāno, pajaṃ imaṃ maccudheyye visattaṃ'ti.॥4॥

"तस्मात् प्रजानन् न उपादद्यात्, भिक्षु: स्मृत: किञ्चन सर्वलोके।
आदानसक्ते इति प्रेक्षमाण:, प्रजामिमां मृत्युध्येये विसक्तम्" इति॥4॥

इसलिए तृष्णा आसक्ति, मृत्यु-राज्य में लीन इस प्रजा को देखते हुए स्मृतिमान् भिक्षु सारे संसार में किसी के प्रति आसक्ति न करे॥4॥

'Therefore, knowing this, let not the thoughtful Bhikkhu grasp after anything in all the world, cons idering as creatures of desire this generation, sticking fast in the realm of death.' .4.

भद्राबुधमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Bhadrāvudhamāṇavapucchā niṭṭhitā.)

(5, 14) उदयमाणवपुच्छा (Udayamāṇavapucchā)

"झायिं विरजमासीनं, (इच्चायस्मा उदयो) कतकिच्चं अनासवं।
पारगुं सब्बधम्मानं, अत्थि पञ्हेन आगमं।
अञ्ञाविमोक्खं पब्रूहि, अविज्जाय पभेदनं"॥5/14/1॥

"Jhāyiṃ virajamāsīnaṃ, (iccāyasmā udayo) katakiccaṃ anāsavaṃ;
Pāraguṃ sabbadhammānaṃ, atthi pañhena āgamaṃ;
Aññāvimokkhaṃ pabrūhi, avijjāya pabhedanaṃ".॥1॥

"ध्यानिनं विरजमासीनम्, (इत्यायुष्मान् *उदयः*) कृतकृत्यमनास्रवम् ।
पारगं सर्वधर्माणाम्, अस्ति प्रश्ननेन आगमम् ।
आज्ञाविमोक्षं* प्रब्रूहि, अविद्याया: प्रभेदनम्"॥1॥

उदय –ध्यानी, मलरहित, कृतकृत्य, आश्रवरहित, सभी धर्मों में पारंगत, मैं आपके पास प्रश्न करने आया हूँ। आज्ञा की विमुक्ति और अविद्या के नाश को बतायें॥1॥

'To Buddha who is sitting meditating, free from pollution,'—so said the venerable Udaya,— 'having performed his duty, who is without passion, accomplished in all things dhamma, I have come with a question; tell me the deliverance by knowledge, the splitting up of ignorance.' .1.

*प्रज्ञा, विमुक्ति ।

"पहानं कामच्छन्दानं, (उदया ति भगवा) दोमनस्सान चूभयं।
थिनस्स च पनूदनं, कुक्कुच्चानं निवारणं॥5/14/2॥
उपेक्खासतिसंसुद्धं, धम्मतक्कपुरेजवं।
अञ्ञाविमोक्खं पब्रूमि, अविज्जाय पभेदनं''॥5/14/3॥

"Pahānaṃ kāmacchandānaṃ, (udayā ti bhagavā) domanassāna cūbhayaṃ;
Thinassa ca panūdanaṃ, kukkuccānaṃ nivāraṇaṃ.॥2॥
"Upekkhāsatisaṃsuddhaṃ, dhammatakkapurejavaṃ;
Aññāvimokkhaṃ pabrūmi, avijjāya pabhedanaṃ".॥3॥

"प्रहाणं कामछन्दानाम्, (उदय इति भगवान्), दौर्मनस्यानां चोभयम्।
स्त्यानस्य च अपनोदनम्, कौकृत्यानां निवारणम्॥2॥
"उपेक्षास्मृतिसंशुद्धम्, धर्मतर्कपुरोजवम् ।
आज्ञाविमोक्षं प्रब्रवीमि, अविद्याया: प्रभेदनम्"॥3॥

भगवान् – काम-रोगों और दौर्मनस्य– इन दोनों का त्याग, स्त्यान (शारीरिक आलस्य) को नष्ट करना, कौकृत्य (सन्देह) का निवारण, उपेक्षा, स्मृति की परिशुद्धि और धार्मिक विचार से उत्पन्न आपको मैं आज्ञा की विमुक्ति और अविद्या के नाश को बतलाता हूँ॥2-3॥

It consists in leaving lust and desire, O Udaya,'—so said Bhagavān,—' and both kinds of grief, and driving away sloth, and warding off misbehaviour.'The deliverance by knowledge which is purified by equanimity and thoughtfulness and preceded by reasoning on Dhamma I will tell thee, the splitting up of ignorance.' .2-3.

"किंसु संयोजनो लोको, किंसु तस्स विचारणं।
किस्सस्स विप्पहानेन, निब्बानं इति वुच्चति"॥5/14/4॥

"Kiṃsu saṃyojano loko, kiṃsu tassa vicāraṇaṃ;
Kissassa vippahānena, nibbānaṃ iti vuccati".॥4॥

"किंस्वित् संयोजनं लोकस्य, किस्वित् तस्य विचारणम् ।
कस्यास्य विप्रहाणेन, निर्वाणमिति उच्यते"॥4॥

उदय– लोक का बन्धन क्या है? उसकी विचरण-भूमि क्या है? किसके त्याग को निर्वाण कहा जाता है?॥4॥

'What is the bond of the world, what is its practice? By the leaving of what is Nibbana said to be?'.4.

"नन्दिसंयोजनो लोको, वितक्कस्स विचारणं।

तण्हाय विप्पहानेन, निब्बानं इति वुच्चति"॥5/14/5॥

"Nandisaṃyojano loko, vitakkassa vicāraṇaṃ;
Taṇhāya vippahānena, nibbānaṃ iti vuccati".॥5॥

"नन्दिसंयोजनो लोकः, वितर्कोऽस्य विचारणम् ।

तृष्णाया: विप्रहाणेन, निर्वाणमिति उच्यते" ॥5॥

भगवान्–लोक का बन्धन राग है। वितर्क उसकी विचरण-भूमि है। तृष्णा का त्याग निर्वाण कहा जाता है॥5॥

'The world is bound by pleasure, reasoning is its practice; by the leaving of desire Nibbana is said to be.' .5.

"कथं सतस्स चरतो, विञ्ञाणं उपरुज्झति।

भगवन्तं पुट्ठुमागम्म, तं सुणोम वचो तव"॥5/14/6॥

"Kathaṃ satassa carato, viññāṇaṃ uparujjhati;
Bhagavantaṃ puṭṭhumāgamma, taṃ suṇoma vaco tava".॥6॥

"कथं स्मरतश्चरतः, विज्ञानमुपरुणद्धि ।

भगवन्तं प्रष्टुमागमम्, तं शृणोमि वचस्तव"॥ 6॥

उदय– स्मृतिमान् व्यक्ति के कैसे विचरण करते विज्ञान का विरोध होता है ? भगवान् के पास पूछने आए हैं। हम आपकी बात सुनना चाहते हैं॥6॥

Udaya: 'How does consciousness cease in him that wanders thoughtful? Having come to ask thee, let us hear thy words.' .6.

"अज्झत्तं च बहिद्धा च, वेदनं नाभिनन्दतो।

एवं सतस्स चरतो, विञ्ञाणं उपरुज्झती''ति॥5/14/7॥

"Ajjhattaṃ ca bahiddhā ca, vedanaṃ nābhinandato;
Evaṃ satassa carato, viññāṇaṃ uparujjhatī"ti.॥7॥

"अध्यात्मञ्च बहिर्द्धा च, वेदनं नाभिनन्दतः ।

एवं स्मरतः चरतः, विज्ञानमुपरुणद्धि" इति॥7॥

भगवान्–भीतर और बाहर की वेदना का अभिनन्दन न करते हुए– ऐसे स्मृतिमान् व्यक्ति के विचरण करते विज्ञान का निरोध हो जाता है॥7॥

Bhagavan: 'For him who both inwardly and outwardly does not delight in sensation, for him who thus wanders thoughtful, consciousness ceases.' .7.

उदयमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Udayamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 15) पोसालमाणवपुच्छा (Posālamāṇavapucchā)

"यो अतीतं आदिसति, (इच्चायस्मा पोसालो) अनेजो छिन्नसंसयो।

पारगुं सब्बधम्मानं, अत्थि पञ्हेन आगमं॥5/15/1॥

"Yo atītaṃ ādisati, (iccāyasmā posālo) anejo chinnasaṃsayo;
Pāraguṃ sabbadhammānaṃ, atthi pañhena āgamaṃ.॥1॥

"योऽतीतमादिशति, (इत्यायुष्मान् *पोसालः*) अनेजः छिन्नसंशयः ।
पारगं सर्वधर्माणाम्, अस्ति प्रश्ननेन आगमम्॥1॥

पोसाल –जो भगवान् भूतकालिक (जन्मों की) बातें बतलाते हैं, जो चंचलता-रहित, संशय-नष्ट और सब धर्मों में पारंगत हैं, आपके पास हम प्रश्न पूछने आए हैं॥1॥

'He who shows the past birth ,'—so said the venerable Posala,—' who is without desire and has cut off doubt, to him who is accomplished in all things dhamma, I have come supplicatingly with a question.1.

"विभूतरूपसञ्ञिस्स , सब्बकायप्पहायिनो।
अज्झत्तं च बहिद्धा च, नत्थि किं चीति पस्सतो।
ञाणं सक्कानुपुच्छामि, कथं नेय्यो तथाविधो"॥5/15/2॥

"Vibhūtarūpasaññissa , sabbakāyappahāyino;
Ajjhattaṃ ca bahiddhā ca, natthi kiṃ cīti passato;
Ñāṇaṃ sakkānupucchāmi, kathaṃ neyyo tathāvidho".॥2॥

"विभूतरूपसंज्ञिनः, सर्वकायापहारिणः ।
आभ्यन्तरं बहिर्द्धा च, नास्ति किञ्चिदिति पश्यतः ।
ज्ञानं *सक्क* ! अनुपृच्छामि, कथं नयेत् तथाविधः"॥2॥

हे शक्र ! रूप-संज्ञाओं से रहित, सभी अरूप-संज्ञाओ से मुक्त, "भीतर और बाहर कुछ नहीं है" –ऐसा देखने वाले के ज्ञान को पूछता हूँ । वैसे व्यक्ति को आगे कैसे ज्ञान उत्पन्न करना चाहिए ?॥2॥

'O Sakka, I ask about his knowledge who is aware of past shapes, who casts off every corporeal form, and who sees that there exists nothing either internally or externally; how can such a one be led by any body?' .2.

"विञ्ञाणट्ठितियो सब्बा, (पोसाला ति भगवा) अभिजानं तथागतो।
तिट्ठन्तमेनं जानाति, विमुत्तं तप्परायणं॥5/15/3॥

"Viññāṇaṭṭhitiyo sabbā, (posālā ti bhagavā) abhijānaṃ tathāgato;
Tiṭṭhantamenaṃ jānāti, vimuttaṃ tapparāyaṇaṃ.॥3॥

"विज्ञानस्थितीः सर्वाः, (*पोसाल* इति भगवान्) अभिजानन् *तथागतः* ।
तिष्ठन्तमेनं जानाति, विमुक्तं तत्परायणम्॥3॥

भगवान् –विज्ञान की सभी स्थितियों के ज्ञाता तथागत, स्थिर, विमुक्त और विमुक्ति-परायण व्यक्ति को जानते हैं॥3॥

Tathagata, knowing all the faces of consciousness, O Posala,'—so said Bhagavān,—' knows also him who stands delivered, devoted to that object.3.

"आकिञ्चञ्ञसम्भवं ञत्वा, नन्दी संयोजनं इति।
एवमेतं अभिञ्ञाय, ततो तत्थ विपस्सति।
एतं ञाणं तथं तस्स, ब्राह्मणस्स वुसीमतो'ति॥5/15/4॥

"Ākiñcaññasambhavaṃ ñatvā, nandī saṃyojanaṃ iti;
Evametaṃ abhiññāya, tato tattha vipassati;
Etaṃ ñāṇaṃ tathaṃ tassa, brāhmaṇassa vusīmato"ti.॥4॥

"आकिञ्चन्यसंभवं ज्ञात्वा, नन्दीं संयोजनमिति ।
एवमेतम् अभिज्ञाय, ततस्तत्र विपश्यति ।
एतद् ज्ञानं तथा तस्य, ब्राह्मणस्य उषितवत:" इति॥4॥

आकिंचन्यायतन को उत्पन्न करने वाले कर्म-संस्कार को जानकर, राग को बन्धन समझकर– ऐसा जान वहाँ विपश्यना करता है उस पूर्णता को प्राप्त ब्राह्मण का यह ज्ञान यथार्थ होता है॥4॥

'Having understood that the bonds of pleasure do not originate in nothingness, he sees clearly in this matter, this is the knowledge of a perfect, accomplished Brāhmaṇa.' .4.

पोसालमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Posālamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 16) मोघराजमाणवपुच्छा (Mogharājamāṇavapucchā)

"द्वाहं सक्कं अपुच्छिस्सं, (इच्चायस्मा मोघराजा) न मे ब्याकासि चक्खुमा।
यावततियं च देवीसि, ब्याकरोती ति मे सुतं॥5/16/1॥

"Dvāhaṃ sakkaṃ apucchissaṃ, (iccāyasmā mogharājā) Na me byākāsi cakkhumā;
Yāvatatiyañca devīsi, byākarotī ti me sutaṃ.॥1॥

"द्वाहं *सक्क* ! अप्राक्षम्, (इत्यायुष्मान् *मोघराजा*) न मां व्याकार्षी: चक्षुष्मन् ! ।
यावत्तृतीयञ्च देवर्षे ! व्याकरोतीति मे श्रुतम्॥1॥

मोघराज –हे शक्र ! मैंने दो बार आपसे प्रश्न किया । चक्षुष्मान् ! आपने मेरा उत्तर नहीं दिया । मैंने सुना है कि देवर्षि ! तीसरी बार उत्तर देते हैं॥1॥

'Twice have I asked Sakka,'—so said the venerable Mogharajan,—' but the clearly-seeing has not explained it to me; if the divine Isi is asked for the third time, he will explain it, so I have heard.1.

"अयं लोको परो लोको, ब्रह्मलोको सदेवको।
दिट्ठिं ते नाभिजानाति, गोतमस्स यसस्सिनो॥5/16/2॥

"Ayaṃ loko paro loko, brahmaloko sadevako;
Diṭṭhiṃ te nābhijānāti, gotamassa yasassino.॥2॥

"अयं लोक: परो लोक:, ब्रह्मलोक: सदेवक: ।
दृष्टिं ते नाभिजानाति, *गौतमस्य* यशस्विन:॥2॥

यह लोक, परलोक तथा देव सहित ब्रह्मलोक हैं । आप यशस्वी गौतम की दृष्टि नहीं जानता॥2॥

'There is this world, the other world, Brahaman's world together with the world of the gods; I do not know thy view, the famous Gotama's view.2

"एवं अभिक्कन्तदस्सावि, अत्थि पञ्हेन आगमं।
कथं लोकं अवेक्खन्तं, मच्चुराजा न पस्सति"॥5/16/3॥

"Evaṃ abhikkantadassāviṃ, atthi pañhena āgamaṃ;
Kathaṃ lokaṃ avekkhantaṃ, maccurājā na passati".॥3॥

"एवमभिकान्तदर्शिनम्, अस्ति प्रश्नेन आगमम्।
कथं लोकम् अवेक्षन्तम्, मृत्युराजा न पश्यति"॥3॥

इस प्रकार विशुद्धदर्शी ! मैं आपके पास प्रश्न पूछने आया हूँ । संसार को किस रूप में देखने वाले को मृत्युराज नहीं देख पाता ?॥3॥

'To this man who sees what is good I have come supplicatingly with a question: How is any one to look upon the world that the king of death may not see him?' .3.

"सुञ्ञतो लोकं अवेक्खस्सु, मोघराज सदा सतो।
अत्तानुदिट्ठिं ऊहच्च, एवं मच्चुतरो सिया।
एवं लोकं अवेक्खन्तं, मच्चुराजा न पस्सती'ति॥5/16/4॥

"Suññato lokaṃ avekkhassu, mogharāja sadā sato;
Attānudiṭṭhiṃ ūhacca, evaṃ maccutaro siyā;
Evaṃ lokaṃ avekkhantaṃ, maccurājā na passatī"ti.॥4॥

"शून्यतो लोकम् अवेक्षष्व, *मोघराजा* सदा स्मृतिमान् ।
आत्मानुदृष्टिमुद्धृत्य, एवं मृत्युतरः स्यात् ।
एवं लोकमवेक्षन्तम्, मृत्युराजा न पश्यति" इति॥4॥

भगवान् – हे मोघराज ! सदा स्मृतिमान् हो शून्य के रूप को देखो। इस प्रकार आत्म-दृष्टि का नाशकर मृत्यु को पार कर जाओगे । इस रूप में संसार को देखने वाले को मृत्युराज नहीं देख पाता॥4॥

'Look upon the world as void, O Mogharaja, being always thoughtful; having destroyed the view of oneself as really existing, so one may overcome death; the king of death will not see him who thus regards the world .4.

मोघराजमाणवपुच्छा निट्ठिता
(Mogharājamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 17) पिंगियमाणवपुच्छा (Piṅgiyamāṇavapucchā)

"जिण्णोहमस्मि अबलो वीतवण्णो,* (इच्चायस्मा पिङ्गियो)
नेत्ता न सुद्धा सवनं न फासु, माहं नस्सं मोमुहो अन्तराव
आचिक्ख धम्मं यमहं विजञ्ञं, जातिजराय इध विप्पहानं''॥5/17/1॥

"Jiṇṇohamasmi abalo vītavaṇṇo, (iccāyasmā piṅgiyo)
Nettā na suddhā savanaṃ na phāsu; Māhaṃ nassaṃ momuho antarāva
Ācikkha dhammaṃ yamahaṃ vijaññaṃ; Jātijarāya idha vippahānaṃ".॥1॥

"जीर्णोऽहमस्मि अबलो वीतवर्णः, (इत्यायुष्मान् *पिंगियः*)
नेत्रे न शुद्धे, श्रवणं न *प्रासु**, माऽहं नश्येयम् मोहस्यान्तरायेण ।
आख्याहि धर्मं यमहं विज्ञाय, जातिजराया इह विप्रहाणम्"॥1॥

पिंगिय–मैं जीर्ण हूँ, दुर्बल हूँ और मेरी सुन्दरता जाती रही, मेरे नेत्र शुद्ध नहीं, कान ठीक नहीं । मुझे धर्म का उपदेश करें जिसे जानकर यहाँ मैं जन्म-जरा का अन्त कर लूँ और बीच में मोह के साथ न मरूँ॥1॥

'I am old, feeble, colourless,'—so said the venerable Piñgiya,—' my eyes are not clear, my hearing is not good; I should perish a fool on the way, tell me the Dhamma, that I may know how to leave birth and decay in this world.' .1.

*पिङ्गिय ब्राह्मणो जराभिभूतो वीसवस्ससतिको जातिया, दुब्बलो च ।

* प्रासु शब्द-प्रासुक अर्थ में भी प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ शुद्ध, पवित्र, अच्छा, ठीक आदि है। जैन परम्परा में शुद्ध जल के लिए 'प्रासुक जल' इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग होता है।

"दिस्वान रूपेसु विहञ्ञमाने, (पिङ्गिया ति भगवा) रुप्पन्ति रूपेसु जना पमत्ता।
तस्मा तुवं पिङ्गिय अप्पमत्तो, जहस्सु रूपं अपुनब्भवाय''॥5/17/2॥

"Disvāna rūpesu vihaññamāne, (piṅgiyā ti bhagavā) Ruppanti rūpesu janā pamattā;
Tasmā tuvaṃ piṅgiya appamatto, Jahassu rūpaṃ apunabbhavāya".॥2॥

"दृष्ट्वा रूपेषु विहन्यमानान्, (*पिंगिय* इति भगवान्) रूपयन्ति रूपेषु जना: प्रमत्ता: ।
तस्मात् त्वं *पिंगिय* ! अप्रमत्त:, जहाहि रूपमपुनर्भवाय"॥2॥

भगवान्–रूपों के कारण परेशान, रूपों के कारण नाश को प्राप्त होने वाली प्रमत्त जनता को देखकर पिंगिय ! अप्रमत्त बनो और रूप का अन्त करो, जिससे कि आवागमन बन्द हो॥2॥

'Seeing others afflicted by the body, O Pingiya,'—so said Bhagavān,—' seeing heedless people suffer in their bodies;—therefore, O Piñgiya, shalt thou be heedful, and leave the body behind, that thou mayest never come to exist again.' .2.

"दिसा चतस्सो विदिसा चतस्सो, उद्धं अधो दस दिसा इमायो।
न तुय्हं अदिट्ठं असुतं अमुतं, अथो अविञ्ञातं किञ्चनमत्थि लोके।
आचिक्ख धम्मं यमहं विजञ्ञं, जातिजराय इध विप्पहानं''॥5/17/3॥

"Disā catasso vidisā catasso, uddhaṃ adho dasa disā imāyo;
Na tuyhaṃ adiṭṭhaṃ asutaṃ amutaṃ, atho aviññātaṃ kiñcanamatthi loke;
Ācikkha dhammaṃ yamahaṃ vijaññaṃ, jātijarāya idha vippahānaṃ".॥3॥

"दिशा: चतस्र: विदिशा: चतस्र:, ऊर्ध्वमधो दशदिशा इमा: ।
न त्वयाऽदृष्टमश्रुतममतम्, अथ अविज्ञातं किञ्चन अस्ति लोके ।
आख्याहि धर्मं यमहं विज्ञाय, जातिजराया इह विप्रहाणम्''॥3॥

पिंगिय –चार दिशायें, चार अनुदिशायें, ऊपर और नीचे– ये दश दिशायें हैं, इस लोक में आप द्वारा कुछ भी अदृष्ट, अश्रुत या अविचारित अथवा अज्ञात नहीं है, आप मुझे धर्म बतलायें जिसे जानकर मैं यहाँ जन्म और बुढ़ापे का अन्त कर डालूँ॥3॥

'Four regions, four intermediate regions, above and below, these are the ten regions; there is nothing which has not been seen, heard, or thought by thee, and is there anything in the world not understood by thee? Tell me the Dhamma, that I may know how to leave birth and decay in this world.'.3.

"तण्हाधिपन्ने मनुजे पेक्खमानो, (पिङ्गिया ति भगवा) सन्तापजाते जरसा परेते।
तस्मा तुवं पिङ्गिय अप्पमत्तो, जहस्सु तण्हं अपुनब्भवाया''ति॥5/17/4॥

"Taṇhādhipanne manuje pekkhamāno, (piṅgiyā ti bhagavā) Santāpajāte jarasā parete;
Tasmā tuvaṃ piṅgiya appamatto, jahassu taṇhaṃ apunabbhavāyā"ti.॥4॥

"तृष्णाधिपन्नान् मनुजान् प्रेक्षमाणः, (*पिंगिय* इति भगवान्) सन्ताप-जातान् जरसा परेतान्।
तस्मात् त्वं *पिंगिय* ! अप्रमत्तः, जहाहि तृष्णामपुनर्भवाय" इति॥4॥

भगवान्– तृष्णा के वशीभूत, सन्तप्त, बुढ़ापे से परेशान, मनुष्यों को देखकर पिंगिय। तुम अप्रमत्त हो फिर जन्म न लेने के लिए तृष्णा का त्याग कर दो॥4॥

'Seeing men seized with desire, O Piñgiya,'—so said Bhagavān,—' tormented and overcome by decay, —therefore thou, O Piñgiya, shalt be heedful and leave desire behind, that thou mayest never come to exist again.' .18.

पिङ्गियमाणवपुच्छा निट्ठिता।
(Piṅgiyamāṇavapucchā niṭṭhitā)

(5, 18) पारायणसुत्तं (Pārāyanatthutigāthā)

इदमवोच भगवा मगधेसु विहरन्तो पासाणके चेतिये, परिचारकसोळसानं ब्राह्मणानं अज्झिट्ठो पुट्ठो पुट्ठो पञ्हं ब्याकासि। एकमेकस्स चेपि पञ्हस्स अत्थमञ्ञाय धम्ममञ्ञाय धम्मानुधम्मं पटिपज्जेय्य, गच्छेय्येव जरामरणस्स पारं। पारङ्गमनीया इमे धम्मा ति, तस्मा इमस्स धम्मपरियायस्स पारायनन्तेव अधिवचनं।

Idamavoca bhagavā magadhesu viharanto pāsāṇake cetiye, paricārakasoḷasānaṃ brāhmaṇānaṃ ajjhiṭṭho puṭṭho puṭṭho pañhaṃ byākāsi. Ekamekassa cepi pañhassa atthamaññāya dhammamaññāya dhammānudhammaṃ paṭipajjeyya, gaccheyyeva jarāmaraṇassa pāraṃ. Pāraṅgamanīyā ime dhammā ti, tasmā imassa dhammapariyāyassa pārāyananteva adhivacanaṃ.

इदमवोचत् भगवान् *मगधेषु* विहरन् *पाषाणक*चैत्ये, परिचारकेण षोडशानां ब्राह्मणानाम् अध्येष्टः पृष्टः पृष्टः प्रश्नं व्याकार्षीत् । एकैकस्य चेदपि प्रश्नस्य अर्थं ज्ञात्वा धर्ममाज्ञाय धर्मानुधर्मं प्रतिपद्येत, गच्छेदेव जरामरणस्य पारम् । पारंगमनीया इमे धर्मा इति, तस्मात् एतस्य धर्मपर्यायस्य पारायणं त्वेव अधिवचनम् ।

भगवान् ने मगध में पाषाणक चैत्य में विहार करते हुए यह कहा था । बावरी के सोलह ब्राह्मण शिष्यों के पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर दिया । यदि एक-एक भी प्रश्न के अर्थ, धर्म और धर्मानुधर्म को जानकर उस पर चले तो जरा-मरण से पार चला ही जाय । ये पार की ओर ले जाने वाले धर्म हैं, इसलिए इस धर्मोपदेश का 'पारायण' ही नाम है ।

This said Bhagavān, living in Magadha at Pasanaka Cetiya the Rock Temple. sought by sixteen Brāhmaṇas, the followers of Bavarl, and questioned by each of them in turn, he responded to the questions. If a man, having understood the meaning and tenor of each question, lives according to the Dhamma, then he will go to the further shore of decay and death, for these Dhammas lead to the further shore, and therefore this order of Dhamma was called Pārāyāṇa- 'the way to the other shore.'-

अजितो तिस्समेत्तेय्यो, पुण्णको अथ मेत्तगू।
धोतको उपसीवो च, नन्दो च अथ हेमको॥5/18/1 ॥

तोदेय्य-कप्पा दुभयो, जतुकण्णी च पण्डितो।
भद्रावुधो उदयो च, पोसालो चा पि ब्राह्मणो।
मोघराजा च मेधावी, पिङ्गियो च महा इसि॥5/18/2॥
एते बुद्धं उपागच्छुं, सम्पन्नचरणं इसिं।
पुच्छन्ता निपुणे पञ्हे, बुद्धसेट्ठं उपागमुं॥5/18/3॥

Ajito tissametteyyo, puṇṇako atha mettagū;
Dhotako upasīvo ca, nando ca atha hemako.॥1॥
Todeyya-kappā dubhayo, jatukaṇṇī ca paṇḍito;
Bhadrāvudho udayo ca, posālo cā pi brāhmaṇo;
Mogharājā ca medhāvī, piṅgiyo ca mahā isi.॥2॥
Ete buddhaṃ upāgacchuṃ, sampannacaraṇaṃ isiṃ;
Pucchantā nipuṇe pañhe, buddhaseṭṭhaṃ upāgamuṃ.॥3॥

अजित: तिस्समेत्तेय्य:, *पुण्णकोऽथ* मेत्तगू: ।
धोतक उप*सीवश्च*, *नन्दश्च* अथ *हेमक:*॥1॥
तोदेय्यकप्पादुभयौ *जतुकण्णी* च *पण्डित:* ।
*भद्रा*वुध: *उदय*श्च, *पोसालश्चा*पि ब्राह्मण: ।
मोघराजा च मेधावी, *पिंगिय*श्च महान् ऋषि:॥2॥
एते बुद्धमुपागमन्, सम्पन्नचरणम् ऋषिम् ।
पृच्छन्तो निपुणान् प्रश्नान्, बुद्धश्रेष्ठमुपागमन्॥3॥

अजित, तिस्समेत्तेय्य, पुण्णक और मेत्तगू, धोतक और उपसीव, नन्द और हेमक, तोदेय्य, कप्प दोनों और पण्डित जातुकण्णि, भद्राबुध, उदय और पोसाल ब्राह्मण, बुद्धिमान, मोघराज और महर्षि पिंगिय–ये आचारवान् ऋषि निपुण प्रश्न पूछते हुए श्रेष्ठ बुद्ध के पास गए॥1-3॥

Agita, Tissametteyya, Punnaka and Mettagü, Dhotaka and Upastiva, Nanda and Hemaka, the two Todeyya and Kappa, and the wise Jatukannin, Bhadravudha and Udaya, and also the Brahmana Posala, and the wise Mogharagn, and Pingiya the great Isi, These went up to Buddha, the Isi of exemplary conduct; asking subtle questions.1.2.3.

तेसं बुद्धो ब्याकासि, पञ्हे पुट्ठो यथातथं।
पञ्हानं वेय्याकरणेन, तोसेसि ब्राह्मणे मुनि॥5/18/4॥

Tesaṃ buddho pabyākāsi, pañhe puṭṭho yathātathaṃ;
Pañhānaṃ veyyākaraṇena, tosesi brāhmaṇe muni.॥4॥

तेषां बुद्धो व्याकार्षीत्, प्रश्नान् पृष्टा: यथातथम् ।
प्रश्नानां व्याकरणेन, अतोषयत् ब्राह्मणान् मुनि:॥4॥

बुद्ध ने उनके पूछे प्रश्नों के यथार्थरूप से उत्तर दिए। मुनि ने प्रश्नों के उत्तर से ब्राह्मणों को सन्तुष्ट कर दिया॥4॥

Buddha, being asked, responded to their questions trully, and in responding to the questions the Muni delighted the Brāhmaṇas.4.

ते तोसिता चक्खुमता, बुद्धेनादिच्चबन्धुना।
ब्रह्मचरियमचरिंसु, वरपञ्ञस्स सन्तिके॥5/18/5॥

Te tositā cakkhumatā, buddhenādiccabandhunā;
Brahmacariyamacariṃsu, varapaññassa santike.॥5॥

ते तोषिता: चक्षुष्मता, बुद्धेनादित्यबन्धुना ।
ब्रह्मचर्यमचरिषु: वरप्रज्ञस्य सान्तिकम्॥5॥

आदित्यबन्धु, चक्षुष्मान् बुद्ध द्वारा सन्तुष्ट किये जाने पर उन्होंने श्रेष्ठ प्रज्ञा वाले बुद्ध के पास ब्रह्मचर्य का पालन किया॥5॥

They, having been delighted by the clearly- seeing Buddha, the kinsman of the Adiccas, devoted themselves to a religious life near the man of excellent understanding.5.

एकमेकस्स पञ्हस्स, यथा बुद्धेन देसितं।
तथा यो पटिपज्जेय्य, गच्छे पारं अपारतो॥5/18/6॥

Ekamekassa pañhassa, yathā buddhena desitaṃ;
Tathā yo paṭipajjeyya, gacche pāraṃ apārato.॥6॥

एकैकस्य प्रश्नस्य, यथा *बुद्धेन* देशितम् ।
तथा य: प्रतिपद्येत, गच्छेत् पारमपारत:॥6॥

एक-एक प्रश्न का जैसा कि बुद्ध ने उत्तर दिया, वैसा जो करेगा, तो वह इस पार से उस पास चला जायेगा॥6॥

He who lived according to what had been taught by Buddha in answer to each single question, went from this shore to the other shore.6.

अपारा पारं गच्छेय्य, भावेन्तो मग्गमुत्तमं।
मग्गो सो पारं गमनाय, तस्मा पारायनं इति॥5/18/7॥

Apārā pāraṃ gaccheyya, bhāvento maggamuttamaṃ;
Maggo so pāraṃ gamanāya, tasmā pārāyanaṃ iti.॥7॥

अपारात् पारं गच्छेत्, भावयन् मार्गमुत्तमम् ।
मार्ग: स पारगमनाय, तस्मात् पारायणमिति॥7॥

उत्तम मार्ग का अभ्यास करता हुआ वह इस पार से उस पार चला जायेगा, वह पार जाने का मार्ग है, इसलिए इसे पारायण कहा जाता है॥7॥

From this shore he went to the other shore entering upon the most excellent way; this way is to lead to the other shore, therefore it is called Pārāyāṇa- 'the way to the other shore.' .7

"पारायनमनुगायिस्सं, (इच्चायस्मा पिङ्गियो)
यथाद्दक्खि तथाक्खासि, विमलो भूरिमेधसो।
निक्कामो निब्बनो नागो, किस्स हेतु मुसा भणे॥5/18/8॥

"Pārāyanamanugāyissaṃ, (iccāyasmā piṅgiyo)
Yathāddakkhi tathākkhāsi, vimalo bhūrimedhaso;
Nikkāmo nibbano nāgo, kissa hetu musā bhaṇe.॥8॥

"पारायणमनुगास्यामि, (इत्यायुष्मान् *पिंगिय:*)

यथाऽद्राक्षम् तथाऽख्याहि, विमलो भूरिमेध: ।

निष्कामो निर्वाण: *नाग:*, कस्य हेतो: मृषा भणेत्॥8॥

पिंगिय–मैं पारायण का वर्णन करूँगा, जिस निर्मल महाप्रज्ञ ने जैसा देखा, वैसा बताया । नाग निष्काम हैं, तृष्णा रहित हैं । वे असत्य क्यों बोले ?॥8॥

'I will proclaim accordingly the way to the further shore,'—so said the venerable Pingiya ;—' as he saw it, so he told it; the spotless, the very wise, the passionless, the desireless lord, for what reason should he speak falsely?.8

"पहीनमलमोहस्स , मानमक्खप्पहायिनो।

हन्दाहं कित्तयिस्सामि, गिरं वण्णूपसञ्हितं॥5/18/9॥

"Pahīnamalamohassa , mānamakkhappahāyino;

Handāhaṃ kittayissāmi, giraṃ vaṇṇūpasañhitaṃ.॥9॥

"प्रहीणमलमोहस्य, मानम्रक्षापहायिन: ।

हन्त ! अहं कीर्तयिष्यामि, गिरं वर्णोपसंहितम्॥9॥

मोहमल रहित, मान और म्रक्ष (कपट) रहित भगवान् के मधुर स्वर का वर्णन मैं करूँगा॥9॥

'Well! I will praise the beautiful voice of Buddha, who is without stain and folly, and who has left behind arrogance and hypocrisy.9.

"तमोनुदो बुद्धो समन्तचक्खु, लोकन्तगू सब्बभवातिवत्तो।

अनासवो सब्बदुक्खपहीनो, सच्चव्हयो ब्रह्मे उपासितो मे॥5/18/10॥

"Tamonudo buddho samantacakkhu, lokantagū sabbabhavātivatto;

Anāsavo sabbadukkhapahīno, saccavhayo brahme upāsito me.॥10॥

"तमोनुदो बुद्ध: समन्तचक्षो! लोकान्तग: सर्वभवातिवृत्त: ।

अनास्रव: सर्वदु:खप्रहीण:, सत्याह्व: ब्रह्म! उपासित: मया॥10॥

हे ब्राह्मण ! अन्धकार को दूर करने वाले, बुद्ध, समन्तचक्षु (सर्वदर्शी) लोक के अन्त को जानकर, सारे भवों से पार हो गए। अनास्रव, सारे दु:खों का प्रहाण करनेवाले, सत्य नाम वाले हम उनके समीप आए, अर्थात् हमने उनकी उपासना की॥10॥

'The darkness-dispelling Buddha, the all-seeing, who thoroughly understands the world', has overcome all existences, is free from passion, has left behind all pain, is rightly called Buddha, he, O Brāhmaṇa, has come to me. 10.

"दिजो यथा कुब्बनकं पहाय, बहुप्फलं काननमावसेय्य।

एवं पहं अप्पदस्से पहाय, महोदधिं हंसोरिव अज्झपत्तो॥5/18/11॥

"Dijo yathā kubbanakaṃ pahāya, bahupphalaṃ kānanamāvaseyya;

Evaṃ pahaṃ appadasse pahāya, mahodadhiṃ haṃsoriva ajjhapatto.॥11॥

"द्विजो यथा कुवनकमपहाय, बहुफलं काननमावसेत् ।

एवमप्यहमल्पदर्शिनम् अपहाय, महोदधिं* हंस इवाधिप्राप्त:॥11॥

जैसे पक्षी छोटे वन को छोड़कर बहुत फल वाले जंगल में रहता है, वैसे ही मैं आगतदर्शियों को छोड़ कर महाजलाशय में जाने वाले हँस की भाँति बुद्ध के पास पहुँचा॥11॥

'As the bird, having left the bush, takes up his abode in the fruitful forest, even so I, having left men of narrow views, have reached the great sea, like the swan. 11.

*महोदधिं = अनवतप्त (मानसरोवर) आदि के समान बड़ा जलाशय ।

"ये मे पुब्बे वियाकंसु, हुरं गोतमसासना, इच्चासि इति भविस्सति।
सब्बं तं इतिहितिहं, सब्बं तं तक्कवड्ढनं॥5/18/12॥

"Yeme pubbe viyākaṃsu, huraṃ gotamasāsanā; Iccāsi iti bhavissati;
Sabbaṃ taṃ itihitihaṃ, sabbaṃ taṃ takkavaḍḍhanaṃ.॥12॥

"ये मे पूर्वं व्याकार्षुः, दूरं गौतमशासनात्, इत्यासीत् इति भविष्यति ।
सर्वं तदिति ऐतिह्यम्, सर्वं तत् तर्कवर्धनम् ॥12॥

गौतम (बुद्ध) के शासन से बाहर के जो पहले मुझ से कहते थे –"ऐसा था, ऐसा होगा" वह सभी पारम्परिक था, वह सभी तर्क को बढाने वाला था॥12॥

'Those who before in another world explained the doctrine of Gotama, saying, "So it was, so it will be," all that was only oral tradition, all that was only something that increased my doubts. 12.

"एको तमनुदासिनो, जुतिमा सो पभङ्करो।
गोतमो भूरिपञ्ञाणो, गोतमो भूरिमेधसो॥5/18/13॥

"Eko tamanudāsino, jutimā so pabhaṅkaro;
Gotamo bhūripaññāṇo, gotamo bhūrimedhaso.॥13॥

"एकस्तमोऽनुदासीनः, ज्योतिष्मान् स प्रभाकरः ।
गौतमो भूरिप्रज्ञावान्, *गौतमो* भूरिमेधः॥13॥

अन्धकार को दूर करने वाले एक ही श्रेष्ठ हैं, वे प्रकाश देने वाले हैं, गौतम महाज्ञानी हैं; गौतम महाप्रज्ञावान् हैं॥13॥

'There is only one abiding dispelling darkness, that is the high-born, the luminous, Gotama of great understanding, Gotama of great wisdom, .13.

"यो मे धम्ममदेसेसि, सन्दिट्ठिकमकालिकं।
तण्हक्खयमनीतिकं , यस्स नत्थि उपमा क्वचि''॥5/18/14॥

"Yo me dhammamadesesi, sandiṭṭhikamakālikaṃ;
Taṇhakkhayamanītikaṃ , yassa natthi upamā kvaci".॥14॥

"यो मां धर्ममदिशत्, सांदृष्टिकमकालिकम् ।
तृष्णाक्षयमनीतिकम्, यस्य नास्ति उपमा क्वचित्"॥14॥

जिन्होंने मुझे आँखों के सामने तत्काल फलदायी, तृष्णा को नाश करने वाले और दुःख को दूर करने वाले धर्म का उपदेश दिया, जिसकी किसी से उपमा नहीं दी जा सकती॥14॥

'Who taught me the Dhamma, the instantaneous, the immediate, the destruction of desire, freedom from distress, whose likeness is no where'.14.

"किं नु तम्हा विप्पवससि, मुहुत्तमपि पिङ्गिय।
गोतमा भूरिपञ्ञाणा, गोतमा भूरिमेधसा॥5/18/15॥

"Kiṃ nu tamhā vippavasasi, muhuttamapi piṅgiya;
Gotamā bhūripaññāṇā, gotamā bhūrimedhasā.॥15॥

"किन्नु तस्मात् विप्रवससि, मुहूर्तमपि *पिंगिय* !
गौतमात् भूरिप्रज्ञात्, *गौतमात् भूरिमेधसा* ॥15॥

हे पिंगिय ! तुम उन महाज्ञानी गौतम, महाप्रज्ञावान् गौतम से मुहूर्त भर भी अलग रह सकते हो॥15॥

Canst thou stay away from him even for a moment, O Pingiya, from Gotama of great understanding, from Gotama of great wisdom, .15.

"यो ते धम्ममदेसेसि, सन्दिट्ठिकमकालिकं।
तण्हक्खयमनीतिकं, यस्स नत्थि उपमा क्वचि"॥5/18/16॥

"Yo te dhammamadesesi, sandiṭṭhikamakālikaṃ;
Taṇhakkhayamanītikaṃ, yassa natthi upamā kvaci".॥16॥

"यः त्वां धर्ममदिक्षत्, सांदृष्टिकमकालिकम् ।
तृष्णाक्षयमनीतिकम्, यस्य नास्ति उपमा क्वचित्"॥16॥

जिन्होंने तुम्हें आँखों के सामने तत्काल फलदायी, तृष्णा को नाश करने वाले और दुःख को दूर करने वाले धर्म का उपदेश दिया, जिसकी किसी से उपमा नहीं दी जा सकती॥16॥

'Who taught thee the Dhamma, the instantaneous, the immediate, the destruction of desire, freedom from distress, whose likeness is no- where?' .16.

"नाहं तम्हा विप्पवसामि, मुहुत्तमपि ब्राह्मण।
गोतमा भूरिपञ्ञाणा, गोतमा भूरिमेधसा॥5/18/17॥

"Nāhaṃ tamhā vippavasāmi, muhuttamapi brāhmaṇa;
Gotamā bhūripaññāṇā, gotamā bhūrimedhasā.॥17॥

"नाहं तस्मात् विप्रवसामि, मुहूर्तमपि *ब्राह्मण* ! ।
गौतमात् भूरिप्रज्ञात्, *गौतमात् भूरिमेधसा* ॥17॥

हे ब्राह्मण ! मैं महाज्ञानी गौतम, महाप्रज्ञावान् गौतम से मुहूर्त भर भी अलग नहीं रह सकता॥17॥

Piñgiya: 'I do not stay away from him even for a moment, O Brahamana, from Gotama of great understanding, from Gotama of great wisdom, .17

"यो मे धम्ममदेसेसि, सन्दिट्ठिकमकालिकं।
तण्हक्खयमनीतिकं, यस्स नत्थि उपमा क्वचि॥5/18/18॥

"Yo me dhammamadesesi, sandiṭṭhikamakālikaṃ;
Taṇhakkhayamanītikaṃ, yassa natthi upamā kvaci.॥18॥

"यः मां धर्ममदिक्षत्, सांदृष्टिकमकालिकम् ।
तृष्णाक्षयमनीतिकम्, यस्य नास्ति उपमा क्वचित्॥18॥

जिन्होंने मुझे आँखों के सामने तत्काल फलदायी, तृष्णा को नाश करने वाले और दु:ख को दूर करने वाले धर्म का उपदेश दिया, जिसकी किसी से उपमा नहीं दी जा सकती॥18॥

'Who taught me the Dhamma, the instantaneous, the immediate, the destruction of desire, freedom from distress, whose likeness is no where. 18.

"पस्सामि नं मनसा चक्खुना व, रत्तिन्दिवं ब्राह्मण अप्पमत्तो।
नमस्समानो विवसेमि रत्तिं, तेनेव मञ्ञामि अविप्पवासं॥5/18/19॥

"Passāmi naṃ manasā cakkhunāva, rattindivaṃ brāhmaṇa appamatto;
Namassamāno vivasemi rattiṃ, teneva maññāmi avippavāsaṃ.॥19॥

"पश्यामि एनं मनसा चक्षुषा एव, रात्रिदिवं ब्राह्मण ! अप्रमत्त: ।
नमन् विवसामि रात्रिम्, तेनैव मन्येऽविप्रवास:॥19॥

हे ब्राह्मण ! मैं रात-दिन अप्रमत्त हो मन की आँख से ही उन्हें देखता हूँ। नमस्कार करते हुए ही मैं रात व्यतीत करता हूँ । उसी से मैं उनसे अलग रहना नहीं समझता हूँ॥19॥

'I see him in my mind and with my eye, vigilant, O Brāhamaṇa, night and day; worshipping I spend the night, therefore I think I do not stay away from him. 19.

"सद्धा च पीति च मनो सति च, नापेन्ति मे गोतमसासनम्हा।
यं यं दिसं वजति भूरिपञ्ञो, स तेन तेनेव नतोहमस्मि॥5/18/20॥

"Saddhā ca pīti ca mano sati ca, nāpenti me gotamasāsanamhā;
Yaṃ yaṃ disaṃ vajati bhūripaññho, sa tena teneva natohamasmi.॥20॥

"श्रद्धा च प्रीतिश्च मन: स्मृतिश्च नापयान्ति मे *गौतम*शासनात् ।
यां यां दिशां व्रजति *भूरिप्रज्ञ:*, स तां तामेव नतोऽहमस्मि॥20॥

मेरी श्रद्धा, प्रीति, मन और स्मृति गौतम की शिक्षा से नहीं हटती । जिन-जिन दिशाओं में महाप्रज्ञ जाते हैं, मैं वहाँ-वहाँ नतमस्तक होता हूँ॥20॥

'Belief and joy, mind and thought incline me towards the doctrine of Gotama; whichever way the very wise man goes, the very same I am inclined to. 20.

"जिण्णस्स मे दुब्बलथामकस्स, तेनेव कायो न पलेति तत्थ।
संकप्पयन्ताय वजामि निच्चं, मनो हि मे ब्राह्मण तेन युत्तो॥5/18/21॥

"Jiṇṇassa me dubbalathāmakassa, teneva kāyo na paleti tattha;
Saṃkappayantāya vajāmi niccaṃ, mano hi me brāhmaṇa tena yutto.॥21॥

"जीर्णस्य मे दुर्बलस्थामकस्य, तेनैव कायो न परेति* तत्र ।
संकल्पेन व्रजामि नित्यम्, मनो हि मे ब्राह्मण ! तेन युक्त:॥21॥

जीर्ण, बलहीन मेरा शरीर वहाँ नहीं जा सकता। मैं नित्य मन से जाता हूँ। हे ब्राह्मण! मेरा मन उनके साथ है॥21॥

'Therefore, as I am worn out and feeble, my body does not go there, but in my thoughts I always go there, for my mind, O Brāhamaṇa, is joined to him.21.

* गच्छति

"पङ्के सयानो परिफन्दमानो, दीपा दीपं उपप्लविं ।
अथद्दसासिं सम्बुद्धं, ओघतिण्णमनासवं"॥5/18/22॥

"Paṅke sayāno pariphandamāno, dīpā dīpaṃ upaplaviṃ;
Athaddasāsiṃ sambuddhaṃ, oghatiṇṇamanāsavaṃ".॥22॥

"पङ्के शयान: परिस्पन्दमान:, द्वीपात् द्वीपमुपप्लविषु: ।
अथ अद्राक्षं *सम्बुद्धम्*, ओघतीर्णमनास्रवम्"॥22॥

मैं कीचड़ में सोते छटपटाते हुए एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाता रहा । तब मैंने संसार रूपी बाढ़ से पार हुए, अनाश्रव सम्बुद्ध को देखा॥22॥

'Lying in the mud wriggling, I jumped from island to island; then I saw the perfectly Enlightened, who has crossed the stream, and is free from passion.' .22.

"यथा अहू वक्कलि मुत्तसद्धो, भद्रावुधो आळवि गोतमो च।
एवमेव त्वं पि पमुञ्चस्सु सद्धं,
गमिस्ससि त्वं पिङ्गिय मच्चुधेय्यस्स पारं"॥5/18/23॥

"Yathā ahū vakkali muttasaddho, bhadrāvudho āḷavi gotamo ca;
Evameva tvaṃ pi pamuñcassu saddhaṃ,
Gamissasi tvaṃ piṅgiya maccudheyyassa pāraṃ".॥23॥

"यथाऽभूत् *वक्कलि:* मुक्तश्रद्ध:, *भद्रावुध: आलवि: गौतमश्च* ।
एवमेव त्वमपि प्रमुञ्चस्व श्रद्धाम्,
गमिष्यसि त्वं *पिंगिय* ! मृत्युध्येयस्य पारम्"॥23॥

भगवान् –जिस प्रकार वक्कलि, भद्राबुध और आलवी गौतम श्रद्धा द्वारा मुक्त हुए, उसी प्रकार तुम भी श्रद्धा करो । पिंगिल ! तुम मृत्यु के राज्य से परे हो जाओगे॥23॥

'As Vakkali was delivered by faith, as well as Bhadravudha and Alavi-Gotama, so thou shalt let faith deliver thee, and thou shalt go, O Piñgiya, to the further shore of the realm of death.'.23.

"एस भिय्यो पसीदामि, सुत्वान मुनिनो वचो।
विवट्टच्छदो सम्बुद्धो, अखिलो पटिभानवा॥5/18/24॥

"Esa bhiyyo pasīdāmi, sutvāna munino vaco;
Vivaṭṭacchado sambuddho, akhilo paṭibhānavā.॥24॥

"एष भूय: प्रसीदामि, श्रुत्वा मुने: वच: ।
विवृतच्छद: सम्बुद्धोऽखिल: प्रतिभानवान्॥24॥

पिंगिय–मैं मुनि की इस बात को सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हूँ । आप खुले ज्ञान वाले, सम्बुद्ध, चित्तमल-रहित और ज्ञानी हैं॥24॥

'I am highly pleased at hearing the Muni's words; Sambuddha has removed the veil, he is free from harshness and wise. 24.

"अधिदेवे अभिञ्ञाय, सब्बं वेदि वरोवरं ।
पञ्हानन्तकरो सत्था, कङ्खीनं पटिजानतं॥5/18/25॥

"Adhideve abhiññāya, sabbaṃ vedi varovaraṃ;
Pañhānantakaro satthā, kaṅkhīnaṃ paṭijānataṃ.॥25॥

"अधिदेवान् अभिज्ञाय, सर्वमवेदीत् वरावरम् ।
प्रश्नानन्तकर: शास्ता, कांक्षानां प्रतिजानताम्॥25॥

आप श्रेष्ठ धर्मों को जानकर आर-पार का सब कुछ जान गये । शास्ता सन्देह करने वालों और समझदार लोगों के प्रश्नों का अन्त करने वाले हैं॥25॥

'Having penetrated all things concerning the gods, he knows everything of every description; the Shāstā will put an end to all questions of the doubtful that will admit him. 25.

"असंहीरं असङ्कुप्पं, यस्स नत्थि उपमा क्वचि।
अद्धा गमिस्सामि न मेत्थ कङ्खा,
एवं मं धारेहि अधिमुत्तचित्तं"ति॥5/18/26॥

"Asaṃhīraṃ asaṅkuppaṃ, yassa natthi upamā kvaci;
Addhā gamissāmi na mettha kaṅkhā,
evaṃ maṃ dhārehi adhimuttacittaṃ"ti.॥26॥

"असंहार्यमसंकल्प्यम्, यस्य नास्ति उपमा क्वचित् ।
अद्धा गमिष्यामि न मेऽत्र कांक्षा,
एवं मां धारय अधिमुक्तचित्तम्" इति॥ 26॥

निर्वाण अजेय है । अटल है । जिसकी कोई उपमा नहीं है । मैं अवश्य उसे प्राप्त करूँगा। उसके विषय में मुझे कोई सन्देह नहीं । हे पूर्ण रूप से मुक्त चित्त वाले ! भगवन् ! –ऐसा मुझे धारण करें॥26॥

'To the insuperable, the unchangeable Nibbana, whose likeness is nowhere, I shall certainly go; in this Nibbana there will be no doubt left for me, so know me to be of a dispossessed mind.26.

पारायनवग्गो निट्ठितो
(Pārāyanavaggo niṭṭhito)

सुत्तुद्दानं–

उरगो धनियो पि च, खग्गविसाणो कसि च।
चुन्दो भवो पुनदेव, वसलो च करणीयं च।
हेमवतो अथ यक्खो, विजयसुत्तं मुनिसुत्तवरं ति॥1॥
पठमकट्ठवरो वरवग्गो, द्वादससुत्तधरो सुविभत्तो।
देसितो चक्खुमता विमलेन, सुय्यति वग्गवरो उरगो ति॥2॥
रतनामगन्धो हिरिमङ्गलनामो, सुचिलोमकपिलो च ब्राह्मणधम्मो।
नावा किंसीलउट्ठहनो च, राहुलो च पुन पि वङ्गीसो॥3॥
सम्मापरिब्बाजनीयो पि चेत्थ, धम्मिकसुत्तवरो सुविभत्तो।
चुद्दससुत्तधरो दुतियम्हि, चूळकवग्गवरो ति तमाहु॥4॥

पब्बज्जपधानसुभासितनामो, पूरळासो पुनदेव माघो च।
सभियं केणियमेव सल्लनामो, वासेट्ठवरो कालिको पि च॥5॥
नालकसुत्तवरो सुविभत्तो, तं अनुपस्सी तथा पुनदेव।
द्वादससुत्तधरो ततियम्हि, सुय्यति वग्गवरो महानामो॥6॥
कामगुहट्ठकदुट्ठकनामा , सुद्धवरो परमट्ठकनामो।
जरा मेतियवरो सुविभत्तो, पसूरमागण्डिया पुराभेदो॥7॥
कलहविवादो उभो वियुहा च, तुवटकअत्तदण्डसारिपुत्ता।
सोळससुत्तधरो चतुत्थम्हि, अट्ठकवग्गवरोति तमाहु॥8॥
मगधे जनपदे रमणीये, देसवरे कतपुञ्ञनिवेसे।
पासाणकचेतियवरे सुविभत्ते, वसि भगवा गणसेट्ठो॥9॥
उभयवासमागतियम्हि, द्वादसयोजनिया परिसाय।
सोळसब्राह्मणानं किर पुट्ठो, पुच्छाय सोळसपञ्हकम्मिया।
निप्पकासयि धम्ममदासि॥10॥
अत्थपकासकब्यञ्जनपुण्णं, धम्ममदेसेसि परखेमजनियं ।
लोकहिताय जिनो द्विपदग्गो, सुत्तवरं बहुधम्मविचित्रं।
सब्बकिलेसपमोचनहेतुं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥11॥
ब्यञ्जनमत्थपदं समयुत्तं, अक्खरसञ्ञितओपमगाळ्हं।
लोकविचारणञाणपभग्गं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥12॥
रागमले अमलं विमलग्गं, दोसमले अमलं विमलग्गं।
मोहमले अमलं विमलग्गं, लोकविचारणञाणपभग्गं।
देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥13॥
क्लेसमले अमलं विमलग्गं, दुच्चरितमले अमलं विमलग्गं।
लोकविचारणञाणपभग्गं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥14॥
आसवबन्धनयोगाकिलेसं, नीवरणानि च तीणि मलानि।
तस्स किलेसपमोचनहेतुं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥15॥
निम्मलसब्बकिलेसपनूदं, रागविरागमनेजमसोकं।
सन्तपणीतसुदुद्दसधम्मं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥16॥
रागञ्च दोसकमभञ्जितसन्तं, योनिचतुग्गतिपञ्चविञ्ञाणं।
तण्हारतच्छदनताणलतापमोक्खं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥17॥
गम्भीरदुद्दससण्हनिपुणं, पण्डितवेदनियं निपुणत्थं।

लोकविचारणत्राणपभग्गं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥18॥
नवङ्गकुसुममालगीवेय्यं, इन्द्रियझानविमोक्खविभत्तं।
अट्ठङ्गमग्गधरं वरयानं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥19॥
सोमुपमं विमलं परिसुद्धं, अण्णवमूपमरतनसुचित्तं।
पुप्फसमं रविमूपमतेजं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो॥20॥
खेमसिवं सुखसीतलसन्तं, मच्चुतताणपरं परमत्थं।
तस्स सुनिब्बुतदस्सनहेतुं, देसयि सुत्तवरं द्विपदग्गो ति॥21॥

Suttuddānaṃ –

Urago dhaniyo pi ca, khaggavisāṇo kasi ca;
Cundo bhavo punadeva, vasalo ca karaṇīyaṃ ca;
Hemavato atha yakkho, vijayasuttaṃ munisuttavaraṃ ti.1.
Paṭhamakaṭṭhavaro varavaggo, dvādasasuttadharo suvibhatto;
Desito cakkhumatā vimalena, suyyati vaggavaro urago ti.2.
Ratanāmagandho hirimaṅgalanāmo, sucilomakapilo ca brāhmaṇadhammo;
Nāvā kiṃsīlauṭṭhahano ca, rāhulo ca puna pi vaṅgīso.3.
Sammāparibbājanīyo pi cettha, dhammikasuttavaro suvibhatto;
Cuddasasuttadharo dutiyamhi, cūḷakavaggavaro ti tamāhu.4.
Pabbajjapadhānasubhāsitanāmo, pūraḷāso punadeva māgho ca;
Sabhiyaṃ keṇiyameva sallanāmo, vāseṭṭhavaro kāliko pi ca.5.
Nālakasuttavaro suvibhatto, taṃ anupassī tathā punadeva;
Dvādasasuttadharo tatiyamhi, suyyati vaggavaro mahānāmo.6.
Kāmaguhaṭṭhakaduṭṭhakanāmā , suddhavaro paramaṭṭhakanāmo;
Jarā mettiyavaro suvibhatto, pasūramāgaṇḍiyā purābhedo.7.
Kalahavivādo ubho viyuhā ca, tuvaṭakaattadaṇḍasāriputtā;
Soḷasasuttadharo catutthamhi, aṭṭhakavaggavaroti tamāhu.8.
Magadhe janapade ramaṇīye, desavare katapuññanivese;
Pāsāṇakacetiyavare suvibhatte, vasi bhagavā gaṇaseṭṭho.9.
Ubhayavāsamāgatiyamhi, dvādasayojaniyā parisāya;
Soḷasabrāhmaṇānaṃ kira puṭṭho, pucchāya soḷasapañhakammiyā;
Nippakāsayi dhammamadāsi.10.
Atthapakāsakabyañjanapuṇṇaṃ, dhammamadesesi parakhemajaniyaṃ;
Lokahitāya jino dvipadaggo, suttavaraṃ bahudhammavicitraṃ;
Sabbakilesapamocanahetuṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.11.
Byañjanamatthapadaṃ samayuttaṃ, akkharasaññitaopamagāḷhaṃ;
Lokavicāraṇañāṇapabhaggaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.12.
Rāgamale amalaṃ vimalaggaṃ, dosamale amalaṃ vimalaggaṃ;
Mohamale amalaṃ vimalaggaṃ, lokavicāraṇañāṇapabhaggaṃ;
Desayi suttavaraṃ dvipadaggo.13.
Klesamale amalaṃ vimalaggaṃ, duccaritamale amalaṃ vimalaggaṃ;
Lokavicāraṇañāṇapabhaggaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.14.
Āsavabandhanayogākilesaṃ, nīvaraṇāni ca tīṇi malāni;
Tassa kilesapamocanahetuṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.15.
Nimmalasabbakilesapanūdaṃ, rāgavirāgamanejamasokaṃ;
Santapaṇītasududdasadhammaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.16.

Rāgañca dosakamabhañjitasantaṃ, yonicatuggatipañcaviññāṇaṃ;
Taṇhāratacchadanatāṇalatāpamokkhaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.17.
Gambhīraduddasasaṇhanipuṇaṃ, paṇḍitavedaniyaṃ nipuṇatthaṃ;
Lokavicāraṇañāṇapabhaggaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.18.
Navaṅgakusumamālagīveyyaṃ, indriyajhānavimokkhavibhattaṃ;
Aṭṭhaṅgamaggadharaṃ varayānaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.19.
Somupamaṃ vimalaṃ parisuddhaṃ, aṇṇavamūpamaratanasucittaṃ;
Pupphasamaṃ ravimūpamatejaṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo.29.
Khemasivaṃ sukhasītalasantaṃ, maccutatāṇaparaṃ paramatthaṃ;
Tassa sunibbutadassanahetuṃ, desayi suttavaraṃ dvipadaggo ti.21.

सुत्तोद्दानम्–

*उरगो धनियो*ऽपि च, *खग्गविसाण: कसि* च।
चुन्दो भव: पुनदेव, *वसलश्च* करणीयञ्च।
*हेमवतो*ऽथ *यक्ख:*, *विजय*सुत्तं *मुनिसुत्तवरि*॥1॥
प्रथमाष्टकवरो वरवर्ग:, द्वादशसुत्तधर: सुविभक्त:।
देशितश्चक्षुष्मता विमलेन, श्रूयते वर्गवर उरग इति॥2॥
रतनामगन्धो हिरिमङ्गलानाम, सुचिलोमकपिलश्च ब्राह्मणधर्म:।
*नावा किंसीलोट्ठान*श्च, *राहुल*श्च पुनरपि *वङ्गीस*: ॥3॥
*सम्मापरिब्बाजनीयो*ऽपि चात्र *धम्मिक*: सुत्तवर: सुविभक्त:।
चतुर्दशसुत्तधरो द्वितीये *चूलवग्गवर* इति तमाहु:॥4॥
पब्बज्जापधानसुभासितानाम, पूरळास: पुनरेव *माघश्च*।
*सभियं केणियमेव सल्लनाम, वासेट्ठवर: कोकालिको*ऽपि च॥5॥
नालक: सुत्तवर: सुविभक्त:, तमनु *पश्थी* तथा पुनदेव।
द्वादशसुत्तधरस्तृतीयेऽपि, श्रूयते वर्गवरो महानाम॥6॥
*कामगुहट्ठकदुट्ठक*नामानि , सुद्धवर: *परमट्ठ*कानाम्।
*जरा मेतिय*वर: सुविभक्त:, *पसूरमागन्दिय: पुराभेद:*॥7॥
कलहविवादौ उभौ *व्यूहौ* च, *तुवटक: अत्तदण्डसारिपुत्त:*।
षोडशसुत्तधरश्चतुर्थे हि, अट्ठकवग्गवर इति तमाहु:॥8॥
मगधे जनपदे रमणीये, देसवरे कृतपुण्यनिवेशे।
पाषाणकचैत्यवरे सुविभक्ते, अवसत् भगवान् गणश्रेष्ठ:॥9॥
उभयवासमागतायां द्वादशयोजन्या: परिषदा।
षोडशब्राह्मणानां किल पृष्ट:, पृच्छाया: षोडशप्रश्नकर्मिकाया: ।
न्यप्रकाशयत् धर्ममददत्॥10॥
अर्थप्रकाशकव्यञ्जनपुण्यम्, धर्ममदेशयत् परक्षेमजन्यम् ।
लोकहिताय जिनो द्विपदाग्र:, सुत्तवरं बहुधर्मविचित्रम्।
सर्वक्लेशप्रमोचनहेतुमादेशयत्, सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥11॥

व्यञ्जनमर्थपदं समयुक्तम्, अक्षरसंज्ञितोपमगाढम्।
लोकविचारणञाणप्रभग्नम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥12॥
रागमले अमलं विमलग्नम्, दोषमले अमलं विमलग्नम्।
मोहमले अमलं विमलग्नम्, लोकविचारणञाणप्रभग्नम् ।
अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥13॥
क्लेशमले अमलं विमलाग्रम्, दुश्चरितमले अमलं विमलग्नम्।
लोकविचारणञाणप्रभग्नम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥14॥
आस्रवबन्धनयोगक्लेशम्, नीवरणानि च त्रीणि मलानि।
तस्य क्लेशप्रमोचनहेतुम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥15॥
निर्मलसर्वक्लेशापनुदम्, रागविरागमनेजमशोकम्।
शान्तप्रणीतसुदुर्दशधर्मम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥16॥
रागञ्च दोषकमभञ्जितशान्तम्, योनिचतुर्गतिपञ्चविज्ञानम्।
तृष्णारतच्छदनत्राणलतापमोक्षम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥17॥
गम्भीरदुर्दशश्लक्ष्णनिपुणम्, पण्डितवेदनीयं निपुणार्थम्।
लोकविचारणञाणप्रभग्नम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥18॥
नवाङ्गकुसुममालग्रीवेयम्, इन्द्रियज्ञानविमोक्षविभक्तम्।
अष्टाङ्गमार्गधरं वरयानम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥19॥
सोमोपमं विमलं परिशुद्धम्, अर्णवोपमरत्नसुचित्रम्।
पुष्पसमं रविमुपमातेज:, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र:॥20॥
क्षेमशिवं सुखशीतलसन्तम्, मृत्युत: त्राणपरं परमार्थम्।
तस्य सुनिवृत्तदर्शनहेतुम्, अदेशयत् सुत्तवरं द्विपदाग्र इति॥21॥ •••

सुत्तनिपातपालि का उद्दान= सुत्त-समुदाय–

1. उरगवग्ग– इस प्रथम वर्ग में 12 सुत्त परिगणित हैं– 1. उरगसुत्त, 2. धनियसुत्त, 3. खग्गविसाणसुत्त, 4. कसिभारद्वाजसुत्त, 5. चुन्दसुत्त, 6. पराभवसुत्त, 7. वसलसुत्त, 8. मैत्त (करणीय) सुत्त, 9. हैमवत सुत्त, 10. आळवक (यक्ष) सुत्त, 11 विजयसुत्त, एवं 12 मुनिसुत्त॥1॥

इस प्रथम श्रेष्ठ वर्ग को बारह सुत्तों में विभक्त कर परम पावन भगवान् सम्यक्सम्बुद्ध ने उस साधकविशेष को उपदिष्ट किया है। यह उरगवर्ग नाम से प्रसिद्ध है॥2॥

2. चुल्लवग्ग- इस द्वितीय वर्ग में ये सुत्त परिगणित हैं- 1. रतनसुत्त, 2. आमगन्धसुत्त, 3. हिरिसुत्त, 4. मंगलसुत्त, 4. सूचिलोमसुत्त, 6. धम्मचरियसुत्त, 7. ब्राह्मणधम्मिकसुत्त, 8. नावासुत्त, 9. किंसीलसुत्त, 10. उट्ठानसुत्त, 11. राहुलसुत्त, 12. न्याग्रोधकल्प (वङ्गीस) सुत्त,॥3॥

13. सम्मापरिब्बाजनीयसुत्त एवं 14. धम्मिकसुत्त हैं। इस प्रकार, इस द्वितीय चुल्लवग्ग में चौदह सुत्त परिगणित हैं॥4॥

3. महावग्ग- इस तृतीय वर्ग में ये सुत्त परिगणित हैं- 1. पब्बज्जासुत्त, 2. पधानसुत्त, 3. सुभासितसुत्त, 4. सुन्दरिकभारद्वाज (पुरोडाश) सुत्त, 5. माघसुत्त, 6. सभियसुत्त, 7. सेल (केणिय) सुत्त, 8. सल्ल सुत्त, 9. वासेट्ठ सुत्त, 10. कोकालिकसुत्त,॥5॥

11. नालक सुत्त एवं 12 द्वयातानुपस्सनासुत्त- इन बारह सुत्त को इस 'महा' नामक वग्ग में संग्रह किया गया है॥6॥

4. अट्ठकवग्ग- इस चतुर्थ वर्ग में ये सुत्त परिगणित हैं- 1. कामसुत्त, 2. गुहट्ठकसुत्त, 3. दुट्ठट्ठकसुत्त, 4. सुद्धट्ठक सुत्त, 5. परमट्ठकसुत्त, 6. जरासुत्त, 7. तिष्य मैत्तेय्यसुत्त, 8. पसूरसुत्त., 8. मागन्डियसुत्त, 10. पुराभेदसुत्त,॥7॥

11. कलहविवाद सुत्त 12. चूलव्यूहसुत्त, 13. महाव्यूहसुत्त, 14. तुवटकसुत्त, 15. अत्तदण्डसुत्त, 16. सारिपुत्तसुत्त। इन सोलह (16) सुत्तों को चतुर्थ अष्टकवर्ग में संगृहीत किया गया है॥8॥

5. परायणवग्ग- कभी पुण्यकर्मा जनों के निवासस्थल एवं रमणीय मगध जनपद के अन्तर्गत पाषाणक चैत्य में गणश्रेष्ठ भगवान् सम्यक्सम्बुद्ध साधना हेतु विराजमान थे॥9॥

दोनों ही वर्षावासों की समाप्ति के अवसर पर, बारह योजन तक विस्तृत भिक्षुपरिषद् में विराजमान भगवान् बुद्ध ने सोलह (16) ब्राह्मणों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का धर्मसम्मत उत्तर दिया था॥॥10॥

उस (उत्तर) में भगवान् ने अर्थप्रकाशक शब्दों से परिपूर्ण और साधकों को क्षेम (शान्ति) की ओर बढ़ाने वाले धर्म की देशना की। भगवान ने लोकहित में विविध धार्मिक साधनाओं से युक्त तथा सभी दुःखों के नाम में समर्थ इस श्रेष्ठ सुत्तनिपात का उपदेश किया॥11॥

जिसमें सभी अर्थ विशिष्ट तथा शब्दों में सम्पृक्त हैं, जिसमें स्थान-स्थान पर सुन्दर शब्दों में विविध उपमाओं का भी संग्रह है तथा जो जिज्ञासुओं को धार्मिक जिज्ञासुओं का शामक है- ऐसे इस श्रेष्ठ **सुत्तनिपात** की भगवान् ने देशना की थी॥12॥

उन पुरुषोत्तम भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट यह **सुत्तनिपात** राग, द्वेष एवं मोह का नाश करने में समर्थ है; क्यों कि वह स्वयं स्वच्छता की पराकाष्ठा तक पहुँचा हुआ है तथा जिज्ञासुओं की धार्मिक जिज्ञासाओं के शमन करने में पूर्णतः समर्थ है॥13॥

उन पुरुषोत्तम भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट यह **सुत्तनिपात** क्लेश एवं दुश्चरित का नाश करने में समर्थ है; क्योंकि वह स्वयं अतिशय स्वच्छ है तथा जिज्ञासुओं की धार्मिक जिज्ञासाओं का भी पूर्णतः शामक है॥14॥

साधक के सभी क्लेशमलों के नाश के लिए उन नरश्रेष्ठ द्वारा उपदिष्ट यह **सुत्तनिपात** आश्रवों का बन्धनों का, योगों का, क्लेशों का नीवरणों का तीन मलों को सर्वथा नष्ट करने में समर्थ है॥15॥

यह सुत्तनिपात निर्मल है, एतदनुसार साधना करने पर सभी क्लेशों का नाशक है, सांसारिक आसक्तियों को दूर भगाने वाला, स्थिर एवं शोकरहित, शान्त, उत्तम एवं कठिनता से साक्षात्करणीय धर्म का उपदेशक है॥16॥

राग एवं द्वेष का नाश कर शान्त स्थिति तक पहुँचाने वाले, चार योनियों, पाँच गतियों एवं विज्ञानों के बोधक, तृष्णा एवं रति (आसक्ति) के नाशक इस **सुत्तनिपात** का भगवान् बुद्ध ने उपदेश किया था॥17॥

गम्भीर, दुर्दर्श, श्लक्ष्य (सूक्ष्म) एवं पण्डितों द्वारा ही जानने योग्य अर्थ के बोधक तथा धार्मिक जिज्ञासुओं की समस्त जिज्ञासाओं के शामक इस **सुत्तनिपात** का उन पुरुषोत्तम भगवान् बुद्ध ने उपदेश किया था॥18॥

नये पुष्पों की माला तथा किसी नये कण्ठाभूषण के समान शोभास्पद, इन्द्रिय, ध्यान, विमोक्ष आदि के वर्णन से विभक्त, आर्य अष्टांगिक मार्ग का निर्देशक तथा सद्धर्म का प्रेरणास्रोत यह सुत्तनिपात भगवान् सम्यक्सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट हुआ था॥19॥

जो चन्द्रमा के समान सर्वथा स्वच्छ तथा निर्मल है, समुद्र के समान जिसमें नाना प्रकार के रत्न (धर्मसिद्धान्त) भरे हैं, जो पुष्प के समान देखने समझने में सुन्दर है, सूर्य के समान तेजस्वी (प्रतापी) है, ऐसे सुत्तनिपात का उपदेश भगवान् बुद्ध ने किया था॥20॥

जो क्षेम (शान्ति) एवं शिव (मंगल) प्रद है, सुखप्रद एवं शीतल तथा शान्त है, मृत्यु से स्थायी रक्षा का एक समर्थ उपाय है, जो परमार्थ (निर्वाण) का बोधक है, ऐसे सुत्तनिपात की देशना भगवान् बुद्ध ने जिज्ञासु को निर्वाणविषयक समस्त परिचय देने के लिये की थी॥21॥ •••

सुत्तनिपातपालि सम्पूर्ण

Gurop of Suttas-

Uragavagga - In tihis first Vagga there are twelve Suttas 1. Uragasutta,. 2. Dhaniyasutta, 3. Khaggavisāṇasutta, 4. kasibhardvajasutta. 5. Cundasutta. 6. Prābhavasutta, 7. Vasalsutta. 8. Mettasutta, 9. Hemavatasutta, 10. Ālavakasutta, 11. Vijayasutta, 12. Munisutta.1.

This first Vagga is supreme, it is divided into twelve suttas and is preached by Caksusamatā vimal and is famours by the name of Uragavagga .2.

Culavagga-In this secound vagga these suttas are counted 1. Ratansutta, 2. Āmagandhasutta, 3. Hirisutta. 4. Maṅgalsutta, 5. Sucilomsutta, 6. Dhammacariyasutta, 7. Brāhamanadhammikasutta, 8. Nāvasutta, 9. Kinseelsutta, 10. Uṭṭhānsutta, 11. Rāhulsutta, 12. Vaṅagisasutta.3.

In this Vagga 13. Sammāparibbajaniyasutta, 14, Dhammikasutta, are also gathered. In this way, there are 14 suttas in this second Culavagga.4.

Mahāvagga- In this third vagga, these suttas are there. 1. Pabajjāsutta, 2. Padhānsutta, 3. subhāsitasutta, 4. Sundarik Bhardvājasutta, 5. Maghasutta, 6. Sabhiyasutta, 7. Selasutta 8. Sallasuta, 9. Vāseṭṭhasutta, 10. Kokaliyasutta.5.

11. Nālakasutta, 12. Dvayatanupassnāsutta.12. these twelve suttas are explained in this Vagga named Mahā.6.

Aṭṭakavagga- These suttas are in forth Vagga- 1. Kāmasutta, 2. Guhaṭṭhakasutta, 3. Duṭṭhakasutta. 4. Suddhaṭṭhakasutta. 5. Paramaṭṭhakasutta, 6. Jarāsuta. 7. Tissametteyasuta, 8. Pasursutta. 9. Māganadiyasutta. 10. Purabhedasutta.7.

11. Kalashavivādasutta. 13. Cūlavayūhasuta, 14, Mahāvyuhasutta 15. Attadandasutta, 16. Sāṛiputtasutta- these sixteen suttas are compiled in fourth Aṭṭhakavagga.

5. **Parāyaṇavagga**- Sometime in well-bild Paṣāṇaka cetya of the residence of virtueous people and beautiful Magadha Janapada, Gaṇaśriṣtha Bhagavān Samyaka-sambuddha was splendid for accomplishment.9.

At the end of Varṣāvāsa, Bhikhu aassembly which is expanded twelve yojan, Lord Buddha religiously answered the 16 questions asked by the Brahamins.10.

In the answer, Bhagavān Buddha Bhagavān religion with the meaningful words which is forwarded the achiever towards pleace. That Purusotama preached supreme Suttanipāta in which there is different religious accumplishment of welfare and able to destruction of all sorrows.10.

In which special meanings and words are endowed, at places various pleaces in beautiful simili and who fulfils the desire of all curious. Bhagavān has preached of this supreme Suttanipāta.

This suttanipāta preached by Bhagavān Buddha is capable of destroying affection, enmity and delusion because it is pure fresh and is also capable of fulfilling the religious investigation of all investigator.13.

This Suttanipāta preached by Bhagavān Buddha, is capable to destroying pain and bad conduct because it is extremely pure and fulfils the desires of all inversigator.14.

To destroy the sorrow of achievers, this Suttanipāta preached by Bhagavān Buddha, is capable of destroying Āshravās, bondage, Yoga, sorrow, Neevaraṇa and three excrements .15.

This Suttanipāta is pure, Doing accumplishment according to this, distroys all sorrow, keeps the worldly attachement far away, stable and sorrowless, silent, great and preacher of religion achieved with difficulty.16.

Bhagavān Buddha has preached this Suttanipāta which has destroyes affection and enmity and moved to peaceful situation, dicator of four births, five motions and science, destroyer of desires and attachments.17.

Bhagavān Buddha had preached this Suttanipāta which is dignified unconquerable, slender, worth known by wisemen, indicator of meaning, fulfis the desires of all investigator.18.

This Suttanipāta preached by Bhagavān Buddha is as splendid as garland of new flowers and any new necklace, divided from senses, meditation and the description of Salvation, director of Ārya-Aṣtāngikamarga and stimulus base of Saddharma.19.

Bhagavān Buddha has preached this Suttanipāta which is always pure and clear like moon, in which different types of Jewels (Dharmasiddhant) are placed like an ocean, which is beautiful to look at and understand like a flower, is as energetic as fun.20.

Bhagavān Buddha had preached this Suttanipāta to introduce the whole about Salvaton to the inverstigator. This Suttanipāta is peaceful, welfare, happiness refreshing and pacified a solution to be secure from death, which is informer of Paramārtha (Supreme aim).21. •••

निट्ठितो सुत्तनिपातो

अट्ठभाणबारपरिमाणाय पालिया

निष्ठित: सुत्तनिपात:

अष्टभाणबारपरिमाणायां पालिभाषायाम्

आठ माणवार के बराबर पालि में सुत्तनिपात समाप्त

Suttanipāta is ended in Pali equal to eight Bhāṇavār

***

परिशिष्ट

सुत्तनिपातपालि
गाथानुक्रमणिका

अकक्कसं विञ्ञापनिं	3/9/39
अकिञ्चनं अनादानं	5/11/3
अकित्तयी विवटचक्खु	4/14/7
अक्कोधनं वतवन्तं	3/9/31
अक्कोधनो असन्तासी	4/10/3
अक्कोधनो विगतखिलोहमस्मि	1/2/2
अक्कोसं वधबन्धञ्च	3/9/30
अक्खातारं पवत्तारं	1/9/17
अगमा राजगहं बुद्धो	3/1/4
अग्गिहुत्तमुखा यञ्ञा	3/7/21
अच्ची यथा वातवेगेन खित्ता	5/7/6
अच्छेच्छि तण्हं इध नामरूपे	2/12/13
अजितो अद्दस बुद्धं	5/1/41
अजितो तिस्समेत्तेय्यो	5/18/1
अज्जपण्णरसो उपोसथो	1/9/1
अज्झत्तञ्च बहिद्धा च	5/14/7
अज्झत्तमेवुपसमे	4/14/5
अज्झायककुले जाता	1/7/25
अञ्ञं इतो याभिवदन्ति धम्मं	4/12/14
अञ्ञत्र तम्हा समया	2/7/8
अञ्ञातमेतं वचनं	3/11/21
अञ्ञाय लोकं परमत्थदस्सिं	1/12/13
अञ्ञाय सब्बानि निवेसनानि	1/12/4
अञ्ञेन च केवलिनं महेसिं	1/4/7, 3/4/27
अञ्ञेपि पस्स गमिने	3/8/14
अट्ठचत्तालीसं वस्सानि	2/7/6
अट्ठानतं सङ्गणिकारतस्स	1/3/20
अट्ठिनहारुसंयुत्तो	1/11/2
अणुमत्तोपि पुञ्ञेन	3/2/7
अतिसारदिट्ठियाव सो समत्तो	4/12/12
अतीतयोब्बनो पोसो	1/6/20
अतीतेसु अनागतेसु चापि	2/13/15
अत्तं पहाय अनुपादियानो	4/5/5
अत्तदण्डा भयं जातं	4/15/1
अत्तवेतनभतोहमस्मि	1/2/7
अत्तहेतु परहेतु	1/7/7
अत्थङ्गतस्स न पमाणमत्थि	5/7/8
अत्थङ्गतो सो उद वा सो नत्थि	5/7/7
अत्थाय वत मे बुद्धो	1/10/11
अत्थि वसा अत्थि धेनुपा	1/2/9
अत्थि सद्धा तथा वीरियं	3/2/8
अथ को चरहि जानाति	5/1/15
अथ त्वं पवितक्कमागमा	4/8/11
अथ पुब्बलोहितमिस्से	3/10/15
अथ लोहमयं पन कुम्भिं	3/10/14
अथ वेतरणिं पन दुग्गं	3/10/18
अथ सत्थानि कुरुते	4/7/6
अथत्तनो गमनमनुस्सरन्तो	3/11/13
अथस्स गते दिस्वान	5/1/42
अथस्स नवहि सोतेहि	1/11/5
अथस्स सुसिरं सीसं	1/11/7
अथापरं पञ्च रजानि लोके	4/16/20
अद्दसा भगवा आदिं	2/12/16
अद्धा अमोघा मम पुच्छना अहु	3/5/18
अद्धा पसंसाम सहायसम्पदं	1/3/13
अद्धा हि तस्स हुतमिज्झे	3/4/5
अद्धा हि भगवा तथेव एतं	2/13/17
अधिदेवे अभिञ्ञाय	5/18/25
अनगारियुपेतस्स	3/11/22
अनत्तनि अत्तमानिं	3/12/33
अनन्वयं पियं वाचं	2/3/2
अनावरणदस्सावी	5/1/30
अनिद्धुरी अननुगिद्धो	4/15/18
अनिमित्तञ्च भावेहि	2/11/8
अनिमित्तमनञ्ञातं	3/8/1
अनिस्सितो न चलति	3/12/29

अनुञ्ञातपटिञ्ञाता	3/9/1
अनुविच्च पपञ्चनामरूपं	3/6/21
अनुसास ब्रह्मे करुणायमानो	5/6/5
अनेकसाखञ्च सहस्समण्डलं	3/11/10
अनेजं मूलदस्साविं	5/4/1
अनेजस्स विजानतो	4/15/19
अनोमनामं निपुणत्थदस्सिं	1/9/27
अन्तगूसि पारगू दुक्खस्स	3/6/30
अन्तपूरो उदरपूरो	1/11/3
अन्धकमकसा न विज्जरे	1/2/3
अन्नञ्च लद्धा वसनञ्च काले	4/16/17
अन्नदा बलदा चेता	2/7/14
अन्नानमथो पानानं	4/14/10
अपतिलीनो अकुहको	4/10/5
अपारा पारं गच्छेय्य	5/18/7
अपि वस्ससतं जीवे	3/8/16
अप्पं वत जीवितं इदं	4/6/1
अप्पञ्हि एतं न अलं समाय	4/13/2
अप्पभोगो महातण्हो	1/6/24
अप्पमत्तो अयं कलि	3/10/3
अबला नं बलीयन्ति	4/1/5
अब्बुळ्हसल्लो असितो	3/8/20
अब्रह्मचरियं परिवज्जयेय्य	2/14/21
अभिञ्ञेय्यं अभिञ्ञातं	3/7/11
अभिभू हि सो अनभिभूतो	4/14/20
अभिसङ्खरित्वा कुहको	5/1/9
अभूतवादी निरयं उपेति	3/10/5
अमोसधम्मं निब्बानं	3/12/35
अयं लोको परो लोको	5/16/2
अयञ्हि धम्मो निपुणो सुखो च	2/14/8
अयोसङ्कुसमाहतट्ठानं	3/10/11
अलत्थं यदिदं साधु	3/11/34
अलद्धा तत्थ अस्सादं	3/2/24
अलीनचित्तो च सिया	3/11/39
अळकस्स पतिट्ठानं	5/1/36
अवज्झा ब्राह्मणा आसुं	2/7/5
अविज्जा मुद्धाति जानाहि	5/1/51
अविज्जा हायं महामोहो	3/12/7
अविज्जाय निवुतो लोको	5/2/2
अविरुद्धं विरुद्धेसु	3/9/37
असंसट्ठं गहट्ठेहि	3/9/35
असंहीरं असङ्कुप्पं	5/18/26
असज्जमाना विचरन्ति लोके	3/4/12
असतं योध पब्रूति	1/7/16
असतञ्च सतञ्च ञत्वा धम्मं	3/6/18
असन्तस्स पिया होन्ति	1/6/4
असमा उभो दूरविहारवुत्तिनो	1/12/14
असिपत्तवनं पन तिण्हं	3/10/17
असेवना च बालानं	2/4/2
अहम्पेतं न जानामि	5/1/14
आकिञ्चञ्ञं पेक्खमानो सतिमा	5/7/2
आकिञ्चञ्ञसम्भवं ञत्वा	5/15/4
आगञ्छि ते सन्तिके नागराजा	2/14/4
आगतानि हि मन्तेसु	5/1/25
आगुं न करोति किञ्चि लोके	3/6/13
आतङ्कफस्सेन खुदाय फुट्ठो	4/16/12
आथब्बणं सुपिनं •लक्खणं	4/14/13
आदानतण्हं विनयेथ सब्बं	5/13/3
आदिच्चा नाम गोतेन	3/1/19
आदिस्स जम्मनं ब्रूहि	5/1/43
आनन्दजाते तिदसगणे पतीते	3/11/1
आमन्तना होति सहायमज्झे	1/3/6
आरती विरती पापा	2/4/7
आरद्धवीरियो परमत्थपत्तिया	1/3/34
आरोग्यं सम्मदञ्ञाय	3/12/26
आसं अनिस्साय विवेकदस्सी	3/4/20
आसवखीणो पहीनमानो	2/13/12
आसा यस्स न विज्जन्ति	3/9/41
आसीसन्ति थोमयन्ति	5/4/5
इङ्घ अञ्ञेपि पुच्छस्सु	1/10/9
इच्चेतमत्थं भगवा पुनप्पुनं	2/2/13
इच्छानिदाना भवसातबद्धा	4/2/2

इति हेतं विजानाम 1/6/11, 1/6/15, 1/6/17, 1/6/21, 1/6/23, 1/6/3, 1/6/13, 1/6/19, 1/6/5, 1/6/7, 1/6/9
इत्थिधुत्तो सुराधुत्तो 1/6/16
इत्थिसोण्डिं विकिरणिं 1/6/22
इदं वदामीति न तस्स होति 4/9/3
इध दिट्ठसुतमुतविञ्ञातेसु 5/9/3
इधेव सुद्धि इति वादयन्ति 4/12/15, 4/8/1
इमं भवन्तो निसामेथ 3/7/15
इमं भोन्तो निसामेथ 3/1/6
इमे दससता यक्खा 1/9/29
इसयो पुब्बका आसुं 2/7/1
ईती च गण्डो च उपद्दवो च 1/3/17
उग्घट्टपादो तसितो 5/1/5
उच्चावचा निच्छरन्ति 3/11/25
उच्चावचा हि पटिपदा 3/11/36
उच्चावचेसु सयनेसु 4/16/5
उच्छिन्नभवतण्हस्स 3/12/23
उजुं जनपदो राज 3/1/18
उट्ठहथ निसीदथ 2/10/2, 2/10/1
उत्रस्तं दुक्खितं दिस्वा 5/1/11
उदबिन्दु यथापि पोक्खरे 4/6/9
उपधिनिदाना पभवन्ति दुक्खा 3/12/5
उपधी ते समतिक्कन्ता 3/6/37, 3/7/25
उपयो हि धम्मेसु उपेति वादं 4/3/8
उपादानपच्चया भवो 3/12/19
उपायासा च ते सब्बे 3/6/33
उपेक्खको सदा सतो 4/10/8
उपेक्खासतिसंसुद्धं 5/14/3
उभोसु अन्तेसु विनेय्य छन्दं 4/2/7
उसभं पवरं वीरं 3/9/53
उसभोरिव छेत्वा बन्धनानि 1/2/12
उस्सुस्सति अनाहारो 5/1/10
ऊनूदरो मिताहारो 3/11/29
एकं चरन्तं मुनिमप्पमत्तं 1/12/7
एकजं वा द्विजं वापि 1/7/2
एकञ्हि सच्चं न दुतीयमत्थि 4/12/7
एकमेकस्स पञ्हस्स 5/18/6
एकासनस्स सिक्खेथ 3/11/40
एको अहं सक्क महन्तमोघं 5/7/1
एको तमनुदासिनो 5/18/13
एको पुब्बे चरित्वान 4/7/3
एणिजङ्घं किसं वीरं 1/9/15
एतं दुक्खन्ति ञत्वान 3/12/16
एतं लोकस्स निय्यानं 1/9/22
एतञ्च धम्ममञ्ञाय 4/14/19
एतदञ्ञाय ये सता 5/11/4
एतदञ्ञाय ये सता 5/9/4
एतमादीनवं ञत्वा 3/12/12, 3/12/18, 3/12/22, 3/12/25, 3/12/28, 3/12/30, 3/12/9, 4/7/8
एतादिसं चे रतनं न इच्छसि 4/9/2
एतादिसानि कत्वान 2/4/12
एतादिसेन कायेन 1/11/14
एताभिनन्दामि वचो महेसिनो 5/5/9, 5/8/7
एते च ञत्वा उपनिस्सिताति 4/11/16
एते च पटिविज्झि यो गहट्ठो 1/5/8
एते पराभवे लोके 1/6/25
एते बुद्धं उपागच्छुं 5/18/3
एते विवादा समणेसु जाता 4/8/5
एतेसु गिद्धा विरुद्धातिपातिनो 2/2/10
एतेसु धम्मेसु विनेय्य छन्दं 4/16/21
एत्तावतग्गम्पि वदन्ति हेके 4/11/15
एवं अभिक्कन्तदस्सावि 5/16/3
एवं दुतियेन सहा ममस्स 1/3/15
एवं धम्मे वियापन्ने 2/7/31
एवंविहारी सतो अप्पमत्तो 5/5/8
एवञ्चे रुच्चति भोतो 3/7/18
एवमब्भाहतो लोको 3/8/8
एवमेतं यथाभूतं 3/9/60
एवमेसा कसी कट्ठा 1/4/5
एवमेसो अणुधम्मो 2/7/30
एवम्पि यो वेदगु भावितत्तो 2/8/7
एवम्पि विग्गय्ह विवादयन्ति 4/12/2

एस भिक्खु महाराज	3/1/12
एस भिय्यो पसीदामि	5/18/24
एस मुञ्जं परिहरे	3/2/16
एस सुत्वा पसीदामि	2/12/14
एसा नमुचि ते सेना	3/2/15
एसो अधम्मो दण्डानं	2/7/29
ओकं पहाय अनिकेतसारी	4/9/10
ओकञ्जहं तण्हच्छिदं अनेजं	5/13/1
ओक्खित्तचक्खु न च पादलोलो	4/16/18
ओक्खित्तचक्खु सतिमा	3/1/7
ओक्खित्तचक्खू न च पादलोलो	1/3/29
ओरोपयित्वा गिहिब्यञ्जनानि	1/3/10
ओसानेत्वेव ब्यारुद्धे	4/15/4
ओहारयित्वा गिहिब्यञ्जनानि	1/3/30
कं मग्गजिनं वदन्ति बुद्धा	1/5/3
कं सो सिक्खं समादाय	4/16/8
कङ्खी वेचिकिच्छी आगमं	3/6/1
कच्चि अदिन्नं नादियति	1/9/4
कच्चि अभिण्हसंवासा	2/11/1
कच्चि न रज्जति कामेसु	1/9/8
कच्चि मनो सुपणिहितो	1/9/2
कच्चि मुसा न भणति	1/9/6
कच्चि विज्जाय सम्पन्नो	1/9/10
कच्चिस्सु ते भगवा	5/4/4
कतमं तं उपादानं	1/9/20
कती परिस्सया लोके	4/16/6
कथं चरहि जानेमु	5/1/24
कथं नु दानि पुच्छेय्यं	1/10/10
कथं सतस्स चरतो	5/14/6
कथं समेतस्स विभोति रूपं	4/11/12
कथं सु तरति ओघं	1/10/3
कथं सु लभते पञ्ञं	1/10/5
कथंदस्सी कथंसीलो	4/10/1
कप्पानि विचेय्य केवलानि	3/6/8
कम्मुना वत्तति लोको	3/9/61
कयविक्कये न तिट्ठेय्य	4/14/15
करणीयमत्थकुसलेन	1/8/1
कलहाभिरतो भिक्खु	2/6/3
कल्याणदस्सनो भिक्खु	3/7/4
कस्मा नु सच्चानि वदन्ति नाना	4/12/8
कस्सको कम्मुना होति	3/9/58
कस्सको पटिजानासि	1/4/1
कामं कामयमानस्स	4/1/1
कामा ते पठमा सेना	3/2/12
कामा हि चित्रा मधुरा मनोरमा	1/3/16
कामेसु गिद्धा पसुता पमूळ्हा	4/2/3
कामेसु नाभिगिज्झेय्य	5/2/8
कामेसु ब्रह्मचरियवा	5/3/2
कामेसु विनय गेधं	5/12/3
कामेस्वादीनवं दिस्वा	3/1/20
कायगुत्तो वचीगुत्तो	1/4/3
कालेन गच्छे गरूनं सकासं	2/9/3
किं खेत्तजिनं वदन्ति बुद्धा	3/6/14
किं निस्सिता इसयो मनुजा	3/4/4
किं पतिनमाहु ब्राह्मणं	3/6/9
किं पतिनमाहु भिक्खुनं	3/6/4
किं पतिनमाहु वेदगुं	3/6/19
किं पतिनमाहु सोतियं	3/6/24
किंनु तम्हा विप्पवससि	5/18/15
किंसीलो किंसमाचारो	2/9/1
किंसु संयोजनो लोको	5/14/4
किंसू असिस्सामि कुवं वा असिस्सं	4/16/16
किंसूध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं	1/10/1
किच्छा वतयं इध वुत्ति	3/10/20
किञ्चापि सो कम्म करोति पापकं	2/1/12
कित्तयिस्सामि ते धम्मं	5/5/5
कित्तयिस्सामि ते सन्तिं	5/6/6
किसो विवण्णो भवति	3/8/12
किस्मिं लोको समुप्पन्नो	1/9/18
कुतोपहूता कलहा विवादा	4/11/1
केनस्सु निवुतो लोको	5/2/1
को नु अञ्ञत्र मरियेहि	3/12/42
को नु देवो वा ब्रह्मा वा	5/1/49
को नु सेनापति भोतो	3/7/9

को सुज्झति मुच्चति बज्झती च	3/5/22
को सूध तरति ओघं	1/9/23
कोध सन्तुसितो लोके	5/3/1
कोधनो उपनाही च	1/7/1
कोधातिमानस्स वसं न गच्छे	4/16/14
कोधो मदो थम्भो पच्चुपट्ठापना	2/2/7
कोधो मोसवज्जञ्च कथंकथा च	4/11/7
कोसम्बिञ्चापि साकेतं	5/1/37
कोसलानं पुरा रम्मा	5/1/1
कोसानि विचेय्य केवलानि	3/6/16
क्यास्स ब्यप्पथयो अस्सु	4/16/7
खतिया ब्रह्मबन्धू च	2/7/32
खतिया भोगिराजानो	3/7/6
खन्ती च सोवचस्सता	2/4/9
खयं विरागं अमतं पणीतं	2/1/4
खादन्ति नं सुवाना च	1/11/9
खादन्ति हि तत्थ रुदन्ते	3/10/19
खिड्डं रतिं कामसुखञ्च लोके	1/3/25
खिड्डा रती होति सहायमज्झे	1/3/7
खिप्पं गिरं एरय वग्गु वग्गुं	2/12/8
खिला निखाता असम्पवेधी	1/2/11
खीणं पुराणं नव नत्थि सम्भवं	2/1/15
खुद्दञ्च बालं उपसेवमानो	2/8/3
खेत्तं वत्थुं हिरञ्ञं वा	4/1/4
खेत्तानि विचेय्य केवलानि	3/6/15
गब्भीरपञ्ञं निपुणत्थदस्सिं	1/9/26
गम्भीरपञ्ञं मेधाविं	3/9/34
गहट्ठवत्तं पन वो वदामि	2/14/18
गाथाभिगीतं मे अभोजनेय्यं	1/4/6, 3/4/26
गामे वा यदि वारञ्ञे	1/7/4
गारवो च निवातो च	2/4/8
गावो सयनञ्च वत्थञ्च	2/7/21
गूथकूपो यथा अस्स	2/6/6
गेधं ब्रूमि महोघोति	4/15/11
गोपी च अहञ्च अस्सवा	1/2/15
गोपी मम अस्सवा अलोला	1/2/5
गोमण्डलपरिब्यूळ्हं	2/7/18
चक्खुं लोके समुप्पन्नं	3/9/6
चक्खूहि नेव लोलस्स	4/14/8
चतुप्पदेपि जानाथ	3/9/10
चतुरो समणा न पञ्चमत्थि	1/5/2
चतूहपायेहि च विप्पमुत्तो	2/1/11
चन्दं यथा खयातीतं	3/9/5
चन्दंव विमलं सुद्धं	3/9/44
चरं वा यदि वा तिट्ठं	1/11/1
चरतो च ते ब्रह्मचरियं	3/2/4
चातुद्दिसो अप्पटिघो च होति	1/3/8
चित्तं मम अस्सवं विमुत्तं	1/2/6
चीवरे पिण्डपाते च	2/11/5
चुतिं यो वेदि तानं	3/9/50
चुदितो वचीभि सतिमाभिनन्दे	4/16/19
चेतोविमुतिसम्पन्ना	3/12/4
चेतोविमुतिहीना ते	3/12/2
चोरोपि कम्मुना होति	3/9/59
छदनं कत्वान सुब्बतानं	1/5/7
छन्दरागविरत्तो सो	1/11/12
छन्दो नु लोकस्मिं कुतोनिदानो	4/11/5
छन्दोनिदानानि पियानि लोके	4/11/4
छसु लोको समुप्पन्नो	1/9/19
छिन्देव नो विचिकिच्छं ब्रूहि मेतं	2/12/4
छेत्वा आसवानि आलयानि	3/6/26
छेत्वा नद्धिं वरत्तञ्च	3/9/29
जहित्वा जातिमरणं असेसं	3/5/14
जातिं गोत्तञ्च लक्खणं	5/1/29
जातित्थद्धो धनत्थद्धो	1/6/14
जातिमरणसंसारं	3/12/6
जानामि पस्सामि तथेव एतं	4/13/14
जालेन च ओनहियाना	3/10/13
जिण्णस्स मे दुब्बलथामकस्स	5/18/21
जिण्णोहमस्मि अबलो वीतवण्णो	5/17/1
झायिं विरजमासीनं	5/14/1
झायी न पादलोलस्स	4/14/11
तं तथावादिनं मारं	3/2/6
तं नदीहि विजानाथ	3/11/42

तं बुद्धं असितं तादिं	4/16/3	तस्मा अरहतो सुत्वा	3/8/17
तं ब्रूमि उपसन्तोति	4/10/10	तस्मा उपादानक्खया	3/12/20
तं मं पधानपहितत्तं	3/2/1	तस्मा जन्तु सदा सतो	4/1/6
तं वापि गन्थं कुसला वदन्ति	4/5/3	तस्मा पजानं न उपादियेथ	5/13/4
तं सद्दं सुत्वा तुरितमवसरी सो	3/11/7	तस्मा हवे सप्पुरिसं भजेथ	2/8/8
तं सावकं सक्य मयम्पि सब्बे	2/12/3	तस्मा हि पिण्डे सयनासने च	2/14/17
तञ्चाहं अभिनन्दामि 5/5/6,	5/6/7	तस्मा हि भूता निसामेथ सब्बे	2/1/2
तण्डुलं सयनं वत्थं	2/7/12	तस्मा हि सिक्खेथ इधेव जन्तु	4/2/4
तण्हक्खयं पत्थयमप्पमत्तो	1/3/36	तस्मातिह त्वं ब्राह्मण अत्थेन	3/4/6
तण्हादुतियो पुरिसो	3/12/17	तस्स चे कामययानस्स	4/1/2
तण्हाधिपन्ने मनुजे पेक्खमानो	5/17/4	तस्स ते नागनागस्स	3/6/34
ततो अदिन्नं परिवज्जयेय्य	2/14/20	तस्स मेवं विहरतो	3/2/11
ततो आमन्तयी सिस्से	5/1/22	तस्स वत्तमनुसिक्खन्ता	2/7/11
ततो कीटे पटङ्गे च	3/9/9	तस्स सोकपरेतस्स	3/2/25
ततो कुमारं जलितमिव सुवण्णं	3/11/8	तस्सीध दिट्ठे व सुते मुते वा	4/5/7
ततो च पक्खस्सुपवस्सुपोसथं	2/14/27	तस्सेव उपनिस्साय	5/1/3
ततो च पातो उपवुत्थुपोसथो	2/14/28	तिट्ठं चरं निसिन्नो व	1/8/9
ततो च राजा सञ्ञत्तो 2/7/20	2/7/25	तिट्ठे चे सो तत्थ अनानुयायी	5/7/5
ततो देवा पितरो च	2/7/27	तिणरुक्खेपि जानाथ	3/9/8
ततो पक्खीपि जानाथ	3/9/13	तीहि विज्जाहि सम्पन्नो	3/9/63
ततो पलापे वाहेथ	2/6/9	तुवं बुद्धो तुवं सत्था 3/6/36,	3/7/24
ततो मच्छेपि जानाथ	3/9/12	तुवञ्हि लोकस्स सदेवकस्स	2/14/2
ततो रत्या विवसाने	3/11/32	ते अप्पमत्ता पहितत्ता	3/2/21
ततो वेदेन महता	5/1/52	ते गणिता विदूहि तिलवाहा	3/10/21
तत्थ सिक्खानुगीयन्ति	4/15/6	ते च तत्थ धनं लद्धा	2/7/23
तथेव धम्मं अविभावयित्वा	2/8/5	ते चापि नूनप्पजहेय्यु दुक्खं	5/5/10
तदट्ठिकत्वान निसम्म धीरो	2/8/2	ते चे नातरिंसु याजयोगा	5/4/6
तदिमिनापि जानाथ	1/7/22	ते तत्थ मन्ते गन्थेत्वा	2/7/19
तपूपनिस्साय जिगुच्छितं वा	4/13/7	ते तोसिता चक्खुमता	5/18/5
तपेन ब्रह्मचरियेन	3/9/62	ते न सक्कोम सञ्ञापेतुं	3/9/4
तपो च ब्रह्मचरियञ्च	2/4/10	ते पेसिता राजदूता	3/1/8
तमद्दसा बिम्बिसारो	3/1/5	ते मयं विचरिस्साम	1/9/30
तमेनं बावरी दिस्वा	5/1/6	ते वादकामा परिसं विगय्ह	4/8/2
तमेव वाचं भासेय्य	3/3/2	तेन हि त्वं, ब्राह्मण	3/4/8
तमोनुदो बुद्धो समन्तचक्खु	5/18/10	तेनहातप्पं करोहि	5/6/2
तयो रोगा पुरे आसुं	2/7/28	तेनानुसिट्ठो हितमनेन तादिना	3/11/19
तसितोवुदकं सीतं	5/1/39	तेविज्जानं यदक्खातं	3/9/2

तेसं आसि विपल्लासो	2/7/16
तेसं नो जातिवादस्मिं	3/9/3
तेसं फस्सपरेतानं	3/12/13
तेसं बुद्धो पब्याकासि	5/18/4
तेसं मच्चुपरेतानं	3/8/6
तेसं वो अहं ब्यक्खिस्सं	3/9/7
तोदेय्य-कप्पा दुभयो	5/18/2
त्वञ्च मे धम्ममक्खाहि	5/9/2
थेय्यं न कारे न मुसा भणेय्य	4/16/13
दहरा च महन्ता च	3/8/5
दानञ्च धम्मचरिया च	2/4/6
दिजो यथा कुब्बनकं पहाय	5/18/11
दिट्ठञ्च निस्साय अनुपुच्छमानो	4/9/7
दिट्ठा वा ये व अदिट्ठा	1/8/5
दिट्ठापि सुतापि ते जना	4/6/5
दिट्ठिञ्च अनुपग्गम्म	1/8/10
दिट्ठिम्पि लोकस्मिं न कप्पयेय्य	4/5/4
दिट्ठीनिवेसा न हि स्वातिवत्ता	4/3/6
दिट्ठीविसूकानि उपातिवत्तो	1/3/21
दिट्ठे सुते सीलवते मुते वा	4/12/10
दिट्ठेन चे सुद्धि नरस्स होति	4/4/2
दिट्ठेव धम्मे गारय्हा	1/7/26
दिसा चतस्सो विदिसा चतस्सो	5/17/3
दिस्वा कुमारं सिखिमिव पज्जलन्तं	3/11/9
दिस्वा जटी कण्हसिरिव्हयो इसि	3/11/11
दिस्वा सुवण्णस्स पभस्सरानि	1/3/14
दिस्वान तण्हं अरतिं रागञ्च	4/9/1
दिस्वान देवे मुदितमने उदग्गे	3/11/2
दिस्वान रूपेसु विहञ्ञमाने	5/17/2
दिस्वान वासूपगतं	3/1/11
दिस्वान सक्ये इसिमवोच अकल्ये	3/11/14
दीघरत्तमनुसयितं	3/9/56
दुक्खवेपक्कं यदत्थि कम्म	3/6/28
दुक्खस्स वे मं पभवं अपुच्छसि	5/5/2
दुग्गो मग्गो पधानाय	3/2/5
दुभयानि विचेय्य पण्डरानिं	3/6/17
दुस्सङ्गहा पब्बजिता'पि एके	1/3/9
दूरतो आगतोसि सभिय	3/6/2
देवयानं अभिरुय्ह	1/7/24
द्वाहं सक्कं अपुच्छिस्सं	5/16/1
द्विपादकोयं असुचि	1/11/13
धम्मचरियं ब्रह्मचरियं	2/6/1
धम्मारामो धम्मरतो	2/9/4
धम्मे च ये अरियपवेदिते रता	2/9/7
धम्मेन मातापितरो भरेय्य	2/14/29
धीरा च पज्जोतकरा भवन्ति	2/12/7
धोतको उपसीवो च	5/1/32
धोनस्स हि नत्थि कुहिञ्चि लोके	4/3/7
धोनो न हि तेन मञ्ञति	4/6/10
न आमगन्धो मम कप्पतीति	2/2/3न
कप्पयन्ति न पुरेक्खरोन्ति	4/4/7
न कप्पयन्ति न पुरेक्खरोन्ति	4/5/8
न केसेहि न सीसेन	3/9/15
न गीवाय न अंसेहि	3/9/16
न च कत्थिता सिया भिक्खु	4/14/16
न च खुद्दमाचरे किञ्चि	1/8/3
न चाहं ब्राह्मणं ब्रूमि	3/9/27
न जच्चा ब्राह्मणो होति	3/9/57
न जच्चा वसलो होति 1/7/21,	1/7/27
न तस्स पुत्ता पसवो	4/10/11
न दिट्ठिया न सुतिया न ञाणेन	4/9/5,5/8/2
न परो परं निकुब्बेथ	1/8/6
न पसू ब्राह्मणानासुं	2/7/2
न पादा न विसाणेन	2/7/26
न ब्राह्मणस्स परनेय्यमत्थि	4/13/13
न ब्राह्मणा अञ्ञमगमुं	2/7/7
न ब्राह्मणो अञ्ञतो सुद्धिमाह	4/4/3
न ब्राह्मणो कप्पमुपेति सङ्खा	4/13/17
न ब्राह्मणो नोम्हि न राजपुत्तो	3/4/1
न मच्छमंसानमनासकत्तं	2/2/11
न मुनी गाममागम्म	3/11/33
न मे दिट्ठो इतो पुब्बे	4/16/1
न वाहमेतं तथियन्ति ब्रूमि	4/12/5
न वेदगू दिट्ठियो न मुतिया	4/9/12

न सञ्ञसञ्ञी न विसञ्ञसञ्ञी 4/11/13
न समेसु न ओमेसु 4/15/20
न सो अदिन्नं आदियति 1/9/5
न सो उपधीसु सारमेति 2/13/6
न सो मित्तो यो सदा अप्पमत्तो 2/3/3
न सो मुद्धं पजानाति 5/1/12
न सो रज्जति कामेसु 1/9/9
न हत्थेहि न पादेहि 3/9/17
न हि नस्सति कस्सचि कम्मं 3/10/10
न हि रुण्णेन सोकेन 3/8/11
न हि वग्गु वदन्ति वदन्ता 3/10/12
न हि सो उपक्कमो अत्थि 3/8/2
न हेव सच्चानि बहूनि नाना 4/12/9
नक्खतानं मुखं चन्दो 3/7/22
नत्थि वसा नत्थि धेनुपा 1/2/10
नदीनमपि सोतानि 3/2/9
नन्दति पुत्तेहि पुत्तिमा 1/2/16
नन्दिसंयोजनो लोको 5/14/5
नमुची करुणं वाचं 3/2/2
नमो ते पुरिसाजञ्ञ 3/6/35
नरस्स हि सुजातस्स 3/7/2
नागोव यूथानि विवज्जयित्वा 1/3/19
नानाजना जनपदेहि सङ्गता 5/13/2
नानारत्तेहि वत्थेहि 2/7/4
नाम च रूपञ्च पटिच्च फस्सो 4/11/11
नाहं अभिण्हसंवासा 2/11/2
नाहं तम्हा विप्पवसामि 5/18/17
नाहं भतकोस्मि कस्सचि 1/2/8
नाहं सब्बे समणब्राह्मणासे 5/8/6
नाहं सहिस्सामि पमोचनाय 5/6/4
निद्दं तन्दिं सहे थीनं 4/15/8
निद्दं न बहुलीकरेय्य 4/14/12
निद्दासीली सभासीली 1/6/6
निधाय दण्डं भूतेसु 3/9/36
निन्दाय नप्पवेधेय्य 4/14/14
निन्नं च थलञ्च पूरयन्तो 1/2/13
निन्हाय सब्बपापकानि 3/6/12
निमित्तं परिवज्जेहि 2/11/7
निरासत्ति अनागते 4/10/4
निराससो सो उद आससानो 5/10/3
निराससो सो न च आससानो 5/10/4
निल्लोलुपो निक्कुहो निप्पिपासो 1/3/22
निविस्सवादी न हि सुब्बिनायो 4/13/16
निवुतानं तमो होति 3/12/40
निवेसनं यो मनसो अहासि 3/4/16
निवेसनानि रम्मानि 2/7/22
निसज्ज राजा सम्मोदि 3/1/15
नो चे किर दिट्ठिया न सुतिया न ञाणेन 4/9/6
नो चे लभेथ निपकं सहायं 1/3/12
नो चे हि जातु पुरिसो किलेसे 2/12/6
नो वे विकाले विचरेय्य भिक्खु 2/14/11
न्यग्रोधकप्पो इति तस्स नामं 2/12/2
पकप्पिता सङ्खता यस्स धम्मा 4/3/5
पक्कोदनो दुद्धखीरोहमस्मि 1/2/1
पगाळ्हेत्थ न दिस्सन्ति 3/2/17
पङ्के सयानो परिफन्दमानो 5/18/22
पच्चत्तञ्च सरीरेसु 3/9/18
पच्चेकगणिनो सब्बे 5/1/34
पज्जेन कतेन अत्तना 3/6/5
पञ्च कामगुणा लोके 1/9/21
पञ्च कामगुणे हित्वा 2/11/3
पञ्चन्नं धीरो भयानं न भाये 4/16/10
पञ्चमं थिनमिद्धं ते 3/2/13
पञ्त्रं पुरक्खत्वा कल्याणपीति 4/16/15
पञ्ञा चेव सति यञ्च 5/2/5
पञ्ञाबलं सीलवतूपपन्नं 1/12/6
पटिग्गहेत्वा पन सक्यपुङ्गवं 3/11/12
पटिसल्लानं झानमरिञ्चमानो 1/3/35
पण्डितोति समञ्ञातो 4/7/7
पतिरूपकारी धुरवा 1/10/7
पतिरूपदेसवासो च 2/4/3
पतिलीनचरस्स भिक्खुनो 4/6/7
पत्थयमानस्स हि जप्पितानि 4/13/8

पब्बजित्वान कायेन	3/1/3
पब्बज्जं कित्तयिस्सामि	3/1/1
पमादो रजो पमादो	2/10/4
परधम्मिकानम्पि न सन्तसेय्य	4/16/11
परमं परमन्ति योध ञत्वा	1/5/5
परमन्ति दिट्ठीसु परिब्बसानो	4/5/1
परस्स चे धम्ममनानुजानं	4/12/3
परस्स चे वम्भयितेन हीनो	4/13/11
परस्स चे हि वचसा निहीनो	4/12/13
पराभवन्तं पुरिसं	1/6/1
परिदेवं पजप्पञ्च	3/8/19
परिदेवयमानो चे	3/8/10
परिपुण्णकायो सुरुचि	3/7/1
परोपरा यस्स समेच्च धम्मा	3/4/21
परोवरं अरियधम्मं विदित्वा	2/12/11
पविवेकरसं पित्वा	2/3/5
पसंसितो वा पन तत्थ होति	4/8/6
पसन्ननेत्तो सुमुखो	3/7/3
पस्सं नरो दक्खति नामरूपं	4/13/15
पस्सामहं देवमनुस्सलोके	5/6/3
पस्सामि नं मनसा चक्खुनाव	5/18/19
पस्सामि लोके परिफन्दमानं	4/2/5
पस्सामि सुद्धं परमं अरोगं	4/4/1
पहानं कामच्छन्दानं	5/14/2
पहाय पञ्चावरणानि चेतसो	1/3/32
पहीनजातिमरणं असेसं	2/12/9
पहीनमलमोहस्स	5/18/9
पहूतवित्तो पुरिसो	1/6/12
पाणं न हने न च घातयेय्य	2/14/19
पाणं न हने न चादिन्नमादिये	2/14/25
पाणातिपातो वधछेदबन्धनं	2/2/4
पादूदरेपि जानाथ	3/9/11
पापं सहायं परिवज्जयेथ	1/3/23
पामुज्जकरणं ठानं	2/3/4
पारायनमनुगायिस्सं	5/18/8
पावञ्च भोगनगरं	5/1/38
पिण्डं विहारं सयनासनञ्च	2/14/16
पिण्डञ्च भिक्खु समयेन लद्धा	2/14/13
पिण्डाचारं चरित्वान	3/1/10
पियप्पहूता कलहा विवादा	4/11/2
पियवाचमेव भासेय्य	3/3/3
पियासु लोकस्मिं कुतोनिदाना	4/11/3
पुच्छ मं सभिय पञ्हं	3/6/3
पुच्छञ्हि किञ्चि असुणन्तो	5/1/48
पुच्छन्ति वे भो ब्राह्मणा	3/4/3
पुच्छाम सत्थारमनोमपञ्ञं	2/12/1
पुच्छामहं गोतमं वदञ्ञुं	3/5/1
पुच्छामि तं आदिच्चबन्धु	4/14/1
पुच्छामि तं गोतम भूरिपञ्ञ	2/14/1
पुच्छामि तं भगवा ब्रूहि मे तं	5/5/1, 5/6/1
पुच्छामि मुनिं पहूतपञ्ञं	1/5/1, 2/13/1
पुण्डरीकं यथा वग्गु	3/6/38
पुत्तञ्च दारं पितरञ्च मातरं	1/3/26
पुब्बासवे हित्वा नवे अकुब्बं	4/13/19
पुब्बेनिवासं यो वेदि	3/9/54
पुरा कपिलवत्थुम्हा	5/1/16
पुराणं नाभिनन्देय्य	4/15/10
पुरिमं पहाय अपरं सितासे	4/4/4
पुरिसस्स हि जातस्स	3/10/1
पुळवावसथे सलिलस्मिं	3/10/16
पेक्खतं येव ञातीनं	3/8/7
फन्दमानं पजं दिस्वा	4/15/2
फलानमिव पक्कानं	3/8/3
फस्सनिदानं सातं असातं	4/11/9
फस्सेन यदा फुट्ठस्स	4/14/9
फस्सो नु लोकस्मि कुतोनिदानो	4/11/10
फुट्ठस्स लोकधम्मेहि	2/4/11
बद्धासि भिसी सुसङ्खता	1/2/4
बहुस्सुतं धम्मधरं भजेथ	1/3/24
बहू देवा मनुस्सा च	2/4/1
बावरिं अभिवाद्य	5/1/35
बावरिस्स च तुय्हं वा	5/1/55
बावरिस्स वचो सुत्वा	5/1/31
बावरी ब्राह्मणो भोतो	5/1/53

बाहित्वा सब्बपापकानि 3/6/10
बाहुसच्चञ्च सिप्पञ्च 2/4/4
बुद्धो भवं अरहति पूरळासं 3/4/32
बुद्धो सो भगवा लोके 5/1/18
बुद्धोति घोसं यद परतो सुणासि 3/11/18
ब्रह्मचरियञ्च सीलञ्च 2/7/9
ब्रह्मभूतं अतितुलं 3/7/16
ब्रह्मभूतो अतितुलो 3/7/14
ब्राह्मणा तिसता इमे 3/7/19
भकुटिं विनयित्वान 3/4/31
भगवा तम्हि समये 5/1/40
भगवा हि कामे अभिभुय्य इरियति 5/12/2
भजन्ति सेवन्ति च कारणत्था 1/3/41
भद्रावुधो उदयो च 5/1/33
भवरागपरेतेहि 3/12/41
भवासवा यस्स वची खरा च 3/4/18
भिक्खवो तिसता इमे 3/7/26
भिक्खुनो विजिगुच्छतो 4/16/4
भोती चरहि जानासि 5/1/13
मज्जञ्च पानं न समाचरेय्य 2/14/23
मज्झे यथा समुद्दस्स 4/14/6
मज्झे सरस्मिं तिट्ठतं 5/11/1, 5/11/2
मदा हि पापानि करोन्ति बाला 2/14/24
मनो चस्स सुपणिहितो 1/9/3
ममञ्च आयु न चिरमिधावसेसो 3/11/16
ममायिते पस्सथ फन्दमाने 4/2/6
मया पवत्तितं चक्कं 3/7/10
मरणेनपि तं पहीयति 4/6/3
महायञ्ञं यजित्वान 5/1/4
माता यथा नियं पुत्तमायुसा 1/8/7
मातापितु उपट्ठानं 2/4/5
मालं न धारे न च गन्धमाचरे 2/14/26
मिगो अरञ्ञम्हि यथा अबद्धो 1/3/5
मित्ते भजस्सु कल्याणे 2/11/4
मित्ते सुहज्जे अनुकम्पमानो 1/3/3
मुखं जिव्हाय छादेति 5/1/47
मुखदुग्ग विभूत अनरिय 3/10/8
मुद्धं मुद्धाधिपातञ्च 5/1/50
मुनिं चरन्तं विरतं मेथुनस्मा 1/12/12
मुसा च सो न भणति 1/9/7
मूलं पपञ्चसङ्खाय 4/14/2
मेत्तं उपेक्खं करुणं विमुत्तिं 1/3/39
मेत्तञ्च सब्बलोकस्मि 1/8/8
मेथुनमनुयुत्तस्स 4/7/1, 4/7/2
मेदवण्णंव पासाणं 3/2/23
मोनेय्यं ते उपञ्ञिस्सं 3/11/23
मोनेय्यं ते उपञ्ञिस्सं 3/11/38
मोसवज्जे न नीयेथ 4/14/17
मोसवज्जे न नीयेथ 4/15/9
मोहन्तरा यस्स न सन्ति केचि 3/4/24
यं एवरूपं जानाथ, 2/6/7
यं किञ्चि दुक्खं सम्भोति 3/12/11, 3/12/213/12/24, 3/12/27, 3/12/8
यं किञ्चि धम्ममभिजञ्ञा 4/14/3
यं किञ्चि वित्तं इध वा हुरं वा 2/1/3
यं किञ्चि सम्पजानासि 5/5/7, 5/6/8
यं खो मम देय्यधम्मं 5/1/7
यं तं अपुच्छिम्ह अकित्तयी नो 4/11/14, 5/5/4
यं तं सरणमागम्ह 3/7/23
यं ते तं नप्पसहति 3/2/19
यं तेसं पकतं आसि 2/7/3
यं परे सुखतो आहु 3/12/39
यं पुब्बे तं विसोसेहि 4/15/15, 5/12/4
यं बुद्धसेट्ठो परिवण्णयी सुचिं 2/1/5
यं बुद्धो भासति वाचं 3/3/5
यं ब्राह्मणं वेदगुमाभिजञ्ञा 5/5/11
यं मे कङ्खितमञ्ञासि 3/6/31
यं समणो बहुं भासति 3/11/44
यजस्सु यजमानो माघाति भगवा 3/5/20
यञ्ञे रतोहं भो गोतम 3/4/7
यथा अहं तथा एते 3/11/27
यथा अहू वक्कलि मुत्तसद्धो 5/18/23
यथा आपो च पथवी च 2/7/24
यथा इदं तथा एतं 1/11/11

यथा एतासु जातीसु 3/9/14
यथा नरो आपगमोतरित्वा 2/8/4
यथा माता पिता भाता 2/7/13
यथा सरणमादित्तं 3/8/18
यथापि कुम्भकारस्स 3/8/4
यथापि नावं दळ्हमारुहित्वा 2/8/6
यथावादी तथाकारी 2/12/15
यथिन्दखीलो पथविस्सितो सिया 2/1/8
यदग्गतो मज्झतो सेसतो वा 1/12/11
यदत्तनी पस्सति आनिसंसं 4/5/2
यदत्थिकं ब्रह्मचरियं अचरी 2/12/12
यदस्नमानो सुकतं सुनिट्ठितं, 2/2/2
यदा च सो मतो सेति 1/11/8
यदापि आसी असुरेहि सङ्गमो 3/11/3
यदूनकं तं सणति 3/11/43
यमस्स वादं परिहीनमाहु 4/8/4
यमाहु धम्मं परमन्ति एके 4/13/9
यमाहु सच्चं तथियन्ति एके 4/12/6
यमेतं पञ्हं अपुच्छि 5/2/6
यम्हि न माया वसति न मानो 3/4/15
यसो कित्ति च या पुब्बे 4/7/4
यस्मा हि धम्मं पुरिसो विजञ्ञा 2/8/1
यस्मिं कामा न वसन्ति 5/10/1, 5/10/2
यस्स गतिं न जानन्ति 3/9/51
यस्स च विसता नत्थि 3/11/37
यस्स दरथजा न सन्ति केचि 1/1/15
यस्स नत्थि इदं मेति 4/15/17
यस्स निस्सयना नत्थि 4/10/9
यस्स पुरे च पच्छा च 3/9/52
यस्स मग्गं न जानासि 3/8/9
यस्स मङ्गला समूहता 2/13/2
यस्स रागो च दोसो च 3/9/38
यस्स लोके सकं नत्थि 4/10/14
यस्स वनथजा न सन्ति केचि 1/1/16
यस्स वितक्का विधूपिता 1/1/7
यस्सन्तरतो न सन्ति कोपा 1/1/6
यस्सस्सु लुनानि बन्धनानि 3/6/23
यस्सानुसया न सन्ति केचि 1/1/14, 2/13/11
यस्सालया न विज्जन्ति 3/9/42
यस्सिन्द्रियानि भावितानि 3/6/7
यस्सूभयन्ते पणिधीध नत्थि 4/5/6
यस्सेते चतुरो धम्मा 1/10/8
यस्सेते होन्ति गत्तेसु 5/1/26
यस्सेसो दुल्लभो लोके 5/1/23
या उण्णती सास्स विघातभूमि 4/8/7
या काचिमा सम्मुतियो पुथुज्जा 4/13/3
या मे कङ्खा पुरे आसि 3/6/32
यानि च तीणि यानि च सट्ठि 3/6/29
यानि सोतानि लोकस्मिं 5/2/4
यानीध भूतानि समागतानि 2/1/1, 2/1/16, 2/1/17, 2/1/18
याय देवा मनुस्सा च 2/10/3
याव दुखा निरया इध वुत्ता 3/10/22
युत्तो कथायं परिसाय मज्झे 4/8/3
युवा च दहरो चासि 3/1/16
ये अत्तदीपा विचरन्ति लोके 3/5/15
ये अरियसच्चानि विभावयन्ति 2/1/9
ये इध कामेसु असञ्ञता जना 2/2/5
ये इध पाणेसु असञ्ञता जना 2/2/9
ये कामे हित्वा अगहा चरन्ति 3/4/10
ये कामे हित्वा अगहा चरन्ति 3/5/11
ये केचि गन्था इध मोहमग्गा 2/12/5
ये केचि पाणभूतत्थि 1/8/4
ये केचिमे इसयो मनुजा 5/4/2
ये केचिमे इसयो मनुजा 5/4/3
ये केचिमे तित्थिया वादसीला 2/14/6
ये केचिमे दिट्ठिपरिब्बसाना 4/13/1
ये केचिमे ब्राह्मणा वादसीला 2/14/7
ये केचिमे समणब्राह्मणासे 5/8/3, 5/8/4, 5/8/5
ये च दुक्खं पजानन्ति 3/12/3
ये च फस्सं परिञ्ञाय 3/12/14
ये च रूपूपगा सत्ता 3/12/31
ये च रूपे परिञ्ञाय 3/12/32
ये च सङ्खातधम्मासे 5/2/7

ये दिट्ठिमुग्गय्ह विवादयन्ति 4/8/9
ये दुक्खं नप्पजानन्ति 3/12/1
ये नं पजानन्ति यतोनिदानं 2/5/4
ये पापसीला इणघातसूचका 2/2/8
ये पुग्गला अट्ठ सतं पसत्था 2/1/6
ये मे पुब्बे वियाकंसु 5/18/12, 5/9/1
ये लूखसा दारुणा पिट्ठिमंसिका 2/2/6
ये वीतरागा सुसमाहितिन्द्रिया 3/4/11
ये वीतरागा सुसमाहितिन्द्रिया 3/5/12
ये वे असत्ता विचरन्ति लोके 3/5/4
ये वे न तण्हासु उपातिपन्ना 3/5/9
ये सब्बसंयोजनबन्धनच्छिदा 3/5/5
ये सब्बसंयोजनविप्पमुत्ता 3/5/6
ये सुप्पयुत्ता मनसा दळ्हेन 2/1/7
ये हेत्थ जानन्ति यथा तथा इदं 3/5/16
येन नं वज्जुं पुथुज्जना 4/10/12
येन येन हि मञ्ञन्ति 3/12/34, 3/8/15
येन सल्लेन ओतिण्णो 4/15/5
येनेव बालोति परं दहाति 4/12/11
येसं तण्हा नत्थि कुहिञ्चि लोके 3/5/10
येसं वे दुल्लभो लोके 3/7/13
येसु न माया वसति न मानो 3/5/8
येहि विवित्तो विचरेय्य लोके 4/9/11
यो अतीतं आदिसति 5/15/1
यो अत्तनो अत्तानं नानुपस्सति 3/4/23
यो अत्तनो सीलवतानि जन्तु 4/3/3
यो अत्थं पुच्छितो सन्तो 1/7/11
यो अप्पदुट्ठस्स नरस्स दुस्सति 3/10/6
यो इध चरणेसु पतिपत्तो 3/6/27
यो उप्पतितं विनेति कोधं 1/1/1
यो ओगहणे थम्भोरिवाभिजायति 1/12/8
यो कत्वा पापकं कम्मं 1/7/12
यो कामे परिवज्जेति 4/1/3
यो कामे हित्वा अभिभुय्यचारी 3/4/13
यो च जानं संयतत्तो 3/11/45
यो चत्तानं समुक्कंसे 1/7/17
यो जातमुच्छिज्ज न रोपयेय्य 1/12/2
यो ञातीनं सखीनं वा 1/7/8
यो तण्हमुदच्छिदा असेसं 1/1/3
यो तिण्णकथंकथो विसल्लो 1/5/4
यो ते धम्ममदेसेसि 5/18/16
यो तेसु गुत्तो विदितिन्द्रियो चरे 2/2/12
यो दुक्खस्स पजानाति 3/9/33
यो धम्मपदे सुदेसिते 1/5/6
यो नाच्चसारी न पच्चसारी 1/1/13, 1/1/9,1/1/10, 1/1/11, 1/1/12, 1/1/8
यो नाज्झगमा भवेसु सारं 1/1/5
यो निन्दियं पसंसति 3/10/2
यो नीवरणे पहाय पञ्च 1/1/17
यो नेसं परमो आसि 2/7/10
यो बुद्धं परिभासति 1/7/19
यो ब्राह्मणं समणं वा 1/6/10, 1/7/14, 1/7/15
यो मं इच्छति अन्वेतु 3/7/17
यो मातरं पितरं वा 1/6/8, 1/7/10, 1/7/9
यो मानमुदब्बधी असेसं 1/1/4
यो मे धम्ममदेसेसि 5/18/14, 5/18/18
यो यजति तिविधं यञ्ञसम्पदं 3/5/23
यो याचयोगो दानपति गहट्ठो 3/5/19, 3/5/2, 3/5/3
यो रागमुदच्छिदा असेसं 1/1/2
यो लोभगुणे अनुयुत्तो 3/10/7
यो वन्दति मन्ति नुण्णमेय्य 2/13/8
यो वे अनरहं सन्तो 1/7/20
यो वे अविद्वा उपधिं करोति 5/5/3
यो वे किञ्चिक्खकम्यता 1/7/6
यो वे ठितत्तो तसरंव उज्जु 1/12/9
यो वे परकुलं गन्त्वा 1/7/13
यो वेदगू झानरतो सतीमा 3/5/17
यो सञ्ञतत्तो न करोति पापं 1/12/10
यो हन्ति परिरुन्धति 1/7/3
यो हवे इणमादाय 1/7/5
यो हि कोचि मनुस्सेसु 3/9/19, 3/9/20, 3/9/21, 3/9/22, 3/9/23, 3/9/24 3/9/25, 3/9/26
योध कामे अच्चतरि 4/15/14

योध कामे पहन्त्वान 3/9/46
योध तण्हं पहन्त्वान 3/9/47
योध दीघं व रस्सं वा 3/9/40
योध पुञ्ञञ्च पापञ्च 3/9/43
योमं पलिपथं दुग्गं 3/9/45
रजमाकिरसी अहिताय 3/10/9
रथे चाजञ्ञसंयुत्ते 2/7/17
रसेसु गेधं अकरं अलोलो 1/3/31
रागं विनयेथ मानुसेसु 2/13/3
रागञ्च दोसञ्च पहाय मोहं 1/3/40, 3/5/7
रागो च दोसो च इतोनिदाना 2/5/2
रागो च दोसो च कुतोनिदाना 2/5/1
राजा अरहसि भवितुं 3/7/5
राजापि तं वेस्सवणो कुवेरो 2/14/5
राजाहमस्मि सेलाति 3/7/7
रित्तस्स मुनिनो चरतो 4/7/10
रूपा च सद्दा च रसा च गन्धा 2/14/12
रूपा सद्दा रसा गन्धा 3/12/36
रोसको कदरियो च 1/7/18
लक्खणानं पविचयं 5/1/46
लक्खणे इतिहासे च 5/1/45
लाभकम्या न सिक्खति 4/10/7
लाभा वत नो अनप्पका 1/2/14
लाभो सिलोको सक्कारो 3/2/14
लोभञ्च भवञ्च विप्पहाय 2/13/9
लोहिते सुस्समानम्हि 3/2/10
वंसो विसालो'व यथा विसत्तो 1/3/4
वचसा मनसा च कम्मुना च 2/13/7
वदन्ति वे दुट्ठमनापि एके 4/3/1
वनप्पगुम्बे यथ फुस्सितग्गे 2/1/13
वरो वरञ्ञू वरदो वराहरो 2/1/14
वसीकरित्वा सङ्कप्पं 3/2/20
वादञ्हि एके पटिसेनियन्ति 2/14/15
वारि पोक्खरपत्तेव 3/9/32
विजिगुच्छमानस्स यदिदं फासु 4/16/9
विञ्जाय चेव सम्पन्नो 1/9/11
विञ्ञाणट्ठितियो सब्बा 5/15/3
विञ्ञातसारानि सुभासितानि 2/9/6
विद्वा च यो वेदगू नरो इध 5/5/12
विनयस्सु मयि कङ्खं 3/7/12
विनिच्छया यानि पकप्पितानि 4/9/4
विनिच्छये ठत्वा सयं पमाय 4/12/17
विनिपातं समापन्नो 2/6/5
विपिट्ठिकत्वान पेसुणानि 2/13/4
विपिट्ठिकत्वान सुखं दुखञ्च 1/3/33
विभूतरूपसञ्ञिस्स 5/15/2
विरतो इध सब्बपापकेहि 3/6/22
विरतो कामसञ्ञाय 1/9/25
विरतो मेथुना धम्मा 3/11/26
विवेकञ्ञेव सिक्खेथ 4/7/9
विसेनिकत्वा पन ये चरन्ति 4/8/10
विस्सज्ज गन्थानि मुनीध लोके 4/13/18
विहेसं भावितत्तानं 2/6/4
वीतगेधो अमच्छरी 4/10/13
वीततण्हो पुरा भेदा 4/10/2
वीरियं मे धुरधोरय्हं 1/4/4
वीसं वस्ससतं आयु 5/1/44
वुड्ढापचायी अनुसूयको सिया 2/9/2
वेदानि विचेय्य केवलानि 3/6/20
संयोजनं जातिखयन्तदस्सी 3/4/22
संवुतो पातिमोक्खस्मिं 2/11/6
संसग्गजातस्स भवन्ति स्नेहा 1/3/2
संसुद्धजिनो विवट्टच्छदो 2/13/14
स ञानपसुतो धीरो 3/11/31
स पत्तपाणि विचरन्तो 3/11/35
स पिण्डचारं चरित्वा 3/11/30
स यानभूमिं यायित्वा 3/1/14
स वे विद्वा स वेदगू 4/15/13
स सब्बधम्मेसु विसेनिभूतो 4/13/20, 4/4/6
सकंसकंदिट्ठिपरिब्बसाना 4/12/1
सकञ्हि दिट्ठिं कथमच्चयेय्य 4/3/2
सकञ्हि धम्मं परिपुण्णमाहु 4/13/10
सकायने वापि दळ्हं वदानो 4/12/16
सङ्कप्पेहि परेतो सो 4/7/5

सङ्खाय लोकस्मि परोपरानि	5/4/7	सब्बत्थ उपेक्खको सतिमा	3/6/6
सङ्खाय वत्थूनि पमाय बीजं	1/12/3	सब्बत्थ मुनी अनिस्सितो	4/6/8
सङ्गातिगो यस्स न सन्ति सङ्गा	3/4/19	सब्बदा सीलसम्पन्नो	1/9/24
सङ्गो एसो परित्तमेत्थ सोख्यं	1/3/27	सब्बसंयोजनं छेत्वा	3/9/28
सङ्घाटिवासी अगहो चरामि	3/4/2	सब्बसो नामरूपस्मिं	4/15/16, 5/12/5
सचे अगारं आवसति	5/1/27	सब्बाभिभुं सब्बविदुं सुमेधं	1/12/5
सचे च सो पब्बजति	5/1/28	सब्बे समग्गा हुत्वान	2/6/8
सचे चुतो सीलवततो होति	4/13/5	सब्बेपि मे भिक्खवो सन्निसिन्ना	2/14/9
सचे मे याचमानस्स	5/1/8	सब्बेसु कामेसु यो वीतरागो	5/7/3, 5/7/4
सचे लभेथ निपकं सहायं	1/3/11	सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं	1/3/1
सचेपि सो सल्लपे सावकेन	2/14/14	सभग्गतो वा परिसग्गतो वा	2/14/22
सच्चं वे अमता वाचा	3/3/4	समञ्ञा हेसा लोकस्मिं	3/9/55
सच्चन्ति सो ब्राह्मणो किं वदेय्य	4/9/9	समन्तमसारो लोको	4/15/3
सच्चा अवोक्कम्म मुनि	4/15/12	समन्ता धजिनिं दिस्वा	3/2/18
सच्चेन दन्तो दमसा उपेतो	3/4/9	समानभागं कुब्बेथ	3/11/24
सच्चो सिया अप्पगब्भो	4/15/7	समाहितो यो उदतारि ओघं	3/4/17
सञ्ञं परिञ्ञा वितरेय्य ओघं	4/2/8	समिताविनो वीतरागा अकोपा	3/5/13
सञ्ञाविरत्तस्स न सन्ति गन्था	4/9/13	समिताविपहाय पुञ्ञपापं	3/6/11
सतं सहस्सानं निरब्बुदानं	3/10/4	समो विसेसी उद वा निहीनो	4/9/8
सत्त वस्सानि भगवन्तं	3/2/22	समो समेहि विसमेहि दूरे	3/4/14
सत्तो गुहायं बहुनाभिछन्नो	4/2/1	सम्पन्नं मुनिनो चित्तं	1/9/12,1/9/13, 1/9/14
सदेवकस्स लोकस्स	3/12/37, 4/16/2	सम्पन्नवेय्याकरणं तवेदं	2/12/10
सद्दहानो अरहतं	1/10/6	सम्बाधोयं घरावासो	3/1/2
सद्धम्मपूजापि नेसं तथेव	4/13/12	सम्बुद्धेन कतोकासो	5/1/56
सद्धा च पीति च मनो सति च	5/18/20	सम्बुद्धो पटिजानासि	3/7/8
सद्धा बीजं तपो वुट्ठि	1/4/2	सम्बुद्धोति वचो सुत्वा	5/1/19
सद्धाय तरति ओघं	1/10/4	सम्बोधियग्गं फुसिस्सतायं कुमारो	3/11/15
सद्धीध वित्तं पुरिसस्स सेट्ठं	1/10/2	सम्मद्दसा वेदगुनो	3/12/10
सद्धो सुतवा नियामदस्सी	2/13/13	सयं समादाय वतानि जन्तु	4/4/5
सन्ति लोके मुनयो	5/8/1	सवन्ति सब्बधि सोता	5/2/3
सन्तुस्सको च सुभरो च	1/8/2	सहस्सभागो मरणस्स	3/2/3
सन्तो च भिक्खु अभिनिब्बुततो	4/3/4	सहावस्स दस्सनसम्पदाय	2/1/10
सन्थवातो भयं जातं	1/12/1	सातं असातञ्च कुतोनिदाना	4/11/8
सन्दालयित्वान संयोजनानि	1/3/28	सातं असातन्ति यमाहु लोके	4/11/6
सन्दिट्ठिया चेव न वीवदाता	4/12/4	सातियेसु अनस्सावी	4/10/6
सपदानं चरमानो	3/1/9	साधाहं भगवा तथा विजञ्ञं	3/4/28
सब्बं तुवं ञाणमवेच्च धम्मं	2/14/3	सामाकचिङ्गूलकचीनकानि च,	2/2/1

सारम्भा यस्स विगता	3/4/29
सारुप्पं अत्तनो विदित्वा	2/13/10
सावत्थियं कोसलमन्दिरे जिनो	5/1/21
सिखी यथा नीलगीवो विहङ्गमो	1/12/15
सिङ्घाणिका च नासतो	1/11/6
सिङ्घाणिकाय खेळस्स	1/11/4
सीतञ्च उण्हञ्च खुदं पिपासं	1/3/18
सीमन्तानं विनेतारं	3/4/30
सीमातिगो ब्राह्मणो तस्स नत्थि	4/4/8
सीलब्बतं वापि पहाय सब्बं	4/13/6
सीलुत्तमा सञ्ञमेनाहु सुद्धिं	4/13/4
सीहं वेकचरं नागं	1/9/16
सीहो यथा दाठावली पसय्ह	1/3/38
सीहोव सद्देसु असन्तसन्तो	1/3/37
सुखं वा यदि वा दुक्खं	3/12/15
सुखन्ति दिट्ठमरियेहि	3/12/38
सुखितो बावरी होतु	5/1/54
सुखुमाला महाकाया	2/7/15
सुञ्ञतो लोकं अवेक्खस्सु	5/16/4
सुणाथ मे भिक्खवो सावयामि वो	2/14/10
सुत्वा धीरानं निग्घोसं	3/11/41
सुत्वा रुसितो बहुं वाचं	4/14/18
सुत्वा सब्बधम्मं अभिञ्ञाय लोके	3/6/25
सुत्वान घोसं जिनवरचक्कवत्तने	3/11/20
सुत्वान दूतवचनं 3/1/13,	1/11/10
सुत्वान बुद्धस्स सुभासितं पदं	2/2/14
सुत्वानहं वीरमकामकामिं	5/12/1
सुदिट्ठं वत नो अज्ज	1/9/28
सुद्धा सुद्धेहि संवासं	2/6/10
सुपिनेन यथापि सङ्गतं	4/6/4
सुभासितं उत्तममाहु सन्तो	3/3/1
सुविजानो भवं होति	1/6/2
सूरो यथा राजखादाय पुट्ठो	4/8/8
सेय्यो न तेन मञ्ञेय्य	4/14/4
सेळेन्ति गायन्ति च वादयन्ति च	3/11/4
सेहि दारेहि असन्तुट्ठो	1/6/18
सो अस्सकस्स विसये	5/1/2
सो अहं विचरिस्सामि	1/10/12
सो उभन्तमभिञ्ञाय	5/3/3
सो चे मुखरजातिको	2/6/2
सो बावरी अत्तमनो उदग्गो	5/1/20
सो बोधिसत्तो रतनवरो अतुल्यो	3/11/5
सो यसं परमं पत्तो	1/7/23
सो वीतरागो पविनेय्य दोसं	3/5/21
सो सब्बसत्तुत्तमो अग्गपुग्गलो	3/11/6
सो साकियानं विपुलं जनेत्वा पीतिं	3/11/17
सो हि ब्राह्मण सम्बुद्धो	5/1/17
सोकप्परिदेवमच्छरं	4/6/6
सोकमप्पजहं जन्तु	3/8/13
सोचति पुत्तेहि पुत्तिमा	1/2/17
स्नेहजा अत्तसम्भूता	2/5/3
स्वाक्खातं ब्रह्मचरियं	3/7/20
सोचन्ति जना ममायिते	4/6/2
सोभयन्तो अनीकग्गं	3/1/17
हस्सं जप्पं परिदेवं पदोसं	2/9/5
हित्वा इच्छञ्च लोभञ्च	3/11/28
हित्वा मानुसकं योगं	3/9/48
हित्वा रतिञ्च अरतिं	3/9/49
हित्वान पियञ्च अप्पियञ्च	2/13/5
हिरिं तरन्तं विजिगुच्छमानं	2/3/1
हुतञ्च मय्हं हुतमत्थु सच्चं	3/4/2

***



पालि-अध्ययन-केन्द्रम्

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानित-विश्वविद्यालयः)
Accredited by 'NAAC' with 'A' Grade
(केन्द्रीय-मानव-संसाधन-विकास-मन्त्रालयाधीनम्)
लखनऊ-परिसरः